अनुवाद श्रृंखला संख्या 43

भेदभाव का मार्ग

(PAṬISAMBHIDĀMAGGA)

पाली से अनुवादित

भिक्खु नानामोली

द्वारा एक

परिचय के साथ

ए. के. वार्डर

द पाली
टेक्स्ट सोसाइटी, लंदन द्वारा प्रकाशित

रूटलेज एंड
केगन पॉल लिमिटेड लंदन और बोस्टन
द्वारा वितरित 1982

© पाली टेक्स्ट सोसाइटी 1982

आईएसबीएन 0-7100-9457-4

सेट होप सर्विसेज, एबिंगडन ने बनाया
है और ग्रेट ब्रिटेन में रेडवुड बर्न लिमिटेड,
ट्रोब्रिज, विल्टशायर
ने प्रिंट किया है।

अंतर्वस्तु

नानामोली के टाइप किए हुए ड्राफ़्ट पर लिखे नोट के मुताबिक, यह ट्रांसलेशन 1955 में जून और अक्टूबर के बीच किया गया था। यह उनके विशुद्धिमग्ग के ट्रांसलेशन के ड्राफ़्ट (1953) के बाद किया गया था, लेकिन इसे आख़िरकार रिवाइज़ और पब्लिश (1956) करने से पहले किया गया था। उनके ट्रांसलेशन जो बाद में पाली टेक्स्ट सोसाइटी, माइनर रीडिंग्स एंड इलस्ट्रेटर, द गाइड, पिटक-डिस्क्लोज़र ने पब्लिश किए, साफ़ तौर पर उसके बाद किए गए थे, क्योंकि वे ट्रांसलेशन का एक नया 'स्कीम' अपनाते हैं।

ट्रांसलेटर की मौत के एक साल बाद, 1961 में नानामोली की टाइपस्क्रिप्ट को नानालोक महाथेरा ने सोसाइटी के प्रेसिडेंट को भेजा था। यह टाइपस्क्रिप्ट सिंगल स्पेस वाली है, जिसमें कोई मार्जिन नहीं है और इसमें हज़ारों बदलाव हाथ से स्याही से हल्के टाइपस्क्रिप्ट पर या पैराग्राफ के बीच की खाली जगहों पर लिखे गए हैं। एक कंपोजिटर के लिए इसे समझना नामुमकिन था। फुटनोट और दूसरी एक्सेसरी चीज़ें, जो ज़्यादातर अलग-अलग शीट और कागज़ के टुकड़ों पर हाथ से लिखी थीं, उन्हें समझने और रखने की ज़रूरत थी। अफ़सोस की बात है कि अलग-अलग PTS एडिटर्स ने प्रिंटिंग के लिए एक कॉपी तैयार करने पर एक से ज़्यादा बार काम शुरू किया, जिन्हें यह काम बहुत भारी लगा और बहुत समय बर्बाद होने के बाद उन्होंने इसे छोड़ दिया। टेक्स्ट को संभालने में होने वाली फिजिकल मुश्किल के अलावा, यह पाया गया कि बदलाव अधूरे किए गए थे, इसलिए ट्रांसलेटर के इरादे के हिसाब से ट्रांसलेशन को ही ठीक करना पड़ा। रीटाइपिंग की बात करें तो, एक समय उम्मीद थी कि यह मुश्किल ट्रांसक्रिप्शन टोरंटो में PTC स्टाफ के एडिटोरियल सेक्रेटरी धीरे-धीरे 'साइड में' कर सकते हैं। यह उम्मीद एक रिसर्च असिस्टेंट ने तोड़ दी, जिसने अपना ज़्यादातर PTC टाइम अपने प्राइवेट काम में लगाया और जल्दबाजी और लापरवाही से इकट्ठा किया हुआ अधूरा Concordance मटीरियल जमा कर दिया। इसलिए सेक्रेटरी को उसकी कमियों को पूरा करने, उसकी पाली को ठीक करने और रेफरेंस को वेरिफाई करने के लिए उसकी जगह काम करना पड़ा। उसे सही तरीके से 'रिप्लेस' कर दिया गया, लेकिन तब तक सपोर्टिंग एजेंसी ने सुझाव दिया था कि PTC के लिए कंप्यूटर का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। Vol. III के एडिटर, इस टेक्निक पर रिसर्च के बाद, इस बात पर सहमत हुए कि इससे Concordance को और ज़्यादा पूरा और सही बनाया जा सकता है और उन्होंने एक सही प्रोग्राम तैयार किया। यह एक अलग कहानी है कि I. B. होमर ने कंप्यूटर के इस्तेमाल पर रोक लगा दी थी, लेकिन किसी भी हाल में कंप्यूटराइज्ड प्रोजेक्ट ने अपने स्टाफ को दूसरी रिसर्च के लिए कोई खाली समय नहीं दिया। The Path of Discrimination को एक अलग और बड़ा प्रोजेक्ट बनना था।

दूसरे रिसर्च कमिटमेंट्स की दिक्कतों और नॉर्थ अमेरिका में 'एकेडमिक' ज़िंदगी की मुश्किलों के बीच, मौजूदा एडिटर को बहुत दिक्कतें हुईं।

सोसाइटी की सौवीं सालगिरह से पहले काम तैयार करने के लिए कुछ महीने अलग रखने में उन्हें और देर हो गई। उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो के रिसर्च बोर्ड से एक टाइपिस्ट को पेमेंट करने के लिए एक छोटा सा ग्रांट लिया, ताकि एक कॉपी तैयार की जा सके जिसे एक कंपोजिटर फॉलो कर सके। अब आखिरकार, यह चेक करने की आंखों को थका देने वाली मेहनत के बाद, सिंगल स्पेस टाइपिंग की भूलभुलैया से कॉपी करने में खोई हुई कई जिंदगियों को वापस लाने, नोट्स जोड़ने और, हमें उम्मीद है, शब्दों के ट्रांसलेशन के बारे में नानामोली के नए इरादों को पूरा करने के बाद, 'द पाथ ऑफ़ डिस्क्रिमिनेशन' सोसाइटी के पब्लिकेशन्स में वह सम्मान की जगह ले सकती है जिसका वह हकदार है।

अपनी ज़िंदगी के आखिरी महीनों में, नानमोली पेटकोपदेश के अपने ट्रांसलेशन पर काम कर रहे थे, इसे सोसाइटी में पब्लिकेशन के लिए फाइनल कर रहे थे, उस समय द गाइड प्रेस में थी। इस तरह उनके पास द पाथ ऑफ़ डिस्क्रिमिनेशन में अपने आखिरी बदलाव करने या उसका इंट्रोडक्शन लिखने का समय नहीं था। फिर भी, ऐसा लगता है कि उन्होंने अपने आखिरी एक-दो सालों में समय-समय पर पाटिसम. भीदामग्गा को देखा और उसके ट्रांसलेशन को बदला, यहाँ तक कि कुछ नए इंग्लिश इक्विवेलेंट भी डाले जो उनके दूसरे कामों में नहीं मिलते। हम शायद एक नई 'स्कीम' भी देख सकते हैं, जैसा कि उन्होंने अपने ट्रांसलेशन के सिस्टम को कहा था, जो असल में यहाँ डेवलप हुई थी, हालाँकि यह जानना नामुमकिन है कि क्या वह अपने बदलावों को काफी आगे ले जाते। यह एकमात्र कैनोनिकल पाली टेक्स्ट है जिसका उन्होंने ट्रांसलेशन किया है, यह हो सकता है कि उन्हें इसके लिए ऐसी नई स्कीम सही लगी हो। इस इंट्रोडक्शन के आखिर में, उनके टेक्स्ट की ओर ले जाते हुए, उनके ट्रांसलेशन के तरीके और खास शब्दों के लिए उनके इक्विवेलेंट पर कुछ कहा जाएगा। लेकिन, शुरू में ही यह बता देना चाहिए कि हमारा मकसद उनके टेक्स्ट को ठीक वैसे ही पेश करना है जैसा उन्होंने छोड़ा था, और सिर्फ़ वही सुधार करना है जो वे खुद करना चाहते थे। उदाहरण के लिए, क्योंकि उन्होंने 'कॉन्शसनेस' और 'माइंड' को लगभग सभी जगहों पर 'कॉग्निजेंस' में बदल दिया था, जहाँ वे चित्त के लिए थे (लेकिन वहाँ नहीं जहाँ वे क्रमशः विण्णाण और मनो के लिए थे), हमने भी उन्हें कुछ जगहों पर बदला है जो उन्होंने अपने रिविज़न में छोड़ दी थीं, नानामोली ऐसे मामलों में पूरी तरह एक जैसा होने के हिमायती थे। इसी तरह, उनके ड्राफ़्ट के पन्नों के बीच एक पर्ची पर मिला उनका एक नोट हमें 'क्लियर-विज़न' को 'रिकग्निशन' में बदलने के लिए कहता है, जहाँ यह एक टेक्निकल शब्द के तौर पर विज्जा के लिए है (लेकिन दूसरी जगहों पर नहीं जहाँ वे इसे 'साइंस' कहते हैं) और उनके टाइपस्क्रिप्ट पर किए गए, लेकिन अधूरे ट्रांसलेशन के नौ और बदलावों की पुष्टि करता है। उनका इंडेक्स, जो काफ़ी शुरुआती स्टेज में बनाया गया था, ज़्यादातर बिना बदले हुए था और इसलिए उसे उनके टेक्स्ट के साथ एक जैसा करना पड़ा। कुल मिलाकर, नानामोली के साफ़ इरादों के हिसाब से लगभग साठ शब्दों के ट्रांसलेशन को इस तरह ठीक करना पड़ा। हो सकता है कि कुछ और भी हों जिन पर ध्यान नहीं गया हो। कुछ जगहों पर जहाँ एडिटर ने नानामोली के इरादों या शब्दों के बारे में पक्के तौर पर कुछ जोड़ा है, या ट्रांसलेशन से गायब किसी लाइन को वापस जोड़ा है,

इसे <पॉइंटेड ब्रैकेट> में रखा गया है। नानामोली के अपने इंसर्शन, जैसे हेडिंग, [स्क्वायर ब्रैकेट] में हैं। उन्होंने दूसरे रेंडरिंग और पाली शब्दों को (राउंड ब्रैकेट) में रखा है। दूसरे टेक्स्ट के सभी रेफरेंस, चाहे नानामोली के हों या एडिटर ने जोड़े हों, राउंड ब्रैकेट में हैं।

उनकी दूसरी किताबों से यह साफ़ है कि नानामोली ने इस ट्रांसलेशन के लिए एक लंबा इंट्रोडक्शन लिखा होगा। इस मामले में ऐसा इंट्रोडक्शन और भी ज़रूरी है क्योंकि यह काम सूखा है, जिसके कंटेंट की रिचनेस और गहराई इसकी एक जैसी, बार-बार दोहराई जाने वाली सतह पर बिल्कुल भी साफ़ नहीं दिखती, जिसकी बनावट एक जुते हुए खेत जैसी है। यह निश्चित रूप से एक टेक्स्ट था जो मौखिक परंपरा के लिए लिखा गया था, जिसे याद किया जाना था और दोहराया जाना था, न कि किसी लिखे हुए डॉक्यूमेंट को एनालिटिकल तरीके से पेश करने के लिए। लेकिन यह अपने प्रेजेंटेशन के लिए कम एनालिटिकल नहीं है, और अपने नारियल जैसे सख्त खोल के लिए कम जूसी (दोनों मतलबों में रसवंत, जिसके बारे में हम नीचे बात करेंगे) नहीं है। हम उम्मीद नहीं कर सकते कि नानामोली ने जो लिखा होगा, हम उसकी नकल कर पाएंगे, लेकिन हमारे पास इस टेक्स्ट के बारे में उनके कुछ विचार हैं जो हमें गाइड करने के लिए उनके नोट्स में हैं और कहीं-कहीं उनकी दूसरी राइटिंग में इसके बारे में कुछ है, जैसे कि द पाथ ऑफ़ प्यूरिफिकेशन जो इससे बहुत करीब से जुड़ा हुआ है। उस ट्रांसलेशन के उनके इंट्रोडक्शन से हम देख सकते हैं कि उन्होंने पटिसंभिदामग्ग को थेरवाद सिद्धांत के 'ट्रेंड्स' (पेज xxviii) में और अगर हो सके तो पूरे बौद्ध धर्म के इतिहास (पेज xxx) में रखने की कोशिश की होगी। उनकी दी गई उस प्रेरणा से हमने उस कमी को पूरा करने की कोशिश की है, पटिसंभिदामग्ग को जगह दी है और पढ़ने वाले या स्टूडेंट को एक कुल्हाड़ी, चाहे वह कितनी भी कच्ची क्यों न हो, उसे चीरने और उसके आज़ादी देने वाले रस का स्वाद लेने के लिए दी है।

'भेदभाव' और पटिसंभिदामग्ग

'भेदभाव' (पतिसंभिदा), या 'समझ' जैसा कि हमने इसे कहीं और कहा है, शुरुआती बौद्ध धर्म और पाली कैनन के सबसे खास शब्दों में से एक नहीं है। पाली तिपिटकम कॉनकॉर्डेंस, वॉल्यूम III s:v. (अत्था, वगैरह के तहत वॉल्यूम I देखें) में इकट्ठा किए गए रेफरेंस के मुताबिक, 'भेदभाव' (पतिसंभिदा) शब्द दीघ, मज्जिम और संयुत्त निकायों में नहीं आता है, लेकिन अंगुत्तर में कई बार आता है, जो दूसरे कारणों से पहले तीन से बाद का लगता है या कम से कम नए सुत्त (भारतीय) बौद्ध धर्म को शामिल करने के लिए ज़्यादा खुला था] पेज 203)। इसी तरह यह शब्द परिवार में आता है, लेकिन विनय के पिछले वॉल्यूम में नहीं। खुद्दक निकाय में, पटिसंभिदा, निद्देसा, अपादान और बुद्धवंश के अलावा, पटिसंभिदा-मग्ग से भी परिचित है, और अभिधम्म में यह विभंग के अंत के पास जोड़े गए एक अध्याय में और कथावत्थु और टीकापत्तन में पाया जाता है,

[1] ए.के. वार्डर, इंडियन बुद्धिज़्म, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, दूसरा एडिशन 1980, पेज 312ff., जहाँ पटिसंभिदामग्ग के बारे में बताया गया है।

यह बंटवारा इतना खास है कि समय के हिसाब से इसके महत्व को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता: जो लोग सच में मानते हैं कि बुद्ध ने खुद पूरा तिपिटक लिखा या उसे मंज़ूरी दी, और सारिपुत्त ने पाटिसम-भिदामग्ग लिखा, जैसा कि परंपरा है, उन्हें भी यहाँ सोच का विकास देखना चाहिए, कम से कम पहले के बयान पर एक कमेंट, यानी धम्मचक्कप्पा-वत्तन सुत्तंत पर, जो बुद्ध का अपने सिद्धांत का पहला एक्सप्लेनेशन है।

'भेदभाव' शब्द बौद्ध धर्म के दूसरे स्कूलों के लिए भी अनजान नहीं है, हालाँकि जब यह संस्कृत में आता है तो इसे एक अलग मूल (प्रतिसंविद) दिया जाता है, इसलिए यह थेरवादियों का बाद का आविष्कार नहीं है और शायद यह उन बड़े मतभेदों के समय में चलन में आया जिनसे अठारह स्कूल बने (IB पेज 214 और 288, वगैरह के अनुसार B.C. 349 से B.C. 50)। इस तरह बाद के सब्तिवादिन टेक्स्ट प्रकारनपाद (ताइशो 1541 और 1542, चैप्टर VI, नंबर 12 चार में से) और उससे भी बाद के बहुसूतिका *तत्वसिद्धिशास्त्र (ताइशो 1646, पेज 368 b-c) में चार 'भेदभाव' हैं। लेकिन यह टॉपिक इन स्कूलों में काफी कम दिखाई देता है और यह भी शक किया जा सकता है कि यह थेरवाद से बाद में उधार लिया गया है। अभी हमें नहीं पता कि उनके सुत्तंतों में यह शब्द था या नहीं, लेकिन अकनुमा[1], पेज 136 के अनुसार, एकोत्तर आगम (ताइशो 125) के चीनी वर्शन में A ii 160 जैसा एक टेक्स्ट है (नीचे देखें, यह फ़ोर्स का नंबर 173 है, जैसा कि अकनुमा ने बताया है; यह एकोत्तर धम्मगुट्टिका स्कूल, IB पेज 8 से जुड़ा लगता है)।

पाली में वापस आते हैं, तो हम अंगुत्तर में पाते हैं कि तथागत के पास 'आँख' (अंतर्दृष्टि, चक्खु), 'प्रकाश' (अलोक), 'रोशनी' (ओभास), वगैरह होती है, और वह चारों विवेक (cf. iv 32-3) और अरहंतत्व का फल (i 22-3) 'साकार' होता है। महाकोट्ठित उन लोगों में सबसे आगे थे जिन्होंने विवेक हासिल किए थे (i 24)। यह नामुमकिन है कि चारों विवेक वाले व्यक्ति में 'मतलब' (अत्थ) या 'भाव' (व्यंजना) के नज़रिए से 'थकावट' हो (ii 139)। इसका मतलब है कि वे शब्दों और मतलबों को समझने या उन्हें एक साथ रखने की एक खास ताकत दिखाते हैं। सारिपुत्त को समुदाय में 'एंट्री' के दो हफ़्ते बाद ही चार भेदभाव समझ में आ गए थे और इस तरह वे किसी भी शक वगैरह को समझा सकते थे: जो (इस तरह) धम्म ('सिद्धांत', 'विचार') में माहिर है, वही हमारा गुरु (बुद्ध) है जो मौजूद है (ii 160)। यह अजीब है कि, चार में इन दो ज़िक्र के बाद, हमें पाँच में दो मिलते हैं: पाँचवें के तौर पर या तो 'साथियों की मदद करने में हुनर' या 'वह आज़ाद होते ही ज्ञान का रिव्यू करता है' (नानामोली के बराबर शब्दों को अपनाते हुए) वाले भेदभाव (iii 113 और 120)।

हालाँकि, चार भेदभावों की अवधारणा के विकास के लिए शुरुआती बिंदु को ऐसे संदर्भ में देखा जा सकता है जहाँ शब्द स्वयं

[1] चीनी आगम और पाली निकायों की तुलनात्मक सूची, हज़िनकाकु-शोबोह, नागोया, 1929।

ऐसा नहीं होता है, लेकिन खास तौर पर तीन बातें जिन्हें भेदभाव के तौर पर जाना जाता है, वे जुड़ी हुई हैं, यानी 'मतलब' (अत्थ), 'सिद्धांत' (धम्म, नानामोली का 'विचार') और 'भाषा' (निनिट्टी)। इन तीनों में 'एक्सप्रेशन' (व्यान-जन) और 'कॉन्टेक्स्ट' (पुब्बापर) जोड़े जाते हैं और कहा जाता है कि एक साधु को जल्दी सीखने के लिए इन पांचों में माहिर होना चाहिए...वगैरह (iii 201)। यहाँ कमेंट्री में अजीब तरह से अत्थ को अट्ठकथा और धम्म को पाली बताया गया है, लेकिन सारिपुत्त और आनंद के बीच बातचीत में यह बात बिल्कुल गलत है और 'भेदभाव' जैसे साफ शब्द की गैर-मौजूदगी में किया गया एक गलत अंदाज़ा लगता है (AA iii 300)।

निद्देसा, या सही मायने में महानिद्देसा, सुत्तंत में सबसे नए हिस्सों में से एक है, जो सुत्तनिपात के कुछ हिस्सों पर एक कमेंट्री है। इसमें भगवंत के गुणों में से चार भेदभाव हासिल करना शामिल है (i 143, 212, 338, ii 216, इसी तरह के i 481, 510, ii 51, 135 हैं)। फिर पतिभानवंत होना, 'अंतर्ज्ञान होना' (नानामोलि पर्सपिक्यूइटी), जो चौथा भेदभाव है, तीन तरह का कहा जाता है, सीखने में (बस), पूछताछ में (मतलब, परिभाषा, कारण, वगैरह के बारे में) और हासिल करने में (ज्ञान के सैंतीस सिद्धांतों में से, समान होने के चार फल, चार भेदभाव और छह 'सीधे ज्ञान', अभिज्ञान)। यह आखिरी बात इसलिए खास तौर पर कही गई है क्योंकि कोई 'मतलब' (अत्थ), सिद्धांत या 'विचार' (धम्म) और भाषा (निरुत्ति) जानता है और वे (पति-भा, या 'प्रेरणा') उसे साफ़ लगते हैं; इसलिए, पतिभानापतिसंभिद्द ('स्पष्टता का भेद' या 'अंतर्ज्ञान की समझ') इन तीनों के बारे में ज्ञान होने के कारण, व्यक्ति को पतिभानवंत (i 234-5, ii 192-3) कहा जाता है। ऐसा लगता है कि यह चौथे 'भेद' की शुरुआत दिखाता है।

अपादान (31, वगैरह) में हम पढ़ते हैं कि सारिपुत्त और दूसरों को चार भेदभाव, आठ मुक्ति और छह सीधे ज्ञान का एहसास हुआ था। बुद्धवंश (23) में हमें निद्देसा (i 234-5, ii 192-3) से अभी-अभी संक्षेप में दिए गए हिस्से का एक छंद मिलता है।

परिवार (Vin v 1-97) में यह बताया गया है कि ननों को ऐसे साधु से बात नहीं करनी चाहिए जिसने चार भेदभाव हासिल नहीं किए हैं (दूसरी कमियों के साथ; यानी उन्हें उसकी नसीहतें नहीं माननी चाहिए)। इसके तुरंत बाद यह कहा गया है कि अगर कोई साधु मतलब, सिद्धांत (विचार), भाषा, एक्सप्रेशन और कॉन्टेक्स्ट (जैसा कि ऊपर A iii 201 में है) में माहिर नहीं है, तो उसे कमेटी में नहीं चुना जाना चाहिए। इन दोनों बातों को एक साथ रखने से हमारा ऊपर दिया गया विचार पक्का होता है कि इस अहगुत्तर कॉन्टेक्स्ट को भेदभाव के पैरेलल (एक्सप्रेशन को भाषा में, कॉन्टेक्स्ट को उसमें या मतलब में शामिल किया जा सकता है), या उनके प्रोटोटाइप के तौर पर समझा जाना चाहिए।

कॉनकॉर्डेंस में दिए गए पठान के संदर्भ में कहा गया है कि 'तुरंत निर्भरता' (उपनिषय) की स्थिति से व्यक्ति नश्वरता को देखता है,

दुख और आत्माहीनता (सभी सिद्धांतों की तीन यूनिवर्सल खासियतें) और अरहंत-पथ (TkP 167) के असर से चार भेदभाव हासिल करता है। यह भेदभाव को ज्ञान से जोड़ता है।

कथावत्थु (309 ff.) अंधक स्कूलों की इस राय को गलत बताता है (इसकी कमेंट्री के अनुसार) कि सारा ज्ञान 'भेदभाव' है। यह दिलचस्प है कि अंधकों (शायद चेतियावादियों, या उनकी शाखाएं पुब्बसेलीय और अपरसेलीय) ने 'भेदभाव' को मान्यता दी, हालांकि ऐसा लगता है कि उन्होंने थेरवादियों की तुलना में इसके महत्व को कम कर दिया था। यह शब्द महायान में भी इस्तेमाल होता रहा, उदाहरण के लिए सुखावतीव्यूह (18 पेज 360) में, जो पुब्बसेलीय स्कूल (IB पेज 353-4) से निकला लगता है।

भेदभाव पर विभंग चैप्टर (XV) (293-305) चार भेदभावों - अत्थ, धम्म, निरुत्ति और पतिभान - के बारे में बताता है, यह स्टैंडर्ड ऑर्डर है जैसा कि हमने ऊपर बताए गए टेक्स्ट में देखा है। पहला भेदभाव अत्थ के बारे में 'ज्ञान' (ज्ञान) है और दूसरा भी धम्म के बारे में। तीसरा द्रम्म की भाषा में 'उपनाम' (अभिलाप) के बारे में ज्ञान है। चौथा इन तीन ज्ञानों के बारे में ज्ञान है। फिर पहला दुख के बारे में ज्ञान है और दूसरा दुख की शुरुआत (पहले दो सच या 'असलियतें') के बारे में। पहला दुख के खत्म होने के बारे में भी ज्ञान है और दूसरा उस तक जाने वाले रास्ते के बारे में। इससे पता चलता है कि अर्थ नतीजों या असर के बारे में है, धम्मिन कारणों के बारे में है, जिसे हम आगे कन्फर्म होते हुए देखेंगे। तीसरे भेदभाव को हमेशा भाषा में धम्म के नाम के बारे में और चौथे को ज्ञान के बारे में ज्ञान के रूप में बताया जाता है। पहले दो ही दिक्कत वाले हैं।

विभंग आगे कहता है कि धम्म का भेदभाव (इस एक्सप्लेनेशन में सबसे पहले बताया गया है) कारण (हेतु) के बारे में ज्ञान है। अत्थ का भेदभाव कारण के असर (फल, 'फल') के बारे में ज्ञान है। अत्थ का भेदभाव (फिर से पहले रखा गया) उन धम्मों (प्लूरल) के बारे में ज्ञान है जो बनाए गए हैं, धम्म का भेदभाव उन धम्मों (प्लूरल) के बारे में ज्ञान है जिनसे ये धम्म बनाए गए हैं। इससे यह बहुत साफ पता चलता है कि सारा भेदभाव धम्मों (सिद्धांतों या 'विचारों' की बहुलता) के बारे में है, लेकिन अत्थ का भेदभाव धम्मों को असर के तौर पर देखता है जबकि धम्म का भेदभाव उन्हें कारण मानता है। हम देखते हैं कि सभी धम्म असल में दूसरे धम्मों के असर हैं और इसी तरह, शायद निब्बान को छोड़कर, हालांकि वह भी एक शर्त के तौर पर काम कर सकता है, कारण हैं। तो यह सिर्फ नज़रिया है जो अलग है, चीज़ खुद नहीं बल्कि यह कि उसे कारण के तौर पर देखा जाता है या असर के तौर पर।

लेकिन विभंग फिर एक बिल्कुल अलग व्याख्या जोड़ता है

धम्म और अट्ठ (फिर से क्रम उल्टा है)। धम्म का मतलब है टेक्स्ट या सिद्धांत: सुत्त, ज्ञेय, वेय्याकरण, वगैरह। अट्ठ का मतलब है उस (धम्म) के बारे में जो कुछ भी कहा गया है उसका 'मतलब' (अर्थ)। अब तक के एक्सप्लेनेशन को सुत्तंतभाजनीय सेक्शन कहा जाता है, हालांकि वे सुत्तंत में मुश्किल से मिलते हैं। यह नाम असल में अभिधम्म टेक्स्ट को डिटेल में बताने के पुराने 'बिना सवाल' वाले तरीके को बताता है (नीचे देखें)।

आगे आने वाले अभिधम्मभाजनीय में, सवाल धम्मों के भेदभाव को 'अच्छा' (कुसल) वगैरह बताते हैं। अत्थ पहले की तरह उनके नतीजे के बारे में है, जिसे यहाँ विपाक कहा गया है। यह भी जोड़ा गया है कि भाषा का भेदभाव धम्म(धम्मों) के बारे में भाषा में नाम के बारे में ज्ञान है, जिससे भाषा में उन धम्मों का 'कॉन्सेप्ट' (परिणति) होता है (पहले धम्मों के भेदभाव से पहचाना जाता था)। पतिभान या 'स्पष्टता' का भेदभाव ज्ञान के बारे में ज्ञान है, जो 'रोशनी' है जिससे कोई इन ज्ञानों को जानता है। ऐसे 'नतीजे' के मामले में जो 'अनिश्चित' है (कोई और असर नहीं करता) केवल तीन भेदभाव लागू होते हैं, धम्म का भेदभाव लागू नहीं होता क्योंकि यह कारणों से जुड़ा है (पेज 297)।

इस तरह विभंग अत्था और धम्म दोनों की उलझन को पूरी तरह से हल नहीं करता, बल्कि यह बताता है कि हर मामले में दोनों मतलब लागू हो सकते हैं। अत्था या तो 'असर' है या 'मतलब'। धम्म या तो 'सिद्धांत' या 'सिद्धांत' है, 'सिद्धांत' वे असली तत्व हैं जो पूरे ब्रह्मांड या संसार और उसमें हमारे सभी अनुभवों को बनाते हैं (देखें IB2 पेज 97-9, IB[1] में उन्हें सिर्फ़ 'घटना' कहा गया था, नानामोली यहाँ 'विचार' का अनुवाद करते हैं)। एक असर के तौर पर, अत्था का अनुवाद 'मकसद' या 'उद्देश्य-आधारित' या सिर्फ़ 'वस्तु' किया जा सकता है। निब्बाण को छोड़कर, सभी सिद्धांतों का 'उद्देश्य' तब और सिद्धांत, सिद्धांतों का और ज़्यादा होना (क्योंकि सभी कुछ समय के लिए हैं, हमेशा रहने वाले पदार्थ नहीं हैं), ब्रह्मांड का जारी रहना और उसमें 'ट्रांसमाइग्रेशन' या पुनर्जन्म है। दूसरी ओर, हम यह भी कह सकते हैं कि सिद्धांतों और सत्यों या 'वास्तविकताओं' को जानने का 'उद्देश्य' निब्बान है।

नानामोलि ने हमेशा अत्थ का मतलब 'मतलब' और धम्म का मतलब 'आइडिया' बताया है। इसलिए पढ़ने वाले को अर्थ में 'ऑब्जेक्टिव' की उलझन, एक तरह से ओवर-टोन को ध्यान में रखना चाहिए। 'आइडिया' पर हम नीचे और कहेंगे। नानामोलि के मतलब के पक्ष में हम यह देख सकते हैं कि विभंग के उलट, पाटिसंभिदामग्ग में कहीं भी यह नहीं बताया गया है कि अत्थ का मतलब कोई असर या चीज़ हो सकता है। असल में, ऐसा लगता है कि यह चारों भेदभावों के मतलब को मान लेता है, जैसा कि पहले से पता है या खुद-ब-खुद साफ है। क्या यह विभंग में दी गई बातों को पहले से मान लेता है या यह उनसे अलग है, शायद विभंग के उस चैप्टर से पहले लिखा गया था?

भेदभाव पर अपने चैप्टर (XVI) में, पटिसंभिदामग्ग ने अत्थ और धम्म के बारे में बताते समय उनके क्रम को काफी हद तक उलट दिया है, पहले उन्हें आम क्रम (ii 150) में गिनाया था, ठीक वैसे ही जैसे विभंग करता है। लेकिन यह विवरण सिर्फ़ धम्मों की एक लिस्ट है, फिर अत्थों की एक लिस्ट है। भाषा के भेदभाव को धम्म के बारे में भाषा में 'नाम' होने के बजाय, यहाँ 'व्यंजना की भाषा में नाम' है, जो धम्म और अट्ठ दोनों को दिखाता है। ज्ञान के चैप्टर (i 88-91) में पहले का विवरण, जहाँ चारों को 'समझ' भी कहा गया है, वैसा ही है। हम जो सीखते हैं वह यह है कि धम्म हैं आँख, ज्ञान, समझ, पहचान (विज्जा), रोशनी (@लोक), साथ ही पाँच क्षमताएँ, शक्तियाँ, ज्ञान के सात फैक्टर, रास्ते के आठ फैक्टर (i88-90) और चैप्टर XVI में दिए गए विवरण से जुड़े दूसरे। अट्ठ हैं अट्ठ (मतलब?) देखने का, जानने का, समझने का, पैठ का, रोशनी (ओभास), वे हैं ध्यान, लगाना, आधार, न फैलना, स्थिरता, भेदभाव (पविकाय), व्याप्त होना, शांत, विचार करना, आरोपण करना, अधिकार करना, से उठना, सफाई और बेशक दूसरे, सभी मिलते-जुलते धम्मों के रेफरेंस में। हम इनसे यह समझ सकते हैं कि अत्थ एक प्रोसेस है, या धम्म का काम करने का तरीका है (और उसी हिसाब से अपने ट्रांसलेशन बदल सकते हैं)। ऐसा काम या प्रोसेस शायद किसी मकसद या उद्देश्य, धम्म के किसी ऑब्जेक्ट को दिखाता है। अगर यह मिलता-जुलता 'मतलब' है, तो यह सिर्फ़ बहुत बड़े मतलब में है, जिसे हम 'धम्म का महत्व' कह सकते हैं, जो 'मतलब' और 'ऑब्जेक्ट' के बीच के गैप को भरने की कोशिश करता है (पाली के इतिहास या प्रीहिस्ट्री में किसी स्टेज पर शायद कोई गैप नहीं था)। हालांकि, पटिसंभिदामग्ग, अत्थ के बारे में विभंग की तरह नहीं सोचता, जहाँ अत्थ मुख्य रूप से एक धम्म लगता है जिसे कारण के बजाय एक असर के तौर पर माना जाता है (हम अभी महानाम की कमेंट्री को फॉलो नहीं कर रहे हैं, जो विभंग अकाउंट को पटिसंभिदामग्ग पर लागू करता है और उसे डिटेल में कोट करता है, पेज 3-5)। इस तरह ऐसा लगता है विभंग सिद्धांत से स्वतंत्र हो, या भेदभाव की अवधारणा के विकास में एक प्रारंभिक चरण को दर्शाए।

परिसंभिदामग्ग की प्रकृति

पटिसंभिदामग्ग पूरी तरह से प्रैक्टिकल है: यह 'भेदभाव' के तरीके या पथ को उसके अलग-अलग पहलुओं में समझाता है और यह दिखाने की कोशिश करता है कि समझ प्रैक्टिकल रूप से कैसे होती है, सिर्फ़ थ्योरी में नहीं। क्या होता है, और यह कैसे होता है, जब कोई बुद्ध के सिखाए गए सत्य या 'वास्तविकता' को समझता है या 'भेदभाव' करता है? थ्योरी बेशक ज़रूरी है, समझ या समझ, और यह इस पथ में शामिल है, साथ ही सीमित अर्थों में प्रैक्टिस भी।

कॉन्संट्रेशन, शांत करने वाली या 'शांति' (समता) जैसा कि हमारे टेक्स्ट में इसे कहा गया है। यह जोड़ी, इनसाइट (विपश्यना) और शांति, जिन्हें 'युग्मित' (युगानंधा) होना चाहिए और एक साथ काम करना चाहिए, यहाँ बुनियादी तौर पर पेश की गई हैं। ज्ञान, जैसा कि आनंद ने कहा (ü 92, यहाँ युगानंधा सुत्तंत, A ü 156 से कोट किया गया है), के लिए शांति और इनसाइट दोनों की ज़रूरत होती है और इन दोनों के बिना कोई भी इसे हासिल नहीं कर पाया है। असल में, उन्हें अलग-अलग परफेक्ट नहीं किया जा सकता: कॉन्संट्रेशन (शांति) तभी परफेक्ट हो सकती है जब उसे धम्मों की (इनसाइट) समझ से स्थिर किया जाए, जो कि अस्थायी, दर्दनाक और नॉन-सेल्फ हैं (जिन्हें बाद में सभी प्रिंसिपल्स की तीन यूनिवर्सल खासियतें कहा गया); लेकिन इनसाइट तभी परफेक्ट होती है जब 'कॉग्निजेंस' शांति की वजह से पूरी तरह शांत हो। ऐसी अंदरूनी सोच के साथ, और सभी 'असलियतों' को एक साथ 'भेदभाव' से समझने के साथ, यहाँ प्रेजेंटेशन बहुत सिस्टमैटिक है और हर चीज़ को हर चीज़ के साथ जोड़ा गया है।

दर्शन

हालांकि यह किताब पूरी तरह से प्रैक्टिकल है, यह एक ऐसा अभ्यास बताती है जो तभी मुमकिन है जब अभ्यासी असलियत के नेचर को समझे, जैसा कि अभी बताया गया है, इसका नेचर जैसा कि थेरवाद परंपरा में और खुद बुद्ध ने सिखाया है। इस फिलॉसफी का सार, जैसा कि यहां ज़ोर दिया गया है, लेकिन बुद्ध के सबसे मशहूर प्रवचनों में से एक (विन i 14 और Siii 67 f., जिसके ठीक पहले विन i 13f. और S iii 66f. उसी टॉपिक को और समझाते हैं) से लिया गया है, वह है नश्वरता, दुख (दर्द) और गैर-आत्मा (न-स्व) का ज्ञान। ये सिद्धांतों के पांच ग्रुप या 'एग्रीगेट' की खासियतें हैं, जिनसे हमारे अनुभव में सब कुछ बना है, सिवाय निब्बान के (संखाता, 'सिंथेसिसाइज्ड', 'बनाया हुआ')। हालांकि पटिसंभिदामग्ग में इन तीनों पर ज़ोर दिया गया है, लेकिन गैर-आत्मा पर ज़ोर शायद सबसे खास और फिलॉसफी के हिसाब से सबसे गहरा है। यह प्राइमरी भी लगता है: ऐसा इसलिए है क्योंकि कोई 'आत्मा', या पदार्थ या परमानेंट 'अस्तित्व' नहीं है, इसलिए सारा 'अस्तित्व' कुछ समय का है और यह असल में दुख या 'दर्द' या 'तकलीफ' है (ज़्यादा यूनिवर्सल 'दुख' पाली दुख के ज़्यादा करीब लगता है, जो इसके अलावा 'खुशी', सुख के उलट है; नानामोली 'दर्द' को पसंद करते हैं)।

आत्मा न होने का यह सिद्धांत बुद्ध की सभी फिलॉसफी, उन सभी कॉन्सेप्ट्स की असली आलोचना है जो ऐसी चीज़ें हैं जो असल में चीज़ें नहीं हैं, ऐसी चीज़ों के बारे में सभी प्रपोज़िशन्स की, जो झूठी हैं या यूँ कहें कि बेमतलब हैं। कोई चीज़ें (परमानेंट जीव या पदार्थ या आत्मा) नहीं हैं, सिर्फ़ धोनमा हैं, यानी ऐसे सिद्धांत जो कुछ समय के लिए नहीं हैं, अस्थिर और 'खाली' हैं। 'खाली' से बुद्ध का मतलब है, उनमें किसी परमानेंट चीज़ की गैर-मौजूदगी के अलावा, कि वे कंडीशन्ड या रिलेटिव हैं (

एक दूसरे के लिए), जो एक बराबर बात है। सभी पाली ग्रंथों में से, पटिसंभिदामग्ग ब्रह्मांड, 'पूर्वाग्रहों', धम्मों, खाली होने के विषय पर सबसे ज़्यादा डिटेल में बात करता है" (नानामोली 'शून्य' को ज़्यादा पसंद करते हैं)।

आत्मा न होने की थ्योरी से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है धम्म का मतलब 'सिद्धांतों' से है, जिसका सामना हमने ऊपर चार भेदभावों में किया है। ऐसा लगता है कि बुद्ध ने खुद यह नहीं कहा कि सिर्फ़ 'सिद्धांत' (और निब्बाण) ही असलियत हैं, लेकिन सुत्तंत में दर्ज उनकी कई बातों से यह साफ़ पता चलता है। उन्होंने इन सिद्धांतों के नेचर, उनमें 'आत्मा' की गैर-मौजूदगी वगैरह पर बात की है।

दीघ निकाय के दसुतर सुत्तंत में, जो असल में पटिसंभिदामग्ग में एक्सप्लेनेशन के लिए शुरुआती पॉइंट है, 550 धम्म बताए गए हैं और सभी को 'असली' (भूत; इन धम्मों के सेट में बहुत ज़्यादा डुप्लीकेशन है, इसलिए बाद में थेरवाद फिलॉसफी में उनकी संख्या बहुत कम हो सकती है) कहा गया है। उसी निकाय के पोत्तपद सुत्तंत में बुद्ध कहते हैं कि वे 'उस प्रैक्टिस को बताते हैं जो असली, सच्ची है, इस तरह, धम्मों और अस्तित्व के बीच धम्मों की रेगुलरिटी के ज़रिए मौजूद है' (1) i 190)। यह 'रेगुलरिटी' बुद्ध की बड़ी हाइपोथीसिस में से एक है, जो प्रैक्टिस और थ्योरी की नींव है। निदान संयुत्त में हम पढ़ते हैं: 'यह धातु (तत्व, सिद्धांत, आधार) स्थापित है, धम्मों के लिए एक स्थान है, धम्मों की रेगुलरिटी है, एक खास कंडीशन है। इस तरह से एक व्यक्ति को ज्ञान मिलता है' (S ii 25)। एक धातु बस एक और धम्म है, जब इसे किसी खास धम्म के होने की खास कंडीशन, उसके सोर्स या 'अयस्क' के रूप में देखा जाता है। इस रेगुलरिटी से धम्मनेस, धम्मता का कॉन्सेप्ट पैदा होता है, जो कुछ धम्मों की नैचुरल टेंडेंसी है जो दूसरों की ओर ले जाती है, उदाहरण के लिए खुशी से कॉन्संट्रेशन होता है, कॉन्संट्रेशन से असलियत को जैसा है वैसा जानने की ओर ले जाता है (Av 2-4)।

धम्मों के बारे में दूसरी बड़ी हाइपोथीसिस उनकी नश्वरता वगैरह की है, जिसे असल में एक हाइपोथीसिस के तौर पर नहीं बल्कि सीधे ऑब्ज़र्वेशन के तौर पर पेश किया गया है। यह बेशक पिछली हाइपोथीसिस से काफी मिलता-जुलता है, जो धम्मों के बीच बदलावों, उतार-चढ़ाव से जुड़ी है, जिसे फिर भी रेगुलर माना जाता है। जो धम्म पांच ग्रुप (एग्रीगेट) में शामिल हैं, उन्हें नश्वर, दुखी, बीमार वगैरह, और खाली और बिना आत्मा के देखा जाना चाहिए (Mi 435)। निब्बान पाने के लिए सभी धम्मों को बिना आत्मा के देखना चाहिए (A iv 14)। 'यह धातु स्थापित है, धम्मों के लिए एक जगह है, धम्मों की रेगुलरिटी है, सभी ताकतें (संखार) नश्वर हैं... यह धातु स्थापित है... सभी ताकतें दुखी हैं यह धातु स्थापित है... सभी धम्म बिना आत्मा के हैं' (A i 286)। इस आखिरी टेक्स्ट में रेगुलरिटी और इंपर्मैनेंस वगैरह की हाइपोथीसिस को मिलाया गया है। 'फोर्स' खुद ही धम्म हैं, कभी-कभी असल में सभी

धम्मों को कभी-कभी पांच ग्रुप में से एक ग्रुप 'बलों' तक ही सीमित रखा जाता है।

बुद्ध के देखे हुए धम्म सिर्फ़ अनुभव का कच्चा डेटा नहीं हैं, बल्कि उनके बारे में हाइपोथीसिस का एक सेट हैं। इसके अलावा, ज़्यादातर कच्चा डेटा, जैसे रंग और ज़्यादातर रोज़मर्रा की चीज़ें, लोग वगैरह धम्म नहीं हैं, जो ज़्यादा बुनियादी ताकतें, एलिमेंटल या प्राइमरी ताकतें हैं, चीज़ों की सतह की अनगिनत वैरायटी नहीं। इस तरह धम्म थ्योरी एलिमेंट्स की केमिकल थ्योरी जैसी है, जिसमें सौ या उससे ज़्यादा आखिरी सच्चाईयाँ हैं जो अनगिनत कंपाउंड और रोज़मर्रा की चीज़ों को बनाती हैं जिन्हें हम ऊपर-ऊपर से देखते हैं। बुद्ध के धम्म फिजिकल (पहले 'एग्रीगेट' में, यानी 'मैटेरियलिटी': 'धरती', 'पानी', वगैरह, और फिजिकल सेंस) और मेंटल दोनों हैं। किसी चीज़ पर फिजिकल सेंस का टकराना कोई अलग धम्म नहीं है, लेकिन अगर ऐसा अनुभव सोच में दिखता है तो यह 'कॉन्टैक्ट' (मिल, Psi 22) पैदा करता है, जो एक मेंटल धम्म है। यह एक ऐसी शक्ति है जो आगे के मानसिक धम्म पैदा करती है जैसे खुशी, दर्द, समझ (किसी चीज़ का एहसास या पहचान), इच्छा, चाहत, नफ़रत, वगैरह।

इन सच्चाइयों पर बुद्ध के प्रवचन पूरी तरह से बिना किसी इंसान के हैं (इस पर आर्टिकल "द कॉन्सेप्ट ऑफ़ ए कॉन्सेप्ट", जर्नल ऑफ़ इंडियन फिलॉसफी, 1971, 181 ff. देखें)। इसलिए जब उनसे पूछा गया कि 'चेतना का खाना कौन खाता है?' (यह 'खाना' पिछली चेतना, पिछला मानसिक अनुभव है) तो उन्होंने जवाब दिया: 'यह सही सवाल नहीं है। मैं 'खाता है' नहीं कहता... अगर आप पूछें कि 'यह किस चीज़ का खाना है', तो यह एक सही सवाल होगा। चेतना का खाना भविष्य में दोबारा जन्म लेने की शर्त है।' (S ii 13; IB पेज 119)। हम यह कहकर कुल मिलाकर कह सकते हैं कि निदान संयुत्त (Sii 1-133) में कंडीशन्ड ओरिजिन, यूनिवर्स में किसी भी परमानेंट एंटिटी के होने के सभी गलत विचारों के खिलाफ है (पहले चार निकायों में धम्म शब्द के इस्तेमाल की ज़्यादा पूरी समीक्षा जर्नल ऑफ़ इंडियन फिलॉसफी, 1971, 278 ff. के आर्टिकल 'धर्म और दाता' में की गई है)। यह एक एंपिरिसिस्ट फिलॉसफी है, न कि कोई स्पेक्युलेटिव सिस्टम, इस बात पर हर जगह ज़ोर दिया गया है: इस तरह से जाने वाले की कोई राय नहीं होती, बल्कि उसने असल में मैटर, इमोशन (फीलिंग), परसेप्शन, फोर्स और कॉन्शसनेस (पांच एग्रीगेट) और उनके ओरिजिन और खत्म होने को देखा है (M i 486, IB 141)।

पटिसंभिदामग्ग में धम्म शब्द के अनगिनत इस्तेमाल में से, जो उन सुत्तों को पहले से मानता है जिनका हमने अभी रिव्यू किया है, उनमें से 201 की गिनती (नानमोली की गिनती के अनुसार) पर ध्यान दिया जा सकता है (i 5-8)। धम्मों के लिए एक 'स्टेशन' होने का ज्ञान कंडीशन्ड ओरिजिन, उनके कॉज़ल या कंडीशनल रिलेशनशिप (i 50-2) का है। धम्म (फिर से लिस्ट किए गए) कुछ समय के लिए नहीं होते, दुखी होते हैं, जिनमें आत्मा नहीं होती। इन्हें समझने के बाद व्यक्ति सही तरीके से काम करता है और उनका 'महत्व' दिखाता है।

या प्रभाव' या 'अर्थ' (अत्थ, i 104-5)। सभी धम्मों को इस अर्थ में एक में शामिल किया जा सकता है कि वे सत्य, आत्मा रहित, आदि हैं। (i 105)। सभी धम्मों को 'एलियन' (परा) के रूप में सोचने से विचार खालीपन को समझता है और मुक्त हो जाता है (ii 48)। यदि कोई साधु किसी धम्म को आत्मा (स्वयं, पदार्थ) के रूप में सोचता है तो यह संभव नहीं है कि वह वास्तविकता के अनुरूप कोई 'चयन' करे और अरहंतत्व को महसूस करे (ii 237)।

सुत्तों में जो जाना जा सकता है, उसकी कैटेगरी का सिस्टम, जो अंदर ही अंदर है, उसे बाद में बुद्धदत्त (अभिधम्मवतार) और दूसरों ने बनाया। यह अभी भी पटिसंभिदामग्ग में छिपा हुआ है। हमारे पास पहले धम्म हैं, असली लेकिन अस्थिर। फिर 'कॉन्सेप्ट' (पण्णत्ति) हैं, जो इस हद तक नकली हैं कि वे धम्म के नाम हो सकते हैं (देखें 1132 110f., 150f.; उदाहरण के लिए भजन संहिता में i 195 पर, लेकिन यह शब्द अक्सर इस्तेमाल नहीं होता)। इसके बाद धम्म की 'विशेषताएँ' (लक्खन) हैं, जो भी कॉन्सेप्ट हैं क्योंकि वे किसी असली धम्म का ज़िक्र नहीं करते, बल्कि उनमें आत्मा, स्थायित्व या खुशी की कमी वगैरह का ज़िक्र करते हैं। फिर भी, वे असलियत को समझने के मतलब में उससे निपटते हैं। पाटिसर्न-भिदामग्ग में धम्मों का उत्थान, पतन और परिवर्तन 'विशेषताएँ' (ii 179) हैं, साथ ही 'बना हुआ (सभी धम्म) और 'बिना बना हुआ' (निब्बान, i 108) भी हैं। यह शब्द i 54 ff., 167, 191f में भी आता है। बाद के सिस्टम में, जो पाटिसंभिदामग्ग में 'स्व-स्वभाव' (सभाव, i 178-9, ट्रीटीज़ XX के लिए नानमोली का नोट । देखें) के कॉन्सेप्ट के साथ डेवलप होना शुरू हुआ, हर धम्म को उन यूनिवर्सल विशेषताओं के अलावा, जो वे सभी शेयर करते हैं, एक खास 'विशेषता' के साथ डिफाइन किया गया है। बुद्ध-दत्त की चौथी कैटेगरी निब्बान है। कभी-कभी धम्म कैटेगरी को फिजिकल और मेंटल और दूसरे तरीकों से सब-डिवाइड किया जाता है। महानाम ने पटिसंभिदामग्ग पर अपनी कमेंट्री (p.58) में एक पांचवीं कैटेगरी जोड़ी है, जिसका नाम है 'बदलाव' (विकार)। इसका मतलब है सभी धम्मों में मौजूद बदलाव, यानी उनके होने का यूनिवर्सल नियम, कंडीशन्ड ओरिजिन का फैक्ट। यह शायद पटिसंभिदामग्ग की फिलॉसफी में खास तौर पर सही है, जहाँ उठने, गिरने और बदलने पर बहुत ज़ोर दिया गया है। हालाँकि, बाद के थेरवाद में बुनियादी कैटेगरी सिर्फ़ दो हैं: असलियत (धम्म और निब्बान) और कॉन्सेप्ट (शब्द)।

चार गलतियों या 'खराबियों' की थ्योरी, जो पटिसंभिदामग्ग (ii 80-1, वगैरह) में साफ़ है, बस तीन यूनिवर्सल खासियतों का ही एक एक्सटेंशन है। ये गलतियाँ हैं दुख को खुशी मानना, नश्वरता को हमेशा रहना मानना और आत्मा न होने को हमेशा रहने वाली आत्मा मानना। बदसूरती या गंदगी को सुंदरता मानना चौथी गलती के तौर पर जोड़ा गया है। ये सभी एक ही डेटा, एक ही अनुभव, एक ही दुनिया पर लागू होते हैं, जिसे गलत तरीके से समझा गया है।

फिर से, ट्रीटीज़ II के कई गलत विचार या राय, किसी के अनुभव में 'आत्मा' या लगातार चलने वाली चीज़ की कल्पना करने की असली गलती पर आधारित हैं। कहा जाता है कि वे सभी दो बुनियादी बातों पर आते हैं।

ऐसी आत्मा को 'हमेशा रहने वाली' मानने या शरीर की मौत पर उसे 'खत्म' हो जाने की कल्पना करने की गलतियाँ।

इस किताब का चौथा 'भेदभाव', 'ज्ञान के बारे में ज्ञान', दिखाता है कि पूरे काम की ज्ञान-मीमांसा से जुड़ी प्रेरणा क्या हो सकती है। यह जानना कि हम जानते हैं, हमारे पास जो ज्ञान है (धम्म, अथ और भाषा का) उसके बारे में पक्का होना है। यहाँ इस्तेमाल किए गए कई दूसरे शब्द, खासकर 'अंतर्दृष्टि', 'समझ', 'अभिसमय' (अभिसमय), इस ज्ञान या भेदभाव या 'अंतर्ज्ञान' के बराबर हैं। यह बराबर है। सुत्तों से लिए गए शब्दों की एक श्रृंखला का महत्व पूरे अध्याय में दिखाया गया है Patisambhidāmaggo और इसे एकता देता है।

सभाव और रस

ऊपर बताए गए ट्रीटीज़ XX के लिए नानमोली के नोट 1 में बताया गया है कि सभाव, 'अपना स्वभाव' या 'व्यक्तिगत सार' शब्द, त्रिपिटक में बहुत कम मिलता है, हालांकि धम्म की कमेंट्री वाली परिभाषाओं में यह एक स्टैंडर्ड कॉन्सेप्ट है। वह कहते हैं कि उन्हें यह यहीं के अलावा कहीं नहीं मिला: हालांकि, यह बुद्ध-वंश (पेज 15, 11 167) में आता है, जो निश्चित रूप से कैनन में जोड़े गए सबसे नए टेक्स्ट में से एक है (पाली मीटर पेज 225 देखें)। सभाव वहां दो और बाद के शब्दों के साथ मिलता है:

ime dhamme sammasato sabhāvarasalakkhaṇe

'उसने इन धम्मों को अपने स्वभाव, पसंद और खासियतों के साथ समझा।' ज़ाहिर है, यह धम्मों को उनकी खासियतों, 'पसंद' (काम) और अपने स्वभाव के हिसाब से बताने के बाद के सिस्टम को पहले से ही मान लेता है, जो असल में पटिसंभिदामग्ग में भी नहीं मिलता, हालाँकि ये तीनों शब्द यहाँ इन खास टेक्निकल मतलबों के साथ पहले से ही डेवलप हो रहे हैं।

मौजूद थेरवाद ग्रंथों में, सभाव को सबसे पहले पेट-कोपदेश (पेज 104) में समझाया गया है, जहाँ कंडीशन्ड ओरिजिन पर चर्चा में कहा गया है कि 'कारण' (हेंट) धम्म का 'अपना नेचर' है जबकि 'कंडीशन' (पच्चया) 'दूसरा नेचर' (परभाव) है। इस तरह अपना नेचर खुद धम्म का नेचर है, जो उस सिचुएशन में होने वाला है, जबकि दूसरा नेचर दूसरा धम्म है जो उसके होने की कंडीशन है। अपने नेचर को आगे एक व्यक्ति के लिए 'इंटरनल' बताया गया है। चेतना की धारा और दूसरे नेचर को बाहरी (IB 318)। कमेंट्री में धम्म को एक शब्द के तौर पर ऐसे बताया गया है जिसका अपना नेचर होता है (IB 323; अर्थशालिंट 39)। हालाँकि, 'दूसरा नेचर' शब्द को हटा दिया गया है और सिर्फ़ 'कंडीशन' की बात की गई है। नानामोली ने अपने नोट में सिर्फ़ सबिरवा पर महानाम को कोट किया है। यहाँ परिसम-भिदामग्ग में एक मुश्किल है, क्योंकि इसमें कहा गया है कि भौतिकता (और दूसरे धम्म) खाली हैं।

(शून्य) सभावा ने, साफ़ तौर पर कमेंट्री (हालांकि तिपिटक नहीं) का खंडन किया है। महानाम पहले सुझाव देते हैं कि अपने स्वभाव से खाली का मतलब है अपने अलावा किसी और स्वभाव से खाली होना, जो शायद ही यकीन दिलाने वाला हो। फिर वह 'खालीपन को अपना स्वभाव मानने' की कोशिश करते हैं, जो निश्चित रूप से बेहतर है क्योंकि सभी धम्म आत्मा या पदार्थ से खाली हैं। फिर वह इस तर्क को खारिज कर देते हैं कि इसका मतलब है कि धम्म पूरी तरह से 'खाली' हैं, उनमें कोई सच्चाई नहीं है। धम्म असली हैं, मौजूद हैं, हालांकि सिर्फ़ कुछ समय के लिए।

हमें 'फंक्शन' के इस मतलब में टेक्निकल शब्द रस नहीं मिलता, यहाँ तक कि पेटकोपदेश में भी जब वह धम्म को डिफाइन करता है (IB 319)। यह सिर्फ़ कमेंट्री में हर धम्म के फंक्शन के तौर पर दिखता है, जैसे 'धरती' के मामले में 'सपोर्टिंग' (IB 323)। पटिसंभिदामग्ग इस शब्द को शुरुआती सुत्तों में 'टेस्ट' और कमेंट्री में 'फंक्शन' या 'अचीवमेंट' के बीच एक ट्रांज़िशनल मतलब में दिखाता है, हालाँकि, सुतियस में, टेस्ट के सेंस के ऑब्जेक्ट के तौर पर इसके रेगुलर मतलब के अलावा (इंग्लिश शब्द 'टेस्ट' साफ़ नहीं है), हम इस शब्द को विमुत्तिरस (A iv 203) में एक लाक्षणिक मतलब में इस्तेमाल पाते हैं, 'आज़ादी का टेस्ट'। यह बात पटिसंभिदामग्ग में दोहराई गई है, जैसे ii 88, जहाँ महानाम ने इसे दोहरे मतलब से पढ़ा है (पेज 582)। पहले वे कहते हैं कि इसका मतलब आज़ादी की 'हासिली' (संपत्ति) है, इस तरह इसे कमेंट्री शब्द का टेक्निकल मतलब दिया गया है (cf. PsA 14, 134, 443, रस का मतलब है किच्चा या संपत्ति)। फिर वे कहते हैं (अथ वा, शायद यह इशारा करते हुए कि यही असली मतलब है) कि इसके बदले में रस का मतलब आज़ादी का 'प्यार' या 'खुशी' है। 'खुशी' के पुराने मतलब और 'हासिली' के बाद के मतलब के बीच, हम इत्तेफ़ाक से, रस की शुरुआत उसके दूसरे टेक्निकल मतलब में देख सकते हैं, जो पुराने भारतीय थिएटर में एक्टर्स की टेक्नीक (नाट्यशास्त्र VI) के हिस्से के तौर पर शुरू हुआ, असल में उनके परफॉर्मेंस का एक करने वाला मकसद, और जिसका मतलब एस्थेटिक एक्सपीरियंस बन गया। यह एस्थेटिक इस्तेमाल हमें यह समझने में मदद करता है कि थेरवाद में रस को वह अनएक्सपेक्टेड टेक्निकल मतलब कैसे मिला जो कमेंट्री में है। पटिसंभिदामग्ग में इसका मतलब 'फंक्शन' है, जहाँ अक्सर 'सिंगल-फंक्शन' शब्द का इस्तेमाल होता है, जो दो या दो से ज़्यादा धम्मों का एक साथ काम करना है (1 §§ 24, 134)।

बुद्धवंश के अलावा, रस शब्द का इस्तेमाल कमेंट्री के तौर पर एक और बाद के तिपिटक टेक्स्ट, अपादान (V1.81) में भी मिलता है, जहाँ कमेंट्री (APA 283) में इसका मतलब 'फंक्शन' (किच्च) बताया गया है। इस तरह ये टेक्स्ट पटिसंभिदामग्ग से बाद के लगते हैं, जिसकी तारीख के बारे में हम नीचे और बात करेंगे।

पटिसंभिदामग्ग के तीस ग्रंथ

इस किताब के तीस "ट्रीटाइज़" में से पहला अब तक का सबसे लंबा है, जो टेक्स्ट का लगभग एक तिहाई हिस्सा है। इसे 73 'चैप्टर' में बांटा गया है, जिनमें से

पहला, फिर से, अब तक का सबसे लंबा है। यह फिर से 'सेक्शन' में बंटा हुआ है, जिसमें पहला सबसे लंबा है। इस तरह किताब की रफ़्तार में एक तरह की तेज़ी है, जो थेरवाद की रचनाओं में एक आम बनावट है, क्योंकि स्टूडेंट, जो पहले धीरे-धीरे पढ़ता है, बाद में जल्दी-जल्दी आगे बढ़ता है।

पहला ग्रंथ इतना मुश्किल होने के कारण, आइए इसके कई चैप्टर देखने से पहले बाकी 29 पर एक नज़र डालते हैं। असल में, मुख्य ग्रंथ भेदभाव (XVI) पर है, जिससे पूरी किताब को अपना नाम मिला है। क्योंकि भेदभाव को 'ज्ञान' के रूप में बताया गया है और यह ग्रंथ इस बात से जुड़ा है कि जब बुद्ध ने पहली बार 'असलियत' सिखाई थी, तो किसी ने उन्हें कैसे समझा था, जिसमें चौथे भेदभाव के रूप में यह ज्ञान भी शामिल है कि किसी के पास ज्ञान है, इसलिए पहले ग्रंथ के रूप में ज्ञान के संबंधित प्रकारों के संग्रह को जोड़ने का विचार स्वाभाविक रूप से आया होगा। अगला ग्रंथ XVII, 'सच्चे विचार के चक्र' के घूमने पर, इस पहली शिक्षा के उसी धम्म-चक्कप्पवत्तन सुत्तंत पर ग्रंथ XVI का एक अपेंडिक्स है। किताब का यह दूसरा 'डिवीजन' (ग्रंथ XI से XX) किसी भी आत्मा या स्वयं के सभी धम्मों की शून्यता या खालीपन पर बहुत महत्वपूर्ण और जाहिर तौर पर ज़्यादातर नए ग्रंथ XX के साथ खत्म होता है। यह दूसरा भाग (XI) भी उतना ही ज़रूरी 'युगल', 'शांति' और 'अंतर्दृष्टि' से शुरू होता है, जो ध्यान और ज्ञान, या एकाग्रता और समझ का दोहरा तरीका है, लेकिन जिनका 'एक ही काम' है (रस, इसके टेक्निकल मतलब में जिसकी अभी बात हुई है), वे एक साथ जुड़े हुए हैं, और निब्बान के रास्ते के तौर पर मिलकर काम करते हैं, जैसा कि पूरा पटिसंभिदामग्ग कहता है। इसके बाद 'असलियतों' (XII) पर एक किताब है, जो किताब के मुख्य विचार के हिसाब से एक ही बार में 'समझी' जाती है। तीसरा 'भाग' (XXI से XXX) 'बड़ी समझ' (XXI) से शुरू होता है, जहाँ सबसे बड़ी 'हंसी वाली समझ' एक बार फिर चौथा विवेक है। इसके ग्रंथों में 'कनवर्जेंस' (XXIII) शामिल है, जो इस सवाल से करीब से जुड़ा है कि कोई असलियत को कैसे 'जानता' है, और फिर 'इनसाइट' (XXIX), जो नश्वरता, दर्द और खुद से अलग होने को देखना है, जहाँ से निब्बाण के साथ 'कन्फर्मिटी' आती है।

दूसरे और तीसरे भाग के दूसरे ग्रंथ, बल्कि इससे संबंधित हैं
इस जोड़े ने अपने रास्ते का प्रैक्टिकल पहलू भी बताया, लेकिन कभी भी इस बात को नज़रअंदाज़ नहीं किया कि
थ्योरी। ग्रंथ XIII ज्ञान के कारणों पर है, ग्रंथ XIV प्रेमपूर्ण दया (दयालुता से विचारों को आज़ाद करना) पर है और ग्रंथ XV 'लुप्त होने' (वैराग्य) पर है, जिसका नतीजा फिर से मुक्ति या 'मुक्ति' होता है। ग्रंथ XVIII 'अलौकिक' पर है, जो ज्ञान की तरफ 37 धम्मों, रास्ते के चार चरणों और उनके नतीजों और निब्बान पर है। ग्रंथ XIX कई तरह की 'शक्तियों' या ताकत (बल) पर है, जो किसी भी विकसित हो रहे विचार को अटल बनाती हैं। ग्रंथ XXII 'सफलता' या शक्ति (इद्धि) पर है, जिसमें इच्छा, विचार, ऊर्जा को एक जगह जमा करने और सबसे पुराने सिद्धांत की जांच के लिए शक्ति के आधार शामिल हैं, लेकिन इसमें और भी बातें जोड़ी गई हैं।

'और भी बहुत सी शक्तियाँ'। ग्रंथ XXIV 'एकांत' (अलगाव) पर है और XXV रास्ते पर इस्तेमाल होने वाले कई धम्मों के 'व्यवहार' या असरदार काम पर है, जिसमें काम के साथ-साथ काबिलियत, रास्ते के फैक्टर वगैरह भी शामिल हैं (ज़्यादातर ये इन धम्मों के अर्थ, मकसद या 'मतलब' जैसे ही होते हैं)। ग्रंथ XXVI अलौकिक शक्तियों और निर्देशों के 'चमत्कारों' पर है। 'एक ही सोच' (XXVII) निब्बान के रास्ते के आखिर का एक उदाहरण है, जब किसी भी और हर धम्म से जुड़ा काम एक ही नतीजा देता है, यानी सभी 'गंदगी' को खत्म करना। ग्रंथ XXVIII 'माइंडफुलनेस की नींव' पर है ('खुद पर काबू' का आधार या उस पर ध्यान देना जो पूरे 'रास्ते' या रास्ते का आधार है)। ग्रंथ XXX बस कुछ समझाने वाले नोट्स हैं। बाद के ग्रंथ अधिकतर संक्षिप्त हैं और अक्सर ग्रंथ 1, III और IV में दी गई सामग्री को दोहराते हैं।

पहले भाग में, ज्ञान पर ग्रंथ के बाद राय या (गलत) 'विचारों' (II) पर ग्रंथ आता है, यानी जो ज्ञान नहीं है, उसमें इस विषय पर सुत्तों (मुख्य रूप से दीघ निकाय में ब्रह्म-जाल) में जो मिलता है, उसे मिलाया गया है। इसके बाद 'सांस लेने' पर सबसे प्रैक्टिकल और शुरुआती एक्सरसाइज आती है, जो 'माइंडफुलनेस' (III) का शुरुआती पॉइंट है। इसके बाद वे (पांच) क्षमताएं आती हैं जो बुराइयों को दूर करने की प्रैक्टिस में सबसे ज़्यादा असरदार होती हैं (IV)। इसलिए उन्हें अच्छी तरह समझना चाहिए, और वे कैसे काम करती हैं, खासकर रास्ते के संबंध में, और उन्हें 'शुद्ध' और डेवलप किया जाना चाहिए ताकि वे अच्छे से काम करें। 'मुक्ति' शुरुआती माइंडफुलनेस एक्सरसाइज से आगे एक और स्टेज बनाती है और साफ तौर पर शून्यता (खालीपन), आत्मा न होना और समझ या ज्ञान के दूसरे पहलुओं (V) को सामने लाती है। इस थ्योरेटिकल पहलू पर 'विकृतियों' या गलतियों पर ग्रंथ (VIII) में फिर से बात की गई है। बीच में हमारे पास 'डेस्टिनेशन' हैं, दूसरे शब्दों में पुनर्जन्म (VI), और कामों पर एक छोटी सी किताब है, जिन्हें रिज्यूम (VII) के समय के हिसाब से बांटा गया है। किताब IX रास्ते के आठ फैक्टर्स, ज्ञान के फैक्टर्स, काबिलियत और दूसरे टॉपिक्स के संबंध में (चार) रास्तों (स्ट्रीम-एंट्री, वगैरह) पर है। 'पीने के लिए बढ़िया एक्सट्रैक्ट' एक साधु (X) की 'सबसे अच्छी ज़िंदगी' या अच्छी ज़िंदगी की तारीफ़ में है। यह मिली-जुली शांति और समझ को ऐसे पेश करता है जैसे कि आने वाले दूसरे डिवीजन की तैयारी कर रहा हो, हालांकि रास्ते के इन ज़रूरी पहलुओं को पहले ट्रीटीज़ की शुरुआत में ही थोड़ा बताया जा चुका है। 'एक्सट्रैक्ट' ही 'मतलब' हैं।

पहला ग्रंथ (जिसमें अकेले ही शुरुआती विषय-सूची या 'शेड्यूल' है) परंपरा में सुनी-सुनाई बातों के ज्ञान से शुरू होता है, जिसे दीघ निकाय (अध्याय 1) के दसुतर सुत्तंत की माटिकाओं ('शेड्यूल', लेकिन सिंचाई नहरें, जिन्हें मारिका भी कहा जाता है, जैसा कि गांतिपद में बताया गया है, पेज 1.60, मतलब को चैनल करते हुए) से आउटलाइन में पेश किया गया है। इसके बाद जो ज्ञान है, वह कुछ हद तक प्रैक्टिकल है:

गुण (II) और एकाग्रता का विकास (111); और आंशिक रूप से सैद्धांतिक: कारण संबंध (IV)।

फिर हमारे पास एक बहुत ज़रूरी सीरीज़ है, जो थेरवाद के बाद के इतिहास में निब्बाण के रास्ते की प्रैक्टिस में खास है और जिसे 'अंतर्दृष्टि ज्ञान' के नाम से जाना जाता है। पुरानी अट्ठकथा परंपरा ने शायद इन्हें पाटिसंभिदामग्ग (अट्ठसालिनी पेज 351-2) के इसी संदर्भ से डेवलप किया था। विशुद्धिमग्ग में इनके बारे में और बताया गया है (चैप्टर XX, §§ 2, वगैरह देखें, और 93, और XXI, XXII §§ 107 और 112 भी देखें) और ये अभिधम्मिन की कुछ बाद की किताबों में दस गहरी समझ वाले ज्ञान या गहरी समझ के विकास के दस स्टेज के तौर पर सबसे सिस्टमैटिक तरीके से मिलते हैं (परमत्तविनिच्चय 983-1020, अभिधम्मत्तसंघ पेज 44, जहाँ लाइन 1 को भमग पढ़ना चाहिए, और सबसे डिटेल में नामरूपपरिच्छेद 1641-3 और उसके बाद के चैप्टर और उससे पहले वाले चैप्टर में)। बुद्धदत्त की पहले की किताब विशुद्धिमग्ग से काफी मिलती-जुलती है और शायद उन्हीं अट्ठकथा सोर्स (अभिधम्मवतार के चैप्टर XX और XXI) से ली गई है। सच्चसंक्षेप में धम्मपाल ने अपने चैप्टर V में निब्बान के बारे में बताया है, जो इसका रास्ता है। ये ज्ञान पटिसंभिदामग्ग के पहले ग्रंथ के चैप्टर V में 'समझ' (धम्म के सभी 'रूपों' या 'समूहों' में तीन यूनिवर्सल विशेषताओं की, cf. सम्मास सुत्तंत, Sii 107ff.) से शुरू होते हैं। इसके आधार पर हमारे पास 'उदय और पतन का चिंतन' (VI), 'अंतर्दृष्टि जो विघटन के चिंतन की समझ है' (VII), 'खतरा' (VIII) और 'रूपों के बारे में समभाव' (IX) है।

इन पाँच ज्ञानों (जिन्हें बाद में दस अंतर्दृष्टि ज्ञान के रूप में बताया गया) के बाद, या यूँ कहें कि उनके चरम पर, हमें अजीब तरह से 'वंश-परिवर्तन' ज्ञान (X, गोत्रभू) मिलता है। पाठ इसे सभी रूपों पर 'जीत' (पर काबू पाना) और निब्बाण में प्रवेश करने के रूप में समझाता है, इस प्रकार रूपक रूप से यह पुनर्जन्म के 'कुल' (गोत्र) पर विजय है। ऊपर बताई गई बाद की परंपरा (Asl. 352, आदि) में भी यह अंतर्दृष्टि ज्ञान के तुरंत बाद आता है और अट्ठशालिंत में यह वास्तव में उनमें से एक है। लेकिन बाद में रूपक को इस विचार में और विस्तार दिया गया कि निब्बाण का एक विरोधी 'कुल' होता है जिसमें कोई व्यक्ति मार्ग पर सफल होकर शामिल होता है, इसलिए निनामोली का अस्पष्ट अनुवाद 'वंश-परिवर्तन' (विशुद्धिमग्ग के बाद, अध्याय XXII की शुरुआत में) है। बुद्धदत्त (अभा श्लोक 1321) कहते हैं कि, गोत्रभू में, गोत्र का मतलब निब्बाण है, हालांकि इसके आगे वे 'आम लोगों' के कुल की 'जीत' जोड़ते हैं। हमारे टेक्स्ट में निब्बाण के 'कुल' का कोई हिंट नहीं मिलता। महानाम, इस पर कमेंट करते हुए (पेज 275), एक अनजान पकरण (प्रकरणपाद नहीं, पक्का?) कोट करते हैं, जो बुद्ध-दत्त की तरह कहता है कि गोट्टा (sic) का मतलब निब्बाण है, लेकिन यह भी जोड़ता है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि यह सभी हमलों (ट्रांसमाइग्रेशन के) से 'प्रोटेक्ट' (गुट्टा) कर रहा है। महानाम इस बारे में शक में लगते हैं और, हालांकि वे एक लाइन कोट करते हैं

विशुद्धिमग्ग में, उन्होंने वहाँ बताए गए आर्य वंश के बारे में कुछ नहीं कहा (इस विचार को महायान में बहुत विस्तार से बताया गया है, IB 363-4, वगैरह देखें)।

इसके बाद हमारे पास चार रास्तों (XI) और उनके नतीजों (XII), मुक्ति (XIII), रिव्यू (XIV) और 'अंतरों' की सीरीज़ (XV-XIX) पर एक नोट है। इन अलग-अलग चैप्टर्स में से आखिरी में 'वैराग्य' (§§407-8) पर एक नोट है, जिसे बाद की परंपरा 'अंतर्दृष्टि ज्ञान' में रखती है (गणितपद ने एक श्लोक का हवाला देकर इस पर ध्यान दिया है जिसमें इसे उनमें शामिल किया गया है, पेज 149)। फिर 'जो जाना जाता है' (XX), फैसला (XXI), त्याग (XXII), ज़रूरी 'एकल काम' (XXIII) और 'आवाज़' (जांच, XXIV) के बाद चार भेदभाव (XXV-XXVIII), प्रैक्टिकल जोड़ी 'रहना' और 'पाना' (XXIX-XXXI) और निब्बान (XXXII-XXXVII) तक ले जाने के कई तरह के विवरण हैं। अगले ज्ञान और भी अलग-अलग हैं, या उन मामलों के पहलू हैं जिन पर पहले ही बात हो चुकी है (XXXVIII-XLIII)। फिर हमारे पास बुराइयों से 'दूर हटने' की एक सीरीज़ है (XLIV-XLIX)। इसके बाद कॉन्संट्रेशन में 'सफलता' (L), 'कान के सिद्धांत की शुद्धि' (LI), 'इच्छाओं का प्रवेश' (LII), पिछले जीवन की याद (LIII), 'दिव्य नेत्र' (LIV) और 'कर्मों का खत्म होना' (LV) के आधार आते हैं, जो छह 'सीधे-ज्ञान' हैं। इसके बाद चार वास्तविकताएँ (LVI-LXIII) और चार भेदभाव (LXIV-LXVII) आते हैं। जैसा कि हमने देखा है, वास्तविकताएँ भेदभाव से बहुत करीब से जुड़ी हुई हैं क्योंकि वे धम्मचक्कप्पा-वत्तन सुत्तंत का कंटेंट थीं। महानाम (p.390) बताते हैं कि यहाँ भेदभाव पर यह एक्स्ट्रा चर्चा उन्हें असलियत से जोड़ने के लिए है, जिसे गंथिपाद में विभंग के बाद डिटेल में समझाया गया है (p. 177)। यह भी सही होगा कि उन्हें सभी ज्ञान का निचोड़ माना जाए, जिसके बाद सिर्फ़ वे छह ज्ञान आते हैं जो बुद्ध के खास हैं, जिसमें उनकी महान करुणा (LXXI) और उनकी सब कुछ जानने की शक्ति (LXXII) शामिल हैं।

पहले ग्रंथ का पहला चैप्टर 'सीखने' की अपनी माटिका से शुरू होता है, जिसमें वे धम्म शामिल हैं जिन्हें 'सीधे-जानना' है, 'पूरी तरह से समझना' है, छोड़ना है वगैरह, जो दसुतर सुत्तंत से लिए गए हैं लेकिन फिर से अरेंज किए गए हैं। इसका सेक्शन i फिर पहला सेट दिखाता है, जिन्हें सीधे-जानना है, और इसे धम्मों की कई दूसरी माटिकाओं या 'सीरीज़' (नानामोली) के साथ डिटेल में बताता है, जिसमें शांति और समझ और उनका मिलना (§§ 24, 42) शामिल हैं। सेक्शन इसी तरह उन धम्मों को दिखाता है जिन्हें पूरी तरह से समझना है, सेक्शन iii उन्हें छोड़ देना है, सेक्शन iv उन्हें डेवलप करना है ('सिंगल फंक्शन' के मुख्य आइडिया को लाते हुए) और सेक्शन v उन्हें 'रियलाइज़' करना है। सेक्शन vi से ix, अब तक अपनाए गए दशत्तर सिस्टम से अलग हैं ताकि मेडिटेशन के संबंध में 'डिमिन्यूशन', 'स्टैगनेशन', 'डिस्टिंक्शन' और 'पेनेट्रेशन' को लाया जा सके, जिन्हें सोर्स (Diii 277) में सिर्फ़ चार कंसंट्रेशन के तौर पर बताया गया है, लेकिन समझाया नहीं गया है। सेक्शन

x से xii तीन (यूनिवर्सल खासियतें) नश्वर, दुखी (दर्दनाक) और गैर-आत्मा (नॉट-सेल्फ) को सामने लाते हैं। सेक्शन xiii से xvi इस चैप्टर को चार असलियतों के साथ खत्म करते हैं, जिन्हें यहाँ डिटेल में समझाया गया है।

इस पहले चैप्टर पर कोई यह कह सकता है कि यह सारी 'सीखना' या ज्ञान सिर्फ़ इसलिए जाना जाता है क्योंकि इसे 'सुना' (सुता) गया है; यह अभी रास्ता या पथ नहीं है। जो इस तरह 'जाना' गया है, उसे अब असल में अनुभव करके और 'अंतर्ज्ञान' (पतिभाना, नानामोली के ट्रांसलेशन में 'पर्फ़िशिएंसी') से जाना जाना चाहिए, जो ज्ञान का (असली) ज्ञान है।

प्रथम अध्याय की मतिकाएँ या श्रृंखला

दसुतर सुत्तंत की मतिकाओं को छोड़कर, नानामोली ने अपनी इंडेक्स के आखिर में उन मतिकाओं को इकट्ठा किया है, जो सुत्तों के पहले के सेट पर आधारित होने के बावजूद, जिस रूप में वे यहाँ दिखाई देती हैं, उसमें 'द पाथ ऑफ़ डिस्क्रिमिनेशन' के लिए खास लगती हैं। ये हैं:

201 धम्म = 'सभी' धम्म (भौतिकता, वगैरह; ये पाँच समूह हैं जिनमें सभी शामिल हैं, इसके बाद इंद्रियाँ और उनके विषय, चेतना वगैरह आते हैं और स्थितियों के क्रम के बारह स्रोतों या सदस्यों के साथ खत्म होते हैं; इसकी तुलना अभिधम्म के पुराने थ्योरेटिकल और एनालिटिकल, या 'सवालों वाले', माटिकाओं से की जा सकती है)।

B ज्ञान और मार्ग की क्षमताएं, शक्तियां, फैक्टर्स वगैरह, जिसमें ज्ञान की तरफ के धम्म का हिस्सा भी शामिल है (ये सीधे प्रैक्टिस से जुड़े हैं और इनकी तुलना पुराने 'बिना सवाल' वाले माटिका से की जा सकती है; नानामोली ने इनकी तुलना 'मीनिंग्स' से करने के बारे में सोचा, लेकिन जैसा कि ऊपर बताया गया है, 'ऑब्जेक्टिव्स' यहां बेहतर तरीके से मतलब समझ सकते हैं)।

C 'सात रुकावटों के विपरीत', यानी त्याग, वगैरह, ज्ञान वगैरह (अच्छे या 'फायदेमंद' धम्म)।

D लालच, वगैरह, जो 'अपवित्रता' (बुरे या फ़ायदेमंद धम्म) के बराबर है।

पुनर्जन्म के पंद्रह पहलू या धम्म (संसार, इनका निषेध निब्बाण है)।

F kasiṇas, वगैरह (कंसेंट्रेशन के तरीके या सब्जेक्ट)।

विज्ञापन... एहसास (उच्च प्रशिक्षण, § 265)।

H चार रास्ते और हर एक से खत्म हुई कमियां।

1 उत्साह निभाना जो अमर में विलीन हो जाता है (§43, ग्रंथ 1 के लिए नोट 20 देखें)।

पातिसंभिदामग्ग थेरवाद का शास्त्र (पाठ्यपुस्तक) है

महान विभाजन के समय में रचित, पाटिसंभिदामग्ग, कथावत्थु का एक सकारात्मक प्रतिरूप प्रतीत होता है। जबकि यह

पॉइंट्स ऑफ़ कॉन्ट्रोवर्सी बौद्ध धर्म के दूसरे स्कूलों के सिद्धांतों को गलत बताती है, द पाथ ऑफ़ डिस्क्रिमिनेशन थेरवाद के माने हुए सिद्धांत को बताती है। थेरवाद का कोई स्टूडेंट, इस किताब को विशुद्धि-मग्ग के संदर्भ में और ज़रूरी सुत्त ग्रंथों की व्याख्या के तौर पर देखे, तो शायद इसमें कुछ भी विवादित न दिखे: यह निभाना के 'रास्ते' को पॉजिटिव तरीके से पेश करने में बहुत प्रैक्टिकल और एक सोच वाली लगती है और आखिर में बौद्ध धर्म के महान सत्यों को बताने में बहुत सीधी लगती है। हालाँकि, इसके लिखे जाने के संभावित समय के संदर्भ में, और जिसने भी बौद्ध धर्म के इतिहास और इसके कई स्कूलों के बनने की कहानी पढ़ी है, उसे यह किताब बिल्कुल अलग पहलू दिखाती है। इन पहलुओं के बीच कोई विरोध नहीं है: निर्वाण का रास्ता बताते हुए, द पाथ ऑफ़ डिस्क्रिमिनेशन, जैसा कि सुत्तों ने सही ठहराया है, थेरवाद के खास सिद्धांतों पर ज़ोर देती है जो इसे पुराने बौद्ध धर्म के दूसरे सत्रह (या उससे ज़्यादा) स्कूलों से अलग करते हैं। आइए देखें कि ये सिद्धांत क्या थे और पातिसम-भिदामग्ग ने इन्हें कैसे बताया। बेशक, कथावत्थु में इनका ज़िक्र तब किया गया है जब उसने इनका खंडन करने वालों को गलत बताया, लेकिन बौद्ध धर्म के दूसरे स्कूलों से इन्हीं विवादों के बारे में जो जानकारी मिली है, उसकी रोशनी में ये और भी साफ़ हो जाती हैं (देखें IB[2] पेज 12-3, 216-7, 240-2, 274-8, 288-9, 295-6, 308; हमारे पहले पॉइंट के लिए नीचे 'द घोस्ट्स ऑफ़ निर्वाण', बुद्धिस्ट स्टडीज़ वॉल्यूम VIII, 1979, पेज 169-79 भी देखें):

1. निब्बान एक है, हालांकि इसके कई नाम हैं (इसलिए महानामा, पेज 161, Ps 1 §239 पर कमेंट करते हुए; Ps खुद इतना पॉजिटिव नहीं है, लेकिन निब्बान हमेशा एक ही तरह का दिखता है; यह 'खत्म' या 'बिना बना हुआ' होने जैसा ही है, असम्खत, जो सभी 'बनावों' या 'बने हुए', सम्खतों का निषेध है, जहाँ से, महानामा कहते हैं, इसके कई नाम आते हैं; कुछ खास Ps कॉन्टेक्स्ट हैं 1 § §22, 34, 436, 462, 470; V 47, 85, 90, 98; XII 4; XX 6)। थेरवाद के स्टूडेंट को यह बात साफ़ लगनी चाहिए और कथावत्थु इस बात की बेतुकी बात बताते हैं कि अगर 'अनगढ़' लोगों की इतनी ज़्यादा संख्या है, तो दो या उससे ज़्यादा निब्बान होना, कई स्कूलों के मामले में तो नौ निब्बान तक होना, कितना बेतुका है। बेशक, दूसरे स्कूल इसे नहीं मानेंगे, और अनगढ़ और निब्बान के बीच सिर्फ़ एक, या शायद दो का फ़र्क रखेंगे। लेकिन अगर निब्बान दुनिया की हर चीज़ का, यहाँ तक कि जगह का भी (भजन 1 §5, वगैरह में सिर्फ़ एक कसीना), पूरी तरह से पारलौकिक है, जगह में नहीं है, बल्कि हमारे अनुभव में ज़्यादा आसानी से ओवरलैप करने के बजाय, खासकर 'उपलब्धियों' के ज़रिए, पूरी तरह से अलग है, तो यह नज़रिए में एक बड़ा फ़र्क लाता है। थेरवादियों का निब्बान को ट्रांसमाइग्रेशन (संसार) से पूरी तरह अलग करना, अरहंत होने के उनके निरपेक्ष, इर्रिवर्सिबल नेचर के नज़रिए से पूरी तरह मेल खाता है (नीचे देखें)। 'द घोस्ट्स ऑफ़ निर्वाण' में हमने पाया कि सिर्फ़ वज्जिपुत्तक (वत्सिपुत्री-यस, पेज 170) और ज़ाहिर तौर पर बहुसूतिक (बहुश्रुतिय्यस, पेज 171) ही इस विचार से सहमत थे कि निर्वाण, या अनगढ़

(बिना सिंथेसिस के), एक है (सुत्तवादियों या सौत्रान्तिकों का बाद का स्कूल, पेज 172, एक कदम और आगे बढ़कर निभाना को पूरी तरह खत्म होने या गैर-मौजूदगी तक कम कर देता है)।

2. समझ (अभिसमय) एक साथ आती है (Kvu 2121f.) और चारों 'असलियतें' एक साथ समझी जाती हैं। पटिसंभिदामग्ग का मुख्य मकसद यह दिखाना लगता है कि यह कैसे होता है, चार पहचानों के ज़रिए और खासकर उनमें से चौथे, 'अंतर्ज्ञान' या 'स्पष्टता' (पटिह्हाना) के ज़रिए, जो दूसरे टेक्स्ट में इंग्लिश 'इंस्पिरेशन' और स्पॉन्टेनियस 'इम्प्रोवाइज़ेशन' (A ii 230, इंडियन काव्य लिटरेचर वॉल्यूम II §§ 541 और 548: सारिपुत्त इन Si 190) या (संस्कृत में प्रतिभा के रूप में) 'जीनियस' (भामह 1. 5) के करीब आता है। इन सभी इस्तेमाल में अंदरूनी आइडिया अचानक 'अंतर्ज्ञान' का आना लगता है जिससे कुछ महसूस या जाना जाता है (और बाद के मामलों में एक कविता बनती है)। अब जब बुद्ध ने अपने ज्ञान प्राप्ति के तुरंत बाद पहली बार 'पांच भिक्षुओं के ग्रुप' को संबोधित किया, तो कहा जाता है कि 'जब यह प्रवचन दिया जा रहा था, तो आदरणीय कोंडान्या में सच्चे विचार की बेदाग, बेदाग आंख इस तरह उठी: जो कुछ भी होने वाला है, वह खत्म होने वाला है।' (नीचे ग्रंथ XVI, §1)। साफ है कि कोंडान्या को 'एक ही बार में' समझ मिली, न कि किसी धीरे-धीरे सिखाए जाने की प्रक्रिया से। हालांकि, यह लेख बुद्ध के इस विवरण को और साफ करता है कि उन्होंने खुद कैसे 'उठी हुई आंख, उभरा हुआ ज्ञान, वगैरह' का अनुभव किया, उन धम्मों के बारे में जिनके बारे में पहले कभी नहीं सुना गया था, दूसरे शब्दों में, ज्ञान प्राप्ति के समय असलियत और दूसरे धम्मों का अचानक एहसास। ट्रीटीज़ XII में हमें इस बारे में और जानकारी मिलती है कि कैसे चारों असलियतों में एक 'सिंगल पेनेट्रेशन' (§§ 6ff.) होता है, उन्हें एक ज्ञान के तौर पर समझा जाता है जिसके कई (एक करने वाले) पहलू होते हैं, जैसे कि सत्य, अनात्मा, नश्वरता वगैरह। शांति और समझ का 'सिंगल फंक्शन', जिससे अकेले अरहंतत्व हासिल होता है, आखिरी समझ की उसी एकता पर ज़ोर देता है (ट्रीटीज़ XI)। यही फंक्शन डेवलपमेंट में काबिलियत, ताकत, ज्ञान के फैक्टर और रास्ते के फैक्टर पर भी लागू होता है (ट्रीटीज़ 1 §134), असल में किसी भी डेवलपिंग में (§29 और §§ 413-5)। ट्रीटीज़ I का चैप्टर XXII 'तुरंत नतीजे के साथ कंसंट्रेशन', यानी आसवों का खत्म होना, अरहंतत्व, इसी बात पर ज़ोर देता है। बाकी सत्रह पुराने स्कूलों में से, सिर्फ़ करीबी महिमशासकों ने ही इस सिद्धांत को माना कि समझ एक ही बार में आती है, 'धीरे-धीरे' नहीं, हालांकि एकब्बोहारिकों का मानना था कि 'सभी धम्म एक ही पल में समझ में आ जाते हैं', जो इससे जुड़ा हो सकता है (IB2 295-6)।

3. जैसा कि ऊपर बताया गया है, अरहंत दोबारा नहीं जा सकता, यह बात निब्बान के असली स्वभाव से अच्छी तरह मेल खाती है, और शायद इसी ने इस विचार को प्रेरित भी किया हो। इस बात का सीधा इशारा इस बात में किया गया है कि 'जब एक भिक्षु के ज़ख्म खत्म हो जाते हैं, तो उसकी समझ... पूरी तरह से ज़ख्म बढ़ाने वाले विचारों (धम्मों) से दूर हो जाती है' (XIX §26, ef. 1 §468)।

नहीं तो, 'विकृति' में वापस जाने की नामुमकिन बात को यहाँ मान लिया गया लगता है। लेकिन यह ज़रूरी लगता है कि 'प्राप्तकर्ताओं' को 'आसव रखने वाले' के तौर पर कम आंका गया है, उन रास्तों के बजाय जो इनसे आज़ादी दिलाते हैं (ट्रीटाइज़ V § §33 और 34)। महासम. घिक और महिमशासक समेत कई स्कूलों ने, ऊँचे ध्यान की इन उपलब्धियों (अंतरिक्ष की अनंतता, वगैरह) को 'अनगढ़' लोगों में और उनमें मौजूद चेतना को 'रूपों' ('भूत...' पेज 170-1 और 172-3) के असर से परे माना। इससे यह पता चल सकता है कि उनके हिसाब से एक अरहंत इन्हें पा सकता है लेकिन बाद में संसार की दुनिया में लौट सकता है। तब थेरवाद ने यह मानते हुए कि उन्हें कुछ समय के लिए पाया जा सकता है, इस विचार को खारिज कर दिया कि वे अनगढ़ लोगों के हैं। दूसरे शब्दों में, कोई भी कुछ समय की हालत अरहंत नहीं हो सकती। अरहंत का ऐसा स्वभाव जिसे बदला नहीं जा सकता, बेशक फूट की असली वजह बना, जब थेरवादियों ने इसे बनाए रखते हुए, महासंघिकों से अलग हो गए।

4. वज्जिपुत्तकों और उनकी शाखाओं को छोड़कर सभी बौद्ध स्कूलों की तरह, थेरवाद ने 'व्यक्ति' (पुग्गल) की असलियत को बनाए रखा, जिसे उन्होंने 'आत्मा' या ज़रूरी 'स्व' में विश्वास की बुनियादी गलती के बराबर माना। जैसा कि ऊपर बताया गया है, किसी भी तरह की 'आत्मा' या 'व्यक्ति' या 'पदार्थ' थ्योरी के खिलाफ 'खालीपन' (शून्यता) सिद्धांत को यहाँ ट्रीटीज़ XX (cf. Kvu पेज 67) के रूप में विस्तार से बताया गया है।

5. थेरवाद और बाकी सभी स्कूलों ने सब्त के इस खास सिद्धांत का विरोध किया कि सभी धम्म 'मौजूद' हैं, यहाँ तक कि वे भी जो पहले और बाद के हैं। 'कार्रवाई' पर लिखा गया ग्रंथ VII, इसी पर आधारित लगता है, जिसमें पिछले कामों को अलग-अलग बताया गया है जिनके नतीजे आ चुके हैं, या भविष्य में आने वाले हैं, वगैरह (नतीजा कब महसूस होता है, उसके हिसाब से छह तरह के)। बात यह है कि थेरवाद के लिए एक पिछला काम (धम्म) जिसका अभी तक नतीजा नहीं निकला है, उसे एक तरह से 'मौजूद' कहा जा सकता है, लेकिन वह नहीं जिसने पहले ही नतीजा दे दिया हो। सभी धम्मों का नश्वर होना, दूसरे शब्दों में, पल भर का होना, बेशक परिसंभिदमग्ग के मुख्य विषयों में से एक है। जैसा कि हमने ऊपर देखा, यहाँ धम्म थ्योरी सुत्त और अट्ठ-कथा के बीच ट्रांज़िशनल है: सभी धम्मों की नश्वरता और खालीपन पर ज़ोर दिया गया है और इसी तरह उनमें से कई की एक 'सिंगल फ़ंक्शन' में एक साथ काम करने की क्षमता पर भी; उनकी अलग-अलग विशेषताओं और कामों की स्टडी यहाँ नहीं देखी जाती है, हालाँकि कभी-कभी जानकारी या परिभाषाएँ कोट की जाती हैं, ज़ाहिर तौर पर धम्मसंगनी (जैसे 1 §568, III §§ 291, 317, 394, 444) से और साथ ही सुत्त (जैसे 1 §§ 224 ff.) से जो कुछ भी पता चला है। 'प्लेन' और ट्रायड के आधार पर धम्मसंगनी क्लासिफ़िकेशन पता है (I §§398 fr., 404 ff.)। लेकिन यहाँ धम्म को समझाने का असली तरीका है कि उन्हें 'भेदभाव' के सिस्टम (जैसे 1 §26) के हिसाब से अट्ठा दिया जाए, न कि उन कमेंट्री के हिसाब से जो उन्हें उनके अट्ठा देती हैं।

व्यक्तिगत विशेषताएँ', 'काम' वगैरह। विशेषता (लक्खाण), काम (रस) और अपना स्वभाव (सभाव) जैसे शब्द अपने विकसित तकनीकी अर्थों के साथ तैयार हैं, लेकिन अभी तक वे सिर्फ़ धम्मों की पूरी संख्या या उनके एक साथ काम करने वाले वर्गों के लिए इस्तेमाल होते दिखते हैं। 'एक काम' के संबंध में यह ध्यान दिया जा सकता है कि धम्मों का 'संयोजन' (संयोग) थेरवाद सिद्धांत की एक प्रमुख विशेषता है (खासकर धातुकथा देखें, IB2 221, 223), जिसे उन स्कूलों के साथ साझा किया गया था जो बाद में इससे अलग हो गए थे लेकिन कम से कम कुछ महासंघिका समूह ने इसे अस्वीकार कर दिया था, उदाहरण के लिए बहुसूतिक (IB² 421)।

6. स्कूलों के बीच मतभेद की कुछ और छोटी बातों में, थेरवाद मौत और पुनर्जन्म के बीच 'बीच के अस्तित्व' को मना करता है (Kvu 361 ff.)। 'डेस्टिनेशन' पर ग्रंथ VI पिछले कामों के हिसाब से सीधे पुनर्जन्म को दिखाता है और इस तरह सब्तिवाद, वज्जिपुत्तक, पुब्बसेलिया और दूसरे स्कूलों के खिलाफ स्कूल की बात को पक्का करता है।

7. थेरवाद का मानना है कि मानसिक धम्म नैतिक रूप से उदासीन या 'अनिश्चित' होने के साथ-साथ अच्छे या बुरे भी हो सकते हैं (धम्म-संगनी का पहला 'त्रय', Ps I §405; IB? 296, महासंघिकों के विरुद्ध)। पटिसंभिद-मग्ग अक्सर इस वर्गीकरण को छूता है, लेकिन यह ध्यान देने योग्य है कि इसका पहला ग्रंथ इसके विवरण (Ps i 79-83) को स्पष्ट करने के लिए एक विशेष अध्याय (XVII) समर्पित करता है, जो 'विचार-श्रृंखला' के सिद्धांत की शुरुआत को दर्शाता है जिसे अट्ठकथा (1B2 325) में पूरी तरह से विस्तृत किया जाएगा। त्रय को यहां एक नए तरीके से तीन प्रक्रियाओं या 'व्यवहारों' (चर्या) के रूप में प्रस्तुत किया गया है: 'चेतना का व्यवहार' इस रूप में अनिश्चित है; 'अज्ञान का व्यवहार' बुरे 'आवेग' (जुनून या लालच, आदि) हैं; 'ज्ञान का व्यवहार' अच्छे 'चिंतन' और 'लालच' वगैरह के बिना व्यवहार करना है। इससे लगता है कि चेतना (विनाश) खुद अनिश्चित है। यह भी कहा गया है कि ज्ञान (चित्त, विचार) 'स्वभाव' (पकति) से शुद्ध होता है, इस अर्थ में कि वह बिना किसी दोष के होता है (भजन 1 80)। यह एकब्बोहारिक नज़रिए के करीब लगता है, सिवाय इसके कि बाद वाले स्कूल ने विचार को दोष के लिए दुर्गम बताकर इसे बढ़ा-चढ़ाकर बताया है (IB² 242)। यह महासंघिक नज़रिए पर रोशनी डाल सकता है, अगर बाद वाला मानता है कि चेतना या विचार शुद्ध, अनैतिक या अनिश्चित है लेकिन बाकी सभी मानसिक धम्म (चेतसिका) या तो अच्छे हैं या बुरे। लेकिन पटिसंभिदामग्ग सरल अनुभूति के कामों को, जिसमें चेतना के साथ-साथ मानसिक धम्म भी शामिल हैं, अनिश्चित दिखाता है। हमारे पास है: 'दिखने वाली चीज़ों के संदर्भ में, देखने के अत्ता (मकसद, या यूँ कहें कि ऑब्जेक्टिव या असर?) के लिए चेतना का व्यवहार, एक 'एक्टिंग' (किरिया)-अनिश्चित 'एडवरटाइजिंग' (आवज्जना) है'। 'एक्टिंग' (नानामोली 'फंक्शनल') धम्मसंगनी के दो तरह के अनिश्चित विचारों में से एक है (IB² 308); यह बस एक्टिंग या काम करना है जो नैतिक रूप से न्यूट्रल है। दूसरा वर्ग 'नतीजे' (विपाक) हैं जिनका कोई नैतिक नतीजा नहीं होता, शायद इसका ज़िक्र 'एक्टिंग' (किरिया) में किया गया है।

इसके तुरंत बाद आने वाले वाक्य: 'चेतना का एक व्यवहार जो दिखने वाली चीज़ों के संदर्भ में देखने का अत्ता (मकसद, असर, लेकिन नानामोली 'मतलब') है, वह आँखों की चेतना है। एक जो 'दिखाने की ओर' है (इरादे का 'मतलब' या असर, Ps i 16), जब दिखने वाली चीज़ों के संदर्भ में देखा गया हो, वह मन-तत्व है जो एक नतीजा है। एक जब दिखने वाली चीज़ों के संदर्भ में देखने की ओर इशारा किया गया हो, वह मन-चेतना-तत्व है जो एक नतीजा है। ये चार 'व्यवहार' बाकी पाँच इंद्रियों (मन सहित) के लिए दोहराए जाते हैं। यहाँ 'देखना' चेतना का काम है, आँख का नहीं, इसलिए हमारे अनुवाद का इनडायरेक्ट 'के संदर्भ में (लोकेटिव केस)' है। महानाम (पेज 292) यहाँ एक सोच-सीरीज़ में चार लगातार घटनाओं की पहचान करते हैं: 1) 'विज्ञापन' (आवज्जन), 2) 'देखना' (दस्सना), यानी आँखों की चेतना, 3) 'रजिस्टर करना' (संपत्ति-छानना, यह शब्द टेक्स्ट में इस्तेमाल नहीं किया गया है, जिसमें सिर्फ़ 'निर्देश देना' है), जो नतीजतन मन-एलिमेंट है और 4) 'जांच करना' (शांतिरन, जो भजन के टेक्स्ट में भी नहीं है), जो नतीजतन मन-चेतना-एलिमेंट है। वह अट्ठकथा के शिक्षकों के अधिकार पर पाँचवाँ 'सीमित करना' (वोत्थापन) जोड़ेंगे (यह भी मन-चेतना-एलिमेंट है)। यहाँ गांतिपद (p.145) में संयुत्त कमेंट्री (SA iii 191) में पाए गए एक श्लोक को कोट किया गया है, जिसमें चेतना के इन कामों को लिस्ट किया गया है, लेकिन शुरुआत में मिनिमल 'अस्तित्व अंग' (भवंगा) चेतना और आखिर में एक्टिव 'इंपल्सन' (जवाना) चेतना को जोड़ा गया है। पाटिसंभिदा-मग्ग यहाँ इस आखिरी को सिर्फ़ 'अनजान व्यवहार', यानी अज्ञान के लिए लाता है, जो जुनून, नफरत, भ्रम या दूसरे बुरे धम्मों का इंपल्सन है। इस तरह यह चेतना की विचार-सीरीज़ या प्रोसेस की थ्योरी की मुख्य बातें दिखाता है, लेकिन वे अभी पूरी तरह से समझ में नहीं आई हैं।

8. चौबीस अलग-अलग 'कंडीशन' (पच्चाय) होने का सिद्धांत थेरवाद के लिए खास लगता है और तिपिटक में इसे सिर्फ़ पठान (IB2 309-12) में पूरी तरह से समझाया गया है। ये कंडीशन्ड ओरिजिन के सीक्वेंस की बारह कंडीशन नहीं हैं, हालाँकि दोनों के लिए एक ही शब्द इस्तेमाल होता है, ये खास कंडीशन के बजाय कंडीशन के टाइप हैं। ऐसा लगता है कि इनमें से सिर्फ़ चार को ही बौद्धों ने विभाजन से पहले और सब्त्तिवाद और बहसु-टिका ने बाद में पहचाना था (IB^2 223)। सौत्रान्तिक रचना अभिधर्मकोशभाष्य (पेज 98, प्रधान का एडिशन) में उन्हें गिनाते हुए एक सुत्त कोट किया गया है, लेकिन यह तिपिटक में नहीं मिलता (शायद यह सब्त्तिवाद के रीसेंशन से लिया गया था)। सिर्फ़ सारिपुत्राभिधर्मशास्त्र (ताइशो 1548), जो शायद धम्मगुत्तिका स्कूल (IB^2 220) से जुड़ा हो, थेरवाद से चार से ज़्यादा शर्तों पर सहमत है, लेकिन यह अभी भी दस शर्तों पर लाइन खींचता है (पेज 679b)। वे पत्तन नंबर 1-4, 6-8 और 12-4 जैसे ही लगते हैं। पटिसंभिदामग्ग अपने छठे ग्रंथ में पत्तन की पाँच नई 'शर्तों' को लागू करता है, यानी 'एक साथ शुरुआत'।

(सहजात), 'पारस्परिक' (अनन्याता), 'निर्भरता' (निस्सया), ये तीनों (6-8) जाहिर तौर पर सारिपुत्राभिधर्मशास्त्र में भी 'सम्पयुत्त' (सम्पयुत्त) और 'विपयुत्त' (विपयुत्त) के रूप में हैं। पाठ में 'मूल स्थिति' शब्द को पठान की 'कारण स्थिति' (नं. 1) के पर्याय के रूप में भी दिखाया गया है।

ऐसा लगता है कि बुद्ध के सब कुछ जानने वाले होने की बात स्कूलों में विवादित नहीं रही, हालांकि यह सुत्तों (1B2 135-7) के उलट है। सभी बौद्ध यह दावा करने के लिए मजबूर लगते हैं, बेशक इसलिए क्योंकि जैन और आजीवक जैसे दूसरे पंथों ने अपने गुरुओं के लिए ऐसा किया था और बुद्ध के लिए इससे कम कुछ भी नहीं माना जा सकता था। यहाँ बुद्ध का 'सब कुछ जानने वाला ज्ञान' पहले ग्रंथ का नंबर LXXII है, जो 'बिना किसी अपवाद के सब कुछ जानता है जो बना हुआ है और जो बना नहीं है' (§599)। इसके बाद सिर्फ़ 'बिना रुकावट वाला ज्ञान' (LXXIII) आता है, जो वही बात है और ज्ञान की तुरंत चमक का सुझाव देता है।

अभिधम्म का इतिहास और पटिसंभिदामग्ग की तिथि

किसी शुरुआती बौद्ध टेक्स्ट की तारीख का ठीक-ठीक पता लगाना आम तौर पर मुमकिन नहीं होता। ज़्यादातर 'टेक्स्ट' मिले-जुले होते हैं, इसलिए किसी टेक्स्ट के सिर्फ़ एक हिस्से को या पूरे हिस्सों के फ़ाइनल कोडिफ़िकेशन को ही तारीख दी जा सकती है। पाली में पद्य टेक्स्ट के लिए यह नतीजा पाली मीटर (PTS 1967) में निकाला गया था। यह साफ़ तौर पर गद्य सुत्तों के लिए भी उतना ही सच है, हालांकि हिस्सों का पता लगाना इतना आसान नहीं है। जहाँ किसी दूसरे स्कूल के टेक्स्ट का रीसेंशन मौजूद है, वहाँ दोनों तरफ़ जोड़े गए हिस्सों को मिलाकर पता लगाया जा सकता है। इससे सबसे नए हिस्सों का पता चलता है, जो शायद उस फूट के बाद जोड़े गए थे जिसने दोनों स्कूलों को अलग कर दिया था, लेकिन यह हमें पहले के हिस्सों का पता लगाने के लिए पीछे नहीं ले जाता। सिर्फ़ कुछ ही मामलों में जहाँ कई स्कूलों के रीसेंशन मौजूद हैं, हम सबसे शुरुआती फूट के समय तक वापस जा सकते हैं, लेकिन उससे आगे नहीं। बौद्ध परंपरा की इस टेक्स्टुअल क्रिटिसिज़्म पर अब तक बहुत कम काम हुआ है (इसका ज़्यादातर हिस्सा IB में है)। इसलिए यह सेक्शन बहुत टेंटेटिव है, लेकिन बौद्ध धर्म और थेरवाद के इतिहास को समझने के लिए ज़रूरी होने की वजह से इसे पढ़ने की कोशिश करनी चाहिए।

अब जबकि कविताएँ और कलेक्शन, और शायद गद्य सुत्त कलेक्शन भी, ज़्यादातर बढ़ोतरी से बढ़े, अभिधम्म, विभंग में चैप्टर जोड़ने या कथावत्थु में विवाद जोड़ने के अलावा, ज़्यादा ऑर्गेनिक तरीके से बढ़ा। उदाहरण के लिए, जैसा कि ऊपर बताया गया है, एक्स्ट्रा 'शर्तें' जोड़ी गईं, और अभिधम्म-एनालिसिस के सिस्टम में एक्स्ट्रा ट्रायड और द्वय जोड़े गए (जिसके बारे में नीचे और बताया गया है)। फिर इन नए क्लासिफिकेशन को शामिल करके एक टेक्स्ट को अंदर से उसी हिसाब से डिटेल में बताया जाएगा, हालाँकि

अपनी ओरिजिनल मरिका के फ्रेमवर्क को बनाए रखते हुए। पटिसंभिदामग्ग खुद शायद सभी एक ही समय के नहीं हैं। हो सकता है कि यह ज़्यादातर ग्रंथों, 'चैप्टर' और सेक्शन के बढ़ने से बढ़ा हो, लेकिन निश्चित रूप से अपनी माटिकाओं या 'सीरीज़' के कुछ विस्तार से और, उदाहरण के लिए, अपने 'खालीपन' और 'समझ' के सेट को बढ़ाकर भी ऑर्गेनिक रूप से बढ़ा होगा।

ऐसा लगता है कि महासंघिकों के साथ पहले मतभेद के बाद (शायद BC 349, 18-214 में), थेरवाद स्कूल में अभिधम्म के 4 हिस्से थे, यानी 1) सवालों के साथ, 2) बिना सवालों के, 3) कंजंक्शन और इनक्लूजन और 4) बेसिस (शर्तें, सोर्स)। इनमें से पहले दो कंटेंट में मौजूदा विभंग से मिलते-जुलते हैं, तीसरा धारुकथा से और चौथा पार्थना से, हालांकि इसमें कोई शक नहीं कि इन सभी टेक्स्ट्स में, खासकर आखिरी वाले में, अब हमें जो डिटेल मिलती है, वह तुलना में बहुत कम है। सवालों के साथ और बिना सवालों का फर्क पूरी तरह से फॉर्मल है। इस तरह ग्रुप्स या एग्रीगेट्स, सेंस-स्फेयर्स, एलिमेंट्स (इंद्रियों और चेतना की 18 धातुएं) और कुछ दूसरी चीज़ों के टॉपिक्स को सवाल-जवाब के रूप में समझाया गया। इसके लिए कम से कम कुछ द्वय (उलटा चीज़ों के जोड़े) और त्रय (उलटा चीज़ों के जोड़े और उनके बीच न्यूट्रल पोजीशन) को उनके धम्म में शामिल किया गया, जैसा कि हम आज भी मौजूदा खंडविभंग (पेज 12-69) के अभिधम्म-भाजनीय और पंचपुच्चक डिवीजनों में देखते हैं। दूसरी ओर, सेल्फ-पॉज़ेशन (माइंडफुलनेस) के चार बेस, मेहनत, शक्ति के बेस (इद्धि), रास्ता (पथ) वगैरह के टॉपिक्स को सिर्फ़ सुत्तों से ज़रूरी हिस्से कोट करके समझाया गया (जैसे मौजूदा सति-पठनविभंग (पेज 193-202) का सुत्तंतभाजनीय डिवीजन)। मौजूदा विभंग में इन दो तरह के टॉपिक को एक किताब में एक साथ रखा गया है: जहाँ तक हो सके, एक जैसा सिस्टम बनाने के लिए दोनों तरह के एनालिसिस को सभी टॉपिक पर लागू किया गया है।

सभी उपलब्ध युग्मों और त्रिगुणों के सेट (धम्म-संगनी, सब्तिवाद प्रकारनपाद, *सारिपुत्राभिधर्मशास्त्र और बहुसूतिका *तत्वसिद्धिशास्त्र में; हमारे पास यहाँ डिटेल्स के लिए जगह नहीं है, जो हमें हमारे तुरंत के सरोकार से बहुत दूर ले जाएगा) का कलेक्शन बताता है कि पहले विभाजन से पहले भी (बहुसूतिका महासंघिकों की एक ब्रांच थी) बारह युग्मों और तीन त्रिगुणों का एक सेट था (पहला त्रिगुण 'अच्छा', 'बुरा' और 'उदासीन' था जैसा कि धम्म-संगनी में अभी भी है)। उस समय, तत्वसिद्धि (IB[2] 222) कन्फर्म करती है, एक सवालों के साथ और एक बिना सवालों के अभिधम्म था, जो शायद चार 'शर्तों' पर एक छोटे सेक्शन के साथ खत्म होता था। कंजंक्शन और इन्क्लूजन सेक्शन शायद बाद में थेरवाद का एक इनोवेशन था।

लेकिन इसके अलावा, जो सही मायनों में अभिधम्म लगता है, उससे जुड़े कुछ और भी टेक्स्ट हो सकते हैं।

सुत्तंत से भी करीब से जुड़े हुए हैं। ये संगीति सुत्तंत का विस्तार होगा (इसमें लिस्टेड धम्मों को समझाने के लिए दूसरे सुत्तों से कोटेशन के साथ) और सुत्तों को कैसे समझा जाए, इस पर पेटकोपदेश का एक शुरुआती वर्शन होगा। सब्तिवाद स्कूल के पास एक अभिधम्म टेक्स्ट के तौर पर एक सामूहिक पर्याय था, जो चीनी और बड़े संस्कृत अंशों में था, हालांकि थेरवाद ने ऐसा कोई काम नहीं बचाया है। महासंघिकों की पन्नत्ति-वाद ब्रांच के अभिधम्म में एक टेक्स्ट था जो पेटकोपदेश से मिलता-जुलता लगता है और इस तरह ऐसे टेक्स्ट के पुराने होने की पुष्टि करता है (1B2 278; इसे महाकच्चायन से जोड़ा जाता है, जैसा कि थेरवाद टेक्स्ट है)। इस पॉइंट पर एक सवाल उठता है: अगर अभिधम्म टाइप का टेक्स्ट बनाने के लिए, जो असल में एक बहुत बड़ी माटिका है, सामगीति सुत्तंत का विस्तार किया गया था (हालांकि पूरी तरह से अभिधम्म एनालिसिस के बिना), तो क्या इसके सिस्टर टेक्स्ट, दसुतर सुत्तंत का भी विस्तार नहीं किया गया था, जो एक वैसी ही माटिका है, हालांकि इसमें धम्मों को प्रैक्टिकली छोड़ दिया गया या डेवलप किया गया, वगैरह, और साथ ही आसानी से समझा गया, के तौर पर क्लासिफाई किया गया था? हम अपनी आगे की इन्वेस्टिगेशन के दौरान इस सवाल का जवाब देने की कोशिश करेंगे।

इस तरह, पहले विभाजन के बाद ओरिजिनल थेरवाद स्कूल को विभाजन से पहले के बौद्ध धर्म से तीन हिस्सों में एक अभिधम्म (असली) मिला होगा (जिसमें उन्होंने कुछ समय बाद जोड़ने और शामिल करने पर एक और हिस्सा जोड़ा) और शायद तीन सेमी-अभिधम्म टेक्स्ट मिले होंगे जो सुत्तों और सुत्तों पर कमेंट्री (अट्ठकथा) से ज़्यादा करीब से जुड़े थे: *समितिपरीयाय, *दासुतरपरीयाय और पेटकोपदेश।

इस असली थेरवाद से बने स्कूलों के सिर्फ़ तीन अभिधम्म अब मौजूद लगते हैं: महाविहारवासियों की पाली या थेरवाद, उस स्कूल के छोटे मतलब में जिसने असली नाम बनाए रखा; सब्तिवादिन के सात ग्रंथ, जिनके कुछ हिस्से संस्कृत में और पूरे चीनी और तिब्बती ट्रांसलेशन में मौजूद हैं; और * सारिपुत्राभिधर्मशास्त्र, जिसका चीनी ट्रांसलेशन (ताइशो 1548) है, जिसके बारे में अंदाज़ा है कि वह धम्मगुट्टक स्कूल (IB^2 220) का है। यह आखिरी वाला दिखने और कंटेंट में बहुत पुराना है, जो पुराने चार सेक्शन में है और हमें इस बात का मुख्य सबूत देता है कि ये क्या थे। यह ध्यान देने वाली बात है कि इसके बिना सवाल वाले सेक्शन में लोगों (पुग्गलों) के टॉपिक पर एक चैप्टर है, जो पाली की पूरी पुग्गलपण्णत्ती के कंटेंट जैसा ही है।

विभंग की तरह, सब्त्ति-वाद के धर्मस्कंध में कोई पुग्गल चैप्टर नहीं है। ऐसा लगता है कि थेरवाद स्कूल की कुछ ब्रांच ने वज्जिपुत्तकों (जो असली पुग्गलवादियों थे) के साथ अपने मतभेद के कुछ समय बाद लगभग B.C. 286 (IB^2 240) में पुग्गल चैप्टर को हटा दिया था, हालांकि कंजर्वेटिव धम्मगुट्टकों ने इसे बनाए रखा। सब्त्तिवादियों ने इस पुग्गल चैप्टर को पूरी तरह से दबा दिया। थेरवाद

प्रॉपर ने इसे अपने आखिर में बने विभंग से हटा दिया लेकिन इसे एक अलग टेक्स्ट के तौर पर रखा। क्यों? क्योंकि वज्जिपुत्तक विवाद के समय हुई बहस और उसके बाद कथावत्थु में दर्ज उनकी सोच ने उन्हें इस नतीजे पर पहुँचाया था कि पुग्गल की कोई असलियत नहीं थी, वह धम्मों में से एक नहीं था बल्कि सिर्फ़ एक 'कॉन्सेप्ट' (पण्णत्ति) था। इसलिए, विभंग के असली धमिनों, 'ग्रुप्स' वगैरह, जो आखिरी सच्चाईयाँ हैं, के बीच इस पर बात करना ठीक नहीं था। जिस नई किताब में यह चैप्टर बनाया गया था, उसका नाम ही, 'एक व्यक्ति का कॉन्सेप्ट', इस टॉपिक को झूठा बताता है। इस टेक्स्ट में खुद विभंग चैप्टर में अपनी असली जगह के निशान हैं, क्योंकि यह ऐसे शुरू होता है: "छह कॉन्सेप्ट हैं: ग्रुप का कॉन्सेप्ट, सेंस-स्फीयर का कॉन्सेप्ट, एलिमेंट का कॉन्सेप्ट, सच का कॉन्सेप्ट, फैकल्टी का कॉन्सेप्ट, पर्सन का कॉन्सेप्ट"। इस शुरुआती मातृका में यह ग्रुप और बाकी चीज़ों को लिस्ट करता है, लेकिन पर्सन को लिस्ट करने के बाद टेक्स्ट सिर्फ़ बाद वाले को डिटेल में समझाता है। कमेंट्री बताती है कि पहले पाँच तरह के कॉन्सेप्ट 'इंस्टैंशिएटेड कॉन्सेप्ट' (विज्जमानापन्नत्ती), 'कॉन्सेप्ट जो मिलते हैं' या 'होते हैं' हैं, दूसरे शब्दों में, उनसे मिलती-जुलती रियलिटी (धम्म) हैं, जिनके वे नाम हैं। दूसरी ओर, पर्सन का कॉन्सेप्ट 'इंस्टैंशिएटेड नहीं' (अविज्जमाना) है, कोई रियलिटी नहीं मिलती है और यह सिर्फ़ एक नाम है। यह सिर्फ़ एक कॉन्सेप्ट है जो ग्रुप पर 'बेस्ड' (उपाद्य) है (देखें PugA 171-6, खासकर आखिरी, और Kvu 34-45)..

कथावत्थु में 'व्यक्ति' पर चर्चा साफ़ तौर पर इसी समय में की गई थी, लेकिन वह टेक्स्ट पहली सदी B.C. या उसके बाद के बंटवारे के पूरे इतिहास को कवर करता है। वैसे, यमक, कथावत्थु के लॉजिक को पहले से मानता है और कम से कम 'व्यक्ति' चर्चा की तुलना में अपनी मूल सोच में बाद का है।

वज्जिपुत्तकों का अभिधम्म खुद मौजूद नहीं लगता, लेकिन परमार्थ के अनुसार यह नौ हिस्सों में था (देखें लैमोटे, हिस्टॉयर डू बौद्धिस्मे इंडियन पेज 209)। यह नहीं बताया गया है कि ये क्या थे, लेकिन इन्हें सारिपुत्त के अभिधम्म के नाम से जाना जाता था, ठीक वैसे ही जैसे चार हिस्सों वाला टेक्स्ट, जिसके बारे में हमने कहा है कि वह धम्मगुत्तक की रचना है। अगर कोई यह मान ले कि ओरिजिनल थेरवाद अभिधम्म से निकले इन हिस्सों में एक जैसी बात थी, तो यह कहा जा सकता है कि नौ हिस्सों में चार शामिल थे, जिन्हें शायद कस्सापिकों की तरह कंजंक्शन और इनक्लूजन को दो हिस्सों के तौर पर अलग करके पांच माना गया था (IB^2 221)। इस बात की साफ़ संभावना है कि वज्जिपुत्तक अभि-धम्म के बाकी हिस्से बस वही थे जिन्हें हम जानते हैं कि कुछ स्कूलों (संगतिपरीयाय, पेटकोपदेश) ने अभि-धम्म में शामिल किया था, हमारा काल्पनिक दसुतरपरीयाय (संगति सुत्तंत की तरह दसुतर सुत्तंत भी सारिपुत्त, D iii 272 और 292 से जुड़ा है) और आखिर में एक विवादित टेक्स्ट जो 'व्यक्ति' सिद्धांत को बनाए रखता है, जो पुग्गलकथा का एक जैसा है।

कथावत्थु। अगर ऐसा है, तो उस समय के थेरवाद में भी ऐसे ही टेक्स्ट होने चाहिए थे: चार (या पाँच) सेक्शन जिन्हें बाद में धम्मगुट्टकों (और सारिपुत्तभिधम्म जो अभी भी मौजूद है, जो एक ही चीज़ हो सकती है) और कस्पापिकों ने अभिधम्म कहा, लेकिन कथावत्थु के प्रोटोटाइप के अलावा तीन और टेक्स्ट भी थे, जिनके बारे में अंदाज़ा है कि वे संगत्री, दुसुत्तर और पेलक हैं। साफ़ तौर पर इस बात पर असहमति थी कि ये अभिधम्म थे या सिर्फ़ कमेंट्री (उनमें शामिल सुत्तों पर)। कुछ लोगों ने शायद सात की संख्या को अभिधम्म के 'सेक्शन' या टेक्स्ट का सही टोटल माना, क्योंकि बाद में थेरवाद और सब्तिवाद इस पर सहमत हुए। अगर ऐसा है, तो उन्होंने इसे मिलाकर, बाँटकर और बदलकर बनाए रखा। पेटकोपदेश को साफ़ तौर पर बाहर कर दिया गया, जिससे बढ़ते हुए कथावत्थु के लिए जगह बनी।

जैसा कि हम जानते हैं, थेरवाद अभिधम्म परंपरा में जिस किताब ने सच में अपना दबदबा बनाया है, वह है धम्मसंगनी, एक ऐसा टेक्स्ट जो दूसरे स्कूलों के लिए बिल्कुल अनजान है। यह धम्मों को गिनाता और डिफाइन करता है, उन पर ट्रायड और डायड एनालिसिस लागू करता है और उन्हें 'विचार' (चित्त), 'मानसिक' (चेतसिका), 'मैटर' और निब्बान और दूसरे तरीकों से क्लासिफ़ाई करता है। इसमें कुछ पुरानी चीज़ें हो सकती हैं, लेकिन शायद यह सब्तिवाद विवाद (लगभग B.C. 237, IB2 273) से बाद का है। इसे टेक्स्ट के स्टैंडर्ड ऑर्डर में सबसे पहले रखा गया था। अब सब्तिवाद का संगतिपर्याय भी इसी तरह धम्मों को गिनाता है (संगिति सुत्तंत से), लेकिन उन्हें दूसरे सुत्तों को कोट करके समझाता है, अक्सर धन्नास्कंध-विभंग में दिए गए एक्सप्लेनेशन को दोहराता है। थेरवाद, हमारी ऊपर दी गई हाइपोथीसिस के हिसाब से, ऐसा टेक्स्ट ज़रूर रहा होगा। अगर ऐसा है, तो उन्होंने इसे नए धम्मसंगनी के लिए छोड़ दिया, जो धम्मों का कहीं ज़्यादा सिस्टमैटिक ब्यौरा था, जिसे सिनोनिम्स और जिन्हें बाद में 'कैरेक्टरिस्टिक्स' (लक्खन) कहा गया, की लिस्ट बनाकर डिफाइन किया गया और अभिधम्म-एनालिसिस और 'ग्रुप्स' के डिटेल्ड वर्शन के अनुसार क्लासिफ़ाई किया गया।

इससे हमारा काल्पनिक दसुतरपरीयाय धम्मों की एक और गिनती बन जाता है, जो संगीति से ज़्यादा बेहतर है क्योंकि उन्हें कुछ खास तरीकों से बांटा गया है, लेकिन वे थ्योरेटिकल के बजाय प्रैक्टिकल की ओर झुके हुए हैं। अगर ऐसा कोई टेक्स्ट था, तो उसे भी अभिधम्म से बाहर कर दिया गया, इस तरह यमक के साथ-साथ धम्मसंगनी के लिए भी जगह बन गई।

लेकिन बेशक ऐसा टेक्स्ट मौजूद है। यह पतिसमभिदामग्ग का पहला हिस्सा है, जिसके बाद जैसा कि हमने देखा है, कई दूसरी चर्चाएँ हुईं। यह अभिधम्म टेक्स्ट नहीं है, हालाँकि जैसा कि कई बार बताया गया है कि यह बहुत अच्छी तरह से हो सकता है (यहाँ तक कि 'मैंने ऐसा सुना है' से शुरू होने वाले हिस्सों को भी सिर्फ़ सुत्तों के कोटेशन के तौर पर लिया जा सकता है)। इसके बजाय इसे खुद्दक निकाय में महानिद्देसा और अपादान (बर्मा में पेटकोपदेश भी) जैसे साफ़ तौर पर बाद के टेक्स्ट के साथ जोड़ा गया है। कुल मिलाकर, पतिसमभिदामग्ग बहुत बाद का लगता है, इसके कुछ संकेत इस बात के हैं कि

ऊपर बताया गया है। इसके अलावा, जिसे हमने इसका मुख्य विषय माना है, यानी अचानक ज्ञान मिलना, वह फूट के विवादों का जवाब लगता है। कुछ थेरवादियों ने, यह पता लगाते हुए कि ज्ञान कैसे मिला, जैसा कि उदाहरण के लिए, धम्मचक्करप-वत्तन सुत्तंत में बताया गया है, चार भेदभावों की नई थ्योरी को लागू किया, जो शायद अंगुत्तर में पाई जाती है। यहाँ यह ध्यान देना चाहिए कि सब्तिवादिन धर्मस्कंध और (?) धम्मगुट्टक शारिपुत्राभिधर्म में भेदभाव पर कोई चैप्टर नहीं है, हालाँकि उससे जुड़े विभंग में एक है। साफ़ है कि इसे थेरवाद विभंग में फूट के बाद जोड़ा गया था (धम्मगुट्टक लगभग 200 B.C. में अलग हो गए थे, हालाँकि कोई सही तारीख दर्ज नहीं है)। जैसा कि हमने ऊपर देखा है, यह विभंग चैप्टर उससे बाद का है। यह पातिसंभिदामग्ग का एक हिस्सा है, जो शायद सब्तिवाद विवाद (लगभग ईसा पूर्व 237?) के समय में लिखा गया होगा, क्योंकि सब्तिवादिन (औरों के बीच) का मानना था कि समझ धीरे-धीरे आती है (Kvu 212 और कमेंट्री पेज 58)।

अगर हमारा काल्पनिक दसुतरपरीयाय पहले से मौजूद था, तो इसे धम्मों की एक शुरुआती प्रैक्टिकल लिस्ट माना जाता था, जिसमें ज्ञान का रास्ता बताया गया था, साथ ही इसकी कुछ डिटेल्स भी बताई गई थीं (यानी यहाँ पहले ग्रंथ का चैप्टर I, Ps i 4-42) और ज्ञान कैसे मिलता है, इस पर नई चर्चा इसके साथ जोड़ दी गई थी। इस काम को और भी बढ़ाया गया और यह पटिसंभिदामग्ग बन गया, जैसा कि हमारे पास है, जिनमें से कुछ शायद दसुतर और 'भेद-भाव' मटीरियल के जुड़ने से पहले हुए होंगे। चूँकि दसुतर मटीरियल को उन धम्मों के असली 'साकार' के रूप में देखा जा सकता है जो निब्बाण की ओर ले जाते हैं, इसलिए इस 'सुने' या 'सीखे' ज्ञान को ज्ञान पाने में मिलाने के लिए दूसरे 'ज्ञान' के साथ सप्लीमेंट करना स्वाभाविक होगा। इनमें सबसे खास वे लगते हैं जिन्हें बाद में 'अंतर्दृष्टि ज्ञान' के रूप में जाना गया, जो निब्बाण के रास्ते को और साफ़ करने के लिए थे। जैसा कि हमने देखा है, ये थेरवाद के स्टैंडर्ड फॉर्मूलेशन बन गए कि निब्बाण कैसे पाया जाता है। काम के मुख्य विषय के आस-पास इकट्ठा की गई सभी आकस्मिक डिटेल्स से अलग, रास्ते के कई ज्ञान और धम्मों और भेदभाव पर ग्रंथ के बीच ज़रूरी लिंक तब युगानंध सुत्तंत, प्रैक्टिस और थ्योरी की 'मिली हुई' शांति और समझ है, जैसा कि ऊपर बताया गया है। जैसा कि बताया गया है, नतीजा यह हुआ कि काम प्रैक्टिकल है, न कि धम्मसंगनी की तरह पूरी तरह से थ्योरेटिकल और एनालिटिकल। शायद इसी वजह से यह अभिधम्म में टिक नहीं सका। ओरिजिनल दसुतर सुत्तंत की तरह, आखिरी पटिसंभिदामग्ग को भी सारिपुत्त को ही माना गया।

ऊपर दी गई बड़ी आउटलाइन में, हम पाटिसंभिदामग्ग और उसके हिस्सों की तारीखों के बारे में कुछ और सुराग देख सकते हैं। बेशक, इसका पूरा हिस्सा,

सुत्तंत पिटक के ज़्यादातर हिस्से को पहले से ही मान लेता है, जैसा कि कोई भी अभिधम्म टेक्स्ट करता है। असल में, इसके तीसरे ग्रंथ में सुत्तंतिकावत्थुनी (i 189, Tr. 111 $392) का नाम लिया गया है, जो 'सुत्तंत के आधार' हैं, जिससे पता चलता है कि कम से कम उस हिस्से के लेखक ने इसे सुत्त नहीं बल्कि कमेंट्री या अभिधम्म माना था। मूल दसुत्तुरा, युगानंद और धम्मचक्कप्पवत्तन सुत्तंतों के अलावा, अनुवाद में कई और को कोटेशन के सोर्स के तौर पर पहचाना गया है, खासकर ब्रह्मजाल, महासतिपत्तन, मुख्य टॉपिक पर कई संयुत्त, कई अलग-अलग अंगुत्तर हिस्से और सुन्ना सुत्त (S iv 54)। लगभग सभी तीस ग्रंथों में किसी न किसी तरह का ऐसा सुत्त आधार है।

भेदभाव पर ग्रंथ को छोड़कर, पटिसंभिदामग्ग के उन्हीं टॉपिक पर लिखे ग्रंथ विभंग के चैप्टर को दोहराने के बजाय उन्हें सप्लीमेंट करते लगते हैं, दूसरे शब्दों में वे किसी न किसी रूप में विभंग (या उसके हिस्से) को पहले से ही मान लेते हैं। ग्रंथ XIX: (बलों पर) विभंग में एक कमी को पूरा करता लगता है, जिसमें शुरुआती अभि-धम्म से अजीब तरह से गायब मूल माटिका टॉपिक में से एक पर चर्चा की गई है। जैसा कि पहले ही बताया गया है, ग्रंथ I और III अपने मौजूदा रूप में धम्मसंगनी से विवरण या परिभाषाएँ कोट करते लगते हैं। लेकिन यह काम ट्रायड और डायड (सिर्फ़ 'पहला ट्रायड', जो बहुत पुराना है) और धम्मसंगनी की कुछ दूसरी बारीकियों के पूरी तरह से डिटेल्ड सिस्टम से परिचित नहीं लगता है। क्योंकि धम्मों का विवरण आखिरी धम्मसंगनी टेक्स्ट से पुराना हो सकता है, इसलिए पटिसंभिदामग्ग का एक बड़ा हिस्सा उसी समय में, उसके पैरेलल और उसके कुछ कंटेंट को पहले के रूप में इस्तेमाल करके डिटेल में लिखा गया होगा। इसका मतलब होगा तीसरी सदी B.C. का दूसरा हिस्सा। यह हमें उस तारीख के करीब लाता है जो ऊपर बताई गई है, जिसमें इनसाइट के एक साथ आने, धीरे-धीरे नहीं आने पर मुख्य चर्चा है (सब्बत्थिवाद विभाजन का समय, लगभग B.C. 237)। ऐसा लगता नहीं है कि पटिसंभिदामग्ग का कोई भी हिस्सा उस समय से पहले लिखा गया हो, सिवाय हमारे काल्पनिक दसुतरपरीयाय के (जिसमें शायद इनसाइट के स्टेज और रास्ते के 'उभरने' को जोड़कर कुछ डिटेल पहले ही दी जा चुकी थी, शायद चैप्टर XIV तक, लेकिन चैप्टर XVII और XVIII हमें विचारों के बाद के लेवल में ले जाते हैं)।

लेकिन पटिसंभिदामग्ग के कुछ हिस्से पूरे धम्मसंगनी से बाद के लगते हैं, जिसमें कुछ बाद के कॉन्सेप्ट शामिल हैं जिनकी ऊपर चर्चा की गई है, जैसे 'अपना-स्वभाव' (सभाव), 'काम' के मतलब में रस, चेतना का 'व्यवहार' और उस थ्योरी की शुरुआत जिसे बाद में 'विचार-श्रृंखला' के रूप में जाना गया, जिसमें 'आवेग' (जवाना) और पठान की कुछ 'स्थितियां' शामिल हैं। ये शायद हमें कम से कम दूसरी सदी ईसा पूर्व तक ले जाते हैं। यह ग्रंथ XX (खालीपन पर, 'अपना-स्वभाव' शब्द का इस्तेमाल करके) और ग्रंथ I के अध्याय XVII (चेतना का व्यवहार) को विस्तार से लिखने का संभावित समय होगा। ग्रंथ

'बड़ी समझ' पर XXI 'अच्छे धम्म (समझ) की प्रेरणा' का इस्तेमाल करता है, जबकि 1.XVII इसका इस्तेमाल सिर्फ़ बुरे धम्म (जुनून, नफ़रत, वगैरह) के लिए करता है, और इसका जो भी मतलब हो, यह ग्रंथ ज़रूर देर से लिखा गया होगा। ग्रंथ VI में बताई गई तीन नई शर्तें सारिपुत्राभिधर्म में भी मानी गई हैं, लेकिन बाकी दो नहीं मानी गई हैं और इस तरह उस स्कूल के थेरवाद से अलग होने के बाद की तारीख बताती हैं जिससे वह काम जुड़ा है। अगर हम उस स्कूल को धम्मगुट्टक मानने में सही हैं, तो हमें ग्रंथ VI के लिए दूसरी सदी B.C. में ले जाया जाता है। रस का इस्तेमाल 'फंक्शन' के मतलब में ज़्यादा होता है, जिसमें ट्रीटीज़ X1 भी शामिल है, जहाँ शांति और समझ के 'कपलिंग' पर बात की गई है और इसकी कुछ उम्मीदें हैं: ट्रीटीज़ I चैप्टर XXIII (सिर्फ़ एक ज़िक्र को एक अलग ज्ञान और चैप्टर माना गया) और बहुत पहले §§23, 24, 134 (जिसका डिटेल में ज़िक्र है) और 135 में। ऐसा लग सकता है कि ट्रीटीज़ I पूरी तरह से बहुत देर से बना है, लेकिन यह मुमकिन है कि यह शांति और समझ के 'कपलिंग' को काम के साथ जोड़ने का नतीजा हो, जो इसके इवोल्यूशन का आखिरी मुख्य स्टेज है, 'ज्ञान' और 'भेद-भाव' का आखिरी सिंथेसिस जैसा कि ऊपर बताया गया है। 'सिंगल-फंक्शन (एकरस)' का कॉन्सेप्ट खास तौर पर शांति और समझ के मिलकर काम करने को समझाने के लिए बनाया गया लगता है, जिसमें रस शब्द विमुत्तिरस से लिया गया है, जिसे, जैसा कि ऊपर बताया गया है, महानाम ट्रीटीज़ X (Ps ii 88) में डबल मतलब के साथ पढ़ता है। फिर इसे दूसरे धम्मों तक बढ़ाया गया जो एक साथ काम कर रहे थे। इस तरह एक अट्ठ (ऑब्जेक्ट या 'मतलब') के तौर पर सिंगल-फंक्शन मतिका 'B' का हिस्सा बन गया, जिसमें शांति और समझ जोड़ी गई थी और इसे कई जगहों पर दोहराया गया जहाँ इस पर बात की गई थी (यह पुरानी 'बिना सवालों वाली' मतिका थी जिसे बढ़ाया गया था)। इस तरह यह एक ऐसा मामला है जिसे हमने ऊपर 'ऑर्गेनिक ग्रोथ' कहा था, जो अंदर से ट्रीटीज़ I और कुछ दूसरी जगहों पर (ट्रीटीज़ XIII §23, ट्रीटीज़ XXIII §2) है। उस आखिरी बदलाव के साथ, सिंगल-फंक्शन के इंटीग्रेटिंग कॉन्सेप्ट का इस्तेमाल करके, परिसंभिदामग्ग लगभग पूरा हो गया था।

अभिसमय ('कनवर्जेंस', समझ) पर लिखी किताब XXIII, कथावत्थु की बहस के तरीकों और लॉजिकल टर्मिनोलॉजी को पहले से मानती है: हँसी... तेना ही वगैरह (Ps ii 215 ff.)। यह किताब एक खास तर्क (ii 217-8, §11) के साथ खत्म होती है, जिसका मतलब है कि न तो पिछली कोई बुराई, न ही भविष्य की कोई बुराई, और न ही अभी होने वाली कोई बुराई छोड़ी जाती है। ऐसा लगता है कि यह समय के विरोध को मध्यमक (IB² 384-6) की दिशा में शामिल कुछ यमक चर्चाओं से आगे जाता है, हालांकि तर्क बिल्कुल वैसा नहीं है। यहाँ 'अभी होने वाली बुराई' और 'छोड़ना' एक-दूसरे के उलटे हैं और इसलिए एक साथ नहीं हो सकते। वहाँ असली समस्या खुद समय का कॉन्सेप्ट, या प्रोसेस है। यहाँ इस साफ़ उलझन का हल, जिसमें साफ़ तौर पर पिछली बुराइयों को भी अब छोड़ा नहीं जा सकता, क्योंकि वे पहले ही खत्म हो चुकी हैं, और भविष्य की बुराइयाँ अभी मौजूद नहीं हैं, वह ज्ञान नहीं है।

और निब्बान अप्राप्य हैं, लेकिन बस इतना है कि विकारों के उत्पन्न होने का कारण या स्थिति समाप्त हो जानी चाहिए, जिसके बाद भविष्य में विकार उत्पन्न नहीं होंगे (चार वास्तविकताओं और मार्ग के अनुसार)। इस मामले को एक विरोधाभास के रूप में प्रस्तुत करना पूरी तरह से एक साहित्यिक उपकरण है, एक अलंकार है, ठीक प्रज्ञापारमिता सूत्रों में विरोधाभासों की तरह। स्पष्ट रूप से विरोधाभासी तर्क ठीक से तैयार नहीं किया गया है जब यह बताया जाता है कि यदि पूर्व-उत्पन्न होने वाले विकारों को त्याग दिया जाए तो एक भावुक (व्यक्ति) जुनून को त्याग देता है। नागार्जुन (दूसरी शताब्दी ईस्वी) इसे मूलमडलीयर्मककारिका अध्याय VI में उठाते हैं: 'यदि जुनून से पहले एक भावुक (व्यक्ति) था, जुनून के बिना ... बेशक थेरवाद या मध्यमक के लिए कोई 'व्यक्ति', कोई एजेंट नहीं है, केवल जुनून जैसे धम्म क्षणिक रूप से होते हैं या सशर्त उत्पत्ति और चार वास्तविकताओं के अनुसार नहीं होते हैं। पटिसर्म-भिदामग्ग में हमें जो तर्क मिलते हैं, वे ऐसे चालाक खंडन से निपटने के ट्रेंड को दिखाते हैं, जैसा कि हमें कथावत्थु और यमक से लेकर नागार्जुन तक मिलता है, जिसमें प्रज्ञापारमिता (IB^2 365-72) इस रास्ते की एक खास बात है। इस तरह, ग्रंथ XXIII यमक से बाद का होगा और शायद इसे पहली सदी ईसा पूर्व के बाद जोड़ा गया होगा, जब शायद प्रज्ञापारमिता ग्रंथों को पुब्बासेलीयों वगैरह के बीच विस्तार से लिखना शुरू किया गया था (IB^2 354, 365)। ठीक पहले का ग्रंथ (सुपरनॉर्मल) शक्ति (इद्धि) पर, इसके एक रूप के रूप में, विज्जाधरों (जादूगरों या 'विज्ञान के उस्तादों') के 'विज्ञान' का ज़िक्र करता है, जिसमें उड़ने की शक्ति भी शामिल है (Ps ii 213)। इन 'जादूगरों' का ज़िक्र इद्धि के संबंध में दूसरे त्रिपिटक ग्रंथों में नहीं मिलता, हालांकि जातक (v p.496) में उनका कम से कम एक ज़िक्र है, जिसमें एक 'साइंस' है जो उन्हें अदृश्य बनाता है। चूंकि 'जादूगर' भारतीय साहित्य में गुणाढ्य के उनके बारे में महान उपन्यास के बाद तक खास तौर पर नहीं दिखते (भारतीय काव्य साहित्य Vol. II, Chapter XIV, §§669-70 देखें, शायद दूसरी सदी B.C. में), उनके ज़िक्र से पता चलता है कि वे काफी देर से आए, लेकिन कोई पक्की तारीख नहीं है।

यहां जांच करने वाला आखिरी सवाल यह है कि क्या पटिसंभिदामग्ग के सभी हिस्सों की रचना पर कोई आखिरी सीमा तय की जा सकती है। हमने ऊपर बताया है कि दूसरी सदी ईसा पूर्व में इसमें बड़े बदलाव हुए थे और शायद पहली सदी ईसा पूर्व में कुछ छोटे बदलाव हुए थे। लेकिन क्या वहां कोई लाइन खींची जा सकती है? जिस तरह बुद्धवंश और अपादान में सहज रूप से सभाव और रस (ऊपर देखें) शब्दों को बुद्ध या साधु के ज्ञान के रेगुलर और जाने-पहचाने पहलुओं के तौर पर लाया गया है, उससे पता चलता है कि पटिसंभिदामग्ग के विकास के आखिरी मुख्य चरण में दिखाई देने वाले कॉन्सेप्ट का सिस्टम उन ग्रंथों के लिखे जाने तक अच्छी तरह से स्थापित हो चुका था। इसके अलावा, हर अपादान के आखिर में एक बार फिर ज्ञान के चरम पर चार भेदभावों को लाया गया है। असल में, 'अपना स्वभाव, काम और खासियत' का मतलब परिभाषाओं का एक चरण है।

समग्र रूप से पटिसंभिदामग्ग के बाद (इसी प्रकार संखारानं सभावत्तं, 'निर्मित वस्तुओं का अपना-स्वभाव', भाग IV 31)।

पाली मीटर (पेज 4) में कहा गया है कि कैनन दूसरी सदी B.C. के बाद का नहीं हो सकता, क्योंकि पुरानी सिंहली अट्ठकथाएँ और पाली भी पहली सदी B.C. में लिखी गई थीं (सिंहली अट्ठकथाओं के बारे में आदिकारम और IB2 322 देखें)। अट्ठकथाओं और परिवार में जिन कुछ श्लोकों पर कमेंट नहीं किया गया है, वे शायद थोड़े बाद के हों (परिवार को पहली सदी A.D. में अट्ठकथा पर चर्चा बंद होने से पहले जोड़ा गया था, जिसमें उस पर कमेंट भी शामिल है)। आदिकारम (पेज 38) के अनुसार, ऐसे बिना कमेंट वाले श्लोक बुद्धवंश में मिलते हैं, लेकिन वे पटिसंभिदामग्ग के बारे में हमारे तर्क पर असर नहीं डालते। ऐसा लगता है कि बुद्धवंश पर एक पुरानी सिंहली अट्ठकथा थी, जो बाद में आदिकारम द्वारा बताए गए रूप में पहली सदी B.C. तक मौजूद थी। अपादान के लिए स्थिति इतनी साफ़ नहीं है। इस बात का कोई सबूत नहीं है कि उस टेक्स्ट पर कोई पुरानी सिंहली कमेंट्री थी, जो खुद लगभग थेरथेरीगाथा पर एक कमेंट्री है। यही बात महानिद्देसा (और खुद पटिसंभिदामग्ग) के बारे में भी सच है, लेकिन उस टेक्स्ट का नाम लगभग खो चुके टेक्स्ट के तौर पर लिया जाता है, जिससे इस तरह पहली सदी B.C. में पाली और अट्ठकथा को लिखने में तेज़ी आई (आदिकाराम पेज 76)। इसलिए, ऐसे टेक्स्ट पहली सदी B.C. में मौजूद थे। लगता है कि बिना किसी कमेंट्री के (यहां तक कि थेरथेरीगाथा, उदान और इतिवुत्तक में भी, पहले वाले पर अपादान के अलावा, कोई कमेंट्री नहीं थी, लेकिन उनकी प्राचीनता मात्रा के आधार पर और बौद्ध धर्म के दूसरे स्कूलों में मौजूद रिक्रिप्शन से साबित होती है)। असल में, मज्जिमभानक ने अपादान, बुद्धवंश और चरियापिटक को कैननिकल नहीं माना, हालांकि दिघभानक ने माना (आदिकारम पेज 27)। शायद महानिद्देसा की तरह, पटिसंभिदामग्ग को भी उसमें कोट किए गए सुत्त के हिस्सों पर एक तरह की कमेंट्री माना जाता था और इसलिए इसे और कमेंट्री की ज़रूरत नहीं थी। चरियापिटक के बारे में, जब धम्मपाल I ने इस पर अपनी कमेंट्री लिखी थी, तब इसकी टूटी-फूटी हालत से पता चलता है कि टेक्स्ट का एक बड़ा हिस्सा खो गया था, और इसका सबसे ज़्यादा मुमकिन समय साफ़ तौर पर पहली सदी B.C. है, जब तक कि उसमें से जो कुछ भी मिला, उसे लिखा नहीं गया।

ये सभी सबूत इस बात की पुष्टि करते हैं कि पूरा त्रिपिटक मौजूद था और पहली सदी B.C. के बीच या उससे पहले बंद हो गया था। परंपरा में यह थोड़ा-बहुत बदलाव उस समय के बाद पुराने छंदों के इस्तेमाल की जानकारी के खत्म होने से भी पता चलता है, कमेंट्री छंदों के आधार पर कैननिकल छंदों की सही रीडिंग को फिर से नहीं बता पाई (पाली मीटर पेज 14)। चूंकि बुद्धवंश और अपादान, हालांकि बाद में आए, फिर भी पुराने सिस्टम को दिखाते हैं (जो अक्सर लिखी हुई पांडुलिपि परंपरा की वर्तनी का खंडन करते हैं), हम यह नतीजा निकाल सकते हैं कि पहली सदी B.C. के बाद उनमें कोई खास बदलाव नहीं किए गए।

दूसरे शब्दों में, (गद्य) परिवार को छोड़कर पूरे त्रिपिटक की तरह, वे भी उस तारीख से पहले भारत में मौखिक परंपरा में लिखे गए थे। इससे यह साबित होता है कि पाटी-संभिदामग्ग (शांति और अंतर्दृष्टि के एकमात्र कार्य और खालीपन पर ग्रंथ के साथ) की रचना का आखिरी मुख्य चरण दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत या मध्य में हुआ था। केवल 'कन्वर्जेंस' पर ग्रंथ (अभिसमय, XXIII) और शायद अन्य बहुत छोटे-मोटे बदलाव उसके बाद किए गए होंगे, जो उस समय बुद्धवंश (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के अंत में?) और अपादान (पहली शताब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत में?) के समकालीन थे। बुद्धवंश में, संयोग से, 'सात पकरणों' का उल्लेख है, जो स्पष्ट रूप से अभिधम्म की सात पुस्तकें हैं जिन्हें दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व (XXIV.6) में संहिताबद्ध किया गया था।

पटिसंभिदा-मग्ग के विकास के चरणों के बारे में हमारी हाइपोथिसिस को इस तरह संक्षेप में बताया जा सकता है:

ईसा पूर्व *दशुतरपर्याय (लगभग त्र. 1, अध्याय 1)
349 महासंघिका विभाजन
अंतर्दृष्टि के चरणों और निर्वाण के मार्ग के उद्भव
(286) का विस्तार (I, अध्याय II-XIV)
237 सब्तिवाद विभाजन
पार्टीसंभिदामग्ग' (Tr. XVI और संबंधित सामग्री
जैसे Tr. XVII, Tr. I के साथ जुड़कर ज्ञान का मार्ग
बताती है)
लगभग 2000 में धम्मगुट्टक विभाजन (माहिर्मससक और कस्सापिका
भी, थेरवाद को छोड़कर)
भेदभाव पर विभंग चैप्टर। शांति और
समझ का सिंगल-फंक्शन (Tr. XI) सिस्टम को पूरा करने के
लिए लाया गया, जिसमें Tr. I में बड़े बदलाव और बहुत
सी दूसरी नई चीज़ें (Trs. VI, XX, XXI, वगैरह) जोड़ी गईं।
100 ट्र. XXIII

पातिसंभिदामग्ग और थेरवाद का बाद का इतिहास

यहां सीलोन में थेरवाद के इतिहास को दोहराने की ज़रूरत नहीं है, जैसा कि नानामोली ने विशुद्धि-मग्ग (खासकर पेज xiff) के अपने अनुवाद के इंट्रोडक्शन में और आदिकारम ने बताया है। इन दोनों विद्वानों द्वारा इस्तेमाल की गई सामग्री से यह साफ़ है कि राजा वट्टगामणी के राज में पाली और अट्ठकथा के लिखे जाने के लगभग एक सदी बाद (और खासकर उनके बाद महाकुल और फिर कोटकण और भाटिकाभय के राज में, जिनमें से बाद के दो शायद पहली सदी के पहले आधे हिस्से में फैले हुए थे: समय के हिसाब से अंतर हैं और नानामोली ने उन्हें हमारे हिसाब से 45 साल पहले का बताया है) स्कूल ने सबसे पहले

अपने ग्रंथों को सुरक्षित रखने और उन्हें कोड में लिखने पर ध्यान दिया, खास तौर पर उन राज के शिक्षकों के फैसलों को शामिल करके अपनी अट्ठकथा को आखिरी रूप दिया।

अट्ठकथा में बताए गए आखिरी राजा वसभ हैं (हमारे हिसाब से A.D. 110 में पवित्र किए गए, लेकिन नानामोली के हिसाब से 66 में), जिनके राज में महापदुम (VinA ii 471) रहते थे। नागाई (JPTS 1917-9 p.74) ने कहा है कि विमत्ति-मग्ग के लेखक उपतिस्सा, लगभग इसी समय रहते थे क्योंकि उनका महापदुम नाम का एक शिष्य था। लेकिन यह पक्का नहीं है क्योंकि दोनों नाम काफी कॉमन हैं, इसके अलावा उन्होंने शिक्षकों की जो परंपरा दी है (परिवार 3 या विंद i 62-3 से) वह असल में पहली सदी AD में खत्म होती है। और इसमें बताए गए उपतिस्सा लगभग 40 B.C. में वट्टागर्मनी के समय में रहते थे (शरत्तदीपनि S° p. 126 भी देखें)। यह बहुत मुमकिन है कि विमुत्तिमग्ग की रचना करने वाले उपतिस्सा ही पहले सारिपुत्त थे, जिनके नाम पर कई अभिधम्म और उससे जुड़ी किताबें लिखी जाती हैं। यह भी बहुत मुमकिन है कि विमुत्तिमग्ग अभयगिरिवासिन या धम्मरुचि स्कूल की रचना हो, न कि महाविहार परंपरा के किसी जाने-माने थेर की (देखें पेज 238, f.n. 3, एहारा और अन्य द्वारा इसके अनुवाद का)। यह रचना बुद्धघोष से भी पहले की है, जिन्होंने इसे अपने विसुद्धिमग्ग के लिए एक मॉडल के तौर पर लिया था। लगभग 30 जगहों पर ट्रांसलेटर (एहारा, सोमा और खेमिंडा, वीरसुरिया, कोलंबो, 1961) ने चीनी वर्शन में कुछ हिस्सों को पातिसंभिदा-मग्ग के कोटेशन या पैरेलल के तौर पर पहचाना है, ताकि वह टेक्स्ट, या उससे बहुत मिलता-जुलता टेक्स्ट, उपतिस्सा को पता हो। यह अजीब बात है कि चार हिस्से जो सीधे पटिसंभिदमग्ग से लिए गए लगते हैं, उन्हें उपतिस्सा ने 'अभिधम्म में' बताया है। इससे यह बात पक्की होती है कि पटिसंभिदमग्ग असल में एक अभिधम्म टेक्स्ट था और यह बताता है कि अभयगिरिवासिनियों ने BC 38 में अपने मतभेद के बाद इसे उसी जगह पर वापस लाया। यह ध्यान देना चाहिए कि उपतिस्सा ने धम्मसंगनी (विमुत्तिमग्ग अनुवाद पेज 230) पर कमेंट्री में हमें सबसे पहले मिली परिभाषाएँ भी दी हैं, जिसमें रस वगैरह भी शामिल हैं, जो थेरवाद के साथ उनकी करीबी दिखाते हैं। वह 'अंतर्दृष्टि के चरणों' (पेज 286-302) से वाकिफ हैं, और गोत्रभू पर पटिसंभिदमग्ग (अभिधम्म के रूप में) को कोट करते हैं।

नानामोली ने बुद्धघोष के अपने ट्रांसलेशन के इंट्रोडक्शन में उनकी कमेंट्री और विशुद्धिमग्ग पर डिटेल में बात की है। उन्होंने वहाँ (पेज xxx) लिखा है कि विशुद्धिमग्ग में पटिसंभिदामग्ग से 'फ्रीली' कोट किया गया है, यह बात उनके पूरे ट्रांसलेशन में रेफरेंस से कन्फर्म होती है। जैसा कि हमने देखा है, पटिसंभिदामग्ग रास्ते या पथ के लिए ज़रूरी 'ज्ञान' या सीख से शुरू होता है, सही अंडरस्टैंडिंग या इनसाइट जिससे गलत अटैचमेंट से आज़ादी मिलेगी। नेचर और कंसंट्रेशन को इत्तेफाक से लाया गया है जैसे कि वे इस थ्योरी का हिस्सा हों। लेकिन धीरे-धीरे ऐसा लगता है कि यह सब अल्टीमेट के लिए शुरुआती है।

टॉपिक, यानी 'डिस्क्रिमिनेशन', जब कोई ज्ञान पाता है तो क्या होता है। पूरे काम को एक करते हुए हम पाते हैं कि 'शांति (कॉन्सेंट्रेशन) और इनसाइट (समझ) एक साथ हैं, उनका 'सिंगल-फंक्शन' जिसे आम तौर पर रास्ते के सभी प्रिंसिपल्स का एक सिंगल-फंक्शन, ज्ञान का एक सिंगल अल्टीमेट इंट्यूशन बनाने के लिए बनाया जाएगा। शांति और इनसाइट को अलग नहीं किया जा सकता।

बुद्धघोष ने विशुद्धिमग्ग में रास्ते को ज़्यादा एनालिटिकल तरीके से देखा है और उसके हिस्सों या फैक्टर्स को अलग किया है। सबसे पहले अच्छाई को लिया गया है, फिर कॉन्सेंट्रेशन ('शांति' की जगह पुराने शब्द को फिर से इस्तेमाल करते हुए) और आखिर में अंडरस्टैंडिंग (फिर से पुराना शब्द), जिसके बारे में बहुत डिटेल में बताया गया है - जिसमें धम्मसारिगणी और पत्तन (जैसे, 24 कंडीशंस के बारे में डिटेल में) की ज़रूरी बातें शामिल हैं। फिर भी यह काम 'नज़र' की शुद्धि (दिष्टि, XVIII और XIX, 'भौतिकता-मानसिकता', अ-स्व और कारण-कार्य की समझ), 'पथ क्या है और पथ क्या नहीं है, इसका ज्ञान और दर्शन' (XX, अठारह मुख्य अंतर्दृष्टि और उत्थान और पतन आदि के चिंतन सहित कई पटिसम्भी-दमग्ग विषय), 'पथ का ज्ञान और दर्शन' (पटिपाद, XXI, 'आठ' (अंतर्दृष्टि) ज्ञान और 'वास्तविकता' के साथ 'अनुलोम' में ज्ञान), ज्ञान और दर्शन (सरल रूप से, XXII, 'वंश-परिवर्तन', चार पथ और चार फल, ज्ञान के कारक, चार 'कार्य', अर्थात् पूर्ण-समझ, त्याग, एहसास और विकास, एक ही पल में चार वास्तविकताओं में प्रवेश करते हुए कार्य करना) और समझ के इस विकास के अंतिम 'लाभ' (XXIII, अरहंतत्व का फल)। यह सब अभी भी समझ है, लेकिन इसे निब्बाण पाने के लिए 'शुद्धिकरण' के एक प्रैक्टिकल तरीके के तौर पर दिखाया गया है। यह बस पातिसंभिदमग्ग का तरीका है, जहाँ समझ से इस पूरी शुद्धि को ग्रंथ I, अध्याय IV-X में बताया गया है, जिसे अरहंतत्व में खत्म होने वाले रास्तों और फल पर XI-XIV में सप्लीमेंट किया गया है। इसका ज़्यादातर हिस्सा अभिधम्म के सातों पकरणों में नहीं मिलता, जो पूरी तरह से थ्योरेटिकल हैं। यहाँ 'विज़न' या 'देखने' का मतलब ज्ञान है।

इस तरह बुद्धघोष पटिसंभिदामग्ग को फॉलो करते हुए लगते हैं, लेकिन वे अपनी तीन तरह की स्कीम के हिसाब से मटीरियल को पूरी तरह से फिर से अरेंज करते हैं, जो लगभग चार तरह की स्कीम है (जैसे पुण्य, कॉन्संट्रेशन, थ्योरेटिकल समझ, प्रैक्टिकल समझ)। वे बहुत सारा अभि-धम्म मटीरियल शामिल करते हैं जिसे पटिसंभिदामग्ग अपनी समझ के लिए छोड़ देता है या बहुत कम कर देता है। आखिर में वे 'प्योरिफिकेशन' (जैसा कि उनके काम के टाइटल से पता चलता है) या निब्बान की ओर ले जाने वाली समझ लाते हैं, जैसे पटिसंभिदामग्ग का वह हिस्सा जिसका हमने अभी ज़िक्र किया है, न कि ज्ञान जो इस पूरे काम का सब्जेक्ट है। इस तरह, हालांकि उन्होंने पटिसंभिदामग्ग पर कोई कमेंट्री नहीं लिखी, उन्होंने इसे विसुद्धिमग्ग, जो उनके सिद्धांत और उनके जनरल रिव्यू का आधार था, के लिए इस्तेमाल किया।

यह रास्ता सुत्तंत पर उनकी सभी अलग-अलग कमेंट्री के लिए सेंट्रल स्टेटमेंट और रेफरेंस पॉइंट बनाता है। शायद उन्होंने पटिसंभिद्द-मग्ग को खुद असली सुत्तंत के जैसे ही एक सेंट्रल कंट्रोलिंग स्टेटमेंट के तौर पर देखा।[4]

जब हम सुत्तंत पिटक को एक लिखे हुए टेक्स्ट के तौर पर पढ़ते हैं, तो यह उलझा हुआ और अव्यवस्थित लगता है, क्योंकि बेशक यह असल में एक लिखा हुआ टेक्स्ट नहीं था, बल्कि एक ज़ुबानी याद किया हुआ टेक्स्ट था। इसे पहले याद करना था, बाद में पढ़ना था जब इसका पूरा टेक्स्ट साफ़ तौर पर याद हो जाए (अगर पूरा सुत्तंत नहीं, तो कम से कम एक आगम का बड़ा हिस्सा जिसमें भनक द्वारा तैयार किए गए सिद्धांतों का एक काफ़ी हिस्सा शामिल था)। तो, इसका असली 'ऑर्डर' टेक्स्ट का एक के बाद एक आना नहीं है, बल्कि यह है कि यह सब चार सच या असलियत के एक ही सिद्धांत को समझाने की ओर जाता है। पटिसंभिदामग्ग भी ज़ुबानी टेक्स्ट के लिए इस नियम का कोई अपवाद नहीं है। पढ़ने वाले को यह बहुत साफ़ पता चलता है कि इसे पढ़ने का प्लान नहीं था। इसे, यूं कहें तो, पूरा निगलना (याद करना) है और फिर पूरी तरह समझने के लिए जितनी देर ज़रूरी हो, उस पर सोचना है। दूसरी तरफ, कमेंट्री, जैसी हमारे पास पाली में हैं और शायद जैसी वे पहली बार पहली सदी B.C. और पहली सदी A.D. में पुरानी सिंहली में लिखी गई थीं, वे लिखे हुए टेक्स्ट के तौर पर ज़्यादा सिस्टमैटिक हैं। क्योंकि वे अपनी पाली को फॉलो करते हैं, इसलिए यह सिस्टमैटिकेशन लिमिटेड है, लेकिन इसकी ज़रूरत विसुद्धिमग्ग ने अच्छे से पूरी की, जिसने अपने खुद के प्रोग्रेसिव ऑर्डर को फॉलो किया।

पटिसंभिदामग्ग पर महानामा की कमेंट्री (6वीं सदी A.D.), जिसका फ़ायदा यह है कि इसकी पाली एक सिंगल टेक्स्ट है, न कि सुत्तों का मैकेनिकल कलेक्शन, टेक्स्ट को अरहंत बनने के रास्ते की एक सिस्टमैटिक और सही जानकारी के तौर पर पेश करने की कोशिश करती है, जिसमें हर टॉपिक ज़रूरी तौर पर अगले टॉपिक की ओर ले जाता है। दूसरे शब्दों में, महानामा ने मानो बोले गए टेक्स्ट को एक लिखे हुए टेक्स्ट में बदलने की कोशिश की है। यह बेशक, कमेंट्री में लंबी-लंबी बातें बताकर किया जाता है ताकि मोटे-मोटे बयानों को आसान बनाया जा सके और अक्सर उन्हें ऐसे डिटेल्स के साथ बढ़ाया जा सके जिनकी टेक्स्ट के कम संकेतों से उम्मीद करना मुश्किल है। ऐसा करने में, महानामा ने विशुद्धि-मग्ग से लंबे हिस्से लिए हैं, जो काफी सही हैं अगर बाद वाले काम को खुद पटिसंभिदामग्ग पर एक कमेंट्री माना जाए। एक तरह से बुद्धघोष की सामग्री को इस तरह उसकी सही जगह पर वापस लाया गया है। पटिसंभिदमग्ग को रास्ते की पूरी और पूरी जानकारी के तौर पर पेश किया गया है, जिसमें विशुद्धिमग्ग में दी गई कुछ डिटेल्स की कमी है, लेकिन दूसरी तरफ इनकी जगह अपनी ज़्यादा डिटेल्स दी गई हैं। अब यह सिर्फ़ विशुद्धि-मग्ग का एक प्रोटोटाइप नहीं है, बल्कि एक दूसरा और पूरा वर्शन है, जो शायद खुद्दकभाणकों के लिए है। अगर आपके अपने निकाय में पटिसंभिदमग्ग है तो विशुद्धिमग्ग की पढ़ाई क्यों करें? बस इसे एक सही कमेंट्री दें, जो बुद्धघोष ने नहीं की थी और जो शायद सिंहली में भी नहीं थी (जिसकी वजह से बुद्धघोष ने बेशक ऐसा किया था)।

(पाली वर्शन नहीं बना सकते)। हम नीचे महानामा की कमेंट्री देखेंगे।

बहुत विद्वान गुमनाम गंथिपद की रचना, जो महानामा के काम पर एक तरह की सब-कमेंट्री है, 9वीं या 10वीं सदी में पटिसंभिदामग्ग के महत्व को दिखाती है, इसकी संभावित तारीख (यह शुरुआती (इकास, जैसे धम्मपाल ॥ के) के कॉन्सेप्ट को लागू करती है, और इसे अग्गावर्प्सा ने अपनी सद्दानिति, 12वीं सदी में, सही पाली इस्तेमाल के एक आधिकारिक उदाहरण के लिए, पेज 753-4 पर कोट किया है)। यह महानामा से अभी भी ज़्यादा सिस्टमैटिक है और बाद के थेरवाद ज्ञानमीमांसा के कॉन्सेप्ट के ज़रिए ज्ञान को समझती है, जिसमें ज्ञान के दो तरीके हैं, सेंसेशन (पच्चक्ख) और इनफेरेंस (अनुमान) (पेज 34)। निब्बान दो खासियतों, 'अपना' और 'यूनिवर्सल' (पेज 55 ff., समाप्ति पर एक पोएटिक डिटेल के साथ) के ज्ञान से मिलता है। क्या है यहाँ जिसे 'यूनिवर्सल विशेषता' कहा गया है, वह है नश्वरता, दुख और आत्माहीनता, ठीक यही अंतर्दृष्टि का आधार है जैसा कि पातिसंभिदमग्ग में खुद बताया गया है। लेकिन सभी सिद्धांतों की 'अपनी' या 'खास' विशेषताएँ धम्मसंगनी और खासकर कमेंट्री सिस्टम से ली गई हैं। गणतिपद पातिसंभिदमग्ग को अपने विज्ञान का एक पूरी तरह से सिस्टमैटिक प्रेजेंटेशन मानता है, जो इसके पहले शब्द, 'कान' (सोता, सुनने की शक्ति) को 'भेदभाव' के आखिरी विषय, खासकर 'अर्थ (अत्थ) के भेद' (पेज 24) से जोड़ता है। चूँकि इसका घोषित उद्देश्य 'मुश्किल शब्दों' की व्याख्या करना है, इसलिए गणतिपद ज़्यादातर रूप या संदर्भ में अस्पष्ट शब्दों या वाक्यांशों के एनोटेशन के रूप में है, न कि लगातार व्याख्या के रूप में। लेकिन ये टेक्स्ट और कमेंट्री (PsA) के हर हिस्से को सिस्टम में जोड़ने का काम करते हैं। इसके कुछ और डिटेल्स पर नीचे चर्चा की जाएगी।

ऊपर देखा गया है कि बुद्धदत्त ने अपनी किताब 'अभिधम्म-वतार' में बुद्धघोष की तरह ही, अंतर्दृष्टि के पटिसंभिदमग्ग चरणों, या 'शुद्धिकरण' को संक्षेप में बताया है, जो निब्बाण की ओर ले जाते हैं। अपने अठारहवें अध्याय में उन्होंने भी, एकाग्रता की व्याख्या के बाद, समझ को 'अंतर्दृष्टि' के रूप में परिभाषित किया है और फिर इसे चार भेदभावों के अनुसार चार गुना समझाया है, इस प्रकार अंतर्दृष्टि के सिस्टम को सीधे पटिसंभिदमग्ग से जोड़ा है। निब्बाण के इस रास्ते की अपनी व्याख्या के अंत में वह चार 'कार्यों' को लाते हैं, अर्थात् पूरी तरह से समझना, त्यागना, महसूस करना और विकसित करना, जिन्हें दशुतर से पफी-संभिदमग्ग ने लिया है, और हमारे पाठ का अनुसरण करते हुए उन्हें अलग-अलग चार 'वास्तविकताओं' - दुख, उत्पत्ति, समाप्ति और मार्ग से जोड़ते हैं और कहते हैं कि उन्हें एक ही समय में एक साथ काम करना चाहिए (XXIII, पृष्ठ 132)। इस प्रकार अंतर्दृष्टि का पूरा पटिसंभिदमग्ग सिस्टम

[1] *Patisambhidamaggaganthipadatthavannana*, ed. Ariyavamsa, Semage, Colombo, 1967.

एकाग्रता (शांति) पर आधारित, जो निब्बान के पल तक ले जाती है, उसे अभिधम्म के सिद्धांत की पराकाष्ठा के तौर पर दिखाया गया है, जो उनके पिछले अध्यायों में बताया गया है। धम्मपाल (11, शायद वही जो लगभग 9वीं सदी में इकास के लेखक थे) बुद्धघोष के बाद, अपने सच्चसंक्षेप में निब्बान के इस रास्ते को और भी छोटा करते हैं।

ऐसा लगता है कि सीलोन के अनुरुद्ध ने बुद्धदत्त से अपने अभिधम्मत्थ-संघ का सारांश दिया है, लेकिन अंतर्दृष्टि और शुद्धिकरण पर नौवें अध्याय में उन्होंने इस विषय को शांति और अंतर्दृष्टि के 'विकास' के रूप में पेश किया है, जिसमें पातिसंभिदमग्ग की शर्तों का इस्तेमाल किया गया है। lle ने शांति और अंतर्दृष्टि वाले इस विकास को अपने नामरूप-परिच्छेद (अध्याय VIII-XIII) में चार भेदभावों (श्लोक 1507 और 1827 आगे), चार कार्यों (1791) के साथ विस्तार से बताया है जो एक ही पल में वास्तविकताओं को भेदते हैं (1797) और चार भेदभाव मैनुअल के अंत में शांति और अंतर्दृष्टि के 'युग्मन' (1839) के साथ चरम पर हैं जिससे समाप्ति (निब्बाण) प्राप्त होती है।

सीलोन के अनुरुद्ध की तारीख पता नहीं है, लेकिन यह 12वीं सदी के बाद के हिस्से से पहले की है, जब उनके कामों पर कमेंट्री लिखी जाने लगीं। ये और दूसरे अभिधम्म मैनुअल पर कई कमेंट्री थेरवाद फिलॉसफी में अगले स्टेज को दिखाते हैं, जिसके बाद 15वीं सदी में और उसके बाद बर्मा में अभिधम्म की गहरी स्टडी हुई, लेकिन यह हमें पटिसंभिदमग्ग के कॉन्सेप्ट को और आगे बढ़ाने के लिए बहुत आगे ले जाएगा।

महानामा

पटिसंभिदमग्ग के कमेंट करने वाले ने अपने आखिरी श्लोकों में कहा है कि यह काम राजा मोग्गलन की मौत के तीन साल बाद पूरा हुआ, जब लेखक महाविहार में मंत्री उत्तर के बनाए एक मठ (परिवेण, PTC देखें) में रह रहे थे। यह उत्तर शायद मोग्गलन I का सेनापति है, जिसका ज़िक्र कालवंश (XXXIX. 58) में अपने नाम पर एक मेडिटेशन हॉल (पधनघर, MA i 78 देखें) बनाने के लिए किया गया था। इतिहास में (XXXIX. 42) महानाम नाम के एक साधु का भी ज़िक्र है, जिसे खुद राजा ने बनवाया था, लेकिन क्योंकि यह और वह मठ जहाँ से वह आया था, महाविहार से अलग हैं, इसलिए ऐसा नहीं लगता कि यह वही महानाम है। राजा मोग्गलन I की संभावित तारीख A.D. 496-513 है, हमें महानाम के सद्धम्म-प्पकासिंत के पूरा होने की तारीख 516 मिलती है। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि यह महानाम महावंश के लेखक के समान था, जो सीलोन परंपरा के अनुसार राजा धातुसेन (A.D. 460-78) के चाचा थे, जो मोग्गल्लान I (मलालसेकर, द पाली लिटरेचर ऑफ़ सीलोन, पेज 140) के पिता थे। यह नाम उस समय के भिक्षुओं के बीच आम था।

महानाम और धम्मपाल । के बीच समय के हिसाब से रिश्ता अभी साफ़ नहीं है, हालाँकि उनकी कमेंट्री को डिटेल में मिलाकर यह पता चल सकता है कि उनमें से कोई एक दूसरे के काम को जानता था या नहीं। अभी तक, ऐसा लगता है कि उन्होंने अलग-अलग काम किया, दोनों ने बुद्धघोष की रचनाओं का इस्तेमाल किया। पटिसंभिद्दमग्ग पर एक कमेंट्री लिखना, विसुद्धिमग्ग का एक साफ़ अगला भाग लग सकता है, खासकर खुद्दकभाणक का, जैसा कि ऊपर बताया गया है। इस तरह खुद्दक निकाय एक ऐसी पहचान बना लेगा जो सिद्धांत और व्यवहार की व्याख्या के तौर पर दूसरे चार निकायों के साथ तुलना कर सके, न कि सिर्फ़ आम लोगों और बच्चों को सिखाने के लिए कमोबेश ज्ञान बढ़ाने वाली कहानियों का एक कलेक्शन (जातक और धम्मपद कमेंट्री)। दूसरे खुद्दक ग्रंथों पर कमेंट्री लिखना शायद बहुत कम ज़रूरी लगता। 6वीं सदी के आखिर में महाविहार में उपासने ने महानिदेश पर कमेंट्री लिखी थी (मान लें कि राजा संघबोधि अग्गा-बोधि । हैं, जो कमेंट्री को पूरा करने के लिए उनके राज का 26वां साल, A.D. 594 बताता है; इसके आखिरी श्लोक देखें), शायद इसके बाद आई होगी क्योंकि यह लेक्सिकोग्राफी के लिए ज़रूरी थी (यह पेटकोपदेश-नेट्टी इंटरप्रिटेशन सिस्टम की व्याख्या से शुरू होती है)। हो सकता है कि उसके बाद ही धम्मपाल । ने खुद्दक कमेंट्री में खाली जगहों को भरना शुरू किया ताकि पूरे तिपिटक पर एक पूरा साइकिल तैयार किया जा सके। लेकिन अभी यह सिर्फ़ अंदाज़ा है। धम्मपाल । महानाम की कमेंट्री से कोई जान-पहचान नहीं दिखाते, जैसा कि हम देख पाए हैं, हालांकि उन्होंने पटिसंभिदमग्ग टॉपिक पर बात की है। ऐसा लगता है कि उन्होंने पटिसंभिदमग्ग को विशुद्धिमग्ग के ज़रिए पढ़ा, जिससे उन्होंने कोटेशन और एक्सप्लेनेशन दोनों कॉपी किए। दूसरी ओर, महानामा को धम्मपाल की कमेंट्री के बारे में पता नहीं लगता। दोनों ही खुद को पुरानी सिंहली अट्ठकथा के ऑथेंटिक ट्रांसलेशन तक ही सीमित रखते हैं। अगर दोनों में से कोई भी दूसरे के काम को जानता था, तो शायद उसने इसे ऑथेंटिक नहीं माना होगा, क्योंकि यह ट्रांसलेशन नहीं बल्कि ओरिजिनल काम था, सिवाय इसके कि इसमें बुद्धघोष की कॉपी की गई थी।

यह खास बात है कि बुद्धघोष ने खुद्दक निकाय के पहले टेक्स्ट, खुद्दकपथ पर काफी डिटेल में कमेंट्री लिखी थी, हालांकि ऐसा लगता है कि उन छोटे हिस्सों पर कोई पुरानी सिंहली अट्ठकथा नहीं थी (देखें Ñāṇamoli का उनके ट्रांसलेशन का इंट्रोडक्शन, द इलस्ट्रेटर ऑफ़ अल्टीमेट मीनिंग, पेज xi; cf. आदिकारम, जो, हालांकि, जातक और धम्मपद और सुत्तनिपात के अलावा खुद्दक टेक्स्ट पर कमेंट्री की साफ कमी पर कोई ध्यान नहीं देते, जैसा कि पूरे तिपिटक पर महदत्तकथा में शामिल है, पेज 10-1)। एक को छोड़कर, टेक्स्ट के नौ सेक्शन तिपिटक में दूसरी जगहों से लिए गए हैं और बुद्धघोष ने वहां या विशुद्धिमग्ग में पहले ही उन पर कमेंट कर दिया है (साथ ही नंबर VII पेतवत्थु से है, जिस पर बुद्धघोष ने नहीं लिखा था)।

एक कमेंट्री)। लेकिन इलस्ट्रेटर में बुद्धघोष ने एक छोटा सा विशुद्धिमग्ग दिया है, जिसमें ज़्यादातर अभिधम्म थ्योरी को छोड़ दिया गया है, जैसे कि खुद्दक निकाय का इंट्रोडक्शन हो। जैसा कि नानामोली अपने इंट्रोडक्शन (पेज v) में बताते हैं, यह एक इंडिपेंडेंट काम है और दूसरे निकायों पर कमेंट्री की तरह, विशुद्धिमग्ग को पहले से मानकर नहीं चलता और मुख्य सिद्धांतों को समझाने के लिए उसका ज़िक्र नहीं करता (नानामोली को इसका सिर्फ़ एक रेफरेंस मिलता है, vi 79 पर, चार सच के बारे में डिटेल में, जिन्हें इलस्ट्रेटर, iv 20-3, v 56 में सिर्फ़ शॉर्ट में समझाया गया है, सिवाय इसके कि चौथा, आठ गुना रास्ता, जो प्रैक्टिकल है, जिसका ज़िक्र iv 38-41 पर किया गया है, पूरे काम में इसके हिस्सों में समझाया गया है)। यह सच है कि खुद्दकपाठ का इस्तेमाल सभी नए लोगों के लिए किया जाता था, सिर्फ़ खुद्दक निकाय के लोगों के लिए नहीं, जिससे इस पर एक पूरी और इंडिपेंडेंट कमेंट्री ज़रूरी हो गई। फिर भी, खुद्दक निकाय पर कमेंट्री में सबसे आगे इलस्ट्रेटर का होना उस निकाय को दूसरे निकायों से ज़्यादा इंडिपेंडेंट बनाता हुआ लग सकता है, जिनकी कमेंट्री विशुद्धि-मग्ग का ज़िक्र करके शुरू होती थी। यह इशारा महानामा ने पूरी तरह से किया हुआ लगता है, जो आम तौर पर विशुद्धिमग्ग का ज़िक्र करने के बजाय उससे मटीरियल को दोबारा इस्तेमाल करते हैं, जैसा कि इलस्ट्रेटर करते हैं। इस तरह महानामा खुद्दक-भाणकों को चार सच और कई दूसरे विशुद्धिमग्ग टॉपिक की डिटेल देता है जो शुरुआती इलस्ट्रेटर में छूट गए थे। तो, हमारी हाइपोथीसिस यह है कि खुद्दकभाणकों के करिकुलम में दूसरे निकद्यों के लिए ज़रूरी विशुद्धि-मग्ग को छोड़ दिया गया था। उन्होंने खुद्दकपथ और पटिसम्भी-दमग्ग को उनकी कमेंट्री के साथ पढ़कर सिद्धांत का पूरा ज्ञान हासिल किया और फिर जातक वगैरह की ओर बढ़े।

बुद्धघोष की रचनाओं से परिचित, महानाम थेरवाद सिद्धांत के बारे में एक पूरी और सही राय रखते हैं, जैसा कि वहाँ बताया गया है। उनके हाथों में यह सिस्टम ज़्यादा लचीला लगता है। वह बुद्धघोष की ज़्यादातर बातों को हूबहू दोहराते हैं, जैसा कि उनके मकसद के हिसाब से होता है, खासकर विशुद्धिमग्ग से, जैसे कि समभाव पर लंबा हिस्सा (उपेखा, पेज 187-8, Vsm. पेज 129-31 HOS से) और चार सच पर उनकी बाकी की बातें (पेज 142-201, cf. Vsm 423ff., 572ff., 436ff., इस तरह दोबारा अरेंज करने के साथ-साथ सप्लीमेंट भी किया गया)। इस तरह वह पटिसंभि-दमग्ग की सूखी समरी को डिटेल में बताते हैं। दूसरी तरफ, वह आम तौर पर बुद्धघोष के दिए गए शब्दों के सभी संभावित मतलबों की पूरी और ज्ञानवर्धक डिक्शनरी परिभाषाओं को दोहराने से बचते दिखते हैं। आम तौर पर महानाम सिर्फ़ उस संदर्भ के लिए ज़रूरी मतलब बताता है जिसे वह समझा रहा है और इसलिए ज़्यादा छोटा और पढ़ने में आसान होता है।

महानाम (पेज 1) यह कहकर शुरू होता है कि सारिपुत्त ने पटिसंभिदमग्ग की रचना करके धम्म-चक्कप्पवत्तन सुत्तंत को समझाया, इस तरह समझ से ज्ञान पाने के मुख्य विषय की ओर इशारा किया।

चार सत्य। उस पर उनकी कमेंट्री (अट्ठ-कठ) लिखने के मुख्य सोर्स सुत्त और लॉजिक (युत्ती, सही सिद्धांत बनाने के लिए कथावत्थु में सबसे पहले बताए गए दो तरीके) और पुरानी कमेंट्री की मेथड-ऑलोजी हैं (पेज 2. cf. पेज 703)। यहाँ इस बात का कोई संकेत नहीं है कि पटिसंभिदामग्ग पर कोई पुरानी कमेंट्री थी, न ही यह कि महानाम ट्रांसलेट कर रहे थे। मतलब निकालने पर यह ध्यान दिया जा सकता है कि महानाम (पेज 647) 'बाहर निकाला जाना' (नेय्या) और 'बाहर निकाला जाना' (नीता, शाब्दिक) शब्दों को समझाते हैं, जो ट्रीटीज़ XXI में आते हैं, और ज़ोर देते हैं कि बुद्ध के शब्द गहरे हैं और उन्हें हमेशा शाब्दिक रूप से नहीं लेना चाहिए (पेज 691, IB2 पेज 150-1 देखें)।

चार भेदभावों पर शुरुआती बातचीत विभंग (293 ff.) और उसकी कमेंट्री (सम्मोहविनोदंत 386 ff.) पर आधारित है, जिसमें थोड़े बदलाव हैं और कुछ शब्द विशुद्धि-मग्ग (372-4) से जोड़े गए हैं। यह ध्यान देने वाली बात है कि भेदभाव के चार हिस्सों को सिर्फ़ ज्ञान के हिस्से कहा जाता है (अदना, पेज 3, VbhA से)। 'अर्थ' की सही व्युत्पत्ति 'आर', 'गो' से उसी पेज पर दी गई है, VbhA से भी वैसे ही लेकिन शब्दों को बदलकर: क्योंकि यह 'अर्य्यति' (गया) है, पाया जाता है, कारण (हेतु) के अनुसार, इसे 'उद्देश्य' (अत्था) कहा जाता है। यह बताया गया है कि भाषा (निरुत्ति) शब्दों पर आधारित है, कॉन्सेप्ट पर नहीं (पेज 5, VbhA से भी)। इस तरह यह भेदभाव सिर्फ़ भाषा या ग्रामर से जुड़ा होगा, मतलब (कॉन्सेप्ट) से नहीं, जो पहले भेदभाव से जुड़े हैं। हम देख सकते हैं कि यह फ़र्क पेटकोपदेश-नेट्टी के शब्दों और मतलब के सिस्टम से मिलता-जुलता है। महानाम बताते हैं कि भाषा, या शब्द या अलग-अलग तरह के नाम, मतलब बताते हैं, जब पटिसंभिदामग्ग की भेदभाव की परिभाषाओं पर कमेंट करते हुए, ज्ञान के तौर पर, भाषा का मतलब 'एक्सप्रेशन की भाषा में अपीलेशन' होता है (Ps i 88, PsA 306)। नाम या भाषा दुनिया में सिर्फ़ कन्वेंशन हैं और आखिर में होते नहीं हैं (PsA पेज 307)। 'कॉन्सेप्ट' (पण्णण्णण्) को हमेशा की तरह 'जानना' (p. 486) के तौर पर डिफाइन किया गया है। 'कॉन्सेप्ट-पावर' तब सिद्धांत पर बातचीत से दूसरों को खुश करने की होती है (p. 622), ज़ाहिर है क्योंकि यह इसे जानवाने या समझने की पावर है। धम्म को एक भेदभाव के तौर पर समझाने के लिए धम्म के स्टेशन (नानामोली: विचारों का कारण और कारण वाला रिश्ता) की जानकारी दी गई है, जहाँ महानामा कहते हैं कि धम्म का मतलब है 'किसी हालत से होना' (पेज 18)। यहाँ उन्होंने कमेंट्रीज़ को खंगाला है ताकि धम्म के मतलबों की एक लंबी लिस्ट तैयार की जा सके जो कहीं और नहीं मिलती, लेकिन यह आखिरी वाली उनकी अपनी लिखी हुई लगती है। यह कहना ही काफी होता कि धम्म एक हालत या कारण है, जैसा कि विभंग कहता है, लेकिन महानामा शायद धम्म के असर के तौर पर होने की रेगुलरिटी पर ज़ोर देना चाहते थे, जिसका मतलब 'स्टेशनों' के कॉन्सेप्ट से था।

इस शुरुआती बातचीत को खत्म करते हुए, महानाना कहते हैं (p.8) कि पटिसंभिदामग्गप्पाकरण इन चार भेदभावों के रास्ते पर लिखा गया लेख (पकरण) है, इस तरह ज़ाहिर तौर पर इस काम को इसका सही टाइटल मिला, जो आमतौर पर छोटा होता है। दैन (p.10) बताता है कि 'ज्ञान' को पहले क्यों लिया जाता है, क्योंकि सही थ्योरी रास्ते की शुरुआत में आती है। 'ज्ञान' का मतलब है कि यह 'अपने-स्वभाव' (सभाव) और यूनिवर्सल (समान) खासियतों (p. 14) के हिसाब से धम्मों (सिद्धांतों) को जानता है। जैसा कि ऊपर बताया गया है, इस कमेंट्री सिस्टम में 'अपना-स्वभाव' हर सिद्धांत की खास खासियत है, जो उन सभी की खासियतों जैसे कि नश्वरता जैसी यूनिवर्सल खासियतों से अलग है। महानाम के अनुसार, यहाँ समझ (पञ्णा) ज्ञान का एक पर्याय है, लेकिन अनिश्चित या आम अर्थ में। ज्ञान का एक खास अर्थ होता है। इसकी खासियत अपने स्वभाव में घुसना या सटीकता से घुसना है। इसका काम (रस) चीज़ों को रोशन करना है। इसका 'दिखावट' भ्रम की अनुपस्थिति है। इसका 'तुरंत होने वाला कारण' (स्थिति) एकाग्रता है। इस आखिरी के साथ हमारे पास पहले से ही एकाग्रता (शांति) और ज्ञान (समझ या अंतर्दृष्टि) का 'युग्मन' है। अगर हम इन परिभाषाओं की तुलना कमेंट्री सिस्टम से करें, तो हम पाते हैं कि अट्ठासालिंट 'समझने की क्षमता' (पेज 123) के लिए वही खासियत, काम और दिखावट देता है, हालांकि केवल दूसरी परिभाषाओं के विकल्प के रूप में। हालाँकि, तुरंत होने वाले कारण के लिए, यह कमेंट्री 'बिना भ्रम' (अमोहा) के लिए कारण (हेतु) के रूप में 'विकास' (भवंद) देती है, जो समझने की क्षमता (पेज 127) का पर्याय है। इस तरह हम कॉन्संट्रेशन के साथ कनेक्शन को मिस कर देते हैं, हालांकि 'डेवलपमेंट' में वह भी शामिल होना चाहिए। हालांकि, विसुद्धिमग्ग (p.370) में महानामा जैसी ही डेफिनिशन दी गई हैं, लेकिन 'समझ' के लिए (सिर्फ)। काम अभी भी अलग है, जो भ्रम के अंधेरे को खत्म करना है, और खासियत को और भी खास बनाया गया है कि यह प्रिंसिपल्स के अपने नेचर में घुस जाए (असल में ज़रूरी नहीं है क्योंकि किसी और चीज़ का अपना नेचर नहीं होता)। यहां हमारे पास थेरवाद की कमेंट्री ट्रेडिशन की कुछ कन्फ्यूज्ड दौलत का एक उदाहरण है, जिसमें बुद्धघोष और महानामा उनसे एक जैसा सिस्टम बनाने की कोशिश कर रहे हैं। महानामा की डेफिनिशन 'नॉलेज' को 'अंडरस्टैंडिंग' का सिनोनिम बनाती हैं, भले ही उनके खास और जनरल पहलू अलग-अलग हों। शायद 'फंक्शन' या 'अचीवमेंट' में जो अंतर यहां दिखता है, वह इससे मेल खाता है: नॉलेज ऑब्जेक्ट्स (विषय) को रोशन करता है; समझ भ्रम को खत्म करती है।

दो 'खासियतों', अपनी (प्रकृति) या खास और यूनिवर्सल, का कॉन्सेप्ट कमेंट करने वालों का एक पावरफुल एनालिटिकल टूल है। सिद्धांतों (धम्मों) पर विचार उनके होने और न होने के हिसाब से किया जाना चाहिए, जब उन्हें कुछ समय के लिए न रहने वाला, वगैरह, या 'होने' (अस्तित्व, परमानेंट) के तौर पर देखा जाए; और उनकी अपनी-खासियतों (सलक्खा) और यूनिवर्सल खासियतों के खालीपन के सिद्धांत के हिसाब से (PsA 178, SA iii)।

181). इस तरह कहा जा सकता है कि वे कुछ समय के लिए नहीं होते और खाली (होने या 'आत्मा' के) होते हैं, उनकी अलग-अलग खास या अलग-अलग खासियतें भी खाली होती हैं (और सिर्फ़ एक पल के लिए काम करती हैं)। यह दसुतर सुत्तंत से मिली प्रैक्टिस पर लागू होता है और बाद में इसे डायरेक्ट-नॉलेज और 'चार काम' कहा गया: प्रिंसिपल्स को उनकी अपनी-प्रकृति की खासियतों की समझ के अनुसार 'सीधे-जानना' होता है; उन्हें उनकी यूनिवर्सल खासियतों की समझ के अनुसार 'पूरी तरह से समझना' होता है (PSA 61)। इस तरह पहला 'डायरेक्ट-नॉलेज' खास खासियतों को समझने पर आधारित है और इसके बाद नश्वरता, दुख और गैर-आत्मा, प्रिंसिपल्स की असलियत और उनकी यूनिवर्सल खासियतों की पूरी समझ होनी चाहिए। हमने देखा है कि यह पतिसंभिदमग्ग के रास्ते का आधार है: महानाम यहाँ डायरेक्ट नॉलेज और पूरी समझ के बीच के संबंध और क्रम को साफ करने की कोशिश करता है। छोड़ने और डेवलप करने के काम साफ़ हैं, लेकिन 'साकार होना' को महानाम ने उसी जगह समझाया है, जहाँ वह (सीधा) एहसास (पच्चक्खा) होना है, जो बेशक निब्बाण का असली अनुभव है। पटिसंभिदामग्ग खुद सिद्धांतों के उठने, गिरने और बदलने को 'विशेषताएँ' बताता है, जैसा कि ऊपर बताया गया है, यह भी कि सिद्धांत 'बने' या 'बिना बने' (सिंथेसिस या अनसिंथेसिस) होते हैं। बिना बने निब्बाण को एक अलग कैटेगरी के तौर पर छोड़ दें, तो बना-बनाया-विशेषता (संखतलक्खा) बस यूनिवर्सल खासियत 'अस्थायीपन' (PsA 523) का एक विस्तार है। महानाम ने यहाँ और दूसरी जगहों पर इसे अपनी 'बदलाव' (विकार) की कैटेगरी में शामिल किया है।

हमने देखा है कि चार 'गलतियां' यूनिवर्सल खासियतों को न समझने से होती हैं। इस थ्योरी को प्रैक्टिस से जोड़ते हुए, महानाम 'माइंडफुलनेस' (सति) एक्सरसाइज को उनका एंटीडोट बनाते हैं। सबसे पहले वह साफ करते हैं कि माइंडफुलनेस ही ज्ञान की तरफ के प्रिंसिपल्स को डेवलप करने का 'बेसिस' (उपत्थाना) है (p.618)। फिर वह समझाते हैं कि शरीर को देखना, जो बदसूरत या 'गंदा' है, यह गलती खत्म कर देता है कि वह सुंदर है। इमोशंस को देखना दुख को खुशी समझने की गलती खत्म कर देता है। विचारों को देखना परमानेंस की गलती खत्म कर देता है। आखिर में, प्रिंसिपल्स को देखना यह गलती खत्म कर देता है कि एक हमेशा रहने वाली आत्मा है (p. 696 भी देखें)। शॉर्ट में, फिर से, सभी प्रिंसिपल्स खाली हैं (p. 638)।

'ज्ञान' पर वापस आते हुए हम पाते हैं कि महानामा बताते हैं कि 'समझ' को गुण और कॉन्संट्रेशन बढ़ाने की तरह अलग क्यों नहीं लेना चाहिए (पेज 19)। एक तरफ इसे प्रिंसिपल्स के लिए स्टेशनों के ज्ञान में शामिल किया गया है (कॉज़ैलिटी, नंबर 4)। लेकिन इससे भी ज़्यादा ज़रूरी बात यह है कि इसे 'कॉन्संट्रेशन के साथ जोड़ा गया है (जब कॉन्संट्रेशन बढ़ गया हो)' 'शांति और समझ' के तौर पर। वे 'एक साथ जुड़े हुए हैं' (युगानंद) और उनके लिए एक अलग किताब लिखी जाएगी (पेज 281)।

महानामा (पृष्ठ 438) बताते हैं कि सभी गलत विचार (ग्रंथ II)

'परसेप्शन' (सङ्ढ) से हमारा मतलब है, अनुभव पर थोपी गई दिमागी गलतफ़हमी या गलतफ़हमी, न कि असली 'सेंस' या सीधे अनुभव से। यह ब्रळिमजळ सुत्तंत में बताए गए और पटिसंभिदामग्ग में संक्षेप में बताए गए गलत विचारों के 'आधार' से पूरी तरह मेल खाता है। बाद में (p.511) महानाम ऊपरी 'परसेप्शन' की तुलना 'अंतर्दृष्टि' से करता है जो खास और यूनिवर्सल खासियतों को पकड़ती है। इस ग्रंथ में 'यह दुनिया' और 'दूसरी दुनिया' (p.452) शब्दों की एक दिलचस्प व्याख्या है। "यह दुनिया" का मतलब है अतीत में किया गया काम (क्योंकि उसी ने इसे बनाया था) और 'दूसरी दुनिया' का मतलब है यहां किया जा रहा काम (अभी, जो इसे बनाएगा)।

मुक्ति के तीन (एंट्रेंस) (ट्रीटाइज़ V) तीन यूनिवर्सल विशेषताओं (p.550) के ज़रिए समझाए गए हैं। 'बनाए गए' (सिद्धांतों) को कुछ समय का न होने की समझ से बाहर आने पर, व्यक्ति को आत्मविश्वास ('विश्वास') की क्षमता मिलती है और वह 'संकेत' (अनिमित्त) मुक्ति से मुक्त हो जाता है। (किसी चीज़ का 'संकेत' उसका ऊपरी रूप है, आकर्षक या घिनौना वगैरह, जिसे 'समझ' से समझा जाता है; संकेतों से ध्यान हटाकर व्यक्ति मुक्त हो जाता है।) उन्हें दुखी समझने से बाहर आने पर, व्यक्ति को ध्यान लगाने की क्षमता मिलती है और वह 'अनकमिटेड' (अपपनिहिता) मुक्ति से मुक्त हो जाता है। उन्हें बिना आत्मा के समझने से बाहर आने पर, व्यक्ति को समझने की क्षमता मिलती है और वह 'खाली' (सुञ्ञता) मुक्ति से मुक्त हो जाता है।

महानाम की कमेंट्री में दिलचस्प बातों में से एक है, संगीति और दसुतर सुत्तंतों को संगीतिपरीयाय (p.68) और दसुतरपरीयाय (p.65) कहना। बेशक, इसका मतलब यह नहीं है कि उन्हें उन नामों के अलग-अलग टेक्स्ट पता थे; कोई भी p. 68 पर 'संगीति और महानाम का सिस्टम, जब उनके सिस्टम को मिलाता है, तो दोनों टेक्स्ट के लिए परीयाय का इस्तेमाल करता है' का अनुवाद कर सकता है। फिर भी, यह टर्मिनोलॉजी स्कूल के अभिधम्म में मतभेदों से पहले ऐसे टेक्स्ट के पहले के होने का एक निशान हो सकती है। हालाँकि, गणतिपद (p.68) कहता है कि सुत्तों की शिक्षा का नेचर यह है कि यह परीयाय के अनुसार है, जबकि अभिधम्म बिना परीयाय के है। यह थोड़ा अजीब है क्योंकि सवाल धातुओं की अलग-अलग लिस्ट का है और अभिधम्म ऐसी लिस्ट से शायद ही अलग हो, भले ही, जैसा कि गंथिपाद आगे कहता है, यह हर शब्द को 'प्योर' (एनालिटिकल) तरीके से देखता है। इसका मतलब शायद यह है कि परिय्य को अभिधम्म में भी सुत्तंत-एनालिसिस के लिए लिया जा सकता है और परिय्य के बिना अभिधम्म-एनालिसिस के लिए, जो असल में हमारी ऊपर दी गई हाइपोथीसिस से मेल खाता है। 'बिहेवियर' की थ्योरी में एक्टिव कॉन्शसनेस के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द 'इंपल्सन' (जवाना) इस तरह साफ़ किया गया है (p.639): यह अपने ऑब्जेक्ट्स (विषय, यहाँ मन के ऑब्जेक्ट्स जैसे छठी इंद्रिय, जिसमें पाँच इंद्रियों के ऑब्जेक्ट्स शामिल हैं, क्योंकि यह उन सभी पर फैला हुआ है, Sv 217-8, 'ऑब्जेक्ट्स' देखें) की ओर तेज़ी से (जावती) बढ़ता है।

जर्नल ऑफ़ इंडियन फ़िलॉसफ़ी वॉल्यूम 111, 1975, पेज 357)। यह ध्यान दिया गया है कि निब्बान समय से बाहर है, 'समय से आज़ाद' (कलविमुत्त), सभी बने हुए सिद्धांतों के उलट, जो तीनों समय में होते हैं (पेज 647)।

पतिसंभिदमग्गप्पकरनत्थकथावन्नन्द-गण्तिपदत्तनिच्चय

यह गुमनाम काम, जिसे शॉर्ट में (Ps) गणथिपद कहा जाता है, अपने पूरे टाइटल के हिसाब से 'पतिसंभिदमग्गप्पाकरण पर कमेंट्री को समझाने में मुश्किल शब्दों के मतलब का पता लगाना' है। इसकी तारीख लगभग 9वीं या 10वीं सदी ही पता है और इसे आनंद और धम्मपाल II की सब-कमेंट्री (इकास) के बाद सीलोन में लिखा गया था, जो खुद बिना तारीख के हैं (8वीं या 9वीं सदी, JPTS 1981, पेज 203 देखें), जिन्होंने तमिलनाडु में लिखा था। एडिटर ने अभिधम्म पर आनंद की मालटिका (पेज 105, 147, 151) से कई कोटेशन नोट किए हैं और पेज 89 पर बताई गई अभिधम्मटिका शायद वही सब-कमेंट्री है।

ऐसा लगता है कि लेखक ने धम्मपाल II (दिन्नाग की सौत्रान्तिक थ्योरी, IB2 476 से) द्वारा अपनाए गए ज्ञान-मीमांसा के सिस्टम को मान लिया है और उदाहरण के लिए दीघ निकाय (DT i 191-2) पर सब-कमेंट्री में इसे बताया है। इस तरह, 'संरचनाओं के बारे में (तरह की) समता के ज्ञान' के दो अलग-अलग मतलबों के बारे में महानामा के नतीजे पर कमेंट करते हुए (पेज 24, ज्ञान नंबर 9 पर; नानामोली के एक्स्ट्रा शब्द, जिन्हें हमने ब्रैकेट में रखा है, दिखाते हैं कि उन्हें भी 'समता' के प्लूरल होने में मुश्किल महसूस हुई और, महानामा की तरह, वह इससे बचना चाहते थे) वह ज्ञान के दो माने हुए तरीकों को लागू करके दोनों को सही ठहराने की कोशिश करते हैं (पेज 34)। महानाम कहता है कि सिर्फ़ पहली व्याख्या, जो खुद पातिसंभिदमग्ग (ii 64, V §84) के एक बाद के हिस्से पर आधारित है, सही है। गणतिपद कहता है कि यह संवेदना (पच्चक्ख) के नज़रिए से मुक्ति की इच्छा से सहमत है, जब संरचनाओं के बीच होने का खतरा देखा जाता है (समभाव = संरचनाओं के प्रति उदासीनता)। दूसरी ओर, अनुमान (अनुमान, ज्ञान का दूसरा तरीका) के नज़रिए से, यह साबित होता है कि ऐसी संरचना से मुक्ति की इच्छा होती है जिसका खतरा अनुमान से महसूस होता है (इसका मतलब शायद कई समभाव हैं जो ऐसी सभी संरचनाओं के प्रति उदासीनता के रूप में हैं, जिन्हें एक ही तुरंत समभाव के रूप में सीधे अनुभव किए जाने के बजाय अलग-अलग माना जाता है)। इस तरह, गण्तिपद इस टेक्स्ट के शाब्दिक मतलब, 'समभाव के बारे में ज्ञान' को सपोर्ट करता है, साथ ही महानाम की इस बात को भी सपोर्ट करता है कि समभाव एक ही सिद्धांत है, हालांकि इसके लिए अलग-अलग शब्द हैं। समभाव एक धम्म है और इसका अनुभव या एहसास हमेशा एक जैसा होता है। लेकिन इसके लिए कई शब्द हैं, जैसे 'मुक्ति की इच्छा' और 'सोचने का विचार' भी।

जैसे 'फॉर्मेशन के बारे में बराबरी', जो सिर्फ़ भाषा या 'कॉन्सेप्ट' हैं। इसी तरह, अलग-अलग फॉर्मेशन से होने वाले अलग-अलग खतरों के बारे में भी कई अंदाज़े लगाए जा सकते हैं, जब उन्हें तुरंत अनुभव करने के बजाय उन पर सोचा जाता है। दिन्नागा (1182 455-65) के अनुसार, सभी भाषा (एक्सप्रेशन) अंदाज़ा लगाने वाली होती हैं और अंदाज़ा 'इमेजिनेशन' होता है (यह अपने ऑब्जेक्ट की कल्पना करता है, अनुभव के असली ऑब्जेक्ट तक नहीं पहुँचता)। धम्मपाल ॥ यह कहते हुए उनके पीछे चलते हुए लगते हैं कि परंपरा (आगम) अंदाज़ा है (DT i 192) और यूनिवर्सल खासियतें 'कॉन्सेप्ट' हैं, जिनका कोई अपना नेचर नहीं है और वे धम्म से अलग नहीं हैं (वे जनरलाइज़ेशन, अंदाज़े हैं; 182 476, विशुद्धि-मग्गटिका, चट्ठासिंघिति, 1960, ii 438)। इस बैकग्राउंड के खिलाफ, ऐसा लगता है कि गण्तिपद असल टेक्स्ट को कई तरह के एक्सप्रेशन के तौर पर लेता है, जो अंदाज़े से जुड़े और कॉन्सेप्चुअल हैं, और महानामा की एक्सप्लेनेशन खुद समता के असली अनुभव (सेंस) के बारे में है। यह आसान एक्सप्लेनेशन ऐसे कॉन्सेप्ट्स को सामने लाती हुई लग सकती है जो पटिसंभिदामग्ग के असली लेखक को नहीं पता थे, या कम से कम उन्होंने या महानामा ने इस्तेमाल नहीं किए थे। लेकिन अगर इन कॉन्सेप्ट्स में समझ के नेचर में गहराई तक जाने और निब्बान पाने के प्रैक्टिकल अनुभव को समझाने की ताकत है, तो यह माना जा सकता है कि वे सही हैं और पटिसंभिदामग्ग की 'गहराई (गंभीरत्ता)' को बताने के लिए उनका स्वागत किया जाना चाहिए। इस पॉइंट पर हम अभी भी भजन के टेक्स्ट के पेज 1, लाइन 10 पर हैं, लेकिन महानामा की कमेंट्री के पेज 24 पर हैं और गण्तिपद के 34 घने प्रिंटेड पेजों के आखिर के करीब हैं। यह कमेंट करने वालों की तरफ से कोई फालतू बात नहीं है, बल्कि यह एक सिस्टम है। टेक्स्ट के बाद के ग्रंथों में बताई गई बातें कमेंट्री में पहले से बताई जाती हैं क्योंकि उनका पहले के टॉपिक से कनेक्शन होता है। मौजूदा कमेंट्स सिर्फ़ ग्रंथ I, उसके 'शेड्यूल' (मटिका) के कंटेंट की लिस्ट पर हैं। इसके हर शब्द की व्याख्या 'भेद-भाव के रास्ते' के सिस्टम के ज़्यादातर हिस्से को कवर करती है।

महानामा की 'ज्ञान' की परिभाषा, उसकी 'विशेषता' (लक्क-हाना), वगैरह के साथ, ऊपर दी गई है। इस पर (महानामा पेज 14, पेज 1, लाइन 1, भजन के टेक्स्ट पर), गणतिपद (पेज 26) कहता है कि सभी ज्ञान में 'यूनिवर्सल विशेषता, वगैरह' का तरीका होता है (यानी 'स्व-स्वभाव विशेषता' और यूनिवर्सल विशेषता)। इस तरह इसकी विशेषता दो तरह की होती है। एक धम्म (सिद्धांत) की दो तरह की विशेषता होती है: 'स्व-स्वभाव' हर खास धम्म के लिए खास होता है, 'यूनिवर्सल' पहलू सभी के लिए कॉमन होता है। 'आंशिक' यूनिवर्सल (या क्लास) भी होते हैं जैसे 'इंद्रिय-इच्छा क्षेत्र' का होना। इस तरह खास (स्व-स्वभाव) विशेषताओं और यूनिवर्सल विशेषताओं को जानने के अलावा कोई ज्ञान नहीं है। 'विशेषता' शब्द के बारे में, गणतिपद ने इसे बस ऐसे बताया है 'जिससे बिना किसी गलती के इसे समझा जा सके' (सटीकता के साथ)। इस तरह यह किसी चीज़ को ठीक-ठीक बताता है। यह उनमें से एक है

ज्ञान या समझ की पारंपरिक परिभाषाएँ, ताकि स्पष्टीकरण के अलावा कुछ भी नया न लाया गया हो। हमारे पास दो तरह का ज्ञान बचता है। हालाँकि, बाद में गणतिपद (पेज 253) कहता है कि 'बना हुआ' या 'बिना बना हुआ' जैसी विशेषता एक 'फीचर' (अकार) है, सिद्धांत (धम्म) नहीं। इसके अलावा, 'बिना बना हुआ' विशेषता असल में देखी नहीं जाती, बल्कि सिर्फ़ 'जानती है' (जो एक कॉन्सेप्ट की परिभाषा है)। इस तरह हमें ज्ञान या समझ (एक क्षमता) के रूप में 'विशेषता' को, जो एक सिद्धांत है, उसके कंटेंट से, जो एक कॉन्सेप्ट है, अलग करना होगा। एक कॉन्सेप्ट, जैसा कि हमने ऊपर फिलॉसफी को बताते हुए देखा है, धम्म का नाम हो सकता है, लेकिन यह अक्सर सिर्फ़ एक कॉन्सेप्ट, एक एब्स्ट्रैक्शन होता है, जो धम्मों के नेचर को समझाने में इनडायरेक्टली मदद करता है। अपना नेचर कुछ समय के लिए होता है (मौजूदा चीज़ नहीं)। जब महानाम कहते हैं (p.635) कि 'धम्म अपने पलों में होते हैं' (नानामोली द्वारा ट्रांसलेट किए गए पैसेज का अंत, Tr. XX नोट 1), तो उनका मतलब है कि हर धम्म अपने काम करने के पल में होता है, सिर्फ़ 'ट्रिपल' (उठना, बदलना और खत्म होना) प्रेजेंट पल में। ऐसा इसलिए है क्योंकि इसके पहले और बाद के पास्ट और फ्यूचर पलों में अपने नेचर का कोई वजूद नहीं होता (गणितपाद p.274)। फिर से, अपने नेचर का मतलब है कि यह एक अपना नेचर है जो फोकस करने के पल में अपने काम और दूसरों के काम की वजह से प्रोड्यूस हो रहा है (p.126)। असल में यह एक 'प्रोड्यूस्ड-ओन-नेचर' है, सिर्फ़ कुछ प्रोड्यूस हुआ है और अपने आप में मौजूद कुछ नहीं है। इस मामले में 'फोकस करना' (समाधान करना) असल में ध्यान लगाना (ध्यान लगाने की क्षमता) है, लेकिन शायद इसमें किसी भी काम का 'संयोग' भी शामिल होना चाहिए (यहां 'दूसरे' वे शर्तें हैं, जिन पर खुद का काम सही समय पर रिस्पॉन्ड करता है)। साथ ही 'अपने स्वभाव से खाली' (Ps ii 178) का मतलब है कि इसका खुद से कोई वजूद नहीं है, बिना किसी शर्त के (p. 274)।

तीसरी असलियत, समाप्ति (ज्ञान नंबर 62, Ps i 3 और PsA 55 पर पेज 53-9) पर अपनी चर्चा में, गणतिपाद पहले कहता है कि तीन समाप्ति हैं, यानी उत्पन्न होने की समाप्ति, न होने की समाप्ति और 'चरम सीमाओं से आगे निकल जाना' (अकांटा, मोटे तौर पर 'एब्सोल्यूट' लेकिन पूरी तरह से होने और गायब होने, 'उठने और गिरने' की चरम सीमाओं या सीमाओं से परे जाना)। पहला है 'बनने' का समाप्त होना जो उत्पन्न होते हैं, दूसरा यह कि वे रास्ते के विकास के कारण उत्पन्न नहीं होते (यह केवल महानामा द्वारा बताया गया है)। तीसरा बिना किसी शर्त के है। उत्पन्न होने की समाप्ति केवल एक 'संग्रह' (ससंभर, शायद उन सिद्धांतों के समूहों या समूहों का जो उत्पन्न होते हैं, यह केवल एक अवधारणा है, लेकिन वास्तविकताओं पर आधारित है) का एक कॉन्सेप्ट है। न उठने का खत्म होना (पेज 54) बस रास्ते की ताकत के तौर पर न उठना है, यह रास्ते (पथ) का नतीजा है, किसी 'सीरीज़' (संतान, विचारों की, चेतना की एक अलग धारा) के हिसाब से। लेकिन हद से ज़्यादा खत्म होना, बनी हुई चीज़ों की हद से बाहर है और इसे किसी भी तरफ से महसूस नहीं किया जाता (शायद होते हुए या गायब होते हुए)।

सिर्फ़ यही समाप्ति ही आख़िरकार असली है, बाकी दो सिर्फ़ इस पर तुरंत की स्थिति (और ग्रुप्स पर दूसरी स्थिति) के आधार पर बने कॉन्सेप्ट हैं। क्योंकि यह बिना बना (अजात) है, इसलिए यह बिना किसी शर्त के है। क्योंकि यह बिना किसी शर्त के है, इसलिए यह बना नहीं है: क्योंकि यह बना नहीं है, इसलिए यह 'समय से आज़ाद' (कालाविनिमुत्ता) है। क्योंकि यह समय से आज़ाद है, इसलिए यह कुछ समय के लिए नहीं है। क्योंकि यह कुछ समय के लिए नहीं है, इसलिए यह परमानेंट, फिक्स्ड है। 'स्पेस' जैसे कॉन्सेप्ट की तरह इसे 'हर समय' (सब्बाकालिका) माना जाता है। हम यहाँ इस सवाल पर नहीं जाएँगे कि क्या यह आख़िरी तर्क बौद्ध धर्म के उस स्कूल के असर को दिखाता है जो 'स्पेस' को निब्बान की तरह 'बिना बना' मानता था।

इसके बाद जो चर्चा होती है, जिसमें ज़्यादातर 59 श्लोक हैं (जिन्हें हम कहीं और नहीं ढूंढ पाए हैं, इसलिए वे किसी अनजान लेखक की निब्बान पर लिखी कविता लगती हैं), गणतिपद में कहा गया है कि निब्बान सभी धम्मों के अपने स्वभाव (विशेषता) और यूनिवर्सल विशेषता को समझने से मिलता है (पेज 56)। स्टूडेंट (योगी) चीज़ों की दुनिया के खत्म होने को (ठीक) खत्म होने के तौर पर सोचता है और ध्यान लगाकर सभी सिद्धांतों के अपने स्वभाव को देखता है। बार-बार उनकी स्थितियों को देखने और सही थ्योरी बनाने के बाद, उनसे उसे तीन पलों (घटना, पल भर के लिए 'ठहराव' और गायब होना) के हिसाब से यूनिवर्सल विशेषता मिलती है। इन तीनों को समझकर उसे जो गहरी समझ मिलती है, उससे नश्वरता, आत्मा न होना और दुख (यूनिवर्सल विशेषता) साफ हो जाता है और वह जानता है कि सारा 'अस्तित्व' (फिर से जन्म लेना) ऐसा ही है, क्योंकि तीनों 'पल' खाली हैं। इसलिए, एक समझदार इंसान को, असलियत के हिसाब से, हर पल में अपने-स्वभाव और यूनिवर्सल खासियत को जानना चाहिए। पेज 56 पर ये श्लोक, पटिसंभिदामग्ग में बताए गए 'अंतर्दृष्टि ज्ञान' के ज़रिए निब्बान के रास्ते को बताते हुए लगते हैं, लेकिन 'अपने-स्वभाव' को नश्वरता, दुख और आत्मा न होने की समझ से जोड़ा गया है। खत्म होना और उठना-गिरना तीन पलों की थ्योरी तक सीमित हो गया है। यहाँ ज़रूरी बात यह है कि हर चीज़ को बाद के थेरवाद थ्योरी के तहत लाया गया है, जिसमें दो खासियतें, या मिलकर 'खासियत' शामिल है। 'यूनिवर्सल' खासियत ज़्यादा ज़रूरी है, या बस 'खासियत' है (खास चीज़ जिसे यहाँ 'अपना-स्वभाव' कहा गया है), इस तरह पटिसंभिदामग्ग में (नाम के बिना) अपनी सबसे बड़ी जगह बनाए रखता है। लेकिन यह सिर्फ़ एक 'कॉन्सेप्ट' है, हालांकि इसमें निब्बान की असली सच्चाई को बताने की ताकत है,

ये श्लोक कुछ उपमाओं के साथ आगे बढ़ते हैं (पेज 57)। जैसे स्पेस चीज़ों के बीच का गैप है, वैसे ही खत्म होना मानो 'बनने वाली चीज़ों' के बीच का गैप है। सिद्धांत (सच्चा विचार) समुद्र में नमक की तरह ट्रांसमाइग्रेशन में है। ये इस विचार को मज़बूत करते हैं कि यूनिवर्स की स्टडी करके ही निब्बान को महसूस किया जा सकता है। फिर हम पढ़ते हैं कि समझदार इंसान को खोजना चाहिए

अपनी खासियत (सलक्खन, 'अपनी फितरत' के लिए बाद का आम शब्द) और यूनिवर्सल खासियत ताकि 'आत्मा' और 'आत्मा से जुड़ी किसी भी चीज़' जैसी राय से आज़ाद हुआ जा सके (ट्रीटिस XX की शुरुआत देखें)। हालांकि इसे गलत राय को खत्म करने के तौर पर नेगेटिव तरीके से पेश किया गया है, यह (यूनिवर्सल खासियत) नॉन-सोल को दिखाता है, जिस पर, जैसा कि हमने फिलॉसफी में देखा, पटिसंभिदमग्ग में इतना ज़ोर दिया गया है। श्लोक कुछ और उपमाओं के साथ खत्म होते हैं, लेखक यह नतीजा निकालता है कि हालांकि उपमाएं बिल्कुल नकली हैं, लेकिन मतलब या चीज़ (अत्था, मकसद, मतलब) कोई उपमा नहीं है और इसे ज़रूरी चीज़ों (निब्बान, वगैरह) के हिसाब से समझना चाहिए।

महानाम से सिस्टम के कुछ और डिटेल्स को साफ़ करते हुए, गणतिपद 'प्रिंसिपल' (अस्तित्व के एलिमेंट्स के टेक्निकल मतलब में धम्म) की डेफिनिशन को 'बिना होने (निस्सत्ता) के, एक कंडीशन, एक कंडीशन के ज़रिए होने वाला' (p.30) तक लिमिट करता है। इस तरह यह बिना होने (आत्मा, सब्सटेंस, कंटिन्यूइंग एंटिटी) के एक कंडीशन्ड कंडीशन है। 'फंक्शन' (रस) पर सिर्फ़ इसके 'अचीवमेंट' (संपत्ति, PSA 14, दूसरा मतलब सिंपल 'फंक्शन', किच्चा) का मतलब साफ़ लगता है, जिसे एक पूरा किच्चा (फंक्शन) (p. 26) के तौर पर डिफाइन किया गया है। हालांकि, देवताओं के आनंद के डिस्क्रिप्शन में, रस अत्था और धम्म के एस्थेटिक एन्जॉयमेंट के अपने एस्थेटिक मतलब में दिखाई देता है (p.262)। चार तरह की परिभाषा पर वापस आते हैं, 'दिखावट' ही 'फीचर' (अकार) है, जैसा कि महानाम ने कहा है, लेकिन इस बात पर ज़ोर दिया गया है और साफ़ किया गया है कि विकल्प के तौर पर दिया गया 'नतीजा' का मतलब 'नतीजे की खासियत' है; इसके अलावा, दिखावट को खासियत और काम में शामिल किया गया है (p.27)। एक तुरंत होने वाला कारण एक हालत है (p. 27)। दूसरे ज्ञान पर चर्चा में, जहाँ महान-अमा (p. 15) ग्रामर बनाने वालों का ज़िक्र सद्दालक्खाणविदा के तौर पर करते हैं, वहीं गणथिपाद में 'फिलॉसफर' के मिलते-जुलते ग्रुप, 'खुद की खासियत जानने वालों' के लिए दिलचस्प शब्द सभावलक्खाणविदा मिलता है (p. 28)।

कमेंट्स के सोर्स के तौर पर 'लॉजिक' (युति) के संबंध में, गांथि-पाद, कमेंट्री (पेज 166, PSA 358) या यमक (पेज 179) में दिए गए तर्कों को समझाता है। एक और जगह (पेज 158) यह कहता है कि "विल" (चंदस) कंडीशन जैसे एक्सप्रेशन को सही ठहराने के लिए लॉजिक की तलाश की जानी चाहिए (पठान में नहीं मिलता; लेकिन यह टेक्स्ट, Ps i 107 में है, हालांकि महानामा ने यहां इसका ज़िक्र नहीं किया है, इसलिए क्लैरिफिकेशन की ज़रूरत है; cf. Dii 277, Sn 865, Nd i 263; क्योंकि कोई भी धम्म, डेफिनिशन के हिसाब से, एक कंडीशन हो सकता है, इसलिए कोई सीरियस प्रॉब्लम नहीं लगती)।

नेट्टी का तरीका जहाँ सही हो, वहाँ इस्तेमाल किया जाता है। इस तरह, पाटिसंभिदमग्ग में प्यार (मेत्त, परोपकार) पर एक ग्रंथ (XIV) है, लेकिन बाकी तीन 'अथाह', करुणा, सहानुभूतिपूर्ण खुशी और संतुलन पर कोई नहीं है (हालांकि ये पाठ में दूसरी जगहों पर, ध्यान वगैरह के संबंध में मिलते हैं)। शायद कोई खास बात थी।

प्रेमपूर्ण दया पर एक खास किताब लिखने का कारण, लेकिन महानाम (p.606) बस यह बताता है कि बाकी तीनों को भी यहाँ समझना है। गण्तिपद (p. 258) इसका एक कारण बताता है: उन्हें (नेट्टी) मतलब निकालने के तरीके (लक्क-हनहार) के आधार पर समझा जाता है। इसका मतलब है कि जब किसी क्लास के एक सदस्य का ज़िक्र होता है, तो बाकी को भी समझा जाता है, जहाँ तक उस क्लास की 'विशेषता' उन सभी पर लागू होती है। चूँकि यहाँ प्रेमपूर्ण दया को उन अनगिनत चीज़ों में से एक माना गया है जो सभी दिशाओं में फैली हुई हैं और किसी के विचारों को आज़ाद करती हैं (भजन ii 131-2), इसलिए इस क्लास के बाकी तीन सदस्यों को, जिनका 'सहारा' और 'लक्ष्य' एक ही है, समझा जाता है। दूसरी जगह, गंथिपद (पेज 246-7) नेट्टी (पेज 8-10) के 'टीचिंग से इंटरप्रिटेशन' (देशांधरा) के एक्सप्रेशन और मतलब के यूनिट्स के सिस्टम को 'टीचिंग के फाइन एक्सट्रैक्ट (क्रीम)' (Ps ii 86) के कुछ शब्दों पर लागू करने की कोशिश करता है, लेकिन असल में वे यहाँ इन टेक्निकल सेंस में इस्तेमाल नहीं होते हैं। यह इंटरप्रिटेशन का सवाल नहीं है, बल्कि इंटरप्रिटेशन के सिस्टम के एक हिस्से के स्टेटमेंट को एक ऐसे टेक्स्ट में पढ़ने का सवाल है जो शायद उससे पहले का है...

'कॉन्सेप्ट' (पण्णत्ति) पर, गणथिपद इसे 'भाषा' (निरुत्ति) (पेज 30) का आम मतलब देता है, जो इस बात से मेल खाता है कि भाषा अंदाज़ा लगाने वाली होती है, अनुभव करने वाली नहीं और कॉन्सेप्ट भी असली सिद्धांतों (धम्म) के मुकाबले दूसरे दर्जे के होते हैं। लेखक पुग्गलपण्णत्ति पर कमेंट्री में बताए गए कॉन्सेप्ट के प्रकारों को लागू करता है (होने वाला या बना हुआ, या नहीं, वगैरह, जैसे पेज 86, 106, 275)। 'नाम' का कॉन्सेप्ट भी वहाँ मिलता है (पुग 171), हालाँकि इसे पूरी तरह से आनंद ने मूलारिका (S° 129) में ही डेवलप किया था। गणथिपद (पेज 151) इसका इस्तेमाल 'अक्खर' शब्द को समझाने के लिए करता है, जिसका मतलब 'एक्सप्रेशन' ('सिलेबल' के बजाय) है। जब यह एक 'छोटे' (अपाकुरा, CPD में नहीं) इस्तेमाल को '(अताज्जद) (रियलिटी) से न बना कॉन्सेप्ट' (p.282) बताता है, तो ऐसा लगता है कि यह PugA 174 के '(तज्जा) से बना कॉन्सेप्ट' को लागू कर रहा है और ऐसे इस्तेमाल को नाकाफी बता रहा है। दूसरे तरह के कॉन्सेप्ट बुद्धदत्त (pp. 83-4) से लिए गए लगते हैं, जिसमें 'मैनिफोल्ड' (समाह) या 'सिंपल' (असमह) (p. 19) शामिल हैं। महानाम 'एक जीव का मैनिफोल्ड' (p. 407) शब्द का इस्तेमाल ग्रुप्स (खंडों) की सीरीज़ के आधार पर 'जीवों' शब्द के इस्तेमाल को समझाने के लिए करते हैं और गंथीपद (p.182) इसे 'मैनिफोल्ड का कॉन्सेप्ट' बताते हैं। लेखक कसिनस ('होल्स'), वगैरह (मेडिटेशन सब्जेक्ट्स, या यूँ कहें कि कंसंट्रेशन के लिए सपोर्ट्स) को कॉन्सेप्ट कहते हैं (p.281)। 'कॉन्सेप्ट पावर' का मतलब है समझाने की पावर (पेज 267), दूसरे शब्दों में, यहां 'कॉन्सेप्ट' का मतलब वही है जो आम है।

पटिसंभिदमग्ग (ii 196) कहता है कि बुद्ध का ज्ञान देवताओं और इंसानों की समझ से कहीं ज़्यादा है। इस पर महानाम कहता है कि यह जानने लायक सभी चीज़ों को खत्म कर देता है, यहाँ तक कि जो उनके (देवताओं और इंसानों के) दायरे से बाहर है (p.648)। गंथिपद (p.283) महानाम की पाँच कैटेगरी बताता है कि क्या जाना जा सकता है (सभी जानने लायक) और नीचे दी गई बातें बताता है।

मतलब: "जो उनके दायरे से बाहर है, वह भी" बदलाव, खासियत और कॉन्सेप्ट की कैटेगरी के लिए कहा गया है। यह सही है क्योंकि ताकतों (बनाई हुई चीज़ों) के अपने-स्वभाव का न होना उनमें से किसी के भी दायरे से बाहर है; और तब भी जब उन्होंने सच (असलियतें) देख लिए हों, क्योंकि निब्बान के अपने-स्वभाव का न होना उनके दायरे से बाहर है।' यह साफ़ लगता है कि बदलाव, खासियत और कॉन्सेप्ट देवताओं और इंसानों के दायरे में आते हैं। परिभाषा के हिसाब से सिर्फ़ एक बुद्ध ही यह जान सकता है कि ताकतों ('बनाई हुई' धम्मों की कैटेगरी) और निब्बान से भी परे क्या है, ये दो कैटेगरी उन लोगों के दायरे में आती हैं जिन्होंने सच देखा है। हम बेशक इन दोनों के 'अपने-स्वभाव के न होने' के महायानवादी मतलब को अलग रखते हैं। टेक्स्ट में जो कहा गया है, वह यह है कि बुद्ध धम्मों और निब्बान के 'परे' होने के न होने को भी जानते हैं, जिसे कोई और नहीं जान सकता। और फिर भी, महानाम (पेज 58) के अनुसार, बुद्ध के 'सर्वज्ञ ज्ञान' की परिभाषा बस ये पाँच कैटेगरी हैं, इनसे 'परे' कुछ भी नहीं है और धम्म और निब्बान दोनों के न होने का कोई सवाल ही नहीं है। इसलिए ऐसा लगता है कि हमें जानने लायक चीज़ों के इस मेटाफिजिकल विस्तार का विरोध करना चाहिए और गांतिपद के टेक्स्ट (जिसे भरोसेमंद तरीके से एडिट नहीं किया गया है) को इस तरह से बदलना चाहिए: क्योंकि निब्बान के अपने-स्वभाव का होना (या बस नेचर या '-नेस') उनके दायरे से बाहर है। शक्तियों का न होना निब्बान के बराबर या बस अतीत और भविष्य के बराबर माना जाता है। दूसरी ओर, निब्बान का न होना शक्तियों के बराबर है, यह कोई हल नहीं है क्योंकि शक्तियाँ देवताओं और इंसानों के दायरे से बाहर नहीं हैं, कम से कम जब उन्होंने सच देख लिया हो। इसके अलावा हमने ऊपर गणतिपद (पेज 57) में देखा है कि निब्बाण शक्तियों या रूपों में है, उनके बीच के गैप के रूप में।

कंडीशनैलिटी या कॉज़ैलिटी से जुड़े और पॉइंट्स में, गणथिपद कन्फर्म करता है कि अत्था और धम्म का मतलब एक ही हो सकता है (दोनों असल में धम्म या कंडीशन्ड कंडीशन हैं): उदाहरण के लिए, नॉलेज नंबर 39 में फर्क सिर्फ इतना है कि धम्म एक कारण (हेतु) है और अत्था एक कारण (हेतुफल) का असर है (पेज 46, cf. पेज 259)। ऐसा लगता है कि यह इन दोनों पर भेदभाव के तौर पर लागू होता है, जैसा कि हमने विभंग में देखा है, जिसके बाद महानाम है। गणथिपद का मानना है कि पहला और तीसरा सच अत्था (असर, मकसद) का भेदभाव है और दूसरा और चौथा धम्म (कारण) का। चारों भेदभाव भाषा हैं और 'इंट्यूशन' (पर्स्पिक्युइटी) का भेदभाव अत्था (मकसद) से जुड़ा है (पेज 177)। पहले सच पर, महानाम (पेज 142) में दुख के कई तरह के मौकों या वजहों को "वत्थु" (विशुद्धिमग्ग पेज 424 के बाद) के तौर पर लिस्ट किया गया है। गंथिपद (पेज 92) में 'ज़मीन' को यहाँ 'आराम करने की जगह' (पटिट्ठा, cf. IB 128) या 'कारण' (करण) के तौर पर समझाया गया है, यहाँ मौके (ओकास, मौका) के मतलब में, 'ज़मीन' असलियत को वजह के तौर पर बताता है।

सटीक 'शर्तों' या धम्मों से ज़्यादा बड़े अर्थ में (cf. 'ऑब्जेक्ट्स', पेज 358-61)। गंथिपद में अक्सर पत्तन के सिद्धांत के अनुसार शर्तों (पच्चायों) को बताया गया है (p.219 क्षमताओं के लिए, ef. 237, पेज 240-2 पुनर्जन्म के संबंध में, पेज 275 आम तौर पर खालीपन की चर्चा पर, देखें ग्रंथ XX नोट 1, जो एक शर्त के लिए असामान्य पेटको-पदेश शब्द 'दूसरी प्रकृति', परभाव, का इस्तेमाल करता है, उदाहरण के लिए)।

चेतना के 'व्यवहार' (कारियद या कार, जिसका मतलब है 'घटना', उपत्ति, पेज 44) पर, गण्तिपद कहता है कि 'अस्तित्व के अंग' (भवंग) में 'अरिगा', चेतना की कम से कम निरंतरता, का मतलब 'कारण' (करण) है (पेज 242)। इस तरह कंपाउंड का मतलब बस 'अस्तित्व का कारण' है। 'अस्तित्व' (भव) का मतलब है 'ट्रांसमाइग्रेशन' के चक्र में मौजूद होना; यह किसी भी तरह के पुनर्जन्म की शर्त है। लेकिन कंडीशन्ड ओरिजिन में अस्तित्व के लिए शर्त खुद 'लगाव' (उपादान, IB 108) है। हम समझ सकते हैं कि लगातार अस्तित्व का कारण बनने वाली कम से कम चेतना, लगाव से जुड़ी हुई है। 'इंपल्सन' (जवाना) को धनुष की डोरी से निकले तीर को भेजे गए इंपल्स (वेगा) के उदाहरण पर समझाया गया है (पेज 241)। 'मोमेंट्स' की थ्योरी पर, जहाँ महानाम (p.613) 'आखिरी असली मोमेंट' (परमत्थाखान) को आम रोज़मर्रा के मोमेंट से अलग करता है, वहीं गंथिपद पहले वाले को 'आखिरी असली धम्मों से जुड़ा हुआ' (p. 262) बताता है, जहाँ 'जुड़ा हुआ' (पतिबद्ध) का मतलब 'तय किया हुआ' या 'तय किया हुआ' हो सकता है।

पटिसंभिदमग्ग (i 161) में कहा गया है कि बासठ (गलत) राय या 'व्यू' (ब्रह्मजाल सुत्तंत से लिए गए) में 'मौजूदा शरीर की राय' (सक्कयादिट्ठि) सबसे आगे है (नानामोली: 'इंडिविजुअलिटी के बारे में व्यू से आगे'), हालांकि इस राय का ज़िक्र ब्रह्मजाल सेट में नहीं है। महानाम (p.463) के अनुसार, पास्ट या 'पहले के अंत' और फ्यूचर या 'बाद के अंत' के बारे में ये सभी राय 'मौजूदा शरीर' के इस आइडिया पर आधारित हैं, जिसका मतलब है एक शाश्वत आत्मा। यहाँ प्रॉब्लम यह है कि सुत्तनिपात (538), जिसे महानाम ने p. 438 पर कोट किया है, कहता है कि तिरसठ (राय) हैं, ज़ाहिर है कि 'मौजूदा शरीर' को एक अलग के रूप में जोड़ा गया है जैसा कि गंथिपदा (p. 190) बताता है। यह एक अलग राय कैसे हो सकती है, जबकि बाकी सभी इसमें शामिल हैं? गांथि-पाद (पेज 198) के अनुसार इसका जवाब यह है कि जहाँ पहले और बाद के लक्ष्यों के बारे में राय, कामों से बनी 'चेतना की सीरीज़' में किसी भूत या भविष्य की 'आत्मा' से जुड़ाव से बनती है, वहीं 'मौजूदा शरीर' की राय, वर्तमान में सीरीज़ से जुड़ाव है। 'मौजूदा' (संत) शरीर असल में (अभी) 'होने वाले' (विज्जमन) शरीर का विचार दिखाता है। इस तरह यह एक अलग 'नज़र' हो सकता है, लेकिन बाकी सभी इसे समय में पीछे और आगे प्रोजेक्ट करके बनाए जाते हैं ('शरीर', काया, पाली में मानसिक और शारीरिक शरीर दोनों के लिए इस्तेमाल होता है और इसलिए यह एक अच्छा बराबर नहीं है, लेकिन अंग्रेज़ी में इससे ज़्यादा करीब कुछ नहीं लगता; cf. 'शरीर के साथ अनुभव करना', कायासक्खिन,

ध्यान में निब्बान तक पहुँचने के लिए, गंथिपदा 232)। समय के हिसाब से इसी तरह का एक सटीक निर्धारण यह है कि 'जानता है' का मतलब अतीत और भविष्य है, जबकि 'देखता है' का मतलब वर्तमान समय है (गंथिपदा 35, 1 §275 पर)। गंथिपदा से दूसरी बातों के अलावा, यहाँ यह भी जोड़ दें कि ग्रंथ XXI में 'मुस्कुराना' या 'हँसना' (समझना), एक खास शब्द जिसका महानाम ने ज़िक्र नहीं किया है, को समभाव पर आधारित बताया गया है (पेज 278)।

गणतिपद, महानामा की कमेंट्री में सब कुछ साफ़ करते हुए, प्रोनाउन और कुछ अव्यय शब्दों के रेफरेंस को समझाने में खास ध्यान रखता है, कुछ भी साफ़ नहीं छोड़ता। जहाँ महानामा बताता है कि 'कुछ' (के चि) कुछ खास विचार रखते हैं, लेखक रेफरेंस ढूंढता है, अक्सर थेरवाद के ही थेरों के। एक मामले में 'कुछ' की पहचान विनय-धर के तौर पर की गई है, जो विनय के जानकार हैं, जिनके 'सांस लेने' पर विचारों को खारिज कर दिया गया है (पेज 199)। दूसरे संदर्भ में, 'कुछ' की पहचान अभयगिरिविह-रिकास (या -वासिन) के तौर पर की गई है, जिनके 'स्ट्रीम-एंट्री' पर विचारों की महानामा ने आलोचना की है (PsA पेज 267-8, गणतिपद पेज 136-7)। धम्मसंगनी और विभारिग कमेंट्री के बीच अंतर पर चर्चा की गई है (पेज 102)। सबसे दिलचस्प बात यह है कि लेखक ने बुद्धघोष (अत्थसालिंत पेज 165, विशुद्धिमग्ग पेज 114) के बाद महानाम (पेज 181, 1 §249 पर) द्वारा कोट किए गए पेटक नाम के काम की पहचान की है। कोट किया गया सिद्धांत कुछ ज़रूरी है, जिसमें कहा गया है कि ध्यान में, ध्यान खुशी की इच्छा का विरोध करता है, खुशी बुराई का विरोध करती है वगैरह। लेकिन ज़ाहिर है कि यह थेरवाद कमेंट्री से नहीं, सिर्फ़ इसी पेटक से आया है। बुद्धदत्त ने भी इसे दोहराया है (पेज 96), हालांकि इसका सोर्स बताए बिना (जो शायद विशुद्धिमग्ग था)। जैसा कि नानामोली ने विशुद्धि-मग्ग (पेज 147) के अपने ट्रांसलेशन में बताया है, यह पेटकोपदेश में नहीं मिलता है। आनंद ने अपनी मुलतिका (S° पेज 75) में सोर्स पर बात नहीं की है। धम्मपाल II ने अपने विशुद्धिमग्ग-इक (विद्योदय, 1928, पेज 138) में बस इतना कहा है कि रेफरेंस का मतलब महाकच्च(य)न थेर (जिन्हें पेटको-पादेस का लेखक माना जाता है) के पेटक से है। हालांकि, गंथिपद (पेज 106) यह पक्की जानकारी देता है कि यह पेटक महिंसाकों की एक किताब है, जो सुत्तंतपिटक के मकसद से बनाई गई एक अट्ठकथा है। इसका मतलब है कि यह पेटकोपादेस जैसा ही एक काम था और उसकी तरह इसका मकसद सुत्तंत को समझाना था, न कि एक रेगुलर कमेंट्री के तौर पर बल्कि पूरे सुत्तंत के मतलब पर एक हैंडबुक के तौर पर। इस तरह दोनों स्कूलों के पास इस काम का एक रिव्यू था, लेकिन इस तरह की डिटेल्स में उनमें अंतर था। बहुत मुमकिन है कि महिर्मसासक किताब का क्रेडिट भी कच्चियाना को दिया गया हो। यहाँ ज़रूरी बात यह है कि इस तरह के सिद्धांत को बौद्ध धर्म के किसी दूसरे स्कूल से लिया जा सकता था और थेरवाद मेडिटेशन सिस्टम में शामिल किया जा सकता था। शायद अगर यह स्कूल की परंपरा से अलग न हो और काम का लगे, तो इसे माना जा सकता था, हालाँकि कुछ दूसरे मामलों, जैसे 'अनगढ़', पर महिमशासक के विचारों को खारिज कर दिया गया था। किसी भी हालत में, एक साथ समझ आने पर,

जैसा कि हमने ऊपर देखा, वे सही थे। एक महिमशा-शक साधु का नाम, जिसे शांत और समझदार कहा जाता है, महाविहारवासी परंपरा (JA i. 1) के अनुसार जातक कमेंट्री लिखने का सुझाव देने वालों में से एक के तौर पर लिया गया है, इससे पता चलता है कि उस समय दोनों स्कूलों के बीच रिश्ते दोस्ताना थे (शायद 5वीं सदी, भले ही बुद्धक्रोश खुद इसके लेखक न हों)। शायद दोनों स्कूलों ने पाली भाषा का इस्तेमाल किया।

अनुवाद

नानामोली ने अपनी टाइपस्क्रिप्ट में जो बदलाव किए हैं, उनमें कुछ हद तक उनकी पहले की 'स्कीम 2' से कुछ मिलती-जुलती चीज़ों को उनकी बाद की 'स्कीम 1' में बदलना शामिल है (देखें माइनर रीडिंग्स एंड इलस्ट्रेटर, पेज 328), यानी 'द पाथ ऑफ़ प्यूरिफिकेशन' से उनके बाद के ट्रांसलेशन में। इस तरह यहाँ धम्म 'आइडिया' बन जाता है, 'स्टेट' नहीं, चित्त 'कॉग्निजेंस' बन जाता है। लेकिन यहाँ और भी बदलाव दिखते हैं जो कहीं और नहीं मिलते, जैसे कि सच्च 'एक्चुअलिटी' बन जाता है, 'त्रित' नहीं, और अभिसमय 'कन्वर्जेंस' बन जाता है। फिर भी स्कीम 2 के काफी हिस्से बने रहते हैं, जिसमें रपा (i) 'मटेरियलिटी' और (ii) 'विज़िबल ऑब्जेक्ट', 'फॉर्म' नहीं, और संखारा 'फॉर्मेशन', 'डिटरमिनेशन' नहीं शामिल हैं।

अपनी माइनर रीडिंग्स और एलास्ट्रेटर अपेंडिक्स में, जिसका अभी ज़िक्र है, नाना-मोली स्कीम्स को 'मिक्स अप' करने के खिलाफ चेतावनी देते हैं और स्कीम 1 के लिए ज़्यादा 'कोहेरेंस और एक्यूरेसी' का भी दावा करते हैं। कहा जाता है कि यह कोहेरेंस लगभग पूरे धम्म = 'आइडिया' में दिखाई देता है, बजाय इसके कि इस शब्द के कई अलग-अलग ट्रांसलेशन हों, और रिपा = 'फॉर्म' में भी। लेकिन इस वॉल्यूम में हाइब्रिड स्कीम, धम्म को 'आइडिया' में बदलते हुए, रूप के लिए 'मटेरियलिटी' (एग्रीगेट के तौर पर) और 'विज़िबल ऑब्जेक्ट' (बेस के तौर पर) को बनाए रखती है, 'फॉर्म' का इस्तेमाल सिर्फ़ सारिखारोटी (सारिखारा) के लिए किया जाता है। इस मिक्स्ड स्कीम में कोई कन्फ्यूजन नहीं दिखता। नानामोली ने आगे जो भी बदलाव करने का इरादा किया हो या बाद में सोचा हो, उन्होंने असल में हमारे लिए यह हाइब्रिड स्कीम छोड़ी है। अब हम कई वजहों से इसकी इज्ज़त करते हैं, जिनमें से पहली वजह सबसे अहम है।

सबसे पहले, नानामोली के ट्रांसलेशन का सम्मान करना सही लगता है, जैसा उन्होंने किया, यही एडिटिंग का सच्चा और 'क्रिटिकल' तरीका है। हमें सिर्फ़ साफ़ तौर पर दिखने वाली गलतियों को ठीक करना चाहिए, जैसे कुछ जगहों पर जहाँ बदलाव करते समय उन्होंने 'स्टेट' को 'आइडिया' में बदलना भूल गए, जबकि इसका मतलब धम्म होता है।

दूसरी बात, हम यह नहीं जान सकते कि नानामोली का इरादा और बदलाव करने का था या नहीं। हो सकता है कि आगे सोचने के बाद उन्हें लगा हो कि वे ज़रूरी नहीं थे, जैसे कि रूप के लिए दो बराबर शब्दों को रखना, जिसका मतलब एग्रीगेट या बेस हो, उस साफ़ 'फ़ॉर्म' से ज़्यादा सही और साफ़ था।

तीसरा, क्योंकि नयामोली ने कुछ नए बदलाव किए हैं जो स्कीम 1 में नहीं हैं, जैसे कि 'सक्का' के लिए 'असलियत' और 'धातु' के लिए 'सिद्धांत', यह एक

नई और अलग स्कीम और स्कीम 1 जैसी नहीं होने का इरादा था। द गाइड के अपने इंट्रोडक्शन (पेज lix) में वे कहते हैं कि कंसिस्टेंसी ज़रूरी है, लेकिन सिर्फ़ एक वॉल्यूम में ही कंसिस्टेंसी की उम्मीद की जा सकती है क्योंकि सुधार लगातार किए जा रहे हैं। इसलिए उन्होंने अपनी स्कीम 1 को आखिरी नहीं माना। जबकि पिटक-डिस्क्लोजर (पेज xxiv) को द गाइड जैसा ही रखा गया था, ताकि ओवरलैपिंग टेक्स्ट की इन जोड़ी की तुलना करना आसान हो सके, ट्रांसलेशन के बारे में उनके विचार डेवलप होते रहे और उनके कुछ नए आइडिया शायद उनकी आने वाली द पाथ ऑफ़ डिस्क्रिमिनेशन में बदलाव के तौर पर नोट किए गए थे।

चौथी बात, अगर इसे सही माना जाए, तो मौजूदा PTS एडिटर स्कीम 1 के बजाय यहां मिली 'हाइब्रिड' स्कीम को ज़्यादा पसंद करते हैं। बेशक, यह एडिटोरियल बदलावों या उनकी कमी का कोई कारण नहीं होगा, लेकिन इस वॉल्यूम में मिले टेक्स्ट के सपोर्ट में कुछ ट्रांसलेशन पर और चर्चा करना काम का हो सकता है।

पाँच एग्रीगेट में से एक के तौर पर रूप 'मैटेरियलिटी' है, फिजिकल, बाकी चार के उलट, जो सभी मेंटल हैं। इस मायने में इसमें आवाज़ें, गंध, स्वाद और दिखने वाली चीज़ों के साथ-साथ दिखने वाली चीज़ें भी शामिल हैं। इसमें पाँच सेंस, चार 'प्रिंसिपल' (धरती, वगैरह), दो लिंग और कुछ दूसरे फिजिकल प्रॉपर्टीज़ भी शामिल हैं। हालाँकि, एक बेस (ध्यान) के तौर पर, रूप का मतलब इन सब में से सिर्फ़ एक है, यानी 'दिखने वाली चीज़'। इन दोनों सेंस को उनके आम इंग्लिश इक्विवेलेंट से ट्रांसलेट करना सही लगता है, जैसा कि Ñāṇamoli ने यहाँ किया है, उन्हें पाली में होमोनिम्स की एक जोड़ी के तौर पर मानते हुए।

धम्म का मतलब 'स्टेट' के बजाय 'आइडिया' हो सकता है और जहाँ यह सिद्धांत की बात करता है, वहाँ 'ट्रू आइडिया' बुद्ध को मनु की तरह 'कानून देने वाले' के तौर पर दिखाने वाली गुमराह करने वाली तस्वीर से कहीं बेहतर है। यहाँ भी एक पाली शब्द एक जैसे शब्दों के जोड़े की तरह काम करता हुआ लगता है, पहला फिलॉसफी में एक टेक्निकल शब्द है जो कुल मिलाकर दूसरा है। 'स्टेट' बेशक पूरी तरह से गलतफ़हमी थी, शायद इसकी व्युत्पत्ति (धर का मतलब है पकड़ना या बनाए रखना) पर आधारित। धम्म असल में एक्टिव हैं, ताकतें हैं और कोई फिक्स्ड चीज़ नहीं हैं। यहाँ तक कि 'मैटेरियलिटी' के फिजिकल धम्म भी ताकतें या 'मैटर के गुण' हैं, सब्सटेंस नहीं। मेंटल धम्म और भी ज़्यादा डायनामिक हैं और एक स्टेबल हालत, 'कॉन्शसनेस' तो बिल्कुल नहीं पा सकते। लेकिन क्या वे विज्ञानवादी महायान की तरह सिर्फ़ 'आइडिया' हैं? इस अनुवाद का कुछ हद तक सही कारण यह है कि बौद्ध दर्शन में धम्म को 'मेंटल ऑब्जेक्ट' माना जाता है, मन का ऑब्जेक्ट छठी इंद्री के तौर पर, ठीक वैसे ही जैसे 'दिखने वाला ऑब्जेक्ट' नज़र (आँख) का ऑब्जेक्ट है वगैरह। क्योंकि सभी धम्म आम तौर पर मन के ऑब्जेक्ट हो सकते हैं, या यूँ कहें कि अगर उनके बारे में सोचना है तो उन्हें होना ही चाहिए (बाकी पाँच इंद्रियों के शुद्ध अनुभव से अलग, जो असली है और शब्दों या विचारों से परे है), थेरवाद में धम्म की पूरी लिस्ट मेंटल ऑब्जेक्ट या 'विचारों' की लिस्ट के तौर पर फिर से आती है। फिर भी हमें यहाँ यह रिज़र्वेशन देना होगा कि धम्म थ्योरी

बुद्ध और थेरवाद की, जैसा कि हमने ऊपर "द फिलॉसफी" में बात की, यह ऑब्जेक्टिव एलिमेंट्स या प्रिंसिपल्स की थ्योरी है, न कि सिर्फ उनके सब्जेक्टिव रिफ्लेक्शन की। एलिमेंट्स की केमिकल थ्योरी, या अल्टीमेट पार्टिकल्स की मौजूदा फिजिकल थ्योरी की तरह, यह भी सभी एक्सपीरियंस के लिए असली चीज़ों का एक सिद्धांत है। थेरवाद में वे असली हैं, हालांकि कुछ समय के लिए, हर कोई अपने पल में 'मौजूद' है। उनके होने का 'रेगुलर' बना रहता है, लेकिन थेरवाद में यह सिर्फ एक 'कॉन्सेप्ट' है जो हमें यह समझाता है कि वही हालात हमेशा एक ही धम्म को दोहराते हैं। निब्बान को छोड़कर, सारी सच्चाई कुछ समय के लिए है; लेकिन थेरवाद फिलॉसफी के अनुसार, यह फिजिकली और मेंटली असल में हो रही है। पक्का नानामोली का इरादा इसे मना करने का नहीं था, बल्कि उन्होंने अपने 'आइडियाज़' को सच्चाई के परसेप्शन या रिफ्लेक्शन के तौर पर सोचा। यह सबसे अच्छा इंग्लिश इक्विवेलेंट खोजने का सवाल है। इंग्लिश में साइंटिफिक ट्रेडिशन हमें 'एलिमेंट' या 'पार्टिकल' को इक्विवेलेंट के तौर पर ऑफर करता है। हमने प्रेफर किया है 'धर्म और दाता' में बताए गए कारणों से 'सिद्धांत'। नानामोली ने साफ़ तौर पर सोचा कि 'आइडिया' और '(सच्चा) आइडिया' में धम्म के एक जैसे होने की संभावना यह दिखाती है कि वह सही रास्ते पर थे। अंग्रेज़ी के इस्तेमाल के हिसाब से प्लूरल होने के अलावा, 'एलिमेंट्स' (बौद्ध धर्म के) और 'प्रिंसिपल्स' (बुद्ध के) एक ही सुविधा देते हैं। बुद्ध का यह 'आइडिया' या सिद्धांत एक साइंस है, हुक्मों का सेट नहीं। यह हमें सिखाता है कि हम आज़ाद हैं।

एक खास इत्तेफ़ाक से, या क्योंकि हम एक ही रास्ते पर थे, धातु का यहाँ नानामोली ने 'सिद्धांत' अनुवाद किया है। क्योंकि यह लगभग धम्म का पर्यायवाची है, धातु को ऊपर बताए गए टेक्स्ट में एक शर्त के तौर पर माना जाता है, इसलिए यह बराबर का शब्द बहुत सही है। आम अनुवाद, स्कीम 1 और 2 का भी, 'एलिमेंट' है, धातु का इस्तेमाल पुरानी भारतीय केमिस्ट्री में उन चीज़ों के लिए किया जाता था जिन्हें तब एलिमेंट या ज़्यादा सही कहें तो नेचुरल सोर्स (अयस्क) माना जाता था, इसी तरह ग्रामर में जिसे हम 'रूट्स' कहते हैं, यानी ऐसे एलिमेंट जिनका कोई मतलब न हो।

संखारा, जो अक्सर धम्म का पर्यायवाची है, और इसका पास्ट पार्टिसिपल और एडजेक्टिव सरिखाता, का कोई ठीक-ठाक इंग्लिश इक्विवेलेंट नहीं लगता। 'फॉर्मेशन' और 'फॉर्म्ड' को शायद 'डिटरमिनेशन' (स्कीम 1) की तुलना में गलत समझने की संभावना कम है। एक सारिकार एनर्जी के एक पार्टिकल जैसा कुछ है, एक फोर्स (IB) जो कंडीशन्ड और कंडीशनिंग है। हालांकि डायनामिक है, यह स्थिरता का पहलू दिखाता है, जिसका मतलब है प्रकृति की रेगुलरिटी के अनुसार अंतहीन दोहराव। सारिकार कभी-कभी सभी धम्मों के सिनोनिम होते हैं, लेकिन कभी-कभी यह शब्द 'एग्रीगेट्स' में से एक के लिए सीमित अर्थ में दिखाई देता है, यानी चेतना की धारा में काम करने वाली फोर्सेस में से एक। एटिमोलॉजी 'एक साथ रखना' या 'सिंथेसिस' (तुलना करें IB में 'सिंथेसिसाइज्ड') का संकेत देती है और सबसे शुरुआती (बौद्ध-पूर्व) रिकॉर्डेड इस्तेमाल तैयार करना या परफेक्ट बनाना है, लेकिन यह बौद्ध फिलॉसफी में टेक्निकल अर्थ को साफ नहीं करता है। जैसा कि हमने देखा है, महानाम एक कैटेगरी बनाता है।

'सिंथेसिस' या 'फॉर्म्ड' का, जो सभी धम्मों के बराबर है। बौद्ध फिलॉसफी में सारिखारा का सबसे अस्पष्ट इस्तेमाल कंडीशन्ड ओरिजिन के सीक्वेंस में चेतना की कंडीशन के तौर पर है, जहाँ इसका मतलब शरीर, वाणी और विचार की ताकतों से बताया गया है (IB 114)। इसका मतलब चेतना की धारा पर काम करने वाले सभी पिछले कामों की ताकतों से होना चाहिए, लेकिन फॉर्मूलेशन अलग है। इन तीनों के बारे में सबसे ज़रूरी बात यह है कि वे पुण्य या पाप या अविचलित हैं (S ii 82)।

खंड का यहां मतलब 'एग्रीगेट' है, जो स्कीम 1 में इस्तेमाल किए गए 'कैटेगरी' से ज़्यादा सीधा और सही भी है। 'कैटेगरी' को बुद्ध-दत्त द्वारा धम्मसारिगणी (जो खुद पांच का एक बदलाव है, उन्हें घटाकर तीन कर देता है, लेकिन निब्बान जोड़ देता है) से 'कॉन्सेप्ट' जोड़कर, या महानामा के आगे के रीऑर्गेनाइज़ेशन के लिए, जिसमें सभी पांच खंड एक साथ 'बनाए गए' (सिंथेसिस किए गए) के तौर पर रखे गए हैं और 'कैरेक्टरिस्टिक' और 'चेंज' भी जोड़े गए हैं, के लिए रिज़र्व करना बेहतर लगता है। निब्बान के साथ 'एग्रीगेट' आखिरकार असली हैं, बाकी कॉन्सेप्चुअल हैं लेकिन हमें असली को समझने में मदद करते हैं। खंड का ओरिजिनल आइडिया एक जीवित प्राणी के हिस्सों का लगता है।

यहां पन्नत्ती को स्कीम 2 के 'कॉन्सेप्ट' से बदलकर स्कीम 1 के 'डिस्क्रिप्शन' में बदल दिया गया है। यह साफ़ नहीं है कि 'कॉन्सेप्ट' पर नानामोली की क्या आपत्तियाँ थीं। 'कॉन्सेप्ट' को प्राथमिकता देने के कारण ऊपर बताए गए हैं और 'द कॉन्सेप्ट ऑफ़ ए कॉन्सेप्ट' में पूरी तरह से बताए गए हैं। 'डिस्क्रिप्शन' जैसे बहुत बड़े शब्द से नानामोली साफ़ तौर पर 'समझाने' के विचार पर ज़ोर देना चाहते थे, जो इस शब्द का एटिमोलॉजिकल ओरिजिन है। यह थेरवाद फ़िलॉसफ़ी में सबसे ज़रूरी शब्दों में से एक है, क्योंकि इसमें सभी कैटेगरी को इसके सब-क्लास के तौर पर शामिल किया जा सकता है और यह झूठे और सच्चे दोनों को बताता है, लेकिन पटिसंभिदमग्ग में हम इस डेवलपमेंट की सिर्फ़ शुरुआत देखते हैं।

अत्था का मतलब यहाँ और दोनों 'स्कीम' में लगभग हमेशा 'मतलब' होता है; दूसरे मिलते-जुलते शब्द, जैसे 'मकसद', बचे-खुचे हैं। ऊपर 'भेदभाव' के तहत हमने इस शब्द पर विस्तार से चर्चा की है और 'उद्देश्य' को बराबर बताया है।

यहां परिभाषा का मतलब 'स्पष्टता' है, जैसा कि स्कीम 1 में है, जो बहुत ही शाब्दिक अनुवाद है। इस खास शब्द के लिए ऊपर 'थेरवाद के शास्त्र के रूप में पातिसंभिदमग्ग' के तहत नंबर 2 देखें।

अभिसमय, यहाँ 'कनवर्जेंस', लगभग प्री-सीडिंग का ही पर्याय है (देखें ट्रीटीज़ XXIII, नोट 1, और ऊपर 'द फिलॉसफी' सेक्शन का आखिर)।

साका को नया बराबर 'एक्चुअलिटी' दिया गया है, शायद यह इसके थ्योरेटिकल कैरेक्टर के बजाय इसके रियलिज़्म और ऑब्जेक्टिविटी को दिखाता है।

इस ट्रांसलेशन को पब्लिकेशन के लिए तैयार करने में मदद के लिए यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो के रिसर्च बोर्ड की ह्यूमैनिटीज़ और सोशल साइंसेज़ कमिटी को उनके ग्रांट के लिए धन्यवाद।

आखिर में, सोसाइटी नानामोली की याद को एक महान टीचर और समर्पित विद्वान के तौर पर सम्मान देती है, जिनसे हम सबने पाली टेक्स्ट को समझने में ज़्यादा बारीकी सीखी है और बौद्ध धर्म की गहरी समझ हासिल की है।

ए. के. वार्डर, पीटीएस संपादक, फरवरी 1981

ज्ञान पर ग्रंथ एल.

परिचयात्मक नोट

अध्याय 1 पुस्तक-अध्ययन

खंड i से v विचार और उनके अर्थ

§3 के तौर पर शुरू में जो दस प्रपोज़िशन हैं, वे एक तरह का 'कैप्शन' बनाते हैं, जिसमें प्रपोज़िशन 1 से 10 शामिल हैं जो आम तौर पर सेक्शन i-v के लिए ज़रूरी हैं। 'सभी' पैराग्राफ़ (§4) इस सेक्शन के लिए एक तरह का सिनॉप्सिस बनाता है, जिसे फिर आसान तरीके (§5) में 201 आइडियाज़ <सीरीज़ A में बढ़ाया जाता है। यह एक बेसिक वर्किंग लिस्ट बनाता है जो पूरे काम में लगातार आती है। फिर इसी तरह का एक्सपेंशन आता है लेकिन चार असलियतों के पैटर्न में, यानी शुरू होने और खत्म होने का ब्यौरा और खत्म होने का रास्ता (§§6-7)। इसके बाद पाँच इसी तरह के एक्सपेंशन आते हैं, हर एक अलग पैटर्न में, जो हर मामले में शुरुआती पैराग्राफ में बताया गया है।

§18 में पुनर्जन्म के पंद्रह विचार या पहलू बताए गए हैं <सीरीज़ E>। वे पुनर्जन्म के दौर की पाँच मुख्य और दस सहायक विशेषताएँ बनाते हैं। उनका निषेध निब्बाण है। आगे के पैराग्राफ इन सकारात्मक और नकारात्मक बातों के बीच अंतर बताते हैं (§§18-22)।

§§23-35 में 'मतलब' (यानी दूसरे पर्यायवाची शब्द) की एक लिस्ट दी गई है, जिन्हें अलग-अलग ग्रुप में बांटा गया है। इस लिस्ट में §26 में एक लिस्ट दी गई है, जिसमें अलग-अलग पाँच क्षमताएँ, पाँच शक्तियाँ, सात ज्ञान के कारक, आठ गुना रास्ता और एक आखिरी आम लिस्ट <सीरीज़ B> शामिल है। यह लिस्ट, जो पूरे काम में बार-बार आती है, §41 में दोबारा आती है- (यह कुछ हद तक बोधि-पक्षिया धम्मों से मिलती है)।

चारों रास्तों का ज़िक्र $40 <cf. Series H> पर किया गया है।

§§36-40 में सात रुकावटों के उलट (त्याग, वगैरह) की एक और लिस्ट दी गई है, चार ज्ञान, चार गैर-भौतिक उपलब्धियां, अठारह मुख्य समझ और चार पाटलिस और नतीजे <सीरीज़ C>। यह लिस्ट जो ध्यान, समझ और रास्ते और नतीजों को दिखाती है, वह भी अक्सर दोबारा आती है। <i-v इन विचारों को इस तरह देखें: (i) सीधे-सीधे जानना (सभी विचार और मतलब), (ii) पूरी तरह समझना (सभी बनावट), (iii) छोड़ देना (फायदेमंद नहीं), (iv) विकसित करना (चार रास्ते), (v) महसूस करना (खत्म होना)।>

खंड vi से ix प्रगति

खंड x से xii तीन विशेषताएँ

धारा xiii से xvi चारों वास्तविकताएँ पूर्ण रूप से

अध्याय II सद्गुण

अध्याय III एकाग्रता

अध्याय IV से X अंतर्दृष्टि

सद्गुण (अध्याय 11) और एकाग्रता (अध्याय 12) के वर्णन के बाद, III) इनसाइट सात स्टेज में आती है (चैप्टर IV से X)। मोटे तौर पर ये हैं:

(1) चैप्टर 1 में बताए गए आइडिया और उनके बीच कंडीशनल रिश्तों की खोज (चैप्टर IV), सबसे पहले एक ही ज़िंदगी की कंटिन्यूटी में और फिर पिछले और आने वाले जन्मों तक बढ़ाया गया। इसे कंडीशन को समझना कहते हैं और यह कंडीशन और कंडीशन से पैदा हुए आइडिया को चार जनरलाइज़ेशन में जनरलाइज़ करके किया जाता है: <a> पिछली कंडीशन <b> अभी की कंडीशन या आइडिया के लिए और <c> अभी की कंडीशन <d> आने वाली कंडीशन या आइडिया के लिए (§275: यह फ़्लक्स के कभी न खत्म होने वाले प्रोसेस का बेसिक पैटर्न देता है)।

(2) परिस्थितियों तथा परंपरागत रूप से उत्पन्न विचारों का सामान्यीकरण करने के पश्चात इस तरह, वे सभी 'ग्यारह शीर्षकों' के अंतर्गत समझे जाते हैं अतीत के साथ और उन शीर्षकों के अंतर्गत सभी अस्थाई पाए जाते हैं- संपूर्ण, असंतोषजनक और स्वयं नहीं (V)।

(3) वे किस प्रकार अस्थायी हैं इसका पता किसी भी पहचाने जा सकने वाले विचार के उत्थान और पतन की जाँच करके लगाया जा सकता है (VI)।

(4) अगला कदम यह पहचानना है कि न सिर्फ़ सभी पहचाने जा सकने वाले विचार उठते और गिरते हैं (कहीं से भी आते हैं और कहीं गायब हो जाते हैं), बल्कि उन्हें पहचानने वाली असल समझ (चेतना) भी उसी तरह उठती और गिरती है। यह सबसे ज़रूरी कदम है क्योंकि अब, [इसके साथ] यह एहसास होता है कि उठने और गिरने का नियम हर उस विचार पर लागू होता है जिसे उठने की खासियत के तौर पर पहचाना जा सकता है और इसमें उन विचारों और उस बात की चेतना भी शामिल है। इसका नतीजा यह होता है कि किसी भी उठी हुई चीज़ का लालच दिमागी तौर पर नहीं बल्कि और गहराई से कम होने लगता है, क्योंकि पिघलती हुई चेतना में पिघल जाने वाले उठे हुए विचारों से चिपके रहने की बेकारियत असल में महसूस होने लगती है। यहाँ विकास का मतलब है हर हाल में यहाँ सीखी गई बातों को याद रखने की काबिलियत बनाना (VII)। <नानमोली का नोट यहीं खत्म होता है, लेकिन उनके ट्रीटीज़ III के इंट्रोडक्टरी नोट के आखिर से हम देखते हैं कि समझ के बाकी 'स्टेज', (5) खतरे का ज्ञान, (6) संतुलन और (7) वंश में बदलाव (VIII-X), रास्ते के 'उभरने' तक ले जाते हैं। एक अलग स्लिप में ट्रीटीज़ I के चैप्टर की उनकी समरी इस तरह जारी है:>

अध्याय XI पथ

अध्याय XII फलन

अध्याय XIII उद्धार

अध्याय XIV की समीक्षा

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासंबुद्धस्स

[विवेक का मार्ग

प्रथम, या महान, विभाग

ग्रंथ I.-ज्ञान

अनुसूची

शिष्यों द्वारा साझा किया गया ज्ञान

* *

ये 73 तरह के ज्ञान हैं। इन 73 तरह के ज्ञान में से 67 शिष्यों के बीच बांटे जाते हैं और 6 शिष्यों के बीच नहीं बांटे जाते।

* *

अनुसूची का अंत

* *

(ज्ञान पर ग्रंथ I. अध्याय I.
- सीखना)

1. [4] यह कैसे है कि कान लगाने की समझ सुनी (सीखी) गई बातों का ज्ञान है? (cf. Vbh 3245.)

[सारांश)

i. कान का इस्तेमाल इस तरह किया जाता है: इन विचारों को सीधे-सीधे जानना होता है। समझने का मतलब है समझने का काम, यानी सुनी हुई (सीखी हुई) बातों का ज्ञान। (cf. दासुत्तरा, Diii 272ff.)

ii. कान इस तरह लगाया जाता है: इन विचारों को पूरी तरह समझना है। अंडरस्टैंडिंग। . .

iii. कान इस तरह लगाया जाता है: इन विचारों को छोड़ देना चाहिए। समझ। . .

iv. कान इस तरह लगाया जाता है: इन विचारों को विकसित किया जाना है। समझ.. .

v. कान इस तरह लगाया जाता है: इन विचारों को साकार करना है। समझें-ing. . .

vi. कान इस तरह लगाया जाता है: ये विचार कमज़ोर होते हैं। समझ। . .

vii. कान इस तरह लगाया जाता है: ये विचार ठहराव का हिस्सा हैं। समझ...

viii. कान इस तरह लगाया जाता है: ये विचार अंतर का हिस्सा हैं। समझ...

ix. कान इस तरह लगाया जाता है: ये विचार गहराई में जाते हैं। समझ...

x. कान इस तरह लगाया जाता है: सभी बनावटें अस्थायी हैं। समझ...

xi. कान इस तरह लगाया जाता है: सभी बनावट दर्दनाक हैं। समझना...

xii. कान इस तरह लगाया जाता है: सभी विचार खुद से नहीं हैं। समझ...

xiii. कान इस तरह लगाया जाता है: यह दुख की महान सच्चाई है। समझ...

xiv. कान इस तरह लगाया जाता है: यह दुख की शुरुआत की महान सच्चाई है। समझ...

xv. कान इस तरह लगाया जाता है: यह दुख के खत्म होने की महान सच्चाई है। समझ....

xvi. कान का इस्तेमाल इस तरह किया जाता है: यह दुख के खत्म होने की ओर ले जाने वाले रास्ते की महान सच्चाई है। (5) समझना, समझने का एक काम है जो सुनी हुई (सीखी हुई) बातों का ज्ञान है।

[खंड 1]

2. यह कैसे है कि 'इन विचारों को सीधे-सीधे जानना है' इस तरह कान लगाने की समझ, सुनी हुई (सीखी हुई) बातों का ज्ञान है?

[दस पूर्वसर्ग) (दासुतरसुत्तंत से)

3. एक विचार जो प्रत्यक्ष रूप से जाना जाना चाहिए: सभी प्राणियों का भरण-पोषण पोषण द्वारा होता है (Diii 211 तथा 273)।

दो विचार जिन्हें सीधे जाना जाना चाहिए: दो सिद्धांत (बना हुआ और बिना बना हुआ) (Diii 274, M iüi 63).

तीन विचार जिन्हें सीधे जाना जाना चाहिए: तीन सिद्धांत (इंद्रिय, इच्छा, भौतिक और अभौतिक) (D iii 275, M iii 63).

चार विचार जिन्हें सीधे तौर पर जानना चाहिए: चार महान वास्तविकताएं (D iii 277).

पाँच विचार जिन्हें सीधे तौर पर जानना चाहिए: मुक्ति के पाँच आधार (D iii 279, cf. संगीति, D iii 241, A iii 21).

छह विचार जिन्हें सीधे जाना जाना चाहिए: छह नायाब (D iii 250, 281).

सात विचार जिन्हें सीधे तौर पर जाना जाना चाहिए: तारीफ़ के सात आधार (D iii 252, 283).

आठ विचार जिन्हें सीधे जाना जाना चाहिए: महारत के आठ आधार (D iii 263, 287, Dii 110).

नौ विचार जिन्हें सीधे जाना जाना चाहिए: नौ लगातार बने रहने वाले (D iii 265, 290, D il 156).

सीधे जाने जाने वाले दस विचार: खराब होने के दस कारण (Diii 291).

[सभी]

4. 'भिक्षुओं, सब कुछ सीधे जानना है। और वह सब क्या है जिसे सीधे जानना है? आँख को सीधे जानना है, दिखने वाली चीज़ों को सीधे जानना है, आँखों की चेतना को सीधे जानना है, आँखों का संपर्क सीधे जानना है, आँखों के संपर्क से पैदा होने वाली कोई भी भावना, चाहे वह अच्छी हो या बुरी या न दर्दनाक हो, न अच्छी, उसे भी सीधे जानना है। कान को सीधे जानना है, आवाज़ें... नाक को सीधे जानना है, गंध... जीभ को सीधे जानना है, स्वाद... शरीर को सीधे जानना है, ठोस चीज़ें... मन को सीधे जानना है, विचारों को सीधे जानना है, मन की चेतना को सीधे जानना है, मन का संपर्क सीधे जानना है, मन के संपर्क से पैदा होने वाली कोई भी भावना, चाहे वह अच्छी हो या बुरी या न दर्दनाक हो, न अच्छी, उसे भी सीधे जानना है' (Cf. S iv 15ff., 29)।

[201 विचार]

5. 1-5. भौतिकता को सीधे जानना है। भावना... अनुभूति... संरचनाएं... चेतना को सीधे जानना है।

6-11. आँख को सीधे जानना है। कान...नाक...जीभ...शरीर...मन को सीधे जानना है।

12-17. दिखने वाली चीज़ों को सीधे जानना होता है। आवाज़ें... गंध... स्वाद... दिखने वाली चीज़ें... विचार।

18-23. आँखों की चेतना को सीधे जानना है। कानों की चेतना... चेतना...नाक की चेतना...जीभ की चेतना। . . शरीर की मन चेतना. [6]

24-29. आँखों का संपर्क सीधे पता होना चाहिए। कान का संपर्क... नाक का संपर्क... जीभ का संपर्क... शरीर का संपर्क... दिमाग का संपर्क...

30-35. आँख से संपर्क से पैदा हुई भावना को सीधे जानना है। कान से संपर्क से पैदा हुई भावना... नाक से संपर्क से पैदा हुई भावना... जीभ से संपर्क से पैदा हुई भावना... शरीर से संपर्क से पैदा हुई भावना... मन से संपर्क से पैदा हुई भावना...

36-41. दिखने वाली चीज़ों का एहसास सीधे जाना जाता है। आवाज़ों का एहसास... खुशबू का एहसास। स्वाद का एहसास... दिखने वाली चीज़ों का एहसास... विचारों का एहसास।

42-47. दिखने वाली चीज़ों के बारे में इच्छा को सीधे जानना होता है। इच्छा आवाज़ों के बारे में इच्छा... गंधों के बारे में इच्छा... स्वादों के बारे में इच्छा... ठोस चीज़ों के बारे में इच्छा... विचारों के बारे में इच्छा... 47-53. दिखने वाली चीज़ों की चाहत को सीधे जाना जाता है। आवाज़ें। खुशबू की चाहत... स्वाद की चाहत... असली चीज़ों की चाहत... आइडिया की चाहत...

54-59. दिखने वाली चीज़ों के बारे में एप्लाइड-सोच को सीधे जाना जाता है। आवाज़ों के बारे में एप्लाइड-सोच... गंधों के बारे में एप्लाइड-सोच... स्वादों के बारे में एप्लाइड-सोच। दिखने वाली चीज़ों के बारे में एप्लाइड-सोच... विचारों के बारे में एप्लाइड-सोच...

60-65. दिखने वाली चीज़ों के बारे में लगातार सोचना सीधे जानना है। आवाज़ों के बारे में लगातार सोचना... गंधों के बारे में लगातार सोचना। स्वादों के बारे में लगातार सोचना... दिखने वाली चीज़ों के बारे में लगातार सोचना... विचारों के बारे में लगातार सोचना...

66-71. पृथ्वी सिद्धांत को सीधे जानना है। जल सिद्धांत . . . अग्नि सिद्धांत... वायु सिद्धांत... अंतरिक्ष सिद्धांत... चेतना सिद्धांत...

72-81. धरती कैसी है, इसे सीधे जानना है। पानी कैसा है... आग कैसी है... हवा कैसी है... नीला कैसा है... पीला कैसा . . . है, लाल कैसा है... सफेद कैसा है... अंतरिक्ष कैसा है... चेतना कैसी है...

82-113. सिर के बालों को प्रत्यक्ष रूप से जानना चाहिए। शरीर के बाल... दाँत... नाखून... त्वचा. मांस. नसें... हड्डियां मज्जा... गुर्दा. हृदय... यकृत... मध्य भाग... तिल्ली... फेफड़े... आँतें... [7] .. अंतड़ियाँ... गोबर... पित्त... कफ... मवाद... खून... पसीना... चर्बी... आँसू... चिकनाई... थूक... नाक... जोड़ों का तेल... पेशाब. दिमाग... :

114-125. आँख का बेस सीधे जाना जाता है। दिखने वाली चीज़ का बेस... कान का बेस... आवाज़ का बेस... नाक का बेस... गंध का बेस... जीभ का बेस... स्वाद का बेस... शरीर का बेस... दिखने वाली चीज़ का बेस... मन का बेस... विचार का बेस...

126-143. आँख के सिद्धांत को सीधे जानना है। दिखने वाली चीज़ का सिद्धांत... आँख की चेतना का सिद्धांत... कान का सिद्धांत... आवाज़ का सिद्धांत... कान की चेतना का सिद्धांत... नाक का सिद्धांत। गंध का सिद्धांत... नाक की चेतना का सिद्धांत... जीभ का सिद्धांत... स्वाद का सिद्धांत... जीभ की चेतना का . . . सिद्धांत शरीर का सिद्धांत... ठोस चीज़ का सिद्धांत... शरीर-चेतना सिद्धांत... मन सिद्धांत... विचार सिद्धांत... मन-चेतना सिद्धांत...

144-165. आँखों की शक्ति को सीधे जानना है। कान की शक्ति.. नाक की शक्ति... जीभ की शक्ति... शरीर की शक्ति... मन की शक्ति... जीवन की शक्ति... स्त्रीत्व की शक्ति... पुरुषत्व की शक्ति... [शारीरिक) सुख की शक्ति... [शारीरिक) दर्द की शक्ति... (मानसिक) खुशी की शक्ति... [मानसिक] दुख की शक्ति... समभाव की शक्ति... विश्वास की शक्ति... ऊर्जा की शक्ति... ध्यान की शक्ति... एकाग्रता की शक्ति... समझने की शक्ति। मैं-अनजान-को-जान-लूँगा की शक्ति... अंतिम-ज्ञान की शक्ति... अंतिम-जानने वाली शक्ति...

166-168. कामुक इच्छा सिद्धांत को सीधे जानना है। भौतिक सिद्धांत... अभौतिक सिद्धांत...

169-177. इंद्रियजन्य कामना को प्रत्यक्ष जानना है।[8] भौतिक

अस्तित्व... अमूर्त अस्तित्व... अनुभव करने वाला अस्तित्व... अनुभव न करने वाला अस्तित्व... न अनुभव करने वाला-न-न अनुभव न करने वाला अस्तित्व... एक घटक अस्तित्व। चार घटक अस्तित्व... पाँच घटक अस्तित्व...

178-181. पहला झाना सीधे जाना जाता है. दूसरा झाना.. तीसरा झाना... चौथा झाना...

182-185. प्यार और दया का दिल (इच्छा)-उद्धार सीधे तौर पर जाना जाता है... दया का दिल-उद्धार... हमदर्दी भरी खुशी का दिल-उद्धार... शांति का दिल-उद्धार...

186-189. असीम स्पेस वाले बेस को सीधे जानना है। असीम चेतना वाले बेस को पाना। शून्य वाला बेस... न तो परसेप्शन वाला बेस और न ही नॉन-परसेप्शन वाला बेस...

190-201. अज्ञान को सीधे जानना है। बनना... चेतना... मानसिकता-भौतिकता... छह गुना आधार... संपर्क... एहसास... चाहत... चिपकना... होना... जन्म... बुढ़ापा और मौत को सीधे जानना है।

•

6. दुख को सीधे जानना होगा। दुख की शुरुआत... दुख का खत्म होना... दुख के खत्म होने का रास्ता सीधे जानना होगा।[3]

7. 1.a-d. मैटेरियलिटी को सीधे जानना है। मैटेरियलिटी की शुरुआत... मैटेरियलिटी का खत्म होना... मैटेरियलिटी के खत्म होने का रास्ता... (और इसी तरह चार मामलों में a-d. §5 में लिस्ट किए गए बाकी 201 आइडिया में से हर एक के साथ)...

201.a-d. बुढ़ापा और मौत को सीधे जानना होगा। बुढ़ापा और मौत की शुरुआत... बुढ़ापा और मौत का खत्म होना... बुढ़ापा और मौत के खत्म होने का रास्ता सीधे जानना होगा।

•

8. दुख को पूरी तरह समझने का मतलब है सीधे तौर पर जानना। दुख की शुरुआत को छोड़ने का मतलब... दुख के खत्म होने का एहसास करने का मतलब। दुख के खत्म होने का रास्ता बनाने का मतलब है सीधे तौर पर जानना।

9. 1.a-d. मैटेरियलिटी को पूरी तरह समझने का मतलब है सीधे तौर पर जानना। मैटेरियलिटी की शुरुआत को छोड़ने का मतलब... मैटेरियलिटी के खत्म होने का एहसास करने का मतलब। मैटेरियलिटी के खत्म होने की ओर ले जाने वाले रास्ते को डेवलप करने का मतलब... [और इसी तरह चार मामलों में a-d. §5 में लिस्ट किए गए बाकी 201 आइडिया में से हर एक के साथ)...

[9] 201.ए-डी. बुढ़ापे और मृत्यु को पूरी तरह समझने का अर्थ है

सीधे तौर पर जाना जाना। बुढ़ापे और मौत की शुरुआत को छोड़ने का मतलब... बुढ़ापे और मौत के खत्म होने को समझने का मतलब। बुढ़ापे और मौत के खत्म होने की तरफ ले जाने वाले रास्ते को डेवलप करने का मतलब सीधे तौर पर जाना जाना है।

*

10. दुख की पूरी समझ के तौर पर पेनिट्रेशन का मतलब सीधे तौर पर जानना है। पेनिट्रेशन का मतलब दुख की शुरुआत को छोड़ना है... पेनिट्रेशन का मतलब दुख के खत्म होने का एहसास है... पेनिट्रेशन का मतलब दुख के खत्म होने का रास्ता बनाना है, जिसे सीधे तौर पर जानना है।

11. 1.a-d. मैटेरियलिटी की पूरी समझ के तौर पर पेनेट्रेशन का मतलब सीधे तौर पर जानना है। मैटेरियलिटी की शुरुआत को छोड़ना पेनेट्रेशन का मतलब है... मैटेरियलिटी के खत्म होने का एहसास होना पेनेट्रेशन का मतलब है... मैटेरियलिटी के खत्म होने की ओर ले जाने वाले रास्ते को डेवलप करना पेनेट्रेशन का मतलब है... [और इसी तरह चार मामलों में a-d. §5 में लिस्टेड 201 आइडिया में से हर एक के साथ)...

201.a-d. बुढ़ापा और मौत को पूरी तरह समझने के तौर पर पेनिट्रेशन का मतलब सीधे तौर पर जानना है। बुढ़ापा और मौत की शुरुआत को छोड़ने के तौर पर पेनिट्रेशन का मतलब... बुढ़ापा और मौत के खत्म होने का एहसास... बुढ़ापा और मौत के खत्म होने की ओर ले जाने वाले रास्ते को डेवलप करने के तौर पर पेनिट्रेशन का मतलब सीधे तौर पर जानना है।

*

12. दुख को सीधे जानना है। दुख की शुरुआत... दुख का खत्म होना... दुख की शुरुआत का खत्म होना... दुख के लिए जोश और लालच का खत्म होना... दुख में आकर्षण... दुख में खतरा... दुख से बचने को सीधे जानना है। 4

13. 1.a-h. मैटेरियलिटी को सीधे जानना है। मैटेरियलिटी की ...शुरुआत मैटेरियलिटी का खत्म होना... मैटेरियलिटी की शुरुआत का खत्म होना... मैटेरियलिटी के लिए जोश और लालच का खत्म होना... मैटेरियलिटी में अट्रैक्शन... मैटेरियलिटी में खतरा... मैटेरियलिटी से बचना... [और इसी तरह आठ मामलों में a-h. §5 में लिस्टेड 201 आइडिया में से हर एक के साथ)...

201.a-h. बुढ़ापा और मौत को सीधे तौर पर जानना है। बुढ़ापा और मौत की शुरुआत... बुढ़ापा और मौत का खत्म होना... बुढ़ापा और मौत की शुरुआत का खत्म होना... बुढ़ापा और मौत के लिए जोश और लालच का खत्म होना... बुढ़ापा और मौत में आकर्षण... खतरा

बुढ़ापे और मृत्यु में... बुढ़ापे और मृत्यु से बचने का उपाय प्रत्यक्ष रूप से जानना है।

*

14. दुख को प्रत्यक्ष रूप से जानना चाहिए। दुख का मूल... [10] दुख की समाप्ति... दुख की समाप्ति का मार्ग दुख . . . में आकर्षण... दुख में खतरा... दुख से बचाव को प्रत्यक्ष रूप से जानना चाहिए।

15. 1.a-g. मैटेरियलिटी को सीधे जानना है। मैटेरियलिटी की . . . शुरुआत मैटेरियलिटी का खत्म होना... मैटेरियलिटी के खत्म होने का रास्ता... मैटेरियलिटी में अट्रैक्शन... मैटेरियलिटी में खतरा। मैटेरियलिटी से बचना... (और इसी तरह सात मामलों में a-g. §5 तक लिस्ट किए गए 201 आइडिया में से हर एक के साथ)...

201.a-g. बुढ़ापा और मौत को सीधे जानना होगा। बुढ़ापा और मौत की शुरुआत... बुढ़ापा और मौत का खत्म होना... बुढ़ापा और मौत के खत्म होने का रास्ता... बुढ़ापा और मौत में आकर्षण... बुढ़ापा और मौत में खतरा... बुढ़ापा और मौत से बचने का रास्ता सीधे जानना होगा।

*

16. नश्वरता का चिंतन सीधे जानना है। दर्द का चिंतन... खुद से अलग होने का चिंतन। वैराग्य का . . चिंतन... मिटने का चिंतन... खत्म होने का चिंतन... त्याग का चिंतन सीधे जानना है।

17. 1.a-g. भौतिकता के मामले में नश्वरता का चिंतन सीधे तौर पर जाना जाता है। भौतिकता के मामले में दर्द का चिंतन... भौतिकता के मामले में न-स्व का चिंतन... भौतिकता के मामले में वैराग्य का चिंतन... भौतिकता के मामले में मिटने का चिंतन... भौतिकता के मामले में समाप्ति का चिंतन... भौतिकता के मामले में त्याग का चिंतन... [और इसी तरह सात उदाहरणों a-g में। §5 में लिस्ट किए गए बाकी 201 विचारों में से हर एक के साथ...

201.ए-जी. बुढ़ापे और मृत्यु के मामले में नश्वरता का चिंतन सीधे तौर पर जानना चाहिए। बुढ़ापे और मृत्यु के मामले में दर्द का चिंतन... बुढ़ापे और मृत्यु के मामले में अनात्मा का चिंतन... बुढ़ापे और मृत्यु के मामले में वैराग्य का चिंतन... बुढ़ापे और मृत्यु के मामले में मिटने का चिंतन... बुढ़ापे और मृत्यु के मामले में समाप्ति का चिंतन... बुढ़ापे और मृत्यु के मामले में त्याग का चिंतन सीधे तौर पर जानना चाहिए।

* * *

[अस्तित्व के 15 अनिवार्य तत्व]

18. 1. उदय को प्रत्यक्ष जानना है।
2. घटना का प्रत्यक्ष ज्ञान होना चाहिए।
3. (किसी बनावट का) संकेत सीधे तौर पर जाना जाना चाहिए।
4. संचय [कर्म का] प्रत्यक्ष जानना है।
5. पुनर्जन्म से जुड़ाव को सीधे तौर पर जानना है।
6. गंतव्य (पुनर्जन्म पर) को प्रत्यक्ष रूप से जानना है।
7. समुच्चयों की उत्पत्ति प्रत्यक्ष रूप से ज्ञात होनी चाहिए।
8. पालन-पोषण को सीधे तौर पर जानना है।
9. जन्म को प्रत्यक्ष रूप से जानना है।
10. उम्र बढ़ना सीधे तौर पर जाना जाता है।
11. बीमारी (11) को प्रत्यक्ष रूप से जाना जाता है।
12. मृत्यु को प्रत्यक्ष रूप से जानना है।
13. दुःख को प्रत्यक्ष रूप से जानना है।
14. विलाप को सीधे जाना जाना चाहिए।
15. निराशा को सीधे तौर पर जानना चाहिए। 6

1. नॉन-अराइजिंग...
2. घटना न होना...
3. नॉन-साइन...
4. जमा न होना...
5. पुनर्जन्म से न जोड़ना...
6. नॉन-डेस्टिनेशन...
7. नॉन-जेनरेशन...
8. नॉन-रीयराइजिंग...
9. नॉन-बर्थ...
10. बुढ़ापा न आने वाला...
11. बीमारी न होना।
12. मृत्यु नहीं...
13. गैर-दुःख...
14. विलाप न करना
15. निराशा न होना सीधे तौर पर जानना है।

होने को सीधे जाना जाता है। न उत्पन्न होने को सीधे जाना जाता है।

1. उत्पन्न
2. घटना... घटना न होना...
3. संकेत...गैर-संकेत.
4. जमा करना... जमा न करना...
5. पुनर्जन्म से जोड़ना... पुनर्जन्म से नहीं जोड़ना...
6. डेस्टिनेशन... नॉन-डेस्टिनेशन...
7. पीढ़ी... गैर-पीढ़ी...
8. पालन-पोषण... गैर-पालन-पोषण।

9. जन्म...अजन्म...

10. उम्र बढ़ना... उम्र न बढ़ना...

11. बीमारी... बिना बीमारी...

12. मौत. नॉन-डेथ...

13. दुख... गैर-दुख...

14. विलाप... गैर-विलाप...

15. निराशा... निराशा न होना सीधे तौर पर जानना है।

19. 1. यह प्रत्यक्ष जानना है कि उत्पन्न होना ही दुःख है।

. . . 2. वह घटना दुख है।

3.-14. . . .

15. यह सीधे तौर पर जानना चाहिए कि निराशा ही दुख है।

1. यह प्रत्यक्ष जानना है कि अउत्पत्ति ही आनंद है।

2. . . . कि जो कुछ भी नहीं होता, वही आनंद है।

3.-14. . . .

[12] 15. यह प्रत्यक्ष रूप से जानना चाहिए कि निराशा न होना ही आनंद है।

1. यह प्रत्यक्ष जानना है कि उत्पन्न होना ही दुख है और न उत्पन्न होना ही आनंद है।

2... कि जो हो रहा है वह दुख है और जो न हो रहा है वह आनंद है।

3.-14. . . .

15. यह सीधे तौर पर जानना चाहिए कि निराशा ही दुख है और निराशा न होना ही आनंद है।

20. 1. यह प्रत्यक्ष रूप से जानना है कि जो उत्पन्न हो रहा है वह भय है।

2. वह घटना आतंक है।

3.-14. . . .

15. यह बात सीधे तौर पर जान लेनी चाहिए कि निराशा ही आतंक है।

1. यह सीधे तौर पर जानना है कि जो उत्पन्न नहीं होता वह सुरक्षा है।

2.... कि न होना ही सुरक्षा है।

3.-14. . . .

[13] 15. यह प्रत्यक्ष रूप से जानना चाहिए कि निराशा न करना ही सुरक्षा है।

1. यह प्रत्यक्ष रूप से जानना है कि उत्पन्न होना भय है और न उत्पन्न होना सुरक्षा है।

2. . . . जो हो वह आतंक है और जो न हो वह सुरक्षा है।

3.-14. . . .

15. यह बात सीधे तौर पर जान लेनी चाहिए कि निराशा ही आतंक है और निराशा न होना ही सुरक्षा है।

21. 1. यह प्रत्यक्ष रूप से जानना चाहिए कि उत्पत्ति भौतिकवादी है।

2.... वह घटना भौतिकवादी है।

3.-14. . . .

15. यह बात सीधे तौर पर जान लेनी चाहिए कि निराशा भौतिकवादी है।

1. यह प्रत्यक्ष रूप से जानना चाहिए कि अउत्पन्न होना अभौतिकवादी है।

2. . . . कि जो नहीं होता वह अभौतिक है।

3.-14. . . .

15. यह सीधे तौर पर जानना चाहिए कि निराशा न होना, भौतिक नहीं है।

1. यह प्रत्यक्ष जानना है कि उत्पन्न होना भौतिकवादी है और न उत्पन्न होना अभौतिकवादी है।

2.... कि घटना भौतिकवादी है और न होना अभौतिकवादी है।

3.-14. . . .

15. यह बात सीधे तौर पर जान लेनी चाहिए कि निराशा मैटीरियलिस्टिक है और निराशा न होना अनमैटीरियलिस्टिक है।

22. 1. यह प्रत्यक्ष जानना है कि उत्पत्ति ही निर्माण है।

2.... वह घटना फॉर्मेशन है।

3.-14. . . .

15. यह सीधे तौर पर जानना चाहिए कि निराशा एक बनावट है।

1. यह प्रत्यक्ष रूप से जानना है कि अउत्पत्ति ही निर्वाण है।

2.... वह अघटन ही निब्बान है।

3.-14. . . .

15. यह प्रत्यक्ष रूप से जानना है कि निराशा न होना ही निर्वाण है।

1. यह प्रत्यक्ष जानना है कि उत्पन्न होना ही सृष्टि है और न उत्पन्न होना ही निर्वाण है।

2.... कि होना ही रचना है और न होना ही निब्बान है।

3.-14. . . .

15. यह सीधे तौर पर जानना चाहिए कि निराशा ही निर्माण है और निराशा न होना ही निब्बान है।

पहले पाठ खंड का अंत

* * *

[महान मार्ग से जुड़े विभिन्न अर्थ]

23. गले लगाने का मतलब सीधे जानना है, इक्विपमेंट (देखें M ii 206) का मतलब सीधे जानना है, परफेक्शन का मतलब.. एकता का मतलब... ध्यान भटकना नहीं, मेहनत। न फैलना... न हंगामा... न परेशानी। एकता में स्थापित होने से पहचान की स्थिरता... (सपोर्टिंग) ऑब्जेक्ट...डोमेन। छोड़ना... छोड़ देना... उभरना... दूर हो जाना। शांतिपूर्ण...

शानदार [लक्ष्य]... मुक्ति... बिना किसी परेशानी के... पार जाना... बिना किसी निशान के... बिना किसी इच्छा के... शून्य... एकमात्र काम (स्वाद) [शांति और समझ का]... [16] ज़्यादा न होना [शांति या समझ दोनों में से]... [शांति और समझ का] मिलना... बाहर निकलना (बनाए गए से)... कारण [निब्बान तक पहुँचने का]... (निब्बान) को एक मतलब के तौर पर सीधे जानना है, दबदबे को एक मतलब के तौर पर सीधे जानना है। (इन §§23-43 से तुलना करें Tr. XIII § §23-43).7

24. [शांति और अंतर्दृष्टि के अर्थ]

24. शांति का मतलब है ध्यान भटकना नहीं, इसे सीधे जानना है। समझ का मतलब है ध्यान... शांति और समझ का मतलब है एक काम (स्वाद)... ज़्यादा न होना, क्योंकि [उनके] मिलने का मतलब है सीधे जानना है।

(महान मार्ग के आरंभ, मध्य और अंत से जुड़े विचारों के अर्थ)

25. ट्रेनिंग का मतलब अंडरटेकिंग को सीधे जानना है। सपोर्टिंग-ऑब्जेक्ट का मतलब डोमेन है... सुस्त कॉग्निजेंस का मतलब एक्सर्टेशन है... एगिटेटेड कॉग्निजेंस का मतलब कंट्रोलिंग है... दोनों तरह से प्योर कॉग्निजेंस का मतलब इक्विनिमिटी से देखा जाना है, इसे सीधे जानना है। डिस्टिंक्शन को एक मतलब के तौर पर सीधे जानना है। ऊँचे लेवल पर पहुँचना एक मतलब के तौर पर... एक्चुअलिटी पर कन्वर्जेंस एक मतलब के तौर पर... स्टॉप में एस्टैब्लिशमेंट करना एक मतलब के तौर पर सीधे जानना है।

[पांच शक्तियों का अर्थ, इत्यादि]

26. विश्वास की क्षमता का मतलब है संकल्प, इसे सीधे जानना है। एनर्जी की क्षमता का मतलब है परिश्रम... माइंडफुलनेस की क्षमता का मतलब है . . .स्थापना, कंसंट्रेशन की क्षमता का मतलब है ध्यान भटकना नहीं... समझने की क्षमता का मतलब है देखना।

विश्वास की शक्ति का मतलब है, अविश्वास से अडिग रहना, इसे सीधे जानना है। एनर्जी पावर का मतलब है, आलस से अडिग रहना... माइंडफुलनेस पावर का मतलब है, लापरवाही से अडिग रहना... कंसंट्रेशन पावर का मतलब है, बेचैनी से अडिग रहना... समझने की शक्ति का मतलब है, अज्ञानता से अडिग रहना, इसे सीधे जानना है।

माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर का मतलब सीधे तौर पर जानना है। इन्वेस्टिगेशन-ऑफ-आइडियाज़ एनलाइटनमेंट फैक्टर का मतलब इन्वेस्टिगेशन है... एनर्जी एनलाइटनमेंट फैक्टर का मतलब मेहनत है... खुशी का मतलब इंटेंशन है

आत्मज्ञान कारक... शांति का अर्थ प्रशांति आत्मज्ञान कारक... गैर-विचलन एकाग्रता का अर्थ आत्मज्ञान कारक... प्रतिबिंब समता के अर्थ के रूप में आत्मज्ञान कारक को प्रत्यक्ष रूप से जाना जाना है।

[17] सही दृष्टिकोण के अर्थ के रूप में देखना को प्रत्यक्ष रूप से जानना है। सही विचार के अर्थ के रूप में निर्देश देना.. सही बोलने के अर्थ के रूप में गले लगाना... सही अभिनय के अर्थ के रूप में उत्पत्ति... सही जीवन जीने के अर्थ के रूप में सफाई... सही प्रयास के अर्थ के रूप में परिश्रम... सही जागरूकता के अर्थ के रूप में स्थापना... सही एकाग्रता के अर्थ के रूप में गैर-विचलन को प्रत्यक्ष रूप से जानना है।

क्षमताओं के मतलब के तौर पर डोमिनेंस को सीधे जानना है। शक्तियों के मतलब के तौर पर अडिग रहना... ज्ञान के फैक्टर्स के मतलब के तौर पर आउटलेट... रास्ते के मतलब के तौर पर कारण... माइंडफुलनेस की नींव के मतलब के तौर पर एस्टैब्लिशिंग... सही कोशिशों के मतलब के तौर पर कोशिश करना... सफलता के बेस के मतलब के तौर पर सफल होना... असलियत के मतलब के तौर पर सचाई को सीधे जानना है।10

27. (चार) कामों का मतलब सीधे-सीधे जानना है। (4) (चार) नतीजों का मतलब सीधे-सीधे जानना है।

[पांच झाना फैक्टर्स के अर्थ]

28. अप्लाइड-थॉट का मतलब डायरेक्टिंग ऑन्टो है, जिसे सीधे जानना है। सस्टेन्ड-थॉट का मतलब सस्टेनेंस है... खुशी का मतलब इंटेन्डनेस ऑन्टो है... ब्लिस (आनंद) का मतलब मॉइस्टेनिंग है... (कॉन्सेंट्रेटेड) कॉन्शसनेस का मतलब यूनिफिकेशन है, जिसे सीधे जानना है।12

[विविध अर्थ]

29. मतलब के तौर पर एडवर्टाइज़िंग को सीधे जानना है। मतलब के तौर पर कॉग्नाइज़ करना... मतलब के तौर पर समझने का काम... मतलब के तौर पर परसेप्शन... मतलब के तौर पर सिंगलनेस को सीधे जानना है।

प्रत्यक्ष ज्ञान का अर्थ जो जाना जाता है उसे जानना है। पूर्ण बोध का अर्थ निर्णय करना (जांच करना)... त्याग देने का अर्थ त्याग देना... विकसित होने का अर्थ एकल कार्य... अनुभूति का अर्थ ध्वनि करना... समुच्चयों का अर्थ समुच्चय... सिद्धांतों का अर्थ सिद्धांत... आधारों का अर्थ आधार... निर्मित [विचारों] का अर्थ बनना... अनिर्मित का अर्थ न बनना प्रत्यक्ष रूप से जानना है।

[संज्ञान से जुड़े अर्थ]

30. एक मतलब के तौर पर कॉग्निजेंस को सीधे जानना होता है। एक मतलब के तौर पर कॉग्निजेंस का तुरंत आगे बढ़ना... एक मतलब के तौर पर कॉग्निजेंस का उभरना, एक . . . मतलब के तौर पर कॉग्निजेंस से दूर होना... एक मतलब के तौर पर कॉग्निजेंस के कारण। एक मतलब के तौर पर कॉग्निजेंस के लिए शर्तें... एक मतलब के तौर पर कॉग्निजेंस के फिजिकल बेस... एक मतलब के तौर पर कॉग्निजेंस का प्लेन... सपोर्टिंग। एक मतलब के तौर पर कॉग्निजेंस का ऑब्जेक्ट... एक मतलब के तौर पर कॉग्निजेंस का डोमेन... एक मतलब के तौर पर कॉग्निजेंस की यात्रा... एक मतलब के तौर पर कॉग्निजेंस को गाइड. . . करना। एक मतलब के तौर पर कॉग्निजेंस का आउटलेट... एक मतलब के तौर पर कॉग्निजेंस से बचना सीधे जानना होता है। 13

[एकता से जुड़े अर्थ]

31. 14 अर्थ के रूप में एकता में विज्ञापन को प्रत्यक्ष रूप से जाना जाना है। अर्थ के रूप में एकता में जानना [18]। अर्थ के रूप में एकता को समझने का कार्य... अर्थ के रूप में एकता को देखना... अर्थ के रूप में एकता में एकता में एकल होना.. अर्थ के रूप में एकता में स्थिर होना... अर्थ के रूप में (प्रथम झाना के साथ) एकता में प्रवेश करना... अर्थ के रूप में [दूसरे झाना के साथ] एकता में विश्वास रखना... अर्थ के रूप में [तीसरे झाना के साथ] एकता में व्यवस्थित हो जाना... अर्थ के रूप में [चौथे झाना के साथ) एकता में मुक्त हो जाना... अर्थ के रूप में एकता में यह देखना कि 'यह शांतिपूर्ण है'... अर्थ के रूप में एकता में वाहन बन जाना... अर्थ के रूप में एकता में आधार बन जाना... अर्थ के रूप में एकता में नींव बन जाना। एकता में अर्थ के रूप में समेकित होना... एकता में अर्थ के रूप में उचित रूप से कार्य करना (एकरूपता तक लाना)... एकता में अर्थ के रूप में आलिंगन करना... एकता में अर्थ के रूप में उपकरण... एकता में अर्थ के रूप में पूर्णता... एकता में अर्थ के रूप में संयोजन... एकता में अर्थ के रूप में स्थिर होना... एकता में अर्थ के रूप में पुनरावृत्ति (खेती)... एकता में अर्थ के रूप में विकास... एकता में अर्थ के रूप में अधिक लाभ उठाना... एकता में अर्थ के रूप में अच्छी तरह विकसित होना (एकरूपता तक विकसित होना)... एक अर्थ के रूप में एकता में अच्छी तरह मुक्त होना... एक अर्थ के रूप में एकता में [पहले मार्ग द्वारा] प्रबुद्ध होना... एक अर्थ के रूप में एकता में [दूसरे मार्ग द्वारा] और अधिक प्रबुद्ध होना... एक अर्थ के रूप में एकता में [तीसरे मार्ग द्वारा] और अधिक प्रबुद्ध होना... एक अर्थ के रूप में एकता में [चौथे मार्ग द्वारा] पूरी तरह से प्रबुद्ध होना... एकता में अर्थ के रूप में प्रबुद्ध होना... एकता में अर्थ के रूप में और अधिक प्रबुद्ध होना। एकता में अर्थ के रूप में और भी अधिक ज्ञानोदय... एक अर्थ के रूप में एकता में पूर्ण रूप से ज्ञानोदय... एक अर्थ के रूप में एकता में ज्ञानोदय में भाग लेना... एक अर्थ के रूप में एकता में और अधिक ज्ञानोदय में भाग लेना... एक अर्थ के रूप में एकता में पूर्ण ज्ञानोदय में भाग लेना... एक अर्थ के रूप में एकता में प्रकाशमान होना... <एकता में अर्थ के रूप में प्रकाशमान होना...> एक अर्थ के रूप में एकता में और अधिक प्रकाशमान होना... एक अर्थ के रूप में एकता में और अधिक प्रकाशमान होना... एक अर्थ के रूप में एकता में पूर्ण प्रकाशमान होना को प्रत्यक्ष रूप से जाना जाना है।

महान भाग से जुड़े अर्थ

32. 15 अर्थ के रूप में व्याख्या करना प्रत्यक्ष रूप से जाना जाता है। अर्थ के रूप में ज्वलंत होना... अर्थ के रूप में कल्मषों का जलना... अर्थ के रूप में कोई दाग न होना... अर्थ के रूप में बेदाग... अर्थ के रूप में निष्कलंक... अर्थ के रूप में समानता (शांत)... अर्थ के रूप में अवसर... अर्थ के रूप में एकांत। अर्थ के रूप में एकांत द्वारा नियंत्रित व्यवहार... अर्थ के रूप में मिट जाना। अर्थ के रूप में मिट जाने से नियंत्रित व्यवहार... [19] अर्थ के रूप में समाप्ति... अर्थ के रूप में समाप्ति द्वारा नियंत्रित व्यवहार... अर्थ के रूप में त्याग... अर्थ के रूप में त्याग द्वारा नियंत्रित व्यवहार... अर्थ के रूप में मुक्ति... अर्थ के रूप में मुक्ति द्वारा नियंत्रित व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से जाना जाता है।

[सफलता के चार आधारों के अर्थ]

33. "एक मतलब के तौर पर जोश को सीधे जानना है। जोश के एक मतलब के तौर पर जड़ को सीधे जानना है। जोश के एक मतलब के तौर पर आधार... जोश के एक मतलब के तौर पर कोशिश... जोश के एक मतलब के तौर पर सफल होना... जोश के एक मतलब के तौर पर संकल्प... जोश के एक मतलब के तौर पर मेहनत... जोश के एक मतलब के तौर पर स्थापना (पाना)... जोश के एक मतलब के तौर पर ध्यान भटकना नहीं... जोश के एक मतलब के तौर पर देखना सीधे जानना है।

एक अर्थ के रूप में ऊर्जा को प्रत्यक्ष रूप से जानना चाहिए... ऊर्जा के एक अर्थ के रूप में जड़... [और इसी प्रकार उत्साह के लिए]... ऊर्जा के एक अर्थ के रूप में देखना प्रत्यक्ष रूप से जानना चाहिए।

कॉग्निजेंस का मतलब सीधे जानना है। कॉग्निजेंस का मतलब रूट है... [और इसी तरह जोश तक के लिए)... कॉग्निजेंस का मतलब देखना सीधे जानना है।

जांच का मतलब सीधे जानना है। जांच का मतलब जड़ है। (और इसी तरह उत्साह के लिए)... जांच का मतलब सीधे जानना है।

[चार वास्तविकताओं के अर्थ]

34. दुख का मतलब सीधे जानना है। दुख का मतलब ज़ुल्म है, यह सीधे जानना है... दुख का मतलब बनना है... दुख का मतलब जलना (तकलीफ़) है... दुख का मतलब बदलाव है, यह सीधे जानना है।

एक अर्थ के रूप में उत्पत्ति को प्रत्यक्ष रूप से जानना है। उत्पत्ति के अर्थ के रूप में संचय [कम्म]... उत्पत्ति के अर्थ के रूप में स्रोत... उत्पत्ति के अर्थ के रूप में बंधन... उत्पत्ति के अर्थ के रूप में बाधा डालना को प्रत्यक्ष रूप से जानना है।

एक अर्थ के रूप में समाप्ति को प्रत्यक्ष रूप से जानना है। [20] समाप्ति के अर्थ के रूप में पलायन... समाप्ति के अर्थ के रूप में एकांत... समाप्ति के अर्थ के रूप में निरूपण... समाप्ति के अर्थ के रूप में अमरता को प्रत्यक्ष रूप से जानना है।

रास्ते का मतलब सीधे जानना है। रास्ते का मतलब आउटलेट है... रास्ते का मतलब कारण है... रास्ते का मतलब देखना है... रास्ते का मतलब डोमिनेंस है, इसे सीधे जानना है।

[सार्वभौमिक अनुप्रयोग वाले अर्थ]

35. सत्यता को एक अर्थ के रूप में सीधे जानना है। अ-स्व को एक अर्थ के रूप में... वास्तविकता को एक अर्थ के रूप में... प्रवेश को एक अर्थ के रूप में। .. सीधे जानना एक अर्थ के रूप में... पूरी तरह से समझना एक अर्थ के रूप में.. विचार को एक अर्थ के रूप में... सिद्धांत को एक अर्थ के रूप में... जो-जाना-है उसे एक अर्थ के रूप .. में। बोध को एक अर्थ के रूप में... ध्वनि को एक अर्थ के रूप में... अभिसरण को एक अर्थ के रूप में सीधे जानना है।

* * *

[सात रुकावटों के विपरीत, चार ज्ञान, चार अमूर्त उपलब्धियां, अठारह मुख्य अंतर्दृष्टियां, और चार रास्ते और फल]

36. त्याग को सीधे जानना है। बिना किसी बुरी भावना के... प्रकाश की अनुभूति... ध्यान भटकना नहीं... विचारों की परिभाषा... ज्ञान... खुशी को सीधे जानना है।
37. पहले झान को सीधे जानना है। दूसरे झान को... तीसरे झान को... चौथे झान को सीधे जानना है। 38. असीम स्पेस से बने बेस को सीधे जानना है। असीम चेतना से युक्त आधार... शून्यता से युक्त आधार... न बोध और न अबोध से युक्त आधार को प्रत्यक्ष रूप से जाना जाना है।

[अठारह प्रमुख अंतर्दृष्टियाँ]

39. नश्वरता का चिंतन सीधे जानना है। दर्द का चिंतन... खुद से अलग होने का चिंतन... वैराग्य का चिंतन... लालच के खत्म होने का चिंतन... खत्म होने का चिंतन। त्याग का चिंतन... विनाश का चिंतन... पतन का चिंतन... बदलाव का चिंतन... बिना निशान का चिंतन... बिना इच्छा का चिंतन... शून्यता का चिंतन। विचारों में अंतर्दृष्टि जो ऊंची समझ है... सही ज्ञान और देखना... खतरे का चिंतन... रिफ्लेक्स का चिंतन... दूर जाने का चिंतन सीधे जानना है।

40. धारा-प्रवेश पथ को प्रत्यक्ष जानना चाहिए। धारा प्रवेश का फल... एक बार लौटने का फल... एक बार लौटने का फल। न लौटने का मार्ग... न लौटने का फल... अरहंत मार्ग... अरहंतत्व का फल प्रत्यक्ष जानना चाहिए। [21]

[संकाय, आदि, उनके अर्थों के माध्यम से - देखें $26|19

41. संकल्प के मतलब से, विश्वास की क्षमता को सीधे जाना जाता है। मेहनत के मतलब से, ऊर्जा की क्षमता... स्थापित करने के मतलब से, माइंडफुलनेस की क्षमता... ध्यान भटकने से बचने के मतलब से, एकाग्रता की क्षमता... देखने के मतलब से, समझने की क्षमता को सीधे जाना जाता है।

विश्वास न होने से अडिग रहने के मतलब से, विश्वास की शक्ति को सीधे जानना है। आलस से अडिग रहने के मतलब से, एनर्जी की शक्ति... लापरवाही से अडिग रहने के मतलब से, माइंडफुलनेस की शक्ति... बेचैनी से अडिग रहने के मतलब से, कंसंट्रेशन की शक्ति... अज्ञानता से अडिग रहने के मतलब से, समझने की शक्ति को सीधे जानना है।

इसके स्थापित करने (स्थापना) के मतलब से, माइंडफुलनेस एन-लाइटनमेंट फैक्टर को सीधे जानना है। इसके इन्वेस्टिगेशन-गेटिंग, आइडियाज़-की-इन्वेस्टिगेशन एनलाइटनमेंट फैक्टर के मतलब से... इसके मेहनत के मतलब से, एनर्जी एनलाइटनमेंट फैक्टर के मतलब से... इसके फैलने (ध्यान लगाने) के मतलब से, खुशी एनलाइटनमेंट फैक्टर के मतलब से... इसके शांति, शांति एनलाइटनमेंट फैक्टर के मतलब से... इसके ध्यान न भटकने के मतलब से, कंसंट्रेशन एनलाइटनमेंट फैक्टर के मतलब से... इसके रिफ्लेक्शन के मतलब से, इक्विनिमिटी एनलाइटनमेंट फैक्टर को सीधे जानना है।

देखने के मतलब से, सही नज़रिए को सीधे जाना जाता है। सही सोच को निर्देशित करने के मतलब से... गले लगाने के मतलब से, सही बोलना... शुरू करने के मतलब से, सही काम करने के मतलब से... सफ़ाई, सही ज़िंदगी जीने के मतलब से... मेहनत, सही कोशिश के मतलब से... स्थापित करने (स्थापना) के मतलब से, सही ध्यान... ध्यान भटकने न देने के मतलब से, सही एकाग्रता को सीधे जाना जाता है।

उनके दबदबे के मतलब से, काबिलियत को सीधे जाना जाता है। उनके अटल होने के मतलब से, ताकतें... उनके आउटलेट के मतलब से, ज्ञान देने वाले फैक्टर... इसके कारण, रास्ते के मतलब से... उनके स्थापित करने (फाउंडिंग) के मतलब से, माइंडफुलनेस की नींव के मतलब से... उनके कोशिश करने, सही कोशिशों के मतलब से। उनके सफल होने के मतलब से, सफलता के आधार। उनके सच होने (सच्चाई) के मतलब से, असलियत को सीधे जाना जाता है।

42. ध्यान भटकने के अपने मतलब से, शांति को सीधे जाना जाता है। सोच-विचार, समझ के अपने मतलब से... एक ही काम (स्वाद), शांति और समझ के अपने मतलब से... ज़्यादा न होने [दोनों में से किसी एक की भी] के अपने मतलब से, शांति और समझ का मिलना सीधे जाना जाता है।

इसके संयम के अर्थ से पुण्य की शुद्धि प्रत्यक्ष जाननी है। इसके अपरिग्रह के अर्थ से, ज्ञान की शुद्धि, ... इसके देखने के अर्थ से, (22) दृष्टि की शुद्धि... इसके स्वतंत्रता, मुक्ति के अर्थ से। इसके प्रवेश, पहचान के अर्थ से... इसके त्याग, उद्धार के अर्थ से... इसके काट देने के अर्थ से, विनाश के ज्ञान से... इसके शांत करने के अर्थ से, अउत्पन्न होने के ज्ञान को प्रत्यक्ष जानना है।

[महान मार्ग का आरंभ, मध्य और अंत, उनके अर्थों के साथ]20

43. जोश, अपने मूल के मतलब से, सीधे जाना जाता है। ध्यान, अपने शुरू होने के मतलब से... संपर्क, अपने मिलाने के मतलब से (संपर्क के लिए अंदरूनी और बाहरी आधार)... भावना, अपने मिलने की जगह (लालसा के लिए) के मतलब से,... एकाग्रता, अपने सबसे आगे होने के मतलब से (दूसरी चेतना-साथियों को इकट्ठा करने में),... माइंडफुलनेस, अपने दबदबे के मतलब से [सहायक-वस्तु को स्थापित करने में),... समझ, अपने सबसे ऊंचे होने के मतलब से... मुक्ति, अपने मूल के मतलब से, सीधे जानी जाती है। निब्बान जो अमर में मिल जाता है, अपने खत्म होने के मतलब से, सीधे जानी जाती है।

*

44. जो भी विचार सीधे-सीधे जाने जाते हैं, वे जाने जाते हैं। ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाता है और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाता है। इसलिए कहा गया: 'कान का इस्तेमाल इस तरह किया जाता है: इन विचारों को सीधे-सीधे जाना जाता है। समझ का मतलब है समझने का काम, यानी सुनी हुई (सीखी हुई) बातों का ज्ञान।'

दूसरे पाठ खंड का अंत

* * *

[धारा ii]

45. यह कैसे है कि 'इन विचारों को पूरी तरह से समझना है' इस तरह कान लगाने की समझ, सुनी हुई (सीखी हुई) बातों का ज्ञान है?

[दस प्रस्ताव) (दशत्तर, दि 272ff.)

46. एक विचार जिसे पूरी तरह से समझा जाना चाहिए: संपर्क कैंसर का कारण है और यह चिपके रहने को बढ़ावा देता है (Diii 272)।

दो विचार जिन्हें पूरी तरह से समझना होगा: मानसिकता और भौतिकता (Diii 273).
तीन विचारों को पूरी तरह से समझा जाना चाहिए: तीन प्रकार की भावनाएं (1) iii 275).
चार विचार जिन्हें पूरी तरह से समझना चाहिए: चार प्रकार के पोषण (D iii 276)।
पूरी तरह से समझने के लिए पाँच विचार: चिपके रहने के पाँच समूह [वस्तुओं के रूप में) (D iii 233, 278).

छह विचार जिन्हें पूरी तरह से समझना चाहिए: छह अंदरूनी आधार (आंख से शुरू) (Diii 243, 280).

सात विचार जिन्हें पूरी तरह से समझना है: चेतना के सात स्टेशन (D iii 282).

आठ विचार जिन्हें पूरी तरह से समझना चाहिए: आठ सांसारिक विचार (Diii 286).
नौ विचार जिन्हें पूरी तरह से समझना चाहिए: अस्तित्व के नौ निवास (D iii 288).
दस आइडिया जिन्हें पूरी तरह समझना है: दस बेस [यानी, आंख, कान, नाक, जीभ, शरीर, दिखने वाली चीज़ें, आवाज़ें, गंध, स्वाद, दिखने वाली चीज़ें)। (D iii 290).

[सभी]

47. 'भिक्षुओं, सब कुछ पूरी तरह समझना है। और वह सब क्या है जिसे पूरी तरह समझना है? आँख को पूरी तरह समझना है, दिखने वाली चीज़ों को पूरी तरह समझना है, आँखों की चेतना को पूरी तरह समझना है, आँखों के संपर्क को पूरी तरह समझना है, आँखों के संपर्क से पैदा होने वाली कोई भी भावना, चाहे वह सुखद हो या दर्दनाक (23) या न दर्दनाक हो और न ही सुखद, उसे भी पूरी तरह समझना है। कान को पूरी तरह समझना है, आवाज़ें। नाक को पूरी तरह समझना है, गंध... जीभ को पूरी तरह समझना है, स्वाद... शरीर को पूरी तरह समझना है, दिखने वाली चीज़ें... मन को पूरी तरह समझना है, विचारों को पूरी तरह समझना है, मन की चेतना को पूरी तरह समझना है, मन के संपर्क को पूरी तरह समझना है, मन के संपर्क से पैदा होने वाली कोई भी भावना, चाहे वह सुखद हो या दर्दनाक या न दर्दनाक हो और न ही सुखद, उसे भी पूरी तरह समझना है' (cf. S iv 16 और §4)।

[201 विचार]

भौतिकता को पूरी तरह समझना होगा।21 भावना... [और इसी तरह §5 तक)... बुढ़ापे और मृत्यु को पूरी तरह समझना होगा।
49-85. दुख को पूरी तरह समझना होगा। इसकी शुरुआत... [और इसी तरह §§6-43 तक)... निब्बान जो अमर में मिल जाता है, उसे इसके खत्म होने के मतलब से पूरी तरह समझना होगा।
86. जब कोई व्यक्ति कोई विचार पाने की कोशिश कर रहा होता है, तो उसे वह मिल जाता है, तो उसे उसी हिसाब से पूरी तरह समझा और परखा जाता है (जांचा जाता है)।

जब कोई त्याग पाने की कोशिश कर रहा होता है, तो उसे पूरी तरह से समझा और परखा जाता है (जांच की जाती है)।

जब गैर-बुराई... जब प्रकाश की धारणा... जब गैर-विचलन... जब विचारों की परिभाषा... जब ज्ञान... जब प्रसन्नता... [24]

जब पहला झाना... जब दूसरा झाना... जब तीसरा झाना... जब चौथा झाना...

जब आधार असीम अंतरिक्ष से बना हो... जब आधार असीम चेतना से बना हो... जब आधार शून्य से बना हो, जब आधार न तो ...बोध और न ही गैर-बोध से बना हो...

जब विनाश का चिंतन... जब दर्द का चिंतन... जब अनात्मा का चिंतन... जब वैराग्य का चिंतन... जब मिटने का चिंतन... जब समाप्ति का चिंतन... जब त्याग का चिंतन... जब विनाश का चिंतन... जब पतन का चिंतन... जब परिवर्तन का चिंतन... जब चिन्हहीन का चिंतन... जब इच्छारहित का चिंतन... जब शून्यता का चिंतन... जब विचारों में अंतर्दृष्टि जो उच्चतर समझ है। जब सही ज्ञान और दर्शन... जब खतरे का चिंतन... जब प्रतिबिंब का चिंतन... जब दूर मुड़ने का चिंतन...

जब धारा-प्रवेश पथ... [26] जब एक बार लौटने वाला पथ। जब गैर-वापसी पथ... जब कोई अरहंत मार्ग जिसे प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है, उसे प्राप्त हो जाता है, तो उसे तदनुसार पूरी तरह से समझा और आंका जाता है (जांचा जाता है)।

*

87. जब कोई व्यक्ति कोई विचार पाने की कोशिश कर रहा होता है, तो उसे वह पूरी तरह समझ लेता है और उस पर गौर करता है (जांच करता है)। ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'कान का इस्तेमाल इस तरह किया जाता है: इन विचारों को पूरी तरह समझना है। समझ का मतलब है समझने का काम, यानी सुनी हुई (सीखी हुई) बातों का ज्ञान।'

* * *

सियोन

समाज

[धारा iii)

88. यह कैसे हुआ कि 'इन विचारों को छोड़ देना चाहिए' इस तरह कान लगाने की समझ, सुनी हुई (सीखी हुई) बातों का ज्ञान है?

[दस प्रस्ताव) (दशत्तर, दि 273ff.)

89. एक विचार जिसे त्याग देना चाहिए: 'मैं हूं' की दंभ (Diii 273).

दो विचार जिन्हें छोड़ देना चाहिए: अज्ञानता, और होने की लालसा (Diii 274).

तीन विचार जिन्हें त्यागना है: तीन प्रकार की लालसा (इंद्रिय-इच्छाओं के लिए, होने के लिए, न होने के लिए) (Diii 275)।

चार विचार जिन्हें छोड़ देना चाहिए: चार बाढ़ें (D iii 276).

पांच विचार जिन्हें छोड़ देना चाहिए: पांच बाधाएं (D iii 278).

छह विचार जिन्हें छोड़ देना चाहिए: लालसा के छह प्रकार (D iii 280).

सात विचार जिन्हें छोड़ देना चाहिए: सात अंदरूनी रुझान (D iii 282).

आठ विचार जिन्हें छोड़ देना चाहिए: आठ गलतियां (आठ गुना रास्ते के उलटे) (D iii 286).

नौ विचार जिन्हें छोड़ देना चाहिए: नौ विचार जो लालसा में निहित हैं (D iii 288, अंतिम स्रोत महानिदान है, जिसे PsA ने pp. 118-9 PTS edn. में दोहराया है)।

दस विचार जिन्हें छोड़ देना चाहिए: दस गलतियां (आठ प्लस गलत ज्ञान और गलत मुक्ति) (D iii 290).

*

90. छोड़ने के दो तरीके हैं: काटकर छोड़ना और शांत करके छोड़ना। काटकर छोड़ना उस इंसान में होता है जो विनाश (अशुद्धि) की ओर ले जाने वाला अलौकिक मार्ग बनाता है, और शांत करके छोड़ना फल मिलने के समय होता है।

तीन तरह के त्याग: कामुक इच्छाओं से बचना, त्याग में है; किसी भी तरह की भौतिकता से बचना, अभौतिकता में है; जो कुछ भी है, बनता है, निर्भर रूप से उत्पन्न होता है, उससे बचना, समाप्ति में है। जिसने त्याग पा लिया है, वह कामुक इच्छाओं को छोड़ देता है और त्याग देता है। जिसने अभौतिकता पा ली है, वह किसी भी तरह की भौतिकता को छोड़ देता है और त्याग देता है। जिसने समाप्ति पा ली है, वह बनने को छोड़ देता है और त्याग देता है।

त्याग के चार प्रकार: जब पूर्ण समझ से युक्त प्रवेश दुख की वास्तविकता में प्रवेश करता है तो वह त्याग देता है; जब [27] त्याग से युक्त प्रवेश उत्पत्ति की वास्तविकता में प्रवेश करता है तो वह त्याग देता है; जब बोध से युक्त प्रवेश समाप्ति की वास्तविकता में प्रवेश करता है तो वह त्याग देता है; जब विकास से युक्त प्रवेश.. जब मन रास्ते की असलियत को समझ लेता है, तो वह

छोड़ देता है। छोड़ने के पाँच तरीके हैं: दबाकर छोड़ना, उलटी चीज़ों को बदलकर छोड़ना, काटकर छोड़ना, शांत करके छोड़ना, भागकर छोड़ना। जो पहला ज्ञान विकसित करता है, उसमें रुकावटों को दबाकर छोड़ना होता है; जो ज्ञान विकसित करता है, उसमें (गलत) विचारों को उलटी चीज़ों को बदलकर छोड़ना होता है।

एकाग्रता में प्रवेश करना; जो व्यक्ति विनाश (विकृति) की ओर ले जाने वाले अलौकिक मार्ग को विकसित करता है, उसमें से (विकृति को) काटकर त्यागना; (मार्ग के) सफल होने के समय शांति देकर (विकास के प्रयास को) त्यागना; बचकर त्यागना समाप्ति, निब्बान है।

[सभी]

91. 'भिक्षुओं, सब कुछ छोड़ देना है। और वह सब क्या है जिसे छोड़ देना है? आँख छोड़ देनी है, दिखने वाली चीज़ें छोड़ देनी हैं, आँखों की चेतना छोड़ देनी है, आँखों का संपर्क छोड़ देना है, आँखों के संपर्क से पैदा होने वाली कोई भी भावना, चाहे वह सुखद हो या दर्दनाक या न दर्दनाक हो न सुखद, उसे भी छोड़ देना है। कान छोड़ देना है, आवाज़ें... नाक छोड़ देनी है, गंध... जीभ छोड़ देनी है, स्वाद... शरीर छोड़ देना है, ठोस . . . चीज़ें, मन छोड़ देना है, विचार छोड़ देने हैं, मन की चेतना छोड़ देनी है, मन का संपर्क छोड़ देना है, मन के संपर्क से पैदा होने वाली कोई भी भावना, चाहे वह सुखद हो या दर्दनाक या न दर्दनाक हो न सुखद, उसे छोड़ देना है'। (देखें S iv 16)।

[201 विचार]

92. जब वह भौतिकता देखता है तो वह छोड़ देता है। जब वह भावना देखता है... [और इसी तरह §5 तक)... जब वह बुढ़ापा और मृत्यु देखता है तो वह छोड़ देता है। 93.-129. जब वह दुख देखता है तो वह छोड़ देता है। जब वह मूल देखता है.. (और इसी तरह §§6-43 तक)... जब वह निब्बाण देखता है जो अपने अंत के अर्थ में अमर में विलीन हो जाता है तो वह छोड़ देता है।

*

130. जो भी विचार छोड़ दिए जाते हैं, वे छोड़ दिए जाते हैं। ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाता है और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाता है। इसलिए कहा गया: 'कान इस तरह लगाया जाता है: इन विचारों को छोड़ देना चाहिए। समझ का मतलब है समझने का काम, यानी सुनी हुई (सीखी हुई) बातों का ज्ञान।'

तीसरे पाठ खंड का अंत

* * *

[धारा 4]

131. [28] यह कैसे है कि 'इन विचारों को विकसित किया जाना है' इस प्रकार कान लगाने की समझ सुनी (सीखी) गई बातों का ज्ञान है?

[दस प्रस्ताव]

132. एक विचार विकसित किया जाना चाहिए: शरीर के साथ व्यस्त और आनंद के साथ माइंडफुलनेस22 (Diii 272)।

दो विचार विकसित किए जाने चाहिए: शांति और अंतर्दृष्टि (Diii 273).

तीन आइडिया डेवलप करने हैं: तीन तरह के कंसंट्रेशन (Diii 274).

चार आइडिया जिन्हें डेवलप करना है: माइंडफुलनेस के चार फाउंडेशन (D iii 276).

पांच आइडिया जिन्हें डेवलप करना है: फाइव-फैक्टर्ड राइट कंसंट्रेशन 22 (D iii 277).

छह आइडिया जिन्हें डेवलप करना है: याद करने के छह उदाहरण (Diii 280).

सात आइडिया जिन्हें डेवलप करना है: सात ज्ञान के फैक्टर (D iii 282).

आठ विचार जिन्हें विकसित किया जाना चाहिए: महान अष्टांगिक मार्ग (Diii 286)।

नौ आइडिया जिन्हें डेवलप करना है: प्यूरिफिकेशन की कोशिश में नौ फैक्टर 22 (D iii 288)।

दस आइडिया जिन्हें डेवलप करना है: दस कसीना बेस (Diii 290).

133. विकास के दो प्रकार: सांसारिक विकास और अलौकिक विकास।

तीन तरह के डेवलपमेंट: मटेरियल-स्फीयर के फ़ायदेमंद आइडिया का डेवलपमेंट, इमैटेरियल-स्फीयर के फ़ायदेमंद आइडिया का डेवलपमेंट, अनइनक्लूडेड फ़ायदेमंद आइडिया का डेवलपमेंट। मटेरियल-स्फीयर के फ़ायदेमंद आइडिया के डेवलपमेंट में, घटिया, मीडियम और बेहतर तरह के आइडिया होते हैं। इमैटेरियल-स्फीयर के फ़ायदेमंद आइडिया के डेवलपमेंट में, घटिया, मीडियम और बेहतर तरह के आइडिया होते हैं। अनइनक्लूडेड फ़ायदेमंद आइडिया के डेवलपमेंट में (सिर्फ़) बेहतर तरह के आइडिया होते हैं।

चार तरह का विकास: जब पूरी समझ वाली पैठ दुख की असलियत में घुसती है, तो यह विकसित होता है; जब छोड़ने वाली पैठ शुरुआत की असलियत में घुसती है, तो यह विकसित होता है; जब एहसास वाली पैठ खत्म होने की असलियत में घुसती है, तो यह विकसित होता है; जब विकास वाली पैठ रास्ते की असलियत में घुसती है, तो यह विकसित होता है। ये चार तरह के विकास हैं।

134. डेवलपमेंट के चार और प्रकार: खोज के रूप में डेवलपमेंट, पाने के रूप में डेवलपमेंट, एक काम के रूप में डेवलपमेंट, दोहराने के रूप में डेवलपमेंट। 23

खोज के तौर पर डेवलपमेंट क्या है? जब कोई कॉन्सेंट्रेशन में जाता है, तो उसके अंदर पैदा होने वाले आइडिया का एक ही काम होता है (यानी डिलीवर करना): यह खोज के तौर पर डेवलपमेंट है (एब्ज़ॉर्प्शन के लिए)।

प्राप्ति के रूप में विकास क्या है? जब कोई व्यक्ति एकाग्रता में प्रवेश करता है, तो उसके अंदर उत्पन्न विचार एक दूसरे से आगे नहीं बढ़ते: यह प्राप्ति (अवशोषण) के रूप में विकास है।

एक फ़ंक्शन के तौर पर डेवलपमेंट क्या है?

जब वह संकल्प के अर्थ में आस्था क्षमता विकसित करता है और (अन्य) चार क्षमताएं उसमें आस्था क्षमता के माध्यम से एक ही कार्य करती हैं, तो यह क्षमताओं के एकल कार्य के अर्थ में विकास है। जब वह परिश्रम के अर्थ में ऊर्जा [29] क्षमता विकसित करता है... ऊर्जा क्षमता के माध्यम से... जब वह स्थापित करने के अर्थ में दिमागी क्षमता विकसित करता है... दिमागी क्षमता के माध्यम से... जब वह गैर-व्याकुलता के अर्थ में एकाग्रता क्षमता विकसित करता है... एकाग्रता क्षमता के माध्यम से... जब वह देखने के अर्थ में समझ क्षमता विकसित करता है और (अन्य) चार क्षमताएं उसमें समझ क्षमता के माध्यम से एक ही कार्य करती हैं, तो यह क्षमताओं के एकल कार्य के अर्थ में विकास है।

जब वह अविश्वास से अडिग रहने के अर्थ में विश्वास शक्ति विकसित करता है और विश्वास शक्ति के माध्यम से (अन्य) चार शक्तियों का उसमें एक ही कार्य होता है, तो वह शक्तियों के एकल कार्य के अर्थ में विकास है। जब वह आलस्य से अडिग रहने के अर्थ में ऊर्जा शक्ति विकसित करता है... ऊर्जा शक्ति के माध्यम से... जब वह लापरवाही से अडिग रहने के अर्थ में मनन शक्ति विकसित करता है... मनन शक्ति के माध्यम से... जब वह ध्यान भटकने से अडिग रहने के अर्थ में एकाग्रता शक्ति विकसित करता है... एकाग्रता शक्ति के माध्यम से... जब वह अज्ञानता से अडिग रहने के अर्थ में समझ शक्ति विकसित करता है और समझने की क्षमता के माध्यम से (अन्य) चार शक्तियों का उसमें एक ही कार्य होता है, तो वह शक्तियों के एकल कार्य के अर्थ में विकास है।

जब वह स्थापित करने के अर्थ में माइंडफुलनेस ज्ञान कारक विकसित करता है और (अन्य) छह ज्ञान कारक माइंडफुलनेस ज्ञान कारक के माध्यम से उसके अंदर एक ही कार्य करते हैं, तो यह ज्ञान कारकों के एकल कार्य के अर्थ में विकास है। जब वह जांच-पड़ताल के अर्थ में विचारों की जांच ज्ञान कारक विकसित करता है ... विचारों की जांच ज्ञान कारक के माध्यम से... जब वह ऊर्जा ज्ञान कारक विकसित . . . करता है, ऊर्जा ज्ञान कारक के माध्यम से प्रयास करने के अर्थ में... जब वह इरादे के अर्थ में खुशी ज्ञान कारक विकसित करता है... खुशी ज्ञान कारक के माध्यम से... जब वह शांति के अर्थ में शांति ज्ञान कारक विकसित करता है... शांति ज्ञान कारक के माध्यम से... जब वह गैर-व्याकुलता के अर्थ में एकाग्रता ज्ञान कारक विकसित करता है... एकाग्रता ज्ञान कारक के माध्यम से... [30] जब वह प्रतिबिंब के अर्थ में समभाव ज्ञान कारक विकसित करता है और (अन्य) छह ज्ञान कारक समभाव ज्ञान कारक के माध्यम से उसके अंदर एक ही कार्य करते हैं, तो यह ज्ञान के एकल कार्य के अर्थ में विकास है। मानसिक कारक।

जब वह देखने के अर्थ में सम्यक् दृष्टि विकसित करता है और (अन्य) सात मार्ग कारकों का उसमें सम्यक् दृष्टि के माध्यम से एक ही कार्य होता है, तो यह पथ कारकों के एकल कार्य के अर्थ में विकास है। जब वह निर्देश देने के अर्थ में सम्यक् विचार विकसित करता है... सम्यक् विचार के माध्यम से... जब वह गले लगाने के अर्थ में सम्यक् वाणी विकसित करता है... सम्यक् वाणी के माध्यम से... जब वह उत्पन्न करने के अर्थ में सम्यक् कर्म विकसित करता है... सम्यक् कर्म के माध्यम से। जब वह सफाई के अर्थ में सम्यक् जीवन विकसित करता है... सम्यक् जीवन के माध्यम से... जब वह प्रयास करने के अर्थ में सम्यक् प्रयास विकसित करता है... सही, प्रयास के माध्यम से... जब वह स्थापित करने के अर्थ में सम्यक् जागरूकता विकसित करता है... सम्यक् जागरूकता के माध्यम से... जब वह गैर-विचलित होने के अर्थ में सम्यक् एकाग्रता विकसित करता है और (अन्य) सात मार्ग कारकों का उसमें सम्यक् एकाग्रता के माध्यम से एक ही कार्य होता है, तो यह एकल कार्य के अर्थ में विकास है।

यह सिंगल फंक्शन के तौर पर डेवलपमेंट है।

पुनरावृत्ति के रूप में विकास क्या है? यहाँ एक भिक्षु सुबह पुनरावृत्ति, दोपहर में पुनरावृत्ति, शाम को पुनरावृत्ति, खाने से पहले पुनरावृत्ति, खाने के बाद पुनरावृत्ति, पहले पहर में पुनरावृत्ति, मध्य पहर में पुनरावृत्ति, अंतिम पहर में पुनरावृत्ति, रात में पुनरावृत्ति, दिन में पुनरावृत्ति, रात और दिन में पुनरावृत्ति, चंद्रमा के अंधेरे हिस्से में पुनरावृत्ति, चंद्रमा के उज्ज्वल हिस्से में पुनरावृत्ति, वर्षा ऋतु में पुनरावृत्ति, ठंडी ऋतु में पुनरावृत्ति, गर्मी के मौसम में पुनरावृत्ति, जीवन के पहले चरण में पुनरावृत्ति, जीवन के मध्य चरण में पुनरावृत्ति, जीवन के अंतिम चरण में पुनरावृत्ति का अभ्यास करता है। यह पुनरावृत्ति के रूप में विकास है।

ये चार तरह के डेवलपमेंट हैं।

135. विकास के चार और प्रकार: [31] विचारों की अधिकता न होने के अर्थ में विकास, क्षमताओं के एकल कार्य के अर्थ में विकास, उपयुक्त ऊर्जा के प्रभावी होने के अर्थ में विकास, पुनरावृत्ति के अर्थ में विकास।

यह कैसे विकास है कि उसमें विचारों की अधिकता नहीं पैदा होती?

जब वह इंद्रिय-इच्छाओं के प्रति उत्साह को त्याग देता है और त्याग के माध्यम से उसमें उत्पन्न विचार एक-दूसरे से अधिक नहीं होते, तो विकास इस अर्थ में होता है कि उसमें विचारों की अधिकता नहीं होती। जब वह दुर्भावना को त्याग देता है... दुर्भावना-रहित होने से... जब वह कठोरता और सुस्ती को त्याग देता है... प्रकाश की धारणा के माध्यम से... जब वह उत्तेजना को त्याग देता है... गैर-विचलन के माध्यम से... जब वह अनिश्चितता को त्याग देता है... विचारों की परिभाषा के माध्यम से... जब वह अज्ञान को त्याग देता है... ज्ञान के माध्यम से... जब वह ऊब को त्याग देता है और प्रसन्नता के माध्यम से उसमें उत्पन्न विचार एक-दूसरे से अधिक नहीं होते, तो विकास इस अर्थ में होता है कि उसमें विचारों की अधिकता नहीं होती।

जब वह रुकावटों को छोड़ देता है और उसमें पैदा होने वाले विचार नहीं रहते

पहले ज्ञान से एक-दूसरे से आगे निकल जाते हैं, तो विकास इस मायने में होता है कि उसमें ज़्यादा विचार पैदा नहीं होते। जब वह दूसरे ज्ञान से लागू सोच और लगातार सोच को छोड़ देता है... जब वह खुशी छोड़ देता है... तीसरे ज्ञान से। जब वह खुशी छोड़ देता है और चौथे ज्ञान से उसमें पैदा होने वाले विचार एक-दूसरे से आगे नहीं निकलते, तो विकास इस मायने में होता है कि उसमें ज़्यादा विचार पैदा नहीं होते।

जब वह भौतिकता की धारणा, प्रतिरोध की धारणा और मतभेद की धारणा [32] को त्याग देता है और उसमें उत्पन्न विचार असीम स्थान से युक्त आधार की प्राप्ति के माध्यम से एक दूसरे से अधिक नहीं होते हैं, तो विकास उसमें उत्पन्न विचारों की गैर-अधिकता के अर्थ में होता है। जब वह असीम स्थान से युक्त आधार की धारणा को त्याग देता है ... असीम चेतना से युक्त आधार की प्राप्ति के माध्यम . .से। जब वह असीम चेतना से युक्त आधार की धारणा को त्याग देता है ... शून्यता से युक्त आधार की प्राप्ति के माध्यम से... जब वह शून्यता से युक्त आधार की धारणा को त्याग देता है और उसमें उत्पन्न विचार न तो धारणा और न ही गैर-धारणा से युक्त आधार की प्राप्ति के माध्यम से एक दूसरे से अधिक नहीं होते हैं, तो विकास उसमें उत्पन्न विचारों की गैर-अधिकता के अर्थ में होता है।

जब वह स्थायित्व की धारणा को त्याग देता है और उसके भीतर उत्पन्न विचार नश्वरता के चिंतन के माध्यम से एक दूसरे से अधिक नहीं होते, तब विकास उसके भीतर उत्पन्न विचारों की गैर-अधिकता के अर्थ में होता है। जब वह सुख की धारणा को त्याग देता है... दर्द के चिंतन के माध्यम से... जब वह स्वयं की धारणा को त्याग देता है... अन-आत्मा के चिंतन के माध्यम से... जब वह आनंद को त्याग देता है.... वैराग्य के चिंतन के माध्यम से... जब वह लोभ को त्याग देता है... (लोभ के) लुप्त होने के चिंतन के माध्यम से... जब वह उत्पन्न होने को त्याग देता है... समाप्ति के चिंतन के माध्यम से... जब वह लोभ को त्याग देता है... त्याग के चिंतन के माध्यम से... जब वह सघनता की धारणा को त्याग देता है... विनाश के चिंतन के माध्यम से... जब वह संग्रह को त्याग देता है... पतन के चिंतन के माध्यम से... जब वह शाश्वतता की धारणा को त्याग देता है... परिवर्तन के चिंतन के माध्यम से... जब वह संकेत को त्याग देता है... संकेतहीन के चिंतन के माध्यम से... (33) जब वह इच्छा को त्याग देता है। बिना इच्छा के चिंतन से... जब वह गलत मतलब निकालना छोड़ देता है... शून्यता के चिंतन से... जब वह किसी मूल को पकड़ने की वजह से गलत मतलब निकालना छोड़ देता है... विचारों की समझ से जो ऊंची समझ है। जब वह भ्रम की वजह से गलत मतलब निकालना छोड़ देता है... सही ज्ञान और देखने से... जब वह (बनावटों पर) भरोसे की वजह से गलत मतलब निकालना छोड़ देता है... खतरे के चिंतन से... जब वह छोड़ देता है

अचिंतन...चिंतन के चिंतन से... जब वह बंधन के कारण भ्रांति त्याग देता है और विमुख होने के चिंतन से उसमें उत्पन्न विचार एक-दूसरे से अधिक नहीं होते, तब उसमें उत्पन्न विचारों की अतिरिक्तता के अर्थ में विकास होता है।

जब वह गलत विचारों वाले दोषों को छोड़ देता है और उसमें पैदा हुए विचार स्ट्रीम-एंट्री पथ से एक-दूसरे से आगे नहीं बढ़ते, तो विकास इस अर्थ में होता है कि उसमें विचारों की अधिकता नहीं होती। जब वह बड़ी दोषों को छोड़ देता है... एक बार लौटने वाले पथ से... जब वह दूसरी दोषों को छोड़ देता है... न लौटने वाले पथ से... जब वह सभी दोषों को छोड़ देता है और उसमें पैदा हुए विचार अरहंत पथ से एक-दूसरे से आगे नहीं बढ़ते, तो विकास इस अर्थ में होता है कि उसमें विचारों की अधिकता नहीं होती।

विकास इसी तरह होता है, क्योंकि उसमें विचारों की अधिकता नहीं होती।

फैकल्टीज़ के सिंगल फंक्शन के मतलब में यह डेवलपमेंट कैसे है?

जब वह कामुक इच्छाओं के प्रति उत्साह को त्याग देता है और त्याग के माध्यम से पाँचों क्षमताएँ उसमें एक ही कार्य करती हैं, तो क्षमताओं के एकल कार्य के अर्थ में विकास होता है। जब वह दुर्भावना को त्याग देता है... [और इसी तरह शेष बाधाओं के साथ)। [34]

जब वह रुकावटों को छोड़ देता है और पहले झान के ज़रिए उसमें पाँचों एफ़ेकल्टीज़ का एक ही काम होता है, तो डेवलपमेंट एफ़ेकल्टीज़ के एक ही काम के मतलब में होता है। जब वह अप्लाइड थॉट और सस्टेन्ड थॉट को छोड़ देता है... (और इसी तरह बाकी झानों के साथ)।

जब वह मैटेरियलिटी की सोच, रेजिस्टेंस की सोच और वैरायटी की सोच को छोड़ देता है... (और इसी तरह बाकी इम्मैटेरियल अचीवमेंट्स के साथ भी)।

जब वह टिकाऊपन की सोच को छोड़ देता है। [और इसी तरह बाकी प्रिंसिपल इनसाइट्स के साथ भी]।

जब वह मिथ्या दृष्टि से विकारों के गुणांक को त्याग देता है... [और इसी प्रकार शेष मार्गों के साथ)... जब वह समस्त विकारों को त्याग देता है और उसमें उत्पन्न विचारों का अरहंत मार्ग के माध्यम से एकल कार्य होता है, तब विकास शक्तियों के एकल कार्य के अर्थ में होता है।

इस तरह से डेवलपमेंट, फैकल्टीज़ के सिंगल फंक्शन के अर्थ में होता है।

यह कैसे डेवलपमेंट है कि सही एनर्जी असरदार है?

जब वह कामुक इच्छाओं के लिए जोश छोड़ देता है और त्याग के ज़रिए उसमें एनर्जी असरदार होती है, तो विकास इस मायने में होता है कि सही एनर्जी असरदार होती है। जब... (और इसी तरह बाकी रुकावटों के साथ)।

जब वह रुकावटों को छोड़ देता है, तो उसमें पहली झाना के ज़रिए एनर्जी असरदार होती है... [और इसी तरह बाकी झाना के साथ होता है]।

जब वह भौतिक चीज़ों की सोच को छोड़ देता है... [और इसी तरह बाकी गैर-भौतिक चीज़ों की प्राप्ति भी होती है]।

जब वह हमेशा रहने की सोच को छोड़ देता है... (और इसी तरह बाकी प्रिंसिपल इनसाइट्स के साथ भी)।

जब वह मिथ्या दृष्टि से विकारों के गुणांक को त्याग देता है... (और इसी प्रकार शेष मार्गों के साथ भी)... जब वह समस्त विकारों को त्याग देता है और अरहंत मार्ग के माध्यम से उसमें ऊर्जा प्रभावी होती है, तो विकास इस अर्थ में होता है कि उपयुक्त ऊर्जा प्रभावी होती है।

विकास इसी तरह होता है, यानी सही एनर्जी असरदार होती है।

यह दोहराव के अर्थ में विकास कैसे है?

जब वह कामुक इच्छाओं के लिए जोश छोड़ देता है और त्याग को दोहराता है, तो विकास दोहराव के अर्थ में होता है। जब... [और इसी तरह बाकी रुकावटों के साथ)।

जब वह रुकावटों को छोड़ देता है... (और इसी तरह बाकी ज्ञानों के साथ भी)।

जब वह भौतिकता की धारणाओं को छोड़ देता है,... [और इसी तरह बाकी गैर-भौतिक उपलब्धियों के साथ भी]।

जब वह स्थायित्व की समझ को छोड़ देता है, तो ...इसी तरह आगे भी) बाकी प्रिंसिपल इनसाइट्स] (और

जब वह मिथ्या दृष्टि से कल्मष गुणांक को त्याग देता है... [और इसी प्रकार शेष मार्गों को भी]... जब वह समस्त कल्मषों को त्याग देता है और अरहंत मार्ग को दोहराता है, तब पुनरावृत्ति के अर्थ में विकास होता है।

दोहराव के अर्थ में विकास इसी तरह होता है।

ये चार तरह के डेवलपमेंट हैं।

*

[201 विचार]

136. जब वह भौतिकता देखता है तो वह विकसित होता है। जब वह भावना देखता है तो वह। [और इसी तरह §5 तक)... जब वह बुढ़ापा और मृत्यु देखता है तो वह विकसित होता है। 137.-173. जब वह दुख देखता है... (और इसी तरह §6-43 तक)। जब वह निब्बाण देखता है जो अंत के अर्थ के माध्यम से अमर में विलीन हो जाता है तो वह विकसित होता है।

*

174. जो भी विचार बनते हैं, उनका एक ही काम होता है (स्वाद)। ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'कान इस तरह लगाया जाता है।'

"इन विचारों को विकसित किया जाना है"। समझ का मतलब है समझने का काम, यानी सुनी हुई (सीखी हुई) बातों का ज्ञान।

चौथे पाठ खंड का अंत



[धारा v]

175. यह कैसे है कि 'इन विचारों को साकार किया जाना है' इस तरह कान लगाने की समझ, सुनी हुई (सीखी हुई) बातों का ज्ञान है?

[दस प्रस्ताव]

176. एक विचार साकार किया जाना चाहिए: अडिग हृदय-मुक्ति (D iii 273).
दो विचार साकार किए जाने चाहिए: पहचान और मुक्ति (Diii 274).
तीन आइडिया जिन्हें महसूस करना है: तीन पहचान (D iii 275)। चार आइडिया जिन्हें महसूस करना है: तपस्या के चार फल (Diii 277)। पाँच आइडिया जिन्हें महसूस करना है: सच्चे आइडिया के पाँच समूह (यानी, गुण, एकाग्रता, समझ, मुक्ति, और ज्ञान और मुक्ति देखना) (D iii 279)।
छह विचारों को साकार किया जाना चाहिए: (35) प्रत्यक्ष ज्ञान के छह प्रकार (Diii 281).
सात विचार जिन्हें साकार करना है: जिसकी नासूर समाप्त हो गए हैं उसकी सात शक्तियां (Dii 283)।
आठ विचार जिन्हें साकार किया जाना है: आठ मुक्ति (D iii 288, cf. महानि-दान, Dii 70-1).
नौ आइडिया जिन्हें पूरा करना है: नौ लगातार समाप्ति (Diii 290). दस आइडिया जिन्हें पूरा करना है: माहिर (नॉन-ट्रेनर) के दस आइडिया (D iii 292).

[सभी]

177. भिक्षुओं, सब कुछ महसूस करना है। और वह सब क्या है जिसे महसूस करना है? आँख को महसूस करना है, दिखने वाली चीज़ों को महसूस करना है, आँखों की चेतना को महसूस करना है, आँखों का संपर्क महसूस करना है, आँखों के संपर्क से होने वाली कोई भी भावना, चाहे वह अच्छी हो या बुरी या न बुरी, न अच्छी, उसे भी महसूस करना है। कान को महसूस करना है, आवाज़ों . . . को महसूस करना है, नाक को महसूस करना है, गंधों को महसूस करना है, जीभ को महसूस करना है, स्वादों को महसूस करना है,... शरीर को महसूस करना है, ठोस चीज़ों को महसूस करना है,... मन को महसूस करना है, विचारों को महसूस करना है, मन की चेतना को महसूस करना है, मन का संपर्क महसूस करना है, कोई भी

मन के संपर्क में आने पर जो भावना पैदा होती है, चाहे वह सुखद हो या दर्दनाक या न-दर्दनाक-न-सुखद, उसे भी महसूस करना

[201 विचार]

178. जब वह भौतिकता देखता है तो उसे एहसास होता है। जब वह भावना देखता है... [और इसी तरह §5 तक)... जब वह बुढ़ापा और मृत्यु देखता है तो उसे एहसास होता है।
179.-215. जब वह दुख देखता है... (और इसी तरह §§6-43 तक)। जब वह निब्बाण देखता है जो अपने अंत के अर्थ के माध्यम से अमर में विलीन हो जाता है तो उसे एहसास होता है। :

*

216. जो भी विचार सच होते हैं, वे सच होते हैं। ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाता है और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाता है। इसलिए कहा गया: 'कार को इस तरह लगाया जाता है: इन विचारों को सच किया जाना है। समझ का मतलब है समझने का काम, यानी सुनी हुई (सीखी हुई) बातों का ज्ञान।'

* *
*

[धारा vi-ix.]

217. यह कैसे है कि कान लगाकर समझने से: ये विचार कमज़ोर करते हैं, ये विचार ठहराव देते हैं, ये विचार अलग करते हैं, ये विचार गहराई तक पहुँचते हैं, यह उस ज्ञान का ज्ञान है जो सुनी हुई (सीखी हुई) चीज़ में है?

218. जब पहली झान पाने वाले के पास कामुक इच्छा के साथ बोध और ध्यान आते हैं, तो वह कमी का विचार होता है। जब उस [झान] के अनुसार ध्यान स्थिर हो जाता है, तो वह ठहराव का विचार होता है। जब बिना सोचे-समझे बोध और ध्यान आते हैं, तो वह विशिष्टता का विचार होता है। जब लोभ के मिटने से जुड़े वैराग्य [36] के साथ बोध और ध्यान आते हैं, तो वह पैठ का विचार होता है।

जब दूसरे झान को पाने वाले के पास सोच और ध्यान के साथ-साथ विचार आते हैं, तो वह कमी वाला विचार होता है। जब उस [झान] के हिसाब से ध्यान स्थिर हो जाता है, तो वह ठहराव वाला विचार होता है। जब समझ और ध्यान के साथ संतुलन और [शारीरिक] खुशी आती है, तो वह खासियत वाला विचार होता है। जब समझ और ध्यान के साथ-साथ समझ और ध्यान आते हैं, तो वह खासियत वाला विचार होता है।

वैराग्य से और लालच को दूर करने के लिए उससे मिलने जाओ, यह एक ऐसा विचार है जो पैठ में शामिल है।

जब तीसरे झान को पाने वाले के पास खुशी और (शारीरिक) सुख के साथ समझ और ध्यान आता है, तो यह कमी का विचार है। जब उस [झान] के हिसाब से ध्यान स्थिर हो जाता है, तो यह ठहराव का विचार है। जब न दर्द और न सुख के साथ समझ और ध्यान आता है, तो यह अंतर का विचार है। जब लालच को खत्म करने के लिए वैराग्य और ध्यान के साथ समझ और ध्यान आता है, तो यह गहराई का विचार है।

जब चौथे ज़ाना को पाने वाले के पास समता और [शारीरिक] सुख के साथ समझ और ध्यान आते हैं, तो यह कमी का विचार है। जब उस [ज़ाना] के हिसाब से ध्यान स्थिर हो जाता है, तो यह ठहराव का विचार है। जब असीम जगह के आधार के साथ समझ और ध्यान आते हैं, तो यह अंतर का विचार है। जब लालच को खत्म करने के लिए वैराग्य और ध्यान के साथ समझ और ध्यान आते हैं, तो यह पैठ का विचार है।

जब भौतिकता के साथ समझ और ध्यान, असीम जगह वाले आधार को पाने वाले के पास जाते हैं, तो यह कमी का विचार होता है। जब उस [पाने] के हिसाब से ध्यान स्थिर हो जाता है, तो यह ठहराव का विचार होता है। जब असीम चेतना वाले आधार के साथ समझ और ध्यान, उसके पास जाते हैं, तो यह अंतर का विचार होता है। जब वैराग्य के साथ और लालच के खत्म होने से जुड़े समझ और ध्यान, उसके पास जाते हैं, तो यह पैठ का विचार होता है।

जब समझ और ध्यान, असीम जगह के बेस के साथ, असीम चेतना के बेस को पाने वाले के पास आते हैं, तो यह कमी का आइडिया है। जब उस (पाने) के हिसाब से माइंडफुलनेस स्थिर हो जाती है, तो यह ठहराव का आइडिया है। जब समझ और ध्यान, शून्यता के बेस के साथ उसके पास आते हैं, तो यह खासियत का आइडिया है। जब समझ और ध्यान, वैराग्य के साथ और लालच के खत्म होने से जुड़े हुए उसके पास आते हैं, तो यह पैठ का आइडिया है।

जब असीम चेतना के आधार के साथ समझ और ध्यान, शून्यता के आधार को पाने वाले के पास आते हैं, तो यह कमी का विचार होता है। जब उस [प्राप्ति] के अनुरूप ध्यान स्थिर हो जाता है, तो यह ठहराव का विचार होता है। जब न-समझ-न-न-समझ वाले आधार के साथ समझ और ध्यान, उसके पास आते हैं,

यह एक ऐसा विचार है जिसमें अंतर है। जब समझ और ध्यान, वैराग्य के साथ और लालच के खत्म होने से जुड़े होते हैं, तो यह एक ऐसा विचार है जिसमें गहराई है।

*

219. [37] ज्ञान का अर्थ है जाना जाना और समझ का अर्थ है समझना। इसलिए कहा गया: 'कान इस प्रकार लगाया जाता है: ये विचार ह्रास के भाग होते हैं, ये विचार ठहराव के भाग होते हैं, ये विचार विशिष्टता के भाग होते हैं, ये विचार प्रवेश के भाग होते हैं। समझ का कार्य समझने के रूप में है जो सुनी (सीखी) गई बातों का ज्ञान है।

* * *

[धारा x-xii.]

220. यह कैसे है कि कान लगाकर यह समझना कि सभी रचनाएँ अस्थायी हैं, सभी रचनाएँ दर्दनाक हैं, सभी विचार स्वयं नहीं हैं, सुनी हुई (सीखी हुई) बातों का ज्ञान है?

221. कान इस तरह इस्तेमाल होता है: भौतिकता विनाश के अर्थ में अस्थायी है, डर के अर्थ में दर्दनाक है, 26 कोई मूल न होने के अर्थ में स्वयं नहीं है। सुनी (सीखी) गई बातों में क्या है, इसका ज्ञान ही उसे समझने का काम है। कान इस तरह इस्तेमाल होता है: महसूस करना... [और इसी तरह §5 में लिस्ट किए गए बाकी 201 आइडियाज़ के साथ)... कान इस तरह इस्तेमाल होता है: बुढ़ापा और मौत विनाश के अर्थ में अस्थायी है, डर के अर्थ में दर्दनाक है, 26 कोई मूल न होने के अर्थ में स्वयं नहीं है। सुनी (सीखी) गई बातों में क्या है, इसका ज्ञान ही उसे समझने का काम है।

222. इसलिए कहा गया: 'कान का इस्तेमाल इस तरह किया जाता है: सभी रचनाएँ कुछ समय के लिए होती हैं, सभी रचनाएँ दर्दनाक होती हैं, सभी विचार खुद से अलग होते हैं। समझना, समझने का काम है जो सुनी हुई (सीखी हुई) चीज़ों का ज्ञान है।'

* * *

[धाराएँ xiii-xvi.]

223. कान को इस प्रकार लगाने की समझ कैसे होती है: यही दुख की महान वास्तविकता है, यही दुख की उत्पत्ति की महान वास्तविकता है

दुख, यही दुख निरोध की महान वास्तविकता है, यही दुख निरोध के मार्ग की महान वास्तविकता है, क्या सुने (सीखे) हुए में क्या है, इसका ज्ञान है?

224. तो, दुख की असली सच्चाई क्या है? जन्म दुख है, बुढ़ापा दुख है, मौत दुख है, दुख और विलाप, दर्द, शोक और निराशा दुख हैं, अपनों का साथ दुख है, अपनों से बिछड़ना दुख है, जो चाहिए वो न मिलना दुख है, शॉर्ट में, आसक्ति के पांच समूह (ऑब्जेक्ट के तौर पर) दुख हैं।2

225. तो, जन्म क्या है? अलग-अलग क्रम में जीवों का जन्म, उनका जन्म, गर्भ में आना, बच्चे पैदा करना, चीज़ों का दिखना, (चेतना के लिए) आधार मिलना, यही जन्म कहलाता है (S ii 3)।

226. तो, एजिंग क्या है? जीवों के अलग-अलग क्रम में जीवों का एजिंग, उनका बुढ़ापा, टूटे हुए दांतों की हालत, सफेद बाल और झुर्रियां, उनकी ज़िंदगी का कम होना और कमज़ोर होती ताकत, इसे एजिंग कहते हैं (S ii 2)।

227. [38] अतः मृत्यु क्या है? प्राणियों के विभिन्न क्रमों में प्राणियों का जाना, उनका विलीन होना, विखंडन, लुप्त होना, मरना, अपना समय पूरा करना, समुच्चयों का विखंडन, शव का अधिष्ठापन, जीवन क्षमता का व्यवधान, यही मृत्यु कहलाता है (cf. Sii 3)।

228. तो दुख क्या है? दुख, शोक, दुख, अंदर का दुख, अंदर की उदासी, दिल का खा जाना, दुख, दुख का तीर, जिसने रिश्तेदारों को खो दिया हो या धन को खो दिया हो या सेहत को खो दिया हो या नेक कामों को खो दिया हो या नज़रिए को खो दिया हो, या जो किसी दर्दनाक विचार या दूसरी चीज़ से प्रभावित हो, उसे दुख कहते हैं (cf M iii 249).28

229. तो, विलाप क्या है? जिस व्यक्ति ने अपने रिश्तेदारों को खो दिया हो या धन-दौलत खो दी हो या सेहत खो दी हो या नेक कामों को खो दिया हो या नज़रिया खो दिया हो, या जो किसी दर्दनाक विचार या दूसरी चीज़ से प्रभावित हो, उसका विलाप और दुख, रोना-धोना, बड़बड़ाना, बड़बड़ाना, चीखना-चिल्लाना, चिल्लाना, चिल्लाना, या जो किसी दर्दनाक विचार या दूसरी चीज़ से प्रभावित हो, उसे विलाप कहते हैं (cf. M iii 249)।

230. इसमें दर्द क्या है? शारीरिक तकलीफ़, शारीरिक दर्द, शरीर के संपर्क से जो असहज और दर्दनाक महसूस होता है, शरीर के संपर्क से पैदा होने वाला असहज दर्द-एहसास, उसे दर्द कहते हैं। (M iii 250)

231. यहाँ, दुःख क्या है? मानसिक बेचैनी, मानसिक दर्द, जो मन के संपर्क से पैदा हुआ असहज और दर्दनाक महसूस होता है, मन के संपर्क से पैदा हुआ असहज दर्दनाक एहसास, उसे दुःख कहते हैं। (M iii 250)

232. तो, निराशा क्या है? परेशानी और निराशा, तकलीफ़ और हताशा, बेचैनी और निराशा, उस व्यक्ति की जिसे रिश्तेदारों का नुकसान हुआ हो या धन का नुकसान हुआ हो या सेहत का नुकसान हुआ हो या पुण्य का नुकसान हुआ हो 29 या नज़र का नुकसान हुआ हो, या जो किसी पैमटिल विचार या किसी और चीज़ से प्रभावित हो, उसे निराशा कहते हैं (cf. Miii 2.50)।

233. इसमें अप्रिय का संग दुख कहलाता है? यहाँ [39]
जो दृश्य वस्तुएँ, ध्वनि, गंध, सुगंध, स्पर्शनीय वस्तुएँ
अवांछित, अनचाही, अप्रिय हैं अथवा जो अपना अहित, नाश,
असुविधा चाहते हैं, जिससे बन्धन से छुटकारा न मिले, उन
[व्यक्तियों] के साथ संयोग, संयोजन, मिलना, मिश्रण
होना अप्रिय का संग दुख कहलाता है।
234. यहाँ, अपने प्रिय से अलग होना दुख के रूप में क्या है? यहाँ उन दिखने
वाली चीज़ों, आवाज़ों, गंधों, खुशबूओं, दिखने वाली चीज़ों के साथ,
जिनकी चाहत है, जिनकी चाहत है, जिनका स्वागत है, या उन [लोगों] के साथ जो
किसी का भला, किसी की भलाई, किसी का आराम, किसी के बंधन से छुटकारा
चाहते हैं, या माँ या पिता या भाई या बहन या दोस्तों या साथियों या
रिश्तेदारों या रिश्तेदारों के साथ, जो किसी प्रिय से अलग होना दुख के
रूप में कहलाता है, का मेल न होना, मेल न होना, न मिलना ...
235. इसमें, जो कुछ भी मनुष्य चाहता है उसे दुख के रूप में प्राप्त नहीं करना
क्या है? जन्म लेने वाले प्राणियों की यह इच्छा होती है: काश हम जन्म
के अधीन न होते और जन्म हमें न मिलता। लेकिन यह केवल इच्छा करने से प्राप्त
नहीं होता। यही वह है जो किसी की इच्छा को दुख के रूप में प्राप्त नहीं
करना है। वृद्धावस्था के अधीन प्राणियों के लिए आता है... बीमारी के अधीन प्राणियों
के लिए... मृत्यु के अधीन प्राणियों के लिए... दुःख और विलाप, पीड़ा,
शोक और निराशा के अधीन प्राणियों के लिए यह इच्छा होती है: काश हम दुःख
और विलाप, पीड़ा, शोक और निराशा के अधीन न होते और दुःख और विलाप, पीड़ा,
शोक और निराशा हमें न मिलती। लेकिन यह केवल इच्छा करने से प्राप्त
नहीं होता। यही वह है जो किसी की इच्छा को दुख के रूप में प्राप्त
नहीं करना है (M iii 250)।
236. यहाँ, दुख के तौर पर चिपके रहने के पाँच समूह (ऑब्जेक्ट के तौर पर) शॉर्ट
में क्या हैं? वे हैं चिपके रहने का मैटेरियलिटी समूह (ऑब्जेक्ट के तौर पर),
चिपके रहने का फीलिंग समूह (ऑब्जेक्ट के तौर पर), चिपके रहने का परसेप्शन
समूह (ऑब्जेक्ट के तौर पर), चिपके रहने का फॉर्मेशन समूह (ऑब्जेक्ट के तौर
पर), और चिपके रहने का कॉन्शसनेस समूह (ऑब्जेक्ट के तौर पर)। इन्हें शॉर्ट में
दुख के तौर पर चिपके रहने के पाँच समूह (ऑब्जेक्ट के तौर पर) कहा जाता
है। इसे दुख की नोबल एक्चुअलिटी (M iii 250) कहा जाता है।
237. दुख की शुरुआत की असली वजह क्या है? यह तृष्णा है, जो और ज़्यादा
होने को पैदा करती है, जिसके साथ खुशी और लालच होता है, इसमें
और उसमें खुशी मिलती है, यानी इंद्रियों की इच्छाओं की तृष्णा,
होने की तृष्णा, न होने की तृष्णा (M iii 250)।
238. [40] लेकिन वह लालसा कहाँ से पैदा होती है, कहाँ रहती है?
लालसा वहाँ पैदा होती है जहाँ दुनिया में कोई भी चीज़ पसंद करने
लायक और मनभावन होती है, और वहीं रहती है। और दुनिया में क्या
पसंद करने लायक और मनभावन है? दुनिया में आँख पसंद करने लायक और
जीभ शरीर मन... दृश्य वहीं रहती है। . . . मनभावन है: वहीं यह लालसा पैदा होती है,
कान नाक वस्तुएँ... ध्वनियाँ... गंध... स्वाद... मूर्त वस्तुएँ... विचार...

नेत्र चेतना... कान चेतना... नाक चेतना... जीभ चेतना... शरीर चेतना
स्पर्श कान का संपर्क नाक का संपर्क मन ...संपर्क नेत्र-संपर्क-जनित भावना...
चेतना ... नेत्र-जीभ संपर्क शरीर का संपर्क मन ...कान-संपर्क-जनित ...भावना
...नाक-संपर्क-सींग की ... भावना जीभ-संपर्क-जनित भावना..: शरीर-संपर्क-जनित भावना...
...मन-संपर्क-जनित भावना... दृश्य वस्तुओं की धारणा... ध्वनियों की धारणा... गंध की धारणा... स्वाद की धारणा मूर्त वस्तुओं की धारणा विचारों की धारणा... दृश्य वस्तुओं के बारे में इच्छा... ध्वनियों के बारे में इच्छा... गंधों के बारे में इच्छा स्वादों के बारे में इच्छा... मूर्त वस्तुओं के बारे में इच्छा विचारों के बारे में इच्छा... दृश्य वस्तुओं के लिए लालसा... ध्वनियों के लिए लालसा गंधों के लिए लालसा स्वादों के ... लिए लालसा मूर्त वस्तुओं के लिए लालसा विचारों के लिए लालसा दृश्य ...वस्तुओं के बारे में अनुप्रयुक्त विचार ध्वनियों के बारे में अनुप्रयुक्त विचार... गंधों के बारे में अनुप्रयुक्त विचार स्वादों के ... बारे में अनुप्रयुक्त विचार... मूर्त वस्तुओं के बारे में ... अनुप्रयुक्त विचार विचारों के बारे में अनुप्रयुक्त विचार...
... दृश्यमान वस्तुओं के बारे में निरंतर विचार, ध्वनियों के बारे में ... निरंतर विचार... गंध के बारे में निरंतर विचार, स्वाद के बारे में ... निरंतर विचार, मूर्त वस्तुओं के बारे में निरंतर विचार, विचारों के बारे में निरंतर विचार दुनिया में पसंद करने योग्य और सुखद है: इसमें यह लालसा पैदा होती है, इसमें यह निवास करता है।

इसे दुख की शुरुआत की महान सच्चाई कहा जाता है।

239. इसमें दुख के खत्म होने की महान सच्चाई क्या है? यह उसी लालसा को लगातार जारी रखना और खत्म करना, नकारना, छोड़ देना, जाने देना और नकारना है (M iii 251)।

240. लेकिन वह चाहत कहाँ छोड़ी जाती है, कहाँ खत्म होती है? दुनिया में जहाँ भी कोई चीज़ पसंद करने लायक और अच्छी लगती है, वहाँ चाहत छोड़ी जाती है, और वहीं वह खत्म हो जाती है। और दुनिया में क्या पसंद करने लायक और अच्छा लगता है? आँख दुनिया में पसंद करने लायक और अच्छा लगता है:... [और इसी तरह §237 में] ... दुनिया में विचारों के बारे में लगातार सोचना अच्छा और स्वीकार्य है: वहाँ यह लालसा छोड़ दी जाती है, वहाँ यह खत्म हो जाती है।

इसे दुख के खत्म होने की महान सच्चाई कहा जाता है।

241. दुख निरोध के मार्ग की महान वास्तविकता क्या है? यह महान अष्टांगिक मार्ग है, अर्थात्: सम्यक दृष्टि, सम्यक विचार, सम्यक वाणी, [41] सम्यक कर्म, सम्यक जीवन, सम्यक प्रयास, सम्यक स्मृति, सम्यक एकाग्रता।

242. यहाँ, सही नज़रिया क्या है? यह दुख का ज्ञान है, दुख की शुरुआत का ज्ञान है, दुख के खत्म होने का ज्ञान है, दुख के खत्म होने के रास्ते का ज्ञान है। इसे ही सही नज़रिया कहते हैं।

243. यहाँ, सही विचार क्या है? यह त्याग का विचार है, बुराई न करने का विचार है, क्रूरता न करने का विचार है। इसे ही सही विचार कहते हैं।

244. तो, सही बोलना क्या है? यह है झूठी बातों से बचना, बुरी बातों से बचना, कठोर बातों से बचना, गपशप से बचना। इसे ही सही बोलना कहते हैं।

245. तो, सही काम क्या है? यह है जीवों को मारने से बचना, जो नहीं दिया गया है उसे लेने से बचना, यौन दुराचार से बचना। इसे ही सही काम कहते हैं।

246. इसमें सही जीवन क्या है? यहाँ एक अच्छा शिष्य, गलत जीवन को छोड़कर, सही जीवन जीकर अपनी आजीविका चलाता है। इसे ही सही जीवन जीना कहते हैं।

247. इसमें, सही कोशिश क्या है? यहाँ एक भिक्षु, न उठने वाले बुरे और बेकार विचारों को न उठने देने के लिए जोश जगाता है, और वह कोशिश करता है, ताकत लगाता है, अपने दिमाग पर ज़ोर डालता है और संघर्ष करता है। वह पैदा हुए बुरे और बेकार विचारों को छोड़ने के लिए जोश जगाता है, और वह कोशिश करता है,... वह न उठने वाले फायदेमंद विचारों को बनाए रखने, न गायब होने, मज़बूत करने, बढ़ाने, विकास और परफ़ेक्शन के लिए जोश जगाता है, और वह कोशिश करता है, ताकत लगाता है, अपने दिमाग पर ज़ोर डालता है और संघर्ष करता है। इसे ही सही कोशिश कहते हैं।

248. इसमें, सही ध्यान क्या है? यहाँ एक भिक्षु शरीर को शरीर की तरह देखते हुए, जोशीला, पूरी तरह जागरूक और सचेत रहता है, दुनिया के लिए लालच और दुख को दूर करके। वह भावनाओं को भावनाओं की तरह देखते हुए, जोशीला रहता है,... वह ज्ञान पर सोचते हुए रहता है... वह विचारों को विचारों की तरह देखते हुए, जोशीला, पूरी तरह जागरूक और सचेत रहता है, दुनिया के लिए लालच और दुख को दूर करके। इसे ही सही ध्यान कहते हैं।

249. यहाँ, सही एकाग्रता क्या है? यहाँ कामुक इच्छाओं से पूरी तरह अलग होकर, बेकार के विचारों से अलग होकर एक भिक्षु पहले ज्ञान में प्रवेश करता है और उसमें रहता है, जिसके साथ लगाए गए और बनाए रखे गए विचार, खुशी और एकांत से पैदा होने वाले (शारीरिक) सुख के साथ होते हैं। लगाए गए और निरंतर विचार के शांत होने पर वह दूसरे झाना में प्रवेश करता है और उसमें निवास करता है, जिसमें [42] आंतरिक आत्मविश्वास और बिना लगाए विचार के, बिना निरंतर विचार के, एकाग्रता से उत्पन्न खुशी और (शारीरिक) आनंद के साथ ज्ञान की एकता होती है। खुशी के साथ-साथ लुप्त होने पर वह समता में रहता है, और सावधान और पूरी तरह से जागरूक, शरीर के साथ आनंद का अनुभव करते हुए, वह तीसरे झाना में प्रवेश करता है और उसमें निवास करता है, जिसके कारण महानुभाव घोषणा करते हैं: 'वह' आनंद में रहता है जिसके पास समता है और जो सावधान है।' [शारीरिक] सुख और दर्द को त्यागने और [मानसिक] खुशी और शोक के पहले से गायब होने के साथ वह चौथे झाना में प्रवेश करता है और उसमें निवास करता है न दुख न सुख और समभाव के कारण मन की पवित्रता। इसे ही सही एकाग्रता कहते हैं।

इसे ही दुख से छुटकारा पाने के रास्ते की महान सच्चाई कहा जाता है।

250. ज्ञान का मतलब है कि कुछ जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: "कान का इस्तेमाल इस तरह किया जाता है: यह दुख की महान सच्चाई है, यह दुख की शुरुआत की महान सच्चाई है, यह दुख के खत्म होने की महान सच्चाई है, यह दुख के खत्म होने के रास्ते की महान सच्चाई है। समझ का मतलब है समझने का काम, यानी सुनी हुई (सीखी हुई) बातों का ज्ञान।'



[अध्याय II.-सदाचार]

251. यह कैसे है कि सुनने (सीखने) के बाद संयम की समझ, सद्गुण का ज्ञान है?

252. पाँच प्रकार के पुण्य : सीमित शुद्धि वाला पुण्य, असीमित शुद्धि वाला पुण्य, पूर्ण शुद्धि वाला पुण्य, अप्रमाणित शुद्धि वाला पुण्य, शांत शुद्धि वाला पुण्य।

253. इसमें, सीमित शुद्धिकरण में शामिल गुण क्या है? उन लोगों के लिए ट्रेनिंग के नियम जो पूरी तरह से ऑर्डर में शामिल नहीं हैं: ऐसा गुण सीमित शुद्धिकरण में शामिल है।

254. अनलिमिटेड शुद्धिकरण में कौन सा गुण है? ऑर्डर में पूरी तरह से शामिल लोगों के लिए ट्रेनिंग के नियम: ऐसा गुण अनलिमिटेड शुद्धिकरण में है।

255. पूरी तरह से शुद्ध होने में कौन सा गुण है? उन उदार आम लोगों का गुण जो फायदेमंद विचारों के लिए समर्पित हैं, जो शरीर और जीवन की परवाह किए बिना, जीवन से लगाव छोड़कर, दीक्षा (ट्रेनरशिप) में खत्म होने वाले [कोर्स] को पूरा कर रहे हैं: ऐसा गुण पूरी तरह से शुद्ध होने में है।

256. बिना किसी भ्रम के शुद्धि से युक्त पुण्य क्या है? सात प्रकार के दीक्षा (प्रशिक्षक) में से, ऐसा पुण्य बिना किसी भ्रम के शुद्धि से युक्त है। [43]

257. शांत करने वाली शुद्धि में कौन सा पुण्य है? सिद्ध के शिष्यों का पुण्य, जिनके सारे घाव भर गए हैं, अघोषित ज्ञानी (पच्चेक बुद्ध), सिद्ध और पूरी तरह ज्ञानी सिद्ध लोगों का पुण्य: ऐसा पुण्य शांत करने वाली शुद्धि में है।

258. एक गुण ऐसा होता है जिसकी एक सीमा होती है और एक गुण ऐसा होता है जिसकी कोई सीमा नहीं होती। तो फिर वह कौन सा गुण है जिसकी एक सीमा होती है? एक गुण ऐसा भी होता है जिसकी सीमा ही लाभ होती है,

एक ऐसा गुण है जिसकी सीमा प्रसिद्धि है, एक ऐसा गुण है जिसकी सीमा सगे-संबंधी हैं, एक ऐसा गुण है जिसकी सीमा अंग हैं, एक ऐसा गुण है जिसकी सीमा जीवन है।

वह कौन सा गुण है जिसकी सीमा फ़ायदा है? यहाँ कोई फ़ायदा को कारण मानकर, फ़ायदा को शर्त मानकर, फ़ायदा को वजह मानकर, किसी ट्रेनिंग के नियम को तोड़ता है: ऐसे गुण की सीमा फ़ायदा ही है।

वह कौन सा गुण है जिसकी सीमा प्रसिद्धि है? यहाँ कोई ऐसा व्यक्ति है जिसके कारण प्रसिद्धि है, ऐसे गुण की सीमा प्रसिद्धि है।

ऐसा कौन सा गुण है जिसकी सीमा रिश्तेदार हैं? यहाँ कोई जिसके कारण रिश्तेदार हैं, ऐसे गुण की सीमा रिश्तेदार ही हैं।

वह कौन सा गुण है जिसकी सीमा अंग हैं? यहाँ जिसके अंग कारण हैं, ऐसे गुण की सीमा अंग ही हैं।

वह कौन सा गुण है जिसकी सीमा जीवन है? यहाँ कोई व्यक्ति जिसके पास कारण के रूप में जीवन है, शर्त के रूप में जीवन है, कारण के रूप में जीवन है, वह किसी प्रशिक्षण के नियम का उल्लंघन करता है: ऐसे गुण की सीमा जीवन है।

इस तरह के गुण फटे हुए, फटे हुए, दागदार, धब्बेदार होते हैं, वे मुक्ति देने वाले नहीं होते, समझदार लोग उनकी तारीफ़ नहीं करते; उन्हें गलत समझा जाता है, वे ध्यान लगाने में मदद नहीं करते, पछतावा न करने का आधार नहीं हैं, खुशी का आधार नहीं हैं, सुख का आधार नहीं हैं, शांति का आधार नहीं हैं, आनंद का आधार नहीं हैं, ध्यान लगाने का आधार नहीं हैं, सही ज्ञान और देखने का आधार नहीं हैं; वे पूरी तरह से वैराग्य, लालच खत्म होने, समाप्ति, शांति, सीधे ज्ञान, ज्ञान, निर्वाण की ओर नहीं ले जाते: ऐसे गुणों की एक सीमा होती है। 33

259. ऐसा कौन सा गुण है जिसकी कोई सीमा नहीं है? एक ऐसा गुण [44] है जिसकी सीमा लाभ नहीं है, एक ऐसा गुण है जिसकी सीमा प्रसिद्धि नहीं है, एक ऐसा गुण है जिसकी सीमा सगे-संबंधी नहीं हैं, एक ऐसा गुण है जिसकी सीमा अंग नहीं हैं, एक ऐसा गुण है जिसकी सीमा जीवन नहीं है।

ऐसा कौन सा गुण है जिसकी सीमा फ़ायदा न हो? यहाँ कोई फ़ायदा होने की वजह से, फ़ायदा होने की शर्त होने पर, फ़ायदा होने की वजह से, किसी ट्रेनिंग के नियम को तोड़ने का ख्याल भी नहीं लाता, तो फिर वह असल में उसे कैसे तोड़ेगा? ऐसे गुण की सीमा फ़ायदा नहीं होती।

ऐसा कौन सा गुण है जिसकी सीमा फेम नहीं है? यहाँ कोई नहीं है, जिसका कारण फेम है,... ऐसे गुण की सीमा फेम नहीं है।

ऐसा कौन सा गुण है जिसकी सीमा रिश्तेदार नहीं हैं? यहाँ कुछ-ऐसे हैं, जिनके कारण रिश्तेदार ही उनकी . . . गुण हैं जिनके रिश्तेदार नहीं सीमा हैं।

वह कौन सा गुण है जिसकी सीमा हाथ-पैर नहीं हैं? यहाँ कोई नहीं करता, जिसके कारण हाथ-पैर हैं,... ऐसे गुण की सीमा हाथ-पैर नहीं हैं।

वह कौन सा गुण है जिसकी सीमा जीवन नहीं है? यहाँ कोई, जीवन को कारण मानते हुए, जीवन को शर्त मानते हुए, जीवन को कारण मानते हुए, जीवन को कारण मानते हुए, किसी ट्रेनिंग के नियम को तोड़ने का विचार भी नहीं करता, तो फिर वह असल में उसे कैसे तोड़ेगा? ऐसे गुण की सीमा जीवन नहीं है।

इस प्रकार के गुण अखंड, अक्षत, दागरहित, अविरल होते हैं, वे मुक्तिदायक होते हैं, बुद्धिमानों द्वारा प्रशंसित होते हैं, भ्रांतिरहित होते हैं, एकाग्रता के लिए अनुकूल होते हैं, पश्चाताप न करने का आधार होते हैं, प्रसन्नता का आधार होते हैं, खुशी का आधार होते हैं, शांति का आधार होते हैं, आनंद का आधार होते हैं, एकाग्रता का आधार होते हैं, सही ज्ञान और दर्शन का आधार होते हैं, वे पूर्ण वैराग्य, लोभ के क्षीण होने, समाप्ति, शांति, प्रत्यक्ष ज्ञान, आत्मज्ञान, निर्वाण की ओर ले जाते हैं: ऐसे गुण की कोई सीमा नहीं है।

260. अच्छाई क्या है? अच्छाई कितने तरह की होती है? अच्छाई किससे आती है? अच्छाई कितने विचारों से मिलती है?

261. पुण्य क्या है? पुण्य इच्छा के रूप में है, पुण्य साथ में चेतना के रूप में है, पुण्य संयम के रूप में है, पुण्य अहिंसा के रूप में है।

262. गुण कितने तरह के होते हैं? गुण (आदत) तीन तरह के होते हैं; फ़ायदेमंद गुण (आदत), नुकसानदेह गुण (आदत), अनिश्चित गुण (आदत)।

263. गुण किससे उत्पन्न होता है? लाभदायक गुण (आदत) लाभदायक-ज्ञान से उत्पन्न होता है, [45] लाभहीन गुण (आदत) लाभहीन ज्ञान से उत्पन्न होता है, अनिश्चित गुण (आदत) अनिश्चित ज्ञान से उत्पन्न होता है।

264. सद्गुण कितने विचारों के साथ जुड़ता है?

गुण संयम के साथ जुड़ता है, गुण अहिंसा के साथ जुड़ता है, गुण ऐसे विचार [जैसे संयम या अहिंसा) को लेकर उत्पन्न इच्छाशक्ति के साथ जुड़ता है।

जीवों को मारने के मामले में पुण्य का मतलब है संयम, पुण्य का मतलब है उल्लंघन न करना। जो नहीं दिया गया है उसे लेने के मामले में... यौन दुराचार... झूठी बातें। बुरी बातें। कठोर बातें... गपशप:.. लालच... बुरी नीयत... गलत नज़रिए के मामले में पुण्य का मतलब है संयम, पुण्य का मतलब है उल्लंघन न करना।

इंद्रिय-इच्छाओं के प्रति उत्साह के मामले में त्याग के माध्यम से पुण्य उसके संयम के अर्थ में है, पुण्य उसके गैर-उल्लंघन के अर्थ में है। दुर्भावना के मामले में गैर-दुर्भावना के माध्यम से... कठोरता और सुस्ती के मामले में प्रकाश की धारणा के माध्यम से... उत्तेजना के मामले में गैर-विचलित होने के माध्यम से... अनिश्चितता के मामले में विचारों की जांच के माध्यम से... अज्ञान के मामले में क्रिया-ज्ञान के माध्यम से... ऊब के मामले में प्रसन्नता के माध्यम से, पुण्य उसके संयम के अर्थ में है, पुण्य उसके गैर-उल्लंघन के अर्थ में है।

रुकावटों के मामले में पहले झान से अच्छाई उनके काबू में रहने के मतलब में है, अच्छाई उनके नियम न मानने के मतलब में है। दूसरे झान से सोच-विचार और लगातार सोच के मामले में... तीसरे झान से खुशी के मामले में... चौथे झान से खुशी और दर्द के मामले में, अच्छाई उनके काबू में रहने के मतलब में है, अच्छाई उनके नियम न मानने के मतलब में है।

भौतिकता की धारणा, प्रतिरोध की धारणा और विविधता की धारणा के मामले में असीम स्थान से मिलकर आधार की प्राप्ति के माध्यम से पुण्य उनके संयम के अर्थ में है, पुण्य उनके गैर-अतिक्रमण के अर्थ में है। असीम स्थान से मिलकर आधार की धारणा के मामले में असीम चेतना से मिलकर आधार की प्राप्ति के माध्यम से... असीम चेतना से मिलकर आधार की धारणा के मामले में शून्यता से मिलकर आधार की प्राप्ति के माध्यम से... न तो धारणा और न ही गैर-धारणा से मिलकर आधार की प्राप्ति के माध्यम से शून्यता से मिलकर आधार की धारणा के मामले में पुण्य अपने संयम के अर्थ में है, पुण्य अपने गैर-अतिक्रमण के अर्थ में है।

स्थायित्व की धारणा के मामले में नश्वरता के चिंतन के माध्यम से पुण्य उसके संयम के अर्थ में है, पुण्य उसके गैर-अतिक्रमण के अर्थ में है। सुख की धारणा के मामले में दर्द के चिंतन के माध्यम से... आत्म की धारणा के मामले में अनात्मा के चिंतन के माध्यम से। आनंद के मामले में वैराग्य के चिंतन के माध्यम से... लोभ के मामले में लोभ के क्षीण होने के चिंतन के माध्यम से... उत्पत्ति के मामले में निरोध के चिंतन के माध्यम से... लोभ के मामले में त्याग के चिंतन के माध्यम से... सघनता की धारणा के मामले में विनाश के चिंतन के माध्यम से। संचय के मामले में पतन के चिंतन के माध्यम से... स्थायित्व की धारणा के मामले में परिवर्तन के चिंतन के माध्यम से। संकेत [रूपों] के मामले में संकेतहीन के चिंतन के माध्यम से ... इच्छा के मामले में इच्छाहीनता के चिंतन के माध्यम से .. आग्रह (गलत व्याख्या) के मामले में शून्यता के चिंतन के माध्यम से ... विचारों की अंतर्दृष्टि के माध्यम से जो एक मूल को समझने के मामले में उच्च समझ है ... भ्रम के कारण आग्रह (गलत व्याख्या) के मामले में सही ज्ञान और देखने के माध्यम से ... निर्भरता [रूपों पर] के कारण आग्रह (गलत व्याख्या) के मामले में खतरे के चिंतन के माध्यम से ... गैर-प्रतिबिंब के मामले में प्रतिबिंब के चिंतन के माध्यम से ... [46] बंधन के कारण आग्रह (गलत व्याख्या) के मामले में दूर होने के चिंतन के माध्यम से पुण्य अपने संयम के अर्थ में है, पुण्य अपने गैर-अपराध के अर्थ में है।

धारा-प्रवेश पथ के माध्यम से अशुद्धियों के मामले में गलत दृष्टिकोण के साथ गुणांक गुण उनके संयम के अर्थ में है, गुण

उनके गैर-उल्लंघन की भावना। स्थूल दोषों के मामले में एक बार लौटने वाले मार्ग के माध्यम से ... द्वितीय दोषों के मामले में गैर-वापसी मार्ग के माध्यम से ... सभी दोषों के मामले में अरहंत मार्ग के माध्यम से पुण्य उनके संयम के अर्थ में है, पुण्य उनके गैर-उल्लंघन के अर्थ में है।

*

265. पाँच प्रकार के गुण.

जीवों को मारने के मामले में, छोड़ना अच्छा है, परहेज़ अच्छा है, इच्छा अच्छा है, संयम अच्छा है, नियम न मानना अच्छा है। ऐसे गुण बिना पछतावे के ज्ञान, खुशी, सुख, शांति, आनंद, दोहराव, विकास, ज़्यादा महत्व देना, सजावट, ज़रूरत (एकाग्रता के लिए), उपकरण (एकाग्रता का), पूर्णता, पूरी तरह से वैराग्य, लालच का खत्म होना, समाप्ति, शांति, सीधा ज्ञान, ज्ञान, निर्वाण की ओर ले जाते हैं: ऐसे गुणों में संयम से जो शुद्धि होती है, वह सबसे बड़ा गुण है। संयम से जो शुद्धि होती है, वह भटकती नहीं है: ध्यान न भटकने वाली शुद्धि ही सबसे बड़ा ज्ञान है। वह संयम से जो शुद्धि होती है, उसे सही ढंग से देखता है, और वह ध्यान न भटकने वाली शुद्धि को सही ढंग से देखता है: देखने से जो शुद्धि होती है, वह सबसे बड़ी समझ है। उसमें संयम का अर्थ उच्चतर सद्गुण में प्रशिक्षण है, उसमें अप्रवृत्त होने का अर्थ उच्चतर ज्ञान में प्रशिक्षण है, उसमें देखने का अर्थ उच्चतर समझ में प्रशिक्षण है।4 वह इन तीन प्रकार के प्रशिक्षण पर ध्यान देकर प्रशिक्षण देता है, वह उन्हें जानकर, उन्हें देखकर, उनका पुनरीक्षण करके, उन पर [ज्ञान] स्थिर करके, उन पर विश्वास के साथ संकल्प करके, उन पर शक्ति लगाकर, उन पर जागरूकता स्थापित करके, उन पर ज्ञान को एकाग्र करके, उन्हें समझ से समझकर, जो सीधे जाना जाना है उसे सीधे जानकर, जो पूरी तरह समझना है उसे पूरी तरह समझकर, जो छोड़ना है उसे त्यागकर, जो महसूस किया जाना है उसे महसूस करके, वह जो विकसित किया जाना चाहिए उसे विकसित करके प्रशिक्षण देता है।

जो दिया नहीं गया है उसे लेने के मामले में... (और इसी तरह बाकी दस बेकार तरीकों के साथ जैसा कि §264 में है, हर मामले में ऊपर दिए गए §265 के बाकी हिस्से को दोहराते हुए)...

कामुक इच्छाओं के लिए जोश के मामले में त्याग के ज़रिए... [§264 में हर रुकावट के लिए ऊपर §265 की तरह दोहराएं]

रुकावटों के मामले में पहले झाना के ज़रिए...

भौतिकता की समझ, विरोध की समझ और विविधता की समझ के मामले में, असीमित जगह वाले बेस को पाने से...

स्थायित्व की धारणा के मामले में अस्थिरता के चिंतन के माध्यम से...

गलत दृष्टिकोण वाले दोषों के गुणांक के मामले में धारा प्रवेश पथ के माध्यम से ... स्थूल दोषों के मामले में एक बार वापसी पथ के माध्यम से ... माध्यमिक दोषों के मामले में गैर-वापसी पथ के माध्यम से। सभी दोषों के मामले में अरहंत पथ के माध्यम से परित्याग पुण्य है, संयम पुण्य है, इच्छा पुण्य है, संयम पुण्य है, गैर-अपराध पुण्य है। ऐसा पुण्य गैर-पश्चाताप संज्ञान की ओर ले जाता है, ... वह विकसित करके प्रशिक्षित करता है कि क्या विकसित किया जाना चाहिए। [48]

•

266. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'सुनने (सीखने) के बाद संयम को समझना ही सद्गुण का ज्ञान है।'

* * *

[अध्याय III.-एकाग्रता]

267. यह कैसे है कि रोकने के बाद ध्यान लगाने की समझ, ध्यान लगाने के विकास में क्या शामिल है, इसका ज्ञान है?

268. एक तरह की एकाग्रता: ज्ञान का एकीकरण।

दो तरह की एकाग्रता: सांसारिक एकाग्रता और अलौकिक एकाग्रता।

तीन तरह की कंसंट्रेशन: सोच-विचार और लगातार सोच के साथ कंसंट्रेशन, सोच-विचार के बिना और सिर्फ़ सोच-विचार के साथ कंसंट्रेशन, सोच-विचार के बिना और लगातार सोच के साथ कंसंट्रेशन।

चार प्रकार की एकाग्रता: ह्रास वाली एकाग्रता, ठहराव वाली एकाग्रता, विशिष्टता वाली एकाग्रता, प्रवेश वाली एकाग्रता।

पाँच तरह की एकाग्रता: खुशी पर ध्यान, खुशी पर ध्यान, शांति पर ध्यान, रोशनी पर ध्यान, रिव्यू करने की निशानी।

छह तरह की एकाग्रता: ज्ञानी को याद करके मानसिक एकता और ध्यान भटकना नहीं, यह एकाग्रता है।

एकाग्रता... सच्चे विचार के स्मरण के माध्यम से, एकाग्रता . . . समुदाय (आदेश) के स्मरण के माध्यम से, एकाग्रता... पुण्य के स्मरण के माध्यम से, एकाग्रता... उदारता के स्मरण के माध्यम से, मानसिक एकीकरण के रूप में एकाग्रता और देवताओं के स्मरण के माध्यम से ध्यान भंग न होना।

एकाग्रता के सात प्रकार : एकाग्रता में कौशल, एकाग्रता प्राप्त करने में कौशल, एकाग्रता में बने रहने में कौशल, एकाग्रता से उभरने में कौशल, (49) एकाग्रता के स्वास्थ्य में कौशल, एकाग्रता के क्षेत्र में कौशल, एकाग्रता का मार्गदर्शन करने में कौशल।

आठ तरह की कंसंट्रेशन: धरती की कसीना के ज़रिए मेंटल एकता और ध्यान भटकने से रोकने के लिए कंसंट्रेशन, पानी की कसीना के ज़रिए कंसंट्रेशन... आग की कसीना के ज़रिए कंसंट्रेशन... हवा की कसीना के ज़रिए... नीली कसीना के ज़रिए। पीली कसीना के ज़रिए... लाल कसीना के ज़रिए... सफ़ेद कसीना के ज़रिए मेंटल एकता और ध्यान भटकने से रोकने के लिए कंसंट्रेशन..

नौ तरह की कंसंट्रेशन: घटिया, मीडियम और बेहतर मटेरियल कंसंट्रेशन; घटिया, मीडियम और बेहतर इमैटेरियल कंसंट्रेशन; शून्य कंसंट्रेशन; बिना निशान वाला कंसंट्रेशन; और बिना इच्छा वाला कंसंट्रेशन।

दस प्रकार की एकाग्रता: फूले हुए के माध्यम से मानसिक एकीकरण और गैर-विचलित के रूप में एकाग्रता, एकाग्रता... गुस्से के माध्यम से... सड़न के माध्यम से... कट-फट के माध्यम से... कुतरने के माध्यम से... बिखरे हुए के माध्यम से... कटे और बिखरे हुए के माध्यम से... खून बहने के माध्यम से... कृमि-ग्रस्त के माध्यम से... मानसिक एकीकरण और गैर-विचलित के रूप में एकाग्रता एक कंकाल के माध्यम से।

ये 55 तरह की कंसंट्रेशन हैं।

*

269. इसके अलावा एकाग्रता के पच्चीस अर्थ हैं: आलिंगन के अर्थ में एकाग्रता, उपकरण के अर्थ में एकाग्रता,... पूर्ति के अर्थ में,... एकीकरण के,... ध्यान भंग न होने के,... अपव्यय न होने के,... हलचल न होने के,... अशांति न होने के,... मुक्ति के अर्थ में एकाग्रता, एकता में स्थापित होकर ज्ञान की स्थिरता के कारण एकाग्रता, एकाग्रता (समाधि) क्योंकि यह एकरूपता (समम) चाहती है, एकाग्रता क्योंकि यह विषमता नहीं चाहती, एकाग्रता क्योंकि एकरूपता चाही जा रही है, एकाग्रता क्योंकि विषमता न चाहने के कारण एकाग्रता, एकाग्रता क्योंकि यह एकरूपता को पकड़ती है, एकाग्रता क्योंकि यह विषमता को नहीं पकड़ती, एकाग्रता क्योंकि एकरूपता पकड़ी जा रही है, एकाग्रता क्योंकि विषमता पकड़ी जा रही है, एकाग्रता क्योंकि विषमता पकड़ी नहीं जा रही है, एकाग्रता क्योंकि यह एकरूपता में प्रवेश करती है, एकाग्रता क्योंकि यह विषमता में प्रवेश नहीं करती,

एक जैसा होने की वजह से एकाग्रता, एक जैसा न होने की वजह से एकाग्रता, एक जैसा होने की रोशनी होने (झायति) की वजह से एकाग्रता, एक जैसा न होने की वजह से एकाग्रता (झपेति), एक जैसा होने की वजह से एकाग्रता, एक जैसा न होने की वजह से एकाग्रता, एक जैसा न होने की वजह से एकाग्रता, एक जैसा होना, भलाई और खुशी होने की वजह से एकाग्रता। ये एकाग्रता के पच्चीस मतलब हैं। 35

*

270. ज्ञान उस अर्थ में है जो जाना जाता है और समझ उस अर्थ में है कि उसे समझने की क्रिया है। इसलिए यह कहा गया है 'संयम के बाद एकाग्रता को समझना एकाग्रता के विकास में क्या शामिल है इसका ज्ञान है। [50]

* *
*

[अध्याय IV.-आश्रित उत्पत्ति]

271. यह कैसे है कि हालात को समझने की समझ, विचारों के कारण संबंध (मौजूदगी) का ज्ञान है?

अज्ञान का चीज़ों के बनने से एक कारण का रिश्ता (मौजूद है), उनके होने से एक कारण का रिश्ता (मौजूद है), उनके निशान से एक कारण का रिश्ता (मौजूद है), उनके जमा होने से एक कारण का रिश्ता (मौजूद है), उनके बंधन से एक कारण का रिश्ता (मौजूद है), उनके रोकने से एक कारण का रिश्ता (मौजूद है), उनके शुरू होने से एक कारण का रिश्ता (मौजूद है), उनके कारण से होने से एक कारण का रिश्ता (मौजूद है), उनकी शर्तों से एक कारण का रिश्ता (मौजूद है)। इन नौ पहलुओं में 'अज्ञान एक शर्त है, चीज़ें शर्तों से पैदा होती हैं, और ये दोनों विचार शर्तों से पैदा होते हैं' जैसी शर्तों को समझने का मतलब है विचारों के रिश्ते का ज्ञान। और अतीत और भविष्य में अज्ञान का चीज़ों के बनने से एक कारण का रिश्ता है, उनके होने से एक कारण का रिश्ता है,... उनकी शर्तों से एक कारण का रिश्ता है। इन नौ पहलुओं में इन शर्तों को समझने का मतलब है कि 'अज्ञान एक शर्त है, चीज़ें शर्तों से पैदा होती हैं, और ये दोनों विचार शर्तों से पैदा होते हैं'। नौ पहलुओं में विचारों के कारण संबंध का ज्ञान शामिल है। बनने का चेतना के पैदा होने से कारण संबंध होता है।

का मानसिकता-भौतिकता के उद्भव के साथ एक कारण संबंध है- चेतना . . .

मानसिकता-भौतिकता का छह गुना आधार के उत्पन्न होने से एक कारण संबंध है, . . .

छह गुना आधार का संपर्क के उत्पन्न होने से एक कारण संबंध है, . . .

संपर्क का भावना के पैदा होने से एक कारण संबंध होता है, . . .

भावना का लालसा के पैदा होने से एक कारण संबंध होता है। . .
लालसा का चिपकना के पैदा होने से एक कारण संबंध होता है, . . .
चिपकना का होने के पैदा होने से एक कारण संबंध होता है, . . .
होने का जन्म के पैदा होने से एक कारण संबंध होता है,...
उम्र बढ़ने और मौत के होने से एक कारण संबंध होता है, इसके . . जन्म का होने से संबंध होता है, इसके संकेत से एक कारण संबंध होता है, इसके जमा होने से एक कारण संबंध होता है, इसके बंधन से एक कारण संबंध होता है, इसके रोकने से एक कारण संबंध होता है, इसके जगाने से एक कारण संबंध होता है, इसके कारण संबंध से एक कारण संबंध होता है, इसकी शर्तों से एक कारण संबंध होता है। विचारों के कारण संबंध की समझ... ज्ञान।

272. इस प्रकार स्थितियों को समझने की: 'अज्ञान एक कारण है, संरचनाएं कारणात्मक रूप से उत्पन्न होती हैं, और ये दोनों विचार कारणात्मक रूप से उत्पन्न होते हैं,' विचारों के कारण संबंध का ज्ञान है। इस प्रकार स्थितियों को समझने की: 'अतीत और भविष्य में अज्ञान एक कारण है, संरचनाएं कारणात्मक रूप से उत्पन्न होती हैं, और ये दोनों विचार कारणात्मक रूप से उत्पन्न होते हैं,' विचारों के कारण संबंध का ज्ञान है। इस प्रकार स्थितियों को समझने की: 'संरचनाएं एक कारण हैं, चेतना कारणात्मक रूप से उत्पन्न होती है, और ये दोनों विचार कारणात्मक रूप से उत्पन्न होते हैं,'.. 'चेतना एक कारण है, मानसिकता-भौतिकता कारणात्मक रूप से उत्पन्न होती है, और ये दोनों विचार कारणात्मक रूप से उत्पन्न होते हैं,'.. 'मानसिकता-भौतिकता। एक कारण है, छह गुना आधार कारणात्मक रूप से उत्पन्न होता है, और ये दोनों विचार कारणात्मक रूप से उत्पन्न होते हैं'... 'छह गुना आधार एक कारण है, संपर्क कारणात्मक रूप से उत्पन्न होता है, और ये दोनों विचार कारणात्मक रूप से उत्पन्न होते हैं'... 'संपर्क एक कारण है, भावना कारणात्मक रूप से उत्पन्न होती है, और ये दोनों विचार कारणात्मक रूप से उत्पन्न होते हैं'... 'भावना एक कारण है, लालसा कारणात्मक रूप से उत्पन्न होती है, और ये दोनों विचार कारणात्मक रूप से उत्पन्न होते हैं'.'.'. 'लालसा एक कारण है, आसक्ति कारणात्मक रूप से उत्पन्न होती है, और ये दोनों विचार कारणात्मक रूप से उत्पन्न होते हैं'... 'आसक्ति एक कारण है, अस्तित्व कारणात्मक रूप से उत्पन्न होता है, और ये दोनों विचार कारणात्मक रूप से उत्पन्न होते हैं'... 'अस्तित्व एक कारण है, जन्म कारणात्मक रूप से उत्पन्न होता है, और ये दोनों विचार कारणात्मक रूप से उत्पन्न होते हैं'... इस प्रकार परिस्थितियों को स्वीकार करने की समझ: जन्म एक कारण है, बुढ़ापा और मृत्यु कारणात्मक रूप से उत्पन्न होते हैं, और ये दोनों विचार कारणात्मक रूप से उत्पन्न होते हैं,' विचारों के कारणात्मक संबंध का ज्ञान है। इस प्रकार परिस्थितियों को स्वीकार करने की समझ: 'अतीत और भविष्य में जन्म एक कारण है, बुढ़ापा और मृत्यु कारणात्मक रूप से उत्पन्न होते हैं, और ये दोनों विचार कारणात्मक रूप से उत्पन्न होते हैं' विचारों के कारणात्मक संबंध का ज्ञान है।

*

273. 'अज्ञान निर्भर है, रचनाएँ निर्भर रूप से उत्पन्न होती हैं, और ये दोनों विचार निर्भर रूप से उत्पन्न होते हैं', इस तरह की स्थितियों को समझना, विचारों के कारण संबंध का ज्ञान है। 'अतीत और भविष्य में अज्ञान निर्भर है, रचनाएँ निर्भर रूप से उत्पन्न होती हैं, और ये दोनों विचार निर्भर रूप से उत्पन्न होते हैं', इस तरह की स्थितियों को समझना

विचार निर्भर रूप से उत्पन्न होते हैं' ज्ञान है... (§272 के अनुसार पूरा करें, लेकिन 'कारण' के स्थान पर 'निर्भर' शब्द का प्रयोग करें)

*

274. 'अज्ञान एक शर्त है, [52] बनावटें कंडीशनली पैदा होती हैं, और ये दोनों विचार कंडीशनली पैदा होते हैं' इस तरह से शर्तों को समझना विचारों के कारण संबंध का ज्ञान है। 'अतीत और भविष्य में अज्ञान एक शर्त है, बनावटें कंडीशनली पैदा होती हैं, और ये दोनों विचार कंडीशनली पैदा होते हैं' इस तरह से शर्तों को समझना ज्ञान है... [§272 की तरह पूरा करें, लेकिन 'कारण' की जगह 'कंडीशन' रखें]

*

275. 36 (इस जीवन में) पहले कर्म के रूप में होने में भ्रम है, जो अज्ञान है; जमा करना है, जो बनना है; लगाव है, जो लालसा है; अपनाना है, जो चिपकना है; इच्छा है, जो होना है; इस तरह (इस जीवन में) पहले कर्म के रूप में होने के ये पाँच विचार यहाँ [इस जीवन में] दोबारा जन्म लेने की शर्तें हैं।

यहाँ [इस जीवन में] पुनर्जन्म से जुड़ना है, जो चेतना है; गर्भ में वर्षा है, जो मानसिकता-भौतिकता है; संवेदनशीलता है, जो संपर्क के लिए आधार है; जो छुआ जाता है, वह संपर्क है; जो महसूस होता है, वह भावना है; इस प्रकार यहाँ फिर से प्रकट होने के इन पाँच विचारों की शर्तें अतीत में किए गए कर्म (कम्म) में हैं।

यहाँ [इस जीवन में] बेस के मैच्योर होने के साथ भ्रम होता है, जो अज्ञान है; जमा करना है, जो बनना है; लगाव है, जो लालसा है; अपनाना है, जो चिपकना है; इच्छा है, जो होना है; इस तरह यहाँ होने-के-रूप-में-कार्रवाई के ये पाँच विचार भविष्य में पुनर्जन्म से जुड़ने की शर्तें हैं।

भविष्य में पुनर्जन्म से जुड़ना है, जो चेतना है; गर्भ में वर्षा है, जो मानसिकता-भौतिकता है; संवेदनशीलता है, जो [संपर्क के लिए] आधार है; जो छुआ जाता है, वह संपर्क है; जो महसूस किया जाता है, वह भावना है; इस प्रकार भविष्य में दोबारा प्रकट होने के इन पाँच विचारों की यहाँ (इस जीवन में) किए गए कर्म (कम्म) में शर्तें हैं।

अतः वह चार सामान्यीकरणों [भूत कारण, वर्तमान परिणाम, वर्तमान कारण, भविष्य परिणाम], समय की तीन अवधियों और तीन लिंक के साथ आश्रित समुत्पाद को जानता है, देखता है, पहचानता है, उनका भेदन करता है, ऐसा वह इन बीस विधाओं में करता है [प्रत्येक सामान्यीकरण में पाँच विधाएँ]।

*

276. ज्ञान का मतलब है कि कुछ जाना जा रहा है और समझ का मतलब है कि कुछ समझने का काम किया जा रहा है। इसलिए कहा गया: 'हालात को समझना, विचारों के कारण-कार्य संबंध का ज्ञान है'।

* *
*

(अध्याय V.-समझ)

277. [53] यह कैसे है कि सामान्यीकरण के बाद भूत, भविष्य और वर्तमान विचारों को परिभाषित करने की समझ "बोध का ज्ञान है?

278. कोई भी भौतिकता चाहे जो भी हो, चाहे वह भूत, भविष्य या वर्तमान, आंतरिक या बाह्य, स्थूल या सूक्ष्म, निम्न या उच्च, दूर या निकट-वह सभी भौतिकता को अस्थायी के रूप में परिभाषित करता है : यह एक प्रकार की समझ है। वह इसे दर्दनाक के रूप में परिभाषित करता है : यह एक प्रकार की समझ है। वह इसे स्वयं नहीं के रूप में परिभाषित करता है : यह एक प्रकार की समझ है। कोई भी भावना जो भी हो,... कोई भी बोध जो भी हो,... कोई भी रचना जो भी हो,... कोई भी चेतना जो भी हो, चाहे वह भूत, भविष्य या वर्तमान, आंतरिक या बाह्य, स्थूल या सूक्ष्म, निम्न या उच्च, दूर या निकट-वह सभी चेतना को अस्थायी के रूप में परिभाषित करता है : यह एक प्रकार की समझ है। वह इसे दर्दनाक के रूप में परिभाषित करता है : यह एक प्रकार की समझ है। वह इसे स्वयं नहीं के रूप में परिभाषित करता है : यह एक प्रकार की समझ है।

आँख, चाहे भूतकाल की हो, भविष्य की हो . . या वर्तमान की, [और इसी तरह §5 तक लिस्ट किए गए बाकी 201 आइडिया के साथ]... बुढ़ापा और मौत, चाहे भूतकाल की हो, भविष्य की हो या वर्तमान की, वह इसे कुछ समय का मानते हैं: यह एक तरह की समझ है। वह इसे दर्दनाक मानते हैं: यह एक तरह की समझ है। वह इसे खुद नहीं मानते हैं: यह एक तरह की समझ है।

279. यह समझना कि, आम तौर पर, 'भौतिकता, चाहे अतीत हो, भविष्य हो या वर्तमान, विनाश के अर्थ में अस्थायी है, डर के अर्थ में दर्दनाक है, कोई मूल न होने के अर्थ में स्वयं नहीं है', समझ का ज्ञान है। यह समझना कि, आम तौर पर, 'भावना,... समझ,... निर्माण,... चेतना, चाहे अतीत हो, भविष्य हो या वर्तमान, विनाश के अर्थ में अस्थायी है, डर के अर्थ में दर्दनाक है, कोई मूल न होने के अर्थ में स्वयं नहीं है', समझ का ज्ञान है।

डिफाइन करने की समझ, आफ्टर-जनरलाइज़ेशन, इस तरह 'आँख, चाहे पास्ट हो, फ्यूचर हो या प्रेजेंट हो,... [और इसी तरह लिस्टेड बाकी 201 आइडियाज़ के साथ

§5 में... 'बुढ़ापा और मृत्यु, चाहे भूत, भविष्य या वर्तमान, विनाश के अर्थ में अस्थायी है, आतंक के अर्थ में दर्दनाक है, कोई मूल न होने के अर्थ में स्वयं नहीं है', समझ का ज्ञान है।

*

280. 'मैटेरियलिटी, चाहे पास्ट हो, फ्यूचर हो या प्रेजेंट, टेम्पररी है, बनी है, डिपेंडेंटली पैदा हुई है, डिस्ट्रक्शन के अधीन है, फॉल के अधीन है, फीकी पड़ जाएगी, खत्म हो जाएगी' को जनरलाइज़ेशन के बाद इस तरह डिफाइन करना समझना कॉम्प्रिहेंशन का ज्ञान है। 'फीलिंग,... परसेप्शन,... फॉर्मेशन,... कॉन्शसनेस, चाहे पास्ट हो, फ्यूचर हो या प्रेजेंट, टेम्परारी है, बनी है, डिपेंडेंटली पैदा हुई है, डिस्ट्रक्शन के अधीन है, फॉल के अधीन है, फीकी पड़ जाएगी, खत्म हो जाएगी' को जनरलाइज़ेशन के बाद इस तरह डिफाइन करना समझना कॉम्प्रिहेंशन का ज्ञान है।

सामान्यीकरण के बाद, इस तरह परिभाषित करने की समझ, 'आँख, चाहे भूतकाल हो, भविष्यकाल हो या वर्तमान,... [और इसी तरह §5 तक में सूचीबद्ध 201 विचारों के बाकी हिस्सों के साथ)...' बुढ़ापा और मृत्यु, चाहे भूतकाल हो, भविष्यकाल हो या वर्तमान, अस्थायी है, उत्पन्न हुई है, निर्भरता से उत्पन्न हुई है, नष्ट होने के अधीन है, गिरने के अधीन है, फीके पड़ने के अधीन है, समाप्त होने के अधीन है' समझ का ज्ञान है। [54]

*

281. 'जन्म की शर्त के साथ बुढ़ापा और मौत होती है; जन्म की शर्त के बिना बुढ़ापा और मौत नहीं होती', इसे आम तौर पर इस तरह डिफाइन करना समझना, समझ का ज्ञान है। 'अतीत में और भविष्य में भी जन्म की शर्त के साथ बुढ़ापा और मौत होती है; जन्म की शर्त के बिना बुढ़ापा और मौत नहीं होती', इसे आम तौर पर इस तरह डिफाइन करना समझना, समझ का ज्ञान है।

जनरलाइज़ेशन के बाद, इस तरह डिफाइन करना समझना कि 'होने की कंडीशन से जन्म होता है; बिना होने की कंडीशन के जन्म नहीं होता'... [और इसी तरह डिपेंडेंट ओरिजिन के बाकी मेंबर्स के साथ]... जनरलाइज़ेशन के बाद, इस तरह डिफाइन करना समझना कि 'अज्ञान की कंडीशन से फॉर्मेशन होते हैं; बिना अज्ञान की कंडीशन के कोई फॉर्मेशन नहीं होते' कॉम्प्रिहेंशन का ज्ञान है। जनरलाइज़ेशन के बाद, इस तरह डिफाइन करना समझना कि 'अतीत में और भविष्य में भी अज्ञान की कंडीशन से फॉर्मेशन होते हैं; बिना अज्ञान की कंडीशन के कोई फॉर्मेशन नहीं होते' कॉम्प्रिहेंशन का ज्ञान है।

*

282. ज्ञान का मतलब है जाना जाना और समझना का मतलब है समझना। इसलिए कहा गया:

"भूत, भविष्य और वर्तमान के विचारों को सामान्य बनाने के बाद उन्हें समझना ही समझ का ज्ञान है।"

* * *

[अध्याय VI- उत्थान और पतन]

283. यह कैसे है कि अभी उठने वाले विचारों के बदलाव पर विचार करने की समझ, उतार-चढ़ाव पर विचार करने का ज्ञान है?

284. अभी पैदा हुई चीज़ पैदा होती है (मटेरियलिटी); इसके बनने की खासियत है बढ़ना, इसके बदलने की खासियत है गिरना, सोचना ज्ञान है। अभी पैदा हुई भावना... अभी पैदा . . . हुई समझ अभी पैदा हुई बनावट... अभी पैदा हुई चेतना पैदा होती है [चेतना); इसके बनने की खासियत है बढ़ना, इसके बदलने की खासियत है गिरना, सोचना ज्ञान है।

अभी-अभी उठी आँख... (और इसी तरह §5 में लिस्ट किए गए बाकी 201 आइडियाज़ के साथ)... अभी-अभी उठी चीज़ पैदा होती है (होना); इसके बनने की खासियत है उठना, इसके बदलने की खासियत है गिरना, और सोचना ज्ञान है।

285. जो पाँचों इकठ्ठाओं का उदय देखता है, उसमें कितनी खूबियाँ दिखती हैं? जो पाँचों इकठ्ठाओं का पतन देखता है, उसमें कितनी खूबियाँ दिखती हैं? जो पाँचों इकठ्ठाओं का उत्थान और पतन देखता है, उसमें कितनी खूबियाँ दिखती हैं?

जो पाँच स्कन्धों का उदय देखता है, वह पच्चीस लक्षण देखता है। जो पाँच स्कन्धों का पतन देखता है, वह पच्चीस लक्षण देखता है। जो पाँच स्कन्धों का उदय और पतन देखता है, वह पचास लक्षण देखता है। [55]

286. जो मैटेरियलिटी एग्रीगेट का उदय देखता है, उसे कितनी खूबियां दिखती हैं? जो इसका पतन देखता है, उसे कितनी खूबियां दिखती हैं? जो इसका उत्थान और पतन देखता है, उसे कितनी खूबियां दिखती हैं? जो फीलिंग एग्रीगेट का उदय देखता है, उसे कितनी खूबियां . . . दिखती हैं? परसेप्शन एग्रीगेट का?... फॉर्मेशन एग्रीगेट का?... जो कॉन्शसनेस एग्रीगेट का उदय देखता है, उसे कितनी खूबियां दिखती हैं? जो इसका पतन देखता है, उसे कितनी खूबियां दिखती हैं? कैसे जो इसका उत्थान और पतन देखता है, वह इसकी कितनी विशेषताएँ देखता है?

जो भौतिकता के समुच्चय का उदय देखता है, वह पाँच लक्षण देखता है, जो उसका पतन देखता है, वह पाँच लक्षण देखता है, जो उसका उदय और पतन देखता है, वह पाँच लक्षण देखता है

दस खासियतें। जो भावना के समूह का उदय देखता है... समझ के समूह का... बनावट के समूह का... जो चेतना के समूह का उदय देखता है, वह पाँच खासियतें देखता है, जो उसका पतन देखता है, वह पाँच खासियतें देखता है, जो उसका उत्थान और पतन देखता है, वह दस खासियतें देखता है।

287. जो मैटेरियलिटी एग्रीगेट का उदय देखता है, उसे कौन सी लाइव खासियतें दिखती हैं?

वह भौतिकता समुच्चय के उदय को सशर्त उत्पत्ति के अर्थ में इस प्रकार देखता है: अज्ञान के उत्पन्न होने के साथ भौतिकता की उत्पत्ति होती है। वह भौतिकता समुच्चय के उदय को सशर्त उत्पत्ति के अर्थ में इस प्रकार देखता है: लालसा के उत्पन्न होने के साथ भौतिकता की उत्पत्ति होती है। वह भौतिकता के उदय को सशर्त उत्पत्ति के अर्थ में इस प्रकार देखता है: क्रिया (कम्म) के उत्पन्न होने के साथ भौतिकता की उत्पत्ति होती है। वह भौतिकता के उदय को सशर्त उत्पत्ति के अर्थ में इस प्रकार देखता है: पोषण के उत्पन्न होने के साथ भौतिकता की उत्पत्ति होती है। जो पीढ़ी की विशेषता को देखता है, वह भौतिकता समुच्चय के उदय को देखता है।

जो भौतिकता के समूह का उदय देखता है, वह इन पाँच विशेषताओं को देखता है।

जो भौतिकता के समूह का पतन देखता है, वह कौन सी पाँच विशेषताएँ देखता है?

वह भौतिकता समुच्चय के पतन को सशर्त निरोध के अर्थ में इस प्रकार देखता है: अज्ञान की समाप्ति के साथ भौतिकता की समाप्ति होती है। वह भौतिकता समुच्चय के पतन को सशर्त निरोध के अर्थ में इस प्रकार देखता है: तृष्णा की समाप्ति के साथ... कर्म (कम्मा) की समाप्ति के साथ... पोषण की समाप्ति के साथ भौतिकता की समाप्ति होती है। जो परिवर्तन की विशेषता को देखता है [56], वह भौतिकता समुच्चय के पतन को देखता है।

जो भौतिकता के समूह का पतन देखता है, वह इन पाँच गुणों को देखता है।

जो उत्थान और पतन देखता है, वह इन दस लक्षणों को देखता है।

288. जो व्यक्ति भावना समूह का उदय देखता है, वह कौन-सी पाँच विशेषताएँ देखता है?

वह भावनाओं के समूह को कंडीशन्ड ओरिजिन के अर्थ में इस तरह देखता है: अज्ञान के पैदा होने से भावना पैदा होती है। वह भावनाओं के समूह को कंडीशन्ड ओरिजिन के अर्थ में इस तरह देखता है: लालसा के पैदा होने से... कर्म (कम्मा) के पैदा होने से... संपर्क के पैदा होने से भावना पैदा होती है। जो पैदा होने की खासियत देखता है, वह भावनाओं के समूह को देखता है।

जो व्यक्ति भाव समूह का उत्थान देखता है, उसे ये पाँच विशेषताएँ दिखाई देती हैं। जो व्यक्ति भाव समूह का पतन देखता है, उसे कौन सी पाँच विशेषताएँ दिखाई देती हैं?

इंसान भावनाओं के समूह के पतन को शर्तों के साथ खत्म होने के अर्थ में इस तरह देखता है: अज्ञानता के खत्म होने के साथ... लालसा के खत्म होने के साथ... कर्म (कम्मा) के खत्म होने के साथ। संपर्क के खत्म होने के साथ भावना का भी अंत होता है। जो बदलाव की खासियत देखता है, वह भावनाओं के समूह के पतन को देखता है।

जो भावना समूह का पतन देखता है, वह इन पाँच लक्षणों को देखता है।

जो उत्थान और पतन देखता है, वह इन दस विशेषताओं को देखता है।

289. जो व्यक्ति परसेप्शन एग्रीगेट का उदय देखता है, वह कौन सी पाँच विशेषताएँ देखता है?

lle परसेप्शन एग्रीगेट में बढ़ोतरी देखता है... (पूरा होने पर $288 में)

जो उत्थान और पतन देखता है, वह इन दस लक्षणों को देखता है।

290. जो व्यक्ति संरचनाओं के समुच्चय का उदय देखता है, वह कौन-सी पाँच विशेषताएँ देखता है?

वह फॉर्मेशन्स के बढ़ने को देखता है... (§2881 के अनुसार पूरा)

जो उत्थान और पतन देखता है, वह इन दस लक्षणों को देखता है।

291. जो व्यक्ति चेतना समुच्चय का उदय देखता है, उसमें कौन-सी पाँच विशेषताएँ दिखाई देती हैं?

वह चेतना समुच्चय के उदय को सशर्त उत्पत्ति के अर्थ में इस प्रकार देखता है: अज्ञान के उदय के साथ... तृष्णा के उदय के साथ... क्रिया (कम्मा) के उदय के साथ... मानसिकता-भौतिकता के उदय के साथ चेतना का उदय होता है। वह [57] जो पीढ़ी की विशेषता को देखता है, वह चेतना समुच्चय के उदय को देखता है।

जो चेतना के समूह का उदय देखता है, वह इन पाँच विशेषताओं को देखता है।

जो चेतना के समूह का पतन देखता है, उसे कौन सी पाँच विशेषताएँ दिखाई देती हैं?

वह चेतना समूह के पतन को इस तरह देखता है: अज्ञान के अंत के साथ... लालसा के अंत के साथ... कर्म (कम्म) के अंत के साथ... मानसिकता-भौतिकता के अंत के साथ चेतना का अंत होता है। जो बदलाव की विशेषता देखता है, वह चेतना समूह के पतन को देखता है।

जो उत्थान और पतन देखता है, वह इन दस लक्षणों को देखता है।

292. जो पाँचों इकठ्ठों का उदय देखता है, वह इन पच्चीस विशेषताओं को देखता है; जो उनका पतन देखता है, वह इन पच्चीस विशेषताओं को देखता है; जो उनका उत्थान और पतन देखता है, वह इन पचास विशेषताओं को देखता है।

*

29.3. ज्ञान का मतलब है कि जाना जाए और समझना का मतलब है कि समझने का काम किया जाए। इसलिए कहा गया था:

'वर्तमान विचारों के चिंतन की समझ' परिवर्तन उत्थान और
पतन के चिंतन का ज्ञान है।

294. मैटेरियलिटी एग्रीगेट का ओरिजिन (फिजिकल) न्यूट्रिशन है; तीनों, यानी फीलिंग, परसेप्शन और फॉर्मेशन एग्रीगेट, का ओरिजिन कॉन्टैक्ट है; कॉन्शसनेस एग्रीगेट का ओरिजिन मेंटलिटी-मैटेरियलिटी है (देखें M iii 17)।

[अध्याय VII.- विघटन]

295. किसी वस्तु पर विचार करने के बाद विलीन होने का विचार करना ही अंतर्दृष्टि का ज्ञान कैसे है?

296. भौतिकता को उसके उद्देश्य के रूप में जानना पैदा होता है और खत्म हो जाता है। इस पर सोचने के बाद, वह उस जानकारी के खत्म होने के बारे में सोचता है।

वह चिंतन करता है: वह कैसे चिंतन करता है? वह अस्थायी के रूप में चिंतन करता है, स्थायी के रूप में नहीं; वह दर्दनाक के रूप में चिंतन करता है, [58] सुखद के रूप में नहीं; वह अन-आत्मा के रूप में चिंतन करता है, स्वयं के रूप में नहीं; वह उदासीन हो जाता है, वह प्रसन्न नहीं होता; वह लोभ को लुप्त कर देता है, वह उसे भड़काता नहीं है; वह निरोध का कारण बनता है, उत्पन्न नहीं होता; वह त्याग करता है, वह ग्रहण नहीं करता। जब वह अस्थायी के रूप में चिंतन करता है तो वह स्थायित्व की धारणा को त्याग देता है; जब वह दर्दनाक के रूप में चिंतन करता है तो वह सुख की धारणा को त्याग देता है; जब वह अन-आत्मा के रूप में चिंतन करता है तो वह स्वयं की धारणा को त्याग देता है; जब वह उदासीन हो जाता है तो वह आनंद को त्याग देता है; जब उसका लोभ लुप्त हो जाता है तो वह लोभ को त्याग देता है; जब वह निरोध का कारण बनता है तो वह उत्पन्न होना छोड़ देता वह जो छोड़ता है, वह पकड़ना छोड़ देता है।

भावना के साथ उसका विषय होने का ज्ञान होता है... [ऊपर दिए गए तरीके से पूरा करें]...

ज्ञान और समझ, जो इसका ऑब्जेक्ट है, पैदा होते हैं...

चीज़ों के साथ बोध, जैसे ही उनका ऑब्जेक्ट बनता है...

चेतना के साथ ज्ञान उसके विषय के रूप में उत्पन्न होता है... [ऊपर के अनुसार पूर्ण]... जब वह त्याग करता है तो वह लोभ को भी त्याग देता है।

आँख को उसका ऑब्जेक्ट मानकर कॉग्निजेंस होता है... (और इसी तरह §5 में लिस्टेड 201 आइडिया में से हर एक के साथ होता है)...

बुढ़ापे और मौत को समझना, जैसे उसका मकसद सामने आता . . [पूरा करें] है। ऊपर... जब वह पीछे हटता है तो वह पकड़ना छोड़ देता है।

297. वस्तु का प्रतिस्थापन, समझ
का स्थानांतरण, विज्ञापन
की शक्ति - ये प्रतिबिंब
के बाद अंतर्दृष्टि हैं

दोनों को एक जैसा
बताना, उसी चीज़ से अंदाज़ा
लगाकर, खत्म करने का इरादा - ये
गिरने के निशान की समझ हैं।

चीज़ पर सोचने के बाद,
वह खत्म होने के बारे में
सोचता है, फिर खालीपन दिखता
है - यह ऊँची समझ की समझ है।

तीन तरह के विचारों में माहिर,
और चार तरह की समझ में भी
माहिर, तीन तरह के रूप में माहिर,
अलग-अलग नज़रिए उसे हिला नहीं पाएंगे।

*

298. ज्ञान का मतलब है कि जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'किसी चीज़ पर सोचने के बाद [ज्ञान के] खत्म होने के बारे में सोचना ही समझ का ज्ञान है।'

* * *

[59] [अध्याय VIII.-आतंक के रूप में उपस्थिति]

299. यह कैसे है कि किसी चीज़ को डर के रूप में समझना ही खतरे का ज्ञान है?

300. (1.a.) दिखने को डर समझना, इस तरह 'उठना ही डर है', खतरे का ज्ञान है। दिखने को डर समझना, इस तरह 'होना ही डर है'... 'संकेत ही डर है'... 'जमा करना ही डर है'... 'पुनर्जन्म से जुड़ना ही डर है'... 'मंज़िल ही डर है'... 'पीढ़ी ही डर है'... 'पुनर्जन्म ही डर है'... 'जन्म ही डर है'... 'बुढ़ापा ही डर है'... 'बीमारी ही डर है'... 'मौत ही डर है'... 'दुख ही डर है'... 'विलाप ही डर है'... दिखने को डर समझना, इस तरह 'निराशा ही डर है', खतरे का ज्ञान है।

(1.b.) शांति की स्थिति (शांतिपद) का ज्ञान यह है कि 'न होना ही सुरक्षा है। शांति की स्थिति का ज्ञान यह है कि 'न होना ही सुरक्षा . . . है' [और इसी तरह §18 में दिए गए बाकी 15 विचारों के साथ]... शांति की स्थिति का ज्ञान यह है कि 'न होना ही सुरक्षा है'।

(1.सी.) शांति की स्थिति का ज्ञान यह है 'उभरना आतंक है, न उभरना सुरक्षा है'... [और इसी तरह §18 में]... शांति की स्थिति का ज्ञान यह है 'निराशा आतंक है, न निराश होना सुरक्षा है'।

301. (2.a.) दिखावे को डर के तौर पर समझना, इस तरह 'उठना दुख है' खतरे का ज्ञान है... (और इसी तरह §19 में]... दिखावे को डर के तौर पर समझना, इस तरह 'निराशा दुख है' खतरे का ज्ञान है।

(2.ब.) शान्ति की स्थिति का ज्ञान यह है 'निराशा ही आनंद है'... शान्ति की स्थिति का ज्ञान यह है 'निराशा ही आनंद है'।

(2.सी.) शान्ति की स्थिति का ज्ञान यह है 'उत्पन्न होना दुख है, अनुत्पन्न होना आनंद है'... शान्ति की स्थिति का ज्ञान यह है 'निराशा दुख है, अनुत्पन्न होना आनंद है'।

302. (3.अ.) दिखावे को भय के रूप में समझना इस प्रकार 'उदय भौतिकवादी है' खतरे का ज्ञान है... दिखावे को भय के रूप में समझना इस प्रकार 'निराशा भौतिकवादी है' खतरे का ज्ञान है। [60]

(3.ब.) शान्ति की स्थिति का ज्ञान यह है 'असंतोष अभौतिकवादी है'... शान्ति की स्थिति का ज्ञान यह है 'असंतोष अभौतिकवादी है'।

(3.सी.) शान्ति की स्थिति का ज्ञान यह है 'निराशा भौतिकवादी है, निराशा अभौतिकवादी है'।

303. (4.अ.) दिखावट को भय समझना इस प्रकार 'उदय होना ही निर्माण है' खतरे का ज्ञान है... दिखावट को भय समझना इस प्रकार 'निराशा ही निर्माण है' खतरे का ज्ञान है।

(4.ब) शान्ति की स्थिति का ज्ञान ही 'निराशा का न होना ही निब्बान है'। . शान्ति की स्थिति का ज्ञान ही 'निराशा का न होना ही निब्बान है'।

(4.सी.) शांति की स्थिति का ज्ञान यह है 'उदय होना निर्माण है, अनुत्पादन निब्बान है'... शांति की स्थिति का ज्ञान यह है 'निराशा निर्माण है, अनुत्पादकता निब्बान है'।

*

304. वह दुख के बारे में सोचता है।
पैदा होना, घटना, और निशान, जमा
होना, पुनर्जन्म-जोड़ना-और
यह उसका ज्ञान खतरे का है।

वह आनंद को ऐसे देखता है जैसे कोई पैदा
नहीं होता, और कोई घटना नहीं होती, और
कोई निशान नहीं होता, कोई जमा नहीं होता, कोई
पुनर्जन्म से नहीं जुड़ता - और यह ज्ञान है,

खतरे के बारे में इस ज्ञान के
शुरू होने के पाँच सोर्स
हैं; शांति के ज्ञान के भी पाँच-दस
ज्ञान हैं जिन्हें वह समझता है।

जब वह इन दो तरह के ज्ञान में माहिर हो जाता है,
तो अलग-अलग नज़रिए उसे हिला नहीं पाते।

*

305. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'डर के रूप को समझना खतरे का ज्ञान है'।

* *
*

[अध्याय IX. - संरचनाओं के बारे में समभाव]

306. यह कैसे है कि मुक्ति की इच्छा, सोच-विचार और शांति की समझ, रूपों के बारे में शांति के प्रकारों का ज्ञान है? (cf. Thag 270 और ThagA)

307. मुक्ति की इच्छा, सोच-विचार और शांति की समझ, (होने में व्यस्त) बनने के बारे में शांति का ज्ञान है। मुक्ति की इच्छा, सोच-विचार और शांति की समझ, [होने में व्यस्त]... (और इसी तरह §18 में लिस्ट किए गए बाकी 15 आइडिया के साथ)... मुक्ति की इच्छा, सोच-विचार और शांति की समझ, [निराशा में व्यस्त] बनने के बारे में शांति का ज्ञान है।

मुक्ति की इच्छा, प्रतिबिंब और धैर्य की समझ, इस प्रकार 'उद्भव दुख है' निर्माणों के बारे में समभाव का ज्ञान है [61]... मुक्ति की इच्छा, प्रतिबिंब और धैर्य की समझ, इस प्रकार 'निराशा दुख है' निर्माणों के बारे में समभाव का ज्ञान है।

309. मुक्ति की इच्छा, आत्मचिंतन और शांति की समझ, इस प्रकार 'उभरना भय है', निर्माणों के बारे में समभाव का ज्ञान है... मुक्ति की इच्छा, आत्मचिंतन और शांति की समझ, इस प्रकार 'निराशा भय है', निर्माणों के बारे में समभाव का ज्ञान है।

310. मुक्ति की इच्छा, आत्मचिंतन और शांति की समझ, इस प्रकार 'उत्पन्न होना भौतिकता है' समभाव का ज्ञान है

संरचनाएं... मुक्ति की इच्छा, प्रतिबिंब और स्थिरता की समझ, इस प्रकार 'निराशा भौतिकवादी है' संरचनाओं के बारे में समभाव का ज्ञान है।

311. मुक्ति की इच्छा, आत्मचिंतन और शांति की समझ, इस प्रकार 'उठना ही निर्माण है' निर्माणों के बारे में समभाव का ज्ञान है... मुक्ति की इच्छा, आत्मचिंतन और शांति की समझ, इस प्रकार 'निराशा ही निर्माण है' निर्माणों के बारे में समभाव का ज्ञान है।

312. उठना, बनना है; वह उन बनने की चीज़ों को शांति से देखता है: इस तरह यह बनने की चीज़ों के बारे में शांति है। बनना और शांति दोनों ही बनना हैं; वह उन बनने की चीज़ों को शांति से देखता है: इस तरह यह बनने की चीज़ों के बारे में शांति है। होना बनना है;... निराशा बनना है; वह उन बनने की चीज़ों को शांति से देखता है: इस तरह यह बनने की चीज़ों के बारे में शांति है। बनना और शांति दोनों ही बनना हैं; वह उन बनने की चीज़ों को शांति से देखता है: इस तरह यह बनने की चीज़ों के बारे में शांति है।

313. कितनी बातों में बनावट के बारे में बराबरी से ज्ञान का मार्गदर्शन मिलता है?

आठ पहलुओं में बनावट के बारे में बराबरी से ज्ञान का मार्गदर्शन है।

314. आम आदमी के मामले में, फॉर्मेशन के बारे में बराबरी से जानने की गाइडेंस में कितने पहलू होते हैं? शुरू करने वाले (ट्रेनर) के मामले में फॉर्मेशन के बारे में बराबरी से जानने की गाइडेंस में कितने पहलू होते हैं? बिना लालच वाले के मामले में फॉर्मेशन के बारे में बराबरी से जानने की गाइडेंस में कितने पहलू होते हैं?

[62] सामान्य मनुष्य के मामले में संरचनाओं के बारे में समभाव के ज्ञान के मार्गदर्शन के दो पहलू हैं. दीक्षा लेने वाले (प्रशिक्षक) के मामले में संरचनाओं के बारे में समभाव के ज्ञान के मार्गदर्शन के तीन पहलू हैं. लालच से रहित व्यक्ति के मामले में संरचनाओं के बारे में समभाव के ज्ञान के मार्गदर्शन के तीन पहलू हैं.

315. आम आदमी के मामले में, बनावट के बारे में बराबरी से समझने की गाइडेंस किन दो पहलुओं पर काम करती है?

एक आम आदमी या तो चीज़ों के बारे में एक जैसा सोचने में खुश होता है, या वह उन्हें समझ से देखता है। चीज़ों के बारे में एक जैसा सोचने की समझ के गाइडेंस के आम आदमी के मामले में ये दो पहलू होते हैं।

316. दीक्षा लेने वाले (ट्रेनर) के मामले में, फॉर्मेशन के बारे में बराबरी से ज्ञान का गाइडेंस किन तीन पहलुओं पर आधारित है?

एक नया सीखने वाला (ट्रेनर) या तो चीज़ों के बारे में एक जैसा सोचने में खुश होता है, या वह उसे समझ से देखता है, या सोचने के बाद वह [रास्ते के] नतीजे तक पहुँच जाता है। नई सीखने वाले (ट्रेनर) के मामले में, चीज़ों के बारे में एक जैसा सोचने की समझ के गाइडेंस में ये तीन बातें होती हैं।

317. जो लालची नहीं है, उसके मामले में चीज़ों के बारे में बराबरी से ज्ञान का मार्गदर्शन किन तीन पहलुओं में होता है?

जो लालच से दूर रहता है, वह या तो चीज़ों के बारे में समझ से देखता है, या सोचने के बाद फल की प्राप्ति में प्रवेश करता है, या उसे समझ से देखकर, वह शून्य में रहता है या बिना निशान के रहता है या बिना इच्छा के रहता है। जो लालच से दूर रहता है, उसके मामले में चीज़ों के बारे में समझ के मार्गदर्शन में ये तीन पहलू होते हैं।

*

318. आम आदमी और ट्रेनर के मामले में, फॉर्मेशन के बारे में बराबरी से समझने का एक जैसा गाइडेंस कैसे होता है?

जब एक आम आदमी बनावट के बारे में एक जैसा सोचता है, तो वह अपनी समझ को खराब करता है, और यह विकास में रुकावट है, अंदर जाने में रुकावट है, और भविष्य में पुनर्जन्म से जुड़ने की एक शर्त है। जब एक शुरू करने वाला (ट्रेनर) बनावट के बारे में एक जैसा सोचता है, तो वह अपनी समझ को खराब करता है, और यह विकास में रुकावट है, और आगे अंदर जाने में रुकावट है, और भविष्य में पुनर्जन्म की एक शर्त है। इसी तरह आम आदमी और शुरू करने वाले (ट्रेनर) के मामले में बनावट के बारे में एक जैसा सोचने का गाइडेंस एक जैसा होता है।

319. आम आदमी, दीक्षा लेने वाले (ट्रेनर) और बिना लालच वाले इंसान के मामले में, फॉर्मेशन के बारे में बराबरी से ज्ञान का एक जैसा गाइडेंस कैसे होता है?

एक आम आदमी समझ के साथ बनने के बारे में बराबरी को कुछ समय के लिए, दर्द देने वाला, खुद का नहीं मानता। एक शुरू करने वाला (ट्रेनर) समझ के साथ बनने के बारे में बराबरी को कुछ समय के लिए, दर्द देने वाला, खुद का नहीं मानता। बिना लालच वाला इंसान बनने के बारे में बराबरी को कुछ समय के लिए, दर्द देने वाला, खुद का नहीं मानता। (63) इसी तरह आम आदमी, शुरू करने वाले (ट्रेनर) और बिना लालच वाले इंसान के मामलों में बनने के बारे में बराबरी में ज्ञान का एक जैसा गाइडेंस होता है।

320. आम आदमी, यानी दीक्षा लेने वाले (ट्रेनर) और जो लालची नहीं है, उनके मामले में फॉर्मेशन के बारे में बराबरी से समझने का गाइडेंस कैसे अलग होता है?

एक आम आदमी के लिए बनावट के बारे में बराबरी फायदेमंद होती है। एक शुरू करने वाले (ट्रेनर) के लिए बनावट के बारे में बराबरी फायदेमंद होती है। जो लालची नहीं है, उसमें बनावट के बारे में बराबरी तय नहीं होती। इसीलिए आम आदमी, शुरू करने वाले (ट्रेनर) और जो लालची नहीं है, उनके मामले में बनावट के बारे में बराबरी की समझ का अलग-अलग गाइडेंस होता है, इस मायने में कि क्या फायदेमंद है और क्या नहीं। 321. आम आदमी, शुरू करने वाले (ट्रेनर) और जो लालची नहीं है, उनके मामले में बनावट के बारे में बराबरी की समझ का अलग-अलग गाइडेंस कैसे होता है?

आम आदमी के मामले में, बनावट के बारे में संतुलन कभी-कभी साफ़ तौर पर पहचाना जाता है और कभी-कभी साफ़ तौर पर नहीं पहचाना जाता। शुरू करने वाले (ट्रेनर) के मामले में बनावट के बारे में संतुलन कभी-कभी साफ़ तौर पर पहचाना जाता है और कभी-कभी साफ़ तौर पर नहीं पहचाना जाता। जो लालच नहीं करता, उसके मामले में बनावट के बारे में संतुलन हमेशा साफ़ तौर पर पहचाना जाता है। इसी तरह आम आदमी, शुरू करने वाले (ट्रेनर) और जो लालच नहीं करता, उनके मामलों में पहचान और न पहचान के मामले में अलग-अलग गाइडेंस होती है।

322. आम आदमी, दीक्षा लेने वाले (ट्रेनर) और लालच न करने वाले के मामले में, शिक्षाओं के बारे में बराबरी से समझने का अलग-अलग तरीका क्या है?

एक आम आदमी, कम समझ के साथ बनावट के बारे में एक जैसा सोचता है। एक शुरू किया हुआ (ट्रेनर) भी कम समझ के साथ बनावट के बारे में एक जैसा सोचता है। बिना लालच वाला इंसान, मैच्योर समझ के साथ बनावट के बारे में एक जैसा सोचता है। इसी तरह, आम आदमी, शुरू किया हुआ (ट्रेनर) और जो मैच्योरिटी और कम समझ के मामले में लालच नहीं करता, उनके मामलों में बनावट के बारे में एक जैसा सोचने का तरीका अलग-अलग होता है।

323. आम आदमी, दीक्षा लेने वाले (ट्रेनर) और बिना लालच वाले इंसान के मामले में, शिक्षाओं के बारे में बराबरी से ज्ञान का गाइडेंस कैसे अलग होता है?

एक सामान्य व्यक्ति तीन बंधनों को त्याग कर धारा-प्रवेश पथ प्राप्त करने के लिए अंतर्दृष्टि के साथ संरचनाओं के बारे में समभाव देखता है। एक दीक्षित (प्रशिक्षक) तीन बंधनों को त्याग कर उच्चतर (पथ) प्राप्त करने के लिए अंतर्दृष्टि के साथ संरचनाओं के बारे में समभाव देखता है। जो लोभ से रहित है वह सभी विकारों को त्याग कर, यहां और अभी आनंद में रहने के लिए अंतर्दृष्टि के साथ संरचनाओं के बारे में समभाव देखता है। इस तरह से सामान्य व्यक्ति, दीक्षित (प्रशिक्षक) और जो त्यागे गए और अत्यावश्यक के अर्थ में लोभ से रहित है, के मामलों में संरचनाओं के बारे में समभाव में ज्ञान का अलग-अलग मार्गदर्शन है। [64]

324. आम आदमी, दीक्षा लेने वाले (ट्रेनर) और लालच न रखने वाले इंसान के मामले में, शिक्षाओं के बारे में बराबरी से ज्ञान का रास्ता कैसे अलग होता है?

आम आदमी या तो चीज़ों के बारे में बराबरी से खुश होता है, या वह उसे समझ से देखता है। एक शुरू करने वाला (ट्रेनर) या तो चीज़ों के बारे में बराबरी से खुश होता है, या वह उसे समझ से देखता है, या सोचने के बाद वह (रास्ते का) फल पाने में लग जाता है। जो लालच नहीं करता, वह या तो चीज़ों के बारे में बराबरी से समझ से देखता है, या सोचने के बाद वह फल पाने में लग जाता है, या उसे बराबरी से देखकर वह खालीपन में रहता है या बिना निशान के रहता है या बिना इच्छा के रहता है।

इसी तरह, आम आदमी, यानी दीक्षा लेने वाले (ट्रेनर) और जो लालच से दूर है, उनके लिए बनने के बारे में बराबरी से समझने का अलग-अलग तरीका होता है, यानी बने रहने और पाने का।

*

325. शांति से कितनी तरह की शांति पैदा होती है?
समझ से कितनी तरह की शांति पैदा होती है?

बनावट के बारे में आठ तरह की शांति शांति से पैदा होती है।
बनावट के बारे में दस तरह की शांति समझ से पैदा होती है।
326. शांति से बनने के बारे में कौन सी आठ तरह की शांति पैदा होती है?

पहला ज्ञान और शांति पाने के लिए रुकावटों पर सोच-विचार को समझना, बनावट के बारे में संतुलन का ज्ञान है। दूसरा ज्ञान और शांति पाने के लिए लागू सोच और लगातार सोच पर सोच-विचार को समझना, बनावट के बारे में संतुलन का ज्ञान है। तीसरा ज्ञान और शांति पाने के लिए खुशी पर सोच-विचार को समझना, बनावट के बारे में संतुलन का ज्ञान है। चौथा ज्ञान और शांति पाने के लिए खुशी और दर्द पर सोच-विचार को समझना, बनावट के बारे में संतुलन का ज्ञान है। असीमित जगह और शांति जैसे आधार को पाने के लिए चीज़ों की समझ, विरोध की समझ और अलग-अलग तरह की समझ पर सोच-विचार को समझना, बनावट के बारे में संतुलन का ज्ञान है। असीम चेतना और शांति वाले आधार को पाने के मकसद से, असीम जगह वाले आधार की समझ पर सोच को समझना, बनावट के बारे में शांति का ज्ञान है। शून्यता और शांति वाले आधार को पाने के मकसद से, असीम चेतना वाले आधार की समझ पर सोच को समझना, बनावट के बारे में शांति का ज्ञान है। न तो समझ और न ही बिना समझ वाले आधार को पाने के मकसद से, शून्यता वाले आधार की समझ पर सोच को समझना, और

शांति का ज्ञान, संरचनाओं के बारे में समभाव का ज्ञान है।
संरचनाओं के बारे में ये आठ प्रकार की समभाव शांति के माध्यम से उत्पन्न होती हैं। 327. अंतर्दृष्टि के माध्यम से संरचनाओं के बारे में कौन सी दस प्रकार की समभाव उत्पन्न होती हैं? [65]

उठने, घटना, संकेत, जमा होना, पुनर्जन्म से जुड़ना, मंज़िल, पीढ़ी, फिर से बड़ा होना, जन्म, बुढ़ापा, बीमारी, मौत, दुख, विलाप, निराशा और शांति पर सोच-विचार की समझ।

पाथ पाने का मकसद, फॉर्मेशन के बारे में
बराबरी का ज्ञान है। स्ट्रीम-एंट्री का फ़ायदा पाने के लिए,
उठने, निराशा और शांति पर सोच-विचार को समझना, फॉर्मेशन
के बारे में बराबरी का ज्ञान है। समझना... एक बार लौटने वाला
पाथ... एक बार लौटने का फ़ायदा... न लौटने वाला पाथ... न लौटने
का फ़ायदा... अरहंत पाथ... <अरहंत होने का फ़ायदा, शून्य में
. . . रहना...> उठने, निराशा और शांति पर सोच-विचार को
समझना, <बिना निशान के रहने और शांति को पाने के मकसद
से, फॉर्मेशन के बारे में बराबरी का ज्ञान है। फॉर्मेशन
के बारे में ये दस तरह की बराबरी समझ से पैदा होती है।

*

328. कितनी तरह की सोच फायदेमंद होती है? कितनी नुकसानदायक होती है? कितनी अनिश्चित होती है?

बनावट के बारे में पंद्रह तरह की बराबरी फायदेमंद होती है। बनावट के बारे में तीन तरह की बराबरी अनिश्चित होती है। बनावट के बारे में कोई भी बराबरी फायदेमंद नहीं होती।

329. [अब] आत्म-चिंतन और संयम की समझ
[इस प्रकार है]: ज्ञान के आठ
क्षेत्र हैं: दो सामान्य मनुष्यों
के लिए, तीन दीक्षा
प्राप्त लोगों के लिए, और
तीन उस व्यक्ति के लिए जो लालची नहीं है,
जिससे उसका ज्ञान दूर हो गया है।

ध्यान लगाने के लिए आठ
शर्तें हैं, और ज्ञान के लिए
भी दस क्षेत्र हैं: ये
अठारह तरह की शांति हैं,
जो खुद तीनों तरह की मुक्ति
की शर्तें हैं।

अतः जिसने समझ के साथ इन अठारह
गुणों को उत्पन्न कर लिया है, वह सृष्टि
के विषय में समभाव रखने
में कुशल है, और इसलिए विभिन्न
दृष्टिकोण उसे विचलित नहीं कर सकते।

*

330. ज्ञान का मतलब है कि जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया

"मुक्ति की इच्छा, सोच-विचार और शांति की समझ, निर्माण के बारे में शांति के प्रकारों का ज्ञान है।"



[अध्याय X. - वंश परिवर्तन]

331. यह कैसे है कि उभरने की समझ और बाहरी चीज़ों से दूर हो जाना ही वंश-परिवर्तन का ज्ञान है?

332. यह होने पर काबू पाता है, इसलिए यह वंश का बदलाव है। यह होने पर काबू पाता है,... निशान... जमा होना... दोबारा जन्म से जुड़ना... मंज़िल... पीढ़ी... फिर से बनना। जन्म... बुढ़ापा... बीमारी... मौत। दुख, . . विलाप... . . . यह निराशा पर काबू पाता है, इसलिए यह वंश का बदलाव है। यह बाहरी तौर पर बनने के निशान पर काबू पाता है, इसलिए यह वंश का बदलाव है।

यह नॉन-एवरेजिंग में जाता है, इस तरह यह वंश का बदलाव है। यह नॉन-घटना में जाता है, यह नॉन-डेस्पेयर में जाता है, इस तरह यह वंश का बदलाव है। यह समाप्ति, निब्बान में जाता है, इस तरह यह वंश का बदलाव है।

उत्पन्न होने पर काबू पाकर, यह न होने में चला जाता है, इस तरह यह वंश का बदलाव है। घटित होने पर काबू पाकर, यह न होने में चला जाता है। निराशा पर काबू पाकर, यह निराशा न होने में चला जाता है, इस तरह यह वंश का बदलाव है। बाहरी रूप से बनने के संकेतों पर काबू पाकर, यह समाप्ति, निब्बान में चला जाता है, इस तरह यह वंश का बदलाव है।

333. यह उठने से निकलता है, इसलिए यह वंश का बदलाव है.... यह निराशा से निकलता है, इसलिए यह वंश का बदलाव है। यह बाहरी रूप से बनने के निशान से निकलता है, इसलिए यह वंश का बदलाव है।

यह नॉन-एराइज़िंग में एंटर करता है, इस तरह यह वंश का चेंज है... यह नॉन-डेसरैश में एंटर करता है, इस तरह यह वंश का चेंज है। यह एंडेशन, निब्बान में एंटर करता है, इस तरह यह वंश का चेंज है।

उत्पत्ति से निकलकर वह अनति में प्रवेश करता है, इस प्रकार वह वंश परिवर्तन है... [67] निराशा से निकलकर वह गैर-निराशा में प्रवेश करता है, इस प्रकार वह वंश परिवर्तन है। बाह्य रूप से रचनाओं के चिह्न से निकलकर वह निरोध, निब्बान में प्रवेश करता है, इस प्रकार वह वंश परिवर्तन है।



334. यह उठने से दूर हो जाता है, इसलिए यह वंश का बदलाव है... यह निराशा से दूर हो जाता है, इसलिए यह वंश का बदलाव है। यह बाहरी तौर पर बनने के निशान से दूर हो जाता है, इसलिए यह वंश का बदलाव है।

यह नॉन-एराइज़िंग में एंटर करता है, इस तरह यह वंश का चेंज है... यह नॉन-डेसराइज़ में एंटर करता है, इस तरह यह वंश का चेंज है। यह एंडेशन, निब्बान में एंटर करता है, इस तरह यह वंश का चेंज है।

उत्पन्न होने से मुँह मोड़कर, यह न होने में चला जाता है, इस तरह यह वंश का परिवर्तन है... निराशा से मुँह मोड़कर, यह निराशा न होने में चला जाता है, इस तरह यह वंश का परिवर्तन है। बाहरी रूप से बनने के संकेत से मुँह मोड़कर, यह समाप्ति, निब्बान में चला जाता है, इस तरह यह वंश का परिवर्तन है।

*

335. शांति से वंश बदलने के कितने विचार आते हैं? समझ से वंश बदलने के कितने विचार आते हैं?

वंश बदलने के आठ विचार शांति से आते हैं। वंश बदलने के दस विचार समझ से आते हैं।

336. शांति से वंश परिवर्तन के कौन से आठ विचार उत्पन्न होते हैं?

प्रथम झाना प्राप्त करने के उद्देश्य से यह बाधाओं पर विजय प्राप्त करता है, इस प्रकार यह वंश परिवर्तन है। द्वितीय झाना प्राप्त . . . करने के उद्देश्य से [और इसी प्रकार धारा 326 तक]... [68] न तो बोध और न ही गैर-बोध से युक्त आधार की प्राप्ति के उद्देश्य से यह शून्यता से युक्त आधार की बोध पर विजय प्राप्त करता है, इस प्रकार यह वंश परिवर्तन है।

वंश परिवर्तन के ये आठ विचार शांति से उत्पन्न होते हैं।

337. वंश परिवर्तन के कौन से दस विचार अंतर्दृष्टि से उत्पन्न होते हैं?

स्ट्रीम-एंट्री पाथ पाने के लिए यह उठने, होने,... [और इसी तरह §327 तक]... निराशा, बाहरी रूप से बनने के संकेत पर काबू पाता है, इस प्रकार यह वंश का बदलाव है। स्ट्रीम-एंट्री का फल पाने के लिए यह उठने,... निराशा, बाहरी रूप से बनने के संकेत पर काबू पाता है, इस प्रकार यह वंश का बदलाव है। एक बार लौटने वाले पाथ को पाने के लिए... एक बार लौटने का फल... न लौटने वाला पाथ,.. न लौटने का फल.. अरहंत पाथ.... <अरहंत होने का फल.. खालीपन > <बिना निशान . . . वाले रहने> को पाने के लिए यह उठने,... निराशा, संकेत पर काबू पाता है बाहरी रूप से बनने वाले रूप, इस प्रकार यह वंश का परिवर्तन है। वंश परिवर्तन के ये दस विचार समझ से आते हैं।

338. वंश बदलने के कितने विचार फ़ायदेमंद हैं? कितने फ़ायदेमंद नहीं हैं? कितने अनिश्चित हैं?

वंश बदलने के पंद्रह विचार फ़ायदेमंद हैं। वंश बदलने के तीन विचार अनिश्चित हैं। वंश बदलने का कोई भी विचार फ़ायदेमंद नहीं है।

339.

भौतिकवादी और इसके विपरीत,
इच्छा और इच्छाहीनता,
बंधनग्रस्त और बंधनमुक्त
भी, उभरा और अप्रकट भी।

कंसंट्रेशन के लिए आठ शर्तें,
और ज्ञान के लिए भी दस डोमेन:
ये अठारह तरह के वंश बदलने
के विचार हैं।
जो स्वयं तीनों प्रकार की
मुक्ति के लिए शर्तें हैं।

अतः जिसने समझ के द्वारा इन अठारह
गुणों को उत्पन्न कर लिया है, वह उदय
होने के साथ-साथ विमुख होने
में भी कुशल है, अतः विभिन्न
दृष्टियाँ उसे विचलित नहीं कर सकतीं।

*

340. ज्ञान उस अर्थ में है जो जाना जाता है और समझ उस अर्थ में है कि उसे समझा जाता है। इसीलिए कहा गया है: 'आकाश को समझना और बाह्य से विमुख होना वंश परिवर्तन ज्ञान है' [69]

* * *

[अध्याय XI- पथ]

341. यह कैसे है कि उद्भव की समझ और दोनों [बाहरी और आंतरिक] से विमुख होना ही मार्ग का ज्ञान है?

342. स्ट्रीम-एंट्री पथ के क्षण में:

सही नज़र का मतलब है (a) गलत नज़र से निकलना, और यह गलतियों और उनके कारण होने वाले जमाव से निकलना, और (b) बाहर से यह सभी निशानियों से निकलना; इसलिए कहा गया: 'रास्ते का ज्ञान निकलना समझना और दोनों से दूर हो जाना है'।

सही विचार, (a) की ओर निर्देशित करने के अर्थ में उभरता है...
गले लगाने के अर्थ में सही बोलना (अ) उभर कर आता है। . .
उत्पत्ति के अर्थ में सही कर्म (अ) का उदय होता है। . .
शुद्धि के अर्थ में सही जीवन जीना (a) उभर कर आता है। . .
प्रयास करने के अर्थ में सम्यक प्रयास (अ) उभर कर आता है। . .
सही माइंडफुलनेस, स्थापित करने के अर्थ में (a) उभरता है।

ध्यान भटकने से बचने के अर्थ में सही एकाग्रता (a) गलत एकाग्रता से निकलती है और यह गंदगी और गंदगी से निकलती है

जो उनके परिणामस्वरूप होते हैं, और (b) बाहरी रूप से, यह सभी संकेतों से उभरता है; इसलिए कहा गया था: "रास्ते का ज्ञान उभरने की समझ है और दोनों से दूर हो जाना है।"

343. एक बार वापसी के रास्ते के पल में:

देखने के मतलब में सही नज़र (70)... ध्यान भटकने न देने के मतलब में सही एकाग्रता (a) कामुकता की इच्छाओं के लालच और विरोध की बड़ी बेड़ियों से, कामुकता की इच्छाओं के लालच और विरोध की बड़ी अंदरूनी आदतों से निकलती है, और यह बुराइयों और उनके कारण होने वाले जमाव से निकलती है, और (b) बाहर से यह सभी निशानियों से निकलती है; इसलिए कहा गया: 'रास्ते का ज्ञान उभरने को समझना और दोनों से दूर हो जाना है'।

344. नॉन-रिटर्न पथ के क्षण में:

देखने के मतलब में सही नज़र... ध्यान भटकने न देने के मतलब में सही एकाग्रता, (a) कामुकता की इच्छाओं के लालच और विरोध की दूसरी बेड़ियों से, कामुकता की इच्छाओं के लालच और विरोध की दूसरी अंदरूनी आदतों से, और यह बुराइयों और उनके कारण बनने वाले जमाव से निकलती है, और (b) बाहर से यह सभी निशानियों से निकलती है; इसलिए कहा गया: 'रास्ते का ज्ञान उभरने को समझना और दोनों से दूर हो जाना है'।

345. अरहंत पथ के समय:

देखने के अर्थ में सही नज़र... ध्यान भटकने न देने के अर्थ में सही एकाग्रता (a) चीज़ों के लालच से, चीज़ों के लालच से, घमंड से, बेचैनी से, अज्ञानता से, घमंड की अंदरूनी प्रवृत्तियों से, अज्ञानता से निकलती है, और यह बुराइयों और उनके कारण होने वाले जमाव से निकलती है, और (b) बाहर से यह सभी निशानियों से निकलती है; इसलिए कहा गया: 'रास्ते का ज्ञान उभरने को समझना और दोनों से दूर हो जाना है'।

346. वह अजन्मे को जन्मे के साथ खा जाता है (भजपेति से पढ़ें):

इसी तरह (पढ़ें) झाना को इसका नाम मिला
है। झाना-मुक्ति में कौशल के
ज़रिए अलग-अलग नज़रिए उसे हिला नहीं पाएंगे।

अगर ध्यान लगाने के बाद वह समझ से देखता
है, और इसी तरह समझ के बाद वह ध्यान लगाता
है, तो समझ और शांति बराबर और
एक साथ जुड़कर आगे बढ़ती है।

बनने को दर्दनाक और
खत्म होने को सुखद
देखकर, दोनों से समझ उभरती है, अमर
अवस्था को छूने के लिए।

वह मुक्ति का रास्ता जानता
है, वह अंतर और एकता में माहिर है;
जब वह दो तरह के ज्ञान में माहिर हो जाता है, तो
अलग-अलग नज़रिए उसे हिला नहीं सकते।

•

347. ज्ञान उस अर्थ में है जो जाना जाता है और समझ उस अर्थ में है कि उसे समझा जाता है। इसलिए कहा गया है: 'उद्भव को समझना और दोनों से विमुख हो जाना मार्ग का ज्ञान है।' [71]

• • •

[अध्याय XII. - फल]

348. यह कैसे है कि दांतों को शांत करने की समझ ही फल का ज्ञान है?

349. स्ट्रीम-एंट्री पथ के क्षण में:

देखने के मतलब में सही नज़र गलत नज़र से निकलती है, और यह गलतियों और उनके नतीजे में होने वाले जमाव से निकलती है, और बाहर से यह सभी निशानियों से निकलती है। सही नज़र उस काम के शांत होने से पैदा होती है: यही रास्ते का नतीजा है।

सही विचार, किसी चीज़ की ओर ध्यान दिलाने के अर्थ में उभरता है...
सही बात कहने का मतलब है गले लगाना...
सही काम करने का मतलब है शुरुआत करना...
शुद्धि के अर्थ में सही जीवन जीना उभर कर आता है।
ज़ोर लगाने के मतलब में सही कोशिश सामने आती है।
स्थापित करने के अर्थ में सही सचेतनता उभरती है।

ध्यान भंग न होने के अर्थ में सम्यक् समाधि गलत समाधि से उत्पन्न होती है तथा यह विकारों एवं उनके परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले स्कंधों से उत्पन्न होती है, तथा बाह्य रूप से यह सभी लक्षणों से उत्पन्न होती है। सम्यक् समाधि [72] उस कार्य के शांत होने के कारण उत्पन्न होती है: यही मार्ग का फल है।

350. एक बार वापसी के रास्ते के पल में:

देखने के अर्थ में सही दृष्टि... गैर-विचलित होने के अर्थ में सही एकाग्रता, कामुक इच्छाओं के लालच और प्रतिरोध के स्थूल बंधनों से, कामुक-इच्छाओं के लालच और प्रतिरोध की स्थूल अंतर्निहित प्रवृत्तियों से उभरती है, और यह विकारों और

उनके परिणामस्वरूप होने वाले योग, और बाहरी रूप से यह सभी संकेतों से उभरता है। उस कार्य के शांत होने से सही दृष्टि उत्पन्न होती है: यही मार्ग का फल है।

351. नॉन-रिटर्न पथ के क्षण में:

देखने के मतलब में सही नज़र... ध्यान भटकने से बचने के मतलब में सही एकाग्रता, कामुकता की इच्छाओं के लालच और विरोध की दूसरी बेड़ियों से, कामुकता की इच्छाओं के लालच और विरोध की दूसरी अंदरूनी आदतों से निकलती है, और यह बुराइयों और उनके कारण बनने वाले जमाव से निकलती है, और बाहर से यह सभी निशानियों से निकलती है। सही नज़र उस काम के शांत होने से पैदा होती है: यही रास्ते का नतीजा है।

352. अरहंत पथ के क्षण में:

देखने के मतलब में सही नज़र... ध्यान भटकने से बचने के मतलब में सही एकाग्रता, चीज़ों के लालच से, चीज़ों के लालच से, घमंड से, बेचैनी से, अज्ञानता से, घमंड की अंदरूनी आदतों से, चीज़ों के लालच से, और अज्ञानता से निकलती है, और यह बुराइयों और उनके जमाव से निकलती है, और बाहर से यह सभी निशानियों से निकलती है। सही नज़र उस काम के शांत होने से पैदा होती है: यही रास्ते का नतीजा है।

*

353. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझने का काम किया जाए। इसलिए कहा गया: 'कामों को शांत करने की समझ ही नतीजे का ज्ञान है'।

* * *

[अध्याय XIII.- मुक्ति]

354. यह कैसे है कि जो कट गया है, उस पर विचार करने की समझ ही मुक्ति का ज्ञान है?

355. स्ट्रीम-एंट्री रास्ते से नीचे दी गई कमियां उसकी अपनी जानकारी में पूरी तरह से खत्म हो जाती हैं:

1. व्यक्तित्व के बारे में [गलत] दृष्टिकोण,
2. अनिश्चितता,
3. गुण और कर्तव्य की गलतफहमी।

i. (गलत) नज़रिए की अंदरूनी प्रवृत्ति,
ii. अनिश्चितता की अंदरूनी प्रवृत्ति।

संज्ञान इन पाँच अपूर्णताओं से उनके आसक्ति के तरीकों के साथ मुक्त, पूरी तरह मुक्त हो जाता है। [73]

ज्ञान का मतलब है उससे छुटकारा पाना और समझ का मतलब है उसे समझने का काम। इसलिए कहा गया: 'जो कट गया है, उस पर सोचने की समझ ही छुटकारा पाने का ज्ञान है।'

356. एक बार लौटने वाले रास्ते से उसकी अपनी समझ में ये कमियां पूरी तरह खत्म हो जाती हैं:

4. कामुक इच्छाओं के लालच की मोटी बेड़ियाँ,
5. प्रतिरोध की बड़ी बेड़ियाँ,
iii. कामुक इच्छाओं के लिए लालच की गहरी अंदरूनी प्रवृत्ति,
iv. विरोध की बड़ी अंदरूनी प्रवृत्ति।

ज्ञान इन चार कमियों और उनके जुनून के तरीकों से पूरी तरह मुक्त हो जाता है।

ज्ञान का मतलब है उससे छुटकारा पाना और समझ का मतलब है उसे समझने का काम। इसलिए कहा गया: 'जो कट गया है, उस पर सोचने की समझ ही छुटकारा पाने का ज्ञान है।'

357. न लौटने वाले रास्ते से उसकी अपनी समझ में ये कमियां पूरी तरह खत्म हो जाती हैं:

4. कामुक इच्छाओं के लालच की दूसरी बेड़ी,
5. प्रतिरोध का द्वितीयक बंधन,
iii. कामुक इच्छाओं के लिए लालच की दूसरी अंदरूनी प्रवृत्ति,
iv. विरोध की दूसरी अंदरूनी प्रवृत्ति।

ज्ञान इन चार कमियों और उनके जुनून के तरीकों से पूरी तरह मुक्त हो जाता है।

. ज्ञान का मतलब है उससे छुटकारा पाना और समझ का मतलब है उसे समझने का काम। इसलिए कहा गया: 'जो कट गया है, उस पर सोचने की समझ ही छुटकारा पाने का ज्ञान है।'

358. अरहंत मार्ग से उसके अपने ज्ञान में निम्नलिखित दोष पूरी तरह से कट जाते हैं:

6. भौतिक चीज़ों का लालच,
7. अमूर्त [अस्तित्व] के लिए लालच,
8. दंभ (घमंड),
9. आंदोलन,
10. अज्ञानता,
v. अहंकार (घमंड) की अंतर्निहित प्रवृत्ति,
vi. लालच की अंदरूनी प्रवृत्ति,
vii. अज्ञानता की अंदरूनी प्रवृत्ति।

ज्ञान इन आठ कमियों और उनके जुनून से पूरी तरह मुक्त हो जाता है।

ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'जो कट गया है, उस पर विचार करने की समझ ही मुक्ति का ज्ञान है।'

* *
*

[अध्याय XIV.-समीक्षा]

359. यह कैसे होता है कि विचारों में अंतर्दृष्टि की समझ, फिर रिव्यू करने का ज्ञान बन जाती है?

360. स्ट्रेनी-एंट्री पथ के क्षण में:

तब देखने के अर्थ में सम्यक् दृष्टि प्राप्त होती है, तब निर्देश करने के अर्थ में सम्यक् विचार प्राप्त होता है, गले लगाने के अर्थ में सम्यक् भाषण..., प्रारंभ करने के अर्थ में सम्यक् कार्य करना... [74] शुद्धि के अर्थ में सम्यक् जीवन..., प्रयास करने के अर्थ में सम्यक् प्रयास.... स्थापित करने के अर्थ में सम्यक् जागरूकता..., तब ध्यान भंग न होने के अर्थ में सम्यक् एकाग्रता प्राप्त होती है; तब स्थापित करने के अर्थ में माइंडफुलनेस ज्ञान कारक प्राप्त होता है, जांच-पड़ताल के अर्थ में विचारों की जांच ज्ञान कारक..., प्रयास करने के अर्थ में ऊर्जा ज्ञान कारक..., एकाग्रता ज्ञान कारक शांति के अर्थ में शांति ज्ञान कारक, ध्यान भंग न होने के अर्थ में एकाग्रता ज्ञान कारक, प्रतिबिंब के अर्थ में सम्यक्त्व ज्ञान कारक तब प्राप्त होता है;

तब अविश्वास द्वारा अडिगता के अर्थ में विश्वास शक्ति प्राप्त होती है, आलस्य द्वारा अडिगता के अर्थ में ऊर्जा शक्ति..., लापरवाही से अडिगता के अर्थ में जागरूकता शक्ति.... आंदोलन द्वारा अडिगता के अर्थ में एकाग्रता शक्ति..., अज्ञानता द्वारा अडिगता के अर्थ में समझ शक्ति तब प्राप्त होती है;

तब संकल्प के अर्थ में आस्था संकाय प्राप्त होता है, परिश्रम के अर्थ में ऊर्जा संकाय..., स्थापित करने के अर्थ में दिमागीपन संकाय..., गैर-विचलित होने के अर्थ में एकाग्रता संकाय..., देखने के अर्थ में समझ संकाय प्राप्त होता है;

फिर दबदबे के मतलब में काबिलियत आती है; मज़बूती के मतलब में ताकतें..., बाहर निकलने के मतलब में ज्ञान देने वाले फैक्टर..., वजह के मतलब में रास्ता..... बनाने के मतलब में ध्यान की नींव। सही . . , कोशिशें

कोशिश करना..., सफल होने के मतलब में सफलता के आधार। . . फिर
फिर सच्चाई के मतलब में असलियतें सामने आती हैं;

ध्यान भटकने न देने के मतलब में शांति, सोचने के मतलब में समझ... एक काम के मतलब में शांति और समझ..., ज़्यादा न होने के मतलब में जोड़ी बनाना;

संयम के अर्थ में पुण्य की शुद्धि तब प्राप्त होती है, गैर-विचलित होने के अर्थ में ज्ञान की शुद्धि। ... देखने के अर्थ में दृष्टि की शुद्धि..., मुक्त होने के अर्थ में मुक्ति.... प्रवेश के अर्थ में पहचान..., त्यागने के अर्थ में मुक्ति..., काट देने के अर्थ में विनाश का ज्ञान तब प्राप्त होता है; [75]

जड़ के अर्थ में, फिर जोश आता है; शुरू होने के अर्थ में, ध्यान...; मिलाने के अर्थ में, संपर्क...; मिलने के अर्थ में, महसूस करना...; सबसे आगे होने के अर्थ में, एकाग्रता...; दबदबे के अर्थ में, ध्यान...; सबसे ऊपर होने के अर्थ में, समझ...; मूल (स्वाद) होने के अर्थ में, मुक्ति...; अंत के अर्थ में, निब्बान, जो अमर में विलीन हो जाता है, फिर आता है।

बाहर आने के बाद, वह रिव्यू करता है। फिर इन आइडिया पर पहुंचा जाता है।

361. धारा प्रवेश के फलित होने के समय:

फिर देखने के मतलब में सही नज़रिया आता है; सही विचार... [और इसी तरह §360 तक)..., छोड़ देने के मतलब में मुक्ति..., शांति के मतलब में न होने का ज्ञान आता है; फिर

जड़ के मतलब में जोश आता है; ध्यान... (और इसी तरह §360 तक)..., अंत के मतलब में निब्बान, जो अमर में मिल जाता है, तब आता है।

बाहर आने के बाद, वह रिव्यू करता है। फिर इन आइडिया पर पहुंचा जाता है।

362. एक बार वापसी के रास्ते के पल में:

. . . [जैसा कि धारा 360 में है]...

363. एक बार की वापसी के फल के क्षण में:

. . . [जैसा कि धारा 361 में है]...

364. नॉन-रिटर्न पथ के क्षण में:

. . . [जैसा कि धारा 360 में है]...

365. न लौटने के फल के क्षण में:

. . . [जैसा कि धारा 361 में है]...

366. अरहंत पथ के क्षण में:

. . . [जैसा कि धारा 360 में है]...

367. अरहंतत्व की सिद्धि के समय:

सम्यक् दृष्टि... [इत्यादि धारा 361 से लेकर आगे तक]... [76] निब्बार्ण, जो अमर में विलीन हो जाता है, अंत के अर्थ में तब पहुँचता है। उभरने के बाद वह समीक्षा करता है। तब इन विचारों तक पहुँचा जाता है।

•

368. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'विचारों में समझ की समझ, फिर उस तक पहुँचना, रिव्यू करने का ज्ञान है'।

* * *

[अध्याय XV.-आंतरिक रूप से परिभाषित करना]

369. यह कैसे है कि अंदरूनी तौर पर डिफाइन करने की समझ फिजिकल बेसिस में अंतर का ज्ञान है?

370. वह अंदरूनी तौर पर आइडिया को कैसे डिफाइन करता है?

वह आंख को अंदर से परिभाषित करता है, वह कान को अंदर से परिभाषित करता है,... नाक... जीभ... शरीर..., वह मन को अंदर से परिभाषित करता है।

371. वह आँख को अंदर से कैसे परिभाषित करता है?

वह इस प्रकार परिभाषित करता है: आंख अज्ञान से उत्पन्न होती है। वह इस प्रकार परिभाषित करता है: आंख तृष्णा से उत्पन्न होती है... आंख क्रिया से उत्पन्न होती है... आंख पोषण से उत्पन्न होती है... आंख चार महान संस्थाओं से (चिपकने से) प्राप्त होती . . . है आंख उत्पन्न होती है... वह इस प्रकार परिभाषित करता है: आंख प्राप्त होती है। वह इस प्रकार परिभाषित करता है: आंख, न होने के कारण, उत्पन्न होने के कारण, नहीं होगी। वह आंख को स्थानिक रूप से परिमित के रूप में परिभाषित करता है। वह इस प्रकार परिभाषित करता है: आंख अस्थिर, शाश्वत, परिवर्तन के अधीन है। वह इस प्रकार परिभाषित करता है: आंख अस्थायी है, निर्मित है, आश्रित रूप से उत्पन्न हुई है, विनाश के अधीन है, पतन के अधीन है, फीके पड़ने के अधीन है, समाप्ति के अधीन है। वह आंख को अस्थायी के रूप में परिभाषित करता है, स्थायी नहीं; वह इसे दर्दनाक के रूप में परिभाषित करता है, सुखद के रूप में नहीं; वह इसे गैर-आत्म के रूप में परिभाषित करता है, स्वयं के रूप में नहीं; वह निष्पक्ष हो जाता है, वह प्रसन्न नहीं होता है; वह लालच के लुप्त होने का कारण बनता है, [77] वह इसे भड़काता नहीं है; वह समाप्ति का कारण बनता है, वह उत्पन्न नहीं होता है; वह छोड़ देता है, वह पकड़ता नहीं है। नश्वर के तौर पर डिफाइन करने पर, वह स्थायित्व की समझ छोड़ देता है; दर्दनाक के तौर पर डिफाइन करने पर, वह सुख की समझ छोड़ देता है; खुद से अलग डिफाइन करने पर, वह खुद की समझ छोड़ देता है; वैराग्यवान होने पर, वह खुशी छोड़ देता है; फीका पड़ने पर, वह लालच छोड़ देता है; समाप्ति होने पर, वह शुरुआत छोड़ देता है; छोड़ देने पर, वह पकड़ना छोड़ देता है। इस तरह वह अंदर से आंख को डिफाइन करता है।

372. वह कान को अंदर से कैसे परिभाषित करता है?

. . . [जैसा कि धारा 371 में है]...

373. वह नाक को अंदर से कैसे परिभाषित करता है?

. . . [जैसा कि धारा 371 में है]...

374. वह जीभ को अंदर से कैसे परिभाषित करता है?

. . . [जैसा कि धारा 371 में है]...

375. वह शरीर को अंदर से कैसे परिभाषित करता है? (जैसा कि
. . . धारा 371 में है)...
376. वह मन को अंदर से कैसे परिभाषित करता है?
. . . [जैसा कि धारा 371 में है]... इस तरह से वह आंतरिक रूप से मन को परिभाषित करता है।

*

377. इसी तरह वह अंदर से विचारों को समझाता है। ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'अंदर से डिफाइन करने की समझ फिजिकल बेस में अंतर का ज्ञान है'।

* * *

[अध्याय XVI.-बाह्य रूप से परिभाषित करना]

378. यह कैसे है कि बाहरी रूप से परिभाषित करने की समझ डोमेन [भौतिक आधारों/के] में अंतर का ज्ञान है?

379. वह विचारों को बाहरी तौर पर कैसे परिभाषित करता है?
वह दिखने वाली चीज़ों को बाहर से बताता है, वह आवाज़ों... गंधों, स्वादों... दिखने वाली चीज़ों को बताता है... वह विचारों को बाहर से बताता है।
380. वह बाहर से दिखने वाली चीज़ों को कैसे बताता है?
वह इस प्रकार परिभाषित करता है: दृश्यमान वस्तुएं अज्ञान से उत्पन्न होती हैं। वह... [और इसी प्रकार धारा 371 से लेकर [78] तक... त्याग कर, वह लोभ को त्याग देता है। इस प्रकार वह बाह्य रूप से दृश्यमान वस्तुओं को परिभाषित करता है।
381.-385. वह आवाज़ों को बाहरी तौर पर कैसे डिफाइन करता है... (और इसी तरह §§372.-376 तक)... इसी तरह वह विचारों को बाहरी तौर पर डिफाइन करता है।
386. [इसी तरह वह विचारों को बाहरी रूप से परिभाषित करता है।]
ज्ञान उस अर्थ में है जिसे जाना जाता है और समझ उस अर्थ में है कि उसे समझा जाता है। इसलिए यह कहा गया था: 'बाहरी रूप से परिभाषित करने की समझ डोमेन [भौतिक आधारों] में अंतर का ज्ञान है'। [79]

* * *

[अध्याय XVII.- व्यवहार]

387. यह कैसे है कि व्यवहार को परिभाषित करने की समझ व्यवहार में अंतर का ज्ञान है?

388. व्यवहार : व्यवहार तीन प्रकार के होते हैं: चेतना का व्यवहार, अज्ञान का व्यवहार, ज्ञान का व्यवहार।

389. चेतना का व्यवहार क्या है?

दिखने वाली चीज़ों को देखने के मकसद से फंक्शनल इनडिटरमिनेट एडवर्टाइज़िंग का काम चेतना का एक व्यवहार है। दिखने वाली चीज़ों को आँखों की चेतना के तौर पर देखने का मतलब चेतना का एक व्यवहार है। नतीजा मन-सिद्धांत [होना] क्योंकि दिखने वाली चीज़ें देखी गई हैं, इसलिए (चीज़) पर डायरेक्ट करने का काम चेतना का एक व्यवहार है। नतीजा मन-चेतना-सिद्धांत [होना] क्योंकि दिखने वाली चीज़ों पर डायरेक्ट करने का काम चेतना का एक व्यवहार है।

आवाज़ें सुनने के मकसद से फंक्शनल इनडिटरमिनेट एडवर्टाइज़िंग का काम चेतना का एक व्यवहार है। कान की चेतना के तौर पर आवाज़ें सुनने का मतलब चेतना का एक व्यवहार है... (और ऊपर जैसा बताया गया है)...

गंध सूंघने के मकसद से फंक्शनल इनडिटरमिनेट एडवर्टाइजिंग का काम....

फ्लेवर चखने के मकसद से फंक्शनल इनडिटरमिनेट एडवरटाइजिंग का काम...

दिखने वाली चीज़ों को छूने के मकसद से फंक्शनल इनडिटरमिनेट एडवर्टाइज़िंग का काम...

विचारों को पहचानने के उद्देश्य से कार्यात्मक अनिर्धारित विज्ञापन का कार्य चेतना का एक व्यवहार है। विचारों को मन-चेतना के रूप में पहचानने का अर्थ चेतना का एक व्यवहार है। विचारों को पहचाने जाने के कारण [वस्तु] पर निर्देशित करने के कार्य के रूप में परिणामी मन-सिद्धांत (घटित) चेतना का एक व्यवहार है। विचारों पर निर्देशित करने के कारण परिणामी मन-चेतना-सिद्धांत (घटित) चेतना का एक व्यवहार है। [80]

390. चेतना का व्यवहार : किस अर्थ में चेतना का व्यवहार-नेस?

यह बिना लालच के व्यवहार करता है: यह चेतना का व्यवहार है। यह बिना नफ़रत के व्यवहार करता है: यह चेतना का व्यवहार है। यह बिना भ्रम के व्यवहार करता है:... यह बिना घमंड (गर्व) के व्यवहार करता है:... यह बिना [गलत) नज़रिए के व्यवहार करता है:... यह बिना बेचैनी के व्यवहार करता है:। यह बिना अनिश्चितता के व्यवहार करता है:... यह बिना किसी अंदरूनी टेंडेंसी के व्यवहार करता है:... यह लालच से अलग होकर व्यवहार करता है:... यह नफ़रत से अलग होकर व्यवहार करता है:... यह भ्रम से अलग होकर व्यवहार करता है:... यह घमंड (गर्व) से अलग होकर व्यवहार करता है: ... यह (गलत) दृष्टिकोण से अलग व्यवहार करता है:... यह आंदोलन से अलग व्यवहार करता है:... यह अनिश्चितता से अलग व्यवहार करता है:... यह अंतर्निहित प्रवृत्ति से अलग व्यवहार करता है:... यह लाभदायक कार्यों से अलग व्यवहार करता है... यह लाभहीन कार्यों से अलग व्यवहार करता है:... यह निंदनीय कार्यों से अलग व्यवहार करता है:... यह निंदनीय कार्यों से अलग व्यवहार करता है:... यह

अंधेरे कार्य:... यह उज्ज्वल कार्यों से अलग व्यवहार करता है:... यह व्यवहार करता है खुशी देने वाले कामों से अलग:... यह दर्द देने वाले कामों से अलग व्यवहार करता है: यह खुशी देने वाले कामों से अलग व्यवहार करता है: . . . यह दर्द देने वाले कामों से अलग व्यवहार करता . . . है: यह पहचानी गई चीज़ (ऑब्जेक्ट) के प्रति व्यवहार करता है: यह चेतना का व्यवहार है। चेतना का व्यवहार ऐसा है: यह चेतना का व्यवहार है। यह पहचान नैचुरली एब्सेंस के अर्थ में शुद्ध है। अपवित्रता का: यह चेतना का व्यवहार है।

यह चेतना का व्यवहार है।

391. अनजाने का व्यवहार क्या है?

सुखद दृश्यमान वस्तुओं के प्रति लालच की प्रेरणा के लिए कार्यात्मक अनिश्चित विज्ञापन का कार्य चेतना का व्यवहार है: लालच की प्रेरणा का कार्य अनजाना व्यवहार है। अप्रिय दृश्यमान वस्तुओं के प्रति घृणा की प्रेरणा के लिए कार्यात्मक अनिश्चित विज्ञापन का कार्य चेतना का व्यवहार है: घृणा की प्रेरणा का कार्य अनजाना व्यवहार है। किसी वस्तु के लिए भ्रम की प्रेरणा के लिए कार्यात्मक अनिश्चित विज्ञापन का कार्य, चाहे वह [लालच या घृणा] हो, चेतना का व्यवहार है: भ्रम की प्रेरणा का कार्य अनजाना व्यवहार है। बेड़ी के रूप में दंभ (गर्व) की प्रेरणा के लिए कार्यात्मक अनिश्चित विज्ञापन का कार्य चेतना का व्यवहार है: दंभ (गर्व) की प्रेरणा का कार्य अनजाना व्यवहार है। गलतफहमी (81) के तौर पर (गलत) नज़रिए को बढ़ावा देने के मकसद से फंक्शनल अनिश्चित विज्ञापन देने का काम चेतना का व्यवहार है: [गलत] नज़रिए को बढ़ावा देने का काम अनजान होने का व्यवहार है। ध्यान भटकाने के मकसद से बेचैनी को बढ़ावा देने के मकसद से फंक्शनल अनिश्चित विज्ञापन देने का काम चेतना का व्यवहार है: बेचैनी को बढ़ावा देने का काम अनजान होने का व्यवहार है। अनिश्चितता को नतीजाहीनता के तौर पर बढ़ावा देने के मकसद से फंक्शनल अनिश्चित विज्ञापन देने का काम चेतना का व्यवहार है: अनिश्चितता को बढ़ावा देने का काम अनजान होने का व्यवहार है। अंदरूनी-रुझान को बढ़ावा देने के मकसद से फंक्शनल अनिश्चित विज्ञापन देने का काम, हमेशा पक्का न होने के तौर पर, चेतना का व्यवहार है। अंदरूनी-रुझान को बढ़ावा देने का काम अनजान होने का व्यवहार है। जानना।

आवाज़ों के लिए लालच के इंपल्स के मकसद से फंक्शनल इनडिटरमिनेट एडवर्टाइज़िंग का काम चेतना का व्यवहार है: लालच के इंपल्स का काम अननोन का व्यवहार है। यह काम... [और इसी तरह ऊपर...

. ... गंध के लालच में...

. .. स्वाद के लालच का...

... ठोस चीज़ों के लालच में...

विचारों के प्रति लालच की प्रेरणा के लिए कार्यात्मक अनिर्धारित विज्ञापन का कार्य चेतना का व्यवहार है: लालच की प्रेरणा का कार्य अनभिज्ञता का व्यवहार है।... [और इसी प्रकार ऊपर से लेकर... अंतर्निहित प्रवृत्ति की प्रेरणा के लिए कार्यात्मक अनिर्धारित विज्ञापन का कार्य चेतना का व्यवहार है: अंतर्निहित प्रवृत्ति की प्रेरणा का कार्य अनभिज्ञता का व्यवहार है।

392. अनजाने का व्यवहार: किस अर्थ में अनजाने का व्यवहार?

यह लालच से पेश आता है: यह अनजाने में किया गया व्यवहार है। यह नफ़रत से पेश आता है: यह अनजाने में किया गया व्यवहार है। यह भ्रम से पेश आता है: यह अनजाने में किया गया व्यवहार है। यह दंभ (गर्व) के साथ व्यवहार करता है: यह अनजाने का व्यवहार है... यह (गलत) दृष्टिकोण के साथ व्यवहार करता है:... यह उत्तेजना के साथ व्यवहार करता है: यह अनिश्चितता के साथ व्यवहार करता है: यह अंतर्निहित प्रवृत्ति के साथ व्यवहार करता है: यह लालच से जुड़ा व्यवहार करता है:... यह घृणा से जुड़ा व्यवहार करता है:... यह भ्रम से जुड़ा व्यवहार करता है: यह दंभ (गर्व) के साथ व्यवहार करता है:.. यह [गलत) दृष्टिकोण से जुड़ा व्यवहार करता है: [82] यह उत्तेजना से जुड़ा व्यवहार करता है:... यह अनिश्चितता से जुड़ा व्यवहार करता है:... यह अंतर्निहित प्रवृत्ति के साथ व्यवहार करता है:.. यह लाभदायक कार्यों से अलग व्यवहार करता है: यह लाभहीन कार्यों से जुड़ा व्यवहार करता है: यह निंदनीय कार्यों से जुड़ा व्यवहार करता है:... यह निंदनीय कार्यों से अलग व्यवहार करता है: यह अंधेरे कार्यों से जुड़ा व्यवहार करता ... है: यह उज्ज्वल कार्यों से अलग व्यवहार करता है:... यह खुशी देने वाले कामों से अलग:... यह दर्द देने वाले कामों से जुड़ा हुआ व्यवहार करता है:... यह उस चीज़ के प्रति व्यवहार करता है जिसे जाना नहीं जाता: यह अनजाना व्यवहार है। ऐसा है अनजाना व्यवहार: यह अनजाना व्यवहार

यह अनजान व्यवहार है।

393. ज्ञान का व्यवहार क्या है?

नश्वरता पर सोचने के मकसद से फंक्शनल इनडिटरमिनेट एडवर्टाइज़िंग का काम चेतना का एक व्यवहार है: नश्वरता पर सोचना ज्ञान का एक व्यवहार है। दर्द पर सोचने के मकसद से फंक्शनल इनडिटरमिनेट एडवर्टाइज़िंग का काम... खुद पर न सोचने के मकसद से... वैराग्य पर सोचने के मकसद से... गायब होने पर सोचने के मकसद से... खत्म होने पर सोचने के मकसद से... छोड़ने पर सोचने के मकसद से... विनाश पर सोचने के मकसद से... गिरने पर सोचने के मकसद से... सोचने के मकसद से

परिवर्तन... चिह्नहीन का चिंतन करने के उद्देश्य से... इच्छारहित का चिंतन करने के उद्देश्य से... शून्यता का चिंतन करने के उद्देश्य से। विचारों की अंतर्दृष्टि के उद्देश्य से जो उच्चतर समझ है.. सही ज्ञान और अंतर्दृष्टि के उद्देश्य से... खतरे का चिंतन करने के उद्देश्य से... प्रतिबिंब का चिंतन करने के उद्देश्य से चेतना का एक व्यवहार है: प्रतिबिंब का चिंतन ज्ञान का एक व्यवहार है। चिंतन के उद्देश्य के लिए कार्यात्मक अनिश्चित विज्ञापन का कार्य, दूर मुड़ना चेतना का एक व्यवहार है: दूर मुड़ने का चिंतन ज्ञान का एक व्यवहार है। धारा-प्रवेश पथ ज्ञान का एक व्यवहार है। धारा-प्रवेश का फल... एक बार लौटने का फल... न लौटने का फल... न लौटने का फल। अरहंत मार्ग ज्ञान का एक व्यवहार है। अरहंतत्व का फल ज्ञान का एक व्यवहार है।

394. ज्ञान का व्यवहार: किस अर्थ में ज्ञान का व्यवहार?

यह बिना लालच के व्यवहार करता है: यह ज्ञान का व्यवहार है। यह घृणा के बिना व्यवहार करता है:... यह भ्रम के बिना व्यवहार करता है:... यह दंभ (गर्व) के बिना व्यवहार करता है:... यह (गलत) दृष्टिकोण के बिना व्यवहार करता है:... यह उत्तेजना के बिना व्यवहार करता है:... यह अनिश्चितता के बिना व्यवहार करता है:... यह अंतर्निहित प्रवृत्ति के बिना व्यवहार करता है:... यह लालच से अलग होकर व्यवहार करता है:... यह घृणा से अलग होकर व्यवहार करता है:... यह भ्रम से अलग होकर व्यवहार करता है:... यह दंभ (गर्व) से अलग होकर व्यवहार करता है:... यह [गलत) दृष्टिकोण से अलग होकर व्यवहार करता है:... यह उत्तेजना से अलग होकर व्यवहार करता है:... यह अनिश्चितता से अलग होकर व्यवहार करता है:... यह अंतर्निहित प्रवृत्ति से अलग होकर व्यवहार करता है:... यह लाभदायक कार्रवाई से जुड़कर व्यवहार करता है:... यह लाभहीन कार्यों से अलग होकर व्यवहार करता है:... यह निंदनीय कार्यों से अलग होकर व्यवहार करता है:... यह निंदनीय कार्यों से अलग होकर व्यवहार करता है:... यह अंधेरे कार्यों से अलग होकर व्यवहार करता है:... यह उज्ज्वल कार्यों के साथ: ... यह आनंद देने वाले कार्यों से संबद्ध व्यवहार करता है: ... यह दर्द देने वाले कार्यों से अलग व्यवहार करता है: ... यह आनंद के परिणामस्वरूप होने वाले कार्यों से जुड़ा व्यवहार करता है: ... यह क्रियाओं से अलग व्यवहार करता है: जिसके परिणामस्वरूप दर्द होता है: ... यह ज्ञात के प्रति व्यवहार करता है: यह ज्ञान का व्यवहार है। ऐसा ज्ञान का व्यवहार है: यह ज्ञान का व्यवहार है।

यह ज्ञान का व्यवहार है।

395. चेतना का व्यवहार एक है, अज्ञान का व्यवहार दूसरा है, ज्ञान का व्यवहार दूसरा है।

ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'व्यवहार को समझने की समझ, व्यवहार में अंतर का ज्ञान है'।

* *
*

[अध्याय XVIII.-विमान]

396. यह कैसे है कि चार विचारों को परिभाषित करने की समझ, समतल में अंतर का ज्ञान है?

397. चार प्लेन हैं: सेंसुअल-इच्छा स्फीयर, मैटेरियल स्फीयर, इम्मैटेरियल स्फीयर और अनइनक्लूडेड स्फीयर।

398. सेंसुअल-डिज़ायर स्फीयर प्लेन क्या है? (देखें Dhs 1280)

अविचि नरक को निचली सीमा और परानिमितवास-वट्टी देवताओं को ऊपरी सीमा बनाते हुए, इस अंतराल में मौजूद समूह, सिद्धांत, आधार, भौतिकता, भावना, धारणा, संरचनाएं और चेतना, उनका दायरा यहां है, वे यहां शामिल हैं: ये कामुक-इच्छा क्षेत्र का तल हैं।

399. मटेरियल-स्फीयर प्लेन क्या है? (84) (देखें Dhs 1282)

ब्रह्मलोक को निचली सीमा और अकनिष्ठ (उच्चतम) देवताओं को ऊपरी सीमा मानते हुए, ज्ञान और चेतना के विचार - जो व्यक्ति (ध्यान द्वारा उस लोक को) प्राप्त कर चुका है या जिसका (वहाँ) पुनर्जन्म हुआ है या जो (अरहंत के रूप में) यहाँ और अभी सुख में निवास कर रहा है, उसके साथ-साथ, जिन (विचारों) का क्षेत्र यहाँ है, वे यहाँ शामिल हैं: ये भौतिक-क्षेत्रीय लोक हैं।

400. इन्यूमटेरियल-स्फीयर प्लेन क्या है? (DHS 1284 देखें)

असीम अंतरिक्ष से मिलकर बने आधार के देवताओं को निचली सीमा और न बोध और न अबोध से मिलकर बने आधार के देवताओं को ऊपरी सीमा मानते हुए, ज्ञान और चेतना के विचार - जो उस व्यक्ति में सहवर्ती हैं जिसने पुनर्जन्म लिया है या जो यहां और अभी आराम में निवास कर रहा है, जिन [विचारों] का क्षेत्र यहां है, उन्हें यहां शामिल किया गया है: ये अभौतिक-क्षेत्रीय विमान हैं।

401. अनइनक्लूडेड प्लेन क्या है? (DHS 1291 देखें)

बिना शामिल रास्ते और रास्तों के नतीजे और बिना बना सिद्धांत: ये बिना शामिल प्लेन हैं।

ये चार प्लेन हैं।

*

402. दूसरे चार प्लेन: माइंडफुलनेस के चार बेस, चार सही कोशिशें, कामयाबी के चार बेस (पावर के रास्ते), चार ज्ञाना, चार बिना माप की हालत, चार इम्मटेरियल-स्फीयर हासिल, चार भेदभाव, चार तरह की तरक्की (D iii 228), चार सपोर्टिंग ऑब्जेक्ट (Vbh 332), चार नेक लोगों की विरासत (D iii 224), मदद के चार मौके (Diii 232), चार आशीर्वाद (A ii 32), सच्चे आइडिया में चार कदम (A ii 29).

ये (हर एक) चार प्लेन हैं।

*

403. ज्ञान का मतलब है कि कुछ जाना जा रहा है और समझ का मतलब है कि कुछ समझने का काम किया जा रहा है। इसलिए कहा गया: चार विचारों को परिभाषित करने की समझ ही अंतर का ज्ञान है।

* *
*

[अध्याय XIX.-विचार)

404. यह कैसे है कि नौ विचारों को परिभाषित करने की समझ विचारों में अंतर का ज्ञान है?

405. वह विचारों को कैसे परिभाषित करता है?

वह कामुक-इच्छा-क्षेत्र के विचारों को लाभदायक के रूप में परिभाषित करता है, वह उन्हें लाभहीन के रूप में परिभाषित करता है, वह उन्हें अनिश्चित के रूप में परिभाषित करता है। वह भौतिक-क्षेत्र के विचारों को लाभदायक के रूप में परिभाषित करता है, वह उन्हें अनिश्चित के रूप में परिभाषित करता है। वह अभौतिक विचारों को लाभदायक के रूप में परिभाषित करता है, वह उन्हें अनिश्चित के रूप में परिभाषित करता है। वह असंबद्ध विचारों को लाभदायक के रूप में परिभाषित करता है, वह उन्हें अनिश्चित के रूप में परिभाषित करता है। [85]

406. वह सेंसुअल-इच्छा-क्षेत्र के विचारों को कैसे फ़ायदेमंद बताता है, उन्हें कैसे फ़ायदेमंद बताता है, उन्हें कैसे अनिश्चित बताता है?

वह दस फ़ायदेमंद कामों को फ़ायदेमंद बताते हैं, और दस फ़ायदेमंद कामों को फ़ायदेमंद बताते हैं। वह मैटेरियलिटी और एक्शन-रिज़ल्ट (कॉग्निजेंस) और फंक्शनल [कॉग्निजेंस] को इनडिटरमिनेट बताते हैं। इस तरह वह सेंसुअल-डिज़ायर-स्फेयर आइडियाज़ को फ़ायदेमंद बताते हैं, उन्हें अनफ़िटेबल बताते हैं, उन्हें इनडिटरमिनेट बताते हैं।

वह मटेरियल-स्फीयर आइडियाज़ को फ़ायदेमंद कैसे बताते हैं, उन्हें इनडिटरमिनेट कैसे बताते हैं?

वह चार ज्ञानों को यहाँ [इंद्रिय-इच्छा क्षेत्र में] (पुनर्जन्म से) स्थापित व्यक्ति के लिए फ़ायदेमंद बताते हैं, वह चार ज्ञानों को वहाँ [भौतिक क्षेत्र में] पुनर्जन्म के लिए अनिश्चित बताते हैं। इस तरह वह भौतिक क्षेत्र के विचारों को फ़ायदेमंद बताते हैं, उन्हें अनिश्चित बताते हैं।

वह कैसे इम्मैटेरियल-स्फीयर आइडिया को फायदेमंद बताते हैं, उन्हें इनडिटरमिनेट कैसे बताते हैं?

वह चार इम्मटेरियल-स्फीयर अचीवमेंट्स को यहाँ स्थापित व्यक्ति के लिए फायदेमंद बताते हैं, वह चार इम्मटेरियल-स्फीयर अचीवमेंट्स को वहाँ दोबारा जन्म लेने वाले व्यक्ति के लिए इनडिटरमिनल बताते हैं। इस तरह वह इनमटेरियल-स्फीयर आइडियाज़ को फायदेमंद बताते हैं, उन्हें इनडिटरमिनल बताते हैं।

वह बिना शामिल किए गए आइडिया को फ़ायदेमंद कैसे बताते हैं, उन्हें अनिश्चित कैसे बताते हैं?

वह चार रास्तों को फ़ायदेमंद बताते हैं। वह तप और निब्बान के चार फलों को अनिश्चित बताते हैं। इस तरह वह बिना शामिल किए गए विचारों को फ़ायदेमंद बताते हैं, उन्हें अनिश्चित बताते हैं।

इस तरह वह विचारों को परिभाषित करते हैं।

*

407. खुशी से जुड़े नौ विचार: जब वह किसी चीज़ पर ध्यान देता है] तो उसमें कुछ समय के लिए खुशी पैदा होती है; जब वह खुश होता है तो उसमें खुशी पैदा होती है; जब उसका मन खुश होता है तो उसका शरीर शांत हो जाता है; जब उसका शरीर शांत होता है तो उसे खुशी महसूस होती है; जब उसे खुशी होती है तो उसका ध्यान एक जगह हो जाता है; जब उसका ध्यान एक जगह हो जाता है तो वह सही जानता और देखता है; जब वह सही जानता और देखता है तो वह बेपरवाह हो जाता है; जब वह बेपरवाह हो जाता है तो उसका लालच खत्म हो जाता है; लालच के खत्म होने के साथ ही वह आज़ाद हो जाता है। जब वह किसी चीज़ पर ध्यान देता है) दर्दनाक के तौर पर... जब वह [किसी चीज़ पर] ध्यान देता है जैसे कि वह खुद नहीं है... लालच के खत्म होने के साथ ही वह आज़ाद हो जाता है।

408. जब वह भौतिक चीज़ों को कुछ समय के लिए देखता है, तो उसमें खुशी पैदा होती है;... जब वह भावनाओं... समझ... बनावटों... चेतना को कुछ समय के लिए... दर्दनाक... खुद से अलग चीज़ों के रूप में देखता है, तो उसमें खुशी पैदा होती है;... लालच के खत्म होने के साथ ही वह आज़ाद हो जाता है।

जब वह आँख को अस्थायी ख़ुशी के रूप में देखता है... (और इसी तरह §407 में §5 तक सूचीबद्ध 201 विचारों में से प्रत्येक के लिए दोहराता रहता है)...जब वह बुढ़ापे और मृत्यु को [86] अस्थायी ख़ुशी के रूप में देखता है... लालच के खत्म होने के साथ वह मुक्त हो जाता है।

ये नौ विचार खुशी से जुड़े हैं।

*

409. नौ विचार जो ध्यान से ध्यान देने पर आधारित हैं।

जब वह किसी वस्तु पर ध्यान देता है] क्योंकि उसमें अस्थायी ख़ुशी उमड़ आती है; जब वह खुश होता है तो उसमें खुशी उमड़ आती है; जब वह खुश होता है तो उसका शरीर शांत हो जाता है; जब उसका शरीर शांत होता है तो उसे खुशी महसूस होती है; जब उसे खुशी होती है तो उसका बोध एकाग्र हो जाता है; अपने एकाग्र बोध से वह सही ढंग से समझता है 'यह दुख है', वह सही ढंग से समझता है 'यह दुख की उत्पत्ति है', वह सही ढंग से समझता है 'यह दुख की समाप्ति है', वह सही ढंग से समझता है 'यह दुख की समाप्ति का मार्ग है'। जब वह [किसी वस्तु पर] दर्दनाक मानकर ध्यान देता है... जब वह [किसी वस्तु पर] गैर-आत्म खुशी की तरह ध्यान देता है;... वह सही ढंग से समझता है "यह दुख की समाप्ति का मार्ग है"।

410. जब वह भौतिकता को अस्थायी रूप में देखता है तो उसके अंदर खुशी उमड़ पड़ती है... जब वह भावना... अनुभूति... रचना... चेतना को देखता है

जैसे कुछ समय के लिए... जैसे दर्द भरा... जैसे उसमें बिना किसी स्वार्थ के खुशी ... पैदा होती है; वह सही ढंग से समझता है 'यही वह रास्ता है जिससे दुख खत्म होता है'।

जब वह आँख को अस्थायी ख़ुशी के रूप में देखता है... (और इसी तरह §409 में §5 तक सूचीबद्ध 201 विचारों में से प्रत्येक के लिए दोहराता रहता है)... जब वह बुढ़ापे और मृत्यु को अस्थायी ख़ुशी के रूप में देखता है... तो वह सही ढंग से समझता है 'यही वह रास्ता है [87] जो दुख की समाप्ति की ओर ले जाता है'।

ये नौ आइडिया हैं जो ध्यान से ध्यान देने पर आधारित हैं।

*

411. नौ तरह के अंतर.

सिद्धांत के भेद के कारण संपर्क में भेद उत्पन्न होता है। संपर्क के भेद के कारण भावना में भेद उत्पन्न होता है। भावना के भेद के कारण बोध में भेद उत्पन्न होता है। बोध के भेद के कारण सोच में भेद उत्पन्न होता है। सोच के भेद के कारण उत्साह में भेद उत्पन्न होता है। उत्साह के भेद के कारण पीड़ा में भेद उत्पन्न होता है। पीड़ा के भेद के कारण खोज में भेद उत्पन्न होता है। खोज के भेद के कारण लाभ में भेद उत्पन्न होता है।

ये नौ तरह के अंतर हैं।

*

412. ज्ञान का मतलब है कि कुछ जाना जाए और समझ का मतलब है कि कुछ समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'नौ विचारों को डिफाइन करने की समझ ही विचारों में अंतर का ज्ञान है'।

* *
*

[अध्याय XX.-XXIV.-प्रत्यक्ष ज्ञान आदि]

413. यह कैसे है कि (XX) डायरेक्ट-नॉलेज के तौर पर समझना, जो जाना जाता है उसके मतलब में नॉलेज है? कि (XXI) पूरी समझ के तौर पर समझना, जज करने (जांच करने) के मतलब में नॉलेज है? कि (XXII) छोड़ देना, हार मानने के मतलब में नॉलेज है? कि (XXIII) डेवलप होने के तौर पर समझना, सिंगल फंक्शन के मतलब में नॉलेज है? कि (XXIV) रियलाइज़ करने के तौर पर समझना, साउंडिंग के मतलब में नॉलेज है?

414. जो भी विचार सीधे तौर पर जाने जाते हैं, उन्हें जाना जाता है। जो भी विचार पूरी तरह से समझे जाते हैं, उनका मूल्यांकन (जांच) किया जाता है। जो भी विचार छोड़ दिए जाते हैं

छोड़ दिए जाते हैं। जो भी आइडिया डेवलप होते हैं उनका एक ही काम होता है (टेस्ट)। जो भी आइडिया सच होते हैं, उन्हें बताया जाता है।

*

415. ज्ञान इस अर्थ में है कि जाना जा रहा है और समझ इस अर्थ में है कि उसे समझा जा रहा है। इसलिए कहा गया है: "सीधे-ज्ञान के रूप में समझना इस अर्थ में ज्ञान है कि क्या जाना जाता है; पूरी समझ के रूप में समझना इस अर्थ में ज्ञान है कि क्या पता लगाया जा रहा है (जांच की जा रही है); त्याग के रूप में समझना इस अर्थ में ज्ञान है कि क्या छोड़ दिया जा रहा है; विकसित होने के रूप में समझना इस अर्थ में ज्ञान है कि क्या एक ही अनुभूति (स्वाद) है; एहसास के रूप में समझना इस अर्थ में ज्ञान है कि क्या सुना जा रहा है'।
[88] (cf. Vism 606, SA on Si11)

* *
*

[अध्याय XXV-XXVIII-चार भेदभाव]

416. यह कैसे है कि (XXV) मतलब में अंतर को समझना मतलब के अंतर को समझने का ज्ञान है? कि (XXVI) विचारों में अंतर को समझना विचारों के अंतर को समझने का ज्ञान है? कि (XXVII) भाषा में अंतर को समझना भाषा के अंतर को समझने का ज्ञान है? कि (XXVIII) साफ़-साफ़ समझ में अंतर को समझना साफ़-साफ़ समझ का ज्ञान है?

417. विश्वास की क्षमता एक विचार है, ऊर्जा की क्षमता एक विचार है, माइंडफुलनेस की क्षमता एक विचार है, कंसंट्रेशन की क्षमता एक विचार है, समझने की क्षमता एक विचार है। विश्वास की क्षमता एक विचार है, ऊर्जा की क्षमता दूसरा विचार है, माइंडफुलनेस की क्षमता दूसरा विचार है, कंसंट्रेशन की क्षमता दूसरा विचार है, समझने की क्षमता दूसरा विचार है। इन अलग-अलग क्षमताओं में वही ज्ञान होता है जिससे उन्हें जाना जाता है। इसलिए कहा जाता है: 'विचारों में अंतर को समझना ही विचारों में अंतर करने का ज्ञान है'।

418. संकल्प के रूप में अर्थ एक अर्थ है, प्रयास के रूप में अर्थ एक अर्थ है, स्थापित करने के रूप में अर्थ एक अर्थ है, ध्यान भंग न करने के रूप में अर्थ एक अर्थ है, देखने के रूप में अर्थ एक अर्थ है। संकल्प के रूप में अर्थ एक अर्थ है, प्रयास के रूप में अर्थ एक और अर्थ है, स्थापित करने के रूप में अर्थ एक और अर्थ है, ध्यान भंग न करने के रूप में अर्थ एक और अर्थ है, अलग करने के रूप में अर्थ एक और अर्थ है। इन विभिन्न अर्थों में प्रवेश किया जाता है

वही ज्ञान जिससे उन्हें जाना जाता है। इसलिए कहा गया है: 'अर्थ में अंतर को समझना ही अर्थ के भेदभाव का ज्ञान है'।

419. इन पाँच विचारों को दिखाने के लिए शब्द-भाषा का उच्चारण होता है और इन जीवित अर्थों को दिखाने के लिए शब्द-भाषा का उच्चारण होता है। विचारों के लिए भाषा एक है, अर्थों के लिए भाषा दूसरी है। इन अलग-अलग भाषाओं में वही ज्ञान होता है जिससे उन्हें जाना जाता है। इसलिए कहा गया है: 'भाषा में अंतर को समझना ही भाषा के भेदभाव का ज्ञान है'।

420. इन पाँच तरह के विचारों के ज्ञान के उदाहरण हैं, इन पाँच तरह के अर्थ के ज्ञान के उदाहरण हैं, और इन दस तरह की भाषा के ज्ञान के उदाहरण हैं। विचारों के ज्ञान के उदाहरण एक हैं, अर्थ के ज्ञान के उदाहरण दूसरे हैं, भाषा के ज्ञान के उदाहरण दूसरे हैं। ये अलग-अलग ज्ञान उसी ज्ञान से समझे जाते हैं जिससे वे जाने जाते हैं। इसलिए कहा गया है: 'स्पष्टता में अंतर को समझना ही स्पष्टता के भेदभाव का ज्ञान है'।

421. विश्वास शक्ति एक विचार है, ऊर्जा शक्ति एक विचार है, जागरूकता शक्ति एक विचार है, एकाग्रता शक्ति एक विचार है, समझने की शक्ति एक विचार है। विश्वास शक्ति एक है, ऊर्जा शक्ति दूसरी है, जागरूकता शक्ति दूसरी है, एकाग्रता शक्ति दूसरी है, समझने की शक्ति दूसरी है। [89] ये विभिन्न विचार उसी ज्ञान के द्वारा भेदित होते हैं जिससे वे जाने जाते हैं। इसलिए कहा गया है: 'विचारों में अंतर को समझना विचारों के भेदभाव का ज्ञान है'।

422. नास्तिकता से अडिग रहने का मतलब एक मतलब है, आलस्य से अडिग रहने का मतलब एक मतलब है, लापरवाही से अडिग रहने का मतलब एक मतलब है, बेचैनी से अडिग रहने का मतलब एक मतलब है, अज्ञानता से अडिग रहने का मतलब एक मतलब है। नास्तिकता से अडिग रहने का मतलब एक मतलब है, आलस्य से अडिग रहने का मतलब दूसरा मतलब है, लापरवाही से अडिग रहने का मतलब दूसरा मतलब है, बेचैनी से अडिग रहने का मतलब दूसरा मतलब है, अज्ञानता से अडिग रहने का मतलब दूसरा मतलब है। ये अलग-अलग मतलब उसी ज्ञान से समझे जाते हैं जिससे वे जाने जाते हैं। इसलिए कहा गया है: 'अर्थ में अंतर को समझना ही अर्थ के भेदभाव का ज्ञान है।'

423. इन पाँच विचारों को इंगित करने के लिए शब्द-भाषा का उच्चारण किया गया है (और इसी प्रकार धारा 419 में भी)...इसलिए कहा गया है: 'भाषा में अंतर को समझना भाषा के भेदभाव का ज्ञान है।

424. इन पाँच तरह के विचारों के बारे में ज्ञान के उदाहरण हैं। ::

[और इसी प्रकार धारा 4201 में... इसलिए कहा गया है: 'स्पष्टता में अंतर की समझ ही स्पष्टता के भेदभाव का ज्ञान है"।

425. माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर एक विचार है, विचारों की जांच एनलाइटनमेंट फैक्टर एक विचार है, एनर्जी एनलाइटनमेंट फैक्टर एक विचार है, थैप्पीनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर एक विचार है, ट्रैंक्विलिटी एनलाइटनमेंट फैक्टर एक विचार है, कंसंट्रेशन एनलाइटनमेंट फैक्टर एक विचार है, इक्विनेमिटी एनलाइटनमेंट फैक्टर एक विचार है। माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर एक विचार है... इक्विनेमिटी एनलाइटनमेंट फैक्टर एक और विचार है। ये विभिन्न विचार उसी ज्ञान से भेदित होते हैं जिससे वे जाने जाते हैं। इसलिए कहा गया: 'विचारों में अंतर को समझना विचारों के भेदभाव का ज्ञान है'। [90]

426. स्थापना के तौर पर मतलब एक मतलब है। जांच के तौर पर मतलब एक मतलब है। मेहनत के तौर पर मतलब एक मतलब है। किसी चीज़ पर ध्यान देना एक मतलब है। शांति के तौर पर मतलब एक मतलब है। ध्यान भटकना न होना एक मतलब है। सोच-विचार के तौर पर मतलब एक मतलब है। स्थापना के तौर पर मतलब एक मतलब है... सोच-विचार के तौर पर मतलब दूसरा मतलब है। इन अलग-अलग मतलबों को उसी ज्ञान से समझा जाता है जिससे उन्हें जाना जाता है। इसलिए कहा गया है: 'मतलब में अंतर को समझना ही मतलब को पहचानने का ज्ञान है'।

427. इन सात विचारों को बताने के लिए शब्द-भाषा का उच्चारण होता है और इन सात अर्थों को बताने के लिए शब्द-भाषा का उच्चारण होता है। विचारों के लिए भाषा... (और इसी तरह §419 में)

428. इन सात तरह के आइडिया के ज्ञान के उदाहरण हैं। इन सात तरह के मतलब के ज्ञान के उदाहरण हैं। इन चौदह तरह की भाषा के ज्ञान के उदाहरण हैं। आइडिया के ज्ञान के उदाहरण... (और इसी तरह §420 में)

429. सही नज़रिया एक विचार है, सही सोच एक विचार है, सही बोलना एक विचार है, सही काम करना एक विचार है, सही जीना एक विचार है, सही कोशिश एक विचार है, सही ध्यान एक विचार है, सही एकाग्रता एक विचार है। सही नज़रिया एक विचार है,... सही एकाग्रता दूसरा विचार है। ये अलग-अलग विचार हैं।

430. देखने जैसा अर्थ भी एक अर्थ है, निर्देश करने जैसा अर्थ भी एक अर्थ है, आलिंगन करने जैसा अर्थ भी एक अर्थ है, उत्पत्ति करने जैसा अर्थ भी एक अर्थ है, शुद्ध करने जैसा अर्थ भी एक अर्थ है, प्रयास करने जैसा अर्थ भी एक अर्थ है, स्थापना जैसा अर्थ भी एक अर्थ है, ध्यान भंग न होने जैसा अर्थ भी एक अर्थ है। देखने जैसा अर्थ एक अर्थ है, [91] ध्यान भंग न होने जैसा अर्थ दूसरा अर्थ है। इन विभिन्न अर्थों...

431. इन आठ विचारों को बताने के लिए शब्द-भाषा का उच्चारण होता है, और इन सही मतलबों को बताने के लिए शब्द-भाषा का उच्चारण होता है। विचारों के लिए भाषा। [और ..इसी तरह §419 में]

432. इन आठ तरह के विचारों के ज्ञान के उदाहरण हैं। इन आठ तरह के अर्थ के ज्ञान के उदाहरण हैं।

इन सोलह तरह की भाषाओं के ज्ञान के उदाहरण। विचारों के ज्ञान के उदाहरण। (और , इसी तरह §420 में] :

433. ज्ञान का मतलब है कि कुछ जाना जा रहा है और समझ का मतलब है कि कुछ समझा जा रहा है। तब कहा गया था: 'मतलब में अंतर को समझना मतलब को पहचानने का ज्ञान है; विचारों में अंतर को समझना विचारों में अंतर को जानना है; भाषा में अंतर को समझना भाषा में अंतर को जानना है; साफ़-साफ़ समझ में अंतर को समझना साफ़-साफ़ समझ में अंतर को समझना है।'

* * *

[अध्याय XXIX-XXXI.-पालन और उपलब्धियाँ]

434. यह कैसे है कि (XXIX) रहने में अंतर को समझना ही रहने के मतलब का ज्ञान है? कि (XXX) पाने में अंतर को समझना ही पाने के मतलब का ज्ञान है? कि (XXXI) रहने और पाने में अंतर को समझना ही रहने और पाने के मतलब का ज्ञान है?

435. जब वह (रूपों के) निशान को साफ़ तौर पर डर के तौर पर देखता है और हर बार जब वह [अपने ज्ञान को उन पर] लागू करता है तो [उनके] गिरने को देखता है क्योंकि वह निशानहीन (निब्बान का पहलू) पर दृढ़ है, तो यह निशानहीन रहना है [अंतर्दृष्टि का]। जब वह [रूपों की] इच्छा को साफ़ तौर पर डर के तौर पर देखता है और हर बार जब वह [अपने ज्ञान को रूपों पर] लागू करता है तो (उनके) गिरने को देखता है क्योंकि वह इच्छाहीन (निब्बान का पहलू) पर दृढ़ है, तो यह इच्छाहीन रहना है [अंतर्दृष्टि का]। जब वह [रूपों की] ग़लत व्याख्या को साफ़ तौर पर डर के तौर पर देखता है और हर बार जब वह [अपने ज्ञान को रूपों पर] लागू करता है तो (उनके) गिरने को देखता है क्योंकि वह शून्यता [निब्बान का पहलू] पर दृढ़ है, तो यह शून्य रहना है [अंतर्दृष्टि का]।

436. जब वह स्पष्टतः लक्षण को भय के रूप में देखता है और, [92] घटना को समभाव से मानकर और निरोध पर ध्यान देकर, निर्वाण, लक्षणरहित, प्राप्ति [की] प्राप्ति में प्रवेश करता है क्योंकि वह लक्षणरहित पर दृढ़ निश्चयी है, यह लक्षणरहित प्राप्ति है। जब वह स्पष्टतः इच्छा को भय के रूप में देखता है और, [92] घटना को समभाव से मानकर और निरोध पर ध्यान देकर, इच्छारहित निवाण, प्राप्ति [की] प्राप्ति में प्रवेश करता है क्योंकि वह इच्छारहित पर दृढ़ निश्चयी है, यह इच्छारहित प्राप्ति है।

जब वह भ्रांति को भय के रूप में स्पष्ट रूप से देखता है और घटना को समभाव से देखता है तथा समाप्ति पर ध्यान देता है, तो निर्वाण, कल्याण के रूप में, फल की प्राप्ति में प्रवेश करता है क्योंकि उसने शून्यता का संकल्प कर लिया है, यही शून्यता की प्राप्ति है।

437. जब वह निशानी [बनने की] को डर के तौर पर साफ़ देखता है और हर बार जब वह [अपना ज्ञान उन पर] लगाता है तो (उनका) पतन देखता है और, (उनके) होने को बराबरी से देखकर और खत्म होने पर ध्यान देकर, बिना निशानी के निब्बान, [सफलता की] प्राप्ति में प्रवेश करता है, क्योंकि वह बिना निशानी [निब्बान के पहलू] पर दृढ़ निश्चयी है, यह बिना निशानी का रहना और प्राप्ति है। जब... [निशाने और बिना निशानी के लिए इच्छा और बिना इच्छा के रखें)... जब... (निशाने और बिना निशानी के लिए गलत मतलब और खालीपन रखें]... यह खालीपन का रहना और प्राप्ति है।

438. जब वह भौतिकता के संकेत को भय के रूप में स्पष्ट रूप से देखता है और हर बार जब वह (अपने ज्ञान को उस पर लागू करता है क्योंकि वह चिन्हहीन पर संकल्पित है) उसके पतन को देखता है, यह चिन्हहीन निवास है। जब... [इच्छा और इच्छाहीनता को प्रतिस्थापित करें)... जब... (गलत व्याख्या और शून्यता को प्रतिस्थापित करें)... यह शून्य निवास है।

जब वह भौतिकता के संकेत को भय के रूप में स्पष्ट रूप से देखता है और उसके होने को समभाव से देखते हुए और समाप्ति पर ध्यान देते हुए, निर्वाण, संकेतहीन रूप में, प्राप्ति (सफलता की) में प्रवेश करता है, क्योंकि वह संकेतहीन पर संकल्पित है, यह संकेतहीन प्राप्ति है: जब... (इच्छा और इच्छाहीनता को प्रतिस्थापित करें)... जब... (गलत व्याख्या और शून्यता को प्रतिस्थापित करें)..., यह शून्य प्राप्ति है।

जब वह भौतिकता के संकेत को भय के रूप में स्पष्ट रूप से देखता है और हर बार जब वह (अपने ज्ञान को उस पर) लागू करता है तो उसके पतन को देखता है और, इसकी घटना को समता के साथ मानते हुए और समाप्ति पर ध्यान देते हुए, निर्वाण, संकेतहीन के रूप में, प्राप्ति (के) में प्रवेश करता है, क्योंकि वह संकेतहीन [निबाण के पहलू] पर संकल्पित है, यह संकेतहीन निवास और प्राप्ति है। जब... [इच्छा और इच्छाहीनता को प्रतिस्थापित करें]... जब... [93] {गलत व्याख्या और शून्यता को प्रतिस्थापित करें)... यह शून्य निवास और प्राप्ति है।

जब वह भावना का संकेत साफ़ तौर पर देखता है... (और इसी तरह बाकी एग्रीगेट्स के मामले में तीन §§ को दोहराता है और §5 तक लिस्ट किए गए बाकी 201 आइडियाज़ को दोहराता है...

जब वह वृद्धावस्था और मृत्यु के चिन्ह को स्पष्ट रूप से देख लेता है...यह शून्यता का स्थायीत्व और प्राप्ति है। [94]

*

439. बिना निशान वाला रहना एक है, बिना इच्छा वाला रहना दूसरा है, बिना निशान वाला रहना दूसरा है; बिना निशान वाली प्राप्ति एक है, बिना इच्छा वाली प्राप्ति दूसरी है, बिना निशान वाली प्राप्ति दूसरी है; बिना निशान वाला रहना और प्राप्ति एक हैं, बिना इच्छा वाला रहना और प्राप्ति दूसरी हैं, बिना निशान वाला रहना और प्राप्ति दूसरी हैं।

*

440. ज्ञान का मतलब है कि जाना जा रहा है और समझ का मतलब है कि उसे समझा जा रहा है। इसलिए कहा गया: "रहने में अंतर को समझना, रहने के मतलब का ज्ञान है, पाने में अंतर को समझना, पाने के मतलब का ज्ञान है, रहने और पाने में अंतर को समझना, रहने और पाने के मतलब का ज्ञान है।"

* * *

[अध्याय XXXII.-तुरंत परिणाम के साथ एकाग्रता]

441. यह कैसे है कि ध्यान भटकने की पवित्रता के कारण नासूरों को काट देना, तुरंत (परिणाम) देने वाली एकाग्रता का ज्ञान है?

442. त्याग के ज़रिए ज्ञान को एक करना ही ध्यान न लगाना है; उस ध्यान से ज्ञान होता है; उस ज्ञान से नासूर खत्म होते हैं। इस तरह पहले ध्यान आता है; और बाद में ज्ञान; उस ज्ञान से नासूर खत्म होते हैं। इसलिए कहा गया है 'ध्यान न लगाने की पवित्रता से नासूरों को काटने की समझ ही तुरंत नतीजे वाला ध्यान का ज्ञान है'।

कैंकर: ये कैंकर क्या हैं?

वे कामुक इच्छा का नासूर हैं, अस्तित्व का नासूर हैं, विचारों का नासूर हैं, और अज्ञानता का नासूर हैं।

ये कैंकर कहाँ खत्म हो गए?

स्ट्रीम-एंट्री रास्ते से नज़रियों का कीड़ा पूरी तरह खत्म हो जाता है, और कामुकता, होने और अज्ञानता का कीड़ा जो कमी की हालत में ले जाने के लिए काफी ताकतवर है, वह भी खत्म हो जाता है। ये कीड़ा यहीं खत्म हो जाता है।

एक बार लौटने वाले रास्ते से कामुकता की बड़ी बीमारी खत्म हो जाती है, और उससे जुड़े होने और अज्ञान की बीमारी भी खत्म हो जाती है। ये बीमारी यहीं खत्म हो जाती है।

नॉन-रिटर्न रास्ते से कामुकता की इच्छा का नासूर पूरी तरह खत्म हो जाता है, और उसके साथ होने और अज्ञानता का नासूर भी खत्म हो जाता है। ये नासूर यहीं खत्म हो जाते हैं।

अरहंत मार्ग से भ्रांति और अज्ञान रूपी नासूर पूरी तरह समाप्त हो जाते हैं। ये नासूर यहाँ समाप्त हो जाते हैं। [95]

ध्यान भटकना न होना, बिना किसी बुरी इच्छा के ज्ञान के एकीकरण के रूप में... प्रकाश की समझ के माध्यम से... ध्यान भटकना न होना... विचारों की परिभाषा के माध्यम से। ज्ञान के माध्यम से। खुशी के माध्यम से....

पहले ज्ञान के ज़रिए ज्ञान की एकता के तौर पर ध्यान भटकना नहीं... दूसरे ज्ञान के ज़रिए... तीसरे ज्ञान के ज़रिए... चौथे ज्ञान के ज़रिए...

ध्यान भटकना न होना, ज्ञान के एकीकरण के तौर पर, असीम जगह वाले आधार को पाने से... असीम चेतना वाले आधार को पाने से... शून्य वाले आधार को पाने से... हालांकि आधार को पाने में न तो समझ होती है और न ही समझ न होती है...

पृथ्वी के ज़रिए ज्ञान के एकीकरण के रूप में ध्यान भटकना . . . नहीं, पानी के ज़रिए ज्ञान, आग के ज़रिए ज्ञान, हवा के ज़रिए ज्ञान, नीले रंग के ज़रिए ज्ञान, पीले रंग के ज़रिए ज्ञान, लाल रंग के ज़रिए ज्ञान, सफ़ेद रंग के ज़रिए ज्ञान, अंतरिक्ष के ज़रिए ज्ञान, चेतना ...

ज्ञानी को याद करके ज्ञान का एक होना, ध्यान भटकना नहीं... सच्चे विचार को याद करके... समुदाय को याद करके... अच्छाई को याद करके... उदारता को याद करके... देवताओं को याद करके... सांस लेने के ध्यान से... मौत के ध्यान से... शरीर के ध्यान से... शांति को याद करके...

एक फूली हुई [लाश] के ज़रिए, एक ज़हरीली... एक सड़ती हुई... एक कटी . . . हुई... एक कुतर दी गई... एक बिखरी हुई... एक कटी हुई और बिखरी हुई... एक कीड़ों से भरी (लाश) के ज़रिए... एक कंकाल के ज़रिए... के ज़रिए जागरूकता के एकीकरण के रूप में ध्यान भटकना नहीं।

लंबी सांस अंदर लेने से बोध के एकीकरण के रूप में . . . गैर-विचलन, लंबी सांस बाहर छोड़ने से... छोटी सांस लेने से... छोटी सांस बाहर छोड़ने से... पूरे [सांस] शरीर का अनुभव करने के लिए सांस अंदर लेने से... जिसके (सांस] शरीर का अनुभव करने के लिए सांस बाहर छोड़ने से... शारीरिक गठन को शांत करने के लिए सांस बाहर छोड़ने से... शारीरिक गठन को शांत करने के लिए सांस बाहर छोड़ने से... खुशी का अनुभव करने के लिए सांस अंदर लेने से... खुशी का अनुभव करने के लिए सांस बाहर छोड़ने से... खुशी का अनुभव करने के लिए सांस बाहर छोड़ने से... मानसिक गठन का अनुभव करने के लिए सांस बाहर छोड़ने से... के माध्यम से; मानसिक गठन को शांत करने के लिए सांस बाहर छोड़ने से... मानसिक गठन को शांत करने के लिए सांस बाहर छोड़ने से... बोध का अनुभव करने के लिए सांस बाहर छोड़ने से... बोध का आनंद लेने के लिए सांस अंदर लेने से...

सांस छोड़ते हुए खुशी का एहसास... सांस अंदर लेते हुए ध्यान का एहसास... सांस बाहर छोड़ते हुए ध्यान का एहसास... सांस अंदर लेते हुए आज़ादी का एहसास। सांस बाहर छोड़ते हुए आज़ादी का एहसास... सांस अंदर लेते हुए नश्वरता के बारे में सोचते हुए। सांस बाहर छोड़ते हुए नश्वरता के बारे में सोचते हुए... सांस अंदर लेते हुए फीके पड़ने के बारे में सोचते हुए... सांस बाहर छोड़ते हुए फीके पड़ने के बारे में सोचते हुए... सांस अंदर लेते हुए खत्म होने के बारे में सोचते हुए... सांस बाहर छोड़ते हुए खत्म होने के बारे में सोचते हुए... सांस अंदर लेते हुए छोड़ने के बारे में सोचते हुए...

श्वास बाहर छोड़ते हुए त्याग पर विचार करते हुए बोध के एकीकरण के रूप में ध्यानहीनता ही एकाग्रता है; उसके कारण... [96] [§ के आरंभ तक पूर्ण)... तत्काल परिणाम के साथ एकाग्रता का ज्ञान'।

कैंकर: क्या हैं... (ऊपर बताए गए तरीके से पूरा करें)... अरहंत मार्ग से होने और अज्ञान के कैंकर पूरी तरह खत्म हो जाते हैं। यहीं पर ये कैंकर खत्म होते हैं।

*

443. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'ध्यान न भटकने की पवित्रता के कारण नासूरों को काटने की समझ ही तुरंत नतीजे देने वाला ध्यान का ज्ञान है।'

* *
*

[अध्याय 33.-- बिना संघर्ष के रहना]

444. यह कैसे है कि देखने की प्रधानता के रूप में समझ और शांतिपूर्ण तरीके से टिके रहने की प्राप्ति और महान लक्ष्य पर दृढ़ निश्चय के रूप में बिना संघर्ष के टिके रहने का ज्ञान है?

445. देखने की प्रबलता:

नश्वरता का चिंतन देखने की प्रधानता है, दर्द का चिंतन देखने की प्रधानता है, पर-आत्म का चिंतन देखने की प्रधानता है।

भौतिकता में नश्वरता का चिंतन देखने की प्रधानता है, भौतिकता में दर्द का चिंतन देखने की प्रधानता है, भौतिकता में न-स्व का चिंतन देखने की प्रधानता है। भावना में नश्वरता का चिंतन... समझ में... बनावट में... चेतना में..

आँखों में नश्वरता का चिंतन... [और इसलिए धारा 5 तक सूचीबद्ध 201 विचारों के बाकी हिस्सों के साथ)... बुढ़ापे और मृत्यु में अ-स्व का चिंतन अलगाव की प्रबलता है। [97]

•

446. और शान्तिपूर्ण निवास की प्राप्ति के रूप में:

शून्य निवास शांतिपूर्ण निवास है, चिन्हहीन निवास शांतिपूर्ण निवास है, इच्छारहित निवास शांतिपूर्ण निवास है।

•

447. महान लक्ष्य पर दृढ़ निश्चय:

शून्यता पर दृढ़ता ही श्रेष्ठ लक्ष्य पर दृढ़ता है, निराकरण पर दृढ़ता ही श्रेष्ठ लक्ष्य पर दृढ़ता है, निष्काम पर दृढ़ता ही श्रेष्ठ लक्ष्य पर दृढ़ता है।

•

448. बिना संघर्ष के रहना:

पहला झाना बिना संघर्ष के टिकना है, दूसरा झाना... तीसरा झाना... चौथा झाना... असीम स्थान से मिलकर बने आधार की प्राप्ति... असीम चेतना से मिलकर बने आधार की प्राप्ति... शून्यता से मिलकर बने आधार की प्राप्ति... न बोध और न अबोध से मिलकर बने आधार की प्राप्ति बिना संघर्ष के टिकना है।

449. बिना संघर्ष के रहना: किस अर्थ में बिना संघर्ष के रहना?

यह पहले झान के ज़रिए रुकावटों को हटाता है, इस तरह यह बिना किसी टकराव के रहने वाला है। यह दूसरे झान के ज़रिए लागू सोच और लगातार सोच को हटाता है... तीसरे झान के ज़रिए खुशी... चौथे झान के ज़रिए सुख और दुख... भौतिकता की समझ, विरोध की समझ, और विविधता की समझ, असीम जगह वाले आधार को पाकर... असीम चेतना वाले आधार को पाकर असीम जगह वाले आधार को पाकर। असीम चेतना वाले आधार को पाकर, शून्यता वाले आधार को पाकर। यह न तो समझ और न ही गैर-समझ वाले आधार को पाकर, शून्यता वाले आधार को हटाकर, इस तरह यह बिना किसी टकराव के रहने वाला है।

•

450. ज्ञान का मतलब है कि जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'समझना देखने की ताकत और शांतिपूर्ण एहसास की उपलब्धि है।

'पक्का रहना और ऊंचे लक्ष्य पर पक्का रहना, बिना किसी झगड़े के पक्के रहने का ज्ञान है।'



[अध्याय 34.-समाप्ति की प्राप्ति]

451. यह कैसे है कि दो शक्तियों के होने से महारत हासिल करना, तीन रूपों को शांत करना, ज्ञान के सोलह तरह के व्यवहार और एकाग्रता के नौ तरह के व्यवहार, समाप्ति की प्राप्ति का ज्ञान है?

452. दो शक्तियों में से: दो शक्तियाँ, शांति शक्ति और अंतर्दृष्टि शक्ति।

शांति एक शक्ति के रूप में क्या है? त्याग के ज़रिए ज्ञान के एकीकरण के रूप में ध्यान भटकना शांति एक शक्ति के रूप में है। बिना किसी बुरी इच्छा के ज्ञान के एकीकरण के रूप में ध्यान भटकना शांति एक शक्ति के रूप में है। प्रकाश की अनुभूति के माध्यम से ज्ञान के एकीकरण के रूप में ध्यान भटकना [98] . . .इसी तरह जैसा कि §442 से] तक है... त्याग के बारे में सोचते हुए सांस छोड़ने के माध्यम से ज्ञान के एकीकरण के रूप में ध्यान भटकना शांति एक शक्ति के रूप में है। [और

453. शांति शक्ति: शांति किस अर्थ में एक शक्ति है?

पहले ज्ञान से यह रुकावटों से हिलता नहीं है, इसलिए शांति एक शक्ति है। दूसरे ज्ञान से... (§450 तक पूरा)... न तो समझ और न ही गैर-समझ वाले आधार को पाने से यह शून्यता वाले आधार को समझने से हिलता नहीं है, इसलिए शांति एक शक्ति है।

यह अटल है, अचल है और इसे हलचल और हलचल के साथ आने वाली गंदगी और जमाव से हिलाया नहीं जा सकता, इसलिए शांति एक शक्ति है।

यह शांति एक शक्ति है।



454. शक्ति के रूप में अंतर्दृष्टि क्या है?

नश्वरता का चिंतन एक शक्ति के रूप में अंतर्दृष्टि है, दर्द का चिंतन... अनात्मा का चिंतन... वैराग्य का चिंतन... मिटने का चिंतन... समाप्ति का चिंतन... त्याग का चिंतन एक शक्ति के रूप में अंतर्दृष्टि है।

भौतिकता में नश्वरता का चिंतन एक शक्ति के रूप में अंतर्दृष्टि है। भौतिकता में दर्द का चिंतन... स्वयं में न होने का चिंतन

भौतिकता...भौतिकता में वैराग्य का चिंतन...भौतिकता में लुप्त होने का चिंतन...भौतिकता में समाप्ति का चिंतन, भौतिकता . . . में त्याग का चिंतन एक शक्ति के रूप में अंतर्दृष्टि है। भावनाओं में... समझ में... बनावट में... चेतना में... नश्वरता का चिंतन...

आँखों में नश्वरता का चिंतन... [और इसी तरह §5 तक लिस्ट किए गए बाकी 201 आइडियाज़ में से हर एक के मामले में 7 चिंतन के साथ आगे बढ़ें)। बुढ़ापे और मौत में त्याग का चिंतन एक शक्ति के रूप में अंतर्दृष्टि है।

455. इनसाइट पावर: इनसाइट किस मायने में एक पावर है?

नश्वरता के चिंतन से यह स्थायित्व की धारणा से अडिग है, इस प्रकार अंतर्दृष्टि एक शक्ति है। दर्द के चिंतन से यह सुख की धारणा से अडिग है, इस प्रकार अंतर्दृष्टि एक शक्ति है। अन-आत्म के चिंतन से यह आत्म-धारणा से अडिग है... वैराग्य के चिंतन से यह आनंद से अडिग है... लुप्त होने के चिंतन से यह लोभ से अडिग है... निरोध के चिंतन से यह उठने से अडिग है... त्याग के चिंतन से यह लोभ से अडिग है, इस प्रकार अंतर्दृष्टि एक शक्ति है।

यह अटल है, अचल है और इसे अज्ञानता और अज्ञानता के साथ आने वाली बुराइयों और जमाव से हिलाया नहीं जा सकता, इसलिए समझ एक शक्ति है।

यह एक शक्ति के रूप में अंतर्दृष्टि है।

*

456. तीन फॉर्मेशन के ट्रैंक्विलाइज़ेशन के कारण: किन तीन फॉर्मेशन के ट्रैंक्विलाइज़ेशन के कारण?

जिसने दूसरा झान पा लिया है, उसकी सोच और लगातार सोच वाली बोलकर की बनावटें काफी शांत हो जाती हैं। जिसने चौथा झान पा लिया है, उसकी सांस अंदर लेने और बाहर छोड़ने वाली शारीरिक बनावटें काफी शांत हो जाती हैं। जिसने समझने और महसूस करने की आदत छोड़ दी है, उसकी सोचने और महसूस करने वाली मानसिक बनावटें काफी शांत हो जाती हैं। इन तीनों बनावटों के शांत होने की वजह से।

*

457. ज्ञान के सोलह प्रकार के व्यवहार के कारण: ज्ञान के किन सोलह प्रकार के व्यवहार के कारण?

नश्वरता का चिंतन ज्ञान का एक व्यवहार है। दर्द का चिंतन... अनात्मा का चिंतन... वैराग्य का चिंतन... मिटने का चिंतन... समाप्ति का चिंतन, त्याग का . . . चिंतन ज्ञान का एक व्यवहार है।

दूर जाने का चिंतन ज्ञान का व्यवहार है। स्ट्रीम-एंट्री मार्ग ज्ञान का व्यवहार है... स्ट्रीम एंट्री का फल। एक बार लौटने का मार्ग... एक बार लौटने का फल... न लौटने का मार्ग... न-ते'र्न का फल। अरहंत मार्ग... अरहंतत्व का फल ज्ञान का व्यवहार है। ज्ञान के इन सोलह तरह के व्यवहारों के कारण।

*

458. एकाग्रता के नौ प्रकार के व्यवहार के कारण: एकाग्रता के किन नौ प्रकार के व्यवहार के कारण?

पहला झान कॉन्संट्रेशन का व्यवहार है। दूसरा झान... तीसरा झान... चौथा झान... असीम स्पेस वाले बेस को पाना... असीम चेतना वाले बेस को पाना... शून्य वाले बेस को पाना, न तो समझ और न ही गैर-समझ वाले बेस . . . को पाना, कॉन्संट्रेशन का व्यवहार है। और साथ ही लगाया गया विचार और लगातार सोचा जाना और खुशी और आनंद और ज्ञान का एकीकरण, जिनका मकसद पहला झान पाना है... जिनका मकसद न तो समझ और न ही गैर-समझ वाले बेस को पाना है। कॉन्संट्रेशन के इन नौ तरह के व्यवहार के कारण।

*

459. महारत: महारत पाँच प्रकार की होती है। महारत होती है विज्ञापन देने में, प्राप्त करने में, स्थिरता में (अवधि पर संकल्प), उभरने में, [100] समीक्षा करने में।

वह पहले झान पर जहाँ, जब और जितने समय तक चाहे ध्यान लगाता है, उसे ध्यान लगाने में कोई कठिनाई नहीं होती, इस प्रकार यह ध्यान लगाने में निपुणता है। वह पहले झान को जहाँ, जब और जितने समय तक चाहे प्राप्त करता है, उसे प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं होती, इस प्रकार यह प्राप्त करने में निपुणता है। वह पहले झान में (की अवधि पर संकल्प करता है) स्थिर रहता है जहाँ, जब और जितने समय तक वह चाहता है, उसे स्थिरता (समाधान) में कोई कठिनाई नहीं होती, इस प्रकार यह बने रहने (समाधान) में निपुणता है। वह पहले झान से जहाँ, जब और जितने समय तक वह चाहता है, उभरने में कोई कठिनाई नहीं होती, इस प्रकार यह उभरने में निपुणता है। वह पहले झान की समीक्षा करता है जहाँ, जब और जितने समय तक वह चाहता है, उसे समीक्षा करने में कोई कठिनाई नहीं होती, इस प्रकार यह समीक्षा करने में निपुणता है।

वह दूसरे झाना की ओर इशारा करता है...

वह तीसरे झाना की ओर इशारा करता है। . .

वह चौथे झाना की ओर इशारा करता है...

वह असीम अंतरिक्ष से बने आधार को पाने की बात करता है...

वह असीम चेतना के आधार को पाने की बात करता है।

वह शून्यता के आधार को पाने की बात करता है।

वह उस बेस को पाने की बात करते हैं जिसमें न तो समझ होती है और न ही समझ न होना, जहाँ, वह उस बेस को पाने की बात रिव्यू करते हैं जिसमें न तो समझ होती है और न ही समझ न होना, जहाँ... उन्हें रिव्यू करने में कोई मुश्किल नहीं होती, इसलिए यह रिव्यू करने में महारत है।

ये पाँच तरह की महारत हैं।

*

460. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझने का काम किया जाए। इसलिए कहा गया: 'दो शक्तियों के होने से महारत हासिल करना, तीन रूपों को शांत करना, ज्ञान के सोलह तरह के व्यवहार और एकाग्रता के नौ तरह के व्यवहार को समझना, समाप्ति की प्राप्ति का ज्ञान है।'

* *
*

[अध्याय XXXV.-बुझाना]

461. यह कैसे है कि जो पूरी तरह से जागरूक है, उसमें घटना के खत्म होने की समझ ही खत्म होने का ज्ञान है?

462. यहाँ जो पूर्णतया जागरूक है, वह त्याग द्वारा विषय-वासनाओं के प्रति उत्साह को समाप्त कर देता है, वह दुर्भावना-रहितता द्वारा दुर्भावना को समाप्त कर देता है, वह प्रकाश की अनुभूति द्वारा कठोरता और सुस्ती को समाप्त कर देता है, वह अप्रसन्नता द्वारा उत्तेजना को समाप्त कर देता है, वह विचारों की परिभाषा द्वारा अनिश्चितता को समाप्त कर देता है, वह ज्ञान द्वारा अज्ञान को समाप्त कर देता है, वह प्रसन्नता द्वारा ऊब को समाप्त कर देता है।

वह प्रथम झाना के माध्यम से बाधाओं की घटना को समाप्त करता है . . . [और इसी प्रकार शेष झाना, अमूर्त उपलब्धियां, और ऊपर के मार्ग] ... वह अरहंत मार्ग के माध्यम से सभी अशुद्धियों को समाप्त करता है [101]।

या फिर, जब वह पूरी तरह से जागरूक हो जाता है और पहले की पकड़ का कोई नतीजा नहीं बचता, तो वह उस आँख की घटना को खत्म कर देता है और कोई नई आँख की घटना नहीं होती, वह उस कान की घटना को खत्म कर देता है। वह नाक की घटना को खत्म कर देता है। वह जीभ की घटना को खत्म कर देता है... वह शरीर की घटना को खत्म कर देता है... वह उस मन की घटना को खत्म कर देता है और कोई नई मन की घटना नहीं होती।

जो व्यक्ति पूरी तरह से जागरूक है, उसमें घटना के खत्म होने की यह समझ ही खत्म होने का ज्ञान है।

463. ज्ञान का मतलब है कि कुछ जाना जा रहा है और समझ का मतलब है कि कुछ समझने का काम किया जा रहा है। इसलिए कहा गया: 'जो पूरी तरह से जागरूक है, उसमें होने वाली घटना के खत्म होने को समझना ही खत्म होने का ज्ञान है।'

* *
*

[अध्याय XXXVI.-एक ही विचार]

464. यह कैसे है कि सभी विचारों को पूरी तरह से काट देना, उनका खत्म हो जाना और उनका दोबारा न दिखना, एक ही सोच का मतलब जानना है?

465. सभी विचारों में से: पाँच समूह, बारह आधार, अठारह सिद्धांत; फ़ायदेमंद विचार, फ़ायदेमंद विचार, अनिश्चित विचार; कामुक-इच्छा-क्षेत्र के विचार, भौतिक-क्षेत्र के विचार, अभौतिक-क्षेत्र के विचार, "शामिल नहीं किए गए विचार।"

466. पूरी तरह से काट देना: वह त्याग के ज़रिए कामुक इच्छाओं के जोश को पूरी तरह से काट देता है, वह बिना किसी बुराई के बुरी इच्छा को पूरी तरह से काट देता है,... रोशनी को महसूस करके अकड़न और सुस्ती को... ध्यान भटकने न देकर बेचैनी को... विचारों की परिभाषा के ज़रिए अनिश्चितता को... ज्ञान के ज़रिए अज्ञानता को... खुशी के ज़रिए बोरियत को...

वह प्रथम झाना के माध्यम से बाधाओं को पूरी तरह से काट देता है... [और इसी प्रकार झाना, अमूर्त उपलब्धियां और पथ]... वह अरहंत मार्ग के माध्यम से सभी विकारों को पूरी तरह से काट देता है।

*

467. उनके खत्म होने के बारे में: वह त्याग से कामुक इच्छाओं के जोश को खत्म करता है, वह बिना बुरी इच्छा के बुरी इच्छा को खत्म करता है... रोशनी को महसूस करके अकड़न और सुस्ती को खत्म करता है,... ध्यान भटकने से बेचैनी को खत्म करता है,... विचारों की परिभाषा से अनिश्चितता को खत्म करता है, ज्ञान से अज्ञानता को खत्म करता है,... खुशी से बोरियत को खत्म करता है।

वह पहले झाना के ज़रिए रुकावटों को खत्म करता है, [और इसी तरह आगे तक]... वह अरहंत मार्ग के ज़रिए सभी बुराइयों को खत्म करता है।

468. अव्यय - जिसने वैराग्य प्राप्त कर लिया है, उसमें विषय-वासनाओं की उत्तेजना दुबारा नहीं आती। जिसने दुर्भावना रहितता प्राप्त कर ली है, उसमें तृतीय इच्छा पुनः नहीं आती... [इतना ही शेष विघ्नों के साथ]। जिसने प्रथम ज्ञान प्राप्त कर लिया है, उसमें विघ्न दुबारा नहीं आते [इतना ही शेष विघ्नों . . . के साथ]...। जिसने पूर्वमार्ग प्राप्त कर लिया है, उसमें कोई भी दोष दुबारा नहीं आता।

469. वही। त्याग वही है [जैसे मुक्ति) क्योंकि कामुक इच्छाओं का जोश छोड़ दिया जाता है। अ-बुराई वही है क्योंकि बुरी इच्छा छोड़ दी जाती है... [और इसी तरह बाकी रुकावटों के साथ]। पहला ज्ञान वही है क्योंकि रुकावटें छोड़ दी जाती हैं... [और इसी तरह आगे तक)। अरहंत मार्ग वही है क्योंकि सभी बुराइयों को छोड़ दिया जाता है।

*

470. सिर: तेरह सिर हैं: [सभी] रुकावटों का सिर है लालसा, (सभी) बेड़ियों का सिर है घमंड, [सभी] गलतफहमियों का सिर है [गलत] नज़रिया, (सभी) भटकावों का सिर है बेचैनी, (सभी) बुराइयों का सिर है अज्ञान। संकल्प का सिर है विश्वास, मेहनत का सिर है ऊर्जा, स्थापना का सिर है ध्यान, ध्यान न भटकने का सिर है एकाग्रता। देखने का सिर है समझ। घटना का सिर है जीवन की क्षमता। [सभी] क्षेत्रों का सिर है मुक्ति। (सभी) निर्माणों का सिर है समाप्ति।

*

471. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझने का काम किया जाए। इसलिए कहा गया: 'सभी विचारों को पूरी तरह से काट देना, उनका खत्म हो जाना और उनका दोबारा न दिखना, यही एक ही सोच का मतलब जानना है।'

* * *

[अध्याय XXXVII. मिटाना]

472. यह कैसे है कि अलगाव, अंतर और एकता, और आग के खत्म होने की समझ, मिटाने का ज्ञान है?

473. वियोग : लोभ अलग है (मुक्ति से), घृणा अलग है, मोह अलग है, क्रोध... वैर... अवमानना... दबंगई।

ईर्ष्या. . . अहंकार... अहंकार... . . हठ... अहंकार. लोभ... छल. . . धोखा... घमंड... लापरवाही... सभी कलुषताएँ... सभी दुराचार. सभी क्रिया-रूपण पृथक हैं. सभी क्रियाएँ जो अस्तित्व की ओर ले जाती हैं, पृथक हैं। [103|

*

474. भेद और एकता : विषय-वासनाओं के प्रति उत्साह में भेद है (मुक्ति से) और त्याग में एकता है (मुक्ति के साथ), द्वेष में भेद है और अद्वेष में एकता है, ... [इत्यादि शेष बाधाओं के साथ)।

रुकावटों में अंतर है और पहले ज्ञान में एकता है... (और इसी तरह आगे तक)... सभी बुराइयों में अंतर है और अरहंत मार्ग में एकता है।

*

475. आग: पाँच आग होती हैं: अच्छे आचरण की आग, ध्यान की आग, समझ की आग, पुण्य की आग और सच्चे विचार की आग। बुरे आचरण की आग खत्म हो जाती है क्योंकि वह अच्छे आचरण की आग से भस्म हो जाती है, अच्छे गुण के खिलाफ काम करने वाली आग खत्म हो जाती है क्योंकि वह अच्छे गुण की आग से भस्म हो जाती है, नासमझी की आग खत्म हो जाती है क्योंकि वह समझ की आग से भस्म हो जाती है, पाप की आग खत्म हो जाती है क्योंकि वह पुण्य की आग से भस्म हो जाती है, जो सच्चा विचार नहीं है उसकी आग खत्म हो जाती है क्योंकि वह सच्चे विचार की आग से भस्म हो जाती है।

*

476. मिटाना: कामुक इच्छाओं के लिए जोश मिटाना नहीं है, त्याग मिटाना है। बुरी इच्छा मिटाना नहीं है, बुरी इच्छा न मिटाना है... [और इसी तरह बाकी सात रुकावटों के साथ भी)।

बाधाएं हैं अमिटना, पहला झाना है मिटाना.... [और इसी प्रकार आगे तक]... सभी कल्मष अमिटने वाले हैं, अरहंत मार्ग मिटाने वाला है।

*

477. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझने का काम किया जाए। इसलिए कहा गया: 'अलगाव, अंतर और एकता, और आग के खत्म होने को समझना ही मिटाने का ज्ञान है।'

* * *

[अध्याय 38.- ऊर्जा का अनुप्रयोग]

478. यह कैसे है कि जो लोग खुद की मेहनत और खुद की कोशिश में लगे रहते हैं, उनके लिए मेहनत का मतलब समझना ही एनर्जी के इस्तेमाल का ज्ञान है?

479. आत्म-उत्तेजना और आत्म-प्रयास से युक्त लोगों में उत्पन्न हुए बुरे अनुत्पादक विचारों के न उठने के लिए प्रयास के अर्थ को समझना शक्ति के उपयोग का ज्ञान है। आत्म-उत्तेजना और आत्म-प्रयास से युक्त लोगों में उत्पन्न हुए बुरे अनुत्पादक विचारों के परित्याग के लिए प्रयास के अर्थ को समझना शक्ति के उपयोग का ज्ञान है। आत्म-उत्तेजना और आत्म-प्रयास से युक्त लोगों में उत्पन्न हुए लाभदायक विचारों के उदय के लिए प्रयास के अर्थ को समझना [104] शक्ति के उपयोग का ज्ञान है। आत्म-उत्तेजना और आत्म-प्रयास से युक्त लोगों में उत्पन्न हुए लाभदायक विचारों के रख-रखाव, अभ्रष्टीकरण, बल, प्रचुरता, विकास और पूर्णता के लिए प्रयास के अर्थ को समझना शक्ति के उपयोग का ज्ञान है।

480. जो लोग खुद को मेहनत और खुद की कोशिश से भरे हैं, उनमें बिना पैदा हुए इन्द्रिय-इच्छाओं के जोश को खत्म करने के लिए मेहनत का मतलब समझना, एनर्जी के इस्तेमाल का ज्ञान है। जो लोग खुद को मेहनत और खुद की कोशिश से भरे हैं, उनमें बिना पैदा हुए त्याग के लिए मेहनत का मतलब समझना, एनर्जी के इस्तेमाल का ज्ञान है। जो लोग खुद को मेहनत और खुद की कोशिश से भरे हैं, उनमें बिना पैदा हुए त्याग के लिए मेहनत का मतलब समझना, एनर्जी के इस्तेमाल का ज्ञान है। जो लोग खुद को मेहनत और खुद की कोशिश से भरे हैं, उनमें पैदा हुए त्याग को बनाए रखने, उसे खत्म न करने, उसे मजबूत करने, भरपूर करने, उसे बढ़ाने और उसे पूरा करने के लिए मेहनत का मतलब समझना, एनर्जी के इस्तेमाल का ज्ञान है। समझना... [और इसी तरह बाकी सात रुकावटों के लिए]।

जो लोग खुद से मेहनत करते हैं और खुद से कोशिश करते हैं, उनमें रुकावटों के न आने के लिए मेहनत का मतलब समझना... पहले ज्ञान के आने के लिए... (और इसी तरह आगे तक)... जो लोग खुद से मेहनत करते हैं और खुद से कोशिश करते हैं, उनमें सभी बिना पैदा हुए दोषों के न आने के लिए मेहनत का मतलब समझना एनर्जी के इस्तेमाल को समझना है। जो लोग खुद से मेहनत करते हैं और खुद से कोशिश करते हैं, उनमें सभी पैदा हुए दोषों को छोड़ने के लिए मेहनत का मतलब समझना एनर्जी के इस्तेमाल का ज्ञान है। जो लोग खुद से मेहनत करते हैं और खुद से कोशिश करते हैं, उनमें बिना पैदा हुए अरहंत मार्ग के आने के लिए मेहनत का मतलब समझना एनर्जी के इस्तेमाल का ज्ञान है।

जो लोग खुद को प्रेरित करते हैं और अरहंत मार्ग को बनाए रखने, उसे मज़बूत करने, उसे भरपूर करने, उसे विकसित करने और उसे पूरा करने के लिए खुद कोशिश करते हैं, उन्हें एनर्जी के इस्तेमाल का ज्ञान होता है।

481. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझने का काम किया जाए। इसलिए कहा गया: 'खुद से मेहनत करने और खुद कोशिश करने वालों में मेहनत का मतलब समझना ही एनर्जी के इस्तेमाल का ज्ञान है।'

[अध्याय XXXIX.--अर्थ प्रदर्शित करना]

482. यह कैसे है कि अलग-अलग विचारों को समझाने की समझ, मतलब दिखाने का ज्ञान है?

483. अलग-अलग विचार: पाँच समूह, बारह आधार, अठारह सिद्धांत; फ़ायदेमंद विचार, फ़ायदेमंद विचार, अनिश्चित विचार; कामुक-इच्छा-क्षेत्र के विचार, भौतिक-क्षेत्र के विचार, अभौतिक विचार, शामिल नहीं किए गए विचार।

484. व्याख्या: वह भौतिकता को अस्थायी बताते हैं, वह इसे दर्दनाक बताते हैं, वह इसे गैर-स्व के रूप में समझाते हैं। वह भावना... धारणा... संरचनाएं... चेतना... समझाते हैं... वह

आंख [105]... [और इसी तरह §5 तक सूचीबद्ध 201 विचारों के बाकी हिस्सों के साथ)... वह उम्र बढ़ने और मृत्यु को अस्थायी बताते हैं, वह इसे दर्दनाक बताते हैं, वह इसे गैर-स्व के रूप में समझाते हैं।

485. मतलब दिखाना: जो इंसान कामुक

इच्छाओं के लिए जोश छोड़ देता है, वह त्याग का मतलब दिखाता है। जो इंसान बुरी नीयत छोड़ देता है... [और इसी तरह बाकी सात रुकावटों के साथ]। जो इंसान

रुकावटों को छोड़ देता है, वह पहले ज्ञान का मतलब दिखाता है... (और इसी तरह आगे तक)। जो इंसान सभी बुराइयों को छोड़ देता है, वह अरहंत मार्ग का मतलब दिखाता है।

486. ज्ञान का मतलब है कि कुछ जाना जाए और समझ का मतलब है कि कुछ समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'अलग-अलग विचारों को समझाने की समझ ही मतलब दिखाने का ज्ञान है।'

* * *

[अध्याय XL- देखने में शुद्धता]

487. यह कैसे है कि सभी विचारों को एक के रूप में शामिल करने की क्षमता, और उनके अंतर और एकता को समझना, देखने में पवित्रता का ज्ञान है?

488. सभी विचारों में से: पाँच समुच्चय, . . . [और इसी प्रकार §465 में]।

*

489. एक के तौर पर शामिल होने की क्षमता: सभी विचारों का एक के तौर पर बारह तरीकों से शामिल होना संभव है: सत्य होने के अर्थ में, न होने के अर्थ में, असलियत के अर्थ में, पैठ के अर्थ में, सीधे जानने के अर्थ में, पूरी तरह समझने के अर्थ में, विचार के अर्थ में, सिद्धांत के अर्थ में, जाने जाने के अर्थ में, एहसास के अर्थ में, संपर्क करने के अर्थ में, मिलने के अर्थ में। इन बारह तरीकों से सभी विचारों का शामिल होना संभव है।

*

490. भेद और एकता: विषय-वासनाओं के प्रति उत्साह में भेद है, त्याग में एकता है;... [और इसी प्रकार §474 तक)...सभी विकारों में भेद है, अरहंत मार्ग में एकता है।

*

491. पैठ: वह दुख की असलियत में पूरी समझ के साथ पैठ करता है। वह शुरुआत की असलियत में छोड़ने के साथ पैठ करता है। वह खत्म होने की असलियत में एहसास के साथ पैठ करता है। वह रास्ते की असलियत में विकास के साथ पैठ करता है।

*

492. सेकिंग में पवित्रता: स्ट्रीम-एंट्री के समय रास्ता देखना पवित्र होता है। स्ट्रीम एंट्री के फल मिलने के समय सेकिंग को पुट किया जाता है। एक बार लौटने वाले रास्ते के समय। फल मिलने . . के समय एक बार लौटने के समय... 11061 न लौटने वाले रास्ते के समय। न लौटने वाले रास्ते के फल मिलने के समय। अरहंत रास्ते के समय... अरहंत होने के फल मिलने के समय देखना पुट किया जाता है।

*

493. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझने का काम किया जाए। इसलिए कहा गया: 'सभी विचारों को एक के रूप में शामिल करने की क्षमता, और उनके अंतर और एकता को समझना, अलग होने में पवित्रता का ज्ञान है।'

* * *

[अध्याय XLI.--विकल्प]

494. यह कैसे है कि जो पहचाना जाता है, उसके कारण समझना ही चुनाव के रूप में ज्ञान है?

495. भौतिकता को कुछ समय के लिए, दर्द के तौर पर, खुद के तौर पर नहीं माना जाता; जो भी पहचाना जाता है, वह वह चुनता है, इस तरह जो पहचाना जाता है उसके कारण समझना ही पसंद के तौर पर ज्ञान है। एहसास को कुछ समय के लिए माना जाता है... समझ... बनावट... चेतना। आँख को कुछ समय के लिए माना जाता है। [और इसी . . तरह §5 में लिस्ट किए गए बाकी 201 आइडिया के साथ)... बुढ़ापा कुछ समय के लिए, दर्द के तौर पर, खुद के तौर पर नहीं माना जाता; जो भी पहचाना जाता है, वह वह चुनता है, इस तरह जो पहचाना जाता है उसके कारण समझना ही पसंद के तौर पर ज्ञान है।

*

496. ज्ञान का मतलब है कि जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'जो पहचाना जाता है, उसके कारण समझना ही चुनाव के रूप में ज्ञान है।'

* * *

[अध्याय XLII.- गहनता से समझना]

497. यह कैसे है कि जो छुआ गया है, उसके कारण जो समझ है, वह ज्ञान है?

498. वह चीज़ों को कुछ समय के लिए छूता है, उसे दर्द के तौर पर छूता है, उसे खुद के तौर पर नहीं छूता; वह जो भी छूता है, उसे समझ लेता है, इसलिए जो छुआ जाता है, उसकी वजह से जो समझ आती है, वह समझ के तौर पर ज्ञान है। वह एहसास... समझ... बनावट... चेतना... को छूता है।

वह आंख को अस्थायी मानकर स्पर्श करता है,... (और इसी तरह §5 तक सूचीबद्ध 201 विचारों के शेष के साथ)... वह बुढ़ापे और मृत्यु को अस्थायी मानकर स्पर्श करता है, उसे दर्दनाक मानकर स्पर्श करता है, उसे स्वयं के रूप में नहीं स्पर्श करता है; वह जो कुछ भी स्पर्श करता है, उसकी थाह लेता है, इस प्रकार स्पर्श किए गए विषय के कारण समझ ही थाह लेने जैसा ज्ञान है।

*

499. ज्ञान उस अर्थ में है जो जाना जाता है और समझ उस अर्थ में है कि उसे समझा जाता है। इसलिए कहा गया है: 'स्पर्श किए गए पदार्थ के कारण समझ लेना ही थाह लेने जैसा ज्ञान है।' [107]

* * *

[अध्याय XLIII.-भागों में निवास]

500. यह कैसे है कि संयोजन की समझ भागों के रूप में [विचारों की समीक्षा] में रहने का ज्ञान है?

501. गलत नज़रिए से जुड़ी हुई कुछ चीज़ें महसूस होती हैं, गलत नज़रिए के शांत होने से जुड़ी हुई कुछ चीज़ें महसूस होती हैं। सही नज़रिए से जुड़ी हुई कुछ चीज़ें महसूस होती हैं, सही नज़रिए के शांत होने से जुड़ी हुई कुछ चीज़ें महसूस होती हैं।

गलत सोच से जो महसूस होता है, वह होता है..
गलत बोलने से जो महसूस होता है, वह होता है...
गलत काम करने से जो महसूस होता है, वह होता है।
गलत जीवनशैली से जो महसूस होता है, वह होता है...
गलत कोशिश से जो महसूस होता है, वह होता है...
गलत माइंडफुलनेस की वजह से जो महसूस होता है, वह होता है..
गलत कॉन्संट्रेशन की वजह से जो महसूस होता है, वह होता है।
गलत ज्ञान से जो महसूस होता है, वह होता है...

गलत मुक्ति से जुड़ी हुई भावनाएँ होती हैं, गलत मुक्ति के शांत होने से जुड़ी हुई भावनाएँ होती हैं। सही मुक्ति से जुड़ी हुई भावनाएँ होती हैं, सही मुक्ति के शांत होने से जुड़ी हुई भावनाएँ होती हैं।

502. जोश के कारण जो महसूस होता है, वह होता है, जोश के शांत होने से जो महसूस होता है।

एक तो वह है जो महसूस होता है जो सोच के लागू होने से तय होता है, और एक वह है जो महसूस होता है जो सोच के लागू होने से तय होता है।

एक तो वह है जो महसूस होता है, जो समझ से तय होता है, और एक वह है जो महसूस होता है, जो समझ के शांत होने से तय होता है।

एक चीज़ है जो महसूस होती है, जो शांत जोश, शांत सोच और शांत समझ से तय होती है। एक चीज़ है जो महसूस होती है, जो शांत जोश, शांत सोच और शांत समझ से तय होती है। एक चीज़ है जो महसूस होती है, जो शांत जोश, शांत सोच और शांत समझ से तय होती है। एक चीज़ है जो महसूस होती है, जो शांत जोश, शांत सोच और शांत समझ से तय होती है।

503. अप्राप्य पद को प्राप्त करने के लिए शक्ति (आवश्यक) होती है, और जब वह पद प्राप्त हो जाता है तो उससे उत्पन्न अनुभूति होती है।

*

504. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझने का काम किया जाए। इसलिए कहा गया: 'मिलने-जुलने को समझना, विचारों को हिस्सों के तौर पर देखने में बने रहने का ज्ञान है।'

* * *

[अध्याय XLIV. - बोध के माध्यम से विमुख होना]

505. यह कैसे है कि जो चीज़ ज़्यादातर होती है, उसके कारण समझ, समझ से दूर होने का ज्ञान है?

506. त्याग की प्रधानता होने से जो समझ है, वह विषय-वासनाओं के उत्साह से बोध द्वारा विमुख कर देती है, अत: जिसकी प्रधानता है, वह जो समझ है, वह बोध द्वारा विमुख करने वाला ज्ञान है। दुर्भावना रहित समझ... (इतना ही शेष सात विघ्नों के साथ भी होता है)। [108]

प्रथम ज़ाना को प्रधानता दिए जाने के कारण समझ, धारणा के द्वारा बाधाओं से विमुख हो जाती है, इस प्रकार जिसे प्रधानता दी गई है उसके कारण समझना विमुख होने का ज्ञान है... (इतना ही आगे तक)... अरहंत मार्ग को प्रधानता दिए जाने के कारण समझ, धारणा के द्वारा सभी दोषों से विमुख हो जाती है, इस प्रकार जिसे प्रधानता दी गई है उसके कारण समझना धारणा के द्वारा विमुख होने का ज्ञान है।

*

507. ज्ञान का मतलब है कि जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'जो चीज़ ज़्यादातर दी गई है, उसके कारण समझना, समझ के ज़रिए दूर हटने का ज्ञान है।'

* *
*

[अध्याय XLV. - इच्छा से रास्ता बदलना]

508. यह कैसे है कि अंतर की समझ इच्छा (दिल) से दूर जाने का ज्ञान है?

509. कामुक इच्छाओं के लिए जोश अंतर है, त्याग एकता है: जब वह त्याग की एकता चाहता है, तो उसकी समझ कामुक इच्छाओं के जोश से दूर हो जाती है, इस तरह अंतर को समझना इच्छा (दिल) से दूर होने का ज्ञान है। बुरी इच्छा... (और इसी तरह बाकी सात रुकावटों के साथ)।

बाधाएं भेद हैं... [इतने पर्यंत तक]... सभी विकार भेद हैं, अरहंत मार्ग एकता है: जब वह अरहंत मार्ग की एकता की इच्छा करता है, तो उसका ज्ञान सभी विकारों से दूर हो जाता है, इस प्रकार भेद की समझ इच्छा द्वारा विमुख होने का ज्ञान है।

*

510. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: "अंतर को समझना इच्छा (दिल) से दूर जाने का ज्ञान है"।

* *
*

[अध्याय XLVI.- संज्ञान से विमुख होना]

511. यह कैसे है कि स्थापित करने की समझ, ज्ञान के खत्म होने का ज्ञान है?

512. जो मनुष्य विषय-वासनाओं के प्रति उत्साह को त्याग देता है, वह त्याग के द्वारा ज्ञान को स्थापित करता है, इस प्रकार स्थापित करने की समझ ही ज्ञान के विमुख होने का ज्ञान है। जो मनुष्य द्वेष को त्याग देता है... (इत्यादि शेष सात बाधाओं के साथ भी ऐसा ही होता है) [109]।

जो बाधाओं को त्याग देता है, वह प्रथम ज्ञान के द्वारा बोध को स्थापित करता है, इस प्रकार स्थापित करने की समझ बोध के विमुख होने का ज्ञान है... (इतने पर्यंत)... जो समस्त विकारों को त्याग देता है, वह अरहंत मार्ग के द्वारा बोध को स्थापित करता है, इस प्रकार स्थापित करने की समझ बोध के विमुख होने का ज्ञान है।

*

513. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'समझने का मतलब है ज्ञान से दूर हो जाना'।

* * *

[अध्याय XLVII. - ज्ञान से विमुख होना]

514. यह कैसे है कि शून्यता की समझ ज्ञान से दूर होने का ज्ञान है?

515. जब वह ठीक से जान लेता है और देख लेता है कि आँख आत्मा से रहित है या आत्मा से संबंधित है या कुछ भी स्थायी या शाश्वत या शाश्वत है या परिवर्तन के अधीन नहीं है, तो उसका ज्ञान आँख की गलत व्याख्या (आँख पर जोर) से दूर हो जाता है, इस प्रकार शून्यता की समझ ज्ञान से दूर होने का ज्ञान है।

जब वह सही ढंग से जानता और देखता है कि कान...

जब वह जानता है और सही ढंग से देखता है कि नाक...

जब वह सही ढंग से जानता और देखता है कि जीभ...

जब वह सही ढंग से जानता और देखता है कि शरीर...

जब वह सही ढंग से जान लेता है और देख लेता है कि मन खुद से या खुद से जुड़ी किसी चीज़ से या किसी भी स्थायी या हमेशा रहने वाली या शाश्वत या बदलने लायक चीज़ से खाली है, तो उसका ज्ञान गलत मतलब निकालने से दूर हो जाता है।

मन का (आग्रह) इस प्रकार शून्यता का बोध ज्ञान से विमुख होने का ज्ञान है।

*

516. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझने का काम किया जाए। इसलिए कहा गया: 'शून्यता को समझना ज्ञान से दूर होने का ज्ञान है'।

* * *

[अध्याय XLVIII. -- मुक्ति से विमुख होना]

517. त्याग की समझ मुक्ति से दूर होने का ज्ञान कैसे है?

518. वह त्याग के द्वारा विषय-वासनाओं के प्रति उत्साह का त्याग कर देता है, इस प्रकार त्याग का ज्ञान मोक्ष द्वारा विमुख होने का ज्ञान है। वह द्वेष का त्याग कर देता है... (इत्यादि शेष सात विघ्नों का भी)। [110]

वह पहले ज्ञान के ज़रिए रुकावटों को छोड़ देता है, इस तरह त्याग को समझना मुक्ति से दूर होने का ज्ञान है। [और इसी तरह आगे तक]... वह अरहंत मार्ग के ज़रिए सभी बुराइयों को छोड़ देता है, इस तरह त्याग को समझना मुक्ति से दूर होने का ज्ञान है।

*

519. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'त्याग को समझना मुक्ति से दूर होने का ज्ञान है।'

* * *

[अध्याय 49. -- वास्तविकताओं से मुंह मोड़ना]

520, ऐसा कैसे है कि सत्यता (सत्यता, वास्तविकता) का अर्थ समझना, वास्तविकताओं से दूर जाने का ज्ञान है?

521. जो व्यक्ति दुख के अर्थ को, दबाने के अर्थ को, बनने के अर्थ को, जलने के अर्थ को, बदलने के अर्थ को पूरी तरह समझ लेता है, वह विमुख हो जाता है: इस प्रकार ऐसेपन के अर्थ को समझना वास्तविकताओं में विमुख हो जाने का ज्ञान है।

जो मूल के अर्थ जमा करने का, स्रोत का अर्थ, बंधन का अर्थ, रुकावट का अर्थ छोड़ देता है, वह दूर हो जाता है: इस प्रकार...

जो व्यक्ति समाप्ति के अर्थ - पलायन, एकांत, न बनने का अर्थ, अमरता का अर्थ - को समझ लेता है, वह इस प्रकार विमुख हो जाता है।

जो रास्ते के रास्ते का मतलब, वजह का मतलब, देखने का मतलब, दबदबा का मतलब समझ लेता है, वह दूर हो जाता है: इस तरह 'तथा' का मतलब समझना असलियत में दूर जाने का ज्ञान है।

*

522. बोध से विमुखता, इच्छा से विमुखता, ज्ञान से विमुखता, मुक्ति से विमुखता और वास्तविकताओं में विमुखता होती है।

जो देखता है वह दूर हो जाता है, इस तरह वह समझ से दूर हो जाता है। जो चाहता है वह दूर हो जाता है, इस तरह वह इच्छा से दूर हो जाता है। जो जानता है वह दूर हो जाता है, इस तरह वह जानने से दूर हो जाता है। 39 जो ज्ञान का इस्तेमाल करता है वह दूर हो जाता है, इस तरह वह ज्ञान से दूर हो जाता है। जो छोड़ देता है वह दूर हो जाता है, इस तरह वह मुक्ति से दूर हो जाता है। वह और होने के मतलब में दूर हो जाता है, इस तरह वह असलियत में दूर हो जाता है।

जहां समझ से दूर जाना होता है, वहां इच्छा से दूर जाना होता है: जहां इच्छा से दूर जाना होता है, वहां समझ से दूर जाना होता है।

जहां समझ से दूर जाना और इच्छा से दूर जाना होता है, वहां ज्ञान से दूर जाना होता है: जहां समझ से दूर जाना होता है, वहां समझ से दूर जाना और इच्छा से दूर जाना होता है।

जहाँ बोध से दूर होना और इच्छा से दूर होना और ज्ञान से दूर होना होता है, वहाँ ज्ञान से दूर होना होता है: जहाँ ज्ञान से दूर होना होता है, वहाँ बोध से दूर होना और इच्छा से दूर होना और ज्ञान से दूर होना होता है।

जहाँ बोध से विमुख होना और इच्छा से विमुख होना और बोध से विमुख होना और ज्ञान से विमुख होना है, वहाँ मुक्ति से विमुख होना है: जहाँ मुक्ति से विमुख होना है, वहाँ बोध से विमुख होना और इच्छा से विमुख होना और बोध से विमुख होना और ज्ञान से विमुख होना है।

जहाँ बोध से विमुख होना और इच्छा से विमुख होना और बोध से विमुख होना और ज्ञान से विमुख होना और मुक्ति से विमुख होना है, वहाँ वास्तविकताओं में विमुख होना है: जहाँ वास्तविकताओं से विमुख होना है, वहाँ बोध से विमुख होना और इच्छा से विमुख होना और बोध से विमुख होना और ज्ञान से विमुख होना और मुक्ति से विमुख होना है।

*

523. ज्ञान उस अर्थ में है जो जाना जाता है [111] और समझ उस समझने की क्रिया के अर्थ में है। इसलिए यह कहा गया है: "तथाकता के अर्थ को समझना वास्तविकताओं में विमुख हो जाने का ज्ञान है।"

* *
*

[अध्याय L. - अलौकिक शक्ति (सफलता)}

524. यह कैसे है कि शरीर और चेतना को एक मानकर और आसानी से समझ और जल्दी समझ को एक करके सफल होने का मतलब समझना ही सफलता के प्रकारों (सुपरनॉर्मल शक्तियों) का ज्ञान है?

$25. यहाँ एक भिक्षु सफलता का आधार बनाता है जिसमें जोश की वजह से एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों होती हैं। वह सफलता का आधार बनाता है जिसमें ऊर्जा की वजह से एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों होती हैं। वह सफलता का आधार बनाता है जिसमें ज्ञान की वजह से एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों होती हैं। वह सफलता का आधार बनाता है जिसमें पूछताछ की वजह से एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों होती हैं।

-526. वह सफलता के लिए इन चार आधारों में अपनी समझ को पूरी तरह से विकसित और शिक्षित करता है, और इसे लचीला और इस्तेमाल करने में आसान बनाता है।

527. सफलता के लिए इन चार आधारों में अपनी समझ को पूरी तरह से विकसित और पूरी तरह से शिक्षित करने के बाद, और इसे लचीला और इस्तेमाल करने में आसान बनाने के बाद, वह अपने शरीर को अपनी समझ पर रखता है, और वह अपनी समझ को अपने शरीर पर रखता है, वह अपनी समझ को अपने शरीर के अनुसार बदलता है और वह अपने शरीर को अपनी समझ के अनुसार बदलता है, वह अपनी समझ को अपने शरीर के अनुसार स्थिर करता है और वह अपने शरीर को अपनी समझ के अनुसार स्थिर करता है। अपनी समझ को अपने शरीर के अनुसार बदलने के बाद और

अपने शरीर को अपनी समझ के अनुरूप परिवर्तित कर लिया, अपनी समझ को शरीर के अनुरूप स्थिर कर लिया और अपने शरीर को अपनी समझ के अनुरूप स्थिर कर लिया, वह अपने शरीर में व्याप्त आसान धारणा और त्वरित धारणा के साथ रहता है।

इस तरह अपनी समझ को डेवलप, शुद्ध और चमकदार बनाकर, वह अपनी समझ को सफलता (सुपरनॉर्मल पावर) के ज्ञान की ओर ले जाता है, झुकाता है। वह अलग-अलग तरह की सफलताओं (सुपरनॉर्मल पावर) का मज़ा लेता है; एक होने पर वह कई बन जाता है, कई होने पर वह एक हो जाता है; वह दिखाई देता है और गायब हो जाता है; वह बिना किसी रुकावट के दीवारों, बाड़ों, पहाड़ों से गुज़रता है, जैसे खुली जगह में हो; वह धरती में ऐसे गोता लगाता है जैसे पानी में हो; वह बिना रुके पानी पर ऐसे चलता है जैसे धरती पर हो; पालथी मारकर बैठकर वह एक पंख वाले पक्षी की तरह स्पेस में घूमता है; अपने हाथों से वह इतने शक्तिशाली और ताकतवर चाँद और सूरज को छूता और सहलाता है; वह ब्रह्म लोक तक भी शरीर पर कब्ज़ा कर लेता है (Di 77)।

*

528. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाए। इसलिए कहा गया: 'शरीर और ज्ञान को एक मानकर और आसानी से समझ और जल्दी समझ को एक करके सफल होने का मतलब समझना ही सफलता के प्रकारों (सुपरनॉर्मल शक्तियों) का ज्ञान है।'

* *
*

[112][अध्याय LE - कान का शुद्धिकरण सिद्धांत]

529. यह कैसे है कि सोच-विचार के दखल से आवाज़ के संकेतों को उनके अंतर और एकता में समझना, ज्ञान है, कान के तत्व की शुद्धि है?

530. यहाँ एक भिक्षु सफलता का आधार विकसित करता है। [और इसी तरह §525 में]।

531. वह पूरी तरह से विकसित करता है... [और इसी तरह §526 में]।

532. सफलता के इन चार आधारों में अपनी समझ को पूरी तरह विकसित और पूरी तरह शिक्षित करके, तथा उसे लचीला और प्रयोग में लाने योग्य बनाकर, वह दूर की ध्वनियों के ध्वनि संकेत पर ध्यान देता है, वह पास की ध्वनियों के ध्वनि संकेत पर ध्यान देता है, वह स्थूल ध्वनियों के ध्वनि संकेत पर ध्यान देता है और वह सूक्ष्म ध्वनियों के ध्वनि संकेत पर ध्यान देता है और

वह अत्यन्त धीमी ध्वनियों के ध्वनि चिह्न पर ध्यान देता है; वह पूर्व दिशा में ध्वनियों के ध्वनि चिह्न पर ध्यान देता है और... पश्चिम दिशा में और... उत्तर दिशा में और... दक्षिण दिशा में और... पूर्वी मध्यवर्ती दिशा में और... पश्चिमी मध्यवर्ती दिशा में और उत्तरी मध्यवर्ती दिशा में और... दक्षिणी मध्यवर्ती दिशा में और वह नीचे की दिशा में ध्वनियों के ध्वनि चिह्न पर ध्यान देता है और वह ऊपर की दिशा में ध्वनियों के ध्वनि चिह्न पर ध्यान देता है।

इस प्रकार विकसित, शुद्ध और उज्ज्वल हुई अपनी चेतना के साथ, वह निर्देशित करता है, वह अपनी चेतना को कान की शुद्धि के ज्ञान के लिए झुकाता है, दिव्य कान सिद्धांत के साथ, जो शुद्ध है और मानव से परे है, वह दोनों प्रकार की ध्वनियों को सुनता है, दिव्य और मानव, जो दूर भी हैं और पास भी [Di 79]।

*

533. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझने का काम किया जाए। इसलिए कहा गया: 'सोच के इस्तेमाल से आवाज़ के संकेतों को उनके अंतर और एकता में समझना, कान के तत्व की शुद्धि का ज्ञान है।'

* *
*

[113] [अध्याय LII.- इच्छाशक्ति (हृदय) का प्रवेश]

534. यह कैसे है कि तीन तरह की समझ के दखल से [छह शक्तियों (आँख से शुरू करके) में भरोसा (और भरोसा न होना) देखकर, चेतना के अलग-अलग और एक होने वाले व्यवहार को समझना, इच्छा (दिल) की गहराई का ज्ञान है?

535. यहाँ एक भिक्षु सफलता का आधार विकसित करता है... (और इसी तरह धारा 525 में भी)।

536. वह पूरी तरह से विकसित करता है... (और इसी तरह §526 में)...

537. सफलता के इन चार आधारों में अपनी समझ को पूरी तरह से डेवलप और पूरी तरह से एजुकेट करके, और उसे लचीला और इस्तेमाल करने लायक बनाकर, वह समझता है। (तीन तरह की समझ का दखल) इस तरह: 'यह मैटेरियलिटी खुशी की क्षमता से पैदा होती है, यह मैटेरियलिटी दुख की क्षमता से पैदा होती है, यह मैटेरियलिटी शांति की क्षमता से पैदा होती है।'

इस प्रकार विकसित, शुद्ध और उज्ज्वल हुई अपनी पहचान के साथ वह अपनी पहचान को इच्छाओं (हृदय) के प्रवेश के ज्ञान की ओर निर्देशित करता है, झुकाता है। अपने हृदय से दूसरे प्राणियों, दूसरे व्यक्तियों के हृदयों में प्रवेश करते हुए वह उन्हें इस प्रकार समझता है: वह लोभी पहचान को लोभी समझता है, लोभी न होने वाली पहचान को लोभी नहीं समझता; वह घृणा करने वाली पहचान को घृणा करने वाला समझता है, घृणा न करने वाली पहचान को घृणा न करने वाला समझता है; वह भ्रमित पहचान को भ्रमित समझता है, भ्रमरहित पहचान को भ्रमरहित समझता है; वह सीमित पहचान को संकुचित समझता है, विचलित पहचान को विचलित समझता है; वह उच्च पहचान को उच्च समझता है, वह उत्कृष्ट पहचान को उत्कृष्ट समझता है, अप्राप्य पहचान को अप्राप्य समझता है; वह एकाग्र पहचान को एकाग्र समझता है, अकेंद्रित पहचान को अकेंद्रित समझता है; वह मुक्त संज्ञान को मुक्त समझता है, अमुक्त संज्ञान को अमुक्त समझता है [Di 79]।

*

538. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जा रहा है और समझ का मतलब है कि उसे समझने का काम किया जा रहा है। इसलिए कहा गया: 'तीन तरह की समझ के दखल की वजह से [छह) काबिलियत [आंख से शुरू करके] में भरोसा (और भरोसा न होना) देखकर चेतना के अलग-अलग और एक जैसे व्यवहार को समझना, इच्छाओं (दिल) में पैठ का ज्ञान है।'

* *
*

[अध्याय 83.- पिछले जीवन का स्मरण]

539. यह कैसे है कि [लाभहीन और लाभदायक] कार्रवाई में अंतर और एकता (क्रमशः) के हस्तक्षेप के माध्यम से सशर्त रूप से उत्पन्न विचारों की समझ पिछले जीवन की स्मृति का ज्ञान है? [114]

540. यहाँ एक भिक्षु सफलता का आधार विकसित करता है... [और इसी प्रकार धारा 525 में भी]।

541. वह पूरी तरह से विकसित करता है... (और इसी तरह §526 में)।

542. सफलता के इन चार आधारों के बारे में अपनी समझ को पूरी तरह से डेवलप और पूरी तरह से शिक्षित करने के बाद, और इसे लचीला और इस्तेमाल करने में आसान बनाकर, वह इस तरह समझता है: 'जब यह होता है, तो वह होता है; इसके होने से, वह होता है।' यानी: अज्ञानता की स्थिति में बनावट होती है; बनावट की स्थिति में, चेतना: चेतना के साथ

कंडीशन के तौर पर, मेंटलिटी-मटेरियलिटी; मेंटलिटी-मटेरियलिटी कंडीशन के तौर पर, छह गुना बेस; कंडीशन के तौर पर, कॉन्टैक्ट; कंडीशन के तौर पर कॉन्टैक्ट के साथ फीलिंग; कंडीशन के तौर पर फीलिंग के साथ, क्रेविंग; कंडीशन के तौर पर क्रेविंग; कंडीशन के तौर पर क्लेविंग के साथ, बीइंग; कंडीशन के तौर पर बीइंग के साथ, बुत; कंडीशन के तौर पर बर्थ के साथ एजिंग और डेथ, और सॉरी और विलाप, पेन, सॉरी और डेस्परेटी हैं; इस तरह यह सारा दुख पैदा होता है।

इस प्रकार विकसित, शुद्ध और उज्ज्वल हुई अपनी समझ के साथ वह अपने पिछले जीवन की स्मृति के ज्ञान की ओर अपनी समझ को निर्देशित करता है, वह उसे झुकाता है; वह अपने बहुआयामी पिछले जीवन को याद करता है, यानी: एक जन्म, दो जन्म, तीन जन्म, चार जन्म, पांच जन्म, दस जन्म, बीस जन्म, तीस जन्म, चालीस जन्म, पचास जन्म, सौ जन्म, एक हजार जन्म, एक लाख जन्म, संसार के संकुचन के अनेक उदाहरण, संसार के विस्तार के अनेक उदाहरण, संसार के संकुचन और विस्तार के अनेक उदाहरण; वहाँ मेरा ऐसा नाम रखा गया, ऐसी जाति का, ऐसे रूप का, ऐसा मेरा भोजन था, ऐसे मेरे सुख-दुख के अनुभव थे, ऐसे मेरे जीवन का अंत था; और वहाँ से निकलकर मैं अन्यत्र प्रकट हुआ; और वहाँ भी मेरा ऐसा नाम रखा गया, ऐसी जाति का, ऐसे रूप का, ऐसा मेरा भोजन था, ऐसे मेरे सुख-दुख के अनुभव थे, ऐसे मेरे जीवन का अंत था; और वहाँ से निकलकर मैं यहाँ प्रकट हुआ'; इस प्रकार इसके पहलुओं और विवरणों के साथ वह अपने विविध पिछले जीवन को याद करता है (Di81)।

*

543. ज्ञान का मतलब है कि कुछ जाना जा रहा है और समझ का मतलब है कि कुछ समझा जा रहा है। इसलिए कहा गया: '(बेकार और फायदेमंद) काम में फर्क और एकता के दखल से पैदा हुए विचारों को समझना, पिछले जन्म की याद का ज्ञान है।'

* * *

[अध्याय LIV. -दिव्य नेत्र]

544. यह कैसे है कि रोशनी के ज़रिए दिखने वाली चीज़ों के मतलब के निशानों को उनके अलग-अलग और एक होने के साथ देखना, दिव्य आँख का ज्ञान है?

545. यहाँ एक भिक्षु सफलता का आधार विकसित करता है.. . §525]. (और इसी तरह

546. वह पूरी तरह से विकसित करता है... और इसी तरह §5261 में।
547. सफलता के इन चार आधारों में अपनी समझ को पूरी तरह विकसित और शिक्षित करके, तथा उसे लचीला और व्यावहारिक बनाकर, [115] वह प्रकाश की धारणा पर ध्यान देता है, वह दिन की धारणा को स्थिर करता है: 'जैसा दिन है, वैसी ही रात है; जैसी रात है वैसा ही दिन है।' अपने हृदय को इस प्रकार खुले और खुले रखकर वह इसे प्रकाश के साथ विकसित करता है।

548. इस प्रकार विकसित, शुद्ध और उज्ज्वल हुई अपनी समझ से वह प्राणियों के मरने और फिर से प्रकट होने के ज्ञान की ओर अपनी समझ को निर्देशित करता है, उसे झुकाता है। दिव्य नेत्र से, जो शुद्ध और मानवीय से परे है, वह प्राणियों को मरते और फिर से प्रकट होते, निम्न और उच्च, सुंदर और कुरूप, अपने गंतव्य में सुखी या दुखी देखता है; वह प्राणियों को उनके कर्मों के अनुसार गति करते हुए समझता है: "ये श्रेष्ठ प्राणी, जो शरीर, वाणी और मन से बुरे आचरण वाले, महात्माओं की निन्दा करने वाले, अपने विचारों में गलत, गलत विचारों के कारण कर्म करने वाले, शरीर के टूटने पर, मृत्यु के बाद, अभाव की स्थिति में, दुखी गंतव्य में, विनाश में, नरक में प्रकट हुए हैं; परन्तु ये श्रेष्ठ प्राणी, जो शरीर, वाणी और मन से उत्तम आचरण वाले हैं, महात्माओं की निन्दा नहीं करते, अपने विचारों में सत्य हैं, सम्यक् दृष्टि से कर्म करने वाले हैं, वे शरीर के नाश होने पर, मरने के पश्चात, स्वर्गलोक में सुखी स्थान पर प्रकट हुए हैं; इस प्रकार पवित्र और मनुष्य से परे दिव्य नेत्र से वह प्राणियों को जाते और पुनः प्रकट होते, निम्न और श्रेष्ठ, सुन्दर और कुरूप, अपने गंतव्य में सुखी और दुखी देखता है; वह प्राणियों को उनके कर्मों के अनुसार गति करते हुए समझता है। [Di 82]

*

549. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझने का काम किया जाए। इसलिए कहा गया: 'दिखने वाली चीज़ों के मतलब के निशानों को उनके अंतर और एकता में रोशनी के ज़रिए देखना, दिव्य आँख का ज्ञान है।'

* * *

[अध्याय LV. - कैंकर की थकावट]

550. यह कैसे है कि चौसठ पहलुओं में तीन शक्तियों की महारत के रूप में समझ, कैंसर की थकावट का ज्ञान है? 40

551. कौन सी तीन फैकल्टीज़ हैं?

मैं-अनजान-को-जान-लूंगा वाली क्षमता, अंतिम-ज्ञान-धार वाली क्षमता, और अंतिम-ज्ञाता वाली क्षमता।

552: मैं-अनजान-को-जानूंगा वाली क्षमता कितनी जगहों पर जाती है? अंतिम-ज्ञान वाली क्षमता कितनी जगहों पर जाती है? अंतिम-जानने वाली क्षमता कितनी जगहों पर जाती है?

अज्ञात को जानने की क्षमता एक स्थान पर जाती है, धारा-प्रवेश पथ पर। अंतिम-ज्ञान क्षमता छह स्थानों पर जाती है, [116] धारा प्रवेश की प्राप्ति के लिए, एक बार लौटने के मार्ग पर, एक बार लौटने के फलस्वरूप, न लौटने के मार्ग पर, न लौटने के फलस्वरूप और अरहंत पथ पर। अंतिम-ज्ञाता क्षमता एक स्थान पर जाती है, अरहंतत्व की प्राप्ति के लिए।

553. धारा-प्रवेश पथ के क्षण में मैं-अज्ञात-को-जान-लूँगा क्षमता विश्वास क्षमता द्वारा संकल्प से सुसज्जित होती है, ऊर्जा क्षमता द्वारा परिश्रम से सुसज्जित होती है, जागरूकता क्षमता द्वारा स्थापना से सुसज्जित होती है, एकाग्रता क्षमता द्वारा गैर-विचलन से सुसज्जित होती है, समझ क्षमता द्वारा देखने से सुसज्जित होती है, मन क्षमता द्वारा ज्ञान से सुसज्जित होती है, आनंद क्षमता द्वारा आनंद से सुसज्जित होती है, जीवन क्षमता द्वारा घटित होने वाली निरंतरता की प्रबलता से सुसज्जित होती है।

धारा-प्रवेश पथ के क्षण में (उस क्षण) पैदा हुए सभी विचार, ज्ञान से उत्पन्न भौतिकता को छोड़कर, लाभदायक होते हैं, नासूरों से मुक्त होते हैं, बाहर ले जाते हैं, फैलाव की ओर ले जाते हैं, अलौकिक से संबंधित होते हैं, उनका सहायक-विषय निब्बान होता है।

स्ट्रीम-एंट्री पाथ के समय, 'मैं-अनजान-को-जानूंगा' फैकल्टी के पास ये आठ फैकल्टी होती हैं, जो उसके कोनासेंट इक्विपमेंट, उसके म्यूचुअल इक्विपमेंट, उसके सपोर्ट इक्विपमेंट, उसके एसोसिएट इक्विपमेंट के लिए होती हैं, वे एक-दूसरे के साथ होती हैं, कोनासेंट होती हैं, जुड़ी होती हैं, जुड़ी होती हैं; वे उसके एस्पेक्ट और उसके इक्विपमेंट हैं।41

554. धारा प्रवेश के फलित होने के क्षण में अंतिम-ज्ञान संकाय विश्वास संकाय द्वारा संकल्प से सुसज्जित होता है, ऊर्जा संकाय द्वारा परिश्रम से सुसज्जित होता है, मन संकाय द्वारा स्थापना से सुसज्जित होता है, एकाग्रता संकाय द्वारा गैर-विचलन से सुसज्जित होता है, समझ संकाय द्वारा देखने से सुसज्जित होता है, मन संकाय द्वारा ज्ञान से सुसज्जित होता है, आनंद संकाय द्वारा आनंद से सुसज्जित होता है, जीवन संकाय द्वारा घटित निरंतरता की प्रबलता से सुसज्जित होता है।

स्ट्रीम एंट्री के फलित होने के समय [उस समय] पैदा हुए सभी विचार अनिश्चित होते हैं; ज्ञान से पैदा हुई भौतिकता को छोड़कर, वे सभी कैंसर से मुक्त होते हैं, अलौकिक होते हैं, और उनका सहायक-ऑब्जेक्ट निब्बान होता है।

धारा में प्रवेश के फलित होने के क्षण में अंतिम-ज्ञान:

संकाय के पास अपने संबद्ध उपकरणों के लिए, अपने मूल उपकरणों के लिए, अपने सहायक उपकरणों के लिए, अपने सहयोगी उपकरणों के लिए ये आठ संकाय हैं, वे एक दूसरे के साथ रहते हैं, संबद्ध हैं, संयुक्त हैं, संबद्ध हैं: वे इसके पहलू और उपकरण हैं। [117]

555. एक बार लौटने वाले रास्ते के पल में...

556. एक बार लौटने के फल के क्षण में...

557. न लौटने वाले रास्ते के पल में....

558. एक बार लौटने के फल के क्षण में...

559. अरहंत पथ के क्षण में...

फ़ाइनल-नॉलेज फ़ैसिलिटी, विश्वास फ़ैसिलिटी से रिज़ॉल्यूशन से लैस होती है... (और इसी तरह ऊपर बताया गया है)... लाइफ़ फ़ैसिलिटी से होने वाली कंटिन्यूटी के प्रोविन्स से लैस होती है।

अरहंत मार्ग के क्षण में [उस क्षण] पैदा हुए सभी विचार, ज्ञान-जनित भौतिकता को छोड़कर, लाभदायक होते हैं, कैंसर से मुक्त होते हैं, बाहर ले जाते हैं, फैलाव की ओर ले जाते हैं, अलौकिक से संबंधित होते हैं, उनके सहायक-वस्तु के रूप में निब्बान होते हैं।

560. अरहंत होने के समय, अंतिम-ज्ञानी क्षमता विश्वास की क्षमता से समाधान से लैस होती है,... [और इसी तरह जीवन की ... क्षमता से निरंतरता की प्रबलता से लैस होती है। अरहंत होने के समय (उस समय) पैदा हुए सभी विचार अनिश्चित होते हैं; ज्ञान से पैदा हुई भौतिकता को छोड़कर, वे सभी कैंसर से मुक्त होते हैं, अलौकिक से संबंधित होते हैं, और उनका सहायक-विषय निब्बाण होता है।

अरहंत होने के समय, आखिरी जानने वाली शक्ति के पास ये आठ शक्तियाँ होती हैं, जो उसके जुड़े हुए इक्विपमेंट के लिए, उसके आपसी इक्विपमेंट के लिए, उसके एक-दूसरे पर निर्भर इक्विपमेंट के लिए, उसके सहयोगी इक्विपमेंट के लिए होती हैं, वे एक-दूसरे के साथ होती हैं, जुड़ी हुई होती हैं, जुड़ी होती हैं; वे उसके पहलू और उसके इक्विपमेंट हैं।

तो ये आठ ऑक्टेड मिलकर चौसठ होते हैं।

561. नासूर: ये नासूर क्या हैं? ये कामुक इच्छाओं के नासूर हैं, होने के नासूर हैं, नज़रिए के नासूर हैं, अज्ञानता के नासूर हैं।

562. ये कैंकर कहाँ खत्म हो गए?

धारा-प्रवेश पथ से विचारों का नासूर पूरी तरह समाप्त हो जाता है, [118] कामुक-इच्छाओं, अस्तित्व और अज्ञानता के नासूर, जो अभाव की स्थिति को जन्म देने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हैं, वे समाप्त हो जाते हैं, ये नासूर यहाँ समाप्त हो जाते हैं।

एक बार लौटने वाले रास्ते से कामुक इच्छाओं का बड़ा बोझ खत्म हो जाता है, और उससे जुड़े होने और अज्ञान के कीड़े भी खत्म हो जाते हैं। ये कैंकर यहाँ खत्म हो गए हैं।

वापस न लौटने वाले रास्ते से कामुक इच्छाओं का नासूर पूरी तरह खत्म हो जाता है, और उसके साथ होने और अज्ञानता का नासूर भी खत्म हो जाता है। ये नासूर यहीं खत्म हो जाते हैं।

अरहंत मार्ग से होने का नासूर और अज्ञान का नासूर पूरी तरह खत्म हो जाता है। ये नासूर यहीं खत्म हो जाते हैं।

563. ज्ञान का मतलब है कि उसे जाना जाए और समझ का मतलब है कि उसे समझने का काम किया जाए। इसलिए कहा गया: 'चौंसठ पहलुओं में तीन शक्तियों पर महारत हासिल करना ही कैंसर की थकावट का ज्ञान है।'

[अध्याय LVI.-LIX.-वास्तविकताएँ]

564. यह कैसे है कि पूर्ण-समझ के अर्थ की समझ दुख का ज्ञान है, त्याग के अर्थ की समझ मूल का ज्ञान है, एहसास के अर्थ की समझ समाप्ति का ज्ञान है, विकास के अर्थ की समझ मार्ग का ज्ञान है?

565. दुख का मतलब है दबाना, बनना, जलना, बदलना, क्योंकि इसका मतलब है पूरी तरह समझना। ओरिजिन का मतलब है जमा करना, सोर्स, बंधन, रुकावट, छोड़ना। खत्म होने का मतलब है बचना, अकेलापन, न बनना, अमर होना, क्योंकि इसका मतलब है एहसास। रास्ते का मतलब है बाहर निकलना, वजह, देखना, हावी होना, क्योंकि इसका मतलब है डेवलप होना।

566. ज्ञान का मतलब है कि जाना जा रहा है और समझ का मतलब है कि उसे समझा जा रहा है। इसलिए कहा गया: 'पूरी समझ का मतलब समझना दुख का ज्ञान है, छोड़ने का मतलब समझना शुरुआत का ज्ञान है, एहसास का मतलब समझना खत्म होने का मतलब जानना है, और विकसित होने का मतलब समझना रास्ते का ज्ञान है।'

[अध्याय LX-LXIII. --वास्तविकताओं का ज्ञान]

567. दुख का ज्ञान कैसे होता है, दुख की उत्पत्ति का ज्ञान कैसे होता है, दुख के निरोध का ज्ञान कैसे होता है, दुख निरोध के मार्ग का ज्ञान कैसे होता है? [119]

568. मार्ग के स्वामी का ज्ञान दुःख का ज्ञान है, दुःख की उत्पत्ति का ज्ञान है, दुःख के निरोध का ज्ञान है और दुःख के निरोध की ओर ले जाने वाले मार्ग का ज्ञान है।

इसमें दुख का ज्ञान क्या है?

कोई भी समझ, समझने का काम, जांच, दोबारा जांच, विचारों की जांच, नोट करना, नोटिस करना, ध्यान देना, सीखना, हुनर, होशियारी, अंदाज़ा, तर्क, जांच, साफ़-साफ़ बताना, समझदारी, पायलटिंग, समझ, पूरी जानकारी, बढ़ावा देना, समझ, क्षमता के तौर पर समझ, ताकत के तौर पर समझ, हथियार के तौर पर समझ, मज़बूत मज़बूती के तौर पर समझ, रोशनी के तौर पर समझ, रोशनी के तौर पर समझ, रोशनी के तौर पर समझ, खजाने के तौर पर समझ, भ्रांति न होना, विचारों की जांच, सही नज़रिया, जो दुख के साथ पैदा होता है: इसे दुख का ज्ञान कहा जाता है (देखें Dhs 16)।

कोई भी समझ... सही नज़रिया, जो इस बात पर निर्भर करता है कि दुख की उत्पत्ति: . . .

कोई भी समझ... सही नज़रिया, जो खत्म होने पर पैदा होता है दुख का:...

कोई भी समझ,... सही नज़रिया, जो दुख खत्म करने के रास्ते पर निर्भर करता है: इसे दुख खत्म करने के रास्ते का ज्ञान कहा जाता है।

*

569. ज्ञान का मतलब है कि जाना जाता है और समझ का मतलब है कि उसे समझा जाता है। इसलिए कहा गया: 'दुख की हद का ज्ञान, दुख की शुरुआत का ज्ञान, दुख के खत्म होने का ज्ञान, दुख के खत्म होने के रास्ते का ज्ञान'।

* * *

[अध्याय LXIV.-LXVII.-- भेदभाव]

570. अर्थ विवेक का ज्ञान कैसे होता है, ज्ञान

विचारों के विवेक का ज्ञान, भाषा के विवेक का ज्ञान, स्पष्टता के विवेक का ज्ञान?

571. अर्थ का भेद अर्थों का ज्ञान है, विचारों का भेद विचारों का ज्ञान है, भाषा का भेद भाषा के प्रकारों का ज्ञान है, तीक्ष्णता का भेद तीक्ष्णता के प्रकारों का ज्ञान है।

मतलब में अंतर को समझना मतलब में अंतर करने का ज्ञान है। विचार में अंतर को समझना विचारों में अंतर करने का ज्ञान है। भाषा में अंतर को समझना भाषा में अंतर करने का ज्ञान है। साफ़-साफ़ समझ में अंतर को समझना साफ़-साफ़ समझ में अंतर करने का ज्ञान है।

अर्थ की परिभाषा का बोध ही अर्थ विवेक का ज्ञान है...[120]

मतलब नोट करने की समझ ही मतलब पहचानने का ज्ञान है।

मतलब समझने की समझ ही मतलब पहचानने का ज्ञान है।

मतलब की कैटेगरी को समझना मतलब में फर्क करने का ज्ञान है...

मतलब निकालने की समझ ही मतलब पहचानने का ज्ञान है...

अर्थों के प्रकाश की समझ अर्थ के भेद का ज्ञान है...

मतलब को चमकाने की समझ ही मतलब को पहचानने का ज्ञान है...

अर्थ समझाने की समझ ही अर्थ के विवेक का ज्ञान है... सुस्पष्टता को समझाने की समझ ही सुस्पष्टता का विवेक है।

*

572. ज्ञान उस अर्थ में है कि जाना जाए और समझ उस क्रिया के अर्थ में है। इसलिए कहा गया है: 'अर्थ के विवेक का ज्ञान, विचारों के विवेक का ज्ञान, भाषा के विवेक का ज्ञान, सुबोधता के विवेक का ज्ञान'। [121]

* * *

(ज्ञान शिष्यों द्वारा साझा नहीं किया गया)

[अध्याय LXVIII. - दूसरों की क्षमताओं का प्रवेश|

573. दूसरों की शक्तियों को भेदने के बारे में सिद्ध पुरुष का ज्ञान क्या है?

574. यहाँ पूर्ण पुरुष (तथागत) प्राणियों को उनकी आँखों में कम धूल के साथ, उनकी आँखों में बहुत धूल के साथ, तीव्र क्षमताओं वाले, मंद क्षमताओं वाले, अच्छे भागों वाले, बुरे भागों वाले, निर्देश देने में आसान और निर्देश देने में कठिन, ऐसे देखते हैं और कुछ ऐसे भी देखते हैं जो दूसरी दुनिया में और निंदनीय चीज़ों में भय देखते हैं, और कुछ ऐसे भी देखते हैं जो दूसरी दुनिया में और निंदनीय चीज़ों में कोई भय नहीं देखते (मी 69, सी 138, विन 1 6)।

575. उनकी आँखों में थोड़ी धूल है, उनकी आँखों में बहुत धूल है:

आस्था रखने वाले इंसान की आँखों पर थोड़ी धूल होती है; आस्था न रखने वाले इंसान की आँखों पर बहुत ज़्यादा धूल होती है। एनर्जेटिक इंसान की आँखों पर थोड़ी धूल होती है; आलसी इंसान की आँखों पर बहुत ज़्यादा धूल होती है। पक्का दिमाग रखने वाले इंसान की आँखों पर थोड़ी धूल होती है; भुलक्कड़ इंसान की आँखों पर बहुत ज़्यादा धूल होती है। एकाग्र इंसान की आँखों पर थोड़ी धूल होती है; एकाग्र न रहने वाले इंसान की आँखों पर बहुत ज़्यादा धूल होती है। समझदार इंसान की आँखों पर थोड़ी धूल होती है; बिना समझ वाले इंसान की आँखों पर बहुत ज़्यादा धूल होती है।

576. तीव्र क्षमताओं के साथ, सुस्त क्षमताओं के साथ:

जिस व्यक्ति में विश्वास होता है, उसकी काबिलियत तेज़ होती है; जिस व्यक्ति में विश्वास नहीं होता, उसकी काबिलियत कम होती है... (और इसी तरह बाकी पाँच काबिलियत भी होती हैं)।

577. अच्छे भागों का, बुरे भागों का:

विश्वास रखने वाला व्यक्ति अच्छा होता है; विश्वास न रखने वाला व्यक्ति बुरा होता है।

578. निर्देश देना आसान है, निर्देश देना कठिन है:

आस्था रखने वाले व्यक्ति को निर्देश देना आसान है; आस्था न रखने वाले व्यक्ति को निर्देश देना कठिन है... [122]

579. कुछ लोग ऐसे भी हैं जो दूसरी दुनिया और निंदनीय चीज़ों में डर देखते हैं और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो दूसरी दुनिया और निंदनीय चीज़ों में कोई डर नहीं देखते:

विश्वास रखने वाला इंसान दूसरी दुनिया में और बुराई की जा सकने वाली चीज़ों में डर देखता है; विश्वास न रखने वाला इंसान दूसरी दुनिया में और बुराई की जा सकने वाली चीज़ों में कोई डर नहीं देखता। समझ न रखने वाला इंसान दूसरी दुनिया में और बुराई की जा सकने वाली चीज़ों में कोई डर नहीं देखता।

580. विश्व:

समुच्चयों की दुनिया, सिद्धांतों की दुनिया, आधारों की दुनिया, दुर्भाग्य की दुनिया, दुर्भाग्य उत्पन्न करने वाली दुनिया, सौभाग्य की दुनिया, सौभाग्य उत्पन्न करने वाली दुनिया।

एक दुनिया: सभी जीव पोषण से जीवित रहते हैं।
दो दुनियाएँ: मानसिकता और भौतिकता।
तीन दुनिया: तीन तरह की भावनाएँ।
चार दुनिया: चार तरह के पोषण।
पाँच दुनियाएँ: पाँच समूह जो चिपके रहने की चीज़ें हैं।
छह दुनियाएँ: छह अंदरूनी बेस।
सात दुनियाएँ: चेतना के सात स्टेशन।
आठ दुनिया: आठ सांसारिक विचार।
नौ लोक: प्राणियों के नौ निवास।
दस दुनिया: दस बेस (मन और विचारों को छोड़कर).
बारह दुनियाएँ: बारह बेस।
अठारह दुनिया: अठारह सिद्धांत।

581. क्या निंदनीय है:

सभी बुराइयां निंदनीय हैं, सभी गलत काम... सभी इच्छाएं... सभी काम जो अस्तित्व की ओर ले जाते हैं, निंदनीय हैं।

582. दुनिया के डर की इतनी तेज़ समझ, जैसा कि अभी बताया गया है, निंदा के लिए, स्थापित हो जाती है, जैसे कि एक हत्यारे के पास तैयार हथियार हो।

583. वह इन पाँचों शक्तियों को इन पचास पहलुओं में जानता है, देखता है, पहचानता है और उनमें प्रवेश करता है।

यह दूसरों की काबिलियत को समझने का परफेक्ट वन का ज्ञान है।

* *
*

[अध्याय LXIX. - पूर्वाग्रह और अंतर्निहित प्रवृत्तियाँ]

एसए

584. [123] प्राणियों के पूर्वाग्रहों और अंतर्निहित प्रवृत्तियों के बारे में पूर्ण को क्या ज्ञान है?

585. यहाँ पूर्ण पुरुष प्राणियों के पक्षपातों को जानता है, वह उनकी अंतर्निहित प्रवृत्तियों को जानता है। झूठ बोलने की प्रवृत्ति, वह उनके व्यवहार को जानता है, वह उनके संकल्पों को जानता है, वह प्राणियों को सक्षम और अक्षम के रूप में जानता है।

586. प्राणियों का पक्षपात क्या है?

प्राणियों को या तो होने के इस नज़रिए से सपोर्ट मिलता है या न होने के इस नज़रिए से सपोर्ट मिलता है, जैसे: 'दुनिया हमेशा रहने वाली है' या 'दुनिया हमेशा रहने वाली नहीं है' या 'दुनिया सीमित है' या 'दुनिया अनंत है' या 'आत्मा और शरीर एक ही हैं' या 'आत्मा एक है, शरीर दूसरा' या 'एक परफेक्ट इंसान मौत के बाद होता है' या 'एक परफेक्ट इंसान मौत के बाद नहीं होता' या 'एक परफेक्ट इंसान मौत के बाद नहीं होता'

'परफेक्ट वन मौत के बाद भी होता है और नहीं भी होता' या 'एक परफेक्ट वन मौत के बाद न तो होता है और न ही नहीं होता'। या फिर, इन दोनों एक्सट्रीम से बचते हुए, वे या तो खास कंडीशन से पैदा हुए विचारों के संबंध में (सुपरमॉन्डेन नॉलेज के साथ) कन्फर्मेशन चुनते हैं या वे सही नॉलेज हासिल करते हैं।

वह उन्हें कामुक-इच्छाओं का पीछा करने के रूप में भी जानता है: 'यह व्यक्ति कामुक इच्छाओं को महत्व देता है, कामुक इच्छाओं के प्रति पक्षपाती है, कामुक इच्छाओं पर दृढ़ है। 2 वह उन्हें त्याग का पीछा करने के रूप में भी जानता है: यह व्यक्ति त्याग को महत्व देता है, त्याग के प्रति पक्षपाती है, त्याग पर दृढ़ है। वह उन्हें इस प्रकार दुर्भावना का पीछा करने के रूप में भी जानता है: यह व्यक्ति दुर्भावना को महत्व देता है, दुर्भावना के प्रति पक्षपाती है, दुर्भावना पर दृढ़ है। वह उन्हें गैर-दुर्भावना का पीछा करने के रूप में भी जानता है: यह व्यक्ति गैर-दुर्भावना को महत्व देता है, गैर-दुर्भावना के प्रति पक्षपाती है, गैर-दुर्भावना पर दृढ़ है। वह उन्हें कठोरता और सुस्ती का पीछा करने के रूप में भी जानता है: यह व्यक्ति कठोरता और सुस्ती को महत्व देता है, कठोरता और सुस्ती के प्रति पक्षपाती है, कठोरता और सुस्ती पर दृढ़ है। वह उन्हें प्रकाश की धारणा का अनुसरण करने वाले के रूप में भी जानता है: यह व्यक्ति प्रकाश की धारणा को महत्व देता है, प्रकाश की धारणा के प्रति पक्षपाती है, प्रकाश की धारणा पर दृढ़ है।

यह लोगों का बायस है।

587. प्राणियों की अंदरूनी प्रवृत्ति क्या है?

सात अंतर्निहित प्रवृत्तियाँ हैं: कामुक-इच्छा के लिए लालच की अंतर्निहित प्रवृत्ति, प्रतिरोध की अंतर्निहित प्रवृत्ति, दंभ (गर्व) की अंतर्निहित प्रवृत्ति, (गलत) दृष्टिकोण की अंतर्निहित प्रवृत्ति, अनिश्चितता की अंतर्निहित प्रवृत्ति, अस्तित्व के लिए लालच की अंतर्निहित प्रवृत्ति, अज्ञानता की अंतर्निहित प्रवृत्ति।

दुनिया में जहाँ भी कोई चीज़ प्यारी और पसंद आने लायक होती है, वहाँ कामुकता की चाहत के लिए लालच की अंदरूनी आदत होती है। दुनिया में जहाँ भी कोई चीज़ (124) नापसंद और पसंद न आने लायक होती है, वहाँ विरोध की अंदरूनी आदत होती है। तो इन दो विचारों पर अज्ञानता बढ़ती है, और घमंड, और (गलत) नज़रिया और अनिश्चितता को उससे जुड़ा हुआ माना जा सकता है।

यह जीव, अंदरूनी झुकाव है।

588. प्राणियों का व्यवहार क्या है?

इच्छा-शक्ति से पुण्य बनना, इच्छा-शक्ति से पाप बनना, और बिना रुकावट इच्छा-शक्ति बनना - चाहे छोटे नतीजे के साथ हो या बड़े नतीजे के साथ।

यह प्राणियों का व्यवहार है।

589. प्राणियों का संकल्प क्या है ?

कुछ लोग इस बात पर अड़े रहते हैं कि क्या घटिया है, और कुछ लोग इस बात पर अड़े रहते हैं कि क्या बेहतर है। कुछ लोग इस बात पर अड़े रहते हैं कि क्या घटिया है।

जो घटिया है उसके प्रति दृढ़ है उनका विकास, बारंबारता और स्वागत है। जो श्रेष्ठ है उसके प्रति दृढ़ है, वे श्रेष्ठ के प्रति दृढ़ है उनका विकास, बारंबारता और स्वागत करते हैं। अतीत में भी जो घटिया है उसके प्रति दृढ़ है, घटिया का प्रयास करने वालों का विकास, बारंबारता और स्वागत किया था तथा जो श्रेष्ठ है उसके प्रति दृढ़ है, उसने श्रेष्ठ का प्रयास करने वालों का विकास, बारंबारता और स्वागत किया था। भविष्य में भी जो घटिया है उसके प्रति दृढ़ है, घटिया का प्रयास करने वालों का विकास, बारंबारता और स्वागत करेंगे तथा जो श्रेष्ठ है उसके प्रति दृढ़ है, वे श्रेष्ठ का प्रयास करने वालों का विकास, बारंबारता और स्वागत करेंगे।

यह प्राणियों का संकल्प है।

590. असमर्थ प्राणी क्या हैं?

जो भी जीव काम की वजह से रुकावट डालते हैं, गंदगी की वजह से रुकावट डालते हैं, काम के नतीजे की वजह से रुकावट डालते हैं, जिनमें विश्वास नहीं है, जोश नहीं है, समझ नहीं है, और जो फायदेमंद विचारों में सही होने का पक्का यकीन नहीं कर सकते - वे नाकाबिल जीव हैं।

591. सक्षम प्राणी क्या हैं?

जो भी जीव कर्म से रुकावट नहीं डालते, जो अपवित्रता से रुकावट नहीं डालते, जो कर्म-परिणाम से रुकावट नहीं डालते, जिनमें विश्वास है, जिनमें जोश है, जिनमें समझ है, और जो फायदेमंद विचारों में सही होने की निश्चितता पर पहुंचने में सक्षम हैं - वे सक्षम जीव हैं।

यह जीवों के बायस और अंदरूनी टेंडेंसी के बारे में परफेक्ट वन का ज्ञान है।

* * *

[अध्याय LXX.- जुड़वां कायापलट (मार्वल)]

592. ट्विन मेटामोर्फोसिस (मार्वल) के बारे में परफेक्ट वन का ज्ञान क्या है?

593. यहाँ पर पूर्ण पुरुष जुड़वां मेटामोर्फोसिस (चमत्कार) करता है, जिसे शिष्यों द्वारा साझा नहीं किया जाता है।

594. वह अपने शरीर के ऊपरी हिस्से से आग का एक पिंड और अपने शरीर के निचले हिस्से से पानी की बौछार पैदा करता है: वह अपने शरीर के निचले हिस्से से आग का एक पिंड और अपने शरीर के ऊपरी हिस्से से पानी की बौछार पैदा करता है।

इले अपने शरीर के पूर्व भाग से अग्नि का एक पिंड और अपने शरीर के पश्चिम भाग से जल की बौछार उत्पन्न करता है, वह अपने शरीर के पश्चिम भाग से अग्नि का एक पिंड और अपने शरीर के पूर्व भाग से जल की बौछार उत्पन्न करता है।

. . . दाहिनी आँख से... बायीं आँख से. बायीं आँख से... दाहिनी आँख से.
. . . दाहिनी कार से... बायीं कार से।
. . . दाएं नथुने से... बाएं नथुने से...
. . . दाएं कंधे से... बाएं कंधे से...
. . . दाहिने हाथ से... बाएं हाथ से...
. . . दाएं किनारे से... बाएं किनारे से....
. . . दाहिने पैर से... बाएं पैर से...
. . . की उंगलियों से... उंगलियों के बीच की हर जगह और
पैर . .

वह हर बाल से आग का एक पिंड और हर बाल से पानी की बौछार पैदा करता है: वह हर बाल के रोमछिद्र से आग का एक पिंड (126) और हर बाल के रोमछिद्र से पानी की बौछार पैदा करता है।

595. नीले, पीले, लाल, सफेद, गुलाबी और पारदर्शी इन छह रंगों के बीच भगवान चलते हैं जबकि उनकी बनाई गई छवि खड़ी रहती है या बैठती है या लेट जाती है, भगवान खड़े रहते हैं जबकि उनकी बनाई गई छवि चलती है या बैठती है या लेट जाती है, भगवान बैठते हैं जबकि उनकी बनाई गई छवि चलती है या खड़ी होती है या लेट जाती है, भगवान लेट जाते हैं जबकि उनकी बनाई गई छवि चलती है या खड़ी होती है या बैठ जाती है, बनाई गई छवि चलती है जबकि भगवान खड़े रहते हैं या बैठते हैं या लेट जाते हैं, बनाई गई छवि खड़ी रहती है जबकि भगवान चलते हैं या बैठते हैं या लेट जाते हैं, बनाई गई छवि बैठती है जबकि भगवान चलते हैं या खड़े होते हैं या लेट जाते हैं, बनाई गई छवि लेट जाती है जबकि भगवान चलते हैं या खड़े होते हैं या लेट जाते हैं।

यह ट्विन मेटामोर्फोसिस (मार्वल) के बारे में परफेक्ट वन का ज्ञान है।

* * *

[अध्याय LXXI.-महान करुणा]

596. महाकरुणा की प्राप्ति के विषय में सिद्ध पुरुष का ज्ञान क्या है?

597. जो ज्ञानी और धन्य हैं, जो अनेक रूपों में देखते हैं, उन पर प्राणियों के लिए महान करुणा उतरती है।

जो ज्ञानी लोग, धन्य लोग यह देखते हैं कि 'सांसारिक जीवन जल रहा है', उन पर जीवों के लिए महान करुणा उतरती है।

ज्ञानी लोगों, धन्य लोगों पर, जो इस प्रकार देखते हैं 'सांसारिक जीवन आगे बढ़ता है...

. . . 'सांसारिक जीवन चलता रहता है'...

. . . 'सांसारिक जीवन गलत रास्ते पर है'...

. . 'संसार का कोई स्थायित्व नहीं है और वह आगे बढ़ता रहता है' (एम ii 68)। . .

. . "दुनिया में कोई पनाह नहीं है और कोई रक्षक नहीं है" (Mii 68). . .

. . . 'दुनिया का अपना कुछ भी नहीं है,[127] इसे सब छोड़कर आगे बढ़ जाना है' (मी.आई. 68)...

. . "दुनिया अधूरी है, तृप्त नहीं है, और लालसा की गुलाम है" (M ii) 68). . .

. . . 'सांसारिक जीवन आश्रयहीन है'। . .

. . . 'सांसारिक जीवन बिना ढाल का है'। . .

. . . 'सांसारिक जीवन में कोई शरण नहीं है'...

. . "सांसारिक जीवन कोई शरणस्थली नहीं है...

. . . 'दुनिया परेशान और अशांत है'...

. . . 'दुनियावी ज़िंदगी तीरों से घायल है, कई तीरों से चुभ गई है; तीरों को निकालने वाला मेरे अलावा कोई नहीं है'...

. . . 'दुनिया की ज़िंदगी अनजानी छाया से, गंदगी के बंद तहखाने से अंधेरी हो गई है; रोशनी दिखाने वाला मेरे अलावा कोई और नहीं है'...

. . . 'दुनियावी ज़िंदगी अज्ञानता में चलती है, यह अंधी है, यह [अज्ञानता के] अंडे में बंद है (विन üi 3), यह एक उलझा हुआ गुच्छे जैसा है, [धागे का] एक गांठदार गोला है, जंगली पौधों का एक उलझा हुआ जाल है (D ii 55), यह कमी, दुखी मंज़िल और बर्बादी की हालत में दोबारा जन्म लेने के चक्कर से बचा नहीं है'...

. . 'दुनियावी ज़िंदगी अज्ञानता के ज़हर से भरी हुई है, गंदगी का दलदल है'...

. . 'दुनियावी ज़िंदगी लालच, नफ़रत और धोखे की भूलभुलैया है; इस भूलभुलैया को खोलने वाला मेरे अलावा कोई नहीं है'...

. . . 'सांसारिक जीवन लालसा के जाल में फंसा हुआ है'...

. . 'सांसारिक जीवन लालसा के जाल में लिपटा हुआ है'...

. . . 'सांसारिक जीवन लालसा की धारा में बह जाता है।' . .

. . . 'सांसारिक जीवन लालसा की बेड़ियों से बंधा हुआ है।' . .

. . . 'दुनियावी ज़िंदगी में लालच की अंदरूनी आदत होती है।' . .

. . 'सांसारिक जीवन लालसा की पीड़ा से पीड़ित है'...

. . 'सांसारिक जीवन [128] तृष्णा की पीड़ा से पीड़ित है।' . .

. . . 'दुनियावी ज़िंदगी नज़रियों के जाल में उलझी हुई है'...

. . . 'दुनियावी ज़िंदगी नज़रियों के जाल में लिपटी हुई है'...

. . 'दुनियावी ज़िंदगी विचारों की धारा में बह जाती है'...

. . 'दुनियावी ज़िंदगी नज़रियों की बेड़ियों में जकड़ी हुई है'...

. . . 'दुनियावी ज़िंदगी नज़रिए की अंदरूनी प्रवृत्ति से जुड़ी है'...

. . . 'दुनियावी ज़िंदगी नज़रिए की तकलीफ़ से परेशान है'...

. . . 'दुनियावी ज़िंदगी नज़रिए की तकलीफ़ से परेशान है'...

. . . 'सांसारिक जीवन जन्म से ही मिलता है'...
. . . 'दुनियावी ज़िंदगी उम्र बढ़ने पर निर्भर करती है' . . .
. . . 'सांसारिक जीवन दुखों से भरा हुआ है।'
. . . "सांसारिक जीवन मृत्यु से प्रभावित होता है।"
. . "सांसारिक जीवन दुख पर आधारित है।" . .
. . . "सांसारिक जीवन लालसा में फंसा हुआ है...
. . . 'दुनियावी ज़िंदगी बुढ़ापे की दीवार से घिरी हुई है। . .
. . "सांसारिक जीवन मौत के जाल में फंसा हुआ है..."
. . . 'सांसारिक जीवन बड़े बंधनों से बंधा है: लालच के बंधन से, नफरत के बंधन से, भ्रम के बंधन से, दंभ (गर्व) के बंधन से, विचारों के बंधन से, अपवित्रता के बंधन से, दुराचार के बंधन से। इसे बंधनों से मुक्त करने वाला मेरे अलावा कोई और नहीं है...

. . . 'दुनियावी ज़िंदगी एक बड़ी भीड़ भरी सुरंग में घुस गई है, खुली जगह दिखाने वाला मेरे अलावा कोई नहीं है'...

. . . दुनियावी ज़िंदगी में एक बहुत बड़ी रुकावट है, इसकी रुकावट को दूर करने वाला मेरे अलावा कोई नहीं है।

. . . 'दुनियावी ज़िंदगी एक बड़ी खाई में गिर गई है; इसे इस खाई से निकालने वाला मेरे अलावा कोई नहीं है'...

. . . "दुनियावी ज़िंदगी एक बड़े जंगल में चली गई है, उसे जंगल से पार कराने वाला मेरे अलावा कोई नहीं है।"

. . . "दुनियावी ज़िंदगी एक बड़े गोल चक्कर में फंस गई है; इसे इस गोल चक्कर से निकालने वाला मेरे अलावा कोई नहीं है।"

. . . 'दुनियावी ज़िंदगी एक बड़ी खाई में फंसी हुई है; इसे खाई से निकालने वाला मेरे अलावा कोई नहीं है'...

. . . "सांसारिक जीवन एक बड़े दलदल [129] में फंसा हुआ है, इसे दलदल से निकालने वाला मेरे अलावा कोई नहीं है'...

. . . "सांसारिक जीवन असुरक्षित है"....

. . . 'दुनियावी ज़िंदगी लालच की आग, नफ़रत की आग, भ्रम की आग, जन्म, बुढ़ापा और मौत, दुख और विलाप, दर्द, शोक और निराशा की आग से जल रही है; इन आग को बुझाने वाला मेरे अलावा कोई नहीं है'...

. . . "दुनियावी ज़िंदगी, किसी को [फांसी पर चढ़ाए जाने की] सज़ा के तौर पर कभी किसी पनाह के लायक नहीं होती, जैसे कोई गुनाहगार जिसकी सज़ा पूरी हो चुकी हो..."

... 'दुनियावी ज़िंदगी बुरी चीज़ों से बंधी है और नुकसान पर टिकी है; तेरे लिए मेरे अलावा कोई नहीं है...

. . . "दुनियावी ज़िंदगी का कोई मददगार नहीं है और यह बहुत बुरी हालत में पहुँच गई है - इसे बचाने के लिए मेरे अलावा कोई नहीं है।"

. . 'दुनियावी ज़िंदगी दुख से भरी हुई है, और लंबे समय से इससे दबी हुई है'...

. . . "सांसारिक जीवन हमेशा भूखा और प्यासा रहता है। . . .

. . . 'सांसारिक जीवन अंधा और दृष्टिहीन है..

. . .'दुनियावी ज़िंदगी ने अपना लीडर खो दिया है और उसका कोई गाइड नहीं है'...

. . .'दुनियावी ज़िंदगी गलत रास्ते पर भटक गई है और सीधे रास्ते से भटक गई है; इसे नेक रास्ते पर ले जाने वाला मेरे अलावा कोई नहीं है...

. . .'दुनियावी ज़िंदगी बड़ी बाढ़ में बह गई है; इसे बाढ़ से बचाने वाला मेरे अलावा कोई नहीं है'...

. . .'दुनियावी ज़िंदगी दो तरह के नज़रिए से भरी हुई है'.... (It 43)

. . 'सांसारिक जीवन तीन तरह के गलत कामों से बिगड़ जाता है'.....

. . .'सांसारिक जीवन चार जोतों से बंधा है'... (Diii 230)

. . .'सांसारिक जीवन चार गांठों से बंधा है'... (D iii 230)

. . 'सांसारिक जीवन चार प्रकार की आसक्तियों से चिपका रहता है'... (Diii 230)

. . .'दुनियावी ज़िंदगी पाँच मंज़िलों पर चल पड़ी है'... (Diii 234)

. . .सांसारिक जीवन पांच प्रकार की विषय-वासनाओं के लोभ से रंगा हुआ है... (Diii 234)

. . .* सांसारिक जीवन पाँच बाधाओं से अवरुद्ध है। (130) (Diii 234)

. . 'सांसारिक जीवन विवाद की छह जड़ों से विवादित है'... (Diii 246)

. . .'सांसारिक जीवन छह तरह की तृष्णाओं से लालच से रंगा हुआ है'... (D iii 244)

. . .'दुनियावी ज़िंदगी छह तरह के नज़रिए से भरी हुई है'... (Mi8)

. . .'सांसारिक जीवन सात अंतर्निहित प्रवृत्तियों से घिरा है'... (Diii 254)

. . सांसारिक जीवन सात बेड़ियों से बंधा हुआ है... (अ iv 8)

. . 'सांसारिक जीवन सात अभिमानों से अभिमानी है'... (वभ 383)

. . 'सांसारिक जीवन में आठ सांसारिक विचार शामिल होते हैं'... (D iii 260)

. . 'दुनियावी ज़िंदगी आठ गलतियों से तय होती है'... (D iii 254)

. . .'इंसान की आठ बुराइयों से दुनियावी ज़िंदगी खराब हो जाती है'... (Vbh 387)

. . .'दुनियावी ज़िंदगी नौ वजहों से परेशान होती है'... (A iv 408)

. . .'सांसारिक जीवन नौ गुना घमंड (घमंड) के कारण घमंडी है'... (Vbh 389)

. . .'सांसारिक जीवन लालसा में निहित नौ विचारों के माध्यम से लालच से रंगा हुआ है'.... (Diii 288)

. . .'सांसारिक जीवन दस कारणों से दूषित होता है'... (वभ 341,391)

. . .'दुनियावी ज़िंदगी दस वजहों से परेशान होती है'...(Av 150)

. . .'सांसारिक जीवन दस गलत कामों से भरा हुआ है'... (D iii 269)

. . 'सांसारिक जीवन दस बेड़ियों से बंधा हुआ है'... (अ व 17)

. . .'दुनियावी ज़िंदगी दस गलत कामों में बंधी है'... (D iii 290)

. . 'सांसारिक जीवन दस-आधारित गलत दृष्टिकोण से ग्रस्त है'... (वभ 392)

. . 'दुनियावी ज़िंदगी दस-तरफ़ा नज़रिए से होती है जो सीमित होने का दावा करती . . . है' (Vhh 392)

. . 'सांसारिक जीवन तृष्णा के एक सौ आठ प्रकारों से विविध होता है'... (देखें Vbh 400)

जो ज्ञानी लोग, धन्य लोग, ऐसा देखते हैं कि 'दुनिया की ज़िंदगी बासठ तरह के नज़रिए से भरी हुई है', उन पर जीवों के लिए महान दया उतरती है।

जो ज्ञानी पुरुष, धन्य पुरुष इस प्रकार देखते हैं कि 'मैं पार हो गया हूँ और संसार पार नहीं हुआ; मैं मुक्त हूँ और संसार मुक्त नहीं हुआ; मैं नियंत्रित हूँ और संसार अनियंत्रित है; मैं शांत हूँ [131] और संसार शांत नहीं है; मैं सुखी हूँ और संसार बेचैन है; मैं बुझ गया हूँ और संसार अशान्त है; मैं पार होकर पार ला सकता हूँ; मैं मुक्त होकर मुक्त कर सकता हूँ; मैं नियंत्रित होकर नियंत्रण सिखा सकता हूँ; मैं शांत होकर शांत कर सकता हूँ; मैं सुखी होकर सुख दे सकता हूँ; मैं बुझ गया हूँ, बुझना सिखा सकता हूँ', उन पर महाकरुणा अवतरित होती है।

यह महाकरुणा की प्राप्ति का पूर्ण ज्ञान है।

* * *

[अध्याय LXXII-LXXIII-सर्वज्ञ और अबाधित ज्ञान]

598. पूर्ण पुरुष का सर्वज्ञ ज्ञान क्या है?

599. यह बिना किसी अपवाद के सभी बनी हुई और अनगढ़ चीज़ों को जानता है, इस प्रकार यह सर्वज्ञ ज्ञान है: यह वहाँ बिना किसी रुकावट के है, इस प्रकार यह अबाधित ज्ञान है।

जो कुछ भी अतीत है, वह सब जानता है, इसलिए यह सर्वज्ञ ज्ञान है: यह वहाँ बिना किसी रुकावट के है, इसलिए यह बिना रुकावट वाला ज्ञान है।

यह सब भविष्य जानता है,...

जो कुछ भी अभी पैदा हुआ है, वह सब जानता है,...

आँख और दिखने वाली चीज़ें: वह सब कुछ जो वह जानती है,....

कान और आवाज़ें: वह सब कुछ जो यह जानता है....

नाक और गंध: यह सब कुछ जानता है।

जीभ और स्वाद: वह सब जो वह जानती है,...

शरीर और ठोस चीज़ें: वह सब कुछ जो वह जानता है....

मन और विचार: वह सब कुछ जो वह जानता है....

600. नश्वरता के अर्थ की सीमा, दर्द का अर्थ, अनात्मा का अर्थ: वह जो कुछ जानता है, इस प्रकार वह सर्वज्ञ ज्ञान है: वह वहाँ बिना किसी बाधा के है, इस प्रकार वह अबाधित ज्ञान है।

भौतिकता के अस्थायी होने के अर्थ की सीमा, दर्द का अर्थ, स्वयं न होने का अर्थ: वह सब जो वह जानता है, (और इसी तरह §5 में लिस्ट किए गए बाकी 201 विचारों के साथ)...

बुढ़ापे और मौत का मतलब है कि यह हमेशा नहीं रहता, दर्द का मतलब है, खुद न होने का मतलब है: यह सब कुछ जानता है,...

601. डायरेक्ट-नॉलेज में डायरेक्ट-नॉलेज के मतलब की सीमा: वह सब जो वह जानता है,...

पूरी समझ में पूरी समझ के मतलब की सीमा: वह सब जो वह जानता है....

छोड़ने का मतलब छोड़ने में ही है: वह सब जो वह जानता है....

डेवलपिंग में डेवलपिंग का मतलब कितना है: वह सब जो वह जानता है,...

एहसास में एहसास के मतलब की हद: वह सब जो वह जानता है,

कुल मिलाकर में कुल के मतलब की हद: वह सब जो वह जानता है....

प्रिंसिपल्स में प्रिंसिपल के मतलब की सीमा: वह सब जो वह जानता है,...

आधारों में आधार के अर्थ की सीमा: वह सब जो वह जानता है,... जो बनाया गया है उसमें गठित के अर्थ की सीमा: वह सब जो वह जानता है...।

अनगढ़ में अनगढ़ के अर्थ की सीमा: वह सब जो वह जानता है,...

602. जहाँ तक आइडिया फ़ायदेमंद हैं: वह सब कुछ जो वह जानता है, ...

जहां तक आइडिया फायदेमंद नहीं हैं: ...

जहां तक विचार अनिश्चित हैं:...

जहां तक विचार कामुक-इच्छा क्षेत्र के हैं: ...

जहां तक विचार भौतिक क्षेत्र के हैं: ...

जहां तक विचार अमूर्त क्षेत्र के हैं:...

जहां तक विचारों का सवाल है: वह सब कुछ जो वह जानता है,...

603. दुख में दुख के अर्थ की सीमा तक: वह सब जो वह जानता है,...

मूल में मूल के अर्थ की सीमा तक:...

समाप्ति में समाप्ति के अर्थ की सीमा तक:...

रास्ते में रास्ते के मतलब की हद तक: वह सब जो वह जानता है.....

604. अर्थ के भेद में अर्थ के भेद की सीमा तक: वह सब जो वह जानता है....

विचारों के भेदभाव के अर्थ की सीमा तक, विचारों के भेदभाव वाले राष्ट्र में: वह सब कुछ जो वह जानता है....

भाषा के भेदभाव में भाषा के भेदभाव के अर्थ की सीमा तक: वह सब जो यह जानता है.... [133]

साफ़-साफ़ समझ के मतलब की हद तक, साफ़-साफ़ समझ के मतलब में: वह सब कुछ जो वह जानता है,...

605. दूसरों की काबिलियत को समझने की जानकारी की हद तक: यह जो कुछ भी जानता है,...

प्राणियों के बायस और अंदरूनी झुकाव के ज्ञान की हद तक: वह सब कुछ जो वह जानता है,...

ट्विर के ज्ञान की सीमा तक। मेटामोर्फोसिस: वह सब कुछ जो वह जानता है,...

महान करुणा की प्राप्ति के ज्ञान की सीमा तक: वह सब कुछ जो वह जानता है, इस प्रकार वह सर्वज्ञ ज्ञान है: वह वहाँ बिना किसी रुकावट के है, इस प्रकार वह बिना रुकावट वाला ज्ञान है।

606. इस जगत में इसके देवताओं, इसके मारों और इसके ब्रह्म देवताओं के साथ, इस पीढ़ी में इसके तपस्वियों और ब्राह्मणों के साथ, इसके राजकुमारों और मनुष्यों के साथ, मन द्वारा जो कुछ देखा, सुना, महसूस किया, पहचाना, सामना किया, खोजा, माना जाता है, उस सीमा तक वह सब कुछ जानता है, इस प्रकार वह सर्वज्ञ ज्ञान है: वह वहाँ बिना किसी बाधा के है, इस प्रकार वह अबाधित ज्ञान है।

607. इस दुनिया में उसके लिए कुछ भी अनोखा नहीं है,
कुछ भी अनजाना नहीं, और कुछ भी अनजाना नहीं;
उसने वह सब अनुभव किया है जो जाना जा सकता
है: इसलिए पूर्ण को सब कुछ देखने वाला कहा जाता है।

608. सर्वद्रष्टा: किस अर्थ में सर्वद्रष्टा?

ज्ञानी पुरुष का ज्ञान चौदह प्रकार का होता है:
दुख का ज्ञान एक ज्ञानी का ज्ञान है।
दुख की उत्पत्ति का ज्ञान....
दुख के खत्म होने का ज्ञान...
दुख के अंत की ओर ले जाने वाले मार्ग का ज्ञान...
अर्थों में अंतर करने का ज्ञान।
विचारों के भेदभाव का ज्ञान....
भाषा के भेदभाव का ज्ञान...
स्पष्टता के भेदभाव का ज्ञान...
दूसरों की क्षमताओं में पैठ का ज्ञान...
लोगों के बायस और अंदरूनी टेंडेंसी का ज्ञान...
ट्विन मेटामोर्फोसिस का ज्ञान...
महान करुणा की प्राप्ति का ज्ञान...
सर्वज्ञ ज्ञान एक प्रबुद्ध व्यक्ति का ज्ञान है।
बिना रुकावट वाला ज्ञान ही ज्ञानी का ज्ञान है।

ये ज्ञानी के ज्ञान के चौदह प्रकार हैं। ज्ञानी के इन चौदह प्रकार के ज्ञान में से आठ शिष्यों के बीच शेयर होते हैं और छह शिष्यों के बीच शेयर नहीं होते।

609. [134] जहाँ तक दुख में दुख का अर्थ सब ज्ञात है, वहाँ दुख का कोई अर्थ अज्ञात नहीं है, इस प्रकार वह सर्वज्ञ ज्ञान है: वहाँ वह बाधा रहित है, इस प्रकार वह अबाधित ज्ञान है।

जहाँ तक दुख में दुख का अर्थ है, सब कुछ देखा जाता है, सब कुछ पहचाना जाता है, सब कुछ समझ से सुना जाता है, समझ से अनभिज्ञ दुख का कोई अर्थ नहीं है, इस प्रकार वह सर्वज्ञ ज्ञान है: वहाँ वह बाधा रहित है, इस प्रकार वह अबाधित ज्ञान है।

ओरिजिन के अर्थ की सीमा तक (और इसी तरह बाकी चारों एक्चुअलिटीज़ के साथ भी)।

610. अर्थ-भेद के अर्थ की सीमा तक अर्थ-भेद में। (और इसी तरह बाकी चार भेदों के साथ)...

जहाँ तक साफ़-साफ़ दिखने वाले ज्ञान में साफ़-साफ़ दिखने वाले ज्ञान का मतलब सब पता है, साफ़-साफ़ दिखने वाले ज्ञान का कोई मतलब अनजान नहीं है, इसलिए यह सब कुछ जानने वाला ज्ञान है: इसमें कोई रुकावट नहीं है, इसलिए यह बिना रुकावट वाला ज्ञान है।

जहाँ तक सुस्पष्टता के विवेक का अर्थ है, सुस्पष्टता के विवेक में सब कुछ देखा जाता है, सब कुछ पहचाना जाता है, सब कुछ महसूस किया जाता है, सब कुछ समझ से सुना जाता है, सुस्पष्टता के विवेक का कोई भी अर्थ समझ से अवास्तविक नहीं है, इस प्रकार वह सर्वज्ञ ज्ञान है: वह वहाँ बाधा रहित है, इस प्रकार वह अबाधित ज्ञान है।

611. दूसरों की काबिलियत के ज्ञान की हद तक...

प्राणियों के बायस और अंदरूनी टेंडेंसी के ज्ञान की हद तक...

ट्विन मेटामोर्फोसिस के ज्ञान की सीमा तक...

महान करुणा की प्राप्ति के ज्ञान की सीमा तक...

इस संसार में, इसके देवताओं, इसके मारों और इसके ब्रह्म देवताओं के साथ, इस पीढ़ी में इसके तपस्वियों और ब्राह्मणों के साथ, इसके राजकुमारों और मनुष्यों के साथ, मन द्वारा जो कुछ देखा, सुना, महसूस किया, जाना, सामना किया, खोजा, माना जाता है, उस सीमा तक सब कुछ जाना जाता है, सब कुछ देखा जाता है, सर्वज्ञ ज्ञान: वह वहाँ बिना किसी रुकावट के है, इसलिए वह अबाधित ज्ञान है।

612. इस दुनिया में उसके लिए कुछ भी अनदेखा नहीं है,
कुछ भी अनजान नहीं है, और कुछ भी अनजान नहीं है;
उसने वह सब अनुभव किया है जो जाना जा सकता
है: इसलिए उस पूर्ण को सब कुछ देखने वाला कहा जाता है।

ज्ञान पर ग्रंथ का अंत



ग्रंथ I के लिए नोट्स।

[1] अवधान (लागू करना) शब्द PTS Dict में नहीं है। ओहितासोतो (M1480, III 201 वगैरह) और सोतम ओदहंता (सुनना, Miii 221) एक्सप्रेशन देखें।

[2] यहाँ 'सीधा ज्ञान' (अभिलर्द्ध) का मतलब है पर्सनल एक्सपेरि-एन्को (पर्सनल जान-पहचान) से जाना हुआ। 'पूरी समझ' (परिणाम) पहली असलियत के लिए है। 'समझ' (पन्ना) का मतलब है निब्बान की नज़र से चार असलियतों का ज्ञान।

[3] हर मामले में 'ओरिज़िन' ही उस विचार के आने की मुख्य शर्त है। हर मामले में 'समाप्ति' निब्बान है, जिसमें सभी बनावट नहीं होतीं, और 'समाप्ति की ओर ले जाने वाला रास्ता' अष्टांगिक मार्ग है।

[4] तीन पहलुओं के लिए: 'आकर्षण, खतरा, बचना' cf. M i 895, वगैरह।

[5] ये 'सात सोच' '18 मुख्य समझ' में से पहली सात हैं, नीचे $39 देखें। निब्बिदा (वैराग्य, इसलिए निब्बान पढ़ें) का मतलब है थकान और घृणा। विराग (धुंधला होना - यानी रंग उड़ जाना) का मतलब है लालच (राग) का फीका पड़ना जो चेतना को 'रंग' देता है (रजत)।

*(§18). '15 आइडिया' को Vism Ch. XXI में पूरी तरह समझाया गया है: 'उठना यहाँ (इस जीवन में) पिछले कर्म की शर्त के साथ दिखना है। घटना इस तरह से जो हुआ है उसका (लगातार) होना है। निशान सभी बनने का निशान है। जमा होना वह कर्म है जो भविष्य के पुनर्जन्म से जुड़ने का निशान है। पुनर्जन्म से जुड़ना भविष्य में फिर से दिखना है। मंज़िल वह मंज़िल है जहाँ पुनर्जन्म से जुड़ना होता है। पैदा होना इकट्ठा चीज़ों का बनना है। फिर से पैदा होना कर्म-नतीजे का होना है। जन्म होना अपनी शर्त के साथ जन्म लेना है, जो खुद उम्र बढ़ने वगैरह के लिए एक शर्त है।

[7] (§23) इस § में 31 शब्द महान अष्टांगिक मार्ग और उसके आठ फैक्टर्स के अलग-अलग पहलुओं के बारे में बताते हैं। 'गले लगाना' उनके 'जागृत' होने से पहले आता है और उन्हें एक साथ 'इकट्ठा' किया जाता है, 'परफेक्ट' किया जाता है वगैरह। 'सपोर्टिंग-ऑब्जेक्ट': सुत्तों में द्रम्मण शब्द का मतलब 'किसी चीज़ पर टिकना' है और यह आलंबति (टिकना) से जुड़ा है। बाद में इसे उस ऑब्जेक्ट के लिए टेक्निकल शब्द के तौर पर अपनाया गया जिसके बिना चेतना नहीं हो सकती। 'डोमेन', जैसे, दिखने वाली चीज़ों का क्षेत्र है जो आँखों की चेतना का डोमेन है। 'उभरना': अष्टांगिक मार्ग के प्रकट होने के लिए एक टेक्निकल शब्द है, जैसे निब्बाण देखना (नीचे $333 और खासकर §§ 341ff देखें)। 'मुड़ना' का मतलब है ज्ञान का बाहर से बनने के निशान से और अंदर से लालच वगैरह की बुराइयों से दूर हो जाना, जैसे निब्बाण को देखना। 'एक ही काम करना': 'छुटकारा पाने के एक ही काम' के लिए एक टेक्निकल शब्द, जो ध्यान (= शांति) और बराबर बैलेंस और डेवलप की गई समझ (यानी 'कपलिंग') से मिलता है। अत्ता के लिए cf. § §418, 430 देखें।

*अज्जुपेक्खण्ड (देखना) शब्द उपेक्षा (समभाव) से जुड़ा है: समभाव बिना किसी रुकावट के देखता है। जो 'समाप्ति में स्थापित होता है' उसका मतलब है असफलता पाना।

[9] आठ पथ कारकों के अर्थ Vism Ch. XVI में समझाए गए हैं।

**'कारण' §33 जैसा ही है। 'सही प्रयास' (सम्पपदधन) अष्टांगिक मार्ग में 'सही प्रयास' (सम्मवायम) के समान हैं। तोथाता (वास्तविकता या सत्यता) को नीचे समझाया गया है, §§520/f. देखें, अन्यथा इसे 'वह जो धोखा नहीं देता' कहा गया है।

"'काम', 'चार रास्तों' को पाने के चार स्टेज हैं जो गंदगी को शांत करते हैं (§ § 349 और XXX 6 देखें)।

12 ये पहले झान के पाँच फैक्टर हैं। 'नमी' (अभिसरण) को रेमना (डंपिंग) से समझाया गया है, इसलिए PTS डिक्शनरी, यह रेफरेंस, गलत है।

"(§30). कॉग्निजेंस का 'तुरंत उत्तराधिकार' बिना किसी अंतराल के उसकी निरंतरता है। 'कॉग्निजेंस के प्लेन' इंद्रिय-इच्छा वाले प्राणी, भौतिक प्राणी और अभौतिक प्राणी के हैं। अभिनिहार: 'मार्गदर्शित करने' के मतलब के लिए (PTS डिक्शनरी में नहीं) विस्म अध्याय XI §§93, 117; XIII 16, 95 देखें। कमेंट्री बताती है कि कॉग्निजेंस खुद को एक चीज़ से दूसरी चीज़ तक पहुँचाने का तरीका है। पथ-कॉग्निजेंस पुनर्जन्म के चक्कर से एक 'आउटलेट' देता है। कॉग्निजेंस त्याग में कामुक इच्छाओं के जोश से 'बचने' का रास्ता ढूंढता है और इसी तरह दूसरी रुकावटों के साथ (§36 देखें)।

14(§31) कमेंट्री के अनुसार, 'यूनिटी' का मतलब है एक ही चीज़ की एकता। ट्रीटीज़ 111 494 और 15-8 भी देखें। चार एक्सप्रेशन पक्खंधति (में जाता है), पसीदति (कॉन्फिडेंस रखता है), शांतिघाती (शांत रहता है) और विमिच्चति (आज़ाद है) के लिए उदाहरण के लिए M iii 105, 112 देखें। यानकता (गाड़ी बनाया जाना) से शुरू होने वाले पाँच एक्सप्रेशन के लिए A iv 309 देखें। 'स्थिर करने' के तौर पर अधिष्ठान के लिए $269 और PSA 161 S देखें। <कमेंट्री सभी लाइव एक्सप्रेशन जोतना, वगैरह को सपोर्ट करती है, और बारी-बारी से 2-5 या 1-4 को चार रास्तों से जोड़ती है, बाकी वाले के लिए संभावित एक्सप्लेनेशन जोड़ती है, पेज 100 PTS एडिशन।>

[15] (§32) यह पैराग्राफ़ रास्ते के पहलुओं के बारे में बताता है।

14 (§33) यह पैराग्राफ सफलता के चार आधारों (पावर के रास्ते) से जुड़ा है।

[17] PTS टेक्स्ट में 'दुक्खस्स संखतत्थो अभिनेय्यो' शब्द गायब हैं।

[18] सात रुकावटें हैं - कामुक इच्छाओं के लिए जोश, बुरी नीयत, अकड़न और सुस्ती, बेचैनी, अनिश्चितता, अज्ञानता और बोरियत (देखें §135)।

कमेंट्री कहती है, "§26 में, 'मतलब आइडिया से बताए जाते हैं, लेकिन यहां आइडिया मतलब से बताए गए हैं।'"

20 इस पैराग्राफ में दिए गए मतलब, कमेंट्री के अनुसार, रास्ते के बारे में हैं, जो इस तरह समझाता है (PTS एडिशन पेज 106-8): "जो फायदेमंद है उसे करने की इच्छा के तौर पर जोश ही प्रैक्टिस के रास्ते और उससे जो बनता है, उसकी जड़ है। यह समझदारी भरा ध्यान है जो सभी फायदेमंद विचारों को जन्म देता है। भावना लालसा का मुख्य कारण है; और जब लालसा छोड़ी जाती है तो यह खासकर भावना की पूरी समझ से पूरा होता है। फिर से, संपर्क भावना का मुख्य कारण है, और जब इसे पूरी तरह से समझ लिया जाता है तो भावना पूरी तरह से समझ में आ जाती है। इसीलिए सीधे तौर पर जाने जाने वाले बाकी सात विचारों में संपर्क का ज़िक्र सबसे पहले किया गया है। अब संपर्क को उसके अपने काम से डिफाइन किया जाता है, जो 'तीनों का मेल' है (जैसे आँख, दिखने वाली चीज़ और आँख की चेतना, M i 111 देखें), और क्योंकि यह इस तरह एक ट्रायड के मेल के तौर पर बिना एहसास के है, इसलिए इसका मतलब है मिलाना। फिर से, जब भावना को ज्ञान और चेतना-साथी अपनी पावर में मिलते हैं तो यह उनसे मिलती है, उनमें घुस जाती है, या यह ज्ञान वाली कंटिन्यूटी में भी घुस जाती है। इसीलिए इसका मतलब है मिलने की जगह। फिर, जैसे एक गोल छत की चोटी सभी शहतीरों को एक साथ बांध देती है, वैसे ही कॉन्संट्रेशन, कॉग्निजेंस और कॉन्शसनेस-साथियों को फोकस करने में सभी फायदेमंद आइडियाज़ में सबसे आगे, सबसे ऊपर है, इसीलिए इसका मतलब है सबसे ऊपर। माइंडफुलनेस का मतलब है दबदबा, जब कोई शांति और समझ डेवलप कर रहा होता है तो यह चीज़ को बनाने में हावी होता है, और जब माइंडफुलनेस बन जाती है तो सभी फायदेमंद आइडियाज़ इस चीज़ के संबंध में अपने अलग-अलग काम करते हैं। नेक रास्ते से जुड़ी समझ का मतलब है सबसे ऊंचा होना, उन सभी फायदेमंद आइडियाज़ में सबसे आगे होना, और उन सबसे आगे होना। रास्ते के फल की मुक्ति पक्की है क्योंकि इसमें कोई नुकसान नहीं होता और इसी वजह से इसका मतलब है कोर (हार्टवुड)। अमर इसलिए कहा जाता है क्योंकि वहाँ कोई मरना नहीं है, और क्योंकि यह गंदगी के विपरीत होने के कारण ज़हर से मुक्त है। यह आइडिया इसलिए है क्योंकि यह रियलाइज़ेशन द्वारा जीवों को एक आधार देता है। इसे निर्वाण इसलिए कहते हैं क्योंकि इसमें बार-बार आने-जाने के दुख से शांति मिलती है। इसे निर्वाण इसलिए भी कहते हैं क्योंकि इसमें वान नाम की कोई लालसा नहीं होती। क्योंकि यही डिस्पेंसेशन का लक्ष्य है, इसलिए इसका मतलब अंत है।" पूरे सेक्शन

[21] में, सेक्शन i के 'सीधे-सीधे जाने जाने वाले' शब्दों की जगह 'पूरी तरह से समझा जाना चाहिए' शब्दों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

2? 'आनंद के साथ' शब्द शायद विन iii (पा. i) के लिए हैं। पाँच हैं: खुशी से फैलाना, आनंद, इच्छा (सेरो), रोशनी, रिफ्लेक्शन का संकेत। नौ हैं: गुण की पवित्रता, ज्ञान, विचार, शक से बचना, ज्ञान और यह देखना कि क्या रास्ता है और क्या नहीं, रास्ते का ज्ञान और देखना, ज्ञान और देखना (देखें एम सुत्त 24), समझ, और मुक्ति।

23 एसन PTS डिक्शनरी में दी गई सब्जेक्टिव 'लालसा' वगैरह नहीं है, बल्कि खोजने का काम है: यहाँ इसे सोखने की कोशिश कहा गया है। एसन का मतलब 'खेती' है। साथ ही, ज़्यादा टेक्निकल अभिधम्म का मतलब 'दोहराना' है।

[24] *Pacchābhattaṃ āsevati* is missing in PTS Text.

''दिशेकत्था 'गलत नज़रिए वाला कोएफ़िशिएंट' = वे विचार जो गलत नज़रिए के साथ खड़े होते हैं। कमेंट्री तीन तरह की कोएफ़िशिएंसी बताती है <जिनमें से यह पहला है। दूसरे हैं:> (2) 'छोड़ने में कोएफ़िशिएंट' (पहनेकत्था) = जैसे वे विचार जो 'गलत नज़रिए के साथ खड़े होते हैं और स्ट्रीम-एंट्री रास्ते से गलत नज़रिए के साथ छोड़ दिए जाते हैं; (3) 'कनासेन्स के कोएफ़िशिएंट' (सहजे-कट्टा) = जैसे वे विचार जो एक ही कॉग्निजेंस में गलत नज़रिए से मिलते हैं (कमेंट्री पेज 94 सिंहली एडिशन; Vbh 366 और उसकी कमेंट्री देखें)।

*दोनों मामलों में 'दुक्खं भयत्थेन' पढ़ें।

"चार सच्चाइयों के इस विवरण के लिए cf. D ii 305; इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी और बैंकॉक एडिशन में बर्मीज़ मैन्युस्क्रिप्ट; S v 421 देखें।

"मैंने जहाँ तक हो सका, एक शब्द पर ज़ोर देने की कोशिश की है: यानी सोको, सोकाना, सोचित्तम, एंटोसोको, एंटोपेरिसोको... दूसरे नाउन, वर्ब वगैरह के डेरिवेटिव में बदलने से कनेक्शन टूट जाता है। <PSA (p. 155 PTS edn.) और PsGp (p.97) कहते हैं कि यहाँ धम्म का मतलब हेतु (यानी दुख) है।>

"शील का मतलब आदत या रिवाज के तौर पर अच्छाई से भी बड़ा है, जो या तो अच्छा (फायदेमंद) हो सकता है या बुरा (फायदेमंद नहीं)। इस बड़े मतलब को यहाँ बताया गया है। Vism Ch. I देखें।

3 परमासा शब्द के व्युत्पन्न के लिए विस्म I §35 और XXII §58 देखें।

सात तरह के 'दीक्षित' (सेखा) वे हैं जिन्होंने चार मार्ग और पहले तीन फल प्राप्त कर लिए हैं। जिसने अरहंतत्व का फल प्राप्त कर लिया है, वह 'सिद्ध' (सेखा) है।

"यहां और दूसरी जगहों पर शांत (पासद्ध) होने का मतलब है, खास तौर पर जब लक्ष्य मिल जाए तो उसे पाने की कोशिश बंद कर देना।"

"जो पुण्य 'टूटा हुआ' है, आदि के लिए, A iv 55 देखें।

34 शायद इसका मतलब यह होना चाहिए: 'इसमें संयम रखने का कोई भी लक्ष्य ऊँचे गुण की ट्रेनिंग है, इसमें ध्यान न भटकाने का कोई भी लक्ष्य ऊँचे ज्ञान की ट्रेनिंग है, इसमें देखने का कोई भी लक्ष्य ऊँचे ज्ञान की ट्रेनिंग है।'

35 cf. § § 23,31,265. कमेंट्री बताती है कि कॉन्संट्रेशन को विश्वास से शुरू होने वाली पाँच शक्तियों द्वारा अपनाया जाता है, क्योंकि यह उनमें से एक है। उनमें से हर शक्ति बाकी चार से लैस है (पेज 166, सिंहली एडिशन)।

* <चार 'सामान्यीकरणों' के लिए ग्रंथ 1 का परिचयात्मक नोट देखें।>

"'सामान्यीकरण के बाद' (संखिपित्वा) का मतलब §275 के 'चार सामान्यीकरण' (चतुसारत्खेप) से है।

*अत्थि आसवन ति अत्थि वीर्यं आसवन ति पि पथो (PSA S° पेज 230)। आसव का यह मतलब कहीं और नहीं मिलता और PTS डिक्शनरी में भी नहीं है। <PSA के PTS एडिशन में आयावम और आयावम लिखा है, लेकिन सिंहली एडिशन के ऊपर दिए गए रीडिंग को वेरिएंट के तौर पर दिया गया है, पेज 338। PsGp (पेज 159), जो बर्मी और कंबोडियन टेक्स्ट की परंपराओं को फॉलो करता है, इन रीडिंग के बारे में चुप है। शायद इसके लेखक ने आयावम पढ़ा, जो आयु से है, 'जीवंत', 'मजबूत' और उसे कोई मुश्किल नहीं लगी। वेरिएंट के लिए, CPD आयाव के तहत Sv 13 में एक पैरेलल पैसेज से आयाम को नोट करता है, उसी मतलब में 'बढ़ाना', 'ताकत', जो पूरी संभावना है कि महानामा ने मूल रूप से लिखा था और Gp ने भी यही पढ़ा था।>

"Cetayanto vivattati ti cetovivatto; vijānanto vivattati ti cittavivatto. Therefore citta = viññāṇa. See also $553 <'equipped with cognition by the mind ability', therefore viññāna = mano>. See also Treatise III §9 for citta mano <'mind'>. <cf. Dhs p. 10 reproduced in Treatise 111 § 394 below.>

4" "कैंकर्स की थकावट" के बाद ट्रीटीज़ IV § § 113ff में दोहराया गया है।

41 साथ देने, साथ देने वगैरह के लिए धस गोचक देखें <? cf. धस पेज 259, असि पेज 356. मोह पेज 81.>

42 Read: *yathābhūtaṃ vā ñāṇam. Ayaṃ puggalo kāmagaruko kāmāsayo kāmādhimutto ti kāmam sevantañ ñeva jānāti . . .*

43 <नानामोली ने कागज़ के एक टुकड़े पर बार-बार काटते हुए लिखा है, 'दुनिया के लिए किसी भी दुनिया (हालात) में ज़िंदगी पढ़ें। दुनियावी ज़िंदगी के लिए किसी भी दुनिया में ज़िंदगी की तरक्की पढ़ें। काटने से पहले उन्होंने 'दुनिया' की जगह 'इंसानी हालात' और 'दुनियावी ज़िंदगी' की जगह 'इंसानी हालात की तरक्की' लिखने के बारे में सोचा। यह साफ़ नहीं है।

कि वह यहाँ किसी आखिरी फैसले पर पहुँचे, इसलिए हमने उनके ट्रांसलेशन के टेक्स्ट में कोई बदलाव नहीं किया है। शायद § 579-80 में लोक की परिभाषा ने यह विचार दिया कि 'वर्ल्ड' बहुत संतोषजनक बराबर नहीं था और 'सिचुएशन' या 'लाइफ' जैसी कोई चीज़ कई संभावनाओं के लिए ज़्यादा सही हो सकती है। हालाँकि, पाली में इस शब्द के सेंट्रल और पॉपुलर मतलब के अलावा, जो 'वर्ल्ड' या 'यूनिवर्स' के काफी करीब लगता है (लेकिन फिलॉसफी के हिसाब से 'एंटिटी' के तौर पर इसकी कोई असलियत नहीं है और यह सिर्फ़ एक 'कॉन्सेप्ट' है), इंग्लिश 'वर्ल्ड' के मतलब में एक्सटेंशन या लिमिटेशन भी हो सकते हैं, खासकर सब्जेक्टिव मतलब में जैसे: 'वह अपनी ही दुनिया में रहता है'।>

ग्रंथ II. विचारों पर

परिचयात्मक नोट

इस ग्रंथ में सुत्तों में बताए गए गलत विचारों के मुख्य वर्गों को पाँच मुख्य शीर्षकों या खंडों में बांटा गया है और उन पर चर्चा की गई है। ये हैं:

i. गलत नज़रिए की परिभाषा,
ii. किन गलत विचारों पर आधारित हैं,
iii. गलत नज़रिया कैसे अपनी पकड़ बनाए रखता है,
iv. गलत नज़रिए को किस कैटेगरी में बांटा जा सकता है,
v. गलत नज़रिया किस तरह काम करता है।

और एक आखिरी सेक्शन है, यानी:

vi. गलत नज़रिए से बचने का तरीका।

इन सेक्शन में बहुत ज़्यादा ओवरलैपिंग और अल्टरनेटिव क्लासिफिकेशन है।

पांच मुख्य सेक्शन जिस तरह से काम करते हैं, वह मोटे तौर पर इस तरह है। (i) गलत सोच जो गलत नज़रिए की खासियत है, जैसे, 'मैं', 'मेरा', 'मेरा खुद', (i) पाँच चीज़ों से पैदा होती है, और (iii) फिर यह एक झाड़ी की तरह काम करती है क्योंकि इससे बाहर निकलना मुश्किल होता है। (iv) यह, मान लीजिए, पर्सनैलिटी की गलत सोच है, जो पाँच चीज़ों को अपना मकसद मानकर गलत समझती है। (vi) गलत नज़रिए से बचना ही स्ट्रीम एंट्री का रास्ता पाना है।

पहली नज़र में थोड़ी कन्फ्यूज करने वाली सभी डिटेल्स इसी मेन पैटर्न में आती हैं। किसी भी जानी-मानी अंदाज़े वाली राय को इस तरीके के हिसाब से एनालाइज़ और क्लासिफ़ाई किया जा सकता है।

सुत्तों में गलत विचारों के बारे में दी गई सारी जानकारी पर बात नहीं की गई है; उदाहरण के लिए, दीघ निकाय के समानफल सुत्त (D सुत्त 2) में दिए गए खास शिक्षकों के अलग-अलग विचारों का ब्यौरा। इसका कारण यह माना जा सकता है: कि इस ग्रंथ का मकसद पहले से बताए गए विचारों का ब्यौरा देना नहीं है, बल्कि एक ऐसी स्कीम देना है जिसके तहत किसी भी गलत विचार को बांटा जा सके; और इसमें यह दीघ निकाय के पहले सुत्त और मज्जिम निकाय के 102वें सुत्त के उदाहरणों को फॉलो कर रहा है।

[विचारों पर ग्रंथ]]

[सारांश]

1. [135] दृष्टिकोण क्या है? विचारों के लिए कितने प्रकार के दृष्टिकोण हैं? विचारों से कितने प्रकार के जुनून हैं? कितने प्रकार के दृष्टिकोण हैं? विचारों द्वारा कितनी तरह की गलत व्याख्याएं हैं? विचारों के लिए दृष्टिकोण का उन्मूलन क्या है?

1. नज़रिया क्या है? गलत मतलब निकालकर गलत समझना ही नज़रिया है।

II. विचारों के लिए कितने तरह के स्टैंडपॉइंट हैं? विचारों के लिए आठ तरह के स्टैंडपॉइंट हैं।

III. विचारों के कारण जुनून कितने तरह का होता है? विचारों के कारण जुनून अठारह तरह का होता है।

IV. कितने तरह के व्यूज़ हैं? सोलह तरह के व्यूज़ हैं।

V. विचारों के आधार पर गलत मतलब निकालने के कितने प्रकार हैं? विचारों के आधार पर गलत मतलब निकालने के तीन सौ प्रकार हैं।

VI. व्यूज़ के लिए स्टैंडपॉइंट्स का खत्म होना क्या है? स्ट्रीम-एंट्री पाथ व्यूज़ के लिए स्टैंडपॉइंट्स का खत्म होना है।

* *
*

[खंड I]

2. यह कैसे होता है कि गलत मतलब निकालने से गलतफहमी होती है?

भौतिक चीज़ों को इस तरह गलत समझना कि 'यह मेरा है, यह मैं हूँ, यह मेरा खुद है' (S xii 62, 5) एक नज़रिया है। भावना को इस तरह गलत समझना कि 'यह मेरा है, यह मैं हूँ, यह मेरा खुद है' एक नज़रिया है। समझ को गलत समझना... (और इसी तरह Tr. 1 §5 में लिस्ट किए गए 201 आइडिया में से 198 के साथ, आखिरी तीन (ज़्यादातर) काबिलियत को छोड़कर, तक)... [136-8]। बुढ़ापे और मौत को इस तरह गलत समझना कि 'यह मेरा है, यह मैं हूँ, यह मेरा खुद है' एक नज़रिया है।

इसी तरह गलत मतलब निकालकर गलतफहमी पैदा होती है।

* *
*

[खंड II]

3. विचारों के लिए आठ तरह के स्टैंडपॉइंट क्या हैं?

एग्रीगेट्स विचारों के लिए एक स्टैंडपॉइंट हैं, अज्ञान विचारों के लिए एक स्टैंडपॉइंट है, कॉन्टैक्ट... परसेप्शन... अप्लाइड-थॉट..., लापरवाह अटेंशन - स्टैंडपॉइंट . . . , एक बुरा दोस्त.. किसी और द्वारा इंडॉक्ट्रिनेशन लायन विचारों के लिए एक है।

4. स्कंध कारण हैं, स्कंध उत्पत्ति के अर्थ में, विचारों के उत्पन्न होने की एक स्थिति हैं, इस प्रकार स्कंध विचारों के लिए एक दृष्टिकोण हैं। अज्ञान... संपर्क। बोध... व्यावहारिक विचार... लापरवाह ध्यान... एक बुरा मित्र... किसी दूसरे के द्वारा शिक्षा देना कारण है, किसी दूसरे के द्वारा शिक्षा देना विचारों के उत्पन्न होने के लिए, उत्पत्ति के अर्थ में, एक स्थिति है, इस प्रकार किसी दूसरे द्वारा शिक्षा देना विचारों के लिए एक दृष्टिकोण है।

ये आठ तरह के नज़रिए हैं।

* *
*

(धारा III)

5. विचारों के आधार पर अठारह तरह के जुनून कौन-कौन से हैं?

कोई भी दृष्टिकोण जो विचारों का सहारा हो, विचारों का जंगल, विचारों का जंगल, विचारों का टकराव, विचारों का उपहास, विचारों की बेड़ियाँ, विचारों का तीर, विचारों का दबाव, विचारों की बाधा, विचारों की डोर, विचारों का गड्ढा, विचारों के प्रति अंतर्निहित प्रवृत्ति, विचारों की जलन (पीड़ा), विचारों का बुखार (पीड़ा), विचारों की गाँठ, विचारों से चिपके रहना, विचारों द्वारा गलत व्याख्या, विचारों के माध्यम से गलत आशंका।

विचारों के कारण आसक्ति के ये अठारह प्रकार हैं. [139]

* *
*

[धारा IV]

6. सोलह तरह के व्यूज़ कौन-कौन से हैं?

वे हैं:

(i) (सुखवादी) संतुष्टि के विचार,
(i) स्वयं के बारे में विचार,
(iii) गलत दृश्य,
(iv) व्यक्तित्व के बारे में विचार,
(v) व्यक्तित्व पर आधारित अनंत काल के विचार,
(vi) व्यक्तित्व के आधार पर विनाश के विचार,
(vii) परिमितता मानने वाले विचार,

(viii) अतीत की परिमितता के बारे में विचार,
(ix) भविष्य की परिमितता के बारे में विचार।
(x) ऐसे विचार जो बाधा डालते हैं [नुकसान पहुँचाने के लिए],
(xi) ऐसे विचार जो 'टी' के दंभ से बंधे होते हैं,
(xii) ऐसे विचार जो 'मेरा' के दंभ से जकड़ते हैं,
(xiii) आत्म-सिद्धांतों से जुड़े विचार,
(xiv) विश्व-सिद्धांतों से जुड़े विचार,
(xv) होने का दृष्टिकोण (अनंत काल के रूप में),
(xvi) न होने का दृष्टिकोण (विनाश के रूप में),

ये सोलह तरह के व्यूज़ हैं।

* *
*

[खंड V]

7. कितने पहलुओं में संतुष्टि के नज़रिए से गलत मतलब निकाला जाता है?

खुद के बारे में विचारों के ज़रिए कितनी बातों में गलत मतलब निकाला जाता है?

. . . गलत नज़रिए से?
. . . अवतार के बारे में विचारों के ज़रिए?
. . . शरीर पर आधारित अनंत काल के विचारों के माध्यम से?
. . . शरीर पर आधारित विनाश के विचारों के माध्यम से?
. . . सीमितता मानने वाले विचारों के ज़रिए?
. . . अतीत की सीमाओं के बारे में विचारों के ज़रिए?
. . . भविष्य की सीमितता के बारे में विचारों के ज़रिए?
. . . उन विचारों के ज़रिए जो बांधते हैं (नुकसान पहुँचाते हैं)?
. . . ऐसे विचारों के ज़रिए जो 'मैं' के दंभ से बंधे हैं?
. . . ऐसे विचारों के ज़रिए जो 'मेरा' होने के घमंड से बंधे हैं?
. . . सेल्फ थ्योरीज़ से जुड़े विचारों के ज़रिए?
. . . दुनिया के सिद्धांतों से जुड़े विचारों के ज़रिए?
. . . [शाश्वत] अस्तित्व के बारे में विचारों के माध्यम से?

न होने के बारे में विचारों के ज़रिए कितने पहलुओं में गलत मतलब निकाला जाता है?

35 पहलुओं में संतुष्टि के नज़रिए से गलत मतलब निकाला गया है।
खुद के बारे में 20 तरह के विचारों से गलत मतलब निकाला जाता है।

. . . 10 पहलुओं में गलत नज़रिए से,
. . . 20 पहलुओं में अवतार के बारे में विचारों के माध्यम से।
. . . 15 पहलुओं में अवतार पर आधारित अनंत काल के विचारों के माध्यम से।
. . . 5 पहलुओं में अवतार पर आधारित विनाश के विचारों के माध्यम से।

. . . 50 पहलुओं में सीमितता मानने वाले विचारों के माध्यम से।
. . . 18 पहलुओं में अतीत की सीमाओं के बारे में विचारों के ज़रिए।
. . . 44 पहलुओं में भविष्य की सीमितता के बारे में विचारों के माध्यम से।
. . . 18 पहलुओं में अलग-अलग नज़रिए से।
. . . ऐसे विचारों के ज़रिए जो 18 पहलुओं में 'मैं' के दंभ से बंधे हैं।
. . . ऐसे विचारों के ज़रिए जो 18 पहलुओं में 'मेरा' होने के दंभ से बंधे हैं।
. . . 20 पहलुओं में आत्म-सिद्धांतों से जुड़े विचारों के माध्यम से। [140]
. . . 8 पहलुओं में दुनिया के सिद्धांतों से जुड़े विचारों के ज़रिए।
. . . 1 पहलू में होने के बारे में विचारों के माध्यम से।
I पहलू में न होने के बारे में विचारों के ज़रिए गलत मतलब निकाला जाता है।

(मैं)

8. किन 35 पहलुओं में (सुखवादी) संतुष्टि के नज़रिए से गलत मतलब निकाला जाता है?

(1) 'कोई भी खुशी और आनंद जो भौतिक चीज़ों पर निर्भर होकर मिलता है, वह भौतिक चीज़ों के मामले में संतुष्टि है' (S iii 28), और [उस संतुष्टि की] कोई भी गलतफहमी और गलत मतलब निकालना नज़रिया है। नज़रिया संतुष्टि नहीं है, और संतुष्टि नज़रिया नहीं है; नज़रिया एक है और संतुष्टि दूसरी; नज़रिया और संतुष्टि [एक साथ] को (सुखवादी) संतुष्टि वाला नज़रिया कहा जाता है।

9. (सुख-विलास) वाली खुशी की सोच गलत है; गलत सोच गलत सोच है। जिस इंसान की सोच गलत है, उसकी सोच भी गलत है। जिस इंसान की सोच गलत है, उसे बढ़ावा नहीं देना चाहिए, बार-बार नहीं मिलना चाहिए, या उसकी इज्ज़त नहीं करनी चाहिए, क्यों नहीं? क्योंकि उसकी सोच खराब करती है।

10. किसी नज़रिए का लालच, नज़रिया नहीं है, और नज़रिया लालच नहीं है; नज़रिया एक है, और लालच दूसरा; नज़रिया और लालच [एक साथ] को नज़रिए का लालच कहा जाता है। जिस इंसान में वह नज़रिया और वह लालच होता है, वह नज़रिए के लालच में डूबा होता है। नज़रिए के लालच में डूबे इंसान को दिया गया तोहफ़ा कोई बड़ा फ़ायदा या फ़ायदा नहीं देता। क्यों नहीं? क्योंकि उसकी नज़रिया खराब करती है।

11. (सुख-विलास) वाली खुशी की सोच गलत है; गलत सोच वाले इंसान की दो मंज़िलें होती हैं, या तो नरक या जानवरों की योनि। जब किसी इंसान की सोच गलत होती है, तो उसके शरीर के काम, बोलने के काम, दिमाग के काम जो उस सोच के हिसाब से किए और पूरे किए जाते हैं, और उसकी कोई भी इच्छा, ख्वाहिश, चाहत और काम बनाने की सोच, ये सभी ऐसे विचार हैं जो अनचाही, अनचाही, अनचाही, नुकसान और दुख की ओर ले जाते हैं। ऐसा क्यों? क्योंकि उसकी सोच खराब करती है।

12. जैसे निम्ब के बीज या कोसाटकी के बीज या करेला के बीज को गीली मिट्टी में रखा जाता है और कोई भी ठोस ह्यूमस या तरल ह्यूमस इसके द्वारा सोख लिया जाता है, [141] तो यह सब कड़वाहट, तीखापन और असंतोष की ओर ले जाता है -

ऐसा क्यों? क्योंकि बीज खराब करता है-, वैसे ही, गलत सोच वाले इंसान की दो मंज़िलें होती हैं;... (ऊपर बताए अनुसार दोहराएं)... ऐसा क्यों? क्योंकि उसकी सोच खराब करती है।

13. (सुखवादी) संतुष्टि वाला नज़रिया गलत नज़रिया है। गलत नज़रिया नज़रियों का सहारा है, नज़रियों का झुंड,... [§5 दोहराएं]... नज़रियों से गलतफहमी।

14-7. (2)-(5) कोई भी खुशी और आनंद जो भावना पर निर्भर करता है... [और इसी तरह, शेष प्रत्येक हमारे समुच्चय के लिए §8 को दोहराते हुए)।
18-23. (6)-(11) कोई भी आनंद और खुशी जो आंख पर निर्भर करती है... (और इसी तरह छह आंतरिक आधारों में से प्रत्येक के साथ)
24-9. (12)-(17) कोई भी आनंद और खुशी जो दृश्य वस्तुओं पर निर्भर होकर उत्पन्न होती है... (और इसी प्रकार छह बाहरी आधारों में से प्रत्येक के साथ)।
30-35. (18)-(23) कोई भी सुख और खुशी जो नेत्र चेतना पर निर्भर करती है... [और इसी प्रकार छह प्रकार की चेतनाओं में से प्रत्येक के साथ होता है)।
36-41 (24)-(29) कोई भी आनंद और खुशी जो आँखों के संपर्क पर निर्भर करती है.... (और इसी तरह छह प्रकार के संपर्क में से प्रत्येक के साथ होता है)।
42-7. (30)-(35) कोई भी सुख और खुशी जो आँख से संपर्क से पैदा होने वाली भावना पर निर्भर करती है... [और इसी तरह छह प्रकार की भावनाओं में से प्रत्येक के साथ]... [142]

(सुखवादी) संतुष्टि का दृष्टिकोण गलत दृष्टिकोण है. गलत दृष्टिकोण दृष्टिकोणों का सहारा है, विचारों का जंगल,... [§9 के अंत में दोहराएँ]... दृष्टिकोणों द्वारा ग़लतफ़हमी. [143]

48. [ऐसी गलत सोच इन अठारह बातों में उलझे हुए मन के लिए एक बंधन है [जो सोच के सहारे से शुरू होती है)। [लेकिन] कुछ बेड़ियाँ ऐसी भी होती हैं जो सोच ही होती हैं, और कुछ बेड़ियाँ ऐसी भी होती हैं जो सोच नहीं होतीं।

नज़रिए भी क्या बंधन हैं? [गलत] शरीर के बारे में नज़रिए, और अच्छाई और फ़र्ज़ की गलतफहमी। ये बंधन भी नज़रिए हैं।

कौन सी बेड़ियाँ नज़रिया नहीं हैं? कामुकता की इच्छाओं के लालच की बेड़ियाँ, विरोध की, घमंड की, अनिश्चितता की, होने के लालच की, जलन की, लालच की, अंदरूनी झुकाव की, और अज्ञानता की... ये बेड़ियाँ नज़रिया नहीं हैं।

इन 35 पहलुओं में (सुखवादी) संतुष्टि के नज़रिए से गलत मतलब निकाला जाता है।

(ii)

49. खुद के बारे में विचारों के ज़रिए किन 20 पहलुओं में गलत मतलब निकाला जाता है?

यहाँ एक अनपढ़ आम आदमी जो नेक लोगों को नज़रअंदाज़ करता है, नेक लोगों के सच्चे विचार से अनजान है, नेक लोगों के सच्चे विचार में अनुशासनहीन है, जो अच्छे लोगों को नज़रअंदाज़ करता है, अच्छे लोगों के सच्चे विचार से अनजान है, अच्छे लोगों के सच्चे विचार में अनुशासनहीन है,

(1) भौतिकता को स्वयं के रूप में देखता है, या (2) स्वयं में भौतिकता समाहित है, या (3)

स्वयं में भौतिकता, या (4) भौतिकता में स्वयं; या (5) वह भावना को स्वयं के रूप में देखता है। या (6) भावना से युक्त स्वयं, या (7) स्वयं में भावना, या (8) भावना में स्वयं; या (9) वह अनुभूति को स्वयं के रूप में देखता है, या (10) अनुभूति से युक्त स्वयं, या (11) स्वयं में अनुभूति, या (12) अनुभूति में स्वयं; या (13) वह संरचनाओं को स्वयं के रूप में देखता है, या (14) संरचनाओं से युक्त स्वयं, या (15) स्वयं में संरचनाओं, या (16) संरचनाओं में स्वयं; या (17) वह चेतना को स्वयं के रूप में देखता है, या (18) चेतना से युक्त स्वयं, या (19) स्वयं में चेतना, या (20) चेतना में स्वयं को देखता है।

50. (1) वह भौतिकता को स्वयं के रूप में कैसे देखता है?

यहाँ कोई पृथ्वी को स्वयं के रूप में देखता है, इस प्रकार 'जो पृथ्वी है, वही मैं हूँ; जो मैं हूँ, वही पृथ्वी है', और वह पृथ्वी और स्वयं को एक समान देखता है। जैसे कोई जलते हुए दीपक की लौ और रंग को एक समान देखता है, इस प्रकार 'जो लौ है, [144] वही रंग है; जो रंग है, वही लौ है', वैसे ही यहाँ कोई देखता है... समान।

गलत मतलब निकालने से गलतफहमी होना ही नज़रिया है। नज़रिया ज़मीन नहीं है और ज़मीन नज़रिया नहीं है; नज़रिया एक है, और ज़मीन दूसरी। नज़रिया और ज़मीन (एक साथ) खुद के बारे में पहली तरह का नज़रिया है, जिसमें मैटेरियलिटी को आधार माना जाता है।

51. खुद के बारे में नज़रिया गलत नज़रिया है;... (रिपीट §§9-13].

52. [ऐसा गलत नज़रिया] मन के लिए एक बंधन है। . . [§48 दोहराएं]।

53-5. यहां कोई व्यक्ति पानी के कासिना को खुद के रूप में देखता है.. (जैसा कि § §50-2 में है)।

56-8. यहाँ कोई आग कसीना को खुद के रूप में देखता है...

59-61. यहां कोई एयर कसीना को खुद के रूप में देखता है...

62-4. यहां कोई नीले कासिना को खुद के रूप में देखता है...

65-7. यहां कोई पीले कसीना को खुद के रूप में देखता है...

68-70. यहां कोई लाल कसीना को खुद के रूप में देखता है...

71-3. यहां कोई सफेद कसीना को खुद के रूप में देखता है...

इस तरह वह भौतिकता को स्वयं के रूप में देखता है।

74. (2) वह स्वयं को भौतिकता से युक्त कैसे देखता है?

यहाँ कोई भावना.. समझ,.. बनावट,... चेतना को खुद के रूप में देखता है। वह सोचता है 'यह मेरा खुद है; लेकिन मेरा यह खुद इस खुद की वजह से चीज़ों से भरा हुआ है' और इस तरह खुद को चीज़ों से भरा हुआ देखता है। जैसे, अगर कोई पेड़ छाया वाला हो, तो कोई आदमी कहे 'यह पेड़ है, यह छाया है; पेड़ एक है, छाया दूसरी है; लेकिन यह पेड़ इस छाया से छाया वाला है' और इस तरह पेड़ को छाया वाला देखे, वैसे ही, यहाँ कोई देखता है... चीज़ों से भरा हुआ।

गलत मतलब निकालने से गलतफहमी होना नज़रिया है। नज़रिया ज़मीन नहीं है और ज़मीन नज़रिया नहीं है; नज़रिया एक है, और ज़मीन दूसरी है। नज़रिया और ज़मीन (एक साथ) खुद के बारे में दूसरी तरह का नज़रिया है, जिसमें मैटेरियलिटी को आधार माना जाता है।

75. खुद के बारे में विचार गलत विचार हैं...
76. (ऐसा गलत दृष्टिकोण मन के लिए बंधन है। इस
प्रकार वह भौतिकता से युक्त होकर स्वयं को देखता है। [145]
77. (3) 1किस तरह से वह खुद में मैटेरियलिटी देखता है? यहाँ कोई फीलिंग, . . . परसेप्शन, फॉर्मेशन, कॉन्शसनेस को खुद के रूप में देखता है। वह सोचता है 'यह मेरा खुद है; लेकिन यह मैटेरियलिटी खुद में है', और इस तरह खुद में मैटेरियलिटी देखता है। जैसे, अगर कोई खुशबूदार नीचे होता जिससे कोई आदमी कह सकता 'यह फूल है, यह खुशबू है; फूल एक है, और खुशबू दूसरी; लेकिन यह खुशबू इस फूल में है', और इस तरह फूल में खुशबू देखता, वैसे ही, यहाँ कोई... खुद में मैटेरियलिटी देखता है।

गलत मतलब निकालने से होने वाला गलत झुकाव नज़रिया है। नज़रिया ज़मीन नहीं है, नज़रिया नहीं है; नज़रिया एक है, और ज़मीन दूसरी। और ज़मीन [एक साथ] तीसरी तरह का नज़रिया है जो ज़मीन के तौर पर मैटेरियलिटी के बारे में है।

78. खुद के बारे में विचार गलत विचार हैं...
79. [ऐसा गलत दृष्टिकोण मन के लिए बंधन है...इस तरह
वह स्वयं में भौतिकता को देखता है।
80. (4) वह खुद को मैटेरियलिटी में कैसे देखता है? यहाँ कोई फीलिंग, . . . परसेप्शन,... फॉर्मेशन,... कॉन्शसनेस को खुद के तौर पर देखता है। वह सोचता है 'यह मेरा खुद है; लेकिन मेरा यह खुद इस मैटेरियलिटी में है', और इस तरह वह खुद को मैटेरियलिटी में देखता है। जैसे, अगर एक रत्न एक ताबूत में रखा हो, तो कोई आदमी कहे 'यह रत्न है, यह ताबूत है; रत्न एक है, और ताबूत दूसरा; लेकिन यह रत्न इस ताबूत में है', और इस तरह रत्न को ताबूत में देखे, वैसे ही, यहाँ कोई... मैटेरियलिटी में खुद को देखता है।

गलतफहमी... नज़रिया और ज़मीन (एक साथ) खुद के बारे में चौथी तरह का नज़रिया है, जिसमें मैटेरियलिटी को आधार माना जाता है।

81. खुद के बारे में विचार गलत विचार हैं...
82. [ऐसा गलत दृष्टिकोण] मन के लिए बंधन है... इस
तरह वह स्वयं को भौतिकता में देखता है।
83. (5) वह भावना को स्वयं के रूप में कैसे देखता है? यहाँ कोई आँख से संपर्क से पैदा हुई भावना,... कान से संपर्क से पैदा हुई भावना,. नाक से संपर्क से पैदा हुई भावना, . . . जीभ से संपर्क से पैदा हुई भावना,... शरीर से संपर्क से पैदा हुई भावना,... मन से संपर्क से पैदा हुई भावना को स्वयं के रूप में देखता है [146] इस प्रकार 'जो मन से संपर्क से पैदा हुई भावना है, वही मैं हूँ; जो मैं हूँ, वही मन से संपर्क से पैदा हुई भावना है', और वह मन से संपर्क से पैदा हुई भावना और स्वयं को एक समान देखता है। जैसे... (§50 में समानता],... वैसे ही, यहाँ कोई... एक समान देखता है।

गलतफहमी... [जैसा कि §50 में है]... दृष्टिकोण और आधार [एक साथ] भावना के आधार पर स्वयं के बारे में पहली तरह का दृष्टिकोण है।

84. खुद के बारे में विचार गलत विचार हैं....
85. [ऐसा गलत दृष्टिकोण] मन के लिए एक बंधन है.... इस तरह
वह भावना को स्वयं के रूप में देखता है।

86-8. (6) वह खुद को भावनाओं से भरा हुआ कैसे देखता है? यहाँ कोई व्यक्ति समझ, बनावट... चेतना... भौतिकता को खुद के रूप में देखता है। वह सोचता है 'यह मेरा खुद है; लेकिन मेरा यह खुद इस भावना के ज़रिए भावनाओं से भरा हुआ है', और इस तरह खुद को भावनाओं से भरा हुआ देखता है। . . . ठीक वैसे ही, [§§ 74-6 में उसी उपमा और सही बदलाव के साथ पूरा करें]। इसी तरह वह खुद को भावनाओं से भरा हुआ देखता है।

89-91. (7) वह खुद में फीलिंग को कैसे देखता है? यहाँ कोई देखता है... परसेप्शन... फॉर्मेशन. कॉन्शसनेस... मैटेरियलिटी को खुद के रूप में. वह सोचता है 'यह मेरा खुद है; लेकिन यह फीलिंग इस खुद में है', और इस तरह खुद में फीलिंग देखता है. ठीक वैसे ही. (§77 . . में सिमिल जैसा).

इसी तरह वह खुद में भावना देखता है।

92-4. (8) वह खुद को एहसास में कैसे देखता है? यहाँ कोई इंसान सोच के रूप... . . . चेतना... भौतिकता को खुद के रूप में देखता है। वह सोचता है 'यह मेरा खुद है'; लेकिन मेरा यह खुद इस एहसास में है', और इस तरह खुद को एहसास में देखता है। जैसे, [§80 में दी गई उपमा]।

वह खुद को इसी तरह महसूस करता है।

95-7. (9) वह स्वयं के रूप में प्रत्यक्षण को कैसे देखता है? यहाँ कोई आँख संपर्क जनित प्रत्यक्षण...कान संपर्क जनित प्रत्यक्षण,नाक संपर्क जनित प्रत्यक्षण...जीभ संपर्क जनित प्रत्यक्षण...शरीर संपर्क जनित प्रत्यक्षण...मन संपर्क जनित प्रत्यक्षण को इस प्रकार स्वयं के रूप में देखता है। [147]

इस तरह वह परसेप्शन को खुद के रूप में देखता है।

98-100. (10) वह खुद को समझ से भरा हुआ कैसे देखता है? यहाँ कोई इंसान बनावट... चेतना... भौतिकता... भावना को खुद के रूप में देखता है। वह सोचता है कि यह मेरा खुद है; लेकिन मेरा यह खुद इस समझ के ज़रिए इस समझ से भरा हुआ है', और इस तरह खुद को समझ से भरा हुआ देखता है। जैसे...

इस तरह वह खुद को समझ से भरा हुआ देखता है।

100-3. (11) वह खुद में समझ को कैसे देखता है? यहाँ कोई इंसान बनावट... चेतना... भौतिकता... भावना को खुद के रूप में देखता है। वह सोचता है। 'यह मेरा खुद है; लेकिन यह समझ इस खुद में है', और इस तरह वह खुद में समझ को देखता है। जैसे। . .

इसी तरह वह खुद में समझ देखता है।

104-6. (12) वह खुद को समझ में कैसे देखता है? यहाँ कोई इंसान बनावट... चेतना, भौतिकता... भावना को . . खुद के रूप में देखता है। वह सोचता है 'यह मेरा खुद है; लेकिन मेरा यह खुद इस समझ में है', और वह खुद को समझ में देखता है। जैसे। . .

वह खुद को इसी तरह देखता है।

107-9. (13) वह फॉर्मेशन को खुद के तौर पर कैसे देखता है? यहाँ कोई आँख से संपर्क से पैदा हुई इच्छा... मन से संपर्क से पैदा हुई इच्छा को खुद के तौर पर देखता है, इसलिए 'मन से संपर्क से पैदा हुई इच्छा क्या है...' एक जैसा। जैसे...

इस तरह वह खुद को फॉर्मेशन के रूप में देखता है।

110-12. (14) वह खुद को बनावटों से भरा हुआ कैसे देखता है? यहाँ कोई चेतना को.. समझ को खुद के रूप में देखता है। वह सोचता है "यह मेरा खुद है; लेकिन मेरा यह खुद इन बनावटों के ज़रिए बनावटों से भरा हुआ है', और इस तरह खुद को बनावटों से भरा हुआ देखता है। जैसे...

इस प्रकार वह स्वयं को संरचनाओं से युक्त देखता है। [148]

113-15. (15) वह खुद में बनने को कैसे देखता है? यहाँ कोई चेतना को... खुद के रूप में समझ को देखता है। वह सोचता है 'यह मेरा खुद है; लेकिन ये बनने इस खुद में हैं', और इस तरह खुद में बनने को देखता है। जैसे...

इसी तरह वह खुद में बदलाव देखता है।

116-8. (16) वह खुद को बनावट में कैसे देखता है? यहाँ कोई चेतना को... समझ को खुद के रूप में देखता है। वह सोचता है "यह मेरा खुद है; लेकिन यह मेरा खुद इन बनावटों में है', और इस तरह वह खुद को बनावटों में देखता है। जैसे। . .

वह खुद को इसी तरह से देखता है।

119-21. (17) वह चेतना को खुद के रूप में कैसे देखता है? यहाँ कोई आँख की चेतना, कान की चेतना, चेतना, . . चेतना... जीभ-मन की चेतना को शरीर की . . चेतना, नाक की . . खुद के रूप में देखता है, इस तरह 'जो मन की चेतना है, वह मैं हूँ; जो मैं हूँ, वह मन की चेतना है', और वह मन की चेतना और खुद को एक जैसा देखता है। जैसे कोई जलते हुए दीये की लौ को देखता है...

इस तरह वह चेतना को स्वयं के रूप में देखता है।

122-4. (18) वह खुद को चेतना से भरा हुआ कैसे देखता है? यहाँ कोई भौतिकता... भावना... समझ... बनावट को खुद के रूप में देखता है। वह सोचता है 'यह मेरा खुद है; लेकिन यह मेरा खुद इस चेतना के ज़रिए चेतना से भरा हुआ है', और खुद को चेतना से भरा हुआ देखता है। जैसे, अगर कोई पेड़ होता..

इस तरह वह खुद को चेतना से भरा हुआ देखता है।

125-7. (19) वह खुद में चेतना को कैसे देखता है? यहाँ कोई भौतिकता को... खुद के रूप में रूपों को देखता है। वह सोचता है 'यह मेरा खुद है; लेकिन यह चेतना इस खुद में है', और इस तरह खुद में चेतना को देखता है। जैसे, अगर कोई खुशबूदार फूल होता...

इस तरह वह खुद में चेतना देखता है।

128. (20) वह चेतना में खुद को कैसे देखता है? यहाँ कोई भौतिक चीज़ों को... खुद के रूप में देखता है। वह सोचता है 'यह मेरा खुद है: लेकिन यह, मेरा खुद, इस चेतना में है', और इस तरह (149) खुद को चेतना में देखता है। जैसे, कोई रत्न हो... खुद में चेतना।

गलतफहमी...दृष्टिकोण और आधार (एक साथ) स्वयं के बारे में चौथे प्रकार का दृष्टिकोण है, जिसमें चेतना आधार है।

129. स्वयं के बारे में विचार गलत विचार हैं... [जैसा कि §§9-13 में है]... विचारों से गलतफहमी।

130. (ऐसा गलत नज़रिया) मन के लिए एक बंधन है... [जैसा कि धारा 48 में है]... ये बेड़ियाँ नज़रिया नहीं हैं।

इसी तरह वह चेतना में खुद को देखता है।

इन 20 पहलुओं में खुद के बारे में विचारों के ज़रिए गलत मतलब निकाला जाता है।

(iii)

131. किन 10 पहलुओं में गलत नज़रिए से गलत मतलब निकाला जाता है?

(1) कुछ नहीं दिया गया है: यह एक ग्राउंड है। गलत नज़रिए की वजह से गलत मतलब निकालना ही वह व्यू है जो इस तरह दावा करता है। व्यू ग्राउंड नहीं है, और ग्राउंड व्यू नहीं है; व्यू एक है, और ग्राउंड दूसरा है। व्यू और ग्राउंड (एक साथ) गलत ग्राउंड वाला पहला गलत व्यू है।

132. गलत नज़रिया गलत नज़रिया है। एक व्यक्ति... [और इसी तरह धारा 9 तक]... नज़रिए से गलतफहमी।

133. [ऐसा गलत दृष्टिकोण मन के लिए बंधन है... (और इसी तरह धारा 48 से पहले तक)... ये बंधन दृष्टिकोण नहीं हैं।

134-6. (2) कुछ भी पेश नहीं किया गया है: यह एक आधार है...

137-9. (3) कुछ भी बलिदान नहीं किया जाता है: यह एक आधार है...

140-2. (4) अच्छे और बुरे कर्मों का कोई फल नहीं होता : यह एक आधार है...

143-5. (5) यह संसार नहीं है: यह एक आधार है.

146-8. (6) कोई दूसरी दुनिया नहीं है: यह एक ज़मीन है...

149-51. (7) कोई माँ नहीं है: यह एक मैदान है...

152-4. (8) कोई पिता नहीं है: यह एक आधार है...

155-7. (9) कोई प्रेतात्मा नहीं हैं: यह एक आधार है...

158. (10) ऐसे कोई अच्छे और गुणी तपस्वी और ब्राह्मण नहीं हैं जिन्होंने स्वयं प्रत्यक्ष ज्ञान द्वारा अहसास किया हो और इस दुनिया और दूसरी दुनिया की घोषणा की हो: यह एक आधार है... दृष्टि और आधार (एक साथ) गलत आधार के साथ दसवां गलत दृष्टिकोण है।

159. गलत नज़रिया ही गलत नज़रिया है। एक व्यक्ति... नज़रियों से गलतफहमी।

160. (ऐसी ग़लत सोच) मन के लिए एक बंधन है... ये बेड़ियाँ सोच नहीं हैं।

इन 10 बातों में गलत नज़रिए से गलत मतलब निकाला जाता है।

(iv)

161. किन 20 पहलुओं में व्यक्तित्व के बारे में विचारों के माध्यम से गलत व्याख्या की जाती है?

यहाँ एक अशिक्षित साधारण व्यक्ति... [और इसी प्रकार §49 में]... या (20) चेतना में स्वयं।

162-221. (1) वह भौतिकता को स्वयं के रूप में कैसे देखता है? यहाँ कोई... [दोहराएँ §§50-130]...[150]

इन 20 पहलुओं में इंडिविजुअलिटी के बारे में विचारों के ज़रिए गलत मतलब निकाला जाता है।

(v)

223. किन 15 पहलुओं में इंडिविजुअलिटी के आधार पर एटरनिटी के विचारों से गलत मतलब निकाला जाता है?

यहाँ एक अनपढ़ आम आदमी... (और इसी तरह §49 में भी)... (1) खुद को मैटेरियलिटी से भरा हुआ देखता है, या (2) खुद में मैटेरियलिटी, या (3) खुद को मैटेरियलिटी में; या (4) वह खुद को फीलिंग्स से भरा हुआ देखता है, या (5) खुद में फीलिंग्स, या (6) खुद को फीलिंग्स में; या (7) वह खुद को परसेप्शन से भरा हुआ देखता है, या (8) खुद में परसेप्शन, या (9) खुद को परसेप्शन में; या (10) वह खुद को फॉर्मेशन्स से भरा हुआ देखता है, या (11) खुद में फॉर्मेशन्स, या (12) खुद को फॉर्मेशन्स में; या (13) वह खुद को कॉन्शसनेस से भरा हुआ देखता है, या (14) खुद में कॉन्शसनेस, या (15) खुद को कॉन्शसनेस में।

224-84. (1) वह खुद को भौतिकता से भरा हुआ कैसे देखता है? यहाँ कोई... [दोहराएँ § §74-82, 86-94, 98-106, 110-18, 122-30]...

इन 15 पहलुओं में इंडिविजुअलिटी के आधार पर हमेशा रहने के नज़रिए से गलत मतलब निकाला जाता है।

(छठी)

285. किन 5 पहलुओं में व्यक्ति की पहचान के आधार पर विनाश के विचारों के ज़रिए गलत मतलब निकाला जाता है?

यहाँ एक अशिक्षित साधारण मनुष्य... (और इसी प्रकार §49 में)... (1) भौतिकता को स्वयं के रूप में देखता है, या (2) भावना को स्वयं के रूप में, या (3) धारणा को स्वयं के रूप में, या (4) संरचनाओं को स्वयं के रूप में, या (5) चेतना को स्वयं के रूप में देखता है।

286-321. (1) वह भौतिकता को स्वयं के रूप में कैसे देखता है? .. यहाँ कोई. [151] दोहराएँ §§50-73, 83-5, 95-7, 107-9, 119-21]...

इन 5 पहलुओं में इंडिविजुअलिटी के आधार पर खत्म होने के विचारों से गलत मतलब निकाला जाता है।

(सप्तम)

322. किन 50 पहलुओं में सीमितता को मानने वाले विचारों के ज़रिए गलत व्याख्या होती है?

'दुनिया हमेशा रहने वाली है' जैसे सीमित होने के नज़रिए से कितने पहलुओं में गलत मतलब निकाला जा रहा है?

'दुनिया हमेशा रहने वाली नहीं है' जैसे सीमित होने के नज़रिए से कितने पहलुओं में गलत मतलब निकाला जा रहा है?

... इस दृष्टिकोण से कि 'दुनिया का अंत [अंतरिक्ष में] है', परिमितता को मान लिया जाए?

... इस प्रकार "दुनिया का कोई अंत नहीं है [अंतरिक्ष में]"?

... इस प्रकार 'आत्मा और शरीर एक ही हैं'?

....इस प्रकार 'आत्मा एक है, और शरीर दूसरा है'?

... तो क्या 'एक परफेक्ट इंसान मौत के बाद होता है'?

...तो क्या 'एक परफेक्ट इंसान मौत के बाद नहीं होता'?

. . . इस प्रकार 'एक परिपूर्ण व्यक्ति मृत्यु के बाद भी है और नहीं भी है'?

'एक परफेक्ट इंसान न तो मौत के बाद होता है और न ही मौत के बाद होता है', इस सोच के ज़रिए कितने पहलुओं में गलत मतलब निकाला जा रहा है?

[अभी बताए गए 10 मामलों में से हर एक में] पांच पहलुओं में सीमितता मानने से गलत मतलब निकाला जा रहा है।

323. 'दुनिया हमेशा रहने वाली है' जैसे सीमित होने के नज़रिए से किन पाँच बातों का गलत मतलब निकाला जा रहा है?

(1) गलत मतलब निकालना, जैसे 'मैटेरियलिटी ही दुनिया है और यह हमेशा रहने वाली है', एक नज़रिया है। उस नज़रिए से सीमितता मानी जाती है, इसलिए यह सीमितता मानने वाला नज़रिया है। नज़रिया ज़मीन नहीं है, और ज़मीन नज़रिया नहीं है; नज़रिया एक है, और ज़मीन दूसरी है। नज़रिया और ज़मीन (एक साथ) पहला नज़रिया है जो सीमितता मानता है, जैसे 'दुनिया हमेशा रहने वाली है'।

324. सीमितता मानने वाला नज़रिया गलत नज़रिया है; गलत नज़रिया गलत नज़रिया है... [और इसी तरह §9 में]...

325. [ऐसा गलत दृष्टिकोण मन के लिए बंधन है... [आदि जैसे §46]...ये बेड़ियाँ विचार नहीं हैं.

326-8. (2) गलत मतलब निकालने से गलतफहमी होना, इस तरह 'भावना ही दुनिया है और यह हमेशा रहने वाली है' एक नज़रिया है...

329-31. (3)... इस प्रकार 'धारणा ही संसार है और यह शाश्वत है'...

332-८. (4)... इस प्रकार 'रचनाएँ ही संसार हैं और वे शाश्वत हैं'...

335. (5)..इस प्रकार 'चेतना ही संसार है और यह शाश्वत है'...[152] दृष्टिकोण और आधार (एक साथ) पाँचवाँ दृष्टिकोण है जो परिमितता को मानता है इस प्रकार 'संसार शाश्वत है'।

336-7. सीमितता को मानने वाला नज़रिया गलत नज़रिया है...

इन पाँचों पहलुओं को सीमित मानने वाले नज़रिए से गलत समझा जाता है, जैसे 'दुनिया हमेशा रहने वाली है'।

338. किन पाँच पहलुओं में, 'दुनिया हमेशा रहने वाली नहीं है' जैसे सीमित सोच के ज़रिए गलत मतलब निकाला जा रहा है?

(6) गलत मतलब निकालना, जैसे 'मैटेरियलिटी ही दुनिया है और यह हमेशा रहने वाली नहीं है', यह एक नज़रिया है। इस नज़रिए से सीमितता मान ली जाती है... यह नज़रिया और ज़मीन (एक साथ) पहला नज़रिया है जो सीमितता मानता है, जैसे "दुनिया हमेशा रहने वाली नहीं है"।

339-40. सीमितता को मानने वाला नज़रिया गलत नज़रिया है...

341-52. (7)-(10) 'भावना ही दुनिया है और यह हमेशा रहने वाली नहीं है', इस तरह गलत मतलब निकालने से गलतफहमी। [और इसी तरह बाकी पाँच ग्रुप्स के लिए भी]...

इन पाँचों पहलुओं को सीमित मानने वाले नज़रिए से गलत समझा जाता है, जैसे 'दुनिया हमेशा रहने वाली नहीं है'।

353. किन पाँच पहलुओं में, 'दुनिया का अंत है' जैसे सीमित सोच के ज़रिए गलत मतलब निकाला जाता है?

(11) यहाँ कोई नीले रंग की तरह एक छोटी सी जगह पर ध्यान दे रहा है (फैला हुआ है)। वह सोचता है 'दुनिया का एक अंत है, यह सीमित है', और इस तरह उसे एक अंत का एहसास होता है। गलत मतलब निकालना, जैसे 'जिस पर उसका ध्यान है वह ज़मीन है और वही दुनिया है, और जिस पर उसका ध्यान है वह खुद है और वही दुनिया है', यह एक नज़रिया है। उस नज़रिए से सीमितता मान ली जाती है। यह नज़रिया ज़मीन नहीं है.. पहला नज़रिया सीमितता मान लेता है, जैसे 'दुनिया का एक अंत है'।

354-5. सीमितता मानने वाला नज़रिया गलत नज़रिया है... ये बेड़ियाँ नज़रिया नहीं हैं।

356-7. (12) यहाँ कोई व्यक्ति पीले रंग के रूप में एक सीमित स्थान पर (व्याप्त) होने का इरादा रखता है...

(13) यहां कोई व्यक्ति लाल रंग के रूप में एक सीमित स्थान पर (व्याप्त) होने का इरादा रखता है...

(14) यहां कोई व्यक्ति सफेद रंग के रूप में एक सीमित स्थान पर (व्याप्त) होने का इरादा रखता है...

(15) यहां कोई व्यक्ति लुमी के रूप में सीमित स्थान पर (व्याप्त) इरादा रखता है। हमें..

[153] इन पाँच पहलुओं में परिमितता को मानने वाले दृष्टिकोण के माध्यम से गलत व्याख्या की जाती है, जैसे "दुनिया का एक अंत है"।

358. किन पाँच पहलुओं में, 'दुनिया का कोई अंत नहीं है' जैसे नज़रिए से एक ही अति को मानने से गलत मतलब निकाला जाता है?

(16) यहाँ कोई नीले रंग की तरह एक बड़ी जगह पर ध्यान दे रहा है (फैला हुआ है)। वह सोचता है 'इस दुनिया का कोई अंत नहीं है, यह कभी खत्म नहीं होती', और इसलिए उसे कोई अंत नहीं दिखता। इस तरह 'क्या...' की गलत व्याख्या से गलतफहमी, पहला नज़रिया यह मानता है कि यह सीमित है, इस तरह 'दुनिया का कोई अंत नहीं है'।

359-60. सीमितता मानने वाला नज़रिया गलत नज़रिया है... ये बेड़ियाँ नज़रिया नहीं हैं।

361-72. (17)-(20) यहाँ कोई व्यक्ति पीले...लाल...सफेद...चमकदार...काफी जगह में (फैला हुआ) है...

इन पाँचों पहलुओं का गलत मतलब निकाला जाता है, क्योंकि यह माना जाता है कि दुनिया का कोई अंत नहीं है।

373. 'आत्मा और शरीर एक ही हैं' जैसे सीमित होने के नज़रिए से किन पाँच पहलुओं में गलत मतलब निकाला जाता है?

(21) गलत मतलब निकालने से गलतफहमी होना, जैसे 'मैटेरियलिटी आत्मा और शरीर है; आत्मा और शरीर एक ही हैं', यह एक नज़रिया है। इस नज़रिए से सीमितता मानी जाती है... पहला नज़रिया सीमितता को इस तरह मानता है 'आत्मा और शरीर एक ही हैं'।

374-5. सीमितता मानने वाला नज़रिया गलत नज़रिया है... ये बेड़ियाँ नज़रिया नहीं हैं।

376-87. (22)-(25) 'भावना बोध... संरचनाएं... चेतना आत्मा ... और शरीर है...' इस प्रकार गलत व्याख्या द्वारा गलतफहमी

इस दृष्टिकोण के माध्यम से पांच पहलुओं में गलत व्याख्या है कि 'आत्मा और शरीर एक ही हैं'।

388.. किन पाँच पहलुओं में 'आत्मा एक है और शरीर दूसरा है' जैसे सीमितता को मानने वाले नज़रिए से गलत मतलब निकाला जाता है?

(26) गलत मतलब निकालने से गलतफहमी, जैसे 'मैटेरियलिटी शरीर है, और आत्मा शरीर नहीं है; आत्मा एक है, और शरीर दूसरा है', यह एक नज़रिया है। इस नज़रिए से सीमितता मान ली जाती है... पहला नज़रिया एक एक्सट्रीम मान लेता है, जैसे 'आत्मा एक है, और शरीर दूसरा है'।

389-90. सीमितता मानने वाला नज़रिया गलत नज़रिया है... ये बेड़ियाँ नज़रिया नहीं हैं।

391-402. (27)-(30) इस प्रकार गलत व्याख्या द्वारा गलतफहमी . . . 'भावना धारणा... संरचनाएं... चेतना शरीर है, और आत्मा शरीर नहीं है;... [154]

इन पाँचों पहलुओं का गलत मतलब निकाला जाता है, क्योंकि यह माना जाता है कि 'आत्मा एक है और शरीर दूसरा है'।

403. किन पाँच पहलुओं में, 'एक परफ़ेक्ट इंसान मौत के बाद होता है' जैसे सीमित सोच के ज़रिए गलत मतलब निकाला जाता है?

(31) गलत मतलब निकालने से गलतफहमी, जैसे 'यहां मौत का आइडिया सिर्फ़ मैटेरियलिटी से आता है; शरीर के टूटने पर एक परफेक्ट वन होता है, रहता है, पैदा होता है और पैदा होता है', यह एक नज़रिया है। इस नज़रिए से सीमितता मानी जाती है... पहला नज़रिया एक एक्सट्रीम मान लेता है, जैसे 'एक परफेक्ट वन मौत के बाद होता है'।

404-5. सीमितता मानने वाला नज़रिया गलत नज़रिया है... ये बेड़ियाँ नज़रिया नहीं हैं।

406-17. (32)-(35) गलत मतलब निकालने से गलतफहमी, इस तरह 'यह सिर्फ़ एहसास है... समझ... बनावट। . . चेतना जो ले जाती है यहाँ मौत का विचार;...

इन पाँचों पहलुओं का गलत मतलब निकाला जाता है, क्योंकि यह माना जाता है कि 'एक परफेक्ट इंसान मौत के बाद होता है'।

418. किन पाँच पहलुओं में, 'एक परफ़ेक्ट इंसान मौत के बाद नहीं होता' जैसे सीमित सोच के ज़रिए गलत मतलब निकाला जाता है?

(36) गलत मतलब निकालने से गलतफहमी, जैसे 'यहां मौत का मतलब सिर्फ़ मैटेरियलिटी से है; एक परफेक्ट वन, शरीर के टूटने पर, खत्म हो जाता है, खो जाता है; एक परफेक्ट वन मौत के बाद नहीं होता', यह एक नज़रिया है। इस नज़रिए से सीमितता मानी जाती है... पहला नज़रिया सीमितता को इस तरह मानता है 'एक परफेक्ट वन मौत के बाद नहीं होता'।

419-20. सीमितता मानने वाला नज़रिया गलत नज़रिया है... ये बेड़ियाँ नज़रिया नहीं हैं।

421-32. (37)-(40) गलतफहमी से गलतफहमी इस तरह 'यह सिर्फ़ एहसास है.... समझ... बनावट... चेतना है जो यहाँ मौत का विचार रखती है;..

इन पाँचों पहलुओं का गलत मतलब निकाला जाता है, क्योंकि यह माना जाता है कि 'एक परफेक्ट इंसान मौत के बाद नहीं होता'।

433. किन पाँच पहलुओं में, 'एक संपूर्ण व्यक्ति मृत्यु के बाद भी होता है और नहीं भी होता' जैसी सीमितता को मानने वाले नज़रिए से गलत मतलब निकाला गया है?

(41) गलत मतलब निकालने से गलतफहमी, जैसे 'यहां मौत का आइडिया सिर्फ़ मैटेरियलिटी से आता है; शरीर के टूटने पर एक परफेक्ट वन, दोनों होता है और नहीं भी होता', यह एक नज़रिया है। इस नज़रिए से सीमितता मानी जाती है... पहला नज़रिया जो सीमितता को इस तरह मानता है 'एक परफेक्ट वन मौत के बाद भी होता है और नहीं भी होता'।

434-5. सीमितता मानने वाला नज़रिया गलत नज़रिया है... ये बेड़ियाँ नज़रिया नहीं हैं।

436-47. (42)-(45) गलत मतलब निकालकर गलतफहमी, इस तरह 'यह सिर्फ़ एहसास है.. . . समझ. बनावट. चेतना है जो यहाँ मौत का विचार रखती है;...

इन पाँचों पहलुओं का गलत मतलब निकाला जाता है, क्योंकि यह माना जाता है कि 'एक परफेक्ट इंसान मौत के बाद भी होता है और नहीं भी होता'।

448. किन पाँच पहलुओं में, 'एक परफ़ेक्ट इंसान न तो मौत के बाद होता है और न ही होता है' जैसे सीमित सोच के ज़रिए गलत मतलब निकाला जाता है?

[155]

(46) गलत मतलब निकालने से गलतफहमी, जैसे 'यहां मौत का मतलब सिर्फ़ मैटेरियलिटी से है; शरीर के टूटने पर एक परफेक्ट वन, न तो होता है और न ही नहीं होता', यह एक नज़रिया है। इस नज़रिए से सीमितता मानी जाती है... पहला नज़रिया जो सीमितता को इस तरह मानता है 'एक परफेक्ट वन मौत के बाद न तो होता है और न ही नहीं होता'।

349-50. सीमितता मानने वाला नज़रिया गलत नज़रिया है... ये बेड़ियाँ नज़रिया नहीं हैं।

451-62. (47)-(50) गलत मतलब निकालने से गलतफहमी, इस तरह 'यह सिर्फ़ एहसास है... समझ... बनावट। यहाँ . . जो साथ ले जाती है मौत का विचार;... चेतना

इन पाँचों पहलुओं में सीमितता को मानने वाले नज़रिए से गलत मतलब निकाला जाता है, जैसे 'एक परफेक्ट इंसान न तो मौत के बाद होता है और न ही नहीं होता'।

इन 50 पहलुओं में सीमितता को मानने वाले नज़रिए से गलत मतलब निकाला जाता है।

(आठ)

463. किन 18 पहलुओं में अतीत की सीमितता के बारे में विचारों के ज़रिए गलत व्याख्या की गई है? (ब्रह्मजलसुत्तंत देखें)

एटरनिटी के बारे में चार तरह के थ्योरिस्ट हैं, पार्शियल एटरनिटी के बारे में चार तरह के थ्योरिस्ट हैं, चार फाइनाइट-इनफिनिटिस्ट हैं, चार ईल-रिग्लर्स हैं, और दो फॉर्च्यूटस-ओरिजिनिस्ट हैं।

इन 18 पहलुओं में अतीत की सीमाओं के बारे में विचारों के ज़रिए गलत मतलब निकाला गया है।

(ix)

464. भविष्य की सीमितता के बारे में विचारों के ज़रिए किन 44 पहलुओं में गलत व्याख्या की गई है? (ब्रह्मजालसुत्तंत देखें)

बोध के सोलह प्रकार के सिद्धांतकार हैं, अबोध के आठ प्रकार के सिद्धांतकार हैं, न बोध के आठ प्रकार के सिद्धांतकार हैं, न बोध के आठ प्रकार के सिद्धांतकार हैं, विनाश के सात प्रकार के सिद्धांतकार हैं, और यहीं और अभी के पांच प्रकार के सिद्धांतकार हैं।

भविष्य की सीमितता के बारे में विचारों के ज़रिए इन 18 पहलुओं का गलत मतलब निकाला गया है।

(एक्स)

465. किन 18 पहलुओं में विचारों के ज़रिए गलत मतलब निकाला जाता है जो बांधता है?

कोई भी नज़रिया जो नज़रियों का सहारा है,... (§5 दोहराएं)... नज़रियों के ज़रिए गलतफहमी।

इन 18 पहलुओं में गलत मतलब निकाला गया है, जो रुकावट डालने वाले विचारों के ज़रिए है।

(xi)

466. किन 18 पहलुओं में 'मैं' के दंभ से बंधे विचारों के ज़रिए गलत मतलब निकाला जाता है?

(1) आँख को 'मैं' समझकर गलत धारणा बनाना एक ऐसा दृष्टिकोण है जो 'मैं' के दंभ से जकड़ता है। यह दृष्टिकोण आधार नहीं है... [156] यह पहला दृष्टिकोण है जो 'मैं' के दंभ से जकड़ता है।

467-8. जो नज़रिया 'मैं' के घमंड से जकड़ता है, वह गलत नज़रिया है... ये बेड़ियाँ नज़रिया नहीं हैं।

469-70. (2) कान को 'मैं' समझकर गलतफ़हमी पालना एक ऐसा नज़रिया है जो 'मैं' के दंभ से जकड़ लेता है...! :

471-515. (3)...नाक. (4). जीभ... (5)..शरीर...
(6) मन... (7)... दिखाई देने वाली चीज़ें... (8) . . आवाज़ें.
विचार... (13)... (10)... स्वाद... (11)... मूर्त . . (9) खुशबू.
चीज़ें... (12). आँख की चेतना... (14) कान की चेतना... (15)... नाक की
. . . चेतना (16)... जीभ की चेतना... (17)... शरीर की चेतना...:

516-8. (18) मन-चेतना को 'मैं' समझकर गलतफ़हमी एक ऐसा नज़रिया है जो 'मैं' के घमंड से जकड़ लेता है...

इन 18 पहलुओं को 'मैं' की सोच से जोड़ने वाले विचारों के ज़रिए गलत समझा जाता है।

(बारह)

519. किन 18 पहलुओं में 'मेरा' के दंभ से बंधे विचारों के ज़रिए गलत मतलब निकाला जाता है?

(1) आँख को 'मेरा' समझकर गलतफ़हमी पालना एक ऐसा नज़रिया है जो 'मेरा' के दंभ से जकड़ता है। नज़रिया ज़मीन नहीं है... यह पहला नज़रिया है जो 'मेरा' के दंभ से जकड़ता है।

520-1. जो नज़रिया 'मेरा' के घमंड से जकड़ता है, वह गलत नज़रिया है। ये बेड़ियाँ नज़रिया नहीं हैं।

522-4. (2) कान को 'मेरा' समझकर गलत धारणा करना एक ऐसा दृष्टिकोण है, जो 'मेरा' दंभ से जकड़ देता है।

525-69. (3)... नाक... (और इसी तरह धारा 471-515 में भी)...

570-2. (18) मन-चेतना को 'मेरा' समझकर गलतफ़हमी पालना एक ऐसा नज़रिया है जो 'मेरा' होने के दंभ से जकड़ देता है...

इन 18 पहलुओं को 'मेरा' वाली सोच के ज़रिए गलत समझा गया है।

(xiii)

573-654. सेल्फ-थ्योरी से जुड़े विचारों के ज़रिए किन बीस पहलुओं में गलत मतलब निकाला जाता है?

यहाँ एक अशिक्षित साधारण आदमी... (दोहराएँ §§49-130]... [157] आत्म सिद्धांतों से जुड़े विचारों के माध्यम से इन बीस पहलुओं में गलत व्याख्या की गई है।

(xiv)

655-7. वर्ल्ड-थ्योरी से जुड़े विचारों के ज़रिए किन आठ पहलुओं में गलत मतलब निकाला जाता है?

(1) गलत मतलब निकालने से गलतफहमी होना, जैसे 'स्वयं और जगत शाश्वत हैं', यह दुनिया के सिद्धांत से जुड़ा एक नज़रिया है। यह नज़रिया ज़मीन नहीं है... ये बेड़ियाँ नज़रिया नहीं हैं।

658-60. (2) गलत मतलब निकालने से गलतफहमी, जैसे 'स्वयं और दुनिया हमेशा रहने वाली नहीं हैं', यह एक वर्ल्ड-थ्योरी से जुड़ा नज़रिया है...

661-3. (3)... इस प्रकार 'आत्मा और जगत् दोनों नित्य और अनित्य हैं'..

664-6. (4)... इस प्रकार 'आत्मा और जगत् न तो नित्य हैं और न अनित्य हैं'...

667-9. (5)... इस प्रकार 'स्वयं और जगत् सीमित हैं'...

670-2..(6)...इस प्रकार 'आत्मा और जगत् अनंत हैं'।

673-5. (7)... इस प्रकार. 'स्वयं और जगत दोनों सीमित और अनंत हैं'...

676-8. (8)... इस प्रकार 'आत्मा तथा जगत् न तो सीमित है, न अनंत' ये बंधन विचार नहीं हैं।

दुनिया की थ्योरी से जुड़े विचारों के ज़रिए इन 8 पहलुओं का गलत मतलब निकाला गया है।

(पन्द्रह)

679. रोककर गलत मतलब निकालना, [हमेशा के तौर पर] होने का नज़रिया है....

(xvi)

680. अतिशयोक्ति के माध्यम से गलत व्याख्या गैर-अस्तित्व [विनाश के रूप में] का दृष्टिकोण है।

[क्रॉस-वर्गीकरण]

681. होने के कितने प्रकार के (xv) दृष्टिकोण और कितने प्रकार के (xvi) न होने के दृष्टिकोण हैं (i) सुखवादी (आकर्षण) दृष्टिकोण के माध्यम से 35 पहलुओं में गलत व्याख्या?

होने के कितने प्रकार के (xv) दृष्टिकोण और कितने प्रकार के (xvi) न होने के दृष्टिकोण हैं (ii) स्वयं के बारे में विचारों के माध्यम से 20 पहलुओं में गलत व्याख्या?

होने के कितने तरह के नज़रिए और न होने के कितने तरह के नज़रिए, गलत नज़रिए से 10 पहलुओं में गलत मतलब निकाले जाते हैं?

अस्तित्व के कितने प्रकार के दृष्टिकोण हैं...

विश्व-सिद्धांतों से जुड़े विचारों के माध्यम से 8 पहलुओं में कितने प्रकार के (xv) होने के दृष्टिकोण और कितने प्रकार के (xvi) न होने के दृष्टिकोण गलत व्याख्या हैं?

682. (i) सुखवादी (आकर्षण) दृष्टिकोण के माध्यम से 35 पहलुओं में गलत व्याख्या या तो (xv) होने का दृष्टिकोण या (xvi) न होने का दृष्टिकोण हो सकती है।

683. (ii) स्वयं के बारे में विचारों के माध्यम से 20 पहलुओं में गलत व्याख्या 15 प्रकार के (xv) होने के दृष्टिकोण और 5 प्रकार के (xvi) न होने के दृष्टिकोण हैं।

684. (iii) गलत नज़रिए से 10 पहलुओं में गलत मतलब निकालना, सब (xvi) न होने का नज़रिया है।

685. (iv) व्यक्तित्व के बारे में विचारों के माध्यम से 20 पहलुओं में गलत व्याख्या 15 प्रकार के (xv) होने के दृष्टिकोण और 5 प्रकार के (xvi) न होने के दृष्टिकोण हैं।

686. (v) व्यक्तित्व के आधार पर अनंत काल के विचारों के माध्यम से 15 पहलुओं में गलत व्याख्या [158] सभी (xv) होने का दृष्टिकोण है।

687. (vi) 5 पहलुओं में व्यक्तिवाद के आधार पर विनाश के विचारों के माध्यम से गलत व्याख्या, सभी (xvi) अस्तित्वहीनता के दृष्टिकोण हैं।

688. (सप्तम) (50 पहलुओं में गलत व्याख्या:)

(1) 5 पहलुओं में गलत व्याख्या, इस प्रकार परिमितता को मानने वाले विचारों के माध्यम से 'दुनिया शाश्वत है' यह सब (xv) होने का दृष्टिकोण है।

(2) 'संसार शाश्वत नहीं है' इस प्रकार परिमितता को मानने वाले विचारों के माध्यम से 5 पहलुओं में गलत व्याख्या, गैर-अस्तित्व का संपूर्ण (xvi) दृष्टिकोण है।

689. (3) 'संसार परिमित है' इस प्रकार परिमितता मानने वाले विचारों के माध्यम से 5 पहलुओं में गलत व्याख्या [सभी] या तो (xv) होने का दृष्टिकोण या (xvi) न होने का दृष्टिकोण हो सकता है।

(4) 'दुनिया अनंत है' इस प्रकार परिमितता को मानने वाले विचारों के माध्यम से 5 पहलुओं में गलत व्याख्या [सभी] या तो (xv) होने का दृष्टिकोण या (xvi) न होने का दृष्टिकोण हो सकता है।

690. (5) 'आत्मा और शरीर एक ही हैं' इस प्रकार परिमितता मानने वाले विचारों के माध्यम से 5 पहलुओं में गलत व्याख्या करना, यह सब (xv) गैर-होने का दृष्टिकोण है।

(6) 'आत्मा एक है और शरीर दूसरा है' जैसे परिमितता को मानने वाले विचारों के माध्यम से 5 पहलुओं में गलत व्याख्या, यह सब (xvi) होने का दृष्टिकोण है।

691. (7) 'मृत्यु के बाद एक पूर्ण व्यक्ति है' इस प्रकार सीमितता को मानने वाले विचारों के माध्यम से 5 पहलुओं में गलत व्याख्या, अस्तित्व का संपूर्ण (xv) दृष्टिकोण है।

(8) 'मृत्यु के बाद कोई पूर्ण नहीं है' जैसे विचारों के माध्यम से 5 पहलुओं में गलत व्याख्या, गैर-मौजूदगी का पूरा (xvi) दृष्टिकोण है।

(9) 'एक पूर्ण व्यक्ति मृत्यु के बाद भी है और नहीं है' इस प्रकार परिमितता को मानने वाले विचारों के माध्यम से 5 पहलुओं में गलत व्याख्या [सभी] या तो (xv) होने का दृष्टिकोण या (xvi) न होने का दृष्टिकोण हो सकता है।

(10) 'एक पूर्ण व्यक्ति न तो मृत्यु के बाद है और न ही नहीं है' इस प्रकार परिमितता को मानने वाले विचारों के माध्यम से 5 पहलुओं में गलत व्याख्या [सभी] या तो (xv) होने का दृष्टिकोण या (xvi) न होने का दृष्टिकोण हो सकता है।

692. (viii) अतीत की सीमितता के बारे में विचारों के माध्यम से 18 पहलुओं में गलत व्याख्या (सभी) या तो (xv) होने का दृष्टिकोण या (xvi) न होने का दृष्टिकोण हो सकती है।

693. (ix) भविष्य की परिमितता के बारे में विचारों के माध्यम से 44 पहलुओं में गलत व्याख्या या तो (xv) होने का दृष्टिकोण या (xvi) न होने का दृष्टिकोण हो सकता है।

694. (x) 18 पहलुओं में गलत व्याख्या उन विचारों के माध्यम से जो बाधा डालते हैं [सभी] या तो (xv) होने का दृष्टिकोण या (xvi) न होने का दृष्टिकोण हो सकता है।

695. (xi) 18 पहलुओं में गलत मतलब निकालना, जो 'मैं' के घमंड से बांधे रखते हैं, वे सब (xvi) न होने के नज़रिए हैं।

696. (xii) 18 पहलुओं में गलत मतलब निकालना, 'मेरा' के घमंड में जकड़ने वाले नज़रिए, ये सब (xv) होने के नज़रिए हैं।

697. (xiii) स्व-सिद्धांतों से जुड़े विचारों के माध्यम से 20 पहलुओं में गलत व्याख्या, होने के 15 प्रकार के (xv) दृश्य और न होने के 5 प्रकार के (xvi) दृश्य हैं।

698. (xiv) विश्व सिद्धांतों से जुड़े विचारों के माध्यम से 8 पहलुओं में गलत व्याख्या या तो (xv) होने का दृष्टिकोण या (xvi) न होने का दृष्टिकोण हो सकती है।

699. सभी दृश्य (i) सुखवादी (आकर्षण) दृश्य हैं।

सभी विचार (ii) स्वयं के बारे में विचार हैं।

सभी विचार (iii) गलत विचार हैं।

सभी विचार (iv) व्यक्तित्व के बारे में विचार हैं।

सभी दृष्टिकोण (vii) परिमितता को मानने वाले दृष्टिकोण हैं (पुष्टि या खंडन करके)।

[159]

सभी व्यू (x) व्यू हैं जो बांधते हैं।

सभी विचार (xiii) स्व-सिद्धांतों से जुड़े विचार हैं।

700. होने का दृष्टिकोण, और न होने का दृष्टिकोण: तर्कवादी
इस जोड़ी को अपना (एकमात्र) आधार बनाते हैं;

क्योंकि उन्हें उस खत्म होने का कोई ज्ञान नहीं
है, जिसके बारे में दुनिया की सोच गलत है।

* *
*

[धारा VI]

701. भिक्षुओ, दो तरह के विचार होते हैं, और जब देवता और मनुष्य उनसे ग्रस्त हो जाते हैं, तो कुछ पीछे हट जाते हैं और कुछ आगे बढ़ जाते हैं: केवल आँखें वाले ही देखते हैं।

'और कुछ लोग कैसे पीछे हटते हैं? देवता और इंसान होने से प्यार करते हैं, होने में खुश होते हैं, होने में खुश होते हैं। जब उन्हें होने से रोकने का सच्चा विचार सिखाया जाता है, तो उनका मन उसमें नहीं जाता, स्थिर और पक्का हो जाता है। इसी तरह कुछ लोग पीछे हटते हैं।

'और कुछ लोग कैसे हद पार कर जाते हैं? कुछ लोग उसी होने से शर्मिंदा, बेइज्जत और नफ़रत महसूस करते हैं, वे न होने में खुश होते हैं, इसलिए 'सियर्स, जब शरीर के टूटने के साथ यह 'मैं' कट जाता है, खत्म हो जाता है, मौत के बाद कोई 'मैं' नहीं रहता, वह शांतिपूर्ण है, वह शानदार है, वह सच है'। कुछ लोग इसी तरह हद पार कर जाते हैं।

'और जिनके पास आँखें हैं वे कैसे देखते हैं? यहाँ एक भिक्षु जो है उसे वैसा ही देखता है। जो है उसे वैसा ही देखने के बाद, वह उससे वैराग्य, उसके लालच के खत्म होने, उसके खत्म होने के रास्ते पर चल पड़ा है। आँखों वाला इसी तरह देखता है।

'जो वास्तविक को वैसा ही देखता
है और जो है उसके परे भी जा सकता है, जो
जैसा है वैसा ही संकल्प करता
है, होने की लालसा अब समाप्त हो चुकी
है। वह पूरी तरह से जानता है कि क्या है,
इसलिए होने और न होने की अब और लालसा
नहीं है, फिर जो है उसके न होने के साथ
उस भिक्षु का आगे कोई अस्तित्व नहीं है।' (इट 43) [160]

702. तीन तरह के लोगों के विचार गलत होते हैं: तीन तरह के लोगों के विचार सही होते हैं।

किन तीन तरह के लोगों के विचार गलत होते हैं? दूसरे पंथ के शिक्षक, उनके शिष्य, और कोई भी जो गलत विचार रखता है। इन तीन तरह के लोगों के विचार गलत होते हैं।

किन तीन तरह के लोगों के विचार सही होते हैं? परफ़ेक्ट लोग, उनके शिष्य, और कोई भी जिसके पास सही विचार होता है। ये तीन तरह के लोग हैं जिनके विचार सही होते हैं।

703. "एक आदमी को तब आउटकास्ट के तौर पर
जाना जा सकता है जब वह गुस्से, दुश्मनी
और घमंड से भरा हो, और अपने विचारों
में गलत और धोखेबाज भी हो। (Sn 116)

महान लोगों को पवित्र माना जा सकता
है जो खुद को गुस्से और दुश्मनी से
शुद्ध करते हैं, जो अपने विचारों
में सही और बुद्धिमान भी होते हैं।

704. गलत विचार तीन तरह के होते हैं; सही विचार तीन तरह के होते हैं।

तीन तरह की गलत सोच क्या हैं? 'यह मेरा है' एक गलत सोच है। 'यह मैं हूँ' एक गलत सोच है। 'यह मैं खुद हूँ' एक गलत सोच है। ये तीन तरह की गलत सोच हैं।

तीन तरह के सही नज़रिए कौन से हैं? 'यह मेरा नहीं है' एक सही नज़रिया है। 'यह मैं नहीं हूँ' एक सही नज़रिया है। 'यह मैं नहीं हूँ' एक सही नज़रिया है। ये तीन तरह के सही नज़रिए हैं।

705. 'यह मेरा है': यह कौन सा नज़रिया है? यह कितने तरह का नज़रिया है? ये नज़रिया किस तरह की सीमितता से जुड़े हैं?

'यह 1 है': यह कौन सा व्यू है? यह कितने तरह के व्यू हैं? वे व्यू किस तरह की सीमितता से जुड़े हैं?

'यह मेरा स्व है': यह कौन सा नज़रिया है? यह कितने तरह के नज़रिए हैं? ये नज़रिए किस तरह की सीमितता से जुड़े हैं?

'यह मेरा है': यह (viii) पास्ट फाइनिटी के बारे में एक नज़रिया है। यह 18 तरह का होता है। इस तरह के नज़रिए पास्ट फाइनिटी से जुड़े होते हैं।

'यह 1 है': यह (ix) भविष्य की परिमितता के बारे में एक दृष्टिकोण है। यह 44 प्रकार का होता है। इस प्रकार के दृष्टिकोण भविष्य की परिमितता से जुड़े हुए हैं। [161]

*यह मेरा खुद है': यह (ii) 20 आधारों के साथ खुद के बारे में नज़रिया है और (iv) 20 आधारों के साथ अपनी पहचान के बारे में नज़रिया है। 62 तरह के नज़रिए, अपनी पहचान के बारे में नज़रिए से सबसे आगे हैं। इस तरह के नज़रिए अतीत की सीमाओं और भविष्य की सीमाओं से जुड़े होते हैं।

706. भिक्षुओ, जिन्होंने मुझमें अपना लक्ष्य पाया है, वे सभी सही नज़र वाले हैं। इनमें से जो सही नज़र वाले हैं, उनमें से पाँच लोग यहीं (इस तरह के जीवन में) अपना लक्ष्य पाते हैं, और पाँच लोग इस तरह का जीवन छोड़ने के बाद [शुद्ध धामों में] अपना लक्ष्य पाते हैं।

'वे पाँच कौन हैं जिन्हें यहाँ अपना लक्ष्य मिलता है? वे हैं: वह जो ज़्यादा से ज़्यादा सात बार जन्म लेगा (सत्तखट्टुपरम), वह जो एक कुलीन परिवार से दूसरे कुलीन परिवार में जाता है (कोलंकोला), एक बार जन्म लेने वाला जो सिर्फ़ एक बार जन्म लेता है (एकाबिजिन), एक बार लौटने वाला (सकदागामिन), और अरहंत जो इसी जीवन में, यहीं और अभी है। ये पाँचों यहीं (इस तरह के जीवन में) अपना लक्ष्य पाते हैं।

"वे पाँच कौन हैं जो इस तरह का जीवन छोड़ने के बाद अपना लक्ष्य पाते हैं? वे हैं: वह जो अपने अगले जन्म में जल्दी निर्वाण प्राप्त करता है (अंतरापरि-

निब्बायिन), वह जो अपने अगले जन्म के आधे से ज़्यादा रास्ते में निब्बान पा लेता है (उपहच्चपरिनिब्बायिन), वह जो बिना किसी प्रेरणा के निब्बान पा लेता है (असंखारपरिनिब्बायिन), वह जो प्रेरणा के साथ निब्बान पा लेता है (ससंखारपरिनिब्बायिन), वह जो सबसे ऊँचे देवताओं की ओर जाने के लिए ऊपर की ओर जा रहा है (उधमसोत-अकनित्थगामिन)। ये पाँचों इस तरह का जीवन छोड़ने के बाद अपना लक्ष्य पाते हैं' (अव 119)।

'भिक्षुओं, जिन लोगों को मुझ पर पूरा भरोसा है, वे सभी इस धारा में आ गए हैं। जो लोग इस धारा में आ गए हैं, उनमें से पाँच को यहीं [इस तरह के जीवन में] अपनी मंज़िल मिल जाती है, और पाँच को इस तरह का जीवन छोड़ने के बाद अपनी मंज़िल मिल जाती है। 'वे पाँच कौन हैं जिन्हें यहाँ अपनी मंज़िल मिलती है? वे हैं: वह जो ज़्यादा से ज़्यादा सात बार जन्म लेगा, वह जो एक अच्छे परिवार से दूसरे अच्छे परिवार में जाएगा, वह जो सिर्फ़ एक बार पैदा होगा, एक बार लौटने वाला, और इसी जीवन में अरहंत, यहीं और अभी। ये पाँचों को यहाँ [इस तरह के जीवन में] अपनी मंज़िल मिल जाती है।

'वे पाँच लोग कौन हैं जो इस तरह का जीवन छोड़ने के बाद अपना लक्ष्य पाते हैं? वे हैं: वह जो अपने अगले जन्म में जल्दी निब्बान पा लेता है, वह जो अपने अगले जन्म के आधे से ज़्यादा रास्ते में निब्बान पा लेता है, वह जो बिना किसी प्रेरणा के निब्बान पा लेता है, वह जो प्रेरणा के साथ निब्बान पा लेता है, वह जो सबसे ऊँचे देवताओं की ओर जाने के लिए ऊपर की ओर जा रहा है। ये पाँच लोग इस तरह का जीवन छोड़ने के बाद अपना लक्ष्य पाते हैं।

'भिक्षुओं, जो मुझ पर पूरा भरोसा रखते हैं, वे सभी इस धारा में आ गए हैं। जो लोग इस धारा में आ गए हैं, उनमें से इन पांचों को यहीं अपनी मंज़िल मिल जाती है, और इन पांचों को इस तरह का जीवन छोड़ने के बाद अपनी मंज़िल मिल जाती है' (A v 120)।

विचारों पर ग्रंथ पूरा हो गया है।



नोट्स

[1] उपादाय के लिए उपादाय पढ़ें।
[2] नेट पृष्ठ 111 देखें।
यहाँ 'विश्व' (लोक) आत्मा (अत्ता) है (PsA. पृ. 452 P.T.S. edn., cf. ब्रह्मजाल और पोत्तापाद. D 1 13 ff., 187 और DA 377).
*P.T.S. वॉल्यूम i, पेज 159 लाइन्स, 1ff. कॉमेडी के अनुसार इस तरह पढ़ना चाहिए:

sabbā va tā (sabbāvatā) diṭṭhiyo saṁyojanikā diṭṭhiyo, sabbā va tā diṭṭhiyo attavādapaṭisaṁyuttā diṭṭhiyo.

Bhavañ ca diṭṭhiṁ vibhavañ ca diṭṭhiṁ
Evaṁ dvayaṁ takkitā nissitāse
तेसं निरोधम्हि न हत्थि ननार्न
Yatthāyaṁ loko viparītasaññī ti.

परिचयात्मक नोट

पहले तीन सेक्शन (i से iii) सच में साफ़ हैं। सेक्शन i मन की उन आम स्थितियों के बारे में बताता है जो ध्यान लगाने में बहुत ज़्यादा रुकावट डालती हैं और जो मदद करती हैं, और उनके अलग-अलग पहलू।

सेक्शन ii में सांस लेने पर ध्यान देने की प्रैक्टिस में चेतना के व्यवहार के अलग-अलग कुछ समय के गलत तरीकों के बारे में बताया गया है, जो आगे बढ़ने में रुकावट डालते हैं।

सेक्शन üi दिखाता है कि इन छोटी-मोटी गलतियों से कैसे बचा जाए और पूरा कॉन्संट्रेशन पाने के प्रोसेस को एनालाइज़ करता है, जिसके बारे में कुछ डिटेल में बताया गया है। इसे एक ऐसे श्लोक के साथ खत्म किया गया है जिसमें इस प्रैक्टिस से अरहंत बनने वाले की तारीफ़ की गई है। श्लोक के बाद एक कमेंट्री है, जिसे निब्बान – जो पूरी प्रैक्टिस का मकसद है – की तरफ इशारा करने और बुद्ध के गुणों के बारे में बताने का मौका दिया गया है – जिनकी सब कुछ जानने की क्षमता पर भरोसा, तब तक आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है जब तक कि पर्सनल एक्सपीरियंस से बोध न हो जाए और विश्वास की ज़रूरत खत्म न हो जाए।

ये तीन सेक्शन एक तरह का जनरल सर्वे और इंट्रोडक्शन हैं, इससे पहले कि सेक्शन iv में असल प्रैक्टिस का डिटेल्ड एनालिसिस शुरू किया जाए, जैसा कि सुत्त में संक्षेप में बताया गया है। ये सीरीज़ B पर आधारित हैं, और उसका सबसे डिटेल्ड उदाहरण हैं।

सेक्शन iv - इस किताब का मुख्य हिस्सा - शुरू में एक भूलभुलैया जैसा लगता है, जब तक कि इसकी पूरी लंबाई और दोहराव में एक सिस्टमैटिक और एक जैसा कंस्ट्रक्शन सामने नहीं आता। इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए सबसे पहले यह याद रखना होगा कि सांस लेने पर ध्यान देना, सुत्तों (D सुत्त 22, M सुत्त 10) में दिए गए ध्यान के चार फाउंडेशन को डेवलप करने के कई तरीकों में से एक है, और यह डेवलपमेंट सही दिशा में ध्यान और पूरी जागरूकता के लगातार अभ्यास में शामिल है। फिर से, 'चार टेट्राड', जैसा कि उन्हें बताया गया है, उस व्यक्ति के बारे में बताते हैं जो अभी ध्यान की प्रैक्टिस कर रहा है ('वह जानता है "मैं लंबी सांस लेता हूं", वगैरह) और जो भविष्य में कंसंट्रेशन, समझ और रास्ते को पाने के लिए ट्रेनिंग ले रहा है, जो अभी तक हासिल नहीं हुआ है ('वह इस तरह ट्रेनिंग देता है "सांसों के पूरे शरीर का अनुभव करते हुए) मैं सांस लूंगा", वगैरह)। आखिर में, 'कंसंट्रेशन, समझ, रास्ता पाने' के क्रम का लगातार पालन किया जाता है और इस तरह यह पूरे को एक आर्किटेक्चरल यूनिटी देता है।

इन आम बातों को ध्यान में रखते हुए, आगे का प्लान साफ़ हो जाता है।

मौजूदा ज्ञान से जुड़े पहले दो आधारों में हमारे पास ये हैं:

(ए) जिस तरह से चिंतन की वस्तु ('लंबी साँस लेना', आदि) को जाना जाता है उसका विश्लेषण (§§194-5);

(ख) यह प्रदर्शन कि कैसे यह चिंतन एक ही समय में माइंडफुलनेस के पहले फाउंडेशन का अभ्यास है, दूसरे शब्दों में, शरीर का चिंतन (§§196-8);

(c) यह दिखाना कि जब कॉन्संट्रेशन हो जाने के बाद, समझ का इस्तेमाल किया जाता है, तो माइंडफुलनेस और पूरी जागरूकता एक साथ कैसे काम करती है (§§199-202)।

(d) आखिरी हिस्सा जिसमें ऐसे सोच-विचार के दौरान हासिल करने के अलग-अलग लेवल पर मौजूद विचारों की लिस्ट है (§§203-15)। यह Tr. I § §41-43 से लिया गया है।

बाकी चौदह ग्राउंड्स के मामले में, जो भविष्य से जुड़े हैं, कंस्ट्रक्शन की यह स्कीम पूरी तरह से फॉलो की जाती है:

(i) जिस तरह से कॉन्संट्रेशन की चीज़ को जाना जाता है, उसका एनालिसिस ('वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं पूरे शरीर [सांसों] को अनुभव करते हुए सांस लूंगा', वगैरह); यह ऊपर (a) जैसा ही है, लेकिन लंबाई और कंटेंट में बहुत अलग है;

(ii) माइंडफुलनेस के चार आधारों में से किसका अभ्यास किया जा रहा है इसका प्रदर्शन; यह ऊपर (बी) के समान ही है;

(iii) 'प्रशिक्षण' से क्या अभिप्राय है इसका विश्लेषण और वर्णन;

(iv) माइंडफुलनेस और पूरी जागरूकता का इस्तेमाल कैसे किया जाए, इसका प्रदर्शन; यह ऊपर (c) जैसा ही है;

(v) निष्कर्ष, जैसा कि ऊपर (डी) में है।

इन पाँच पैराग्राफ़ के सेट में से आखिरी चार, चौदह में से हर बार एकदम वैसे ही दोहराए गए हैं, बस जहाँ ज़रूरी हो वहाँ कुछ खास शब्दों को बदल दिया गया है।

इस तरह सोलह बेस में से हर एक को अलग-अलग रास्ते तक लाया जाता है।

आखिरी छह सेक्शन, v से x, सिर्फ़ ज्ञान के स्टेज का छोटा सा क्लासिफिकेशन देते हैं - कॉन्संट्रेशन पाना (v), शुरुआती समझ (vi), और बाद में आने वाली समझ जो रास्ते के बनने (vii से ix) और रास्ते के फल पाने (x) तक ले जाती है। इनके बारे में ट्रीटीज़ 1, सेक्शन v से xii में डिटेल में बताया गया है।

इस ग्रंथ के मुख्य भाग विशुद्धिमग्ग (q.v.) के अध्याय VIII में समझाए गए हैं।

[प्रबंध III.-श्वास पर]

[सारांश]

1. [162] जब मनुष्य सोलह आधारों सहित श्वास-प्रश्वास पर ध्यान लगाकर एकाग्रता करता है, तो उसमें दो सौ से अधिक प्रकार के ज्ञान उत्पन्न होते हैं:

1. आठ तरह की रुकावटों का ज्ञान और आठ तरह की मदद का ज्ञान,

II. कमियों का अठारह तरह का ज्ञान,

III. शुद्धि के तेरह प्रकार के ज्ञान,

IV. सचेतन कार्यकर्ताओं में बत्तीस प्रकार का ज्ञान,

V. एकाग्रता से चौबीस प्रकार का ज्ञान,

VI. अंतर्दृष्टि के माध्यम से बहत्तर प्रकार का ज्ञान,

VII. आठ तरह के ज्ञान जैसे वैराग्य,

आठ. आठ तरह का ज्ञान जो वैराग्य के अनुसार है,

IX. आठ तरह के ज्ञान वैराग्य के लिए शांतिदायक हैं,

X. मुक्ति के सुख का इक्कीस प्रकार का ज्ञान।

* * *

[खंड 1]

2. बाधाओं के आठ प्रकार के ज्ञान और सहायता के आठ प्रकार के ज्ञान क्या हैं?

3. कामुक इच्छाओं के प्रति उत्साह एकाग्रता में बाधा है, त्याग एकाग्रता में सहायक है।

दुर्भावना एक बाधा है, अ-इच्छा एक सहायता है...

अकड़न और सुस्ती एक रुकावट है। रोशनी का एहसास एक मदद है...

बेचैनी एक रुकावट है। . . , ध्यान भटकना एक मदद है...

अनिश्चितता एक बाधा है..., . विचारों की परिभाषा एक सहायता है...

अज्ञान एक बाधा है..., ज्ञान एक सहायता है...

बोरियत एक रुकावट है, खुशी एक मदद है...

इसके अलावा, सभी बेकार विचार कॉन्संट्रेशन में रुकावट डालते हैं, और सभी फायदेमंद विचार कॉन्संट्रेशन में मदद करते हैं।

ये आठ तरह की रुकावटों की जानकारी और आठ तरह की मदद की जानकारी हैं।

4. जब संज्ञान इन सोलह पहलुओं में उन्मुख, अच्छी तरह से उन्मुख होता है, तो यह एकता स्थापित करता है और बाधाओं से शुद्ध होता है। [163]

ये एकताएं क्या हैं?

त्याग एकता है, दुर्भावना न होना एकता है, प्रकाश की अनुभूति एकता है, ध्यान न भटकना एकता है, विचारों की परिभाषा एकता है, ज्ञान एकता है, प्रसन्नता एकता है, तथा सभी लाभदायक विचार भी एकता हैं।

5. ये रुकावटें क्या हैं?

कामुक इच्छाओं के लिए जोश एक रुकावट है, बुरी नीयत एक रुकावट है, अकड़न और सुस्ती एक रुकावट है, बेचैनी एक रुकावट है, अनिश्चितता एक रुकावट है, अज्ञान एक रुकावट है, बोरियत एक रुकावट है, और सभी बेकार के विचार भी एक रुकावट हैं।

रुकावट: किस अर्थ में रुकावट?

वे आउटलेट्स को ब्लॉक करने के मतलब में रुकावट हैं।

आउटलेट क्या हैं?

त्याग अच्छे लोगों के लिए एक रास्ता है, और अच्छे लोग त्याग से ही बाहर निकलते हैं: कामुक इच्छाओं का जोश उस रास्ते को रोक देता है, और क्योंकि वह कामुक इच्छाओं के जोश से रुका हुआ है, इसलिए वह त्याग में मौजूद अच्छे लोगों के रास्ते को नहीं समझ पाता।

गैर-बुराई...बुराई...

प्रकाश की अनुभूति... कठोरता और सुस्ती...

ध्यान भटकाना नहीं...हड़बड़ी...

विचारों की परिभाषा... अनिश्चितता...

ज्ञान...अज्ञान...

खुशी... बोरियत...

साथ ही, सभी फ़ायदेमंद विचार अच्छे विचारों के लिए एक रास्ता होते हैं, और अच्छे विचार सभी फ़ायदेमंद विचारों से निकलते हैं: सभी बेकार विचार उस रास्ते को रोक देते हैं, और क्योंकि वह सभी बेकार विचारों से रुका हुआ है, इसलिए वह सभी फ़ायदेमंद विचारों में मौजूद अच्छे विचारों के रास्ते को नहीं समझ पाता है।

[धारा ii]

6. जिसका बोध इन अवरोधों से शुद्ध हो जाता है [164], जब वह सोलह आधारों सहित श्वास-प्रश्वास के प्रति सचेतन होकर एकाग्रता विकसित करता है, तो उसमें निम्नलिखित अठारह दोष क्षणिक संयोगों के रूप में उत्पन्न हो जाते हैं।2

कौन सी अठारह कमियां पैदा होती हैं?

(1) जब वह श्वास के आरंभ, मध्य तथा अंत के बाद सचेतन होकर अंदर जाता है, तो उसका बोध आंतरिक रूप से विचलित हो जाता है और यह एकाग्रता में बाधा है।

(2) जब वह श्वास के आरंभ, मध्य तथा अंत के पश्चात सचेतन होकर बाहर जाता है, तो उसका ध्यान बाह्य रूप से विचलित हो जाता है और यह एकाग्रता में बाधा है।

(3) श्वास के प्रति आशा, आसक्ति जैसी लालसा का व्यवहार एकाग्रता में बाधा है।

(4) बाह्य श्वास के प्रति आशा, आसक्ति जैसी लालसा का व्यवहार एकाग्रता में बाधा है।

(5) जब वह बहुत लम्बी या बहुत छोटी साँस अंदर लेने से थक जाता है, तब उसे बाहर साँस लेने की इच्छा होना एकाग्रता में बाधा है।

(6) जब वह बाहर की साँस से थक जाता है, तब अंदर की साँस की लालसा एकाग्रता में बाधा है।"

7. ध्यान अंदर की सांस के पीछे
भागता है और बाहर की सांस के
पीछे भी भागता है, अंदर ध्यान
भटकने की उम्मीद करता है,
बाहर ध्यान भटकना पसंद करता है,
जो अंदर की सांस से बहुत थक गया
है, उसमें बाहर की सांस की
चाहत, जो बाहर की सांस से बहुत थक
गया है, उसमें अंदर की सांस की चाहत;
सांस के ध्यान पर आधारित ध्यान
में ये छह कमियां ऐसी हैं जो
ध्यान भटकाने वाली हैं; और जो
लोग मुक्ति नहीं जानते उन्हें मजबूरन
दूसरों की बातों पर भरोसा करना पड़ता है।

8. (7) यदि, संकेत पर ध्यान देते समय उसकी चेतना श्वास के कारण डगमगाती है, तो यह एकाग्रता में बाधा है।

(8) यदि श्वास लेते समय उसकी चेतना उस संकेत से डगमगाती है तो यह एकाग्रता में बाधा है।

(9) यदि, संकेत पर ध्यान देते समय उसकी चेतना बाहरी साँस के कारण डगमगाती है, तो यह एकाग्रता में बाधा है।

(10) यदि, जब वह बाहर साँस छोड़ने की बात करता है तो उसकी चेतना संकेत से डगमगाती है, तो यह एकाग्रता में बाधा है।

(11) यदि साँस अंदर लेते समय उसकी चेतना बाहर छोड़ते समय डगमगाती है तो यह एकाग्रता में बाधा है।

(12) यदि श्वास छोड़ते समय उसकी चेतना भीतर जाती श्वास से डगमगाती है तो यह एकाग्रता में बाधा है।

9. संकेत पर ध्यान देते हुए, जबकि मन अभी
भी सांस के कारण विचलित है;
चेतना के दौरान अंदर की सांस पर ध्यान देना
अभी भी संकेत से हिल सकता है;
जब मन अभी भी सांस छोड़ने से भटक रहा हो, तो
संकेत पर ध्यान दें; जब मन बाहर सांस
लेने से भटक रहा हो, तो संकेत पर ध्यान दें
अभी भी संकेत से हिलाया जा सकता है;

अंदर की सांस पर ध्यान देते हुए भी, जब
मन बाहर की सांस से भटक रहा हो;
बाहर की सांस पर ध्यान देते हुए भी, अंदर
की सांस से चेतना हिल सकती है:
सांस पर ध्यान देने पर आधारित एकाग्रता
में ये छह कमियां ऐसी हैं जो चेतना
को मुक्त होने से रोकेंगी
और हिला सकती हैं; और जो लोग
मुक्ति नहीं जानते उन्हें मजबूरन दूसरों
की बातों पर भरोसा करना पड़ता है।

10. (13) अतीत (सांसों) के पीछे भागने वाली संज्ञान पर व्याकुलता का आक्रमण होता है और यह एकाग्रता में बाधा उत्पन्न करती है।

(14) भविष्य की चिंता से स्तब्ध हुई संज्ञानशीलता एकाग्रता में बाधक है।

(15) सुस्त संज्ञान पर आलस्य आक्रमण करता है और यह एकाग्रता में बाधा उत्पन्न करता है।

(16) अत्यधिक परिश्रम से संज्ञान पर उत्तेजना का आक्रमण होता है और यह एकाग्रता में बाधा उत्पन्न करता है।

(17) मोहित संज्ञान पर लालच आक्रमण करता है और यह एकाग्रता में बाधा उत्पन्न करता है।

(18) विरक्त संज्ञान पर दुर्भावना का आक्रमण होता है और यह एकाग्रता में बाधा उत्पन्न करता है।

11। जो समझ अतीत का शिकार करती है, जो
भविष्य से प्यार करती है, जो सुस्त
है, ज़्यादा मेहनत करती है,
या लुभाती है, या दूर भगाती है, वह
एकाग्र नहीं है। सांस लेने पर ध्यान देने
के आधार पर ध्यान में ये छह कमियां ऐसी
हैं कि जब वे उसके विचारों पर दाग लगाती हैं,
तो उसे हायर समझ का पता नहीं चलता।

12. (1) जब वह भीतर की श्वास के आरंभ, मध्य एवं अंत के बाद सचेतन रूप से भीतर जाता है, तो उसका बोध आंतरिक रूप से विचलित हो जाता है, उसका शरीर और उसका बोध दोनों व्याकुल, व्याकुल और उत्तेजित होते हैं। (2) जब वह बाह्य श्वास के आरंभ, मध्य एवं अंत के बाद सचेतन रूप से बाहर जाता है, तो उसका बोध बाहरी रूप से विचलित हो जाता है, उसका शरीर और उसका बोध दोनों व्याकुल, व्याकुल और उत्तेजित होते हैं। (3) भीतर की श्वास के प्रति आशा और आसक्ति जैसी लालसा के व्यवहार से उसका शरीर और उसका बोध दोनों व्याकुल, व्याकुल और उत्तेजित होते हैं। (4) बाह्य श्वास के प्रति आशा और आसक्ति जैसी लालसा के व्यवहार से उसका शरीर दोनों... (5) [166] उसमें बाह्य श्वास की लालसा के कारण

जब वह [बहुत लंबे या बहुत छोटे] श्वास अंदर लेने से थक जाता है तो उसके शरीर के दोनों... (6) भीतर लेने की लालसा के कारण, जब वह श्वास बाहर लेने से थक जाता है तो उसके शरीर के दोनों... (7) यदि, जब वह संकेत पर ध्यान देता है, तब भी उसकी चेतना भीतरी श्वास के कारण उसके शरीर के दोनों... (8) II, जब वह श्वास अंदर लेता है, तब भी उसकी चेतना संकेत के कारण उसके शरीर के दोनों... (9) यदि, जब वह संकेत पर ध्यान देता है, तब भी उसकी चेतना बाह्य श्वास द्वारा डोलने योग्य है, उसके शरीर दोनों... (10), यदि, जब वह बाह्य श्वास पर ध्यान देता है, तब भी उसकी चेतना संकेत द्वारा डोलने योग्य है, उसके शरीर दोनों... (11) यदि, जब वह भीतर श्वास लेता है, तब भी उसकी चेतना बाह्य श्वास द्वारा डोलने योग्य है, उसके शरीर दोनों... (12) यदि, जब वह बाह्य श्वास पर ध्यान देता है, तब भी उसकी चेतना भीतर श्वास द्वारा डोलने योग्य है, उसके शरीर दोनों... (13) अतीत के पीछे भागने वाली चेतना और व्याकुलता से आक्रांत होने वाली चेतना के साथ, उसके शरीर दोनों... (14) भविष्य की ओर देखने से हिलती हुई चेतना (सांसें) के साथ, उसके शरीर दोनों... (15) सुस्त और आलस्य से आक्रांत चेतना के साथ, उसके शरीर दोनों... (16) अत्यधिक परिश्रम करने वाली चेतना और उत्तेजना से आक्रांत होने वाली चेतना के साथ, उसके शरीर दोनों... (17) लोभ के द्वारा मोहित और आक्रमणित होने पर उसकी देह और उसकी देह दोनों व्याकुल, विचलित और उत्तेजित हो जाती हैं। (18) लोभ के द्वारा मोहित और आक्रमणित होने पर उसकी देह और उसकी देह दोनों व्याकुल, विचलित और उत्तेजित हो जाती हैं।

13. जिसका सांस लेने का ध्यान विकसित
नहीं हुआ है, जो पूरी
तरह से ठीक नहीं है, उसे अपने
शरीर और अपनी समझ में भी
परेशानी महसूस होती है, फिर वह
अपने शरीर में और अपनी समझ में
भी उत्तेजित होता है। जिसका सांस
लेने का ध्यान विकसित और सही हो
गया है, उसे अपने शरीर और अपनी
समझ में भी परेशानी महसूस नहीं
होती, वह अपने शरीर और अपनी
समझ में भी बेचैन रहता है।

14. जब कोई व्यक्ति जिसका ज्ञान उन बाधाओं (खंड 1 में वर्णित) से शुद्ध हो जाता है, सोलह आधारों सहित श्वास पर ध्यान लगाकर एकाग्रता विकसित करता है, तो ये अठारह दोष उसमें क्षणिक संयोजनों के रूप में उत्पन्न होते हैं।

* *
*

[धारा iii]

15. शुद्धि के तेरह प्रकार के ज्ञान क्या हैं?

(1) अतीत (सांसों) के पीछे भागने वाली चेतना पर विकर्षण का आक्रमण होता है : उससे बचकर वह उसे एक स्थान पर केंद्रित कर लेता है, इस प्रकार चेतना विचलित नहीं होती।

(2) भविष्य की ओर देखने वाला ज्ञान [सांसें] अस्थिर होता है: [167] उससे बचकर वह वहीं उसकी रचना करता है, इस प्रकार भी ज्ञान विचलित नहीं होता।

(3) सुस्त संज्ञान पर आलस्य का आक्रमण होता है : इसका प्रयोग करके वह आलस्य का त्याग कर देता है, इस प्रकार संज्ञान भी विचलित नहीं होता।

(4) अतिशय प्रयत्नशील संज्ञान पर उत्तेजना का आक्रमण होता है : इस पर अंकुश लगाने से वह उत्तेजना त्याग देता है, इस प्रकार संज्ञान भी विचलित नहीं होता।

(5) मोहित संज्ञान पर लोभ का आक्रमण होता है : इसका पूर्णतः ज्ञान होने से वह लोभ का परित्याग कर देता है, इस प्रकार संज्ञान भी विचलित नहीं होता।

(6) विकर्षित संज्ञान पर द्वेष का आक्रमण होता है : इस बात का पूर्णतः ज्ञान होने से वह द्वेष का परित्याग कर देता है, इस प्रकार भी संज्ञान विचलित नहीं होता।

इन छह पहलुओं में ज्ञान शुद्ध और उज्ज्वल हो जाता है और एकता तक पहुँच जाता है।

16. ये एकताएं क्या हैं? ये हैं:

(7) उपहार त्यागने की इच्छा [देने की क्रिया में] स्थापित करने से जुड़ी एकता।

(8) शान्ति का चिन्ह स्थापित करने में निहित एकता [एकाग्रता में],

(9) पतन की विशेषता [अन्तर्दृष्टि में] स्थापित करने में निहित एकता,

(10) निरोध (पथ में) स्थापित करने में निहित एकता।

17. किसी तोहफ़े को छोड़ने की इच्छा को बनाने वाली एकता उन लोगों की होती है जो हार मानने पर अड़े होते हैं। शांति का निशान बनाने वाली एकता उन लोगों की होती है जो हायर कॉग्निजेंस के लिए समर्पित होते हैं। गिरने की खासियत को बनाने वाली एकता उन लोगों की होती है जो समझ की प्रैक्टिस करते हैं। खत्म होने वाली एकता नेक लोगों की होती है।

18. इन चारों मामलों में एकता पर सहमति बनी।

(11) मार्ग की शुद्धि में प्रवेश करता है," 7

(12) समभाव में तीव्र होता है,

(13) ज्ञान से सन्तुष्ट होता है.

*

19. पहले झाना की शुरुआत, बीच और अंत क्या है? पहले झाना की शुरुआत रास्ते की शुद्धि है, बीच में संतुलन बढ़ाना है और अंत में हिम्मत बढ़ाना है।

20. पहले झाना शुद्धि के रास्ते की शुरुआत है: शुरुआत की कितनी विशेषताएं हैं?

शुरुआत की तीन विशेषताएं हैं:

(i) संज्ञान उस [ज्ञान] की बाधाओं से शुद्ध हो गया है;

(ii) क्योंकि यह शुद्ध होता है, संज्ञान केन्द्रीय [संतुलन की स्थिति के लिए रास्ता बनाता है, जो शांति का संकेत है;

(iii) क्योंकि इसने रास्ता बना लिया है, संज्ञान उस अवस्था में प्रवेश करता है।

और उस ज्ञान में बाधाओं से शुद्धि होती है, और क्योंकि यह शुद्ध होती है, ज्ञान केंद्रीय [संतुलन की स्थिति, जो शांति का संकेत है, के लिए रास्ता बनाता है, और क्योंकि इसने रास्ता बना दिया है, ज्ञान उस स्थिति में प्रवेश करता है, [168] मार्ग की शुद्धि पहले झाना की शुरुआत है। ये शुरुआत की तीन विशेषताएं हैं। इसलिए यह कहा जाता है कि पहला झाना शुरुआत में अच्छा है, जिसमें [तीन] विशेषताएं होती हैं।

21. समत्व की प्रथम झुना तीव्रता का मध्य है: मध्य के कितने लक्षण हैं ?

बीच की तीन विशेषताएं हैं:

(iv) वह शुद्ध हो चुके ज्ञान को समभाव से देखता है;

(v) वह इसे शांति के लिए रास्ता बनाने के रूप में समभाव से देखता है;

(vi) वह एकता की स्थापना को समभाव से देखता है।

और इसमें कि वह [अब] शुद्ध हो चुकी समझ को शांति से देखता है और शांति के लिए रास्ता बनाने के रूप में उसे शांति से देखता है और एकता की स्थापना को शांति से देखता है, शांति का वह बढ़ना पहले झान का मध्य है। ये मध्य की तीन विशेषताएं हैं। इसलिए कहा जाता है कि पहला झान मध्य में अच्छा है, जिसमें [तीन] विशेषताएं होती हैं।

22. पहले झाना का प्रोत्साहन अंत है: अंत की कितनी विशेषताएं हैं?

अंत की चार विशेषताएं हैं:

(vii) इस अर्थ में प्रोत्साहन कि उसमें उत्पन्न विचारों की अधिकता नहीं थी;

(viii) इस अर्थ में प्रोत्साहन कि संकायों का एक ही कार्य (स्वाद) था;

(ix) इस अर्थ में प्रोत्साहन कि उपयुक्त ऊर्जा प्रभावी थी;

(x) पुनरावृत्ति के अर्थ में प्रोत्साहन;

प्रथम झाना के अन्त में प्रोत्साहन हैं। ये अन्त की चार विशेषताएँ हैं। इसलिए कहा जाता है कि अन्त में प्रथम झाना अच्छा है, जिसमें (चार) विशेषताएँ हैं।

23. जो ज्ञान त्रिगुण चक्र [आदि, मध्य तथा अंत] तक पहुँच गया है और तीनों प्रकार से अच्छा है तथा दस लक्षणों से युक्त है, उसमें [लागू विचार और निरंतर विचार तथा सुख, आनंद और स्थिरता के पाँच झाना कारक भी विद्यमान हैं]

[पांच क्षमताएं और शक्तियां] विश्वास, ऊर्जा, ध्यान,
एकाग्रता और समझ।
24. दूसरे ज्ञान की शुरुआत, बीच और अंत क्या है? दूसरे
ज्ञान की शुरुआत रास्ते की शुद्धि है, बीच में
संतुलन को बढ़ाना है और अंत में हिम्मत बढ़ाना है।
25.-28. दूसरे झाना की शुद्धि का तरीका शुरुआत है:
शुरुआत की कितनी खासियतें हैं?
शुरुआत में तीन हैं... [§§20 से 23 दोहराएँ, पहले झाना के स्थान पर दूसरा
झाना प्रतिस्थापित करें] [169]
29.-33. तीसरे झाना की शुरुआत, बीच और अंत क्या है?... [§
§19. से 23 तक दोहराएं]
34.-38. चौथे झान का आरंभ, मध्य और अंत क्या है?

...

39.-58. [चारों गैर-भौतिक उपलब्धियों में से हर एक के लिए वही पाँच
§§ दोहराएँ]...
59.-148. .. प्रिंसिपल में से हर एक के लिए वही पाँच §§ दोहराएँ
इनसाइट्स]... [18
149.-168. [170] .. रास्तों में से प्रत्येक के लिए समान पाँच §§ दोहराएँ]...
(चारों

*

[आरा की उपमा]

169. संकेत, भीतर की साँस, बाहर की साँस एक ही
ज्ञान का विषय नहीं हैं; इन
तीन विचारों को न जानने वाला विकास
प्राप्त नहीं कर सकता। [171] संकेत,
भीतर की साँस, बाहर की साँस एक ही ज्ञान
का विषय नहीं हैं; इन तीन
विचारों को भली-भाँति जानने वाला
विकास प्राप्त कर सकता है।

170. ऐसा कैसे होता है कि ये तीनों विचार किसी एक
ज्ञान का सहारा नहीं हैं, कि फिर भी वे अनजान नहीं
हैं, कि ज्ञान भटकता नहीं है, कि वह कोशिश करता है, कोई काम
करता है और एक खास असर हासिल करता है?

मान लीजिए कि एक पेड़ का तना ज़मीन के एक समतल हिस्से पर रखा है, और एक आदमी उसे आरी से काटता है। आदमी का ध्यान आरी के दांतों से तय होता है, जहाँ वे पेड़ के तने को छूते हैं, और वह आरी के दांतों पर ध्यान नहीं देता जब वे पास आते हैं और पीछे हटते हैं, हालाँकि वे पहचाने नहीं जाते हैं।

जब वे ऐसा करते हैं, तो वह कोशिश करता है, काम करता है और एक खास असर हासिल करता है।

जैसे पेड़ का तना ज़मीन के समतल हिस्से पर रखा हो, वैसे ही ध्यान लगाने का निशान है।" जैसे आरी के दांत, वैसे ही सांस अंदर लेना और बाहर छोड़ना। जैसे आदमी का ध्यान, आरी के दांतों से पेड़ के तने को छूते हुए, आरी के दांतों पर ध्यान दिए बिना, जब वे पास आते और पीछे जाते हैं, हालांकि ऐसा करते समय वह उन्हें पहचानता नहीं है, और इस तरह वह कोशिश करता है, काम करता है और एक खास असर पाता है, वैसे ही भिक्षु नाक की नोक या ऊपरी होंठ पर ध्यान लगाकर बैठता है, बिना अंदर आती और बाहर जाती सांसों पर ध्यान दिए, जब वे पास आते और पीछे जाती हैं, हालांकि ऐसा करते समय वह उन्हें पहचानता नहीं है, और वह कोशिश करता है, काम करता है और एक खास असर पाता है।

कोशिश क्या है? जो एनर्जी से भरा है, उसका शरीर और दिमाग दोनों ही काम करने लगते हैं: यही कोशिश है।

काम क्या है? जो एनर्जी से भरा होता है, उसमें कमियां आ जाती हैं, और उसके सोचे हुए विचार शांत हो जाते हैं: यही काम है।

इसका क्या असर होता है? जो एनर्जेटिक होता है, उसकी बेड़ियां छूट जाती हैं, और उसकी अंदरूनी आदतें खत्म हो जाती हैं: यही खास असर है।

अतः ये तीनों बातें किसी एक संज्ञान [172] की सहायक वस्तु नहीं हैं तथा फिर भी वे अपरिचित नहीं हैं तथा संज्ञान विचलित नहीं होता तथा वह प्रयत्न प्रकट करता है, कार्य करता है तथा विशिष्ट प्रभाव प्राप्त करता है।

*

171. जिसका सांस लेने और छोड़ने का
ध्यान एकदम सही, अच्छी तरह से
विकसित हो, और धीरे-धीरे बढ़े,
जैसा कि बुद्ध ने सिखाया
था, वही दुनिया को रोशन करता
है, जैसे बादलों से आज़ाद पूरा चांद। 9

172. सांस अंदर लेना (अना) अंदर लेना (अस्सा) है; सांस बाहर छोड़ना (अपान) बाहर छोड़ना (पस्सा) है। 10 अंदर सांस लेकर नींव बनाना माइंडफुलनेस है; बाहर सांस लेकर नींव बनाना माइंडफुलनेस है। जब वह सांस अंदर लेता है तो वह उसमें स्थापित हो जाती है; जब वह सांस बाहर छोड़ता है तो वह उसमें स्थापित हो जाती है।

173. परफेक्ट: (ज्ञान, समझ और रास्ता) को अपनाने के मतलब में परफेक्ट; (इससे जुड़े सभी विचारों के आपसी) सामान के मतलब में परफेक्ट; परफेक्शन के मतलब में परफेक्ट।

174. अच्छी तरह से विकसित: विकास चार तरह का होता है:

(i) उसमें उत्पन्न होने वाले विचारों की अधिकता न होने के अर्थ में विकास,

(ii) संकायों के एकल कार्य (स्वाद) की भावना में विकास (i 135),

(üi) सही एनर्जी के असर के मतलब में विकास,

(iv) पुनरावृत्ति के अर्थ में विकास।

उसमें ये चार तरह के विकास होते हैं - गाड़ी, ज़मीन, मज़बूती, मज़बूती और एक जैसापन।

'गाड़ी बनाई': वह जहाँ चाहे वहाँ महारत, ताकत और भरोसा रख सकता है, वे विचार [शांति और समझ के] उसके कहने के लिए तैयार हैं, उसकी इच्छा के लिए तैयार हैं, उसके ध्यान के लिए तैयार हैं, उसकी समझ के लिए तैयार हैं। इसलिए 'गाड़ी बनाई' कहा गया।

'ज़मीन बनाई': उसकी सोच उस आधार पर अच्छी तरह से स्थापित (स्थापित) है जिस पर उसकी समझ अच्छी तरह से स्थापित (स्थापित) है। उसकी समझ उस आधार पर अच्छी तरह से स्थापित (स्थापित) है जिस पर उसकी सोच अच्छी तरह से स्थापित (स्थापित) है। इसलिए 'ज़मीन बनाई' कहा गया।

'कंसोलिडेटेड': उसकी माइंडफुलनेस का उसके कॉन्शियसनेस पर जो भी असर होता है, उसके साथ पैरेलल टर्न-ओवर होता है। वह अपनी माइंडफुलनेस का उसके पैरेलल टर्न-ओवर के हिसाब से गाइड करता है। इसलिए 'कंसोलिडेटेड' कहा गया।

'प्रबलित' : गले लगाने के अर्थ में प्रबलित, उपकरण के अर्थ में प्रबलित, पूर्णता के अर्थ में प्रबलित। जब वह सावधानी से गले लगाता है, तो वह [173] बुरे, लाभहीन विचारों पर विजय प्राप्त करता है। इसलिए 'प्रबलित' कहा गया।

'एक जैसा होना' (सुसमारद्धा); एक जैसा होना चार तरह का होता है: एक जैसा होना, यानी उसमें ज़्यादा विचार न आना, यानी शक्तियों का एक ही काम (स्वाद) होना, यानी सही एनर्जी का असर होना, यानी उससे उलटी बुराइयों का सच में खत्म होना (सुसमुघ्घत्ता)।

'बहुत एक जैसापन' (सुसमाम):1" एक जैसापन (समम) और बहुत एक जैसापन (सुसमाम) होता है। एक जैसापन क्या है? ऐसे विचार उठते हैं जो बेदाग होते हैं और ज्ञान का हिस्सा होते हैं: यह एक जैसापन है। बहुत एक जैसापन क्या है? ऐसे विचारों के लिए सपोर्टिंग ऑब्जेक्ट, यानी, समाप्ति, निब्बान: यह बहुत एक जैसापन है। यह एक जैसापन और यह बहुत एक जैसापन जाना जाता है, देखा जाता है, पहचाना जाता है, महसूस किया जाता है, समझ के साथ सुना जाता है; बिना थके एनर्जी लगाई जाती है (आराध), स्थापित (फाउंडेड) माइंडफुलनेस लगातार रहती है, शांत शरीर कोई परेशानी नहीं लाता (असारद्धो), एकाग्र ज्ञान एक हो जाता है। इसलिए 'बहुत एक जैसापन' (सुसमारद्ध) कहा गया।

175. धीरे-धीरे वृद्धि में लाया गया: पहले वृद्धि के लिए तैयार किया गया और बाद में लंबी सांस द्वारा वृद्धि में लाया गया, पहले से तैयार

विकास और बाद में लंबी बाहरी सांस द्वारा विकास में लाया . . . [और जाता है, इसी तरह बाकी 32 तरीकों के साथ, नीचे 183 देखें, तक]... पहले से विकास के लिए तैयार किया गया और बाद में बाहरी सांस द्वारा चिंतन त्याग द्वारा विकास में लाया गया। साथ ही सांस लेने की जागरूकता की सभी किस्मों को इसके सोलह आधारों के साथ विकास के लिए तैयार किया जाता है और अन्योन्याश्रित रूप से विकास के लिए लाया जाता है। इसलिए 'धीरे-धीरे विकास में लाया गया' कहा गया था। 176. अनुसार: 'के अनुसार' के दस अर्थ हैं, अर्थात्, 'के अनुसार' का अर्थ आत्म-नियंत्रण के रूप में, 'के अनुसार' का अर्थ स्वयं में शांति के रूप में, ... स्वयं में बुझाने के अर्थ के रूप . . . में ... प्रत्यक्ष-ज्ञान के अर्थ के रूप में, ... पूर्ण-समझ के अर्थ के रूप में, त्याग के अर्थ के रूप में, विकसित होने के अर्थ के रूप में, ... [174] साकार करने के अर्थ के रूप में, ... 177. बुद्ध (ज्ञान प्राप्त व्यक्ति): वह जो धन्य है, जो स्वयं वही है, बिना किसी गुरु के उन विचारों में जो पहले नहीं सुने गए, 12 जिन्होंने स्वयं ही वास्तविकताओं की खोज की (अभिसम्बुज्जति), उनमें सर्वज्ञ ज्ञान और शक्तियों और महारत तक पहुँचे।

बुद्धः किस मायने में बुद्ध? वे असलियत के खोजकर्ता (बुज्जितर) हैं, इसलिए वे ज्ञानी (बुद्ध) हैं। वे पीढ़ी को जगाने वाले (बोधेतर) हैं, इसलिए वे ज्ञानी हैं। वे सब कुछ जानने से ज्ञानी हैं, सब कुछ देखकर ज्ञानी हैं, दूसरों की सीख पर निर्भर हुए बिना ज्ञानी हैं, शान[13] की वजह से ज्ञानी हैं, वे नासूर खत्म होने की खूबी से ज्ञानी हैं, होने की ज़रूरी चीज़ों से आज़ाद होने की खूबी से ज्ञानी हैं। वे लालच से पूरी तरह मुक्त हैं, इसलिए वे ज्ञानी हैं; वे नफ़रत से पूरी तरह मुक्त हैं, इसलिए वे ज्ञानी हैं; वे भ्रम से पूरी तरह मुक्त हैं, इसलिए वे ज्ञानी हैं; वे गंदगी से पूरी तरह मुक्त हैं, इसलिए वे ज्ञानी हैं; उन्होंने उस रास्ते पर यात्रा की है जो सिर्फ़ एक ही तरफ जाता है, इसलिए वे ज्ञानी हैं; उन्होंने अकेले ही बेमिसाल पूरे ज्ञान को खोजा है, इसलिए वे ज्ञानी हैं। वे ज्ञानी हैं क्योंकि उन्होंने ज्ञान की कमी को खत्म किया है और ज्ञान पाया है।

बुद्धः यह नाम किसी माँ का बनाया हुआ, किसी पिता का बनाया हुआ, किसी भाई का बनाया हुआ, किसी बहन का बनाया हुआ, किसी दोस्त या साथी का बनाया हुआ, किसी रिश्तेदार या सम्बन्धी का बनाया हुआ, किसी साधु या ब्राह्मण का बनाया हुआ, किसी देवता का बनाया हुआ नहीं है: यह नाम ज्ञानी लोगों, धन्य लोगों की आखिरी मुक्ति से (मिला है), साथ ही ज्ञान के पेड़ की जड़ में सब कुछ जानने वाला ज्ञान मिलने से, यह नाम 'ज्ञानी (बुद्ध)' एहसास पर आधारित एक जानकारी (कॉन्सेप्ट) है।

178. सिखाया: जैसा बुद्ध ने सिखाया, 'जैसा मानना' का मतलब है सेल्फ कंट्रोल। जैसा बुद्ध ने सिखाया, 'जैसा मानना' का मतलब है खुद में शांति... [और इसी तरह §176 तक]... जैसा बुद्ध ने सिखाया, 'जैसा मानना' का मतलब है खुद में शांति...

'के अनुसार' का अर्थ समाप्ति में स्थापित होना है।
179. वह: वह एक आम आदमी है या बेघर हो गया है।
180. World: एग्रीगेट्स की दुनिया, [रिपीट Tr. 1 $580 तक]
अठारह दुनियाएँ: अठारह तत्व।
181. प्रकाशित करता है: 'आत्म-नियंत्रण का अर्थ होने के अनुसार' का अर्थ खोज लेने के बाद, [175] वह इस संसार को प्रकाशित करने वाला, प्रकाशमान प्रकाशमान प्रकाशमान है। स्वयं में शांति का अर्थ होने के रूप में 'अनुसार' का अर्थ खोज लेने के बाद... [और इसी तरह §176 तक)... समाप्ति में स्थापना का अर्थ होने के रूप में 'अनुसार' का अर्थ खोज लेने के बाद, वह इस संसार को प्रकाशित करने वाला, प्रकाशमान प्रकाशमान प्रकाशमान प्रकाशमान है।
182. जैसे बादलों से मुक्त पूर्णिमा का चाँद: बुराइयाँ बादलों की तरह होती हैं, सज्जनों का ज्ञान चाँद की तरह होता है। भिक्षु उस देवता के बेटे की तरह होता है जिसके पास पूरा चाँद होता है। जैसे चाँद बादलों से मुक्त होने पर, धुंध से मुक्त होने पर, धुएँ और धूल से मुक्त होने पर, ग्रहण-राक्षस राहु के चंगुल से मुक्त होने पर चमकता है, चमकता है और चमकता है, वैसे ही भिक्षु जो सभी बुराइयों से मुक्त हो जाता है, चमकता है, चमकता है और चमकता है। इसलिए 'जैसे बादलों से मुक्त पूर्णिमा का चाँद' कहा गया।

ये शुद्धि के तेरह प्रकार के ज्ञान हैं।

पाठ अनुभाग का अंत

* *
*

[धारा 4]

183. सचेतन कार्यकर्ताओं में 32 प्रकार के ज्ञान कौन से हैं?

[सुत्त सारांश: 4 टेट्राड, 16 बेस, 32 मोड]

यहाँ एक भिक्षु जंगल में या किसी पेड़ की जड़ के पास या किसी खाली जगह पर जाकर बैठ जाता है, अपने पैरों को आड़े-तिरछे मोड़ लेता है, अपना शरीर सीधा रखता है, अपने सामने ध्यान रखता है, हमेशा ध्यान रखता है कि वह साँस अंदर ले रहा है या बाहर।

(1) लंबी सांस लेते हुए, वह जानता है 'मैं लंबी सांस लेता हूं'; (2) या लंबी सांस छोड़ते हुए, वह जानता है 'मैं लंबी सांस छोड़ता हूं'। (3) छोटी सांस लेते हुए, वह जानता है 'मैं छोटी सांस लेता हूं'; (4) या छोटी सांस छोड़ते हुए, वह जानता है 'मैं छोटी सांस छोड़ता हूं'। (5) वह इस तरह ट्रेनिंग करता है 'मैं पूरे शरीर [सांसों से] परिचित होकर सांस लूंगा' (6) वह इस तरह ट्रेनिंग करता है 'मैं पूरे शरीर (सांसों से) परिचित होकर सांस छोड़ूंगा'। (7) वह इस तरह ट्रेनिंग करता है 'मैं शरीर की बनावट को शांत करते हुए सांस लूंगा', (8) वह इस तरह ट्रेनिंग करता है 'मैं शरीर की बनावट को शांत करते हुए सांस छोड़ूंगा'।

(9) वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं खुशी से सांस लूंगा'; (10) वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं खुशी से सांस लूंगा'। (11) वह

इस प्रकार प्रशिक्षण देता है 'मैं आनंद के साथ परिचित होकर सांस अंदर लूंगा'; (12) वह इस प्रकार प्रशिक्षण देता है 'मैं आनंद के साथ परिचित होकर सांस बाहर छोड़ूंगा'। (13) वह इस प्रकार प्रशिक्षण देता है [176] 'मैं संज्ञान गठन से परिचित होकर सांस अंदर लूंगा'; (14) वह इस प्रकार प्रशिक्षण देता है 'मैं संज्ञान गठन से परिचित होकर सांस बाहर छोड़ूंगा'। (15) वह इस प्रकार प्रशिक्षण देता है 'मैं संज्ञान गठन को शांत करते हुए सांस अंदर लूंगा'; (16) वह इस प्रकार प्रशिक्षण देता है 'मैं संज्ञान गठन को शांत करते हुए सांस बाहर छोड़ूंगा'।

(17) वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं कॉग्निजेंस से परिचित होकर सांस लूंगा'; (18) वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं कॉग्निजेंस से परिचित होकर सांस लूंगा'। (19) वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं खुशी देने वाले कॉग्निजेंस में सांस लूंगा'; (20) वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं खुशी देने वाले कॉग्निजेंस में सांस लूंगा'। (21) वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं कंसंट्रेटिंग कॉग्निजेंस में सांस लूंगा'; (22) वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं कंसंट्रेटिंग कॉग्निजेंस में सांस लूंगा'। (23) वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं लिबरेटिंग कॉग्निजेंस में सांस लूंगा'; (24) वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं लिबरेटिंग कॉग्निजेंस में सांस लूंगा'।

(25) वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं नश्वरता के बारे में सोचते हुए सांस लूंगा'; (26) वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं नश्वरता के बारे में सोचते हुए सांस लूंगा'। (27) वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं मिटते हुए सोचते हुए सांस लूंगा'; (28 वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं मिटते हुए सोचते हुए सांस लूंगा'। (29) वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं खत्म होने के बारे में सोचते हुए सांस लूंगा'; (30) वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं खत्म होने के बारे में सोचते हुए सांस लूंगा'। (31) वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं छोड़ने के बारे में सोचते हुए सांस लूंगा'; (32) वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं छोड़ने के बारे में सोचते हुए सांस लूंगा'। (Vin iii 70f; M iii 83; S v 311f.; A v 111)

*

[परिचयात्मक पैराग्राफ़ पर टिप्पणी]

184. यहाँ: इस नज़रिए में, इस चुनाव में, इस पसंद में, इस चुनाव में, इस सच्चे विचार में, इस अनुशासन (विनय) में, सच्चे विचार और अनुशासन के इस क्षेत्र में, इस सिद्धांत में, इस अच्छे जीवन में, इस गुरु की व्यवस्था में। इसलिए 'यहाँ' कहा गया है।

185. भिक्षु : भिक्षु एक उदार साधारण व्यक्ति, दीक्षित या अरहंत होता है जो अपराजेय विचार तक पहुँच गया है।

186. जंगल: बाउंड्री पोस्ट के बाहर जाने के बाद, वह सब जंगल है। 187. पेड़ की जड़: जहाँ भिक्षु का आसन तैयार किया जाता है, या उसका बिस्तर या उसकी कुर्सी या उसका गद्दा या उसकी चटाई या उसकी खाल का टुकड़ा या उसकी घास का बिछावन या उसके पत्तों का बिछावन, या उसका पुआल का बिछावन, वहाँ वह चलता है या खड़ा होता है या बैठता है या लेटता है।

188. खाली: आम लोगों या बेघर लोगों का आना-जाना बंद।

189. स्थान: निवास, झोपड़ी, हवेली, विला, गुफा।

190. बैठ जाता है; अपने पैर आड़े मोड़कर: वह अपने पैर आड़े मोड़कर बैठा है।

191. उसका शरीर सीधा रखें: उसका शरीर सीधा, [दृढ़ता से] रखा हुआ, ठीक तरह से स्थित है।

192. उनके सामने ध्यान लगाना (परिमुखर्प सतिं उपत्थपेतवा): परि का मतलब है गले लगाना; मुखम् (मतलब मुंह) का मतलब है बाहर निकलना; सति (ध्यान लगाना) का मतलब है स्थापना (नींव)। इसलिए 'परिमुखम् सतिं उपत्थपेतवा (उनके सामने ध्यान लगाना)' कहा गया है। 14

193. सदैव सचेत होकर वह साँस लेता है, सचेत होकर वह साँस छोड़ता है: [177] वह बत्तीस पहलुओं में एक सचेत कार्यकर्ता है:

(1) जब वह लंबी सांस लेने के ज़रिए ज्ञान और ध्यान न भटकने की एकता को जान लेता है, तो उसमें ध्यान स्थापित हो जाता है; उस ध्यान और उस ज्ञान के ज़रिए वह एक ध्यानपूर्ण कार्यकर्ता बन जाता है।
(2) जब वह लंबी सांस छोड़कर ध्यान और ध्यान न भटकने की एकता जान लेता है, (32) जब वह छोड़ने के बारे में सोचते हुए सांस छोड़कर ध्यान और ध्यान न भटकने की एकता जान लेता है, तो उसमें ध्यान स्थापित हो जाता है; उस ध्यान और उस ज्ञान के ज़रिए वह एक ध्यान लगाने वाला काम करने वाला बन जाता है।

(मैं)

194. ऐसा कैसे है कि (1) लंबी साँस अंदर लेते हुए वह जानता है कि मैं लंबी साँस अंदर लेता हूँ'; (2) लंबी साँस बाहर छोड़ते हुए वह जानता है कि मैं लंबी साँस बाहर छोड़ता हूँ'?

[चिंतन की वस्तु के ज्ञान का विश्लेषण]

195. (a) वह सीमा के अनुसार लंबी सांस अंदर लेता है। (b) वह सीमा के अनुसार लंबी सांस बाहर छोड़ता है। (c) वह सीमा के अनुसार लंबी सांस अंदर और बाहर छोड़ता है। जैसे ही वह सीमा के अनुसार लंबी सांस अंदर और बाहर छोड़ता है, उत्साह पैदा होता है। (d) उत्साह के माध्यम से वह सीमा के अनुसार पहले की तुलना में अधिक सूक्ष्म लंबी सांस अंदर लेता है। (e) उत्साह के माध्यम से वह सीमा के अनुसार पहले की तुलना में अधिक सूक्ष्म लंबी सांस बाहर छोड़ता है। (f) उत्साह के माध्यम से वह सीमा के अनुसार पहले की तुलना में अधिक सूक्ष्म लंबी सांस अंदर और बाहर छोड़ता है। जैसे ही उत्साह के माध्यम से वह सीमा के अनुसार पहले की तुलना में अधिक सूक्ष्म लंबी सांस अंदर और बाहर छोड़ता है, खुशी पैदा होती है। (g) खुशी से वह एक लंबी सांस अंदर लेता है जो पहले से ज़्यादा बारीक होती है। (h) खुशी से वह एक लंबी सांस बाहर छोड़ता है जो पहले से ज़्यादा बारीक होती है। (i) खुशी से वह लंबी सांस अंदर लेता है और बाहर छोड़ता है।

अंदर और बाहर की सांसें पहले से ज़्यादा सूक्ष्म हो जाती हैं, जब उन्हें सीमा के हिसाब से देखा जाता है। जैसे ही वह खुशी से सांस लेता है और लंबी सांसें लेता है, जो पहले से ज़्यादा सूक्ष्म होती हैं, उसकी समझ लंबी अंदर और बाहर की सांसों से हट जाती है, और संतुलन स्थापित होता है। 15

[माइंडफुलनेस की नींव]

196. इन नौ पहलुओं में लंबी सांसें अंदर लेना और बाहर छोड़ना शरीर है। 16 स्थापना (नींव) माइंडफुलनेस है। चिंतन ज्ञान है। शरीर स्थापना (नींव) है, लेकिन यह माइंडफुलनेस नहीं है। माइंडफुलनेस स्थापना (नींव) और माइंडफुलनेस दोनों है। उस माइंडफुलनेस और उस ज्ञान के ज़रिए वह उस शरीर का चिंतन करता है। इसलिए 'शरीर को शरीर के रूप में चिंतन करने में माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) का विकास'17 कहा गया है। [178]

197. वह चिंतन करता है: 18 वह उस शरीर का चिंतन कैसे करता है? वह उसका चिंतन अनित्य के रूप में करता है, स्थाई नहीं; कष्टदायक के रूप में करता है, सुखदायक नहीं; अनात्मा के रूप में करता है, आत्मा के रूप में नहीं; वह वैराग्यवान हो जाता है, आनंदित नहीं होता; वह लोभ को क्षीण करता है, उसे भड़काता नहीं; वह निरोध करता है, उत्पन्न नहीं; वह त्याग करता है, ग्रहण नहीं करता। जब वह अनित्य के रूप में चिंतन करता है तो वह स्थायित्व की धारणा को त्याग देता है, जब वह कष्टदायक के रूप में चिंतन करता है तो वह सुख की धारणा को त्याग देता है, जब वह अनात्मा के रूप में चिंतन करता है तो वह आत्मा की धारणा को त्याग देता है, जब वह वैराग्यवान हो जाता है तो वह आनंद को त्याग देता है, जब उसका लोभ क्षीण होता है तो वह लोभ को त्याग देता है, जब वह निरोध करता है तो वह उत्पन्न होना छोड़ देता है, जब वह त्याग करता है तो वह ग्रहण करना छोड़ देता है। इस प्रकार वह शरीर का चिंतन करता है।

198. डेवलपमेंट: डेवलपमेंट चार तरह का होता है: डेवलपमेंट जिसमें ज़्यादा आइडिया न बनें, डेवलपमेंट जिसमें काबिलियत के एक काम (टेस्ट) का मतलब हो, डेवलपमेंट जिसमें सही एनर्जी का असर हो, और डेवलपमेंट जिसमें दोहराव हो।

[माइंडफुलनेस और फुल-अवेयरनेस का अभ्यास] 19

199. जब वह लंबी सांसों और लंबी सांसों के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने की एकता को समझ लेता है, तो उसकी भावनाएं जैसे उठती हैं, जैसे दिखती हैं (स्थापित होती हैं), जैसे कम होती हैं, पहचानी जाती हैं; उसकी समझ जैसे उठती हैं, जैसे दिखती हैं (स्थापित होती हैं), जैसे कम होती हैं, पहचानी जाती हैं; उसके सोचे हुए विचार जैसे उठते हैं, जैसे दिखते हैं (स्थापित होते हैं), जैसे कम होते हैं, पहचाने जाते हैं।

200. भावनाओं को उठते हुए, आते हुए, खत्म होते हुए कैसे पहचाना जाता है? भावनाओं के उठने को कैसे पहचाना जाता है?

भावना का उत्पन्न होना, शर्तबद्ध उत्पत्ति के अर्थ में इस प्रकार पहचाना जाता है: अज्ञान के उत्पन्न होने से भावना उत्पन्न होती है। भावना का उत्पन्न होना शर्तबद्ध उत्पत्ति के अर्थ में इस प्रकार पहचाना जाता है: लालसा के उत्पन्न होने से भावना उत्पन्न होती है... क्रिया के उत्पन्न होने से भावना उत्पन्न होती है। भावना का उत्पन्न होना शर्तबद्ध उत्पत्ति के अर्थ में इस प्रकार पहचाना जाता है: संपर्क के उत्पन्न होने से भावना उत्पन्न होती है। साथ ही जब वह उत्पत्ति की विशेषता देखता है, तो उसने भावना के उत्पन्न होने को पहचान लिया है। इस तरह से भावना का उत्पन्न होना पहचाना जाता है।

भावना का रूप (स्थापना) कैसे पहचाना जाता है? जब वह भावना को कुछ समय के लिए होने वाली चीज़ मानकर उस पर ध्यान देता है, तो वह थकावट (स्थापना) के रूप में पहचानी जाती है; जब वह उसे दर्द के रूप में देखता है, तो वह डर (स्थापना) के रूप में पहचानी जाती है; जब वह उसे खुद न होने के रूप में देखता है, तो वह खालीपन (स्थापना) के रूप में पहचानी जाती है। इस तरह भावना का रूप पहचाना जाता है।

भावना का शांत होना कैसे पहचाना जाता है? भावना का शांत होना सशर्त समाप्ति के अर्थ में पहचाना जाता है: अज्ञान की समाप्ति के साथ भावना का अंत हो जाता है। भावना का शांत होना सशर्त समाप्ति के अर्थ में इस प्रकार पहचाना जाता है: लालसा की समाप्ति के साथ भावना का अंत हो जाता है... [179] क्रिया की समाप्ति के साथ भावना का अंत हो जाता है... भावना का शांत होना सशर्त 'निरोध' के अर्थ में इस प्रकार पहचाना जाता है: संपर्क की समाप्ति के साथ भावना का अंत हो जाता है। साथ ही जब वह बदलाव की विशेषता को देखता है तो उसने भावना के शांत होने को पहचान लिया है। इस तरह भावना का शांत होना पहचाना जाता है।

इस तरह भावनाओं को उनके उत्पन्न होते ही पहचाना जाता है, उनके प्रकट होते ही पहचाना जाता है, और उनके समाप्त होते ही पहचाना जाता है।

201. धारणाएं कैसे पहचानी जाती हैं जैसे वे उत्पन्न होती हैं, जैसे वे प्रकट होती हैं, जैसे वे समाप्त होती हैं?

समझ का पैदा होना कैसे पहचाना जाता है? समझ का पैदा होना, कंडीशन्ड पैदा होने के अर्थ में इस तरह पहचाना जाता है: अज्ञान के पैदा होने के साथ समझ का पैदा होना होता है... लालसा के पैदा होने के साथ। संपर्क के साथ... (और इसी तरह धारा 200 के अंत तक)।

202. लागू विचारों को कैसे पहचाना जाता है जैसे वे उठते हैं, जैसे वे प्रकट होते हैं, जैसे वे समाप्त होते हैं?

सोचे हुए विचारों के आने को कैसे पहचाना जाता है? सोचे हुए विचारों के आने को इस तरह पहचाना जाता है: अज्ञानता के आने पर सोचे हुए विचार आते हैं... लालसा के आने पर। कर्म के आने पर...

धारणा का उदय... [और इसी तरह §200 में, अंत तक संपर्क के लिए धारणा को प्रतिस्थापित करना]... [180]20

इस तरह से लागू विचारों को पहचाना जाता है जैसे वे उठते हैं, पहचाने जाते हैं जैसे वे दिखाई देते हैं, और पहचाने जाते हैं जैसे वे शांत हो जाते हैं।

[संकायों का संयोजन, आदि]

203. जब वह लंबी सांसों के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने की एकता को समझता है, तो वह काबिलियत को जोड़ता है, उनके दायरे को समझता है, और उनके एक होने के मतलब को समझता है; वह ताकतों को जोड़ता है...; वह ज्ञान के कारणों को जोड़ता है...; वह रास्ते को जोड़ता है...;" वह [दूसरे] विचारों को जोड़ता है, उनके दायरे को समझता है, और उनके एक होने के मतलब को समझता है।

204. वह काबिलियत को जोड़ता है: वह काबिलियत को कैसे जोड़ता है? वह विश्वास की काबिलियत को उसके संकल्प के मतलब से जोड़ता है, वह ऊर्जा की काबिलियत को उसके प्रयास के मतलब से जोड़ता है, वह माइंडफुलनेस की काबिलियत को उसके स्थापना (नींव) के मतलब से जोड़ता है, वह एकाग्रता की काबिलियत को उसके ध्यान न भटकने के मतलब से जोड़ता है, वह समझने की काबिलियत को उसके देखने के मतलब से जोड़ता है। यह व्यक्ति इस चीज़ पर इन क्षमताओं को जोड़ता है। इसलिए 'वह क्षमताओं को जोड़ता है' कहा जाता है।

205. वह उनके डोमेन को समझता है: उसका सपोर्टिंग-ऑब्जेक्ट उसका डोमेन है; उसका डोमेन उसका सपोर्टिंग-ऑब्जेक्ट है। वह समझता है, इसलिए वह एक व्यक्ति है; समझने का काम ही समझना है।22

एक जैसा होना: सपोर्टिंग-ऑब्जेक्ट का दिखना एक जैसा होना है, पहचान का ध्यान न भटकना एक जैसा होना है, पहचान की सफाई एक जैसा होना है।

अर्थः निर्दोष के रूप में अर्थ, अपवित्रता से रहित के रूप में अर्थ, शुद्ध करने वाला के रूप में अर्थ, परम अर्थ।

घुसता है: वह सहारा देने वाली चीज़ के दिखने (स्थापना) में घुसता है, वह ज्ञान के भटकाव न होने के मतलब में घुसता है, वह ज्ञान की स्थिरता के मतलब में घुसता है, वह ज्ञान की सफ़ाई के मतलब में घुसता है। इसलिए 'एक जैसा होने के मतलब में घुसता है' कहा गया है।

206. वह शक्तियों को जोड़ता है: वह शक्तियों को कैसे जोड़ता है? वह विश्वास की शक्ति को उसके अटल होने के मतलब से अविश्वास से जोड़ता है। वह ऊर्जा की शक्ति को उसके अटल होने के मतलब से आलस्य से जोड़ता है। वह ध्यान की शक्ति को उसके अटल होने के मतलब से लापरवाही से जोड़ता है। वह एकाग्रता की शक्ति को उसके अटल होने के मतलब से बेचैनी से जोड़ता है। वह समझ की शक्ति को उसके अटल होने के मतलब से अज्ञानता से जोड़ता है। यह व्यक्ति इन शक्तियों को इस चीज़ पर जोड़ता है। इसलिए 'वह शक्तियों को जोड़ता है' कहा जाता है।

207. वह उनके डोमेन को समझता है... [आदि जैसा कि धारा 205 के अंत में है]। [181]

208. वह ज्ञान के फैक्टर्स को मिलाता है: वह ज्ञान के फैक्टर्स को कैसे मिलाता है? वह माइंडफुलनेस ज्ञान के फैक्टर को उसके स्थापना (फाउंडेशन) के मतलब से मिलाता है। वह विचारों की जांच के ज्ञान के फैक्टर को उसके जांच-पड़ताल के मतलब से मिलाता है। वह एनर्जी ज्ञान के फैक्टर को उसके प्रयास के मतलब से मिलाता है। वह खुशी के ज्ञान के फैक्टर को उसके ध्यान के मतलब से मिलाता है। वह शांति के मतलब से शांति के ज्ञान के फैक्टर को मिलाता है। वह एकाग्रता के ज्ञान के फैक्टर को उसके ध्यान भटकाने के मतलब से मिलाता है। वह समता के ज्ञान के फैक्टर को उसके रिफ्लेक्शन के मतलब से मिलाता है। यह व्यक्ति इन ज्ञान के फैक्टर्स को इस चीज़ पर मिलाता है। इसलिए 'वह ज्ञान के फैक्टर्स को मिलाता है' कहा जाता है।

209. वह अपने डोमेन को समझता है:. (वगैरह, जैसा कि § §205 में आखिर तक है).

210. वह रास्ते को जोड़ता है: वह रास्ते को कैसे जोड़ता है? वह देखने के मतलब से सही नज़रिए को जोड़ता है। वह निर्देश देने के मतलब से सही सोच को जोड़ता है। वह गले लगाने के मतलब से सही बोलने को जोड़ता है। वह शुरू करने के मतलब से सही काम करने को जोड़ता है। वह सफाई के मतलब से सही जीने को जोड़ता है। वह मेहनत के मतलब से सही कोशिश को जोड़ता है। वह नींव बनाने के मतलब से सही ध्यान को जोड़ता है। वह ध्यान न भटकने के मतलब से सही एकाग्रता को जोड़ता है। यह व्यक्ति इस रास्ते को इस चीज़ पर जोड़ता है। इसलिए 'वह रास्ते को जोड़ता है' कहा जाता है।

211. वह इसके डोमेन को समझता है... [आदि, जैसा कि धारा 205 के अंत तक है]।

212. वह [दूसरे] आइडिया को मिलाता है: वह [दूसरे] आइडिया को कैसे मिलाता है? वह ताकतों को उनके दबदबे के मतलब से मिलाता है। वह ताकतों को उनके अडिग रहने के मतलब से मिलाता है। वह ज्ञान के फैक्टर्स को उनके आउटलेट के मतलब से मिलाता है। वह रास्ते को उसके कारण के मतलब से मिलाता है। वह माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) को उनके स्थापना (फाउंडेशन) के मतलब से मिलाता है। वह सही कोशिशों को उनके मेहनत के मतलब से मिलाता है। वह सफलता के आधारों (ताकत के रास्ते) को उनके सफल होने के मतलब से मिलाता है। वह असलियतों को उनके सच होने (रियलिटी) के मतलब से मिलाता है।

213. वह शांति को उसके ध्यान भटकने न देने के मतलब से जोड़ता है। वह समझ को उसके सोचने के मतलब से जोड़ता है। वह शांति और समझ को उनके एक ही काम (स्वाद) के मतलब से जोड़ता है। वह साथ रहने को उसके ज़्यादा न होने के मतलब से जोड़ता है।

214. वह संयम के अर्थ के माध्यम से सद्गुण की शुद्धि को जोड़ता है।

वह गैर-विचलित होने के अर्थ के माध्यम से संज्ञान की शुद्धि को जोड़ता है। वह देखने के अर्थ के माध्यम से दृष्टि की शुद्धि को जोड़ता है। वह उद्धार के अर्थ के माध्यम से मुक्ति को जोड़ता है। [182] वह प्रवेश के अर्थ के माध्यम से मान्यता को जोड़ता है। वह त्याग के अर्थ के माध्यम से मुक्ति को जोड़ता है। वह काट देने के अर्थ के माध्यम से थकावट के ज्ञान को जोड़ता है। वह गैर-उत्पन्न होने के ज्ञान को शांति के अर्थ में जोड़ता है।

215. जोश को वह जड़ के मतलब से जोड़ता है। ध्यान को वह शुरू होने के मतलब से जोड़ता है। संपर्क को वह मिलाने के मतलब से जोड़ता है। एहसास को वह मिलने के मतलब से जोड़ता है। एकाग्रता को वह सबसे आगे होने के मतलब से जोड़ता है। दिमागीपन को वह हावी होने के मतलब से जोड़ता है। समझ को वह सबसे ऊपर होने के मतलब से जोड़ता है। मुक्ति को वह मूल के मतलब से जोड़ता है। निब्बान, जो अमर में मिल जाता है, उसे वह अंत के मतलब से जोड़ता है। यह व्यक्ति इन विचारों को इस चीज़ पर जोड़ता है। इसलिए 'वह [दूसरे] विचारों को जोड़ता है' कहा जाता है।

216. वह उनके डोमेन को समझता है:... [आदि, जैसा कि §§ 106-7 में अंत तक है]।

(ii)

217. ऐसा कैसे है कि (3) छोटी साँस लेते हुए वह जानता है कि 'मैं छोटी साँस लेता हूँ'; (4) छोटी साँस छोड़ते हुए वह जानता है कि 'मैं छोटी साँस लेता हूँ'?

[चिंतन की वस्तु का विश्लेषण]

218. (a) वह छोटी सांस अंदर लेता है, जिसे छोटा माना जाता है। (b) वह छोटी सांस बाहर छोड़ता है, जिसे छोटा माना जाता है। (c) वह छोटी सांस अंदर और बाहर छोड़ता है, जिसे छोटा माना जाता है। जैसे ही वह छोटी सांस अंदर और बाहर छोड़ता है, जिसे छोटा माना जाता है, जोश पैदा होता है। (d) जोश के ज़रिए वह पहले से ज़्यादा हल्की छोटी सांस अंदर लेता है, जिसे छोटा माना जाता है। (e)... [और इसी तरह §195 में आखिर तक, लंबे की जगह छोटा और विस्तार की जगह छोटा इस्तेमाल करते हुए]।

[माइंडफुलनेस की नींव]

219. इन नौ पहलुओं में छोटी-छोटी साँसें अंदर लेना और बाहर छोड़ना एक शरीर है। स्थापना (नींव) मनन है। चिंतन ज्ञान है। शरीर स्थापना (नींव) है, लेकिन यह मनन नहीं है। मनन स्थापना (नींव) [183] और मनन दोनों है। उस मनन और उस ज्ञान के माध्यम से वह उस शरीर का चिंतन करता है। इसलिए 'शरीर के रूप में शरीर के चिंतन में मनन की नींव (स्थापना) का विकास' कहा गया है।

220. वह चिंतन करता है: . . . [दोहराएँ §197]।
221. विकास: [दोहराएँ §198]।

[माइंडफुलनेस और फुल-अवेयरनेस की एक्सरसाइज़]

222-5. जब वह छोटी सांसों और बाहर सांसों के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से एक होने को समझता है, तो उसकी भावनाएं जैसे ही उठती हैं, पहचानी जाती हैं.... [और इसी तरह §§ 199-202 में आखिर तक)।

[संकायों का संयोजन, आदि]

226-38. जब वह छोटी सांसों के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने के एकीकरण को समझता है, तो वह क्षमताओं को जोड़ता है, उनके दायरे को समझता है, और उनकी एकता के मतलब को समझता है; वह शक्तियों को जोड़ता . . . है, (और इसी तरह §§ 203-215 में आखिर तक)।

(iii)

239. यह कैसे है कि (5) वह इस तरह ट्रेनिंग करता है कि 'मैं पूरे शरीर [सांसों] से जान-पहचान करके सांस लूंगा'; (6) वह इस तरह ट्रेनिंग करता है कि 'मैं पूरे शरीर [सांसों] से जान-पहचान करके सांस लूंगा'?

[चिंतन की वस्तु का विश्लेषण]

240. शरीर : दो शरीर हैं: मानसिक शरीर और भौतिक शरीर।

मेंटल बॉडी क्या है? फीलिंग, परसेप्शन, विलिशन, कॉन्टैक्ट, अटेंशन और मेंटैलिटी मेंटल बॉडी हैं, और जिन्हें कॉग्निजेंस फॉर्मेशन कहा जाता है: ये मेंटल बॉडी हैं।

मैटेरियल बॉडी क्या है? चार बड़ी चीज़ें और चार बड़ी चीज़ों से जुड़े रहने से मिलने वाली मैटेरियलिटी, अंदर की सांस और बाहर की सांस और एंकरिंग का संकेत [माइंडफुलनेस), और जिसे बॉडी फॉर्मेशन भी कहते हैं: यही मैटेरियल बॉडी है।

241. वह इन शरीरों से कैसे परिचित होता है? जब वह लंबी सांसों के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने की एकता को समझता है, तो उसकी माइंडफुलनेस स्थापित (स्थापित) हो जाती है। उस माइंडफुलनेस और उस ज्ञान के ज़रिए वह उन शरीरों से परिचित होता है। जब वह लंबी सांसों के ज़रिए,... छोटी सांसों के ज़रिए,... छोटी सांसों के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने की एकता को समझता है, तो उसकी माइंडफुलनेस स्थापित (स्थापित) हो जाती है। उस माइंडफुलनेस और उस ज्ञान के ज़रिए वह उन शरीरों से परिचित होता है।

242. जब वह विज्ञापन करता है, तो वह उन शरीरों से परिचित होता है। जब वह जानता है, तो वह उन शरीरों से परिचित होता है। जब वह देखता है,...समीक्षा करता है,...अपनी समझ को स्थिर करता है,...विश्वास के साथ संकल्प करता है,...ऊर्जा लगाता है,...ध्यान स्थापित करता है (पाता है),...समझ को केंद्रित करता है, जब

वह समझ के साथ समझता है. । जब वह प्रत्यक्ष रूप से जानता है कि क्या प्रत्यक्ष रूप से जाना जाना है, ... जब वह पूरी तरह से समझ जाता है कि क्या पूरी तरह से समझा . . . जाना है, [184] जब वह त्याग देता है जिसे त्यागना है, ... जब वह विकसित करता है जिसे विकसित किया जाना है, ... जब वह महसूस करता है कि क्या महसूस किया जाना है, तो वह उन शरीरों से परिचित हो जाता है। इस तरह उन शरीरों का अनुभव होता है।

[माइंडफुलनेस की नींव]

243. पूरे शरीर (सांसों) से जान-पहचान होने पर अंदर-बाहर की सांसें एक शरीर हैं। नींव माइंडफुलनेस है। सोच-विचार ज्ञान है। शरीर नींव है, लेकिन यह माइंडफुलनेस नहीं है। माइंडफुलनेस नींव और माइंडफुलनेस दोनों है। उस माइंडफुलनेस और उस ज्ञान के ज़रिए वह उस शरीर पर सोच-विचार करता है। 'शरीर को शरीर के रूप में सोचने में माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) का विकास' कहा जाता है।

244. वह विचार करता है: . . . (पुनरावृत्ति §197)

245. विकास: . . . [पुनरावृत्ति §1981.

[प्रशिक्षण]

246. पूरे शरीर (सांसों) से जान-पहचान करते हुए अंदर और बाहर की सांसें लेना, संयम के मतलब में सद्गुण की शुद्धि है; वे ध्यान भटकने न देने के मतलब में ज्ञान की शुद्धि हैं; वे देखने के मतलब में नज़र की शुद्धि हैं। इसमें संयम का मतलब है ऊंचे सद्गुण की ट्रेनिंग; इसमें ध्यान भटकने न देने का मतलब है ऊंचे ज्ञान की ट्रेनिंग; इसमें देखने का मतलब है ऊंची समझ की ट्रेनिंग।

247. जब वह इन तीन प्रशिक्षणों की ओर ध्यान देता है तो वह प्रशिक्षण देता है, जब वह उन्हें जानता है तो वह प्रशिक्षण देता है, जब वह देखता . . . है, [और इसी प्रकार धारा 242 तक)... जब वह महसूस करता है कि क्या हासिल किया जाना है तो वह प्रशिक्षण देता है।.

[माइंडफुलनेस और फुल-अवेयरनेस की एक्सरसाइज]

248-51. जब वह पूरे शरीर [सांसों से] से परिचित होते हुए सांस अंदर-बाहर लेने से एक होने और ध्यान भटकने से बचते हुए समझ जाता है, तो उसकी भावनाएं जैसे ही उठती हैं, पहचानी जाती . . . [और हैं, और इसी तरह § §199-202 में आखिर तक।

[संकायों का संयोजन, आदि]

252-64. जब वह पूरे शरीर [सांसों के] से परिचित होते हुए अंदर और बाहर सांस लेने के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने की एकता को समझता है, तो वह क्षमताओं को जोड़ता है, उनकी समझ रखता है।

डोमेन, और उनके एक जैसे होने के मतलब को समझता है; वह शक्तियों को मिलाता है। (और इसी तरह § §203-15 में आखिर तक)।

(iv)

265. यह कैसे है कि (7) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं शरीर के निर्माण को शांत करते हुए साँस अंदर लूँगा': (8) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं शरीर के निर्माण को शांत करते हुए साँस बाहर लूँगा'?

[चिंतन की वस्तु का विश्लेषण]

266. बॉडी फॉर्मेशन क्या है? लंबी सांसें लेना शरीर का हिस्सा है; ये चीजें शरीर से जुड़ी होने के कारण बॉडी फॉर्मेशन हैं; 23 वह इन बॉडी फॉर्मेशन को शांत करने, रोकने, स्थिर करने की ट्रेनिंग देता है। लंबी सांसें छोड़ना शरीर का हिस्सा है:... छोटी सांसें लेना शरीर का हिस्सा है;... छोटी सांसें छोड़ना शरीर का हिस्सा है;... पूरे शरीर (सांसों) से जान-पहचान होने पर अंदर लेना शरीर का हिस्सा है;... पूरे शरीर (सांसों) से जान-पहचान होने पर बाहर छोड़ना शरीर का हिस्सा है; ये चीजें शरीर से जुड़ी होने के कारण बॉडी फॉर्मेशन हैं; वह इन बॉडी फॉर्मेशन को शांत करने, रोकने, स्थिर करने की ट्रेनिंग देता है।

जब ऐसी शारीरिक संरचनाएँ होती हैं, जिसमें पीछे, बगल में, सभी दिशाओं और आगे की ओर झुकना होता है, और शरीर में अशांति, उत्तेजना, गति और कंपन होता है, [185] तो वह इस प्रकार प्रशिक्षण देता है 'मैं शरीर संरचना को शांत करते हुए साँस अंदर लूँगा,' वह इस प्रकार प्रशिक्षण देता है 'मैं शरीर संरचना को शांत करते हुए साँस छोड़ूँगा।' जब ऐसी शारीरिक संरचनाएँ होती हैं, जिसमें पीछे, बगल में, सभी दिशाओं और आगे की ओर झुकना नहीं होता है, और शरीर में कोई अशांति, उत्तेजना, गति और कंपन शांत और सूक्ष्म नहीं होता है, तो वह इस प्रकार प्रशिक्षण देता है 'मैं शरीर संरचना को शांत करते हुए साँस अंदर लूँगा', वह इस प्रकार प्रशिक्षण देता है 'मैं शरीर संरचना को शांत करते हुए साँस छोड़ूँगा।'

तो फिर वह इस तरह ट्रेनिंग करता है 'मैं शरीर बनाने के लिए सांस अंदर लूंगा', वह इस तरह ट्रेनिंग करता है 'मैं शरीर बनाने के लिए सांस बाहर लूंगा': ऐसा होने पर, हवा का अनुभव नहीं होता, और अंदर और बाहर सांस लेने का कोई प्रोडक्शन नहीं होता, और सांस लेने के प्रति सचेत रहने का कोई प्रोडक्शन नहीं होता, और सांस लेने के प्रति सचेत रहने से एकाग्रता नहीं होती, और नतीजतन बुद्धिमान न तो उस उपलब्धि में प्रवेश करते हैं और न ही उससे बाहर निकलते हैं।

तो फिर वह इस तरह ट्रेनिंग करता है 'मैं शरीर बनाने को शांत करते हुए सांस अंदर लूंगा', वह इस तरह ट्रेनिंग करता है 'मैं शरीर बनाने को शांत करते हुए सांस बाहर लूंगा': ऐसा होने पर, हवा का अनुभव होता है, और बाहर सांस लेने और अंदर सांस लेने का अनुभव होता है, और सांस लेने पर ध्यान होता है, और सांस लेने पर ध्यान देने से एकाग्रता होती है, और नतीजतन बुद्धिमान अंदर जाता है और बाहर निकलता है।

प्राप्ति से। किसकी तरह? जैसे जब घंटा बजाया जाता है। पहले स्थूल ध्वनियाँ होती हैं और (पहचान होती है) क्योंकि स्थूल ध्वनियों के संकेत को अच्छी तरह समझ लिया जाता है, अच्छी तरह ध्यान दिया जाता है, अच्छी तरह देखा जाता है; और जब स्थूल ध्वनियाँ बंद हो जाती हैं, तो बाद में धीमी ध्वनियाँ होती हैं और [पहचान होती है) क्योंकि धीमी ध्वनियों के संकेत को अच्छी तरह समझ लिया जाता है, अच्छी तरह ध्यान दिया जाता है, अच्छी तरह देखा जाता है; और जब धीमी ध्वनियाँ बंद हो जाती हैं, तो बाद में पहचान होती है क्योंकि उसके विषय के रूप में धीमी ध्वनियों का संकेत होता है-इसी तरह, पहले स्थूल श्वास और प्रश्वास होती हैं और [पहचान विचलित नहीं होती) क्योंकि स्थूल श्वास और प्रश्वास के संकेत को अच्छी तरह समझ लिया जाता है, अच्छी तरह ध्यान दिया जाता है, अच्छी तरह देखा जाता है; और जब स्थूल श्वास अंदर और बाहर लेना बंद हो जाता है, तब उसके बाद मंद श्वास अंदर और बाहर लेना होता है और (ज्ञान विचलित नहीं होता) क्योंकि मंद श्वास और बाहर श्वास का संकेत अच्छी तरह से पकड़ लिया जाता है, उस पर अच्छी तरह ध्यान दिया जाता है, अच्छी तरह से देखा जाता है; और जब मंद श्वास अंदर और बाहर श्वास बंद हो जाता है, तब उसके बाद बोध विचलित नहीं होता क्योंकि उसके पास मंद श्वास और बाहर श्वास का संकेत होता है। ऐसा होने पर, वायु का अनुभव होता है, और श्वास अंदर और बाहर श्वास का उत्पादन होता है, और श्वास के प्रति जागरूकता उत्पन्न होती है, और श्वास के प्रति जागरूकता से एकाग्रता उत्पन्न होती है, और परिणामस्वरूप बुद्धिमान उस प्राप्ति में प्रवेश करते हैं और उससे बाहर निकलते हैं।

[माइंडफुलनेस की नींव]

267. शरीर को शांत करने वाली सांसें अंदर और बाहर लेना ही शरीर है। नींव माइंडफुलनेस है। सोच-विचार ज्ञान है। शरीर नींव है, लेकिन यह माइंडफुलनेस नहीं है। माइंडफुलनेस नींव और माइंडफुलनेस दोनों है। उस माइंडफुलनेस और उस ज्ञान के ज़रिए वह उस शरीर पर सोच-विचार करता है। इसलिए 'शरीर को शरीर के रूप में सोचने में माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) का विकास' कहा गया है।

268. वह चिंतन करता है: [दोहराएँ §197]।

269. विकास:... [दोहराएँ §198]।

[प्रशिक्षण]

270-1. शरीर की बनावट को शांत करते हुए अंदर और बाहर सांस लेना, संयम के अर्थ में सद्गुणों की शुद्धि है;... [§ §246-7 के बाकी हिस्से को आखिर तक दोहराएं]।

[माइंडफुलनेस और फुल-अवेयरनेस की एक्सरसाइज]

272-5. जब वह ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने के एक होने को समझ जाता है

सांस अंदर और बाहर लेने से शरीर की संरचना शांत होती है, उसकी भावनाएं पैदा होते ही पहचानी जाती हैं.... [और इसी तरह §§ 199-202 में अंत तक)।

[संकायों का संयोजन, आदि]

276-88. जब वह शरीर के बनने को शांत करने वाली सांसों और बाहर सांसों के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने के एकीकरण को समझता है, तो वह क्षमताओं को जोड़ता है, उनके दायरे को समझता है, और उनकी एकता के मतलब को समझता है; वह शक्तियों को जोड़ता . . . [और है, और इसी तरह § §203-16 में आखिर तक)।

[पहले टेट्राड का निष्कर्ष]

289. ध्यान के आठ प्रकार के ज्ञान और ध्यान की आठ प्रकार की स्थापना (नींव)।

सुत्त के चार आधार, जो शरीर को शरीर के रूप में देखने से जुड़े हैं।

पाठ का सेक्शन खत्म।

(v)

290. (9) ऐसा कैसे है कि वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है कि 'मैं खुशी से परिचित होकर सांस अंदर लूंगा', (10) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है कि 'मैं खुशी से परिचित होकर सांस बाहर लूंगा'?

[चिंतन की वस्तु का विश्लेषण]

291. खुशी क्या है? जब वह लंबी सांसों के ज़रिए पहचान और ध्यान भटकने से बचने की एकता को समझता है, तो उसमें खुशी की वजह से खुशी पैदा होती है... जब वह लंबी सांसों के ज़रिए पहचान और ध्यान भटकने से बचने की एकता को . . समझता है, छोटी सांसों के ज़रिए, छोटी सांसों के ज़रिए, [187] पूरे शरीर [सांसों के] से जान-पहचान रखते हुए सांसों के ज़रिए, पूरे शरीर (सांसों के) से जान-पहचान रखते हुए सांसों के ज़रिए, सांसों के ज़रिए शरीर की बनावट को शांत करते हुए, सांसों के ज़रिए शरीर की बनावट को शांत करते हुए, खुशी की वजह से खुशी पैदा होती है। कोई भी खुशी, खुशी, आनंद, खुशी, खुशी, खुशी, खुशी, संतोष, खुशी, मानसिक उत्थान, खुशी है। 25

292. वह उस खुशी से कैसे परिचित होता है? जब वह लंबी सांसों के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने की एकता को समझता है, तो उसकी माइंडफुलनेस स्थापित हो जाती है। उस माइंडफुलनेस और उस ज्ञान के ज़रिए वह उस खुशी से परिचित होता है। जब वह लंबी सांसों के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने की एकता को समझता है,...

छोटी सांसों के माध्यम से... छोटी सांसों के माध्यम से,... पूरे शरीर [सांसों के] से परिचित होते हुए सांसों के माध्यम से, पूरे शरीर [सांसों के] से परिचित होते हुए सांसों के माध्यम से,... शरीर के निर्माण को शांत करते हुए सांसों के माध्यम से, शरीर के निर्माण को शांत करते हुए सांसों के माध्यम से, उसकी चेतना स्थापित होती है (स्थापित)। उस जागरूकता और उस ज्ञान के माध्यम से वह उस खुशी से परिचित होता है।

293. जब वह ऐड करता है, तो वह उस खुशी से जान-पहचान करता है। जब वह जानता है, तो वह खुशी महसूस होती है... (और इसी तरह §242 तक)... जब उसे पता चलता है कि क्या महसूस करना है, तो वह उस खुशी से जान-पहचान करता है। इस तरह वह उस खुशी से जान-पहचान करता है।

[माइंडफुलनेस की नींव]

294. अंदर-बाहर सांस लेने से, खुशी से जान-पहचान होने पर एहसास होता है। नींव माइंडफुलनेस है। सोच-विचार ज्ञान है। एहसास नींव है, लेकिन यह माइंडफुलनेस नहीं है। माइंडफुलनेस नींव और माइंडफुलनेस दोनों है। उस माइंडफुलनेस और उस ज्ञान के ज़रिए वह उस एहसास पर सोच-विचार करता है। इसलिए 'भावनाओं को भावनाओं के रूप में सोचने में माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) का विकास' कहा गया है।

295. वह चिंतन करता है: [दोहराएँ §197]।

296. विकास: [दोहराएँ . . . §198]।

[प्रशिक्षण]

297-8. खुशी से परिचित होने पर अंदर और बाहर की सांसें संयम के अर्थ में सद्गुण की शुद्धि हैं; . . को दोहराएं §§246-7 अंत तक]। [बाकी

[माइंडफुलनेस और फुल-अवेयरनेस की एक्सरसाइज]

299-302. जब वह खुशी से परिचित होते हुए अंदर-बाहर सांस लेने से पहचान और ध्यान भटकने से बचता है, तो उसकी भावनाएं जैसे ही उठती हैं, पहचानी जाती हैं, [और इसी तरह §§ 199-202 में आखिर तक]।

[संकायों का संयोजन, आदि]

303-15. जब वह खुशी से परिचित होते हुए अंदर और बाहर सांस लेने के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने की एकता को समझता है, तो वह काबिलियत को जोड़ता है, उनके दायरे को समझता है, और उनकी एकता के मतलब को समझता है; वह ताकतों को जोड़ता है, [और इसी तरह § §203-15 में आखिर तक चलता रहता है]।

(छठी)

316. यह कैसे है कि (11) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं आनंद से परिचित होकर सांस लूंगा (12) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं आनंद से परिचित होकर सांस लूंगा? [188]

[चिंतन की वस्तु का विश्लेषण]

317. सुख : सुख दो प्रकार के होते हैं: शारीरिक सुख और मानसिक सुख।

शारीरिक सुख क्या है? कोई भी शारीरिक सुख, शारीरिक खुशी, भलाई और खुशी जो शरीर के संपर्क से पैदा होती है, शरीर के संपर्क से पैदा होने वाली सुखद भावना, शारीरिक सुख है। 26

मेंटल खुशी क्या है? कोई भी मेंटल खुशी, मेंटल खुशी, भलाई और मेंटल कॉन्टैक्ट से पैदा होने वाली खुशी, मेंटल कॉन्टैक्ट से पैदा होने वाली अच्छी भावना, मेंटल खुशी है।

318. वह उस खुशी से कैसे जान-पहचान करता है? जब वह लंबी सांसों से, लंबी सांसों से, छोटी सांसों से, छोटी सांसों से,... पूरे शरीर [सांसों से] से जान-पहचान करते हुए अंदर की सांसों से,... पूरे शरीर [सांसों से] से जान-पहचान करते हुए बाहर की सांसों से,... शरीर की बनावट को शांत करते हुए अंदर की सांसों से,... शरीर की बनावट को शांत करते हुए बाहर की सांसों से,... खुशी से जान-पहचान करते हुए अंदर की सांसों से,... खुशी से जान-पहचान करते हुए बाहर की सांसों से, उसकी माइंडफुलनेस स्थापित (स्थापित) हो जाती है। उस माइंडफुलनेस और उस ज्ञान के ज़रिए वह उस खुशी से जान-पहचान करता है।

319. जब वह विज्ञापन करता है, तो वह उस खुशी से परिचित होता है। जब वह जानता है, [और इसी तरह §242 तक]... जब वह महसूस करता है कि क्या महसूस किया जाना है, तो वह उस खुशी से परिचित होता है। इस तरह वह उस खुशी से परिचित होता है।

[माइंडफुलनेस की नींव]

320. सांस अंदर-बाहर लेने से, जब हम खुशी से जान-पहचान करते हैं, तो एहसास होता है। नींव माइंडफुलनेस है। सोच-विचार ज्ञान है। एहसास नींव है, लेकिन यह माइंडफुलनेस नहीं है। माइंडफुलनेस नींव और माइंडफुलनेस दोनों है। उस माइंडफुलनेस और उस ज्ञान के ज़रिए वह उस एहसास पर सोचता है। इसलिए 'भावनाओं को भावनाओं के रूप में सोचने में माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) का विकास' कहा गया है।

321. वह विचार करता है: [दोहराएँ $197]।

322. विकास: [दोहराएँ . . . $198].

[प्रशिक्षण]

323-4. आनंद से परिचित होने पर अंदर और बाहर की सांसें संयम के अर्थ में सद्गुण की शुद्धि हैं; §§246-7 ... दोहराएं अंत तक)। [बाकी को

माइंडफुलनेस और फुल-अवेयरनेस का अभ्यास]

325-8. जब वह खुशी से परिचित होते हुए अंदर-बाहर सांस लेने से पहचान और ध्यान भटकने से बचता है, तो उसकी भावनाएं जैसे ही उठती हैं, पहचानी जाती हैं,... [और इसी तरह §§199-202 में आखिर तक)।

[संकायों का संयोजन, आदि]

329-41. जब वह खुशी से परिचित होते हुए अंदर और बाहर सांस लेने के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने की एकता को समझता है, तो वह काबिलियत को जोड़ता है, उनके दायरे को समझता है, और एक जैसा होने के उनके मतलब को समझता है; वह ताकतों को जोड़ता है,... [और इसी तरह § §203-15 में आखिर तक]।

(सप्तम)

342. यह कैसे है कि (13) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं संज्ञान गठन से परिचित होकर सांस लूंगा', (14) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं संज्ञान गठन से परिचित होकर सांस छोड़ूंगा'?

[चिंतन की वस्तु का विश्लेषण]

343. कॉग्निजेंस फॉर्मेशन क्या है? लंबी सांस अंदर लेने से होने वाली समझ और एहसास मेंटल होते हैं; ये चीजें, कॉग्निजेंस से जुड़ी होने के कारण, कॉग्निजेंस फॉर्मेशन हैं। 23 लंबी सांस बाहर छोड़ने से होने वाली समझ और एहसास... छोटी सांस अंदर लेना... छोटी सांस बाहर छोड़ना। पूरे शरीर [सांसों से] से जान-पहचान होने पर अंदर लेना... पूरे शरीर (सांसों से) से जान-पहचान होने पर बाहर छोड़ना... शरीर को शांत करने वाली अंदर लेना... शरीर को शांत करने वाली बाहर छोड़ना। खुशी से जान-पहचान होने पर अंदर लेना... खुशी से जान-पहचान होने पर बाहर छोड़ना। खुशी से जान-पहचान होने पर अंदर लेना... खुशी से जान-पहचान होने पर बाहर छोड़ना मेंटल होते हैं; ये चीजें, कॉग्निजेंस से जुड़ी होने के कारण, कॉग्निजेंस फॉर्मेशन हैं। यही कॉग्निजेंस फॉर्मेशन है।

344. वह उन कॉग्निजेंस फॉर्मेशन से कैसे परिचित होता है? जब वह लंबी सांसों के ज़रिए कॉग्निजेंस और नॉन-डिस्ट्रेक्शन के एक होने को समझता है,... लंबी सांसों को बाहर छोड़ने,... छोटी सांसों को अंदर छोड़ने,... छोटी सांसों को बाहर छोड़ने, ... पूरे शरीर (सांसों) से परिचित होने पर अंदर सांस लेने,... पूरे शरीर (सांसों) से परिचित होने पर बाहर सांस छोड़ने,... अंदर सांस लेने के ज़रिए।

शरीर को शांत करते हुए,... शरीर को शांत करते हुए साँस छोड़ना, खुशी से जान-पहचान करते हुए साँस अंदर लेना, खुशी से जान-पहचान करते हुए साँस बाहर छोड़ना, खुशी से जान-पहचान करते हुए साँस अंदर लेना, खुशी से जान-पहचान करते हुए साँस बाहर छोड़ना, उसकी माइंडफुलनेस स्थापित होती है (स्थापित)। उस माइंडफुलनेस और उस ज्ञान के ज़रिए उन कॉग्निजेंस फॉर्मेशन का अनुभव होता

345. जब वह विज्ञापित करता है, तो उन संज्ञान संरचनाओं का अनुभव होता है। जब वह जानता है,... [और इसी तरह §242 तक)... जब वह महसूस करता है कि क्या महसूस किया जाना है, तो उन संज्ञान संरचनाओं का अनुभव होता है। इस तरह उन संज्ञान संरचनाओं [189] का अनुभव होता है।

[माइंडफुलनेस की नींव]

346. सांस अंदर-बाहर लेने से, जब हम कॉग्निजेंस फॉर्मेशन से परिचित होते हैं, तो फीलिंग होती है। स्थापना (फाउंडेशन) माइंडफुलनेस है। सोच-विचार ज्ञान है। फीलिंग स्थापना (फाउंडेशन) है, लेकिन यह माइंडफुलनेस नहीं है। माइंडफुलनेस स्थापना (फाउंडेशन) और माइंडफुलनेस दोनों है। उस माइंडफुलनेस और उस ज्ञान के ज़रिए वह उस फीलिंग पर विचार करता है। इसलिए 'फीलिंग्स को फीलिंग्स के तौर पर सोचने में माइंडफुलनेस की फाउंडेशन (स्थापना) का विकास' कहा गया है।

347. वह चिंतन करता है:... [दोहराएँ §197]।

348. विकास:... [दोहराएँ §198]।

[प्रशिक्षण]

349-50. अंदर और बाहर सांस लेने से ज्ञान का अनुभव होता है, जो संयम के अर्थ में सद्गुण की शुद्धि है: §§ 246-7 . . .(दोहराएं) का बाकी हिस्सा आखिर तक]।

[माइंडफुलनेस और फुल-अवेयरनेस की एक्सरसाइज़]

351-54. जब वह कॉग्निजेंस बनने से परिचित होते हुए सांस अंदर-बाहर लेने से कॉग्निजेंस और ध्यान भटकने से बचने के एकीकरण को समझता है, तो उसकी भावनाएं जैसे ही उठती हैं, पहचानी जाती हैं, जैसा . . .इसी तरह कि §§ 199-202 में आखिर तक है]। [और

[संकायों का संयोजन, आदि]

355-67. जब वह कॉग्निजेंस बनने से परिचित होते हुए सांस अंदर और बाहर लेने के ज़रिए कॉग्निजेंस और ध्यान भटकने से बचने के एकीकरण को समझता है, तो वह क्षमताओं को जोड़ता है,... [और इसी तरह §§203-15 में]।

(आठ)

368. यह कैसे होता है कि (15) वह इस तरह ट्रेनिंग करता है 'मैं कॉग्निजेंस फॉर्मेशन को शांत करते हुए सांस अंदर लूंगा'। (16) वह इस तरह ट्रेनिंग करता है 'मैं कॉग्निजेंस फॉर्मेशन को शांत करते हुए सांस बाहर लूंगा'?

[चिंतन की वस्तु का विश्लेषण]

369. कॉग्निजेंस फॉर्मेशन क्या है? छोटी बाहर-लंबी सांसों के कारण समझ और एहसास... लंबी बाहर-सांसें। छोटी अंदर-सांसें.. . . होने वाली सांसें। पूरे शरीर [सांसों से] से जान-पहचान होने पर अंदर-सांसें, . . . पूरे शरीर [सांसों से] से जान-पहचान होने पर बाहर-सांसें... शरीर को शांत करने वाली अंदर-सांसें फॉर्मेशन... शरीर को शांत करने वाली बाहर-सांसें फॉर्मेशन। खुशी से जान-पहचान होने पर अंदर-सांसें... खुशी से जान-पहचान होने पर अंदर-सांसें। खुशी से जान-पहचान . . होने पर बाहर-सांसें... कॉग्निजेंस फॉर्मेशन से जान-पहचान होने पर अंदर-सांसें... कॉग्निजेंस फॉर्मेशन से जान-पहचान होने पर बाहर-सांसें मेंटल हैं; ये चीजें, कॉग्निजेंस से जुड़ी होने के कारण, कॉग्निजेंस फॉर्मेशन हैं; वह उन कॉग्निजेंस फॉर्मेशन को शांत करने, रोकने, स्थिर करने की ट्रेनिंग देता है।

[माइंडफुलनेस की नींव]

370. सांस अंदर-बाहर लेने से चेतना बनती है और भावना बनती है। स्थापना (नींव)... इसलिए 'भावनाओं को भावनाओं के रूप में सोचने में शामिल माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) का विकास' कहा गया है।
371. वह चिंतन करता है: [§197]।
372. विकास:... [§198].

[प्रशिक्षण]

373-4. अंदर और बाहर की सांसें, जो चेतना के निर्माण को शांत करती हैं, संयम के अर्थ में सद्गुणों की शुद्धि हैं;...

[माइंडफुलनेस और फुल-अवेयरनेस की एक्सरसाइज]

375-8. जब वह सांस अंदर और बाहर लेने से समझ और ध्यान भटकने से बचता है, तो उसकी भावनाएं जैसे ही उठती हैं, उन्हें पहचान लिया जाता है। . . .

[संकायों का संयोजन, आदि]

379-91. जब वह अंदर और बाहर सांस लेने से कॉग्निजेंस बनने को शांत करके कॉग्निजेंस और नॉन-डिस्ट्रैक्शन के इंटीग्रेशन को समझता है, तो वह फैकल्टीज़ को मिलाता है....

[दूसरे टेट्राड का निष्कर्ष)

392. ध्यान के आठ तरह के ज्ञान, और ध्यान की आठ तरह की स्थापना (नींव)। भावनाओं के रूप में ध्यान से जुड़े सुत्त के चार आधार।

(नौ)

393. यह कैसे है कि (17) वह इस प्रकार प्रशिक्षण देता है 'मैं संज्ञान से परिचित होकर साँस लूँगा', (18) वह इस प्रकार प्रशिक्षण देता है 'मैं संज्ञान से परिचित होकर साँस लूँगा'?

[चिंतन की वस्तु का विश्लेषण]

394. वह संज्ञान क्या है? लम्बी साँसों के कारण चेतना के रूप में संज्ञान होता है;... छोटी साँसों के कारण चेतना के रूप में संज्ञान होता है;... [और इसी प्रकार अन्य सभी विधाओं के साथ)। शरीर के गठन को शांत करने वाली साँसों के कारण चेतना के रूप में संज्ञान होता है; कोई भी संज्ञान, मन, चिंतन, हृदय, स्पष्टता, [190] मन, मन का आधार, मन की क्षमता, चेतना, चेतना समुच्चय, <मन चेतना सिद्धांत जो उससे उत्पन्न होता है, वह संज्ञान है।2"

395. वह उस ज्ञान से कैसे परिचित होता है? जब वह लंबी सांसों के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने की एकता को समझता है, [और इसी तरह बाकी सभी तरीकों के साथ]... जब वह सांसों को बाहर छोड़कर ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने की एकता को समझता है, तो उसकी जागरूकता स्थापित हो जाती है। उस जागरूकता और उस ज्ञान के ज़रिए वह उस ज्ञान से परिचित होता है।

396. जब वह विज्ञापन करता है, तो वह उस ज्ञान से परिचित होता है। जब वह जानता है,... [और इसी तरह §242 तक]... जब वह महसूस करता है कि क्या महसूस किया जाना है, तो वह उस ज्ञान से परिचित होता है। इस तरह वह उस ज्ञान से परिचित होता है।

[माइंडफुलनेस की नींव]

397. सांस अंदर-बाहर लेने से, जब हम कॉग्निजेंस से परिचित होते हैं, तो कॉग्निजेंस चेतना के रूप में होता है। स्थापना (नींव) माइंडफुलनेस है। चिंतन ज्ञान है। चेतना के रूप में कॉग्निजेंस स्थापना (नींव) है, लेकिन यह माइंडफुलनेस नहीं है। माइंड-फुलनेस स्थापना (नींव) और माइंडफुलनेस दोनों है। उस माइंडफुलनेस और उस ज्ञान के ज़रिए वह उस कॉग्निजेंस को चेतना के रूप में देखता है। इसलिए 'कॉग्निजेंस के कॉग्निजेंस के चिंतन में माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) का विकास' कहा गया है।

398. वह विचार करता है:..
399. विकास....

[प्रशिक्षण]

400-2. ज्ञान से परिचित होने पर अंदर और बाहर की सांसें संयम के अर्थ में सद्गुण की शुद्धि हैं;...

[माइंडफुलनेस और फुल-अवेयरनेस की एक्सरसाइज]

402-5. जब वह कॉग्निजेंस से परिचित होते हुए सांस अंदर-बाहर लेने से कॉग्निजेंस और नॉन-डिस्ट्रेक्शन के एक होने को समझता है, तो उसकी भावनाएं जैसे ही उठती हैं, उन्हें पहचाना जाता है,...

[संकायों का संयोजन, आदि]

406-18. जब वह ज्ञान से परिचित होते हुए अंदर और बाहर सांस लेने के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने के एकीकरण को समझता है, तो वह क्षमताओं को जोड़ता है,...

(एक्स)

419. यह कैसे है कि (19) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं आनंददायक संज्ञान में साँस लूँगा', (20) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं आनंददायक संज्ञान में साँस लूँगा'?

[चिंतन की वस्तु का विश्लेषण]

420. ज्ञान की खुशी क्या है? जब वह लंबी सांसों के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने की एकता को समझता है,... [और इसी तरह बाकी सभी तरीकों के साथ भी)... जब वह ज्ञान से परिचित होते हुए सांसों के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने की एकता को समझता है, तो उसमें ज्ञान की खुशी पैदा होती है। ज्ञान की कोई भी खुशी, खुशी, खुशी, उल्लास, संतुष्टि, खुशी, मानसिक उत्थान, ज्ञान की खुशी है।

[माइंडफुलनेस की नींव]

421. अंदर-बाहर की सांसों से खुशी देने वाली पहचान होती है, चेतना के रूप में पहचान होती है। स्थापना (नींव)... इसलिए 'चेतना के रूप में पहचान के चिंतन में शामिल माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) का विकास' कहा गया है।
422. वह सोचता है:...
423. विकास:...

[प्रशिक्षण]

424-5. अंदर और बाहर की सांसों से मिलने वाला सुखद एहसास, संयम के अर्थ में सद्गुणों की शुद्धि है;...

[माइंडफुलनेस और फुल-अवेयरनेस की एक्सरसाइज़]

426-9. जब वह अंदर और बाहर सांस लेने से होने वाली खुशी और जागरूकता के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने के एक होने को समझता है, तो उसकी भावनाएँ उठने पर पहचानी जाती हैं, . . .

[संकायों का संयोजन, आदि]

430-42. जब वह अंदर और बाहर सांस लेने से होने वाली खुशी देने वाली समझ के ज़रिए समझ और ध्यान भटकने से बचने के एकीकरण को समझता है, तो वह क्षमताओं को मिलाता है, . . .

(xi)

443. यह कैसे है कि (21) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं संज्ञान को केंद्रित करते हुए साँस लूँगा', (22) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं संज्ञान को केंद्रित करते हुए साँस छोड़ूँगा'? [191]

[चिंतन की वस्तु का विश्लेषण]

4:44. कंसंट्रेशन क्या है? लंबी सांस अंदर लेने की वजह से ध्यान और ध्यान न भटकना ही कंसंट्रेशन है,... [और इसी तरह बाकी सभी तरीकों के साथ भी)... सांस बाहर लेने की वजह से ध्यान और ध्यान न भटकना ही कंसंट्रेशन है; कोई भी स्थिरता, स्थिरता, दृढ़ता, ध्यान का न बिखरना, ध्यान न भटकना, ध्यान का न बिखरना, शांति, कंसंट्रेशन की क्षमता, कंसंट्रेशन पावर, सही कंसंट्रेशन, कंसंट्रेशन है। 28

[माइंडफुलनेस की नींव]

445. सांस अंदर-बाहर लेने से ध्यान केंद्रित करने से चेतना के रूप में चेतना होती है। स्थापना (नींव)... इसलिए 'चेतना के रूप में चेतना के चिंतन में शामिल माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) का विकास' कहा गया है।

446. वह सोचता है:...

447. विकास....

[प्रशिक्षण]

448-9. अंदर और बाहर सांस लेने से ध्यान केंद्रित करना, संयम के अर्थ में सद्गुणों की शुद्धि है;...

[माइंडफुलनेस और फुल-अवेयरनेस की एक्सरसाइज़]

450-3. जब वह सांस अंदर और बाहर लेने से ध्यान केंद्रित करके ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने को समझ लेता है, तो उसकी भावनाएं उठने पर पहचानी जाती हैं। . . .

[संकायों का संयोजन, आदि]

454-466. जब वह अंदर और बाहर सांस लेने से ध्यान केंद्रित करके ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने के एकीकरण को समझता है, तो वह शक्तियों को मिलाता है,...

(बारह)

467. यह कैसे है कि (23) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं मुक्ति बोध में साँस लूँगा', (24) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं मुक्ति बोध में साँस लूँगा'?

[चिंतन की वस्तु का विश्लेषण]

468. llc इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं लालच से आज़ादी दिलाने वाली समझ में सांस लूंगा', वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं लालच से आज़ादी दिलाने वाली समझ में सांस लूंगा'; वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं नफ़रत से आज़ादी दिलाने वाली समझ में सांस लूंगा', वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं नफ़रत से आज़ादी दिलाने वाली समझ में सांस लूंगा'; वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं वहम से आज़ादी दिलाने वाली समझ में सांस लूंगा', वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं वहम से आज़ादी दिलाने वाली समझ में सांस लूंगा; वह इस प्रकार प्रशिक्षण देता है 'मैं दंभ (गर्व) से मुक्ति दिलाने वाली चेतना में सांस लूंगा',... 'मैं (गलत) दृष्टिकोण से मुक्ति दिलाने वाली चेतना में सांस लूंगा',... 'मैं अनिश्चितता से मुक्ति दिलाने वाली चेतना में सांस लूंगा', 'मैं कठोरता और सुस्ती से मुक्ति दिलाने वाली चेतना में सांस लूंगा',... 'मैं उत्तेजना से मुक्ति दिलाने वाली चेतना में सांस लूंगा', 'मैं विवेकहीनता से मुक्ति दिलाने वाली चेतना में सांस लूंगा', 'मैं बेशर्मी से मुक्ति दिलाने वाली चेतना में सांस लूंगा', वह इस प्रकार प्रशिक्षण देता है 'मैं बेशर्मी से मुक्ति दिलाने वाली चेतना को सांस छोड़ूंगा।'

[माइंडफुलनेस की नींव]

469. अंदर-बाहर सांस लेने से ज्ञान को आज़ाद करने से चेतना के रूप में ज्ञान होता है। स्थापना (नींव)... इसलिए 'ज्ञान के रूप में ज्ञान के चिंतन में शामिल माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) का विकास' कहा गया है।

470. वह सोचता है:...

471. विकास....

[प्रशिक्षण]

472-3. अंदर और बाहर की सांसों से मुक्ति देने वाली समझ, संयम के अर्थ में सद्गुणों की शुद्धि है;...

माइंडफुलनेस और फुल-अवेयरनेस का अभ्यास]

474-5. जब वह अंदर और बाहर सांस लेने से ज्ञान और ध्यान भटकने से मुक्ति पाने के ज़रिए ज्ञान के एकीकरण को समझता है, तो उसकी भावनाएँ जैसे ही उठती हैं, उन्हें पहचाना जाता है,...

[संकायों का संयोजन, आदि]

476-90. जब वह अंदर और बाहर सांस लेने से ज्ञान और ध्यान भटकने से मुक्ति पाने वाले ज्ञान के एकीकरण को समझता है, तो वह शक्तियों को मिलाता है,...

[तीसरे टेट्राड का निष्कर्ष]

491. ध्यान के आठ प्रकार के ज्ञान और ध्यान की आठ प्रकार की स्थापना (नींव)।

सुत्त के चार आधार जो ज्ञान को ज्ञान के रूप में देखने से जुड़े हैं।

(xiii)

492. ऐसा कैसे है कि (25) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं नश्वरता पर विचार करते हुए साँस लूँगा', (26) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं नश्वरता पर विचार करते हुए साँस छोड़ूँगा'?

[चिंतन की वस्तु का विश्लेषण]

493. अनित्य: अनित्य क्या है? पाँचों समुच्चय अनित्य हैं।

किस अर्थ में अस्थायी? उतार-चढ़ाव के अर्थ में अस्थायी।

494. वह कितने लक्षण देखता है जो पाँच स्कंधों का उत्थान देखता है ? वह कितने लक्षण देखता है जो पाँच स्कंधों का पतन देखता है ? वह कितने लक्षण देखता है जो पाँच स्कंधों का उत्थान और पतन देखता है ? [192]

जो पाँचों इकठ्ठाओं का उदय देखता है, वह पच्चीस गुण देखता है। जो पाँचों इकठ्ठाओं का पतन देखता है, वह पच्चीस गुण देखता है। जो पाँचों इकठ्ठाओं का उत्थान और पतन देखता है, वह पचास गुण देखता है।29

495. वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं भौतिकता में नश्वरता के बारे में सोचते हुए सांस लूंगा, वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं भौतिकता में नश्वरता के बारे में सोचते हुए सांस लूंगा'; वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं भावना में नश्वरता के बारे में सोचते हुए सांस लूंगा',... (और इसी तरह Tr. I §5 में लिस्ट किए गए बाकी 201 आइडिया के साथ)... वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं बुढ़ापे और मौत में नश्वरता के बारे में सोचते हुए सांस लूंगा'।

[माइंडफुलनेस की नींव]

496. अंदर-बाहर सांस लेने से नश्वरता पर विचार करने से विचार आते हैं। नींव (आधार) माइंडफुलनेस है। सोच-विचार ज्ञान है। विचार नींव (आधार) हैं, लेकिन वे माइंडफुलनेस नहीं हैं। माइंडफुलनेस नींव (आधार) और माइंडफुलनेस दोनों है। उस ज्ञान और उस माइंडफुलनेस के ज़रिए वह उन विचारों पर विचार करता है। इसलिए 'डेवलपमेंट ऑफ़ द

माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) को विचारों के बारे में विचारों के रूप में सोचने के रूप में कहा जाता है।

497. वह विचार करता है: . . .

498. विकास:...

[प्रशिक्षण]

499-500. नश्वरता पर विचार करते हुए अंदर और बाहर की सांसें संयम के रूप में सद्गुणों की शुद्धि हैं।

[माइंडफुलनेस और फुल-अवेयरनेस की एक्सरसाइज़]

501-4. जब वह अंदर और बाहर सांस लेने के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से दूर रहने को समझता है, तो उसकी भावनाएँ जैसे ही उठती हैं, पहचानी जाती हैं...

[संकाय का संयोजन, आदि)

505-17. जब वह अंदर और बाहर सांस लेने के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने को समझता है, तो वह नश्वरता पर विचार करता है, वह क्षमताओं को जोड़ता है,...

(xiv)

518. ऐसा कैसे है कि (27) वह इस प्रकार प्रशिक्षण देता है 'मैं लालच के लुप्त होने पर विचार करते हुए साँस अंदर लूँगा', (28) वह इस प्रकार प्रशिक्षण देता है 'मैं लालच के लुप्त होने पर विचार करते हुए साँस बाहर लूँगा'?

[चिंतन की वस्तु का विश्लेषण]

519. भौतिक चीज़ों में खतरा देखकर, उसमें भौतिक चीज़ों के लालच को खत्म करने का जोश है, वह विश्वास में पक्का है और उसका ध्यान उस पर अच्छी तरह टिका हुआ है; वह इस तरह ट्रेनिंग लेता है 'मैं भौतिक चीज़ों के लालच को खत्म करने के बारे में सोचते हुए साँस लूँगा', वह इस तरह ट्रेनिंग लेता है 'मैं भौतिक चीज़ों के लालच को खत्म करने के बारे में सोचते हुए साँस छोड़ूँगा'। एहसास में . . . खतरा देखकर, [और इसी तरह Tr. I §5 में लिस्ट किए गए बाकी 201 आइडिया के साथ)। . बुढ़ापे और मौत में खतरा देखकर, उसमें बुढ़ापे और मौत के लालच को खत्म करने का जोश है, वह विश्वास में पक्का है और उसका ध्यान उस पर अच्छी तरह टिका हुआ है; वह इस तरह ट्रेनिंग लेता है 'मैं बुढ़ापे और मौत में खत्म करने के बारे में सोचते हुए साँस लूँगा', वह इस तरह ट्रेनिंग लेता है 'मैं बुढ़ापे और मौत में खत्म करने के बारे में सोचते हुए साँस छोड़ूँगा'।

[माइंडफुलनेस की नींव]

520. अंदर-बाहर सांस लेने से, फीके पड़ने पर विचार आते हैं। स्थापना (नींव)... इसलिए 'विकास'

विचारों के विचारों के रूप में चिंतन में शामिल माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) के बारे में कहा जाता है।

[प्रशिक्षण]

521-2. अंदर और बाहर सांस लेना, खत्म होने के बारे में सोचना, सद्गुणों की शुद्धि है...

[माइंडफुलनेस और फुल-अवेयरनेस की एक्सरसाइज]

523-6. जब वह लालच के खत्म होने के बारे में सोचते हुए सांस अंदर-बाहर लेने से ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने की एकता को समझता है, तो उसकी भावनाएं उठने पर पहचानी जाती हैं, ...

[संकायों का संयोजन, आदि]

527-39. जब वह लालच के खत्म होने के बारे में सोचते हुए अंदर और बाहर सांस लेने से ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने को समझता है, तो वह काबिलियत को मिलाता है,...

(पन्द्रह)

540. यह कैसे है कि (29) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं समाप्ति पर विचार करते हुए साँस अंदर लूँगा', (30) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं समाप्ति पर विचार करते हुए साँस बाहर छोड़ूँगा'?

[चिंतन की वस्तु का विश्लेषण]

541. भौतिकता में खतरा देखकर, उसमें भौतिकता के खत्म होने का जोश है, वह विश्वास में पक्का है और उसका ध्यान इस पर अच्छी तरह टिका हुआ है; वह इस तरह ट्रेनिंग लेता है 'मैं भौतिकता के खत्म होने पर सोचते हुए सांस लूंगा', वह इस तरह ट्रेनिंग लेता है 'मैं भौतिकता के खत्म होने पर सोचते हुए सांस छोड़ूंगा'। एहसास में खतरा देखकर,... [और इसी तरह Tr. I §5 में लिस्टेड बाकी 201 आइडिया के साथ)... बुढ़ापे और मौत में खतरा देखकर, उसमें जोश है। बुढ़ापे और मौत के खत्म होने पर, वह विश्वास में पक्का है और उसका ध्यान इस पर अच्छी तरह टिका हुआ है; वह इस तरह ट्रेनिंग लेता है 'मैं बुढ़ापे और मौत के खत्म होने पर सोचते हुए सांस लूंगा', वह इस तरह ट्रेनिंग लेता है 'मैं बुढ़ापे और मौत के खत्म होने पर सोचते हुए सांस छोड़ूंगा'।

542. अज्ञानता में कितने पहलू ख़तरा है? अज्ञानता कितने पहलुओं में ख़त्म हो जाती है?

अज्ञान के पाँच पहलू खतरनाक हैं. आठ पहलुओं में अज्ञान खत्म हो जाता है. [193]

अज्ञानता में किन पाँच पहलुओं में खतरा है?

अज्ञानता में खतरा है, नश्वरता के अर्थ में, अज्ञानता में खतरा है, दर्द के अर्थ में। खुद न होने के अर्थ में,... जलने (पीड़ा) के अर्थ में,... बदलाव के अर्थ में अज्ञानता में खतरा है। इन पाँच पहलुओं में अज्ञानता में खतरा है।

किन आठ पहलुओं में अज्ञानता खत्म हो जाती है?

अज्ञान स्रोत के खत्म होने के साथ खत्म हो जाता है, अज्ञान होने के साथ खत्म हो जाता है... जन्म के खत्म होने के साथ, . . .मूल के खत्म उत्पादन के खत्म होने के साथ, कारण के खत्म होने के साथ, स्थिति के खत्म होने के साथ, अज्ञान ज्ञान के जागने के साथ खत्म हो जाता है, अज्ञान समाप्ति के प्रकट होने के साथ खत्म हो जाता है। इन आठ पहलुओं में अज्ञान खत्म हो जाता है।

इन पाँच पहलुओं में अज्ञानता में खतरा देखकर, उसे इन आठ पहलुओं में अज्ञानता को खत्म करने का जोश है, उसका विश्वास पक्का है और उसकी समझ उस पर अच्छी तरह जमी हुई है; वह इस तरह ट्रेनिंग लेता है 'मैं अज्ञानता को खत्म करने के बारे में सोचते हुए साँस लूँगा', वह इस तरह ट्रेनिंग लेता है 'मैं अज्ञानता को खत्म करने के बारे में सोचते हुए साँस छोड़ूँगा'।

543. फॉर्मेशन में कितने पहलुओं में खतरा है? कितने में [और इसी . . . तरह §542 से लेकर... तक... वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं फॉर्मेशन के खत्म होने पर सोचते हुए सांस छोड़ूंगा'।

544. चेतना में कितने पहलुओं में खतरा है?...

. . . 545. मानसिकता-भौतिकता में खतरा?...

. . . 546. छह गुना बेस में खतरा?..

. . . 547. संपर्क में खतरा? . . .

548. . . . क्या खतरा महसूस हो रहा है?

. . . 549. लालसा में खतरा? . . .

. . . 550. चिपके रहने में खतरा?...

. . . 551. होने में खतरा? . . .

. . . 552. जन्म में खतरा?...

553. बुढ़ापा और मौत कितने पहलुओं में खतरा है? बुढ़ापा और मौत कितने पहलुओं में खत्म हो जाती है?

बुढ़ापा और मृत्यु में पाँच प्रकार का खतरा है. बुढ़ापा और मृत्यु समाप्त हो जाता है... [194]

... 'मैं बुढ़ापे और मृत्यु के अंत पर विचार करते हुए साँस छोड़ूँगा।'

[माइंडफुलनेस की नींव]

554. अंदर-बाहर सांस लेने से, खत्म होने पर सोचने से विचार आते हैं। स्थापना (नींव)... इसलिए 'विचारों को विचारों के रूप में सोचने में माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) का विकास' कहा गया है।

[प्रशिक्षण]

555-6. साँस अंदर लेना और बाहर छोड़ना, संयम के अर्थ में सद्गुणों की शुद्धि है;...

[माइंडफुलनेस और फुल-अवेयरनेस की एक्सरसाइज]

557-60. जब वह सांस अंदर-बाहर लेने और रुकने के बारे में सोचते हुए ज्ञान और ध्यान भटकने से एक होने को समझता है, तो उसकी भावनाएं जैसे ही उठती हैं, पहचानी जाती हैं। . . .

[संकायों का संयोजन, आदि]

561-73. जब वह सांस अंदर लेने और बाहर छोड़ने के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने के बारे में सोचता है, तो वह काबिलियत को मिलाता है,...

(xvi)

574. यह कैसे है कि (31) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं त्याग पर विचार करते हुए साँस लूँगा' (32) वह इस प्रकार प्रशिक्षण लेता है 'मैं त्याग पर विचार करते हुए साँस छोड़ूँगा'?

चिंतन की वस्तु का विश्लेषण]

575. त्याग : त्याग दो प्रकार का होता है: त्याग करना और त्याग करना।

576. यह भौतिकता को छोड़ देता है, इसलिए यह त्याग है; ज्ञान भौतिकता के खत्म होने में (बाहर निकलता है), निब्बान में जाता है, इसलिए यह त्याग है (बाहर निकलता है); वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं भौतिकता को छोड़ने के बारे में सोचते हुए सांस लूंगा', वह इस तरह ट्रेनिंग देता है 'मैं भौतिकता को छोड़ने के बारे में सोचते हुए सांस छोड़ूंगा'। यह एहसास छोड़ देता है, . . . [और इसी तरह Tr. I §5 में लिस्ट किए गए बाकी 201 आइडिया के साथ)... 'मैं बुढ़ापे और मौत को छोड़ने के बारे में सोचते हुए सांस छोड़ूंगा'।

[माइंडफुलनेस की नींव]

577. अंदर-बाहर सांस लेने से त्याग पर विचार करने से विचार आते हैं। स्थापना (नींव)... इसलिए 'विचारों को विचारों के रूप में सोचने में माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) का विकास' कहा गया है।

[प्रशिक्षण]

578-9. त्याग के बारे में सोचते हुए अंदर की सांस और बाहर की सांस पुण्य की शुद्धि है...

[माइंडफुलनेस और फुल-अवेयरनेस की एक्सरसाइज]

580-3. जब वह त्याग के बारे में सोचते हुए अंदर और बाहर सांस लेने से ज्ञान और ध्यान भटकने से एक होने को समझता है, तो उसकी भावनाएं जैसे ही उठती हैं, पहचानी जाती हैं,...

[संकायों का संयोजन, आदि]

584-96. जब वह त्याग के बारे में सोचते हुए अंदर और बाहर सांस लेने से ज्ञान और ध्यान भटकने से बचने की एकता को समझता है, तो वह क्षमताओं को मिलाता है, . . .

[चौथे टेट्राड का निष्कर्ष]

597. ध्यान के आठ प्रकार के ज्ञान और ध्यान की आठ प्रकार की स्थापना (नींव)।

सुत्त के चार आधार जो विचारों को विचारों के रूप में सोचने से जुड़े हैं।

ये माइंडफुल वर्कर्स में 32 तरह के ज्ञान हैं।

* *
*

[धारा v]

598. एकाग्रता से प्राप्त होने वाले चौबीस प्रकार के ज्ञान कौन-कौन से हैं ?

599. लंबी सांस अंदर लेने से ज्ञान और ध्यान भटकने से बचना ही एकाग्रता है। लंबी सांस बाहर छोड़ने से ज्ञान और ध्यान भटकने से बचना... [और इसी तरह पहले तीन टेट्राड में सभी चौबीस तरीकों के साथ)... सांस बाहर छोड़ने से ज्ञान और ध्यान भटकने से बचना ही एकाग्रता है।

ये एकाग्रता से मिलने वाले चौबीस तरह के ज्ञान हैं।

* *
*

[धारा vi]

600. अंतर्दृष्टि के माध्यम से ज्ञान के बहत्तर प्रकार क्या हैं? [195]

601. लंबी सांस अंदर लेने से सोच के कुछ समय के लिए होने का एहसास होता है, सोच के दुख देने वाले एहसास का एहसास होता है, सोच के न होने का एहसास होता है। लंबी सांस बाहर छोड़ने से... [और इसी तरह पहले तीन टेट्राड तक के बाकी चौबीस तरीकों में से हर एक के मामले में तीन सोच के साथ]... सांस बाहर छोड़ने से आज़ादी देने वाली समझ का एहसास होता है।

नश्वरता के चिंतन के अर्थ में, दर्द के चिंतन के अर्थ में अंतर्दृष्टि है, अ-विक्रय के चिंतन के अर्थ में अंतर्दृष्टि है।

ये समझ से मिलने वाले बहत्तर तरह के ज्ञान हैं।

* *
*

[धारा vii]

602. वैराग्य ज्ञान के आठ प्रकार क्या हैं ?

603. जो इंसान नश्वर समझकर सोचता है, वह अंदर की सांस को जैसा है वैसा ही जानता और देखता है, इस तरह उसे वैराग्य का ज्ञान होता है। जो इंसान नश्वर समझकर सोचता है, वह बाहर की सांस को जैसा है वैसा ही जानता और देखता है,... जो इंसान खत्म होने के बारे में सोचता है, वह अंदर की सांस को जानता और देखता है... बाहर की सांस को जैसा है वैसा ही,... जो इंसान छोड़ने के बारे में सोचता है, वह अंदर की सांस को जानता और देखता है... बाहर की सांस को जैसा है वैसा ही,... जो इंसान छोड़ने के बारे में सोचता है, वह अंदर की सांस को जानता और देखता है जैसा है, इस तरह उसे वैराग्य का ज्ञान होता है। जो इंसान छोड़ने के बारे में सोचता है, वह बाहर की सांस को जानता और देखता है जैसा है, इस तरह उसे वैराग्य का ज्ञान होता है,

ये वैराग्य के आठ प्रकार के ज्ञान हैं।

* *
*

[धारा आठ]

604. वैराग्य के अनुरूप ज्ञान के आठ प्रकार कौन-कौन से हैं?

605. जो इंसान नश्वरता के बारे में सोच रहा है, जब वह अंदर की सांस के कारण डर के रूप में दिखता है, तो यह जानना कि क्या वैराग्य के अनुरूप है। जो इंसान नश्वरता के बारे में सोच रहा है, जब वह बाहर की सांस के कारण डर के रूप में दिखता है, तो यह जानना कि क्या वैराग्य के अनुरूप है। जो इंसान फीके पड़ने के बारे में सोच रहा है, जब वह अंदर की सांस के कारण डर के रूप में दिखता है, तो यह समझना कि क्या वैराग्य के अनुरूप है... [और इसी तरह चौथे टेट्राड में बाकी आठ मोड के साथ]... जो इंसान त्याग के बारे में सोच रहा है, जब वह बाहर की सांस के कारण डर के रूप में दिखता है, तो यह जानना कि क्या वैराग्य के अनुरूप है।

ये आठ तरह के ज्ञान हैं जो वैराग्य के अनुसार हैं।

* *
*

[धारा ix]

606. वैराग्य की शांति के लिए आठ प्रकार के ज्ञान कौन से हैं ?

607. नश्वरता के बारे में सोचने वाले व्यक्ति में अंदर की सांस के कारण होने वाले रिफ्लेक्स और शांति को समझना, वैराग्य के शांत करने वाला ज्ञान है। समझना... [और इसी तरह चौथे टेट्राड के बाकी आठ तरीकों के साथ)... त्याग के बारे में सोचने वाले व्यक्ति में बाहर की सांस के कारण होने वाले रिफ्लेक्स और शांति को समझना, वैराग्य के शांत करने वाला ज्ञान है।

ये आठ तरह के ज्ञान हैं जो वैराग्य को शांत करते हैं।

* *
*

[धारा x]

608. मोक्ष सुख के ज्ञान के इक्कीस प्रकार क्या हैं ?

609. प्रवाह-प्रवेश मार्ग से मोक्ष सुख का ज्ञान, त्यागने और कटने से उत्पन्न होता है

(1) व्यक्तित्व के प्रति [गलत] दृष्टिकोण,
(2) अनिश्चितता,
(3) सदाचार और कर्तव्य के प्रति गलतफ़हमी,
(4) (गलत) दृष्टिकोण की अंतर्निहित प्रवृत्ति,
(5) अनिश्चितता की अंतर्निहित प्रवृत्ति।

610. एक बार लौटने वाले मार्ग से, मोक्ष के सुख का ज्ञान त्यागने और कट जाने के कारण उत्पन्न होता है

(6) इन्द्रिय-इच्छा के प्रति लोभ की घोर बेड़ी,
(7) प्रतिरोध की घोर बेड़ियाँ,
(8) इन्द्रिय-इच्छा के प्रति लोभ की व्यापक अंतर्निहित प्रवृत्ति,
(9) प्रतिरोध की व्यापक अंतर्निहित प्रवृत्ति,[196]

611. अवाप्ति मार्ग से मोक्ष सुख का ज्ञान त्यागने और कट जाने से होता है।

(10) इन्द्रिय-इच्छा के प्रति लोभ की द्वितीयक बेड़ी,
(11) प्रतिरोध का द्वितीयक बंधन,
(12) इंद्रिय-इच्छा के लिए लालच की द्वितीयक अंतर्निहित प्रवृत्ति,
(13) प्रतिरोध की द्वितीयक अंतर्निहित प्रवृत्ति.

612. अरहंत मार्ग से मोक्ष सुख का ज्ञान, मोक्ष के त्याग और कट जाने से होता है

(14) भौतिक चीज़ों के प्रति लालच,
(15) अभौतिक (अस्तित्व) के प्रति लालच,
(16) संक्षिप्त (गर्व),
(17) आंदोलन,
(18) अज्ञानता,
(19) दंभ (घमंड) की अंतर्निहित प्रवृत्ति,
(20) लालच की अंतर्निहित प्रवृत्ति,
(21) अज्ञानता की अंतर्निहित प्रवृत्ति..

मुक्ति के सुख के ज्ञान के ये इक्कीस प्रकार हैं।

ये दो सौ से ज़्यादा तरह के ज्ञान हैं जो उस व्यक्ति में पैदा होते हैं जो सोलह आधारों के साथ सांस पर ध्यान लगाकर एकाग्रता विकसित करता है।

सांस लेने पर ग्रंथ का अंत।



नोट्स

[1] अनापानसति-सांस लेने पर ध्यान (= अना+अपान+सति): 'अनाम' का मतलब है हवा का अंदर जाना; अपानम का मतलब है हवा का बाहर निकलना। हालांकि, कुछ लोग कहते हैं कि यह इसका उल्टा है' (PSA 320 S)।

[2] P.T.S. टेक्स्ट, वॉल्यूम i, पेज 164, 1. 2, पढ़ें 'खनिकसमोधन इमे अस्थरासा उपककिलेसा उप्पज्जन्ति। जब कमियां आती हैं, तो वे पल-पल, एक पल के क्रम में, एक ही पल में नहीं आतीं' (PsA 321 SC)।

'अंदर जाने वाली सांस की शुरुआत नाक की नोक या ऊपरी होंठ से होती है, दिल बीच में होता है, और नाभि आखिर में होती है' (PsA 322 S). बाहर जाने वाली सांस इसका उल्टा है।

'यह ध्यान का विषय नाक से हवा के आने-जाने पर निर्भर करता है' यह सोचकर लगातार मोटी-मोटी सांस अंदर लेने की इच्छा, लालसा का ही एक रूप है, जो एकता में स्थिर न होने की वजह से ध्यान लगाने में रुकावट डालती है। जो व्यक्ति बहुत लंबी या बहुत छोटी सांस अंदर लेता है, वह उस सांस से चिढ़ सकता है और परेशान हो सकता है क्योंकि उससे शारीरिक और मानसिक थकान होती है' (PsA 322 S)।

''यह निशान वह जगह है जहाँ अंदर और बाहर की साँसें एक-दूसरे को छूती हैं। क्योंकि अंदर और बाहर की साँसें जब आती हैं, तो वे लंबी नाक वाले की नाक की नोक पर और छोटी नाक वाले के ऊपरी होंठ पर लगती हैं'' (PSA 323 S°)।

* यह 'अंतर्मुखी या बहिर्मुखी सांस के बाद होने वाला ज्ञान है जो संपर्क की जगह से आगे निकल गया है और उससे दूर चला गया है। अगला 'अंतर्मुखी ज्ञान है जो संपर्क की जगह पर अभी तक नहीं पहुंची सांस की उम्मीद और प्रतीक्षा करता है' (PsA 323 SC)।

P.T.S. वॉल्यूम i, पेज 167, 1.20 को पतीपदविसुद्धिपक्खंतम पढ़ें। इस पूरे हिस्से पर विस्म के चैप्टर IV (पेज 148-9) में कमेंट किया गया है।

''माइंडफुलनेस के एंकरिंग का संकेत' नाक की नोक या ऊपरी होंठ है 'जो माइंडफुलनेस के एंकरिंग का कारण और संकेत है (PsA 328 S)।

पूरी कविता Thag 549 पर; आखिरी दो लाइनें Dh 382 पर। §182 में candimă (पूर्णिमा) को satima की तरह candi-mant (चांद रखने वाला) के अर्थ में लिया गया है।

10 ānan ti assāso no passaso, apānan ti passaso no assāso पढ़ें। Assāsavasena और इसी तरह assaso के बाद नए पैरा के बिना।

"इस काम में 'samam' शब्द का मज़ाक, इसे 'sammati' (pp. santo calmed) से जोड़ता है और यहाँ भी 'som' (=con-) प्रीफ़िक्स के साथ, कई बार आता है। इंडेक्स में 'same' के लिए रेफ़रेंस देखें।

[12] Read *anācariyako pubbe ananussutesu dhammesu.*

[13] 'विसविताया-(शान) का बढ़ना: P.T.S. Dict. में नहीं: Tr. XXII §5 (Ps ii 205, PSA 655 PTS edn.) देखें; Cf. DhsA 109, DhsAA 65 Vidyodaya edn.: 'विसविताया ति अरहताया'।

इन दोनों के लिए Ndi 142 और 457 देखें।

[14] 'गले लगाने का मतलब है' का मतलब है गले लगाया जाना। गले लगाना क्या है? आउटलेट। कौन सा आउटलेट? सांस पर ध्यान देने पर आधारित एकाग्रता ही आउटलेट है, अरहंत मार्ग तक। इसलिए 'आउटलेट का मतलब है' कहा गया है। 'पुनर्जन्मों के चक्र से आउटलेट' का मतलब है 'मुख' शब्द का मतलब है सबसे आगे। 'स्थापित करने का मतलब है' का मतलब है व्यक्तिगत सार। इन सभी शब्दों का मतलब है: माइंडफुलनेस को एक गले लगाया हुआ आउटलेट बनाना। लेकिन कुछ कहते हैं कि 'गले लगाने का मतलब है' का मतलब है 'माइंडफुलनेस के रूप में गले लगाना', और 'आउटलेट का मतलब है 'सांस अंदर लेने और छोड़ने के रूप में एंट्री और एग्जिट का दरवाज़ा'। तो इसका मतलब है: 'सांस अंदर लेने और छोड़ने के आउटलेट के रूप में माइंडफुलनेस को स्थापित करना' (PsA 350-1)।

[15] भदंताचार्य धम्मपाल और भदंताचार्य महानाम के लिखने के स्टाइल में अंतर को इस हिस्से पर उनके अपने कमेंट्स में पढ़ा जा सकता है। पहले वाले ने विशुद्धिमग्ग चैप्टर VIII (Vism 273) में कोट किए गए इस पर कमेंट्स किए हैं और दूसरे वाले ने खुद पटिसंभिदा पर अपनी कमेंट्री में। 'उसकी चेतना दूर हो जाती है' इस वाक्य पर बाद वाला कहता है 'अस्सासपासासे निस्सया पतिभागनिमित्ते उप्पज्जन्ते पकाति-अस्सासपासासातो चित्तम् निवत्तरि" ("जब अंदर और बाहर सांस लेने पर आधारित काउंटर-संकेत उठता है, तो ज्ञान सामान्य अंदर और बाहर सांस लेने से दूर हो जाता है-PsA 351 SC), लेकिन पहले वाला कहता है 'अनुक्कामेना अस्सास-पासासनम् अतिविया सुखुमातराभावप्पत्तिया अनुपट्ठाहने विसेटब्बकारप्पत्तेहि तेहि चित्तम् विनिवाफ्ताति। केचि 'भवनाबलेना पना सुखुमतरभावप्पतेसु अस्सास-पस्सासेसु तत्थ पतिभागनिमित्ते उप्पन्ने पकतिआस्सासपस्सासो चित्तं निवत्तति' ति (जब अन्दर की साँस और बाहर की साँसें समय के साथ बहुत अधिक सूक्ष्मता तक पहुँच जाने के कारण अप्रकट हो जाती हैं, तो जब वे उस पहलू तक पहुँच जाती हैं जहाँ उनके अस्तित्व की जाँच करनी होती है, तब ज्ञान उनसे दूर हो जाता है। लेकिन कुछ का कहना है कि जब अन्दर की साँस और बाहर की साँसें ध्यान के विकास के प्रभाव से सूक्ष्मतर स्थिति में पहुँच जाती हैं, तो जैसे ही समकक्ष संकेत वहाँ उत्पन्न होता है, ज्ञान सामान्य अन्दर की साँस और बाहर की साँस से दूर हो जाता है' -विस्म अ 261)। 'कुछ (केचि)' शब्द आमतौर पर उन लोगों के लिए इस्तेमाल होता है जो अलग तरह की राय देते हैं, और यहाँ परमत्तमंजूषा 'केचि' शब्द से सद्धम्मप्पाकासिनी की व्याख्या की ओर इशारा करते हुए लगते हैं।

1 "सांस अंदर लेना और बाहर छोड़ना, पार्टिकल्स के तौर पर, मास के मतलब में एक बॉडी है, और नॉर्मल सांस अंदर लेने और बाहर छोड़ने पर डिपेंडेंस में बनने वाले साइन को भी 'साइन' कहा जाता है। 'एस्टैब्लिशमेंट माइंडफुलनेस है: माइंडफुलनेस को 'एस्टैब्लिशमेंट (फाउंडेशन)' कहा जाता है, क्योंकि उस ऑब्जेक्ट के पास जाने पर, वह वहीं रहता है। 'कॉन्फिडेंस नॉलेज है: इसका मतलब है कि साइन बॉडी का शांति से कॉन्फिडेंस और मेंटल बॉडी और मैटेरियल बॉडी का इनसाइट में कॉन्फिडेंस नॉलेज है। 'बॉडी एस्टैब्लिशमेंट (फाउंडेशन) है: उस बॉडी को 'एस्टैब्लिशमेंट (फाउंडेशन)' कहा जाता है, क्योंकि माइंडफुलनेस, उसके पास जाने पर, वहीं रहता है। "लेकिन यह माइंडफुलनेस नहीं है': उस बॉडी को 'माइंडफुलनेस' नहीं कहा जाता (PSA 351 S)।

"शरीर को एक शरीर के तौर पर देखना' शरीर कई तरह का होता है, इसलिए यह उस शरीर का सोचना है। या फिर यह एक शरीर का सोचना है, किसी और विचार का नहीं, शरीर में इसका मतलब है; यह टिकने, खुशी का सोचना नहीं है,

'मैं', और एक ऐसे शरीर में सुंदरता जो नश्वर है, दर्दनाक है, खुद नहीं है, और बदसूरत (गंदा) है, लेकिन उस शरीर को नश्वर, दर्दनाक, खुद नहीं है, और बदसूरत के रूप में देखना। या फिर इसका मतलब सिर्फ़ उस शरीर के बारे में सोचना है, न कि उसमें किसी ऐसे शरीर के बारे में सोचना जिसे 'मैं' या 'मेरा' या 'औरत' या 'आदमी' माना जाता है' (PsA 352 SC)। MA 1 241/ भी देखें।

"देखें Tr. 1 § 296.

इस सब-टाइटल के जस्टिफिकेशन के लिए A ii 45 देखें।

** P.T.S. टेक्स्ट में कॉन्टैक्ट के लिए परसेप्शन का सब्स्टिट्यूशन एलिज़न की वजह से मिसिंग है।

[21] P.T.S. टेक्स्ट वॉल्यूम i, पेज 180, 1. 15 पर पढ़ें; samatthañ ca paṭivijjhati... pe... balani ca samodhāneti... pe. bojjhange ca samodhāneti. . . maggan ca samodhaneti...pe... dhamme, in view of what following. pe...

निम्नलिखित §§ (204-14) के लिए Tr. 1 §§ 41-43 देखें।

[22] Read *ārammaṇaṁ. Pajānāti ti puggalo. Pajānanā paññā.*

"एम आई 301 देखें।

14 "चिन्ह उन आवाज़ों का एक पहलू है; और आवाज़ का चिन्ह आवाज़ के अलावा कुछ और नहीं है" (PSA 358 S).

"DHS §9 देखें।

* देखें Dhs § 3.

27 Dhs §6 देखें. <tajjā mano- पढ़ें.>

** देखें Dhs § 15.

"देखें Tr. I § 285f.

* दिघम अस्सासा अनिक्काटो (?) पढ़ें; कॉमी देखें। (P.T.S. एड. 526) (अस्सासा अब्ल. सिंग. है)।

(संकायों पर ग्रंथ IV

सुत्त-स्रोत: सावत्थी }

1. [वॉल्यूम 11] 'ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान सावत्थी में जेत के ग्रोव, अनाथपिंडिका पार्क में रह रहे थे। वहाँ उन्होंने भिक्षुओं से इस तरह बात की: 'भिक्षुओं'। उन्होंने जवाब दिया, 'आदरणीय महोदय।' भगवान ने यह कहा:

2. 'भिक्षुओं, ये पाँच शक्तियाँ हैं। कौन सी पाँच? विश्वास की शक्ति, ऊर्जा की शक्ति, ध्यान की शक्ति, एकाग्रता की शक्ति, समझ की शक्ति। ये पाँच शक्तियाँ हैं, भिक्षुओं।' (Sv 193)

*

3. ये पाँचों शक्तियाँ कितने पहलुओं में शुद्ध होती हैं?

ये पाँचों शक्तियाँ पंद्रह तरह से शुद्ध होती हैं। जब वह नास्तिक लोगों से दूर रहता है, सच्चे लोगों को अपनाता है, उनसे मिलता है और उनका आदर करता है, और उन सुत्तों को पढ़ता है जिनसे भरोसा आता है, तो इन तीन तरह से उसमें विश्वास की शक्ति शुद्ध होती है।

जब वह बेकार लोगों से दूर रहता है, एनर्जेटिक लोगों को अपनाता है, उनसे मिलता है और उनका सम्मान करता है, और सही कोशिशों को देखता है, तो इन तीन बातों में उसकी एनर्जी साफ़ हो जाती है।

जब वह भुलक्कड़ लोगों से बचता है, होशियार लोगों को बढ़ावा देता है, उनके पास जाता है और उनका सम्मान करता है, और होशियारी की बुनियाद को देखता है, तो उसमें होशियारी की क्षमता इन तीन पहलुओं से शुद्ध हो जाती है।

जब वह बिना ध्यान लगाए लोगों से बचता है, एकाग्र लोगों को अपनाता है, उनके पास जाता है और उनका सम्मान करता है, और ज्ञान और मुक्ति की समीक्षा करता है, तो इन तीन पहलुओं में उसमें ध्यान लगाने की क्षमता शुद्ध हो जाती है।

जब वह नासमझ लोगों से दूर रहता है, समझदार लोगों का पालन-पोषण करता है, उनसे मिलता है और उनका आदर करता है, तथा ज्ञानी लोगों के व्यवहार की समीक्षा करता है, [2] तो इन तीन पहलुओं में उसकी समझने की क्षमता शुद्ध हो जाती है।

तो जब वह इन पाँच तरह के लोगों से दूर रहता है, इन पाँच तरह के लोगों को अपनाता है, उनके पास जाता है और उनका आदर करता है, और इन पाँच तरह के सुत्तों को देखता है, तो ये पाँचों शक्तियाँ इन पंद्रह पहलुओं में उसमें शुद्ध हो जाती हैं।

4. पाँचों फैकल्टीज़ को कितने पहलुओं में डेवलप किया जा रहा है? पाँचों फैकल्टीज़ को कितने पहलुओं में डेवलप किया जा रहा है?

पांचों फैकल्टीज़ को दस पहलुओं में डेवलप किया जा रहा है। पांचों फैकल्टीज़ को दस पहलुओं में डेवलप किया जा रहा है।

जब वह नास्तिकता छोड़ रहा होता है, तो उसमें आस्था की क्षमता विकसित हो रही होती है; जब वह आस्था की क्षमता विकसित कर रहा होता है, तो वह नास्तिकता छोड़ रहा होता है। -

जब वह आलस्य छोड़ रहा होता है, तो उसमें एनर्जी की क्षमता विकसित हो रही होती है; जब वह एनर्जी की क्षमता विकसित कर रहा होता है, तो वह आलस्य छोड़ रहा होता है।

जब वह लापरवाही छोड़ रहा होता है, तो उसमें माइंडफुलनेस की क्षमता विकसित हो रही होती है; जब वह माइंडफुलनेस की क्षमता विकसित कर रहा होता है, तो वह लापरवाही छोड़ रहा होता है।

जब वह बेचैनी छोड़ रहा होता है, तो उसमें ध्यान लगाने की क्षमता बढ़ रही होती है; जब वह ध्यान लगाने की क्षमता बढ़ा रहा होता है, तो वह बेचैनी छोड़ रहा होता है।

जब वह अज्ञानता छोड़ रहा होता है, तो वह समझने की क्षमता विकसित कर रहा होता है; जब वह समझने की क्षमता विकसित कर रहा होता है, तो वह अज्ञानता छोड़ रहा होता है।

इन दस पहलुओं में पाँचों फैकल्टीज़ का विकास हो रहा है। इन दस पहलुओं में पाँचों फैकल्टीज़ का विकास हो रहा है।

5. पाँचों फैकल्टी कितने पहलुओं में डेवलप हुई हैं, पूरी तरह डेवलप हुई हैं?

पांचों काबिलियत को दस तरह से डेवलप किया गया है, काफी डेवलप किया गया है। क्योंकि नास्तिकता को छोड़ दिया गया है, काफी छोड़ दिया गया है, इसलिए आस्था की काबिलियत को डेवलप किया गया है, काफी डेवलप किया गया है; क्योंकि आस्था की काबिलियत[1] को डेवलप किया गया है, काफी डेवलप किया गया है, नास्तिकता को छोड़ दिया गया है, काफी छोड़ दिया गया है।

क्योंकि आलस्य...

लापरवाही के कारण...

क्योंकि आंदोलन...

क्योंकि अज्ञानता छोड़ दी गई है, पूरी तरह छोड़ दी गई है, समझने की क्षमता डेवलप हो गई है, पूरी तरह डेवलप हो गई है; क्योंकि समझने की क्षमता डेवलप हो गई है, पूरी तरह डेवलप हो गई है, अज्ञानता छोड़ दी गई है, पूरी तरह छोड़ दी गई है।

इन दस पहलुओं में पाँचों क्षमताएँ विकसित हुई हैं, काफ़ी विकसित हुई हैं।

6. पाँचों संकायों का कितने पहलुओं में विकास हो रहा है? कितने पहलुओं में पाँच संकायों का विकास हुआ है, काफी विकसित हुआ है, और साथ ही शांत भी किया गया है, काफी शांत किया गया है? [3]

पांचों फैकल्टीज़ को चार पहलुओं में डेवलप किया जा रहा है। पांचों फैकल्टीज़ को चार पहलुओं में डेवलप किया गया है, काफी डेवलप किया गया है, और ट्रैंक्विलाइज़ भी किया गया है, काफी ट्रैंक्विलाइज़ किया गया है।

स्ट्रीम-एंट्री पाथ के समय पांचों फैकल्टीज़ डेवलप हो रही हैं; स्ट्रीम-एंट्री के पूरा होने के समय पांचों फैकल्टीज़ डेवलप हो चुकी हैं, काफी डेवलप हो चुकी हैं, और ट्रैंक्विलाइज़ भी हो चुकी हैं, काफी ट्रैंक्विलाइज़ हो चुकी हैं।

एक बार लौटने वाले रास्ते के शुरू में... न लौटने वाले रास्ते के पल में....

अरहंत मार्ग के समय पाँचों शक्तियाँ विकसित हो रही होती हैं; अरहंतत्व के फलित होने के समय पाँचों शक्तियाँ विकसित हो चुकी होती हैं, काफी विकसित हो चुकी होती हैं, और शांत भी हो चुकी होती हैं, काफी शांत। तो मार्गों में चार शुद्धियाँ होती हैं, फलित होने में चार शुद्धियाँ, कटने में चार शुद्धियाँ, और शांत होने में चार शुद्धियाँ। इन चार पहलुओं में पाँचों शक्तियाँ विकसित हो रही होती हैं। इन चार पहलुओं में पाँचों शक्तियाँ विकसित हो चुकी होती हैं, काफी विकसित हो चुकी होती हैं, और शांत भी हो चुकी होती हैं, काफी शांत।

7. कितने तरह के लोगों में काबिलियत का विकास होता है? कितने तरह के लोगों में काबिलियत का विकास हुआ है?

आठ तरह के लोगों में काबिलियत का विकास होता है।

ये क्षमताएँ तीन तरह के लोगों में विकसित हुई हैं।

किन आठ तरह के लोगों में काबिलियत का विकास होता है? सात तरह के शुरू करने वाले और उदार आम आदमी में। इन आठ तरह के लोगों में काबिलियत का विकास होता है।

किन तीन तरह के लोगों में काबिलियत डेवलप हुई है? एक परफेक्ट का शिष्य (सुनने वाला) जिसके सारे ज़ख्म खत्म हो गए हैं, जिसे सुनकर ज्ञान मिला है, उसमें काबिलियत डेवलप हुई है। जो बिना बताए ज्ञान पा चुका है, यानी खुद बना है (किसी और से नहीं सीखा है), उसमें काबिलियत डेवलप हुई है। एक परफेक्ट, जो कामयाब और पूरी तरह से ज्ञानी है, यानी जिसे नापा नहीं जा सकता, उसमें काबिलियत डेवलप हुई है। इन तीन तरह के लोगों में काबिलियत डेवलप हुई है।

इन आठ तरह के लोगों में काबिलियत का विकास होता है।

इन तीन तरह के लोगों में काबिलियत का विकास हुआ है।

सुत्त-स्रोत सावत्थी <समाप्त>

* * *

8. भिक्षुओं, ये पाँच क्षमताएँ हैं। कौन सी पाँच? विश्वास क्षमता, ऊर्जा क्षमता, जागरूकता क्षमता, एकाग्रता क्षमता, समझ क्षमता। [4]

भिक्षुओं, अगर कोई तपस्वी या ब्राह्मण इन पांच शक्तियों के मामले में शुरुआत, पतन, आकर्षण, खतरा और बचने को नहीं समझते हैं, तो उन तपस्वियों या ब्राह्मणों को तपस्वियों में नहीं गिना जा सकता और उन्हें ब्राह्मणों में नहीं गिना जा सकता, और वे अच्छे लोग, यहीं और अभी सीधे ज्ञान से खुद को महसूस करके तप और ब्राह्मणत्व में नहीं आते और न ही रहते हैं। लेकिन अगर कोई तपस्वी या ब्राह्मण इन पांच शक्तियों के मामले में शुरुआत, पतन, आकर्षण, खतरा और बचने को समझते हैं, तो वे तपस्वी

ब्राह्मण तपस्वियों में गिने जा सकते हैं और वे अच्छे लोग सीधे ज्ञान के द्वारा आत्मसाक्षात्कार करके यहीं और अभी तप और ब्रह्मचर्य में प्रवेश करते हैं और उसमें निवास करते हैं' (Sv 194)।

*

9. पाँचों शक्तियों की शुरुआत कितने पहलुओं में होती है? वह पाँचों शक्तियों की शुरुआत को कितने पहलुओं में समझता है? पाँचों शक्तियों का कम होना कितने पहलुओं में है? वह पाँचों शक्तियों का कम होना कितने पहलुओं में समझता है? पाँचों शक्तियों के मामले में आकर्षण कितने पहलुओं में है? वह पाँचों शक्तियों के मामले में आकर्षण कितने पहलुओं में समझता है? पाँचों शक्तियों के मामले में खतरा कितने पहलुओं में है? वह पाँचों शक्तियों के मामले में खतरा कितने पहलुओं में समझता है? पाँचों शक्तियों के मामले में बचने का रास्ता कितने पहलुओं में है? वह पाँचों शक्तियों के मामले में बचने का रास्ता कितने पहलुओं में समझता है?

चालीस पहलुओं में पांच क्षमताओं की उत्पत्ति है। वह चालीस पहलुओं में पांच क्षमताओं की उत्पत्ति को समझता है। चालीस पहलुओं में पांच क्षमताओं का अवनमन होता है। वह चालीस पहलुओं में पांच क्षमताओं के अवनमन को समझता है। पच्चीस पहलुओं में पांच क्षमताओं के मामले में आकर्षण है। वह पच्चीस पहलुओं में पांच क्षमताओं के मामले में आकर्षण को समझता है। पच्चीस पहलुओं में पांच क्षमताओं के मामले में खतरा है। वह पच्चीस पहलुओं में पांच क्षमताओं के मामले में खतरे को समझता है। [5] अस्सी पहलुओं में पांच क्षमताओं के मामले में पलायन है। वह अस्सी पहलुओं में पांच क्षमताओं के मामले में पलायन को समझता है।

10. पाँचों शक्तियों की उत्पत्ति किन चालीस पहलुओं से होती है? वह किन चालीस पहलुओं से पाँच शक्तियों की उत्पत्ति को समझता है?

संकल्प के मकसद से ध्यान लगाने की शुरुआत ही विश्वास की शक्ति की शुरुआत है। संकल्प के असर से जोश की शुरुआत ही विश्वास की शक्ति की शुरुआत है। संकल्प के असर से ध्यान की शुरुआत ही विश्वास की शक्ति की शुरुआत है। विश्वास की शक्ति के असर से एकता बनाना ही विश्वास की शक्ति की शुरुआत है।

मेहनत के मकसद से ध्यान लगाने की शुरुआत एनर्जी की वजह से होती है। मेहनत के असर से जोश की शुरुआत एनर्जी की वजह से होती है। मेहनत के असर से ध्यान की शुरुआत एनर्जी की वजह से होती है। एनर्जी की वजह से एकता में स्थापित होना एनर्जी की वजह से होता है।

स्थापित करने के मकसद से ध्यान देने की शुरुआत माइंडफुलनेस फैकल्टी की शुरुआत है। स्थापित करने के असर से जोश की शुरुआत माइंडफुलनेस फैकल्टी की शुरुआत है। स्थापित करने के असर से ध्यान देने की शुरुआत माइंडफुलनेस फैकल्टी की शुरुआत है। माइंडफुलनेस फैकल्टी के असर से एकता में स्थापित होना माइंडफुलनेस फैकल्टी की शुरुआत है।

ध्यान भटकाने के मकसद से ध्यान लगाने की शुरुआत ही कंसंट्रेशन की क्षमता की शुरुआत है। ध्यान भटकाने की क्षमता के असर से जोश की शुरुआत ही कंसंट्रेशन की क्षमता की शुरुआत है। ध्यान भटकाने की क्षमता के असर से ध्यान की शुरुआत ही कंसंट्रेशन की क्षमता की शुरुआत है। कंसंट्रेशन की क्षमता के असर से एकता में स्थापित होना ही कंसंट्रेशन की क्षमता की शुरुआत है।

देखने के मकसद से ध्यान देने की शुरुआत ही समझने की शक्ति की शुरुआत है। देखने के असर से जोश की शुरुआत ही समझने की शक्ति की शुरुआत है। देखने के असर से ध्यान की शुरुआत ही समझने की शक्ति की शुरुआत है। समझने की शक्ति के असर से एकता में स्थापित होना ही समझने की शक्ति की शुरुआत है।

संकल्प के उद्देश्य से ध्यान लगाने का मूल विश्वास क्षमता का मूल है। परिश्रम के उद्देश्य से ध्यान लगाने का मूल ऊर्जा क्षमता का मूल है। स्थापना [6] के उद्देश्य से ध्यान लगाने का मूल माइंडफुलनेस क्षमता का मूल है। गैर-विचलित होने के उद्देश्य से ध्यान लगाने का मूल एकाग्रता क्षमता का मूल है। देखने के उद्देश्य से ध्यान लगाने का मूल समझ क्षमता का मूल है।

संकल्प के असर से जोश की शुरुआत, विश्वास की क्षमता की शुरुआत है। मेहनत के असर से जोश की शुरुआत, एनर्जी की क्षमता की शुरुआत है। स्थापित करने के असर से जोश की शुरुआत, माइंडफुलनेस की क्षमता की शुरुआत है। ध्यान भटकने से जोश की शुरुआत, कंसंट्रेशन की क्षमता की शुरुआत है। देखने के असर से जोश की शुरुआत, समझने की क्षमता की शुरुआत है।

संकल्प के प्रभाव से ध्यान की शुरुआत विश्वास की क्षमता की शुरुआत है। मेहनत के प्रभाव से ध्यान की शुरुआत ऊर्जा की क्षमता की शुरुआत है। स्थापित करने के प्रभाव से ध्यान की शुरुआत माइंडफुलनेस की क्षमता की शुरुआत है। ध्यान भटकने से ध्यान की शुरुआत एकाग्रता की क्षमता की शुरुआत है। देखने के प्रभाव से ध्यान की शुरुआत समझने की क्षमता की शुरुआत है।

विश्वास की शक्ति के प्रभाव से एकता स्थापित करना ही

विश्वास की क्षमता की शुरुआत। एनर्जी की क्षमता के असर से एकता में स्थापित होना, एनर्जी की क्षमता की शुरुआत है। माइंडफुलनेस की क्षमता के असर से एकता में स्थापित होना, माइंडफुलनेस की क्षमता की शुरुआत है। कंसंट्रेशन की क्षमता के असर से एकता में स्थापित होना, कंसंट्रेशन की क्षमता की शुरुआत है। समझने की क्षमता के असर से एकता में स्थापित होना, समझने की क्षमता की शुरुआत है।

इन चालीस पहलुओं में पाँच शक्तियों की उत्पत्ति है। वह इन चालीस पहलुओं में पाँच शक्तियों की उत्पत्ति को समझता है।

11. किन चालीस पहलुओं में पाँचों शक्तियों का ह्रास होता है? किन चालीस पहलुओं में वह पाँच शक्तियों के ह्रास को समझता है?

संकल्प के मकसद से ध्यान लगाना बंद होना विश्वास की ताकत का कम होना है। संकल्प के असर से जोश का कम होना विश्वास की ताकत का कम होना है। संकल्प के असर से ध्यान का कम होना विश्वास की ताकत का कम होना है। संकल्प के असर से एकता में न बन पाना विश्वास की ताकत का कम होना है।

परिश्रम के उद्देश्य से विज्ञापन का घट जाना [7] ऊर्जा क्षमता का घट जाना है। उत्साह का घट जाना...

स्थापित करने के उद्देश्य से विज्ञापन का कम होना, माइंडफुलनेस की क्षमता का कम होना है। जोश का कम होना...

ध्यान भटकाने के मकसद से विज्ञापन का कम होना, ध्यान लगाने की क्षमता का कम होना है।

देखने के मकसद से एडवर्टाइज़िंग का कम होना, समझने की क्षमता का कम होना है। देखने के असर से जोश का कम होना, समझने की क्षमता का कम होना है। देखने के असर से ध्यान का कम होना, समझने की क्षमता का कम होना है। समझने की क्षमता के असर से एकता में न बन पाना, समझने की क्षमता का कम होना है।

समाधान के मकसद से ध्यान लगाने का कम होना विश्वास की क्षमता का कम होना है। मेहनत के मकसद से ध्यान लगाने का कम होना एनर्जी की क्षमता का कम होना है। स्थापित करने के मकसद से ध्यान लगाने का कम होना माइंड-फुलनेस की क्षमता का कम होना है। ध्यान भटकने से बचने के मकसद से ध्यान लगाने का कम होना कंसंट्रेशन की क्षमता का कम होना है। देखने के मकसद से ध्यान लगाने का कम होना समझने की क्षमता का कम होना है।

संकल्प के प्रभाव से जोश का कम होना विश्वास की क्षमता का कम होना है। मेहनत के प्रभाव से जोश का कम होना...

संकल्प के प्रभाव से ध्यान का लीन होना विश्वास क्षमता का लीन होना है। ध्यान का लीन होना... [8]

विश्वास की क्षमता के असर से एकता में स्थापित न होना, विश्वास की क्षमता का कम होना है। एनर्जी की क्षमता के असर से एकता में स्थापित न होना, एनर्जी की क्षमता का कम होना है। माइंडफुलनेस की क्षमता के असर से एकता में स्थापित न होना, माइंडफुलनेस की क्षमता का कम होना है। कंसंट्रेशन की क्षमता के असर से एकता में स्थापित न होना, कंसंट्रेशन की क्षमता का कम होना है। समझने की क्षमता के असर से एकता में स्थापित न होना, समझने की क्षमता का कम होना है।

इन चालीस पहलुओं में पाँचों शक्तियों का अवनमन होता है। वह इन चालीस पहलुओं में पाँचों शक्तियों के अवनमन को समझता है। 12. पाँच शक्तियों के मामले में किन पच्चीस पहलुओं में आकर्षण होता है? वह पाँच शक्तियों के मामले में किन पच्चीस पहलुओं में आकर्षण को समझता है?

विश्वास की क्षमता के मामले में अविश्वास का न दिखना आकर्षण है। विश्वास की क्षमता के मामले में अविश्वास की पीड़ा का न दिखना आकर्षण है। समाधान के व्यवहार में भरोसा विश्वास की क्षमता के मामले में आकर्षण है। शांति से रहना विश्वास की क्षमता के मामले में आकर्षण है। विश्वास की क्षमता पर निर्भर होकर खुशी और आनंद मिलना विश्वास की क्षमता के मामले में आकर्षण है।

एनर्जी फैकल्टी के मामले में आलस्य का न दिखना आकर्षण है। आलस्य की पीड़ा का न दिखना है... मेहनत के व्यवहार में भरोसा है... शांतिपूर्ण जीवन पाना है... एनर्जी फैकल्टी के आधार पर खुशी और आनंद का मिलना एनर्जी फैकल्टी के मामले में आकर्षण है।

चेतना शक्ति के मामले में उपेक्षा का न दिखना आकर्षण है। उपेक्षा होने पर व्यथा का न दिखना... स्थापना के व्यवहार में आश्वासन है... शांतिपूर्ण निवास की प्राप्ति है... [9] चेतना शक्ति के आधार पर आनंद और खुशी उत्पन्न होना चेतना शक्ति के मामले में आकर्षण है।

कंसंट्रेशन की क्षमता के मामले में बेचैनी का न होना ही आकर्षण है। बेचैनी की तकलीफ़ का न होना ही... ध्यान न भटकने के व्यवहार में भरोसा है... शांति से रहना है... कंसंट्रेशन की क्षमता के आधार पर खुशी और आनंद का आना ही कंसंट्रेशन की क्षमता के मामले में आकर्षण है।

समझने की शक्ति के मामले में अज्ञान का न दिखना आकर्षण है। अज्ञान की पीड़ा का न दिखना है... देखने के व्यवहार में भरोसा है... शांतिपूर्ण जीवन पाना है...

वह खुशी और आनंद जो समझने की क्षमता पर निर्भर करता है, वह समझने की क्षमता के मामले में आकर्षण है।

इन पच्चीस पहलुओं में पाँचों शक्तियों के मामले में आकर्षण है। वह इन पच्चीस पहलुओं में पाँच शक्तियों के मामले में आकर्षण को समझता है।

13. पांचों शक्तियों के मामले में किन पच्चीस पहलुओं में खतरा है? पांचों शक्तियों के मामले में वह किन पच्चीस पहलुओं में खतरे को समझता है?

विश्वास की क्षमता के मामले में अविश्वास का दिखना एक खतरा है। विश्वास की क्षमता के मामले में अविश्वास की पीड़ा का दिखना एक खतरा है। विश्वास की क्षमता के मामले में नश्वरता के अर्थ में खतरा है। विश्वास की क्षमता के मामले में दर्द के अर्थ में खतरा है। विश्वास की क्षमता के मामले में न-स्व के अर्थ में खतरा है।

एनर्जी फैकल्टी के मामले में आलस्य का दिखना एक खतरा है।" एनर्जी फैकल्टी के मामले में आलस्य की पीड़ा का दिखना एक खतरा है। एनर्जी फैकल्टी के मामले में अस्थायी होने के अर्थ में खतरा है। दर्द... खुद का नहीं।

माइंडफुलनेस फैकल्टी के मामले में लापरवाही का दिखना एक खतरा है। माइंडफुलनेस फैकल्टी के मामले में लापरवाही की तकलीफ का दिखना एक खतरा है। माइंडफुलनेस फैकल्टी के मामले में नश्वरता... दर्द... खुद न होने के अर्थ में खतरा है।

एकाग्रता क्षमता के मामले में उत्तेजना का प्रकट होना एक ख़तरा है। [10] एकाग्रता क्षमता के मामले में उत्तेजना की पीड़ा का प्रकट होना एक ख़तरा है। एकाग्रता क्षमता के मामले में अस्थिरता... दर्द... अन-स्व के अर्थ में ख़तरा है।

समझने की क्षमता के मामले में अज्ञानता का दिखना एक खतरा है। समझने की क्षमता के मामले में अज्ञानता की पीड़ा का दिखना एक खतरा है। समझने की क्षमता के मामले में नश्वरता के अर्थ में खतरा है। दर्द... खुद का न होना।

इन पच्चीस पहलुओं में पाँचों शक्तियों के मामले में खतरा है। वह इन पच्चीस पहलुओं में पाँच शक्तियों के मामले में खतरे को समझता है।

14. पांचों शक्तियों के मामले में किन अस्सी पहलुओं में बचाव है? पांचों शक्तियों के मामले में वह किन अस्सी पहलुओं में बचाव को समझता है?

संकल्प के माध्यम से विश्वास की क्षमता अविश्वास से बच गई है, अविश्वास की पीड़ा से बच गई है, अपवित्रता से और उसके परिणामस्वरूप होने वाले समूहों से बच गई है और सभी बाहरी संकेतों से बच गई है, विश्वास की क्षमता के उत्कृष्ट रूप को प्राप्त करके विश्वास की क्षमता के पुराने रूप से बच गई है।

मेहनत से एनर्जी आलस्य से बाहर निकल आई है,...

माइंडफुलनेस की क्षमता स्थापित करने से लापरवाही से बचा जा सकता है, . . .

ध्यान भटकने से ध्यान लगाने की क्षमता बेचैनी से बच गई है। . .

देखने के ज़रिए समझने की शक्ति अज्ञानता से बच गई है, समझने . . . की शक्ति के पिछले रूप से बच गई है, और समझने की शक्ति का बेहतरीन रूप पा लिया है।

15. पहले झान के कारण पांच क्षमताएं पिछली अवस्था की पांच क्षमताओं से बच गई हैं। दूसरे झान के कारण पांच क्षमताएं पहले झान की पांच क्षमताओं से बच गई हैं। तीसरे झान के कारण पांच क्षमताएं... चौथे झान के कारण... असीम स्थान से मिलकर बने आधार की प्राप्ति के कारण... असीम चेतना से मिलकर बने आधार [11] की प्राप्ति के कारण... शून्यता से मिलकर बने आधार की प्राप्ति के कारण... न तो बोध और न ही अप्राप्यता के आधार की प्राप्ति के कारण पांच क्षमताएं शून्यता से मिलकर बने आधार की प्राप्ति में पांच क्षमताओं से बच गई हैं। क्षणभंगुरता के चिंतन के कारण पांच क्षमताएं न तो बोध और न ही अप्राप्यता के आधार की प्राप्ति में पांच क्षमताओं से बच गई हैं। दर्द के चिंतन के कारण पांच क्षमताएं नश्वरता के चिंतन में पांच क्षमताओं से बच गई हैं। अन-आत्म के चिंतन के कारण पांच क्षमताएं... वैराग्य के चिंतन के कारण... मिटने के चिंतन के कारण... निरोध के चिंतन के कारण... त्याग के चिंतन के कारण... विनाश के चिंतन के कारण... पतन के चिंतन के कारण... परिवर्तन के चिंतन के कारण... संकेतहीन के चिंतन के कारण... इच्छाहीन के चिंतन के कारण... शून्यता के चिंतन के कारण... विचारों की अंतर्दृष्टि के कारण जो उच्च समझ है... सही ज्ञान के कारण... खतरे के चिंतन के कारण... प्रतिवर्त के चिंतन के कारण... मुड़ने के चिंतन के कारण पांच क्षमताएं प्रतिवर्त के चिंतन की पांच क्षमताओं से बच गई हैं। धारा-प्रवेश पथ के कारण पांच क्षमताएं मुड़ने के चिंतन की पांच क्षमताओं से बच गई हैं। [12] धारा-प्रवेश फल के कारण उत्पन्न पाँच शक्तियाँ धारा-प्रवेश पथ की पाँच शक्तियों से बच गई हैं। एक बार लौटने वाले मार्ग के कारण उत्पन्न पाँच शक्तियाँ... एक बार लौटने वाले फल के कारण... न लौटने वाले मार्ग के कारण... न लौटने वाले फल के कारण... अरहंत पथ के कारण... अरहंत फल के कारण उत्पन्न पाँच शक्तियाँ अरहंत पथ की पाँच शक्तियों से बच गई हैं।

16. त्याग की पांचों शक्तियां इन्द्रिय-वासना से मुक्त हो गई हैं।

परिणाम। गैर-बुराई की सक्रिय क्षमताएं दुर्भावना से बच गई हैं। प्रकाश की धारणा में जीवित क्षमताएं कठोरता और सुस्ती से बच गई हैं। गैर-विचलन में जीवित क्षमताएं उत्तेजना से बच गई हैं। विचारों की परिभाषा में पांच क्षमताएं अनिश्चितता से बच गई हैं। ज्ञान में सक्रिय क्षमताएं अज्ञानता से बच गई हैं। प्रसन्नता में पांच क्षमताएं ऊब से बच गई हैं। पहले ज्ञान की पांच क्षमताएं बाधाओं से बच गई हैं। दूसरे ज्ञान की पांच क्षमताएं लागू-विचार और निरंतर-विचार से बच गई हैं। तीसरे ज्ञान की पांच क्षमताएं खुशी से बच गई हैं। चौथे ज्ञान की पांच क्षमताएं सुख और दर्द से बच गई हैं। असीम स्थान के आधार की प्राप्ति में पांच क्षमताएं भौतिक रूप की धारणा से, इंद्रिय-प्रभाव की धारणा से, और अंतर की धारणा से बच गई हैं। असीम चेतना के आधार को पाने की पांच शक्तियां असीम आकाश के आधार को समझने से बच गई हैं। शून्यता के आधार को पाने की पांच शक्तियां असीम चेतना के आधार को समझने से बच गई हैं। न तो अनुभूति और न ही अज्ञानता के आधार को पाने की पांच शक्तियां शून्यता के आधार को समझने से बच गई हैं। नश्वरता के चिंतन की पांच शक्तियां स्थायित्व के बोध से बच गई हैं। दर्द के चिंतन की पांच शक्तियां सुख के बोध से बच गई हैं। न-स्व के चिंतन की पांच शक्तियां स्वयं के बोध से बच गई हैं। वैराग्य के चिंतन की पांच शक्तियां आनंद से बच गई हैं। मिटने के चिंतन की पांच शक्तियां लालच से बच गई हैं। समाप्ति के चिंतन की पांच शक्तियां उठने से बच गई हैं। त्याग के चिंतन की पांच शक्तियां लोभ से बच गई हैं। [13] विनाश के चिंतन में पांच क्षमताएं संकुचितता की धारणा से बच गई हैं। पतन के चिंतन में पांच क्षमताएं संचय से बच गई हैं। परिवर्तन के चिंतन में पांच क्षमताएं धारणा या शाश्वतता से बच गई हैं। संकेतहीन के चिंतन में पांच क्षमताएं संकेत से बच गई हैं। इच्छारहित के चिंतन में पांच क्षमताएं इच्छा से बच गई हैं। शून्यता के चिंतन में पांच क्षमताएं गलत व्याख्या से बच गई हैं। विचारों में अंतर्दृष्टि की पांच क्षमताएं, जो उच्च समझ है, मूल को पकड़कर गलत व्याख्या करने से बच गई हैं। सही ज्ञान और देखने की पांच क्षमताएं भ्रम के कारण गलत व्याख्या से बच गई हैं। खतरे के चिंतन में पांच क्षमताएं भरोसे के कारण गलत व्याख्या करने से बच गई हैं। प्रतिबिंब के चिंतन में पांच क्षमताएं गैर-प्रतिबिंब से बच गई हैं

दूर जाने का विचार बंधन से बच गया है। स्ट्रीम-एंट्री रास्ते में पाँचों क्षमताएँ [गलत] नज़रिए से डिफ्लेशन कोएफिशिएंट से बच गई हैं। एक बार लौटने वाले रास्ते में जीवित क्षमताएँ बड़ी डिफ्लेशन से बच गई हैं। नॉन-रिटर्न रास्ते में पाँचों क्षमताएँ बची हुई डिफ्लेशन से बच गई हैं।

और जिन लोगों के कैंकर खत्म हो गए हैं, उनके मामले में किसी भी हालत में पांचों क्षमताएं बच गई हैं, पूरी तरह बच गई हैं, और शांत हो गई हैं, पूरी तरह शांत हो गई हैं।

इन अस्सी पहलुओं में पाँच शक्तियों के मामले में बचने का रास्ता है। वह इन अस्सी पहलुओं में पाँच शक्तियों के मामले में बचने का रास्ता समझता है।

पाठ अनुभाग

* * *

सुत्त-स्रोत सावत्थी

17. भिक्षुओं, ये पाँच शक्तियाँ हैं। कौन सी पाँच? विश्वास की शक्ति, ऊर्जा की शक्ति, ध्यान की शक्ति, एकाग्रता की शक्ति, समझ की शक्ति।

'और भिक्षुओं, श्रद्धा क्षमता कैसे पाई जाती है? धारा प्रवेश के चार कारकों में। श्रद्धा क्षमता यहाँ पाई जाती है। और ऊर्जा क्षमता कहाँ पाई जाती है? [14] चार सही प्रयासों में। ऊर्जा क्षमता यहाँ पाई जाती है। और सचेतनता क्षमता कहाँ पाई जाती है? सचेतनता के चार आधारों में। सचेतनता क्षमता यहाँ पाई जाती है। और एकाग्रता क्षमता कहाँ पाई जाती है? चार ज़ानों में। एकाग्रता क्षमता यहाँ पाई जाती है। और समझने की क्षमता कहाँ पाई जाती है? चार महान वास्तविकताओं में। समझने की क्षमता यहाँ पाई जाती है' (एसवी 196)।

18. स्ट्रीम एंट्री के चार फैक्टर्स में से कितने एस्पेक्ट्स में फेथ फैकल्टी से पाँच फैकल्टी मिलती हैं? चार सही कोशिशों में से कितने एस्पेक्ट्स में एनर्जी फैकल्टी से पाँच फैकल्टी मिलती हैं? माइंडफुलनेस के चार फाउंडेशन्स में से कितने एस्पेक्ट्स में माइंडफुलनेस फैकल्टी से पाँच फैकल्टी मिलती हैं? चार ज्ञानों में से कितने एस्पेक्ट्स में कंसंट्रेशन फैकल्टी से पाँच फैकल्टी मिलती हैं? चार महान सच्चाइयों में से कितने एस्पेक्ट्स में अंडरस्टैंडिंग फैकल्टी से पाँच फैकल्टी मिलती हैं?

स्ट्रीम एंट्री के चार फैक्टर्स में से बीस पहलुओं में पांचों फैकल्टीज़ को विश्वास फैकल्टीज़ के ज़रिए पाया जा सकता है। पांचों फैकल्टीज़ हैं

चार सही कोशिशों में से बीस पहलुओं में एनर्जी की क्षमता से पाया जा सकता है। पाँच क्षमताएँ माइंडफुलनेस की चार बुनियादों में से बीस पहलुओं में माइंडफुलनेस की क्षमता से पाई जा सकती हैं। पाँच क्षमताएँ चार ज्ञानों में से बीस पहलुओं में कंसंट्रेशन की क्षमता से पाई जा सकती हैं। पाँच क्षमताएँ चार महान सच्चाइयों में से बीस पहलुओं में अंडरस्टैंडिंग की क्षमता से पाई जा सकती हैं।

19. स्ट्रीम एंट्री के चार फैक्टर्स में से विश्वास की क्षमता से मिलने वाली पाँच क्षमताएँ कौन से बीस पहलुओं में हैं?

स्ट्रीम एंट्री के फैक्टर में अच्छे लोगों का आना-जाना शामिल है: विश्वास क्षमता संकल्प की प्रधानता की भावना में पाई जाती है; और विश्वास क्षमता के माध्यम से ऊर्जा क्षमता परिश्रम के अर्थ में पाई जाती है, दिमागी क्षमता स्थापना के अर्थ में पाई जाती है, एकाग्रता क्षमता गैर-विचलित होने के अर्थ में पाई जाती है, और समझने की क्षमता देखने के अर्थ में पाई जाती है। सच्चे विचार को सुनने में धारा प्रवेश के ... कारक में: सावधान ध्यान से युक्त धारा प्रवेश के कारक में: [15] सच्चे विचार के अनुसार अभ्यास में शामिल धारा प्रवेश के कारक में: विश्वास क्षमता संकल्प के प्रभुत्व के अर्थ में पाई जाती है; और विश्वास क्षमता के माध्यम से ऊर्जा क्षमता परिश्रम के अर्थ में पाई जाती है, दिमागी क्षमता स्थापना के अर्थ में पाई जाती है, एकाग्रता क्षमता गैर-विचलित होने के अर्थ में पाई जाती है, और समझने की क्षमता देखने के अर्थ में पाई जाती है।

इन बीस पहलुओं में स्ट्रीम एंट्री के चार फैक्टर्स में से पांच फेकल्टीज़ विश्वास फेकल्टीज़ के ज़रिए मिलती हैं।

20. चार सही कोशिशों में से एनर्जी से मिलने वाली पाँच ताकतें कौन से बीस पहलुओं में हैं?

बिना पैदा हुए बुरे और बेकार विचारों को न पैदा करने की सही कोशिश में: एनर्जी की ताकत मेहनत पर हावी होने के मतलब में मिलती है; और एनर्जी की ताकत से माइंडफुलनेस की ताकत स्थापित करने के मतलब में मिलती है, कंसंट्रेशन की ताकत ध्यान न भटकने के मतलब में मिलती है, समझने की ताकत देखने के मतलब में मिलती है, और विश्वास की ताकत समाधान के मतलब में मिलती है। पैदा हुए बुरे और बेकार विचारों को छोड़ने की सही कोशिश में:... बिना पैदा हुए फायदेमंद विचारों को जगाने की सही कोशिश में:... पैदा हुए फायदेमंद विचारों को बनाए रखने, गायब न होने, मजबूत करने, बढ़ाने, विकसित करने और बेहतर बनाने की सही कोशिश में:...

इन बीस पहलुओं में चार सही कोशिशों में से पाँचों शक्तियाँ एनर्जी शक्ति के ज़रिए मिलती हैं।

21. माइंडफुलनेस के चार आधारों में से माइंडफुलनेस के ज़रिए मिलने वाली पाँच क्षमताएँ कौन से बीस पहलुओं में हैं?

माइंडफुलनेस की नींव में शरीर को शरीर के तौर पर देखना शामिल है: माइंडफुलनेस की क्षमता, एस्टैब्लिशमेंट के दबदबे के मतलब में पाई जाती है; और माइंडफुलनेस की क्षमता के ज़रिए, ध्यान भटकने से बचने के मतलब में, समझने की क्षमता देखने के मतलब में, विश्वास की क्षमता समाधान के मतलब में, और एनर्जी की क्षमता मेहनत के मतलब में पाई जाती है। माइंडफुलनेस की नींव में, भावनाओं को भावनाओं के तौर पर देखना शामिल है:... माइंडफुलनेस की नींव में, कॉग्निजेंस को कॉग्निजेंस के तौर पर सोचना शामिल है: . . . विचारों के रूप में विचारों के चिंतन में शामिल माइंडफुलनेस की नींव में:... [16]

इन बीस पहलुओं में माइंडफुलनेस के चार आधारों में से माइंडफुलनेस के ज़रिए पाँच क्षमताएँ पाई जाती हैं।

22. चार ज्ञानों में से कंसंट्रेशन फैकल्टी के ज़रिए मिलने वाली पाँच फैकल्टी कौन से बीस पहलुओं में हैं?

पहले झान में: ध्यान भटकने पर हावी होने के मतलब में ध्यान लगाने की क्षमता पाई जाती है; और ध्यान लगाने की क्षमता के ज़रिए देखने के मतलब में समझने की क्षमता पाई जाती है, संकल्प के मतलब में विश्वास की क्षमता पाई जाती है, मेहनत के मतलब में ऊर्जा की क्षमता पाई जाती है, और स्थापना के मतलब में ध्यान लगाने की क्षमता पाई जाती है। दूसरे झान में:... तीसरे झान में:... चौथे झान में:।

इन पांच पहलुओं में चार ज्ञानों के बीच कंसंट्रेशन फैकल्टी के ज़रिए पांच फैकल्टी पाई जाती हैं।

23. चार महान सच्चाइयों में से समझने की क्षमता से मिलने वाली पाँच काबिलियतें कौन से पाँच पहलुओं में हैं?

दुख की महान सच्चाई में: समझने की काबिलियत देखने के दबदबे के मतलब में मिलती है; और समझने की काबिलियत के ज़रिए विश्वास की काबिलियत हल के मतलब में मिलती है, एनर्जी की काबिलियत कोशिश करने के मतलब में मिलती है, माइंडफुलनेस की काबिलियत स्थापित करने के मतलब में मिलती है, और कंसंट्रेशन की काबिलियत ध्यान भटकने न देने के मतलब में मिलती है। दुख की शुरुआत की महान सच्चाई में: दुख के खत्म होने की महान सच्चाई में:... दुख के खत्म होने के रास्ते की महान सच्चाई में:...

इन पाँच पहलुओं में चार महान सच्चाइयों के बीच समझने की क्षमता के ज़रिए पाँच क्षमताएँ पाई जाती हैं।

24. स्ट्रीम एंट्री के चार फैक्टर्स में से कितने एस्पेक्ट्स में पांचों फैकल्टीज़ का बिहेवियर फेथ फैकल्टी के ज़रिए पाया जाता है?

पाँचों शक्तियों के व्यवहार के कई पहलू हैं, जो एनर्जी शक्ति से मिलते हैं...? माइंडफुलनेस शक्ति से...? कंसंट्रेशन शक्ति से...? चार महान सच्चाइयों में से समझ शक्ति से??

पांचों शक्तियों का व्यवहार आस्था की शक्ति के ज़रिए धारा प्रवेश के चार कारकों में बीस पहलुओं में पाया जाता है। पांचों शक्तियों का व्यवहार ऊर्जा की शक्ति के ज़रिए चार सही प्रयासों में बीस पहलुओं में पाया जाता है। माइंडफुलनेस की शक्ति के ज़रिए माइंडफुलनेस के चार [17] आधारों में बीस पहलुओं में... एकाग्रता की शक्ति के ज़रिए चार ज्ञानों में बीस पहलुओं में... समझ की शक्ति के ज़रिए चार महान वास्तविकताओं में बीस पहलुओं में।

25. स्ट्रीम एंट्री के चार फैक्टर्स में से विश्वास के ज़रिए पाँचों फेकल्टीज़ का व्यवहार किन बीस पहलुओं में पाया जाता है?

अच्छे लोगों के पास जाने से मिलने वाली स्ट्रीम एंट्री के फैक्टर में: विश्वास की क्षमता का व्यवहार संकल्प के हावी होने के अर्थ में पाया जाता है; और विश्वास की क्षमता के ज़रिए एनर्जी की क्षमता का व्यवहार मेहनत के अर्थ में पाया जाता है, माइंडफुलनेस की क्षमता का व्यवहार स्थापित करने के अर्थ में पाया जाता है, कंसंट्रेशन की क्षमता का व्यवहार ध्यान न भटकने के अर्थ में पाया जाता है, और समझने की क्षमता का व्यवहार देखने के अर्थ में पाया जाता है। अच्छे धम्म को सुनने से मिलने वाली स्ट्रीम एंट्री के फैक्टर में:... ध्यान से ध्यान देने से मिलने वाली स्ट्रीम एंट्री के फैक्टर में: . . . धम्म के अनुसार अभ्यास में शामिल धारा प्रवेश के कारक में:...

26. पांचों का व्यवहार...

चार सही कोशिशों में से एनर्जी के ज़रिए पाँचों शक्तियों का व्यवहार किन बीस पहलुओं में पाया जाता है?

उत्पन्न न होने वाले बुरे और बेकार विचारों को न पैदा करने के सही प्रयास में: ऊर्जा क्षमता का व्यवहार परिश्रम की प्रधानता के अर्थ में पाया जाता है; और ऊर्जा क्षमता के माध्यम से दिमागी क्षमता का व्यवहार स्थापना के अर्थ में पाया जाता है, एकाग्रता क्षमता का व्यवहार गैर-विचलित होने के अर्थ में पाया जाता है, समझने की क्षमता का व्यवहार देखने के अर्थ में पाया जाता है, और विश्वास क्षमता का व्यवहार समाधान के अर्थ में पाया जाता है। उत्पन्न हुए बुरे और बेकार विचारों को त्यागने के सही प्रयास में:... उत्पन्न न होने वाले लाभदायक विचारों को जगाने के सही प्रयास में:... उत्पन्न हुए लाभदायक विचारों के रखरखाव, गैर-गायब होने, मजबूत करने, बढ़ाने, विकास और पूर्णता के सही प्रयास में:... [18]

पांचों का व्यवहार...

27. माइंडफुलनेस के चार आधारों में से माइंडफुलनेस के ज़रिए पाँचों क्षमताओं का व्यवहार किन बीस पहलुओं में पाया जाता है?

माइंडफुलनेस की नींव में, जिसमें शरीर को शरीर की तरह सोचना शामिल है: माइंडफुलनेस की क्षमता का व्यवहार, स्थिति के दबदबे के अर्थ में पाया जाता है; और माइंडफुलनेस की क्षमता के ज़रिए, ध्यान लगाने की क्षमता का व्यवहार ध्यान न भटकने के अर्थ में पाया जाता है, समझने की क्षमता का व्यवहार देखने के अर्थ में पाया जाता है, विश्वास की क्षमता का व्यवहार समाधान के अर्थ में पाया जाता है, और ऊर्जा की क्षमता का व्यवहार मेहनत के अर्थ में पाया जाता है। माइंडफुलनेस की नींव में, जिसमें भावनाओं को भावनाओं की तरह सोचना शामिल है:... माइंडफुलनेस की नींव में, जिसमें ज्ञान को ज्ञान की तरह सोचना शामिल है... माइंड-फ्यूनेस की नींव में, जिसमें विचारों को विचारों की तरह सोचना शामिल है:...

पांचों का व्यवहार...

28. चारों ज्ञानों में से कंसंट्रेशन फैकल्टी के ज़रिए पाँचों फैकल्टी का व्यवहार किन बीस पहलुओं में पाया जाता है?

पहले झान में: कॉन्संट्रेशन की क्षमता का व्यवहार ध्यान भटकने से रोकने के अर्थ में पाया जाता है; और कॉन्संट्रेशन की क्षमता के ज़रिए समझने की क्षमता का व्यवहार देखने के अर्थ में पाया जाता है, विश्वास की क्षमता का व्यवहार समाधान के अर्थ में पाया जाता है, एनर्जी की क्षमता का व्यवहार कोशिश करने के अर्थ में पाया जाता है, और माइंडफुलनेस की क्षमता का व्यवहार स्थापित करने के अर्थ में पाया जाता है। दूसरे झान में:... तीसरे झान में:... चौथे झान में:।

पांचों का व्यवहार...

29. चार महान सच्चाइयों में से समझने की शक्ति के ज़रिए पाँच शक्तियों का व्यवहार किन बीस पहलुओं में पाया जाता है?

दुख की महान सच्चाई में: समझने की शक्ति का व्यवहार देखने के दबदबे के अर्थ में पाया जाता है; और समझने की शक्ति के ज़रिए विश्वास की शक्ति का व्यवहार समाधान के अर्थ में पाया जाता है, ऊर्जा की शक्ति का व्यवहार प्रयास करने के अर्थ में पाया जाता है, ध्यान लगाने की शक्ति का व्यवहार स्थापित करने के अर्थ में पाया जाता है, और ध्यान लगाने की शक्ति का व्यवहार ध्यान न भटकने के अर्थ में पाया जाता है। दुख की शुरुआत की महान सच्चाई में:... दुख के खत्म होने की महान . . . सच्चाई में: दुख के खत्म होने के रास्ते की महान सच्चाई में . . . [19]

इन बीस पहलुओं में, पाँचों शक्तियों का व्यवहार चार महान सच्चाइयों में से समझने की शक्ति के ज़रिए पाया जाता है।

*

व्यवहार)

30. व्यवहार और रहने की कला को इस तरह खोजा और समझा गया है कि अगर कोई उसी के हिसाब से व्यवहार करे और रहे, तो अच्छी ज़िंदगी में उसके समझदार साथी गहरी बातों पर यकीन कर सकते हैं: ज़रूर यह आदरणीय व्यक्ति (खासियत) तक पहुँच गया है या पहुँच जाएगा।

31. व्यवहार: व्यवहार आठ तरह के होते हैं: आसनों का व्यवहार, आधारों के संबंध में व्यवहार, ध्यान का व्यवहार, एकाग्रता का व्यवहार, ज्ञान का व्यवहार, रास्तों का व्यवहार, आगमन का व्यवहार, अलौकिक व्यवहार।

आसनों का व्यवहार: चारों आसनों के मामले में।

बेस के संबंध में व्यवहार; छह इंटरनल-एक्सटर्नल बेस के मामले में।

माइंडफुलनेस का व्यवहार: माइंडफुलनेस के चार आधारों के मामले में।

कॉन्संट्रेशन का व्यवहार: चार ज्ञानों के मामले में।

ज्ञान का व्यवहार: चार महान वास्तविकताओं के मामले में।

रास्तों का व्यवहार: चार महान रास्तों के मामले में।

आगमन का व्यवहार: तप के चार फलों के मामले में।

अलौकिक व्यवहार: परफेक्ट लोगों के मामले में, निपुण और पूरी तरह से प्रबुद्ध, बिना बताए प्रबुद्ध लोगों के मामले में, और शिष्यों के मामले में थोड़ा।

आसन का व्यवहार उन लोगों का होता है जिनका व्यवहार सही होता है।

बेस के संबंध में व्यवहार उन लोगों का है जो सेंस डोर में पहरेदार हैं।

सचेतन व्यवहार उन लोगों का होता है जो मेहनत में लगे रहते हैं।

ध्यान लगाने का व्यवहार उन लोगों का होता है जो ऊंचे ज्ञान के लिए समर्पित होते हैं।

ज्ञान का व्यवहार उन लोगों का है जिनके पास (कुछ) ज्ञान

रास्तों का व्यवहार उन लोगों का होता है जो सही तरीके से रास्ते पर चल पड़े हैं।

आने का व्यवहार उन लोगों का है जो [मार्ग के] फल पर पहुँच गए हैं।

अलौकिक व्यवहार परफेक्ट लोगों, निपुण और पूरी तरह से प्रबुद्ध लोगों, बिना बताए प्रबुद्ध लोगों और कुछ हद तक शिष्यों का होता है।

ये आठ प्रकार के व्यवहार हैं. [20]

32. व्यवहार के अन्य आठ प्रकार: जो संकल्प करता है वह विश्वास के साथ व्यवहार करता है, जो प्रयास करता है वह ऊर्जा के साथ व्यवहार करता है, जो स्थापित करता है वह जागरूकता के साथ व्यवहार करता है, जो विचलित न होने पर प्रभाव डालता है वह एकाग्रता के साथ व्यवहार करता है, जो समझता है वह समझ के साथ व्यवहार करता है, जो

जो जानता है, वह चेतना के व्यवहार के साथ व्यवहार करता है; इस तरह रास्ते पर आने वाला व्यक्ति अंतर तक पहुँचता है, इस तरह वह अंतर के व्यवहार के साथ व्यवहार करता है; इस तरह रास्ते पर आने वाले व्यक्ति में फायदेमंद विचार फैलते हैं (अयापेंती), इस तरह वह आधारों के व्यवहार (आयतन) के साथ व्यवहार करता है।

ये आठ तरह के व्यवहार हैं।

33. अन्य आठ प्रकार के व्यवहार - सम्यक दृष्टि का देखने का व्यवहार, सम्यक विचार का निर्देश करने का व्यवहार, सम्यक वाणी का गले लगाने का व्यवहार, सम्यक कर्म का आरंभ करने का व्यवहार, सम्यक जीवन का शुद्धिकरण करने का व्यवहार, सम्यक प्रयास का प्रयास करने का व्यवहार, सम्यक स्मृति का स्थापित करने का व्यवहार, सम्यक एकाग्रता का ध्यान न भटकाने का व्यवहार।

ये आठ तरह के व्यवहार हैं।

34. स्थिर रहना: जो संकल्प करता है वह विश्वास में स्थिर रहता है, जो प्रयास करता है वह सिसिली में स्थिर रहता है, जो स्थापित करता है वह सचेतनता में स्थिर रहता है, जो विचलित न हो वह एकाग्रता में स्थिर रहता है, जो समझता है वह समझ में स्थिर रहता है।

35. खोजा गया: विश्वास की क्षमता के मतलब के तौर पर संकल्प खोजा गया है, ऊर्जा की क्षमता के मतलब के तौर पर परिश्रम खोजा गया है, माइंडफुलनेस की क्षमता के मतलब के तौर पर स्थापित करना खोजा गया है, एकाग्रता की क्षमता के मतलब के तौर पर ध्यान भटकना नहीं खोजा गया है, और समझने की क्षमता के मतलब के तौर पर देखना खोजा गया है।

36. प्रवेश: विश्वास संकाय के अर्थ के रूप में संकल्प प्रवेश किया गया है, [§35 . . . के अनुसार पूर्ण]।

37. तदनुसार व्यवहार करने वाले का: विश्वास के साथ इस प्रकार व्यवहार करने वाले का, ऊर्जा के साथ इस प्रकार व्यवहार करने वाले का, जागरूकता के साथ इस प्रकार व्यवहार करने वाले का, एकाग्रता के साथ इस प्रकार व्यवहार करने वाले का, समझ के साथ इस प्रकार व्यवहार करने वाले का।

38. तदनुसार बने रहने वाले के विषय में: इस प्रकार विश्वास के साथ बने रहने वाले के विषय में... [§37 के अनुसार पूर्ण करें]। [21]

39. बुद्धिमानः समझदार, चतुर, जानकार, विद्वान, प्रबुद्धता से युक्त।

40. अच्छे जीवन में साथी: [जो विनय करते हैं] एक साथ कार्य करते हैं, एक साथ [पतिमोक्खा का) पाठ करते हैं, (और एक ही प्रशिक्षण रखते हैं)।

41. गहन बातें: जिन्हें 'गहन बातें' कहा जाता है वे हैं ज्ञान, मुक्ति, एकाग्रता, सिद्धि, मार्ग, फल, [छह] प्रत्यक्ष ज्ञान और (चार) विवेक।

42. विश्वास हो सकता है: विश्वास हो सकता है, संकल्प हो सकता है।

43. ज़रूर: यह शब्द पूरी तरह से, बिना शक के, बिना किसी फैसले के, बिना किसी उलझन के, बिना किसी नकल के, ज़रूरत, साफ़-साफ़ न होना, पक्का होना दिखाता है, यह शब्द 'ज़रूर' है।

44. हे आदरणीय: यह सम्मान का शब्द है।
45. पहुँच गया है: पहुँच गया।
46. या पहुँचेगा: 7 पर पहुँचेगा

* *
*

सुत्त-स्रोत पहले ही दिया जा चुका है

47. 'भिक्षुओं, ये पाँच शक्तियाँ हैं। कौन सी पाँच? विश्वास की शक्ति, ऊर्जा की शक्ति, ध्यान की शक्ति, एकाग्रता की शक्ति, समझ की शक्ति। ये पाँच शक्तियाँ हैं, भिक्षुओं।'

*

48. ये पाँचों क्षमताएँ कितने पहलुओं में पाई जाती हैं? ये पाँचों क्षमताएँ छह पहलुओं में पाई जाती हैं।
49. वे किस अर्थ में पाए जाते हैं? प्रभुत्व के अर्थ में, शुरुआत को शुद्ध करने के अर्थ में, उत्कृष्ट होने के अर्थ में, स्थिर करने के अर्थ में, समाप्त करने के अर्थ में, आधार बनाने के अर्थ में।
50. दबदबे की भावना में काबिलियत कैसे पाई जाती है?
जब वह अविश्वास का त्याग करता है तो उसमें संकल्प की प्रधानता के अर्थ में आस्था क्षमता पाई जाती है; और आस्था क्षमता के माध्यम से प्रयास करने के अर्थ में ऊर्जा क्षमता पाई जाती है, स्थापना करने के अर्थ में जागरूकता क्षमता पाई जाती है, [22] ध्यान भटकने न देने के अर्थ में एकाग्रता क्षमता पाई जाती है, और देखने के अर्थ में समझने की क्षमता पाई जाती है। जब वह आलस्य का त्याग करता है तो उसमें प्रयास की प्रधानता के अर्थ में ऊर्जा क्षमता पाई जाती है; और ऊर्जा क्षमता के माध्यम से... जब वह लापरवाही का त्याग करता है तो उसमें स्थापना करने की प्रधानता के अर्थ में जागरूकता क्षमता पाई जाती है; और जागरूकता क्षमता के माध्यम से... जब वह आंदोलन का त्याग करता है तो उसमें ध्यान भटकने न देने की प्रधानता के अर्थ में एकाग्रता क्षमता पाई जाती है; और एकाग्रता क्षमता के माध्यम से... जब वह अज्ञानता का त्याग करता है और समझने की क्षमता के ज़रिए संकल्प के अर्थ में विश्वास की क्षमता पाई जाती है, मेहनत के अर्थ में ऊर्जा की क्षमता पाई जाती है, स्थापना के अर्थ में दिमागी क्षमता पाई जाती है, और एकाग्रता
51. जब वह त्याग के ज़रिए कामुक इच्छाओं के लिए जोश छोड़ देता है, तो उसमें संकल्प के हावी होने के अर्थ में विश्वास की क्षमता पाई जाती है; और विश्वास की क्षमता के ज़रिए ऊर्जा की क्षमता इस अर्थ में पाई जाती है कि

परिश्रम के अर्थ में, माइंडफुलनेस क्षमता स्थापना के अर्थ में पाई जाती है, एकाग्रता क्षमता गैर-विचलित होने के अर्थ में पाई जाती है, समझने की क्षमता देखने के अर्थ में पाई जाती है।

जब वह त्याग के ज़रिए कामुक इच्छाओं के लिए जोश छोड़ देता है, तो उसमें मेहनत के दबदबे के रूप में एनर्जी की क्षमता पाई जाती है; और एनर्जी की क्षमता के ज़रिए...

जब वह त्याग के ज़रिए कामुक इच्छाओं के लिए जोश छोड़ देता है, तो उसमें माइंडफुलनेस की क्षमता, व्यवस्था के दबदबे के रूप में पाई जाती है; और माइंडफुलनेस की क्षमता के ज़रिए...

जब वह त्याग के ज़रिए कामुक इच्छाओं के लिए जोश छोड़ देता है, तो उसमें ध्यान भटकने पर हावी होने के अर्थ में ध्यान लगाने की क्षमता पाई जाती है; और ध्यान लगाने की क्षमता के ज़रिए...

जब वह त्याग के ज़रिए कामुक इच्छाओं के लिए जोश छोड़ देता है, तो उसमें देखने की ताकत के तौर पर समझने की ताकत पाई जाती है; और समझने की ताकत के ज़रिए ही उसे हल करने की ताकत के तौर पर विश्वास की ताकत, कोशिश करने की ताकत के तौर पर एनर्जी की ताकत, स्थापित करने की ताकत के तौर पर माइंडफुलनेस की ताकत, और ध्यान भटकने से बचने की ताकत के तौर पर कंसंट्रेशन की ताकत मिलती है।

जब वह दुर्भावना को असद्भावना से त्याग देता है... [23]

53. जब वह रोशनी को महसूस करके अकड़न और सुस्ती को छोड़ देता है....

54. जब वह ध्यान भटकाए बिना बेचैनी छोड़ देता है...

55. जब वह विचारों की परिभाषा के ज़रिए अनिश्चितता को छोड़ देता है...

56. जब वह ज्ञान के द्वारा अज्ञान को त्याग देता है...

57. जब वह बोरियत को खुशी से छोड़ देता है...

58-61. जब वह पहले झाना के ज़रिए रुकावटों को छोड़ देता है... [और इसी तरह बाकी झाना के साथ भी]

62-65. [चारों अमूर्त उपलब्धियों में से हर एक के लिए समान §§].

66-83....[18 प्रमुख अंतर्दृष्टियों में से प्रत्येक के लिए समान § §)।

84-6. [पहले . . . तीन रास्तों में से हर एक के लिए एक जैसा].

87. जब वह अरहंत मार्ग से सभी बुराइयों को छोड़ देता है, तो उसमें संकल्प की प्रधानता के अर्थ में विश्वास की क्षमता पाई जाती है; और विश्वास की क्षमता के माध्यम से ऊर्जा की क्षमता मेहनत के अर्थ में पाई जाती है, ध्यान की क्षमता स्थापना के अर्थ में पाई जाती है, एकाग्रता की क्षमता ध्यान न भटकने के अर्थ में पाई जाती है, और समझने की क्षमता देखने के अर्थ में पाई जाती है।

जब वह अरहंत मार्ग से सभी बुराइयों को छोड़ देता है, तो उसमें मेहनत के दबदबे के रूप में एनर्जी की क्षमता पाई जाती है; और एनर्जी की क्षमता के ज़रिए माइंडफुलनेस की क्षमता पाई जाती है।

स्थापना की भावना में, विश्वास की क्षमता समाधान के अर्थ में पाई जाती है।

जब वह अरहंत मार्ग से सभी बुराइयों को छोड़ देता है, तो उसमें माइंड-फुलनेस की क्षमता, यानी स्थिरता के प्रभुत्व के रूप में पाई जाती है; और माइंडफुलनेस की क्षमता के ज़रिए ध्यान भटकने से बचने की क्षमता, और मेहनत के रूप में एनर्जी की क्षमता पाई जाती है।

जब वह अरहंत मार्ग से सभी बुराइयों को छोड़ देता है, तो उसमें ध्यान भटकने की क्षमता, ध्यान न भटकने के असर के रूप में पाई जाती है; और ध्यान लगाने की क्षमता के माध्यम से देखने के अर्थ में समझने की क्षमता, और ध्यान लगाने की क्षमता, स्थिर होने के अर्थ में पाई जाती है।

जब वह अरहंत मार्ग के माध्यम से सभी विकारों को त्याग देता है, तो उसमें देखने के प्रभुत्व के अर्थ में समझने की क्षमता पाई जाती है, और समझने की क्षमता के माध्यम से संकल्प के अर्थ में विश्वास की क्षमता पाई जाती है, प्रयास के अर्थ में ऊर्जा की क्षमता पाई जाती है, स्थापित करने के अर्थ में मन की क्षमता पाई जाती है, ध्यान भटकने के अर्थ में एकाग्रता की क्षमता पाई जाती है।

इस तरह से डॉमिनेंस के अर्थ में फैकल्टीज़ पाई जाती हैं।

88. शुरुआत को शुद्ध करने के लिए काबिलियत कैसे मिलती है?

विश्वास की क्षमता संकल्प के अर्थ में है; अविश्वास पर रोक के अर्थ में सद्गुणों की शुद्धि, विश्वास की क्षमता की शुरुआत की शुद्धि है। ऊर्जा की क्षमता प्रयास करने के अर्थ में है; आलस्य पर रोक के अर्थ में सद्गुणों की शुद्धि, ऊर्जा की क्षमता की शुरुआत की शुद्धि है। माइंडफुलनेस की क्षमता स्थापित करने के अर्थ में है; लापरवाही पर रोक के अर्थ में सद्गुणों की शुद्धि, माइंडफुलनेस की क्षमता की शुरुआत की शुद्धि है। एकाग्रता की क्षमता ध्यान न भटकने के अर्थ में है; उत्तेजना पर रोक के अर्थ में सद्गुणों की शुद्धि, एकाग्रता की क्षमता की शुरुआत की शुद्धि है। समझने की क्षमता देखने के अर्थ में है; अज्ञान पर रोक के अर्थ में सद्गुणों की शुद्धि, समझने की क्षमता की शुरुआत की शुद्धि है।

89. त्याग में पाँच काबिलियत होती हैं; कामुक इच्छाओं के जोश पर काबू पाने के मतलब में अच्छे गुणों की शुद्धि, पाँच काबिलियत की शुरुआत की शुद्धि है। गैर-बुराई में पाँच काबिलियत होती हैं; बुरी इच्छा पर काबू पाने के मतलब में अच्छे गुणों की शुद्धि, पाँच काबिलियत की शुरुआत की शुद्धि है। रोशनी को समझने में... [और इसी तरह बाकी पाँच रुकावटों, चार ज्ञानों, चार गैर-भौतिक उपलब्धियों, अठारह मुख्य समझ, और चार रास्तों के मामले में, तक] अरहंत . . . रास्ते में पाँच काबिलियत होती हैं; अच्छे गुणों की शुद्धि

सभी बुराइयों पर काबू पाने की भावना ही पाँच शक्तियों की शुरुआत की शुद्धि है।

शुरुआत की शुद्धि के अर्थ में क्षमताएँ इसी तरह पाई जाती हैं।

90. बेहतरीन होने की भावना में काबिलियत कैसे पाई जाती है?

श्रद्धा क्षमता के विकास के साथ उत्साह उत्पन्न होता है, अविश्वास को छोड़ने से उत्साह उत्पन्न होता है, अविश्वास की पीड़ा को छोड़ने से उत्साह उत्पन्न होता है, [गलत) दृष्टिकोण वाले विकारों को छोड़ने से उत्साह उत्पन्न होता है, स्थूल विकारों को छोड़ने से उत्साह उत्पन्न होता है, गौण विकारों को छोड़ने से उत्साह उत्पन्न होता है, सभी विकारों को छोड़ने से उत्साह उत्पन्न होता है; उत्साह से प्रसन्नता उत्पन्न होती है; तब प्रसन्नता के कारण श्रद्धा क्षमता उत्कृष्ट होती है। प्रसन्नता से खुशी उत्पन्न होती है; तब खुशी के कारण श्रद्धा क्षमता उत्कृष्ट होती है। खुशी से शांति उत्पन्न होती है; तब शांति के कारण श्रद्धा क्षमता उत्कृष्ट होती है। शांति से आनंद उत्पन्न होता है; तब खुशी के कारण श्रद्धा क्षमता उत्कृष्ट होती है। आनंद से ज्ञान उत्पन्न होता है; तब ज्ञान के कारण श्रद्धा क्षमता उत्कृष्ट होती है। ज्ञान से तत्परता की भावना उत्पन्न होती है; तब तत्परता की भावना के कारण श्रद्धा क्षमता उत्कृष्ट होती है। तत्परता की भावना के साथ वह बोध को एकाग्र करता है; तब श्रद्धा क्षमता एकाग्रता के कारण श्रद्धा के रूप में उत्कृष्ट होती है। वह इस प्रकार एकाग्र होकर बोध को पूरी तरह से लागू करता है; तब श्रद्धा क्षमता प्रयास के कारण श्रद्धा के रूप में उत्कृष्ट होती है। वह इस प्रकार लागू किए गए बोध को पूर्ण समभाव से देखता है; तब श्रद्धा क्षमता समता के कारण श्रद्धा के रूप में उत्कृष्ट होती है। समता के कारण बोध कई प्रकार के विकारों से मुक्त हो जाता है; तब श्रद्धा क्षमता मुक्ति के कारण श्रद्धा के रूप में उत्कृष्ट होती है। मुक्त होने के कारण उन विचारों का एक ही कार्य (स्वाद) हो जाता है; तब श्रद्धा क्षमता एकल कार्य (स्वाद) के अर्थ में विकास के कारण श्रद्धा के रूप में उत्कृष्ट होती है। इसके विकसित होने के कारण यह श्रेष्ठ [अर्थात् निब्बान] की ओर मुड़ जाता है; तब श्रद्धा क्षमता विमुख होने के कारण श्रद्धा के रूप में उत्कृष्ट होती है। इसके विमुख होने के कारण वह [अर्थात्, अब मार्ग से युक्त व्यक्ति, इसलिए [विकारों और स्कंधों दोनों] को त्याग देता है; तो विश्वास की क्षमता त्याग के कारण विश्वास के रूप में बकाया है। उनके त्याग दिए जाने के कारण वे (दोष और समूह) इसलिए खत्म हो जाते हैं [बिना दोबारा उभरे]; तो विश्वास की क्षमता खत्म होने के कारण विश्वास के रूप में बकाया है।

समाप्ति के ज़रिए त्याग दो तरह का होता है: त्याग यानी छोड़ना और त्याग यानी अंदर जाना (बाहर निकलना)। यह बुराइयों और जमाव को छोड़ता है, इसलिए यह त्याग जैसा त्याग है; ज्ञान समाप्ति में जाता है (बाहर निकलता है) जो कि है

निब्बान सिद्धांत, इस तरह यह त्याग है, जैसे कि प्रवेश करना (बाहर निकलना)। ये समाप्ति के ज़रिए त्याग के दो प्रकार हैं।

91. ऊर्जा क्षमता के विकास के साथ उत्साह पैदा होता है, आलस्य का त्याग करने से उत्साह पैदा होता है, आलस्य की पीड़ा का त्याग करने से उत्साह पैदा होता है, [गलत) दृष्टिकोण के साथ गुणांक की अशुद्धियों का त्याग करने से उत्साह पैदा होता है,... (और इसी प्रकार §90 के अंत तक, विश्वास के लिए ऊर्जा को प्रतिस्थापित करते हुए)।

92. चेतना के विकास के साथ उत्साह पैदा होता है, [25] प्रमाद का त्याग करने से उत्साह पैदा होता है,...

93. एकाग्रता की क्षमता के विकास से उत्साह पैदा होता है, उत्तेजना के त्याग से उत्साह पैदा होता है, . . .
ज्ञानशक्ति के विकास से उत्साह उत्पन्न होता है, अज्ञान के त्याग से निवृत्ति द्वारा त्याग . . . ये दो प्रकार के होते हैं का उत्साह उत्पन्न होता है। [26]

इस तरह से बेहतरीन होने के मतलब में काबिलियत पाई जाती है।

दूसरे पाठ खंड का अंत

95-9. स्थिर होने के अर्थ में क्षमताएँ कैसे पाई जाती हैं?

विश्वास की क्षमता के विकास के साथ जोश पैदा होता है; फिर विश्वास की क्षमता जोश के कारण विश्वास के रूप में स्थिर होती है। जोश से खुशी पैदा होती है; फिर विश्वास की क्षमता खुशी के कारण विश्वास के रूप में स्थिर होती है...

स्टेडिंग के अर्थ में फैकल्टीज़ इसी तरह पाई जाती हैं।

100. खत्म होने के अर्थ में क्षमताएँ कैसे पाई जाती हैं?

संकल्प के अर्थ में विश्वास की क्षमता अविश्वास को खत्म करती है, अविश्वास की पीड़ा को खत्म करती है। मेहनत के अर्थ में ऊर्जा की क्षमता आलस्य को खत्म करती है, आलस्य की पीड़ा को खत्म करती है। ध्यान लगाने के अर्थ में ध्यान लगाने की क्षमता लापरवाही को खत्म करती है, लापरवाही की पीड़ा को खत्म करती है। ध्यान न भटकने के अर्थ में एकाग्रता की क्षमता बेचैनी को खत्म करती है, बेचैनी की पीड़ा को खत्म करती है। देखने के अर्थ में समझने की क्षमता अज्ञानता को खत्म करती है, अज्ञानता की पीड़ा को खत्म करती है।

101. त्याग में पाँचों शक्तियाँ कामुकता की इच्छा को खत्म करती हैं, और वैराग्य में पाँचों शक्तियाँ दुर्भावना को खत्म करती हैं। [और इसी तरह बाकी सात रुकावटें, वगैरह, तक]। अरहंत मार्ग में पाँचों शक्तियाँ सभी बुराइयों को खत्म करती हैं।

इस तरह से खत्म होने के अर्थ में फैकल्टीज़ पाई जाती हैं।

102. पाँचों क्षमताएँ किस आधार पर पाई जाती हैं?

जिसके पास विश्वास है, वह अपने संकल्प पर विश्वास की क्षमता स्थापित करता है; जिसके पास विश्वास है, उसमें विश्वास की क्षमता संकल्प पर आधारित होती है। जिसके पास

एनर्जी मेहनत करने पर मिलती है; जिसके पास एनर्जी है, उसमें एनर्जी की क्षमता मेहनत करने पर आधारित होती है। जिसके पास माइंडफुलनेस है, उसमें माइंडफुलनेस की क्षमता स्थापित होने पर मिलती है; जिसके पास माइंडफुलनेस है, उसमें माइंडफुलनेस की क्षमता स्थापित होने पर आधारित होती है। जिसके पास कंसंट्रेशन है, उसमें कंसंट्रेशन की क्षमता ध्यान भटकने पर नहीं मिलती; जिसके पास कंसंट्रेशन है, उसमें कंसंट्रेशन की क्षमता ध्यान भटकने पर नहीं मिलती। जिसके पास समझ है, उसमें समझने की क्षमता देखने पर मिलती है; जिसके पास समझ है, उसमें समझने की क्षमता देखने पर आधारित होती है।

103. ध्यानी त्याग पर पाँच शक्तियों की स्थापना करता है; [27] ध्यानी में पाँच शक्तियाँ त्याग पर आधारित होती हैं। ध्यानी अ-दुर्भावना पर पाँच शक्तियों की स्थापना करता है; ध्यानी में पाँच शक्तियाँ अ-इच्छा-इच्छा पर आधारित होती हैं... [और इसी प्रकार आगे तक]... ध्यानी अरहंत मार्ग पर पाँच शक्तियों की स्थापना करता है; ध्यानी में पाँच शक्तियाँ अरहंत मार्ग पर आधारित होती हैं।

इस तरह से फैकल्टीज़ को पाया जाता है, जिसका मतलब है कि वे आधार पर हैं।



104. जब एक आम आदमी कॉन्संट्रेशन पैदा करता है, तो वह कितने पहलुओं में स्थापित करने में माहिर होता है? जब कोई शुरू करने वाला...? जब कोई जिसके नासूर खत्म हो गए हैं, वह कॉन्संट्रेशन पैदा करता है, तो वह कितने पहलुओं में स्थापित करने में माहिर होता है?

जब कोई आम आदमी कॉन्संट्रेशन करता है, तो वह सात पहलुओं में माहिर होता है। जब कोई शुरू करने वाला कॉन्संट्रेशन करता है, तो वह आठ पहलुओं में माहिर होता है। जब कोई जिसके दिमाग़ थक गए हैं, वह कॉन्संट्रेशन करता है, तो वह दस पहलुओं में माहिर होता है।

105. जब एक आम आदमी में एकाग्रता आ जाती है, तो वह किन सात बातों में माहिर हो जाता है?

चिंतन की वस्तु की ओर ध्यान दिए जाने के कारण: वह सहायक वस्तु की स्थापना करने में कुशल है, वह शांति का लक्षण स्थापित करने में कुशल है, वह परिश्रम का लक्षण स्थापित करने में कुशल है, वह गैर-विचलित होने का लक्षण स्थापित करने में कुशल है, वह प्रकाश स्थापित करने में कुशल है, वह प्रोत्साहन स्थापित करने में कुशल है, वह समता स्थापित करने में कुशल है।

जब एक आम आदमी कॉन्संट्रेशन बना लेता है, तो वह इन सात बातों में माहिर हो जाता है।

106. जब कोई व्यक्ति ध्यान लगाता है, तो वह किन आठ बातों में माहिर हो जाता है?

क्योंकि विचार की वस्तु की ओर ध्यान दिया गया है: वह

आधार-वस्तु को स्थापित करने में कुशल है,... वह समता स्थापित करने में कुशल है, वह एकता स्थापित करने में कुशल है।

जब कोई दीक्षा लेने वाला ध्यान लगा लेता है, तो वह इन आठ बातों को स्थापित करने में माहिर हो जाता है।

107. जब जिसका नासूर समाप्त हो जाता है, उसमें एकाग्रता उत्पन्न हो जाती है, तो वह किन दस बातों में सिद्धि प्राप्त करने में कुशल होता है? [28]

[चिंतन की वस्तु] का उल्लेख होने के कारण: वह सहायक-वस्तु को स्थापित करने में कुशल है, वह समता स्थापित करने में कुशल है, वह एकता स्थापित करने में कुशल है, वह भेद स्थापित करने में कुशल है, वह मुक्ति स्थापित करने में कुशल है।

जब किसी व्यक्ति का ध्यान खत्म हो जाता है, तो वह इन दस पहलुओं में स्थापित होने में कुशल हो जाता है।

108. जब एक आम आदमी में समझ आती है, तो वह कितने पहलुओं में स्थापित करने में माहिर होता है, और कितने पहलुओं में न स्थापित करने में माहिर होता है? जब कोई शुरू करने वाला...? जब कोई जिसकी समझ खत्म हो जाती है, उसमें समझ आती है, तो वह कितने पहलुओं में स्थापित करने में माहिर होता है, और कितने पहलुओं में न स्थापित करने में माहिर होता है?

जब एक आम आदमी समझ विकसित करता है, तो वह नौ पहलुओं में स्थापित करने में कुशल होता है और नौ पहलुओं में न स्थापित करने में कुशल होता है। जब कोई शुरू करने वाला समझ विकसित करता है, तो वह दस पहलुओं में स्थापित करने में कुशल होता है और दस पहलुओं में न स्थापित करने में कुशल होता है। जब कोई जिसकी समझ खत्म हो जाती है, उसे समझ विकसित होती है, तो वह बारह पहलुओं में स्थापित करने में कुशल होता है और बारह पहलुओं में न स्थापित करने में कुशल होता है।

109. जब एक आम आदमी में समझ आ जाती है, तो वह किन नौ बातों में स्थापित करने में माहिर होता है और किन नौ बातों में न स्थापित करने में माहिर होता है?

वह नश्वर के रूप में (दिखावट) स्थापित करने में कुशल है, और स्थायी के रूप में गैर-स्थापना में कुशल है; दर्द के रूप में स्थापित करने में कुशल है, और आनंद के रूप में गैर-स्थापना में कुशल है; स्वयं के रूप में स्थापित करने में कुशल है; और स्वयं के रूप में गैर-स्थापना में कुशल है; थकावट के रूप में स्थापित करने में कुशल है, और संकुचितता के रूप में गैर-स्थापना में कुशल है; पतन के रूप में स्थापित करने में कुशल है, और संचय की गैर-स्थापना में कुशल है; परिवर्तन की स्थापना में कुशल है, और शाश्वतता के रूप में गैर-स्थापना में कुशल है; संकेतहीन की स्थापना में कुशल है, और संकेत की गैर-स्थापना में कुशल है; इच्छाहीन की स्थापना में कुशल है, और इच्छा की गैर-स्थापना में कुशल है; शून्यता की स्थापना में कुशल है, और गलत व्याख्या की गैर-स्थापना में कुशल है।

जब सामान्य मनुष्य अंतर्दृष्टि विकसित करता है, तो वह इन नौ पहलुओं में स्थापना में कुशल होता है और इन नौ पहलुओं में अप्राप्य में कुशल होता है।

110. जब कोई दीक्षित अंतर्दृष्टि विकसित करता है, तो वह किन दस पहलुओं [29] में स्थापना में कुशल होता है और किन दस पहलुओं में अप्राप्य में कुशल होता है?

वह नश्वर को स्थापित करने में माहिर है, और नश्वर को स्थायी के रूप में स्थापित करने में माहिर है; शून्य को स्थापित करने में माहिर है, और गलत मतलब को स्थापित न करने में माहिर है; ज्ञान को स्थापित करने में माहिर है, और अनजाने को स्थापित न करने में माहिर है।

जब कोई शुरू करने वाला समझ हासिल करता है, तो वह इन दस बातों में स्थापित होने में माहिर हो जाता है, और इन दस बातों में गैर-स्थापित होने में भी माहिर हो जाता है।

111. जब किसी के नासूर खत्म हो जाते हैं और उसे समझ आ जाती है, तो वह किन बारह बातों में स्थापित होने में माहिर होता है और किन बारह बातों में न होने में माहिर होता है?

वह नश्वर को स्थापित करने में माहिर है, और स्थायी को न स्थापित करने में माहिर है;.. शून्य को स्थापित करने में माहिर है, और गलत मतलब को न स्थापित करने में माहिर है; ज्ञान को स्थापित करने में माहिर है, और अनजाने को न स्थापित करने में माहिर है; बंधन न स्थापित करने में माहिर है, और बंधन न स्थापित करने में माहिर है; समाप्ति को स्थापित करने में माहिर है, और बनने को न स्थापित करने में माहिर है।

जब जिसकी नासूर खत्म हो जाती है, उसमें समझ आ जाती है, तो वह इन बारह पहलुओं में स्थापित होने में माहिर हो जाता है और इन बारह पहलुओं में न होने में भी माहिर हो जाता है।

*

112. क्योंकि [सोचने की चीज़] पर ध्यान दिया गया है:

सपोर्टिंग-ऑब्जेक्ट को बनाने की स्किल से वह काबिलियत को जोड़ता है, उनके दायरे को समझता है और एक जैसा होने का मतलब समझता है, वह ताकतों को जोड़ता है, वह ज्ञान बढ़ाने वाले फैक्टर्स को जोड़ता है, .. वह . [दूसरे] आइडियाज़ को जोड़ता है, उनके दायरे को समझता है और एक जैसा होने का मतलब समझता है; 'वह काबिलियत को जोड़ता है', वह काबिलियत को कैसे जोड़ता है? वह रेज़ोल्यूशन के मतलब में फेथ काबिलियत को जोड़ता है, [वह मेहनत के मतलब में एनर्जी काबिलियत को जोड़ता है, वह एस्टैब्लिशमेंट के मतलब में माइंडफुलनेस काबिलियत को जोड़ता है, वह नॉन-डिस्ट्रैक्शन के मतलब में कंसंट्रेशन काबिलियत को जोड़ता है, वह देखने के मतलब में समझने काबिलियत को जोड़ता है;] ९

शांति का संकेत स्थापित करने में कौशल के माध्यम से [वह क्षमताओं को जोड़ता है,]... .

परिश्रम के संकेत को स्थापित करने में कौशल के माध्यम से [वह]...

ध्यान भटकने से बचने का संकेत देने की स्किल के ज़रिए...

रोशनी स्थापित करने में कौशल के माध्यम से...

प्रोत्साहन देने में स्किल के ज़रिए...

संतुलन स्थापित करने के कौशल के माध्यम से...

एकता स्थापित करने में कौशल के माध्यम से...

अंतर स्थापित करने में कौशल के माध्यम से...

मुक्ति स्थापित करने में कौशल के माध्यम से...
अस्थायी के रूप में स्थापना में कौशल के माध्यम से।
गैर-स्थापना में कौशल के माध्यम से स्थायी के रूप में।
... (और इसी तरह धारा 111 में बाकी जोड़ों के साथ भी)...
समाप्ति की स्थापना में कौशल के माध्यम से...

संरचनाओं की अस्थापना में कौशल के माध्यम से वह क्षमताओं को जोड़ता है,... [वह [अन्य] विचारों को जोड़ता है, उनके क्षेत्र को समझता है और समानता के अर्थ को समझ जाता है; ['वह क्षमताओं को जोड़ता है' वह क्षमताओं को कैसे जोड़ता है? वह संकल्प के अर्थ में विश्वास क्षमता को . . . जोड़ता है, वह देखने के अर्थ में समझ क्षमता को जोड़ता है)। [30]10

* *
*

113. चौसठ पहलुओं में तीन शक्तियों की महारत के रूप में समझ, नासूरों के नाश (थकावट) का ज्ञान है।
114. कौन सी तीन काबिलियत हैं? मैं-अनजान-को-जानूंगा काबिलियत, आखिरी-ज्ञान काबिलियत, और आखिरी-जानने वाले काबिलियत।
115-124. कितनी जगहें... [Tr. I §§552-62 को बिना बदले दोहराएं]... ये नासूर यहां खत्म हो जाते हैं।

*

125. इस दुनिया में उसके लिए कुछ भी अनदेखा नहीं है,
कुछ भी अपरिचित नहीं, और कुछ भी अज्ञात नहीं;
उसने वह सब अनुभव किया है जो जाना जा सकता
है: इसलिए उस पूर्ण को सब कुछ देखने वाला कहा जाता है।

126. सब कुछ देखने वाला: किस अर्थ में सब कुछ देखने वाला? (रिपीट Tr. 1 §608].
127. जिस सीमा तक दुख में दुख का अर्थ ज्ञात है, उस सीमा तक दुख का कोई अर्थ अज्ञात नहीं है, इस प्रकार वह सर्वद्रष्टा है। सर्वदर्शी होना समझने की क्षमता है। समझने की क्षमता के माध्यम से संकल्प के अर्थ में विश्वास क्षमता, परिश्रम के अर्थ में ऊर्जा क्षमता, स्थापना के अर्थ में जागरूकता क्षमता और गैर-विचलित होने के अर्थ में एकाग्रता क्षमता है। जिस सीमा तक

दुख में दुख का अर्थ देखा जाता है, पहचाना जाता है, महसूस किया जाता है, [32] समझ से सुनाई देता है, वहां दुख का कोई अर्थ नहीं है समझ से परे दुख उठाते हुए भी, वह सब कुछ देखने वाला है। ness समझने की क्षमता है। इसके ज़रिए...

ओरिजिन के अर्थ की सीमा तक... (और इसी तरह बाकी चार एक्चुअलिटीज़ के साथ भी)।
128. अर्थ-भेद के अर्थ की सीमा तक अर्थ-भेद में... [और इसी प्रकार शेष चार भेद वाले राष्ट्रों के साथ भी)...

जहाँ तक 'डिस्क्रिमिनेशन-ऑफ़-परस्पिक्युइटी' में 'डिस्क्रिमिनेशन-ऑफ़-परस्पिक्युइटी' का मतलब पता है, वहाँ 'डिस्क्रिमिनेशन-ऑफ़-परस्पिक्युइटी' का कोई मतलब अनजान नहीं है, वह इस तरह है...

जहाँ तक साफ़-साफ़ समझ का मतलब साफ़-साफ़ समझ में आता है, यह देखा जाता है, पहचाना जाता है,...

129. दूसरों की काबिलियत को समझने की जानकारी की हद तक...

दूसरे लोगों के बायस और अंदरूनी टेंडेंसी के ज्ञान की हद तक।

ट्विन मेटामोर्फोसिस के ज्ञान की सीमा तक...

महान करुणा की प्राप्ति के ज्ञान की सीमा तक...

इस दुनिया में, इसके देवताओं, इसके मारों और इसके ब्रह्म देवताओं के साथ, इस पीढ़ी में इसके तपस्वियों और ब्राह्मणों के साथ, इसके राजकुमारों और मनुष्यों के साथ, जो कुछ भी मन से देखा, सुना, महसूस किया, जाना, पाया, खोजा, माना जाता है, उस हद तक जो समझ से जाना, देखा, पहचाना, महसूस किया, सुना जाता है, उसमें समझ से कुछ भी गलत नहीं है, इस प्रकार वह सब कुछ देखने वाला है। सब कुछ देखने की क्षमता ही समझने की क्षमता है। समझने की क्षमता के ज़रिए संकल्प के अर्थ में विश्वास की क्षमता होती है,

. . . और ध्यान भटकने से बचने के अर्थ में एकाग्रता की क्षमता होती है।

130. जिसके पास विश्वास है वह कोशिश करता है; जो कोशिश करता है उसे विश्वास होता है। जिसके पास विश्वास है वह स्थापित करता है; जो स्थापित करता है उसे विश्वास होता है। जिसके पास विश्वास है वह ध्यान लगाता है; जो ध्यान लगाता है उसे विश्वास होता है। जिसके पास विश्वास है वह समझता है; जो समझता है उसे विश्वास होता है।

जो प्रयास करता है, वह स्थापित करता है; जो स्थापित करता है, वह प्रयास करता है। जो प्रयास करता है, वह ध्यान केंद्रित करता है; जो ध्यान केंद्रित करता है, वह प्रयास करता है। जो प्रयास करता है, वह समझता है; जो समझता है, वह प्रयास करता है। जो प्रयास करता है, उसमें विश्वास होता है; जिसमें विश्वास होता है, वह प्रयास करता है।

जो स्थापित करता है वह ध्यान केंद्रित करता है; जो ध्यान केंद्रित करता है वह स्थापित करता है।

जो ध्यान लगाता है वह समझता है; जो समझता है वह ध्यान लगाता है।

जो समझता है उसे विश्वास होता है; जो विश्वास करता है वह समझता है। जो समझता है वह प्रयास करता है; जो प्रयास करता है वह समझता है। जो समझता है वह स्थापित करता है; जो स्थापित करता है वह समझता है। जो समझता है वह ध्यान केंद्रित करता है; जो ध्यान केंद्रित करता है वह समझता है।

131. क्योंकि इसमें विश्वास है, इसलिए यह काम करता है; क्योंकि यह काम करता है, इसलिए इसमें विश्वास है। क्योंकि इसमें विश्वास है, इसलिए यह स्थापित है; क्योंकि यह स्थापित है, इसलिए इसमें विश्वास है। क्योंकि इसमें विश्वास है, इसलिए यह एकाग्र है; क्योंकि यह एकाग्र है, इसलिए इसमें विश्वास है। क्योंकि इसमें विश्वास है, इसलिए इसमें समझ है; क्योंकि इसमें समझ है, इसलिए इसमें विश्वास है।

क्योंकि यह लगाया गया है इसलिए यह स्थापित है; क्योंकि यह स्थापित है इसलिए यह लगाया गया है... [33]

क्योंकि यह स्थापित है, यह केंद्रित है; क्योंकि यह केंद्रित है, यह स्थापित है...<...केंद्रित... समझ है...>

क्योंकि उसके पास समझ है, इसलिए उसमें विश्वास है; क्योंकि उसके पास विश्वास है, इसलिए उसमें समझ। क्योंकि इसमें समझ है, इसलिए यह काम करता है; क्योंकि यह जब उसने यह समझा कि यह समझ है, तब वह स्थापित हो गया। क्योंकि यह स्थापित है इसमें समझ है। क्योंकि इसमें समझ है। यह एकाग्र है; क्योंकि यह एकाग्र है, इसलिए इसमें समझ है।

132-40. ज्ञानी की देखने वाली आँख ज्ञानी का ज्ञान है; ज्ञानी का ज्ञान ज्ञानी की देखने वाली आँख है। उस देखने वाली आँख से पूर्ण परमेश्वर प्राणियों को उनकी आँखों पर थोड़ी धूल के साथ, उनकी आँखों पर बहुत धूल के साथ भी देखता है। [Tr. .. 1 §§ 574-82 को बिना किसी और बदलाव के दोहराएं]।

141. वह इन पाँचों शक्तियों को इन पचास पहलुओं में जानता, देखता, पहचानता और उनमें प्रवेश करता है।

तीसरे Recitation सेक्शन का अंत।

फैकल्टीज़ पर ग्रंथ का अंत।



नोट्स

[1] असद्दियस्सा के लिए सद्दिन्द्रियस्सा पढ़ें (पी.टी.एस. संस्करण खंड ii, पृ. 2, 1.24)।

*(§24) पहला ट्रीटमेंट (§§18-23) उन क्षमताओं से जुड़ा है जो उनके पैदा होने के एक ही पल में होती हैं, जबकि दूसरा (§§24-9) उनके पैदा होने के बाद एक समय में उनकी खेती और उन्हें बेहतर बनाने से जुड़ा है (PsA 376 Se)।

[3] इस मुहावरे के एक और उदाहरण के लिए M i 11 देखें।

*(§31) 'कुछ ज्ञान' का मतलब है मेंटैलिटी-मैटेरियलिटी की परिभाषा के शुरुआती स्टेज से लेकर पाथ-अटेनमेंट से ठीक पहले वाले स्टेज तक की समझ, यानी वंश-परिवर्तन (PSA 377 S)।

[5] (§32) आयतन शब्द के अर्थ के लिए विस्म 481 देखें।

[6] (§43) देखें एन डी 13. अवर्थापना (निश्चितता) शब्द पी.टी.एस. डिक्ट में नहीं है।

[7] §§31-33 को बाद में व्यवहार पर ग्रंथ (ट्र. XXV) के रूप में पुन: प्रस्तुत किया गया है।

[8] ($90) इस § के आखिर के लिए Tr. III § 576 देखें।

[9] (§112) Cf. ट्र. 111 § § 203.

1° P.T.S. वॉल्यूम ii, पेज 29, 11. 19ff.: जैसा बताया गया है, पेयाल अस्पष्ट हैं; '41' को 1 के बजाय 1 19 की शुरुआत में रखा जाना चाहिए था। 23. 'अवज्जितत्ता' पेज के आखिर तक पूरे पेज को कंट्रोल करता है, और हर सब-क्लॉज (1) आरामनु-पठनकुसलवासेना'... (2) 'समथनिमित्तिपठनकुसलवासेना'... वगैरह से शुरू होता है। आखिरी लाइन में समथण च पतिविज्जति... पे... लिखा होना चाहिए (बर्मीज़ ट्रांसक्रिप्ट, वगैरह देखें)

[ग्रंथ V-मुक्ति पर]

सुत्त स्रोत पहले ही दिए जा चुके हैं

1. [35] 'भिक्षुओं, ये तीन मुक्ति हैं। कौन सी तीन? शून्यता से मुक्ति, संकेतहीनता से मुक्ति, इच्छाहीनता से मुक्ति। ये, भिक्षुओं, तीन मुक्ति हैं' <सुत्त का पता नहीं चला; cf. विन iii 93, पेट 253 जहां नानामोली एक सुत्त का पता लगाने में असमर्थ थे, उनके अनुवाद का पृष्ठ 69>।

2. इसके अलावा, अड़सठ मुक्ति हैं। [साथ ही शून्यता से मुक्ति, बिना किसी निशान के मुक्ति, इच्छा-शून्यता से मुक्ति; [गिनती नहीं-ऊपर शामिल;}

मुक्ति के अंदर उभरने के रूप में मुक्ति, बाहर से उभरने के रूप में मुक्ति, दोनों तरह से उभरने के रूप में मुक्ति; [गिनती 3;]

अंदर से निकलने वाली चार मुक्ति, बाहर से निकलने वाली चार मुक्ति, दोनों तरह से निकलने वाली चार मुक्ति; [गिनती 9 - पिछले 3 में शामिल हर सेट का Ist;]

अंदर से उभरने के हिसाब से चार मुक्ति, बाहर से उभरने के हिसाब से चार मुक्ति, दोनों तरह से उभरने के हिसाब से चार मुक्ति; [गिनती 12;]

अंदर से उभरने के ट्रैंक्विलाइज़ेशन के तौर पर चार मुक्ति, बाहर से उभरने के ट्रैंक्विलाइज़ेशन के तौर पर चार मुक्ति, दोनों तरह से उभरने के ट्रैंक्विलाइज़ेशन के तौर पर चार मुक्ति; [गिनती 12;]

मुक्ति का वर्णन इस तरह किया गया है, भौतिकता से ग्रस्त होने पर, वह भौतिकता के उदाहरण देखता है; मुक्ति का वर्णन इस तरह किया गया है, अंदर से (अपने अंदर) भौतिकता को न समझने पर, वह बाहर से भौतिकता के उदाहरण देखता है; मुक्ति का वर्णन इस तरह किया गया है, वह केवल सुंदर मुक्ति पर दृढ़ है, जो असीम स्थान वाले आधार को पाने के रूप में है; मुक्ति का अर्थ है असीम चेतना वाले आधार को पाना; मुक्ति का अर्थ है शून्यता वाले आधार को पाना; मुक्ति का अर्थ है न तो समझ और न ही गैर-समझ वाले आधार को पाना; मुक्ति का अर्थ है समझ और एहसास का खत्म होना; [गिनती 8;]

सामयिक मुक्ति, गैर-सामयिक मुक्ति; [गिनती 2;]

अवसर से सम्बन्धित मुक्ति, अवसर से असंबद्ध मुक्ति; [गिनती 2;]

अपराजेय मुक्ति, अपराजेय मुक्ति; [गिनती 2;]

सांसारिक मुक्ति, अलौकिक मुक्ति; [गिनती 2;]

मुक्ति जो कैंसर का शिकार है, मुक्ति जो कैंसर का शिकार नहीं है; (गिनती 2;)

भौतिकवादी मुक्ति, अभौतिकवादी मुक्ति, अभौतिकवादी से भी ज़्यादा अभौतिकवादी मुक्ति; (गिनती 3;)

इच्छा से मुक्ति, इच्छाहीनता से मुक्ति, शांत इच्छा से मुक्ति; [गिनती 2 - दूसरी पहले ही ऊपर शामिल है;)

बंधनबद्ध मुक्ति, बंधनमुक्त मुक्ति; [गिनती 2;]

एकता पर आधारित मुक्ति, भिन्नता पर आधारित मुक्ति; [गिनती 2;]

[36] अनुभूति की मुक्ति, ज्ञान की मुक्ति, मुक्ति का वर्णन इस प्रकार है: [यहाँ जो कुछ भी अनुभव किया जाता है] वह शीतल हो सकता है; [गिनती 3;] ज्ञान मुक्ति, आसक्ति न करने के माध्यम से ज्ञान की मुक्ति। [गिनती 2.]

*

3. शून्यता से मुक्ति क्या है?

यहाँ, भिक्षु, एक भिक्षु, जंगल में या किसी पेड़ की जड़ के पास या किसी खाली जगह पर जाकर, इस तरह सोचता है: 'यह खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों से खाली है'। वह इसका कोई गलत मतलब नहीं निकालता, इसलिए यह खालीपन से मुक्ति है। यह खालीपन से मुक्ति है।

4. बिना निशान के मुक्ति क्या है?

यहाँ, भिक्षु, एक भिक्षु, जंगल में या किसी पेड़ की जड़ के पास या किसी खाली जगह पर जाकर, इस तरह सोचता है: "यह खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों से खाली है।" वह उस पर कोई निशान नहीं बनाता, इसलिए यह निशान न होने से मुक्ति है। यह निशान न होने से मुक्ति है।

5. इच्छा-रहित होकर मुक्ति क्या है?

यहाँ, भिक्षु, एक भिक्षु, जंगल में या किसी पेड़ की जड़ के पास या किसी खाली जगह पर जाकर, इस तरह सोचता है: 'यह खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों से खाली है'। वह इस पर कोई इच्छा नहीं रखता, इसलिए यह बिना इच्छा के मुक्ति है। यह बिना इच्छा के मुक्ति है।

6. अंदर से [बुराइयों से] बाहर निकलना क्या है?

चार ज्ञान। यह अंदर से बाहर निकलना है।

7. बाह्य रूप से [वस्तु से] उभरना क्या है?

चार गैर-भौतिक उपलब्धियाँ। यह बाहर से उभरने वाली मुक्ति है।

8. दोनों तरह से उभरने के रूप में मुक्ति क्या है?

चार महान मार्ग। यह दोनों तरह से उभरने के रूप में मुक्ति है।

9. अंदर से उभरने पर चार मुक्ति क्या हैं?

पहला झाना रुकावटों से आता है। दूसरा झाना लगाए गए और लगातार सोच से आता है। तीसरा झाना खुशी से आता है। चौथा झाना खुशी और दर्द से आता है। ये चार मुक्ति हैं जो अंदर से उभरने के हिसाब से हैं।

10. बाहर से मिलने वाली चार मुक्तिएं क्या हैं?

असीम जगह वाले बेस की प्राप्ति, मैटेरियलिटी की समझ से, रेजिस्टेंस की समझ से और डिफरेंस की समझ से होती है। असीम चेतना वाले बेस की प्राप्ति, असीम जगह वाले बेस की समझ से होती है। शून्यता वाले बेस की प्राप्ति, असीम चेतना वाले बेस की समझ से होती है। न तो समझ और न ही नॉन-परसेप्शन वाले बेस की प्राप्ति, शून्यता वाले बेस की समझ से होती है। ये चार मुक्ति हैं जो बाहर से उभरती हैं।

11. दोनों तरह से चार मुक्ति क्या हैं?

धारा-प्रवेश पथ व्यक्तित्व के [गलत] दृष्टिकोण से, अनिश्चितता से, और गुण और कर्तव्य की गलत समझ से, और साथ ही (गलत) दृष्टिकोण और अनिश्चितता की अंतर्निहित प्रवृत्तियों से उभरता है, और यह उन दोषों और उनके परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले समूहों से उभरता है, और यह सभी संकेतों से बाह्य रूप से [37] उभरता है। एक बार लौटने वाला मार्ग कामुक-इच्छाओं और प्रतिरोध के लोभ की स्थूल बेड़ियों से, और कामुक-इच्छाओं और प्रतिरोध के लोभ की स्थूल अंतर्निहित प्रवृत्तियों से उभरता है, और यह दोषों और उनके परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले समूहों से उभरता है, और यह सभी संकेतों से बाह्य रूप से उभरता है। न लौटने वाला मार्ग कामुक-इच्छाओं और प्रतिरोध के लोभ की द्वितीयक बेड़ियों से, और कामुक-इच्छाओं और प्रतिरोध के लोभ की द्वितीयक अंतर्निहित प्रवृत्तियों से उभरता है, अरहंत मार्ग भौतिक चीज़ों के लालच से, अमूर्त चीज़ों के लालच से, घमंड से, बेचैनी से, अज्ञानता से, और घमंड, चीज़ों के लालच और अज्ञानता की अंदरूनी आदतों से निकलता है, और यह बुराइयों और उनके कारण होने वाले जमाव से निकलता है, और यह बाहर से सभी निशानियों से निकलता है। ये दोनों तरह से चार मुक्ति हैं।

12. अंदर से उभरने के हिसाब से चार मुक्ति क्या हैं?

अप्लाइड-थॉट और सस्टेन्ड-थॉट और खुशी और आनंद और कॉग्निजेंस का एक होना, जिसका मकसद पहला ज्ञान पाना है। अप्लाइड-थॉट... दूसरा ज्ञान... तीसरा ज्ञान। अप्लाइड-थॉट और सस्टेन्ड-थॉट और खुशी और आनंद और कॉग्निजेंस का एक होना, जिसका मकसद चौथा ज्ञान पाना है। ये चार मुक्ति हैं जो अंदर से उभरने के हिसाब से हैं।

13. बाहर से उभरने के हिसाब से चार मुक्ति क्या हैं?

अप्लाइड-थॉट और सस्टेन्ड-थॉट और खुशी और आनंद और कॉग्निजेंस का एक होना जिसका मकसद असीमित स्पेस वाले बेस को पाना है। अप्लाइड-थॉट... असीमित चेतना वाला बेस... शून्य वाला बेस... अप्लाइड-थॉट और सस्टेन्ड-थॉट और खुशी और आनंद और कॉग्निजेंस का एक होना जिसका मकसद न तो परसेप्शन और न ही नॉन-परसेप्शन वाला बेस पाना है। ये बाहर से उभरने के हिसाब से चार मुक्ति हैं।

14. दोनों तरह से उभरने के हिसाब से चार मुक्ति क्या हैं?

नश्वरता का चिंतन और दर्द का चिंतन और अन-स्व का चिंतन, जिसका मकसद स्ट्रीम-एंट्री का रास्ता पाना है। नश्वरता का चिंतन... एक बार लौटने वाला रास्ता... न लौटने वाला रास्ता। नश्वरता का चिंतन और दर्द का चिंतन और अन-स्व का चिंतन, जिसका मकसद अरहंत का रास्ता पाना है। ये दोनों तरह से उभरने के हिसाब से चार मुक्ति हैं।

15. इन-टर्मली इमर्जेंस के ट्रैंक्विलाइज़ेशन के तौर पर चार मुक्ति क्या हैं?

प्रथम झान की प्राप्ति या उसका परिणाम। दूसरे झान की प्राप्ति या उसका परिणाम। तीसरे झान की प्राप्ति या उसका परिणाम। चौथे झान की प्राप्ति या उसका परिणाम। ये [38] आंतरिक रूप से उद्भव के शांति के रूप में चार मुक्ति हैं।

16. बाहर से उभरने के ट्रैंक्विलाइज़ेशन के तौर पर चार मुक्ति क्या हैं?

असीम जगह या उसके नतीजे वाले आधार की प्राप्ति। असीम चेतना या उसके नतीजे वाले आधार की प्राप्ति। शून्यता या उसके नतीजे वाले आधार की प्राप्ति। न समझ, न समझ या उसके नतीजे वाले आधार की प्राप्ति। ये चार मुक्ति हैं जो बाहर से उभरने के शांत करने के रूप में हैं।

17. दोनों तरह से उभरने के ट्रैंक्विलाइज़ेशन के तौर पर चार मुक्ति क्या हैं?

स्ट्रीम-एंट्री पथ का स्ट्रीम-एंट्री फल। एक बार लौटने वाले पथ का एक बार लौटने वाला फल। न लौटने वाले पथ का न लौटने वाला फल। अरहंत पथ का अरहंत फल। ये दोनों तरह से उभरने के ट्रैंक्विलाइज़ेशन के तौर पर चार मुक्ति हैं।

18. इस तरह बताई गई मुक्ति क्या है: भौतिकता से ग्रस्त होने पर, वह भौतिकता के उदाहरण देखता है?

यहाँ कोई व्यक्ति अंदर से नीले-काले रंग के निशान पर ध्यान देता है

खुद को <जैसे उसके बाल, PsA>। उसे नीले-काले रंग का एहसास होता है। वह उस निशान को अच्छी तरह समझता है, अच्छी तरह याद रखता है, अच्छी तरह डिफाइन करता है। उस निशान को अच्छी तरह समझने, अच्छी तरह ध्यान में रखने, अच्छी तरह डिफाइन करने के बाद, वह अपनी चेतना को बाहर से नीले-काले रंग के निशान पर लगाता है। उसे नीले-काले रंग का एहसास होता है। वह उस निशान को अच्छी तरह समझता है, अच्छी तरह याद रखता है, अच्छी तरह डिफाइन करता है। उस निशान को अच्छी तरह समझने, अच्छी तरह ध्यान में रखने, अच्छी तरह डिफाइन करने के बाद, वह उसे दोहराता है, डेवलप करता है और बहुत कुछ करता है। उसे ऐसा लगता है: "यह अंदर से और बाहर से और दोनों तरह से मैटेरियलिटी है"। इस तरह वह मैटेरियलिटी को समझता है।

यहाँ कोई अपने अंदर पीले रंग के निशान पर ध्यान देता है... यहाँ कोई अपने अंदर लाल रंग के निशान पर ध्यान देता है... यहाँ कोई अपने अंदर सफेद रंग के निशान पर ध्यान देता है... उसे ऐसा लगता है: "यह अंदर से और बाहर से और दोनों तरह से मैटेरियलिटी है"। इस तरह वह मैटेरियलिटी को समझ पाता है।

ऐसी मुक्ति का वर्णन इस प्रकार किया गया है: भौतिकता से युक्त होने पर वह भौतिकता के उदाहरण देखता है।

19. इस तरह बताई गई मुक्ति क्या है: अंदर से भौतिकता को न समझने वाला, बाहर भौतिकता के उदाहरण देखता है?

यहाँ कोई व्यक्ति अपने भीतर नीले-काले रंग के चिन्ह पर ध्यान देता है [39]। उसे नीले-काले रंग का बोध नहीं होता। वह नीले-काले रंग के चिन्ह पर बाह्य रूप से अपना ज्ञान लगाता है। उसे नीले-काले रंग का बोध होता है। वह पूरी तरह से समझ लेता है... पूरी तरह से समझ लेने के बाद, वह इसका बहुत . . . लाभ उठाता है। उसे यह इस प्रकार दिखाई देता है: 'आंतरिक रूप से कोई भौतिकता नहीं है, यह बाहरी रूप से भौतिकता है।' इस प्रकार वह भौतिकता के एक उदाहरण का जानकार होता है।

यहां कोई अंदर से पीले रंग के निशान पर ध्यान देता है...
यहां कोई अंदर से लाल रंग के निशान पर ध्यान देता है...
यहाँ कोई अंदर से सफ़ेद रंग के निशान पर ध्यान देता है... उसे ऐसा लगता है: "अंदर से कोई मैटेरियलिटी नहीं है; यह बाहर से मैटेरियलिटी का एक उदाहरण है"। इस तरह वह मैटेरियलिटी के एक उदाहरण को समझ पाता है।

ऐसी आज़ादी इस तरह बताई गई है: अंदर से मैटेरियलिटी को न समझ पाने पर, वह बाहर मैटेरियलिटी के उदाहरण देखता है।

20. इस तरह बताई गई मुक्ति क्या है: वह सिर्फ़ सुंदर चीज़ों पर ही ध्यान देता है?

यहाँ एक भिक्षु अपनी दया से भरी इच्छा के साथ एक कोने पर ध्यान लगाए रहता है, वैसे ही दूसरे कोने पर, वैसे ही तीसरे कोने पर, वैसे ही चौथे कोने पर; इसी तरह ऊपर और नीचे और चारों ओर; वह हर जगह पूरी दुनिया पर ध्यान लगाए रहता है और उसी तरह अपनी दया से भरी इच्छा के साथ, भरपूर, ऊंचा, बेहिसाब, दुख से मुक्त रहता है। दया के विकास के कारण जीव अप्रिय नहीं होते।

वह अपनी करुणा से संपन्न इच्छाशक्ति के साथ एक दिशा में ध्यान लगाए रहता है... करुणा के विकास के कारण प्राणी घृणा-रहित होते हैं।

वह अपनी खुशी से भरी इच्छा के साथ एक तरफ ध्यान लगाए रहता है... खुशी के विकास के कारण प्राणी अरुचिकर होते हैं। वह अपनी

शांति से भरी इच्छा के साथ एक तरफ ध्यान लगाए रहता है। शांति

.. के विकास के कारण प्राणी अरुचिकर होते हैं। ऐसी मुक्ति का

वर्णन इस प्रकार किया गया है: वह केवल उसी पर ध्यान लगाता है जो सुंदर है।

21. असीम आकाश के आधार की प्राप्ति के रूप में मुक्ति क्या है?

यहाँ भौतिकता की समझ को पूरी तरह से पार करने के साथ, विरोध की समझ के गायब होने के साथ, अंतर की समझ पर ध्यान न देने के साथ, 'अनलिमिटेड स्पेस' के बारे में जानकर, एक भिक्षु असीम स्पेस के बेस में प्रवेश करता है और उसमें रहता है। यही मुक्ति है, जो असीम स्पेस के बेस को पाने के रूप में है।

22. असीम चेतना से बने आधार की प्राप्ति रूपी मुक्ति क्या है? यहाँ असीम

स्थान से बने आधार को पूरी तरह पार करके, [40] 'असीमित चेतना' से अवगत होकर, एक भिक्षु असीम चेतना से बने आधार में प्रवेश करता है और उसमें निवास करता है। असीम चेतना से बने आधार की प्राप्ति रूपी यही मुक्ति है।

23. शून्यता के आधार की प्राप्ति के रूप में मुक्ति क्या है?

यहाँ, असीम चेतना के आधार को पूरी तरह से पार करके, (यह जानते हुए कि) 'कुछ भी नहीं है', एक भिक्षु शून्य के आधार में प्रवेश करता है और उसमें रहता है। यही मुक्ति है, शून्य के आधार को पाना।

24. न तो कोई एहसास होता है और न ही कोई एहसास न होता है, ऐसे आधार की प्राप्ति के रूप में मुक्ति क्या है?

यहाँ, शून्यता के आधार को पूरी तरह से पार करके, एक भिक्षु उस आधार में प्रवेश करता है और रहता है जिसमें न तो कोई बोध होता है और न ही कोई बोध। यह मुक्ति है, क्योंकि इसमें न तो कोई बोध होता है और न ही कोई बोध।

25. कभी-कभी मिलने वाली आज़ादी क्या है?

चार ज्ञान और चार अभौतिक उपलब्धियाँ। यह कभी-कभी मिलने वाली मुक्ति है।

26. कभी-कभार मिलने वाली मुक्ति क्या है?

चार महान मार्ग, तप और निर्वाण के चार फल। यह कभी-कभार मिलने वाली मुक्ति है।

27. किसी अवसर से जुड़ी मुक्ति क्या है?
चार ज्ञान और चार अभौतिक उपलब्धियाँ। यह एक अवसर से जुड़ी मुक्ति है।
28. मुक्ति किसी अवसर से संबंधित नहीं है, ऐसा क्या है?
चार महान मार्ग, तप और निर्वाण के चार फल? यह मुक्ति किसी अवसर से संबंधित नहीं है।
29. असाध्य मुक्ति क्या है?
चार ज्ञान और चार अभौतिक उपलब्धियाँ। यही अभेद्य मुक्ति है।
30. अजेय मुक्ति क्या है?
चार महान मार्ग, तप और निर्वाण के चार फल। यही अजेय मुक्ति है।
31. सांसारिक मुक्ति क्या है?
चार ज्ञान और चार अभौतिक उपलब्धियाँ। यही सांसारिक मुक्ति है।

32. अलौकिक मुक्ति क्या है?
चार महान मार्ग, तप और निर्वाण के चार फल। यही अलौकिक मुक्ति है।
33. वह मुक्ति क्या है जो नासूरों की वस्तु है?
चार ज्ञान और चार अभौतिक उपलब्धियाँ। यही मुक्ति है जो नासूरों का विषय है।
वह मुक्ति क्या है जो नासूरों की वस्तु नहीं है? [41]
चार महान मार्ग, तप और निर्वाण के चार फल। यह वह मुक्ति है जो कैंसर के अधीन नहीं है।
35. भौतिकवादी मुक्ति क्या है?
भौतिकता से अलग न की जा सकने वाली मुक्ति। यही भौतिकवादी मुक्ति है।
36. अभौतिक मुक्ति क्या है?
वह मुक्ति जो अमूर्तता से अलग नहीं की जा सकती। यह अभौतिक मुक्ति है।
37. क्या मुक्ति अभौतिकवादी से भी अधिक अभौतिकवादी है?
चार महान मार्ग, तप और निर्वाण के चार फल। यह मुक्ति, अभौतिक से भी ज़्यादा अभौतिक है।
38. इच्छा से मुक्ति क्या है?
चार ज्ञान और चार अभौतिक उपलब्धियाँ। यही इच्छा से मुक्ति है।
39. इच्छा रहित व्यक्ति की मुक्ति क्या है?
चार महान मार्ग, तप और निर्वाण के चार फल। यही इच्छा रहित होकर मुक्ति है।
40. शांत इच्छा से मुक्ति क्या है?
पहले ज्ञान या उसके नतीजे की प्राप्ति... [और इसी तरह §15 में]। असीम से मिलकर बने आधार की प्राप्ति

स्पेस... [और इसी तरह §16 में]। यह इच्छा को शांत करके मुक्ति है।

41. बंधनों में बंधी आज़ादी क्या है?

चार ज्ञान और चार अभौतिक उपलब्धियाँ।

42. बिना रोक-टोक के आज़ादी क्या है?

चार महान मार्ग, तप और निर्वाण के चार फल: यही बिना रोक-टोक वाली मुक्ति है।

43. एकता पर आधारित मुक्ति क्या है?

चार ज्ञान, चार महान मार्ग, तप और निर्वाण के चार फल। यह एकता पर आधारित मुक्ति है।

44. मतभेदों पर आधारित मुक्ति क्या है?

चार ज्ञान और चार अभौतिक उपलब्धियाँ। यह मतभेदों पर आधारित मुक्ति है।

45. बोध की मुक्ति क्या है?

यह संभव है कि बोध की एक मुक्ति बोध की दस मुक्ति के बराबर हो और बोध की दस मुक्ति बोध की एक मुक्ति हो, जो [उसकी दस प्रकार की] सहायक-वस्तु और [उसके एक] कार्य [मुक्ति के] अनुसार हो।

यह संभव है: यह कैसे संभव है?

नश्वरता के चिंतन का ज्ञान स्थायी के रूप में धारणा से मुक्त होता है, [42] इस प्रकार धारणा की मुक्ति है। दर्द के चिंतन का ज्ञान सुखद के रूप में धारणा से मुक्त होता है, इस प्रकार धारणा की मुक्ति है। अन-आत्म के चिंतन का ज्ञान स्वयं के रूप में धारणा से मुक्त होता है... वैराग्य के चिंतन का ज्ञान आनंददायक के रूप में धारणा से मुक्त होता है,... लुप्त होने के चिंतन का ज्ञान लोभ के रूप में धारणा से मुक्त होता है, निरोध के चिंतन का ज्ञान उत्पत्ति के रूप में धारणा से मुक्त होता है,... त्याग के चिंतन का ज्ञान लोभ के रूप में धारणा से मुक्त होता है,... संकेतहीन के चिंतन का ज्ञान संकेत के रूप में धारणा से मुक्त होता है, इच्छाहीन के चिंतन का ज्ञान इच्छा के रूप में धारणा से मुक्त होता है,... शून्यता के चिंतन का ज्ञान गलत व्याख्या के रूप में धारणा से मुक्त होता है, इस प्रकार धारणा की मुक्ति है।

इस तरह यह संभव है कि वस्तु और कार्य के अनुसार, बोध की एक मुक्ति बोध की दस मुक्ति है और बोध की दस मुक्ति बोध की एक मुक्ति है।

भौतिकता में नश्वरता के चिंतन का ज्ञान, इसे स्थायी मानने की धारणा से मुक्त करता है, इस प्रकार अनुभूति से मुक्ति होती है। भौतिकता में दर्द के चिंतन का ज्ञान... भौतिकता में शून्यता के चिंतन का ज्ञान, इसे गलत अर्थ मानने की धारणा से मुक्त करता है। (और इसी तरह Tr. I में दिए गए बाकी 201 विचारों के साथ भी)।

§5 तक)... बुढ़ापे और मृत्यु में नश्वरता के चिंतन का ज्ञान स्थायी के रूप में इसकी धारणा से मुक्त होता है, इस प्रकार यह धारणा से मुक्ति है... बुढ़ापे और मृत्यु में शून्यता के चिंतन का ज्ञान गलत व्याख्या के रूप में इसकी धारणा से मुक्त होता है, इस प्रकार धारणा से मुक्ति है।

इस तरह यह संभव है कि वस्तु और कार्य के अनुसार, बोध की एक मुक्ति बोध की दस मुक्ति है और बोध की दस मुक्ति बोध की एक मुक्ति है।

46. ज्ञान की मुक्ति क्या है?

यह संभव है कि ज्ञान की एक मुक्ति ज्ञान की दस मुक्ति के बराबर हो और ज्ञान की दस मुक्ति ज्ञान की एक मुक्ति के बराबर हो, वस्तु और कार्य के अनुसार।

यह संभव है: यह कैसे संभव है?

कोरेसी ज्ञान, जो नश्वरता के बारे में सोचता है, वह स्थायित्व के बारे में भ्रम के रूप में अनजानी बातों से मुक्त हो जाता है, इस प्रकार ज्ञान की मुक्ति होती है। दर्द के चिंतन के रूप में सही ज्ञान सुख के बारे में भ्रम के रूप में अज्ञानता से मुक्त होता है, अन-स्व के चिंतन के रूप में सही ज्ञान स्वयं के बारे में भ्रम के रूप में अज्ञानता से मुक्त होता है... वैराग्य के चिंतन के रूप में सही ज्ञान आनंद के बारे में भ्रम के रूप में अज्ञानता से मुक्त होता है, .. लुप्त होने के चिंतन के रूप में सही ज्ञान (43) लालच के बारे में भ्रम के रूप में अज्ञानता से मुक्त होता है... समाप्ति के चिंतन के रूप में सही ज्ञान उत्पत्ति के बारे में भ्रम के रूप में अज्ञानता से मुक्त होता है,... त्याग के चिंतन के रूप में सही ज्ञान लोभ के बारे में भ्रम के रूप में अज्ञानता से मुक्त होता है,... संकेतहीन के चिंतन के रूप में सही ज्ञान संकेत के बारे में भ्रम के रूप में अज्ञानता से मुक्त होता है,... इच्छाहीन के चिंतन के रूप में सही ज्ञान इच्छा के बारे में भ्रम के रूप में अज्ञानता से मुक्त होता है, .. शून्यता के चिंतन के रूप में सही ज्ञान गलत व्याख्या के बारे में भ्रम के रूप में अज्ञानता से मुक्त होता है, इस प्रकार ज्ञान की मुक्ति है।

इस तरह यह संभव है कि ज्ञान की एक मुक्ति ज्ञान की दस मुक्ति है और ज्ञान की दस मुक्ति ज्ञान की एक मुक्ति है, वस्तु और कार्य के अनुसार।

भौतिकता में नश्वरता के चिंतन के रूप में सही ज्ञान, इसके स्थायित्व के बारे में भ्रम के रूप में अनजानता से मुक्त होता है, इस प्रकार ज्ञान की मुक्ति होती है। . . भौतिकता में शून्यता के चिंतन के रूप में सही ज्ञान, इसके गलत अर्थ निकालने के बारे में भ्रम के रूप में अनजानता से मुक्त होता है, इस प्रकार यह ज्ञान की मुक्ति है... [और इसी तरह Tr. I §5 में सूचीबद्ध बाकी 201 विचारों के साथ]... बुढ़ापे और मृत्यु में नश्वरता के चिंतन के रूप में सही ज्ञान... बुढ़ापे और मृत्यु में शून्यता के चिंतन के रूप में सही ज्ञान, इससे मुक्त होता है

अज्ञानता को गलत अर्थ निकालने के भ्रम के रूप में, इस प्रकार ज्ञान से मुक्ति मिलती है।

इस तरह यह संभव है कि ज्ञान की एक मुक्ति ज्ञान की दस मुक्ति है और ज्ञान की दस मुक्ति ज्ञान की एक मुक्ति है, वस्तु और कार्य के अनुसार।

47. इस प्रकार वर्णित मुक्ति क्या है: [यहाँ जो कुछ भी अनुभव किया जाता है] वह शीतल हो सकता है?

यह हो सकता है कि 'यह ठंडा हो सकता है' इस तरह बताई गई एक मुक्ति, 'यह ठंडा हो सकता है' इस तरह बताई गई दस मुक्ति हो और 'यह ठंडा हो सकता है' इस तरह बताई गई दस मुक्ति, 'यह ठंडा हो सकता है' इस तरह बताई गई एक मुक्ति हो।

यह संभव है: यह कैसे संभव है?

ज्ञान की बेमिसाल ठंडक, क्योंकि नश्वरता के चिंतन से जलन, पीड़ा और स्थायित्व की परेशानी से मुक्ति मिलती है, इसलिए मुक्ति को इस तरह बताया गया है 'यह ठंडा हो सकता है'। दर्द के चिंतन के रूप में ज्ञान की अद्वितीय शीतलता सुख के बारे में जलन, पीड़ा और संकट से मुक्त करती है, अन-आत्म के चिंतन के रूप में ज्ञान की अद्वितीय शीतलता स्वयं के बारे में जलन, पीड़ा और संकट से मुक्त करती है, वैराग्य के चिंतन के रूप में ज्ञान की अद्वितीय शीतलता [44] सुख के बारे में जलन, पीड़ा और संकट से मुक्त करती है,... लुप्त होने के चिंतन के रूप में ज्ञान की अद्वितीय शीतलता लोभ के बारे में जलन, पीड़ा और संकट से मुक्त करती है, निवृत्ति के चिंतन के रूप में ज्ञान की अद्वितीय शीतलता उत्पत्ति के बारे में जलन, पीड़ा और संकट से मुक्त करती है,... त्याग के चिंतन के रूप में ज्ञान की अद्वितीय शीतलता लोभ के बारे में जलन, पीड़ा और . . . संकट से मुक्त करती है, संकेतहीन के चिंतन के रूप में ज्ञान की अद्वितीय शीतलता संकेत के बारे में जलन, पीड़ा और संकट से मुक्त करती है इच्छारहित मनुष्य इच्छा की जलन, पीड़ा और संकट से मुक्त हो जाता है, ... शून्यता के चिंतन के रूप में ज्ञान की अद्वितीय शीतलता मिथ्या व्याख्या के जलन, पीड़ा और संकट से मुक्त हो जाती है, इस प्रकार मुक्ति का वर्णन इस प्रकार किया गया है 'यह शीतल हो सकता है'।

यह इसी तरह संभव है... ऑब्जेक्ट और फंक्शन के अनुसार।

भौतिकता में नश्वरता के चिंतन के रूप में ज्ञान की बेमिसाल ठंडक, इसके स्थायित्व के बारे में जलन, पीड़ा और परेशानी से मुक्ति दिलाती है, इस प्रकार मुक्ति बताई गई है, जिससे यह ठंडी हो सकती है'... भौतिकता में शून्यता के चिंतन के रूप में ज्ञान की बेमिसाल ठंडक, इसके गलत अर्थ निकालने के बारे में जलन, पीड़ा और परेशानी से मुक्ति दिलाती है, और इसी तरह Tr. 1 §5 में लिस्ट किए गए बाकी 201 विचारों के साथ भी ऐसा ही होता है)... चिंतन के रूप में ज्ञान की बेमिसाल ठंडक

बुढ़ापे और मृत्यु की... ज्ञान की अद्वितीय शीतलता, बुढ़ापे और मृत्यु में शून्यता के चिंतन से जलन, पीड़ा और गलत व्याख्या करने की परेशानी से मुक्ति मिलती है, इस प्रकार मुक्ति का वर्णन इस प्रकार किया गया है 'यह शीतल हो सकता है।

यह इसी तरह संभव है... ऑब्जेक्ट और फंक्शन के अनुसार।

यह मुक्ति इस प्रकार बताई गई है: (जो कुछ भी यहाँ अनुभव किया जाता है) वह ठंडा हो सकता है।

48. झाना मुक्ति क्या है?

त्याग प्रज्वलित होता है (झायति), इसलिए वह झान है; वह विषय-वासनाओं के प्रति उत्साह को भस्म करता है (झापेति), इसलिए वह झान है; प्रज्वलित होने पर (झायन्तो), वह मुक्त होता है, इसलिए वह झान मुक्ति है; भस्म होने पर (झापेनतो), वह मुक्त होता है, इसलिए वह झान मुक्ति है; वे प्रज्वलित (झायन्ति) [अर्थात् अच्छे] विचार हैं; वे भस्म (झापेन्ती) [अर्थात्] मल हैं; वह प्रज्वलित (झता) और भस्म हुए (झपा) को जानता है, इसलिए वह झान मुक्ति है। [45]

अ-बुराई की भावना प्रज्वलित होती है,... यह बुरी भावना को खत्म कर देती है,...

प्रकाश की अनुभूति प्रज्वलित होती . . . है, यह कठोरता और सुस्ती को खत्म कर देती है, . . .

ध्यान भटकना बंद हो जाता है,... यह बेचैनी को खत्म कर देता है,..

विचारों की जांच-पड़ताल शुरू हो जाती है,... यह अनिश्चितता को खत्म कर देती है,...

ज्ञान प्रज्वलित होता है,... यह अज्ञान को भस्म कर देता है, . . .

खुशी जलती है, यह बोरियत को खत्म कर देती है,...

पहला झाना जलता है, यह रुकावटों को खत्म कर देता है, . . .

दूसरा झाना प्रज्वलित होता है,... यह लागू विचार और निरंतर विचार को खा जाता है, . . .

तीसरा झाना जलता है,... यह खुशी को खा जाता है,...

चौथा झाना जलता है, यह सुख और दुख को खा जाता है,...

असीम अंतरिक्ष से बने आधार की प्राप्ति...

असीम चेतना से बने आधार की प्राप्ति...

शून्यता से बने आधार की प्राप्ति...

उस आधार की प्राप्ति जिसमें न तो समझ है और न ही समझ नहीं...

स्ट्रीम-एंट्री पाथ. (cf. Tr. I §442]

एक बार लौटने वाला रास्ता....

नॉन-रिटर्न पथ...

अरहंत मार्ग प्रज्वलित होता है, इसलिए वहाँ झान होता है; यह सभी बुराइयों को भस्म कर देता है, इसलिए वहाँ झान होता है; प्रज्वलित होने पर, यह मुक्त हो जाता है, इसलिए वहाँ झान मुक्ति होती है; भस्म होने पर, यह मुक्त हो जाता है, इसलिए वहाँ झान मुक्ति होती है; वे प्रज्वलित होते हैं, यानी [अच्छे] विचार; वह उन्हें भस्म कर देता है, यानी बुराइयाँ; वह प्रज्वलित और भस्म हुए को जानता है, इसलिए वहाँ झान मुक्ति होती है।

यह जन मुक्ति है।

49. किसी चीज़ से न चिपके रहने से ज्ञान की मुक्ति क्या है?

यह संभव है कि किसी चीज़ से न चिपके रहने से ज्ञान की मुक्ति हो।

चिपके न रहने के माध्यम से ज्ञान की दस मुक्तिएं और चिपके न रहने के माध्यम से ज्ञान की दस मुक्तिएं, वस्तु और कार्य के अनुसार, चिपके न रहने के माध्यम से ज्ञान की एक मुक्ति हैं।

यह संभव है: यह कैसे संभव है?

नश्वरता के चिंतन के रूप में ज्ञान स्थायित्व के बारे में चिपके रहने से मुक्त होता है, इस प्रकार चिपके न रहने के माध्यम से ज्ञान की मुक्ति होती है। दर्द के चिंतन के रूप में ज्ञान सुख के बारे में चिपके रहने से मुक्त होता है... अन-आत्म के चिंतन के रूप में ज्ञान स्वयं के बारे में चिपके रहने से मुक्त होता है... वैराग्य के चिंतन के रूप में ज्ञान आनंद के बारे में चिपके रहने से मुक्त होता है... लुप्त होने के चिंतन का ज्ञान लालच के बारे में चिपके रहने से मुक्त होता है, समाप्ति के चिंतन के रूप में ज्ञान मूल के बारे में चिपके रहने से मुक्त होता है... त्याग के चिंतन के रूप में ज्ञान लोभ के बारे में चिपके रहने से मुक्त होता है,... संकेतहीन के चिंतन के रूप में ज्ञान संकेत के बारे में चिपके रहने से मुक्त होता है, इच्छाहीन के चिंतन के रूप में ज्ञान इच्छा के बारे में चिपके रहने से [46] मुक्त होता है...

यह इसी तरह संभव है... ऑब्जेक्ट और फंक्शन के अनुसार।

भौतिकता में नश्वरता के चिंतन के रूप में ज्ञान को स्थायी के रूप में चिपके रहने से मुक्ति मिलती है, इस प्रकार चिपके न रहने के माध्यम से ज्ञान की मुक्ति होती है... भौतिकता में शून्यता के चिंतन के रूप में ज्ञान को गलत व्याख्या के रूप में चिपके रहने से मुक्ति मिलती है... (और इसी तरह Tr. I §5 में सूचीबद्ध 201 विचारों के बाकी हिस्सों के साथ)... उम्र बढ़ने और मृत्यु के चिंतन के रूप में ज्ञान को अस्थायी... शून्यता के रूप में उम्र बढ़ने और मृत्यु के चिंतन के रूप में ज्ञान को गलत व्याख्या के रूप में चिपके रहने से मुक्ति मिलती है, इस प्रकार चिपके न रहने के माध्यम से ज्ञान की मुक्ति होती है।

यह इसी तरह संभव है... ऑब्जेक्ट और फंक्शन के अनुसार।

50. अनित्यता के चिंतन का ज्ञान कितने प्रकार की आसक्ति से मुक्त करता है?

दर्द के चिंतन के रूप में ज्ञान कितने तरह की पकड़ से मुक्त होता है?

आत्म-विहीन चिंतन के रूप में ज्ञान कितने प्रकार की पकड़ से मुक्त होता है?

वैराग्य के चिंतन के रूप में ज्ञान कितने प्रकार की आसक्ति से मुक्त होता है?

लुप्त होने के चिंतन के रूप में ज्ञान कितने प्रकार की पकड़ से मुक्त होता है?

समाप्ति के चिंतन के रूप में ज्ञान कितने प्रकार की पकड़ से मुक्त होता है?

त्याग के चिंतन के रूप में ज्ञान कितने प्रकार की पकड़ से मुक्त होता है?

बिना निशान के चिंतन के रूप में ज्ञान कितने तरह की पकड़ से मुक्त होता है?

बिना इच्छा के चिंतन के रूप में ज्ञान कितने तरह की पकड़ से मुक्त होता है?

शून्यता के चिंतन के रूप में ज्ञान कितने प्रकार की पकड़ से मुक्त होता है?

51. अनित्यता का चिंतन करने वाला ज्ञान तीन तरह के बंधनों से मुक्त होता है।

दर्द के चिंतन के रूप में ज्ञान एक तरह की पकड़ से मुक्त हो जाता है।

जो खुद नहीं है, उसके चिंतन के रूप में ज्ञान तीन तरह की पकड़ से मुक्त होता है।

वैराग्य के चिंतन के रूप में ज्ञान एक तरह की पकड़ से मुक्त हो जाता है।

ज्ञान, जो लुप्त होने के चिंतन के रूप में है, एक तरह की पकड़ से मुक्त हो जाता है।

समाप्ति के चिंतन के रूप में ज्ञान चार प्रकार की आसक्ति से मुक्त होता है।

त्याग के चिंतन के रूप में ज्ञान चार तरह की पकड़ से मुक्त हो जाता है।

बिना निशान के चिंतन के रूप में ज्ञान तीन तरह की पकड़ से मुक्त होता है।

बिना इच्छा के चिंतन के रूप में ज्ञान एक तरह की पकड़ से मुक्त हो जाता है।

शून्यता के चिंतन के रूप में ज्ञान तीन तरह की पकड़ से मुक्त होता है।

52. नश्वरता के चिंतन के रूप में ज्ञान किन तीन तरह की पकड़ से मुक्त होता है?

गलत नज़रिए से चिपके रहना, अच्छाई और कर्तव्य से चिपके रहना, और खुद के सिद्धांत से चिपके रहना। नश्वरता के चिंतन के तौर पर ज्ञान इन तीन तरह की चिपकूनेस से आज़ाद होता है।

दर्द के चिंतन के रूप में ज्ञान किस प्रकार की आसक्ति से मुक्त होता है? [47]

कामुक इच्छाओं से चिपके रहना। ज्ञान...

जो खुद से अलग है, उसके चिंतन के तौर पर ज्ञान किन तीन तरह के चिपके रहने से मुक्त है?

गलत नज़रिए से चिपके रहने से, गुण और कर्तव्य से चिपके रहने से, और खुद के सिद्धांत से चिपके रहने से.. ज्ञान..

वैराग्य के चिंतन के रूप में ज्ञान किस तरह की पकड़ से मुक्त होता है?

कामुक इच्छाओं से चिपके रहने से. ज्ञान...

ज्ञान के लुप्त होने के चिंतन से मुक्ति पाना किस तरह की पकड़ है?

कामुक इच्छाओं से चिपके रहने से. ज्ञान...

ज्ञान, जो समाप्ति का चिंतन है, किन चार तरह की पकड़ से मुक्त होता है?

कामुकता की चाहत से, गलत सोच से, अच्छाई और कर्तव्य से, और खुद के सिद्धांत से। ज्ञान...

त्याग के चिंतन के रूप में ज्ञान किन चार तरह की पकड़ से मुक्त होता है?

कामुकता की चाहत से, गलत सोच से, अच्छाई और कर्तव्य से, और खुद के सिद्धांत से। ज्ञान...

बिना निशान के चिंतन के रूप में ज्ञान किन तीन तरह की पकड़ से मुक्त होता है?

गलत नज़रिए से चिपके रहने, अच्छे कामों और कर्तव्यों से चिपके रहने, और खुद के सिद्धांत से चिपके रहने से। ज्ञान...

बिना इच्छा के मुक्त हुए ज्ञान का चिंतन किस तरह की पकड़ है?

कामुक इच्छाओं से चिपके रहने से। ज्ञान।

शून्यता के चिंतन के रूप में ज्ञान किन तीन तरह की पकड़ से मुक्त होता है?

गलत नज़रिए से चिपके रहने से, अच्छे कामों और कर्तव्यों से चिपके रहने से, और खुद के सिद्धांत से चिपके रहने से। शून्यता के चिंतन के तौर पर ज्ञान इन तीन तरह की जकड़न से आज़ाद होता है।

53. अनित्यता के चिंतन के रूप में ज्ञान, और अनात्म के चिंतन के रूप में ज्ञान, और चिह्नहीन के चिंतन के रूप में ज्ञान, और शून्यता के चिंतन के रूप में ज्ञान, ये चार प्रकार के ज्ञान तीन प्रकार की आसक्ति से मुक्त होते हैं, अर्थात् मिथ्या दृष्टि आसक्ति, गुण-और-कर्तव्य आसक्ति, और स्व-सिद्धांत आसक्ति।

दुःख के चिंतन के रूप में ज्ञान, और वैराग्य के चिंतन के रूप में ज्ञान, और मिटने के चिंतन के रूप में ज्ञान, और इच्छारहितता के चिंतन के रूप में ज्ञान, [48] ये चार प्रकार के ज्ञान एक प्रकार की आसक्ति से मुक्त होते हैं, अर्थात् इंद्रिय-इच्छा आसक्ति से।

ज्ञान, जो समाप्ति के चिंतन के रूप में है, और ज्ञान जो त्याग के चिंतन के रूप में है, ये दो तरह के ज्ञान चार तरह की पकड़ से मुक्त होते हैं, यानी, इंद्रिय-इच्छा की पकड़, गलत नज़रिए की पकड़, गुण और कर्तव्य की पकड़, और आत्म-सिद्धांत की पकड़।

यह किसी चीज़ से न चिपके रहने से चेतना की मुक्ति है।

पहले रिसाइटल सेक्शन का अंत।

* * *

54. अब मुक्ति के ये तीन रास्ते दुनिया से बाहर निकलने की ओर ले जाते हैं, [मतलब:] (i) सभी बनावटों को सीमित और सीमित मानकर अलग करना और बिना निशान वाले तत्व में पहचान का प्रवेश करना, (ii) सभी बनावटों के संबंध में मन को जगाना और बिना इच्छा वाले तत्व में पहचान का प्रवेश करना, (iii) सभी विचारों को बाहरी के रूप में देखना और शून्यता के सिद्धांत में पहचान का प्रवेश करना। मुक्ति के ये तीन रास्ते दुनिया से बाहर निकलने की ओर ले जाते हैं।

55. जब वह चीज़ों को कुछ समय के लिए होने वाला मानकर उन पर ध्यान देता है, तो वे उसे कैसी लगती हैं? जब वह चीज़ों को दर्द देने वाला मानकर उन पर ध्यान देता है, तो वे उसे कैसी लगती हैं? जब वह चीज़ों को खुद से अलग मानकर उन पर ध्यान देता है, तो वे उसे कैसी लगती हैं?

जब वह कुछ समय के लिए बनी चीज़ों पर ध्यान देता है, तो वे उसे थकान लगती हैं। जब वह दर्दनाक चीज़ों पर ध्यान देता है, तो वे डर लगती हैं। जब वह खुद से अलग चीज़ों पर ध्यान देता है, तो वे खालीपन लगती हैं।

56. जब वह ध्यान को नश्वर मानकर देता है, तो उसकी पहचान किसमें बड़ी होती है? जब वह ध्यान को दर्दनाक मानकर देता है, तो उसकी पहचान किसमें बड़ी होती है? जब वह ध्यान को न-स्व के रूप में देता है, तो उसकी पहचान किसमें बड़ी होती है?

जब वह अनित्य मानकर ध्यान देता है तो उसकी पहचान [49] में बड़ा संकल्प होता है. जब वह दर्दनाक मानकर ध्यान देता है तो उसकी पहचान में बड़ी शांति होती है. जब वह अनात्मा के रूप में ध्यान देता है तो उसकी पहचान में बड़ा ज्ञान होता है.

57. जब कोई बहुत दृढ़ निश्चयी व्यक्ति ध्यान को कुछ समय के लिए मानता है, तो उसे क्या योग्यता मिलती है? जब कोई बहुत शांत व्यक्ति ध्यान को दुखदायी मानता है, तो उसे क्या योग्यता मिलती है? जब कोई बहुत बुद्धिमान व्यक्ति ध्यान को खुद से अलग मानता है, तो उसे क्या योग्यता मिलती है?

जब कोई व्यक्ति जिसके पास बहुत ज़्यादा संकल्प होता है, वह ध्यान को कुछ समय के लिए मानता है, तो उसे विश्वास की क्षमता मिल जाती है। जब कोई व्यक्ति जिसके पास बहुत ज़्यादा शांति होती है, वह ध्यान को दर्द के रूप में मानता है, तो उसे ध्यान लगाने की क्षमता मिल जाती है। जब कोई व्यक्ति जिसके पास बहुत ज़्यादा ज्ञान होता है, वह ध्यान को खुद से अलग मानकर देता है, तो उसे समझने की क्षमता मिल जाती है।

58. (1) जब कोई व्यक्ति जिसके पास बहुत ज़्यादा संकल्प होता है, वह ध्यान को कुछ समय के लिए देता है, तो उसमें कौन सी क्षमता हावी होती है? (2) विकास में उसके बाद कितनी क्षमताएँ आती हैं, क्या वे एक जैसी स्थितियाँ हैं, क्या वे आपसी संबंध की स्थितियाँ हैं, क्या वे सहारे की स्थितियाँ हैं, क्या वे जुड़ाव की स्थितियाँ हैं[3], जिनका एक ही काम (स्वाद) होता है? (3) विकास किस मायने में है? (4) कौन विकसित होता है?

(5) जब कोई बहुत शांत इंसान ध्यान को दर्द की तरह देता है, तो उसमें कौन सी काबिलियत हावी होती है? (6) डेवलपमेंट में उसके बाद कितनी काबिलियतें आती हैं, क्या वे एक जैसी कंडीशन हैं, क्या वे आपसी मेलजोल की कंडीशन हैं, क्या वे सपोर्ट की कंडीशन हैं, क्या वे जुड़ाव की कंडीशन हैं, क्या उनका एक ही काम (स्वाद) है? (7) डेवलपमेंट किस मायने में है? (8) कौन डेवलप होता है?

(9) जब कोई बहुत समझदार इंसान खुद को छोड़कर ध्यान देता है, तो उसमें कौन सी काबिलियत हावी होती है? (10) डेवलपमेंट में उसके बाद कितनी काबिलियतें आती हैं, क्या वे एक जैसी कंडीशन हैं, क्या वे आपसी मेलजोल वाली कंडीशन हैं, क्या वे सपोर्ट वाली कंडीशन हैं, क्या वे जुड़ाव वाली कंडीशन हैं, क्या उनका एक ही काम (स्वाद) है? (11) डेवलपमेंट किस मायने में है? (12) कौन डेवलप होता है?

(1) जब कोई बहुत पक्का इरादा रखता है और ध्यान को कुछ समय के लिए नहीं मानता, तो उसमें विश्वास की ताकत हावी हो जाती है। (2) विकास में उसके बाद चार ताकतें आती हैं, जो एक जैसी होती हैं, एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं, सपोर्ट की ताकत होती हैं, साथ देने की ताकत होती हैं, और उनका एक ही काम (स्वाद) होता है। (3) विकास एक ही काम (स्वाद) के मतलब में होता है। (4) वह विकसित होता है जो सही रास्ते पर चल पड़ा है: जो गलत रास्ते पर चल पड़ा है, उसमें ताकतों का कोई विकास नहीं होता।

(5) जब महान शांति वाला व्यक्ति दर्द के रूप में ध्यान देता है, तो उसमें एकाग्रता की क्षमता प्रमुख होती है। (6) विकास में चार क्षमताएं उसके बाद आती हैं, वे सहवर्ती स्थितियाँ हैं, पारस्परिकता की स्थितियाँ हैं, समर्थन की स्थितियाँ हैं, साहचर्य की स्थितियाँ हैं, जिनका [50] एकल कार्य (स्वाद) होता है। (7) विकास एकल कार्य (स्वाद) के अर्थ में होता है। (8) वह विकसित होता है जिसने सही रास्ते पर प्रवेश किया है: जिसने गलत रास्ते पर प्रवेश किया है, उसमें क्षमताओं का कोई विकास नहीं होता है।

(9) जब महान ज्ञान वाला व्यक्ति अनात्मा के रूप में ध्यान देता है, तो उसमें समझने की क्षमता प्रमुख होती है। (10) विकास में चार क्षमताएं उसके बाद आती हैं, वे सहवर्ती स्थितियां हैं, पारस्परिकता की स्थितियां हैं, समर्थन की स्थितियां हैं, साहचर्य की स्थितियां हैं, जिनका एक ही कार्य (स्वाद) होता है। (11) विकास एकल कार्य (स्वाद) के अर्थ में होता है। (12) वह विकसित होता है जिसने सही मार्ग पर प्रवेश किया है: उसमें क्षमताओं का कोई विकास नहीं होता जिसने गलत मार्ग पर प्रवेश किया है। 59. (1) जब महान संकल्प वाला व्यक्ति ध्यान को अस्थायी रूप से देता है, तो उसमें कौन सी क्षमता प्रमुख होती है? (2) विकास में कितनी क्षमताएं उसके बाद आती हैं, जो सहवर्ती स्थितियां हैं, पारस्परिकता की स्थितियां हैं, समर्थन की स्थितियां हैं, साहचर्य की स्थितियां हैं, जिनका एक ही कार्य (स्वाद) होता है? (3) प्रवेश के समय कौन सी क्षमता प्रमुख होती है? (4) प्रवेश में कितनी संकायें इसका अनुसरण करती हैं, क्या सहवर्ती स्थितियाँ हैं, क्या पारस्परिकता की स्थितियाँ हैं, क्या समर्थन की स्थितियाँ हैं, क्या साहचर्य की स्थितियाँ हैं, क्या एक ही कार्य (स्वाद) है? (5) किस अर्थ में विकास? (6) किस अर्थ में प्रवेश?

(7) जब कोई महान शांति वाला व्यक्ति ध्यान को दर्दनाक मानता है, तो उसमें कौन सी क्षमता प्रमुख होती है? (8) विकास में... (12) किस अर्थ में प्रवेश?

(13) जब महान ज्ञान वाला व्यक्ति अनात्मा के रूप में ध्यान देता है, तो उसमें कौन सी क्षमता प्रमुख होती है? (14) विकास में... (15) किस अर्थ में प्रवेश? [51)

(1) जब महान संकल्प वाला व्यक्ति ध्यान को क्षणभंगुर मानकर देता है, तो उसमें विश्वास की क्षमता प्रमुख होती है। (2) विकास में चार क्षमताएं उसका अनुसरण करती हैं, जो कि संगत स्थितियां हैं, पारस्परिकता की स्थितियां हैं, समर्थन की स्थितियां हैं, साहचर्य की स्थितियां हैं, जिनका एक ही कार्य (स्वाद) होता है। (3) प्रवेश के समय उसमें समझने की क्षमता प्रमुख होती है। (4) प्रवेश में चार क्षमताएं उसका अनुसरण करती हैं, जो कि संगत स्थितियां हैं, पारस्परिकता की स्थितियां हैं, समर्थन की स्थितियां हैं, साहचर्य की स्थितियां हैं, जिनका एक ही कार्य (स्वाद) होता है, (5) विकास एकल कार्य (स्वाद) के अर्थ में होता है। (6) प्रवेश देखने के अर्थ में होता है: इसलिए जो प्रवेश करता है वह विकसित होता है, और जो विकास करता है वह प्रवेश करता है।

(7) जब कोई बहुत शांत होता है और दर्द को ध्यान से देखता है, तो उसमें ध्यान लगाने की ताकत हावी होती है। (8) विकास में... एक ही काम (स्वाद) होता है। (9) पेनिट्रेशन के समय उसमें समझने की ताकत हावी होती है। (10) पेनिट्रेशन में... (12) पेनिट्रेशन देखने के अर्थ में होता है: इसलिए जो पेनिट्रेट करता है वह डेवलप होता है, और जो डेवलप होता है वह पेनिट्रेट करता है।

(13) जब कोई बहुत समझदार इंसान खुद पर नहीं, बल्कि खुद पर ध्यान देता है, तो उसमें समझने की ताकत हावी हो जाती है। (14) डेवलपमेंट में... एक ही काम (स्वाद) होता है। (15) पेनिट्रेशन के समय उसमें समझने की ताकत हावी हो जाती है। (16) पेनिट्रेशन में... (18) पेनिट्रेशन देखने के मतलब में होता है: इसलिए जो पेनिट्रेट करता है वह डेवलप होता है, और जो डेवलप होता है वह पेनिट्रेट करता है।

60. (1) जब वह ध्यान को नश्वर मानकर देता है, तो उसमें कौन सी खासियत होती है? विश्वास से मुक्त हुआ वह कौन सी खासियत से युक्त होता है?

(2) जब वह ध्यान को दर्दनाक मानता है, तो उसमें कौन सी योग्यता उत्कृष्ट होती है? वह किस योग्यता के साथ बॉडी विटनेस है?

(3) जब वह अनात्मा के रूप में ध्यान देता है, तो उसमें कौन सी योग्यता उत्कृष्ट होती है? वह कौन सी उत्कृष्ट योग्यता से दर्शन को प्राप्त होता है? [52]

(1) जब वह ध्यान को अस्थायी मानकर चलता है, तो उसमें विश्वास की क्षमता बहुत ज़्यादा होती है। विश्वास की इस क्षमता के साथ, वह विश्वास से मुक्त हो जाता है।

(2) जब वह दर्द के रूप में ध्यान देता है, तो उसमें एकाग्रता की क्षमता बहुत अच्छी होती है। एकाग्रता की इस क्षमता के साथ वह एक बॉडी विटनेस होता है।

(3) जब वह खुद से अलग होकर ध्यान देता है, तो उसमें समझने की काबिलियत बहुत अच्छी होती है। समझने की काबिलियत बहुत अच्छी होने पर वह विज़न को पा लेता है।

61. [प्रथम मार्ग की सिद्धि के चार क्षणों में] वह श्रद्धा रखने से मुक्त हो गया है (सद्दाहंतो विमुत्तो), इस प्रकार वह श्रद्धा से मुक्त है (सद्दाविमुत्तो): उसने स्पर्श करके निर्वाण को प्राप्त कर लिया है

(संपर्क करके), इस तरह वह एक बॉडी विटनेस है; उसने विज़न से [निब्बान] पाया है, इस तरह वह विज़न को पाने वाला है।

[बाकी तीन रास्तों के पलों में] वह विश्वास (सद्दहंतो विमुच्चति) रखकर आज़ाद हो जाता है, इसलिए वह विश्वास से आज़ाद होता है; वह पहले ज्ञान का स्पर्श (कॉन्टैक्ट) करता है और बाद में समाप्ति, निब्बान को महसूस करता है, इसलिए वह एक बॉडी विटनेस है; यह जाना जाता है, देखा जाता है, पहचाना जाता है, महसूस किया जाता है, और सुना जाता है (अनुभव किया जाता है), इस समझ के साथ कि बनना दर्दनाक है और समाप्ति सुखद है, इसलिए वह विज़न को पाने वाला होता है।

62. एक व्यक्ति है जो विश्वास से मुक्त होता है, एक व्यक्ति है जो बॉडी विटनेस है और एक व्यक्ति है जिसे विज़न मिल गया है। यह हो सकता है कि ये तीनों व्यक्ति ऑब्जेक्ट और फंक्शन के अनुसार विश्वास और बॉडी विटनेस से मुक्त हों और विज़न पा चुके हों।

यह संभव है: यह कैसे संभव है?

(1) जब वह ध्यान को कुछ समय के लिए देता है, तो उसमें विश्वास की ताकत सबसे ज़्यादा होती है; विश्वास की ताकत के साथ वह विश्वास से आज़ाद होता है। जब वह ध्यान को दर्द के तौर पर देता है, तो उसमें विश्वास की ताकत (अभी भी) सबसे ज़्यादा होती है; विश्वास की ताकत के साथ वह विश्वास से आज़ाद होता है। जब वह ध्यान को खुद से अलग मानकर देता है, तो उसमें विश्वास की ताकत [अभी भी] सबसे ज़्यादा होती है; विश्वास की ताकत के साथ वह विश्वास से आज़ाद होता है। इस तरह ये तीनों लोग विश्वास की ताकत के असर से विश्वास से आज़ाद होते हैं।

(2) जब वह दर्द के तौर पर ध्यान देता है, तो उसमें कंसंट्रेशन की काबिलियत बहुत अच्छी होती है; कंसंट्रेशन की काबिलियत बहुत अच्छी होने पर वह बॉडी विटनेस होता है। जब वह खुद को न मानकर ध्यान देता है, तो उसमें कंसंट्रेशन की काबिलियत [अभी भी] बहुत अच्छी होती है; कंसंट्रेशन की काबिलियत बहुत अच्छी होने पर वह बॉडी विटनेस होता है। जब वह कुछ समय के लिए ध्यान देता है, तो उसमें कंसंट्रेशन की काबिलियत (अभी भी) बहुत अच्छी होती है; कंसंट्रेशन की काबिलियत बहुत अच्छी होने पर वह बॉडी विटनेस होता है। इस तरह ये तीनों लोग कंसंट्रेशन की काबिलियत के असर से बॉडी विटनेस होते हैं।

(3) जब वह अनात्मा के रूप में ध्यान देता है, तो उसमें समझने की क्षमता उत्कृष्ट होती है; उत्कृष्ट समझ की क्षमता के साथ वह दर्शन को प्राप्त करने वाला होता है। [53] जब वह नश्वर के रूप में ध्यान देता है, तो उसमें समझने की क्षमता (अभी भी) उत्कृष्ट होती है; उत्कृष्ट समझ की क्षमता के साथ वह दर्शन को प्राप्त करने वाला होता है। जब वह दर्दनाक के रूप में ध्यान देता है, तो उसमें समझने की क्षमता [अभी भी] उत्कृष्ट होती है; उत्कृष्ट समझ की क्षमता के साथ वह दर्शन को प्राप्त करने वाला होता है। इस तरह ये तीन व्यक्ति समझ की क्षमता के प्रभाव से दर्शन को प्राप्त होते हैं।

एक व्यक्ति है जो विश्वास से मुक्त हो गया है, एक व्यक्ति है जो बॉडी विटनेस है और एक व्यक्ति है जो विज़न पा चुका है। यह संभव है

कि ये तीनों व्यक्ति विश्वास और शरीर साक्षी द्वारा मुक्त होते हैं और उद्देश्य और कार्य के अनुसार दृष्टि प्राप्त करते हैं।

एक व्यक्ति है जो विश्वास से मुक्त हुआ है, एक व्यक्ति है जो बॉडी विटनेस है और एक व्यक्ति है जिसे विज़न मिला है। हो सकता है कि इन तीन व्यक्तियों में से विश्वास से मुक्त हुआ व्यक्ति एक हो, बॉडी विटनेस दूसरा हो, और विज़न पाने वाला व्यक्ति दूसरा हो।

यह संभव है: यह कैसे संभव है?

(1) जब वह ध्यान को कुछ समय के लिए मानता है, तो उसमें विश्वास की ताकत बहुत ज़्यादा होती है; विश्वास की ताकत बहुत ज़्यादा होने पर वह विश्वास से आज़ाद होता है। (2) जब वह ध्यान को दर्द के तौर पर मानता है, तो उसमें ध्यान लगाने की ताकत बहुत ज़्यादा होती है; ध्यान लगाने की ताकत बहुत ज़्यादा होने पर वह एक बॉडी विटनेस होता है। (3) जब वह ध्यान को खुद से अलग मानकर देता है, तो उसमें समझने की ताकत बहुत ज़्यादा होती है; समझने की ताकत बहुत ज़्यादा होने पर वह विज़न पाने वाला होता है।

एक व्यक्ति है जो विश्वास से मुक्त हुआ है, एक व्यक्ति है जो बॉडी विटनेस है और एक व्यक्ति है जिसे विज़न मिला है। इस तरह यह संभव है कि इन तीन व्यक्तियों में से विश्वास से मुक्त हुआ व्यक्ति एक है, बॉडी विटनेस दूसरा है, और विज़न पाने वाला व्यक्ति दूसरा है।

63. (1) जब वह ध्यान को कुछ समय के लिए देता है, तो उसमें विश्वास की क्षमता बहुत ज़्यादा होती है; विश्वास की क्षमता के बहुत ज़्यादा होने पर वह स्ट्रीम-एंट्री का रास्ता पा लेता है; इसलिए उसे विश्वास भक्त कहा जाता है। इसके बाद चार क्षमताएँ आती हैं, जो एक जैसी स्थितियाँ हैं, आपसी संबंध की स्थितियाँ हैं, सपोर्ट की स्थितियाँ हैं, जुड़ाव की स्थितियाँ हैं। विश्वास की क्षमता के असर से [बाकी] चार क्षमताओं का विकास होता है। जो लोग विश्वास की क्षमता के असर से स्ट्रीम-एंट्री का रास्ता पाते हैं, वे सभी विश्वास भक्त हैं।

जब वह ध्यान को क्षणभंगुर मानकर देता है तो उसमें श्रद्धा की क्षमता उत्कृष्ट होती है। श्रद्धा की क्षमता उत्कृष्ट होने से उसे धारा प्रवेश की सिद्धि प्राप्त होती है। इसलिए उसे श्रद्धा से मुक्त कहा जाता है। इसके बाद चार क्षमताएँ आती हैं, जो सहवर्ती स्थितियाँ हैं, पारस्परिकता की स्थितियाँ हैं, सहायता की स्थितियाँ हैं, संगति की स्थितियाँ हैं। श्रद्धा की क्षमता के प्रभाव से (अन्य) चार क्षमताएँ विकसित हुई हैं, [54] अच्छी तरह से विकसित हुई हैं। वे सभी जिन्होंने श्रद्धा की क्षमता के प्रभाव से धारा प्रवेश की सिद्धि को प्राप्त कर लिया है, वे श्रद्धा से मुक्त हैं।

जब वह ध्यान को कुछ समय के लिए देता है, तो उसमें विश्वास की क्षमता बहुत अच्छी होती है; विश्वास की क्षमता बहुत अच्छी होने पर वह एक बार लौटने वाला रास्ता पा लेता है...

. . . एक बार वापसी का फल मिल जाए...

. .- वह वापस न लौटने वाला रास्ता पा लेता है...

. . . न लौटने का फल मिलता है...

. . . अरहंत मार्ग... आस्थावान भक्त हैं।

जब वह ध्यान को कुछ समय के लिए मानता है, तो उसमें विश्वास की शक्ति बहुत ज़्यादा होती है; विश्वास की शक्ति के बहुत ज़्यादा होने से उसे अरहंत का फल मिलता है; इसलिए उसे विश्वास से मुक्त कहा जाता है... वे सभी लोग जिन्होंने विश्वास की शक्ति के असर से अरहंत का एहसास किया है, वे विश्वास से मुक्त हैं।

(2) जब वह दर्द के तौर पर ध्यान देता है, तो उसमें कंसंट्रेशन की क्षमता बहुत अच्छी होती है; कंसंट्रेशन की क्षमता बहुत अच्छी होने पर वह स्ट्रीम-एंट्री पाथ हासिल कर लेता है; इसलिए उसे बॉडी विटनेस कहा जाता है। इसके बाद चार क्षमताएँ आती हैं... कंसंट्रेशन की क्षमता के असर से [बाकी] चार क्षमताओं का विकास होता है। जो लोग कंसंट्रेशन की क्षमता के असर से स्ट्रीम-एंट्री पाथ हासिल करते हैं, वे सभी बॉडी विटनेस हैं।

जब वह दर्द के तौर पर ध्यान देता है, तो उसमें कंसंट्रेशन की काबिलियत बहुत ज़्यादा होती है; कंसंट्रेशन की काबिलियत के साथ ही स्ट्रीम एंट्री का फ़ायदा होता है; इसलिए उसे बॉडी विटनेस कहा जाता है। इसके बाद चार काबिलियत आती हैं,... कंसंट्रेशन की काबिलियत के असर से [बाकी] चार काबिलियत डेवलप हुई हैं, अच्छी तरह डेवलप हुई हैं। वे सभी लोग जिन्हें कंसंट्रेशन की काबिलियत के असर से स्ट्रीम एंट्री का फ़ायदा होता है, वे बॉडी विटनेस हैं।

... वह एक बार वापस आने वाला रास्ता पा लेता है....

...एक बार वापसी का फल मिल जाए तो..

.. यह नॉन-रिटर्न रास्ता हासिल करता है...

...न लौटने का फल मिलता है...

... वह अरहंत मार्ग प्राप्त करता है... बॉडी विटनेस हैं।

जब वह दर्द के रूप में ध्यान देता है, तो उसमें एकाग्रता की क्षमता बहुत ज़्यादा होती है; एकाग्रता की क्षमता के बहुत ज़्यादा होने पर अरहंतत्व का फल मिलता है; इसलिए उसे बॉडी विटनेस कहा जाता है... वे सभी लोग जिन्होंने एकाग्रता की क्षमता के प्रभाव से अरहंतत्व को महसूस किया है, वे बॉडी विटनेस हैं।

(3) जब वह अनात्मा के रूप में ध्यान देता है, तो उसमें समझने की क्षमता उत्कृष्ट होती है; समझने की क्षमता उत्कृष्ट होने से वह धारा-प्रवेश पथ प्राप्त करता है; इसलिए उसे धम्म भक्त कहा जाता है। चार क्षमताएँ इसके बाद आती हैं... समझने की क्षमता के प्रभाव से [अन्य] चार क्षमताओं का विकास होता है। [55] वे सभी जो समझने की क्षमता के प्रभाव से धारा-प्रवेश पथ प्राप्त करते हैं, वे धम्म भक्त हैं।

जब वह खुद से अलग होकर ध्यान देता है, तो उसमें समझने की काबिलियत बहुत ज़्यादा होती है; समझने की काबिलियत के बहुत ज़्यादा होने से स्ट्रीम एंट्री का फ़ायदा होता है; इसलिए उसे विज़न वाला कहा जाता है। इसके बाद चार काबिलियत आती हैं... समझने की काबिलियत के असर से [बाकी] चार काबिलियत डेवलप हुई हैं, अच्छी तरह से डेवलप हुई हैं।

जिन लोगों ने समझने की शक्ति के असर से स्ट्रीम-एंट्री का फ़ायदा महसूस किया है, वे सभी विज़न को पा चुके हैं।

. . .वह एक बार वापस आने वाला रास्ता पा लेता है...

. . .एक बार वापसी का फल मिल जाए...

. . .वह वापस न लौटने वाला रास्ता पा लेता है...

. . . न लौटने का फल मिलता है...

. . . वह अरहंत मार्ग प्राप्त करता है... धम्म भक्त हैं।

जब वह खुद से अलग होकर ध्यान देता है, तो उसमें समझने की काबिलियत बहुत ज़्यादा होती है; समझने की काबिलियत के बहुत ज़्यादा होने से अरहंत होने का फल मिलता है; इसलिए उसे विज़न वाला कहा जाता है। इसके बाद चार काबिलियत आती हैं, जो एक होने की शर्तें हैं, आपसी मेलजोल की शर्तें हैं, सपोर्ट की शर्तें हैं, जुड़ाव की शर्तें हैं। समझने की काबिलियत के असर से [बाकी] चार काबिलियतें डेवलप हुई हैं, अच्छी तरह डेवलप हुई हैं। जिन लोगों ने समझने की काबिलियत के असर से अरहंत होने का एहसास किया है, वे विज़न वाले हैं।

*

64. वे सभी जो विकसित हुए हैं, विकसित हो रहे हैं, विकसित होंगे, पहुँच चुके हैं, पहुँच रहे हैं, पहुँचेंगे, पहुँच चुके हैं, पहुँच रहे हैं, पहुँचेंगे, अर्जित कर चुके हैं, अर्जित कर रहे हैं, अर्जित करेंगे, प्रवेश कर चुके हैं, प्रवेश कर रहे हैं, प्रवेश करेंगे, महसूस कर चुके हैं, महसूस कर रहे हैं, महसूस करेंगे, ध्वनि की है, ध्वनि कर रहे हैं, ध्वनि करेंगे, महारत हासिल कर चुके हैं, महारत हासिल कर रहे हैं, महारत हासिल करेंगे, पूर्णता तक पहुँच चुके हैं, पूर्णता तक पहुँचेंगे, आश्वासन तक पहुँच चुके हैं, आश्वासन तक पहुँच रहे हैं, त्याग, विश्वास संकाय के प्रभाव के माध्यम से विश्वास से मुक्त होते हैं, एकाग्रता संकाय के प्रभाव के माध्यम से शरीर साक्षी होते हैं, समझ संकाय के प्रभाव के माध्यम से दृष्टि को प्राप्त करते हैं।

वे सभी... गैर-बुराई... [और इसी तरह बाकी सात रुकावटों के हर उलटे के साथ]...

वे सभी... पहला ज़ाना... (और इसी तरह बाकी चार ज़ाना और चार अमूर्त सिद्धियों में से प्रत्येक के साथ)... [56]

वे सभी... नश्वरता के बारे में सोचना... (और बाकी 18 मुख्य बातों के साथ भी ऐसा ही है)...

वे सभी... स्ट्रीम-एंट्री पाथ... (और इसी तरह बाकी 4 पाथ में से हर एक के साथ)...

ये सभी... माइंडफुलनेस के चार आधार...

वे सभी:.. चार सही प्रयास...

ये सभी... सफलता के चार आधार हैं।

वे सभी... पाँचों शक्तियाँ [विश्वास, वगैरह]...

वे सभी... पांच शक्तियां...

वे सभी... सात ज्ञान के कारक।

वे सभी... महान अष्टांगिक मार्ग...

वे सभी जो विकसित हुए हैं, विकसित हो रहे हैं, विकसित होंगे, पहुँच चुके हैं, पहुँच रहे हैं, पहुँचेंगे, पहुँच चुके हैं, पहुँच रहे हैं, पहुँचेंगे, अर्जित कर चुके हैं, अर्जित करेंगे, प्रवेश कर चुके हैं, प्रवेश कर रहे हैं, प्रवेश करेंगे, महसूस कर चुके हैं, महसूस कर रहे हैं, महसूस करेंगे, ध्वनि की है, ध्वनि कर रहे हैं, ध्वनि करेंगे, महारत हासिल कर चुके हैं, महारत हासिल कर रहे हैं, महारत हासिल करेंगे, पूर्णता तक पहुँच चुके हैं, पूर्णता तक पहुँच रहे हैं, पूर्णता तक पहुँचेंगे, आश्वासन तक पहुँच चुके हैं, आश्वासन तक पहुँच रहे हैं, आश्वासन तक पहुँचेंगे, आठ मुक्ति, विश्वास संकाय के प्रभाव के माध्यम से विश्वास से मुक्त होते हैं, एकाग्रता संकाय के प्रभाव के माध्यम से शरीर साक्षी, समझ संकाय के प्रभाव के माध्यम से दृष्टि को प्राप्त करते हैं।

जो लोग पहुँच गए हैं, पहुँच रहे हैं, पहुँचेंगे,... चारों भेदों में भरोसा पाकर पहुँचेंगे, वे मुक्त हैं...

वे सभी जो प्रवेश कर चुके हैं, प्रवेश कर रहे हैं, प्रवेश करेंगे, तीन पहचानों में आश्वासन तक पहुंचेंगे, मुक्त ...हैं...

वे सभी जिन्होंने प्रशिक्षण लिया है, प्रशिक्षण ले रहे हैं, प्रशिक्षण लेंगे, ध्वनि दी है, ध्वनि दे रहे हैं, ध्वनि देंगे, महारत हासिल कर चुके हैं, महारत हासिल कर रहे हैं, महारत हासिल करेंगे, पूर्णता तक पहुँच चुके हैं, पूर्णता तक पहुँच रहे हैं, पूर्णता तक पहुँचेंगे। आश्वासन तक पहुँच चुके हैं, आश्वासन तक पहुँच रहे हैं, आश्वासन तक पहुँचेंगे, तीन प्रशिक्षण, मुक्त हैं...

वे सभी जो दुख को पूरी तरह से समझते हैं, जो मूल को त्याग देते हैं, जो निरोध का एहसास करते हैं, जो मार्ग विकसित करते हैं, वे [57] श्रद्धा संकाय के प्रभाव से विश्वास द्वारा मुक्त हो जाते हैं, एकाग्रता संकाय के प्रभाव से शरीर साक्षी हो जाते हैं, और समझ संकाय के प्रभाव से दर्शन को प्राप्त हो जाते हैं।

*

65. असलियत की कितनी बातों में पैठ है? वह असलियत की कितनी बातों में पैठ करता है?

असलियत की चार तरह से समझ है। वह असलियत की चार तरह से समझ रखता है।

वह पूरी समझ के साथ दुख की असलियत में घुसता है, वह छोड़ने के साथ शुरुआत की असलियत में घुसता है, वह एहसास के साथ खत्म होने की असलियत में घुसता है, वह विकास के साथ रास्ते की असलियत में घुसता है। इन चारों पहलुओं में असलियत की पैठ होती है।

जो इन चार पहलुओं में वास्तविकताओं में प्रवेश करता है, वह विश्वास क्षमता के प्रभाव से विश्वास से मुक्त होता है, एक शारीरिक साक्षी के माध्यम से

एकाग्रता क्षमता के प्रभाव से, समझ क्षमता के प्रभाव
से दृष्टि प्राप्त होती है।

66. असलियत की कितनी बातों में पैठ है? वह असलियत की कितनी बातों में पैठ करता है?

नौ पहलुओं में असलियत की पैठ है। वह नौ पहलुओं में असलियत की पैठ करता है।

वह पूरी समझ के साथ दुख की असलियत में घुसता है, वह छोड़ने के साथ शुरुआत की असलियत में घुसता है, वह एहसास के साथ खत्म होने की असलियत में घुसता है, वह विकास के साथ रास्ते की असलियत में घुसता है। सीधे ज्ञान से सभी विचारों में भी घुसना होता है, और पूरी समझ से सभी बनावटों में भी घुसना होता है, और छोड़ने से सभी बेकार विचारों में भी घुसना होता है, और विकास के साथ चारों रास्तों में घुसना होता है, और एहसास के साथ खत्म होने में भी घुसना होता है।

जो इन नौ पहलुओं में असलियत को समझ लेता है, वह विश्वास की शक्ति के असर से विश्वास से मुक्त हो जाता है, ध्यान लगाने की शक्ति के असर से शरीर का साक्षी बन जाता है, और समझने की शक्ति के असर से नज़रिया हासिल कर लेता है।

दूसरे गायन खण्ड का अंत [58]

* * *

67. जब वह चीज़ों को कुछ समय के लिए होने वाला मानकर उन पर ध्यान देता है, तो वे उसे कैसी लगती हैं? जब वह चीज़ों को दर्द देने वाला मानकर उन पर ध्यान देता है, तो वे उसे कैसी लगती हैं? जब वह चीज़ों को खुद से अलग मानकर उन पर ध्यान देता है, तो वे उसे कैसी लगती हैं?"

जब वह कुछ समय के लिए बनी चीज़ों पर ध्यान देता है, तो वे उसे थकान लगती हैं, जब वह कुछ दर्दनाक चीज़ों पर ध्यान देता है, तो वे उसे डर लगती हैं। जब वह कुछ न होने वाली चीज़ों पर ध्यान देता है, तो वे उसे खालीपन लगती हैं।

68. जब वह ध्यान को कुछ समय के लिए देता है, तो उसकी पहचान किसमें ज़्यादा होती है? जब वह ध्यान को दर्द के तौर पर देता है, तो उसकी पहचान किसमें ज़्यादा होती है? जब वह ध्यान को कुछ समय के लिए देता है, तो उसकी पहचान किसमें ज़्यादा होती है? जब वह

ध्यान को कुछ समय के लिए देता है, तो उसकी पहचान में बहुत ज़्यादा स्थिरता होती है। जब वह ध्यान को दर्द के तौर पर देता है, तो उसकी पहचान में बहुत शांति होती है। जब वह ध्यान को कुछ समय के लिए देता है, तो उसकी पहचान में बहुत ज़्यादा समझदारी होती है।

69. जब महान संकल्प वाला व्यक्ति ध्यान को क्षणभंगुर मानकर देता है, तो उसे क्या मुक्ति मिलती है? जब महान शांति वाला व्यक्ति ध्यान को दुःखदायी मानकर देता है, तो उसे क्या मुक्ति मिलती है? जब कोई

जो महान संकल्प वाला है, वह पर-स्वरूप में ध्यान करता है, उसे क्या मुक्ति मिलती है?

जब कोई व्यक्ति जिसके पास बहुत ज़्यादा संकल्प होता है, वह ध्यान को कुछ समय के लिए मानता है, तो उसे बिना निशान वाली मुक्ति मिलती है। जब कोई व्यक्ति जिसके पास बहुत ज़्यादा शांति होती है, वह ध्यान को दर्द के रूप में मानता है, तो उसे बिना इच्छा वाली मुक्ति मिलती है। जब कोई व्यक्ति जिसके पास बहुत ज़्यादा ज्ञान होता है, वह ध्यान को न-स्व के रूप में मानता है, तो उसे शून्य मुक्ति मिलती है।

70. (1) जब कोई बहुत ज़्यादा पक्का इरादा रखने वाला इंसान ध्यान को कुछ समय के लिए देता है, तो उसमें कौन सी आज़ादी हावी होती है? (2) डेवलपमेंट में उसके बाद कितनी चीज़ें आती हैं, क्या वे एक जैसी शर्तें हैं, क्या वे आपसी मेलजोल की शर्तें हैं, क्या वे सपोर्ट की शर्तें हैं, क्या वे जुड़ाव की शर्तें हैं, क्या उनका एक ही काम (स्वाद) है? (3) डेवलपमेंट किस मायने में है? (4) कौन डेवलप होता है?

(5) जब कोई बहुत शांत व्यक्ति ध्यान को दर्दनाक मानता है, तो उसमें कौन सी मुक्ति हावी होती है? (6) विकास में उसके बाद कितनी क्षमताएँ आती हैं,... (7) विकास किस अर्थ में होता है? (8) कौन विकसित होता है?

(9) जब महान ज्ञान वाला व्यक्ति अनात्मा के रूप में ध्यान देता है, तो उसमें कौन सी मुक्ति प्रमुख होती है? (10) विकास में उसके बाद कितनी [59] मुक्तिएँ आती हैं,... (11) विकास किस अर्थ में है? (12) कौन विकसित होता है?

(1) जब कोई बहुत ज़्यादा पक्का इरादा रखने वाला इंसान ध्यान को कुछ समय के लिए मानता है, तो उसमें बिना निशान वाली मुक्ति हावी हो जाती है। (2) विकास में उसके बाद दो मुक्ति आती हैं, जो एक जैसी होती हैं, आपस में जुड़ी होती हैं, सहारे की स्थिति होती हैं, साथ की स्थिति होती हैं, उनका एक ही काम (स्वाद) होता है। (3) विकास एक ही काम (स्वाद) के मतलब में होता है। (4) वह विकसित होता है जो सही रास्ते पर चल पड़ा है: जो गलत रास्ते पर चल पड़ा है, उसमें मुक्ति का कोई विकास नहीं होता।

(5) जब कोई बहुत शांत इंसान ध्यान को दर्द समझकर देता है, तो उसमें बिना इच्छा वाली मुक्ति हावी हो जाती है। (6) विकास में उसके बाद दो मुक्ति आती हैं, वे एक जैसी स्थितियाँ हैं, आपसी संबंध की स्थितियाँ हैं, सहारे की स्थितियाँ हैं, साथ की स्थितियाँ हैं, उनका एक ही काम (स्वाद) होता है। (7) विकास एक ही काम (स्वाद) के अर्थ में होता है। (8) वह विकसित होता है जो सही रास्ते पर चल पड़ा है: जो गलत रास्ते पर चल पड़ा है, उसमें मुक्ति का कोई विकास नहीं होता।

(9) जब कोई बहुत समझदार इंसान, खुद को न मानकर ध्यान देता है, तो उसमें खालीपन वाली मुक्ति हावी हो जाती है। (10) डेवलपमेंट में उसके बाद दो मुक्ति आती हैं, जो एक जैसी होती हैं, आपस में जुड़ी होती हैं, सपोर्ट वाली होती हैं, साथ वाली होती हैं, एक ही काम (टेस्ट) करती हैं। (11) डेवलपमेंट एक ही काम (टेस्ट) के मतलब में होता है। (12) जो सही रास्ते पर चल पड़ा है, वह डेवलप होता है: जो गलत रास्ते पर चल पड़ा है, उसमें मुक्ति का कोई डेवलपमेंट नहीं होता।

71. (1) जब कोई बहुत ज़्यादा पक्का इरादा रखने वाला इंसान ध्यान को हमेशा के लिए देता है, तो उसमें कौन सी मुक्ति हावी होती है? (2) डेवलपमेंट में उसके बाद कितनी मुक्ति आती हैं, क्या वे एक जैसी शर्तें हैं, क्या वे आपस में जुड़ी हुई शर्तें हैं, क्या वे सपोर्ट की शर्तें हैं, क्या वे साथ देने की शर्तें हैं, क्या वे एक ही काम (स्वाद) करती हैं? (3) पेनिट्रेशन के समय उसमें कौन सी मुक्ति हावी होती है? (4) पेनिट्रेशन में उसके बाद कितनी मुक्ति आती हैं, क्या वे एक जैसी शर्तें हैं, क्या वे आपस में जुड़ी हुई शर्तें हैं, क्या वे सपोर्ट की शर्तें हैं, क्या वे साथ देने की शर्तें हैं, क्या वे एक ही काम (स्वाद) करती हैं? (5) डेवलपमेंट किस मायने में? (6) पेनिट्रेशन किस मायने में?

(7) जब महान शांति वाला व्यक्ति ध्यान को दर्दनाक मानता है, तो उसमें कौन सी मुक्ति प्रमुख है? (8) विकास में... (12) किस अर्थ में प्रवेश? [60]

(13) जब कोई बहुत बुद्धिमान व्यक्ति खुद से अलग होकर ध्यान देता है, तो उसमें कौन सी मुक्ति हावी होती है? (14) विकास में... (18) किस अर्थ में पैठ?

(1) जब महान संकल्प वाला व्यक्ति ध्यान को क्षणभंगुर मानकर देता है, तो उसमें चिह्नहीन मुक्ति प्रमुख होती है। (2) विकास में उसके बाद दो मुक्तिएँ आती हैं, जो संगति की स्थितियाँ हैं, पारस्परिकता की स्थितियाँ हैं, आधार की स्थितियाँ हैं, साहचर्य की स्थितियाँ हैं, जिनका एक ही कार्य (स्वाद) होता है। (3) प्रवेश के समय उसमें चिह्नहीन मुक्ति प्रमुख होती है। (4) प्रवेश में उसके बाद दो मुक्तिएँ आती हैं, जो संगति की स्थितियाँ हैं, पारस्परिकता की स्थितियाँ हैं, आधार की स्थितियाँ हैं, साहचर्य की स्थितियाँ हैं, जिनका एक ही कार्य (स्वाद) होता है। (5) विकास एकल कार्य (स्वाद) के अर्थ में होता है। (6) प्रवेश देखने के अर्थ में होता है: इसलिए जो प्रवेश करता है वह विकसित होता है, और जो विकास करता है वह प्रवेश करता है।

(7) जब महान शांति वाला व्यक्ति दर्द के रूप में ध्यान देता है, तो इच्छा रहित मुक्ति उसमें प्रमुख होती है। (8) विकास में... (9) प्रवेश के समय इच्छा रहित मुक्ति उसमें प्रमुख होती है। (10) प्रवेश में... (12) प्रवेश देखने के अर्थ में है: इसलिए जो प्रवेश करता है वह विकसित होता है, और जो विकसित होता है वह प्रवेश करता है।

(13) जब महान ज्ञान वाला व्यक्ति अनात्मा के रूप में ध्यान देता है, तो उसमें शून्यता मुक्ति प्रमुख होती है। (14) विकास में... (15) प्रवेश के समय उसमें शून्यता मुक्ति प्रमुख होती है। (16) प्रवेश में... (18) प्रवेश देखने के अर्थ में है: इसलिए जो प्रवेश करता है वह विकसित होता है, और जो विकास करता है वह प्रवेश करता है।

72. (1) जब वह ध्यान को अनित्य मानकर देता है, तो उसमें कौन सी मुक्ति प्रमुख है? वह कौन सी मुक्ति से युक्त है जो विश्वास से मुक्त है? [61]

(2) जब वह ध्यान को दर्दनाक मानता है, तो उसमें कौन सी मुक्ति उत्कृष्ट है? वह किस मुक्ति के साथ उत्कृष्ट है जो एक बॉडी विटनेस है?

(3) जब वह अनात्मा होकर ध्यान देता है, तो कैसी मुक्ति होती है

उसमें? किस मुक्ति के साथ वह दर्शन को प्राप्त हुआ है?

(1) जब वह ध्यान को अनित्य मानकर देता है, तो उसमें बिना निशान वाली मुक्ति उभर कर आती है। बिना निशान वाली मुक्ति के साथ वह विश्वास से मुक्त हो जाता है।

(2) जब वह ध्यान को दर्दनाक मानता है, तो उसमें इच्छा रहित मुक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इच्छा रहित मुक्ति के साथ वह एक बॉडी विटनेस है।

(3) जब वह ध्यान को बिना किसी आत्मा के देता है, तो उसमें शून्यता की मुक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। शून्यता की मुक्ति के साथ वह दर्शन को प्राप्त करने वाला बन जाता है।

74. [पहले रास्ते के पूरा होने के चार पलों में:] वह विश्वास से मुक्त हो गया है (सद्दाहंतो विमुत्तो), इसलिए वह विश्वास से मुक्त हुआ है (सद्दा-विमुत्तो); उसने छूकर (संपर्क करके) निब्बान पाया है, इसलिए वह शरीर का साक्षी है; उसने दृष्टि से निब्बान पाया है, इसलिए वह दृष्टि को प्राप्त हुआ है।

[बाकी रास्तों के पलों में:] वह विश्वास (सद्दहंतो विमुच्चति) से मुक्त हो जाता है, इस तरह वह विश्वास से मुक्त होता है; वह पहले ज्ञान का स्पर्श (कॉन्टैक्ट) करता है और बाद में समाप्ति, निब्बान को महसूस करता है, इस तरह वह एक बॉडी विटनेस है; यह जाना जाता है, देखा जाता है, पहचाना जाता है, महसूस किया जाता है, और सुना जाता है (अनुभव किया जाता है), इस समझ के साथ कि बनना दर्दनाक है और समाप्ति सुखद है, इस तरह वह विज़न को पाने वाला है।

75. वे सभी जो विकसित हुए हैं, विकसित हो रहे हैं, विकसित होंगे,... [और इसी तरह §64 में)... त्याग में आश्वासन तक पहुंचेंगे, संकेतहीन मुक्ति के प्रभाव के माध्यम से विश्वास द्वारा मुक्त होंगे, इच्छाहीन मुक्ति के प्रभाव के माध्यम से शरीर साक्षी, शून्यता मुक्ति के प्रभाव के माध्यम से दृष्टि प्राप्त करेंगे। 8

वे सभी...गैर-बुराई... [और

...इसी तरह §64 तक]...

वे सभी जो दुख को पूरी तरह समझते हैं, जो मूल को छोड़ देते हैं, जो समाप्ति को महसूस करते हैं, जो मार्ग विकसित करते हैं, वे बिना निशान वाली मुक्ति के प्रभाव से विश्वास से मुक्त हो जाते हैं, बिना इच्छा वाली मुक्ति के प्रभाव से शरीर के साक्षी, शून्य मुक्ति के प्रभाव से दृष्टि प्राप्त कर लेते हैं।

*

76. असलियत की कितनी बातों में पैठ है? वह असलियत की कितनी बातों में पैठ करता है?

असलियत की चार तरह से समझ है। वह असलियत की चार तरह से समझ रखता है।

वह दुख की वास्तविकता में प्रवेश करता है। (और इसी प्रकार धारा 65 से [62] तक... इन सभी पहलुओं में वास्तविकताओं का प्रवेश है।

जो इन चार पहलुओं में असलियत को समझ लेता है, वह बिना निशान वाली मुक्ति के असर से विश्वास से मुक्त हो जाता है, बिना इच्छा वाली मुक्ति के असर से शरीर का साक्षी बन जाता है, और शून्यता वाली मुक्ति के ज़रिए नज़रिया पा लेता है।

77. असलियत की कितनी बातों में पैठ है? वह असलियत की कितनी बातों में पैठ करता है?

नौ पहलुओं में असलियत की पैठ है। वह नौ पहलुओं में असलियत की पैठ करता है।

वह दुख की वास्तविकता में प्रवेश करता है... [और इसी प्रकार §66 तक] ...और अहसास द्वारा समाप्ति में प्रवेश करता है।

जो इन नौ पहलुओं में असलियत को समझ लेता है, वह बिना निशान वाली मुक्ति के असर से विश्वास से मुक्त हो जाता है, बिना इच्छा वाली मुक्ति के असर से शरीर का साक्षी बन जाता है, और शून्यता वाली मुक्ति के असर से विज़न पा लेता है।

*

78. जब वह ध्यान को कुछ समय का मानता है, तो वह किन विचारों को सही ढंग से जानता और देखता है? सही नज़रिया कैसे होता है? उससे अंदाज़ा लगाकर, सभी बनावटें साफ़ तौर पर कुछ समय का कैसे दिखती हैं? शक कहाँ छोड़ दिया जाता है? जब वह ध्यान को दर्द भरा मानता है, तो वह किन विचारों को सही ढंग से जानता और देखता है? सही नज़रिया कैसे होता है? उससे अंदाज़ा लगाकर, सभी बनावटें साफ़ तौर पर दर्द भरी कैसे दिखती हैं? शक कहाँ छोड़ दिया जाता है?

जब वह खुद के बजाय ध्यान देता है, तो वह किन विचारों को सही ढंग से जानता और देखता है? सही नज़रिया कैसे होता है? उससे यह अंदाज़ा कैसे लगाया जा सकता है कि सभी विचार खुद के बजाय साफ तौर पर कैसे देखे जाते हैं? शक को कहाँ छोड़ दिया जाता है?

जब वह ध्यान को कुछ समय का मानकर देता है, तो वह निशान को सही ढंग से जानता और देखता है। इसलिए 'सही देखना' कहा जाता है। इस तरह, उससे अंदाज़ा लगाकर, सभी बनावट साफ़ तौर पर कुछ समय का दिखाई देती हैं। यहाँ शक छोड़ दिया जाता है।

जब वह दुःखरूप में ध्यान देता है, तब वह घटना को ठीक प्रकार जानता और देखता है। इसलिए 'सम्यक दृष्टि' कहा गया है। इस प्रकार उससे अनुमान [63] करने पर सभी रचनाएँ स्पष्टतः दुःखरूप में देखी जाती हैं। इसमें संशय त्याग दिया जाता है।

जब वह खुद से अलग होकर ध्यान देता है, तो वह निशान और घटना को सही ढंग से जानता और देखता है। इसलिए 'सही देखना' कहा जाता है। इस तरह, उससे अंदाज़ा लगाकर, सभी विचार10 साफ़ तौर पर खुद से अलग देखे जाते हैं। यहाँ शक छोड़ दिया जाता है।

79. सही ज्ञान, सही नज़रिया और शक पर जीत - क्या ये बातें मतलब में अलग हैं और शब्दों में भी अलग हैं, या इनका मतलब एक है और सिर्फ़ शब्दों में फ़र्क है?

सही ज्ञान, सही नज़रिया, और शक पर काबू पाना - इन विचारों का मतलब एक है और सिर्फ़ अक्षर अलग हैं।

*

80. जब वह ध्यान को कुछ समय के लिए मानता है, तो उसे क्या डर लगता है? जब वह ध्यान को दर्दनाक मानता है, तो उसे क्या डर लगता है? जब वह ध्यान को खुद से अलग मानता है, तो उसे क्या डर लगता है?

जब वह कुछ समय के लिए होने वाली चीज़ पर ध्यान देता है, तो उसे निशानी डर लगती है। जब वह दर्दनाक चीज़ पर ध्यान देता है, तो उसे घटना डर लगती है। जब वह खुद को न मानकर ध्यान देता है, तो उसे निशानी और घटना डर लगती है।

81. आभास को आतंक समझना, खतरे का ज्ञान और वैराग्य - क्या ये विचार अर्थ में भिन्न हैं और अक्षर में भी भिन्न हैं, या अर्थ में एक हैं और केवल अक्षर भिन्न हैं?

दिखने को डर समझना, और खतरे का ज्ञान, और वैराग्य - इन विचारों का मतलब एक है और सिर्फ़ अक्षर अलग हैं।

82. खुद का नहीं सोचना और खुद को नहीं सोचना - क्या ये विचार मतलब में अलग हैं और अक्षर में भी अलग हैं, या इनका मतलब एक है और सिर्फ़ अक्षर अलग हैं?

'नॉट-सेल्फ' का चिंतन, और 'वॉइडनेस' का चिंतन - इन विचारों का मतलब एक है और सिर्फ़ अक्षर अलग हैं।

*

83. जब वह अस्थायी के रूप में ध्यान देता है, तो किस पर सोचने के बाद उसमें ज्ञान पैदा होता है? जब वह दर्दनाक के रूप में ध्यान देता है, तो किस पर सोचने के बाद उसमें ज्ञान पैदा होता है? जब वह गैर-स्व के रूप में ध्यान देता है, तो किस पर सोचने के बाद उसमें ज्ञान पैदा होता है?

जब वह अनित्य मानकर ध्यान देता है तो लक्षण पर विचार करने के बाद उसमें ज्ञान उत्पन्न होता है। जब वह [64] दुखद मानकर ध्यान देता है तो घटना पर विचार करने के बाद उसमें ज्ञान उत्पन्न होता है। जब वह अनात्म मानकर ध्यान देता है तो लक्षण तथा घटना पर विचार करने के बाद उसमें ज्ञान उत्पन्न होता है।

84. मुक्ति की इच्छा, और सोच-विचार, और बनने के बारे में एक जैसा होना - क्या ये विचार मतलब में अलग हैं और अक्षर में भी अलग हैं, या ये मतलब में एक हैं और सिर्फ़ अक्षर अलग हैं?

मुक्ति की इच्छा, और सोच-विचार, और बनने के बारे में एक जैसा होना - इन विचारों का मतलब एक है और सिर्फ़ अक्षर अलग हैं।

*

85. जब वह ध्यान को अस्थायी मानता है, तो उसका ज्ञान कहाँ से आता है? उसका ज्ञान कहाँ से आता है?

जब वह ध्यान को दर्दनाक मानता है, तो उसका ज्ञान कहाँ से आता है? उसका ज्ञान कहाँ जाता है?

जब वह खुद से अलग होकर ध्यान देता है, तो उसकी समझ कहाँ से आती है? उसकी समझ कहाँ से आती है?

जब वह अस्थायी रूप से ध्यान देता है, तो उसकी पहचान निशान से निकलती है; उसकी पहचान निशान रहित में प्रवेश करती है।

जब वह ध्यान को दर्दनाक मानता है, तो उसका ज्ञान घटना से निकलता है; उसका ज्ञान घटना न होने में चला जाता है।

जब वह खुद से अलग होकर ध्यान देता है, तो उसकी पहचान निशान और घटना से निकलती है; उसकी पहचान निशान रहित में, गैर-घटना में, और समाप्ति वाले निब्बान सिद्धांत में प्रवेश करती है।

86. उभरने और बाहर से दूर होने की समझ, और वंश-परिवर्तन का ज्ञान - क्या ये विचार अर्थ में अलग हैं और अक्षर में भी अलग हैं, या ये अर्थ में एक हैं और सिर्फ़ अक्षर अलग हैं?

उभरने की समझ और बाहरी चीज़ों से दूर होना, और ज्ञान का वंश बदलना - इन विचारों का मतलब एक है और सिर्फ़ अक्षर अलग हैं।

*

87. जब वह ध्यान को नश्वर मानकर देता है, तो वह किस मुक्ति से मुक्त होता है? जब वह ध्यान को दर्दनाक मानकर देता है, तो वह किस मुक्ति से मुक्त होता है? जब वह ध्यान को न-स्व के रूप में देता है, तो वह किस मुक्ति से मुक्त होता है?

जब वह ध्यान को कुछ समय के लिए मानता है, तो वह बिना निशान वाली मुक्ति से मुक्त हो जाता है। जब वह ध्यान को दर्द के तौर पर मानता है, तो वह बिना इच्छा वाली मुक्ति से मुक्त हो जाता है। जब वह ध्यान को खुद से अलग मानता है, तो वह बिना किसी निशान वाली मुक्ति से मुक्त हो जाता है।

88. उद्भव और दोनों से विमुख होना, मार्ग का तथा ज्ञान-क्या ये विचार अर्थ में भिन्न और [65] अक्षर में भिन्न हैं अथवा ये अर्थ में एक हैं और केवल अक्षर भिन्न हैं?

उद्भव और विमुख होना, दोनों की समझ और मार्ग का ज्ञान - ये विचार अर्थ में एक हैं, केवल अक्षर भिन्न हैं।

*

89. तीनों मुक्ति अलग-अलग क्षणों में कितने पहलुओं में होती हैं? एक क्षण में तीनों मुक्ति कितने पहलुओं में होती हैं?

तीनों मुक्ति चार पहलुओं में अलग-अलग पलों में हैं। तीनों मुक्ति सात पहलुओं में एक पल में हैं।

90. अलग-अलग क्षणों में तीन मुक्ति किन चार पहलुओं में हैं?

प्रभुत्व के अर्थ में, स्थिर करने के अर्थ में, मार्गदर्शन के अर्थ में, और निकास के अर्थ में।

अलग-अलग पलों में दबदबे के हिसाब से तीनों आज़ादी कैसी हैं?

जब वह ध्यान को कुछ समय के लिए देता है, तो बिना निशान वाली मुक्ति हावी हो जाती है; जब वह ध्यान को दर्द के तौर पर देता है, तो बिना इच्छा वाली मुक्ति हावी हो जाती है; जब वह ध्यान को खुद से अलग मानकर देता है, तो खाली मुक्ति हावी हो जाती है। इस तरह तीनों मुक्ति अलग-अलग पलों में हावी होने के मतलब में होती हैं।

अलग-अलग पलों में तीनों मुक्ति, स्थिरता के अर्थ में कैसी हैं?

जब वह अस्थाई रूप से ध्यान देता है, तो वह बिना निशान वाली मुक्ति के असर से पहचान को स्थिर करता है। जब वह दर्द के रूप में ध्यान देता है, तो वह बिना इच्छा वाली मुक्ति के असर से पहचान को स्थिर करता है। जब वह खुद को न मानकर ध्यान देता है, तो वह खाली मुक्ति के असर से पहचान को स्थिर करता है। इस तरह तीनों मुक्ति अलग-अलग पलों में स्थिर होने के मतलब में होती हैं।

गाइडेंस के हिसाब से अलग-अलग पलों में तीनों मुक्ति कैसे हैं?

जब वह ध्यान को कुछ समय के लिए देता है, तो वह बिना निशान वाली मुक्ति के असर से ज्ञान को गाइड करता है। जब वह ध्यान को दर्द के तौर पर देता है, तो वह बिना इच्छा वाली मुक्ति के असर से ज्ञान को गाइड करता है। जब वह ध्यान को खुद के तौर पर नहीं देता है, तो वह बिना किसी मतलब वाली मुक्ति के असर से ज्ञान को गाइड करता है। इसी तरह तीनों मुक्ति अलग-अलग पलों में गाइडेंस के मतलब में होती हैं।

आउटलेट के अर्थ में अलग-अलग पलों में तीनों मुक्तिएं कैसी हैं?

जब वह ध्यान को अनित्य मानकर देता है, [66] तो वह संकेतहीन मुक्ति के प्रभाव से निवृत्ति, निबाण की ओर ले जाया जाता है। जब वह ध्यान को पीड़ादायक मानकर देता है, तो वह इच्छारहित मुक्ति के प्रभाव से निवृत्ति, निबाण की ओर ले जाया जाता है। जब वह ध्यान को अनात्म मानकर देता है, तो वह शून्य मुक्ति के प्रभाव से निवृत्ति, निबाण की ओर ले जाया जाता है। इस तरह से आउटलेट के अर्थ में तीन मुक्ति अलग-अलग क्षणों में होती हैं।

इन चार पहलुओं में तीनों मुक्ति अलग-अलग पलों में होती हैं।

91. किन सात पहलुओं में तीनों मुक्ति एक पल में होती हैं?

मिलाने के अर्थ में, पहुँचने के अर्थ में, पाने के अर्थ में, पैठ के अर्थ में, एहसास के अर्थ में, आवाज़ के अर्थ में, मिलने के अर्थ में...

एक पल में मुक्ति कैसे मिलती है, एक साथ आने के अर्थ में... एक साथ आने के अर्थ में?

जब वह ध्यान को अस्थायी मानकर देता है, तो वह निशान से आज़ाद हो जाता है, इस तरह निशान रहित मुक्ति होती है। उसे उस चीज़ की कोई इच्छा नहीं होती जो वह था।

से मुक्त। इस तरह बिना इच्छा वाली मुक्ति होती है। वह उस चीज़ से खाली होता है जिसकी वह इच्छा नहीं करता, इस तरह बिना निशान वाली मुक्ति होती है। जिस चीज़ से वह खाली होता है, उसका उसे कोई निशान नहीं होता, इस तरह बिना निशान वाली मुक्ति होती है।

इस तरह तीनों मुक्ति एक ही पल में मिल जाती हैं,... एक साथ आने के अर्थ में।

जब वह ध्यान को दर्द की तरह देता है, तो वह इच्छा से आज़ाद हो जाता है, इस तरह बिना इच्छा वाली मुक्ति होती है। वह उस चीज़ से खाली होता है जिसकी उसे इच्छा नहीं होती, इस तरह बिना इच्छा वाली मुक्ति होती है। जिस चीज़ से वह खाली होता है, उसका उसे कोई निशान नहीं होता, इस तरह बिना निशान वाली मुक्ति होती है। जिस चीज़ का उसे कोई निशान नहीं होता, उसका उसे कोई निशान नहीं होता, इस तरह बिना इच्छा वाली मुक्ति होती है।

इस प्रकार तीनों मुक्तियाँ एक क्षण में संयोजन के अर्थ में,... अभिसरण के अर्थ में होती हैं।[67]

जब वह खुद के बिना ध्यान देता है, तो वह गलत मतलब निकालने से आज़ाद हो जाता है, इस तरह शून्य मुक्ति होती है। उसके पास उस चीज़ का कोई निशान नहीं होता जिससे वह खाली है, इस तरह बिना निशान वाली मुक्ति होती है। वह उस चीज़ का निशान नहीं चाहता जिसका उसके पास कोई निशान नहीं है, इस तरह बिना इच्छा वाली मुक्ति होती है। वह उस चीज़ से खाली होता है जिसकी वह इच्छा नहीं करता, इस तरह बिना इच्छा वाली मुक्ति होती है।

इस तरह तीनों मुक्ति एक ही पल में मिल जाती हैं,... एक साथ आने के अर्थ में।

तीनों मुक्ति एक ही पल में इन सात पहलुओं में हैं।

*

92. मुक्ति है, प्रवेशद्वार है, मुक्ति का प्रवेशद्वार है, मुक्ति का विरोध करने वाली चीज है, मुक्ति के अनुकूल होने वाली चीज है, मुक्ति के रूप में विमुख होना है, मुक्ति का विकास है, मुक्ति का शांतिकरण है।

93. मुक्ति क्या है? शून्य मुक्ति, बिना निशान वाली मुक्ति, बिना इच्छा वाली मुक्ति।

94. शून्य मुक्ति क्या है ?

नश्वरता के चिंतन का ज्ञान शून्य मुक्ति है क्योंकि यह स्थायी के रूप में गलत व्याख्या से मुक्त करता है। दर्द के चिंतन का ज्ञान शून्य मुक्ति है क्योंकि यह सुखद के रूप में गलत व्याख्या से मुक्त करता है। स्वयं के चिंतन का ज्ञान शून्य मुक्ति है क्योंकि यह स्वयं के रूप में गलत व्याख्या से मुक्त करता है। वैराग्य के चिंतन का ज्ञान शून्य मुक्ति है क्योंकि यह आनंद के रूप में गलत व्याख्या से मुक्त करता है। मिटने के चिंतन का ज्ञान शून्य मुक्ति है क्योंकि यह लालच के रूप में गलत व्याख्या से मुक्त करता है। समाप्ति के चिंतन का ज्ञान शून्य मुक्ति है क्योंकि यह मूल के रूप में गलत व्याख्या से मुक्त करता है।

त्याग के चिंतन का ज्ञान शून्य मुक्ति है क्योंकि यह लोभ के रूप में गलत व्याख्या से मुक्त करता है।

बिना निशान का चिंतन शून्य मुक्ति है क्योंकि यह निशान के तौर पर गलत मतलब निकालने से आज़ाद करता है। बिना इच्छा के चिंतन का ज्ञान शून्य मुक्ति है क्योंकि यह इच्छा के तौर पर गलत मतलब निकालने से आज़ाद करता है। शून्यता के चिंतन का ज्ञान शून्य मुक्ति है क्योंकि यह सभी गलत मतलब निकालने से आज़ाद करता है।

भौतिकता में नश्वरता के चिंतन का ज्ञान शून्य मुक्ति है क्योंकि यह स्थायी के रूप में गलत व्याख्या से मुक्ति दिलाता है।... [और इसी तरह ट्र. 1 §5 में सूचीबद्ध 201 विचारों में से प्रत्येक के मामले में दस चिंतन के साथ)... बुढ़ापे और मृत्यु में शून्यता के चिंतन का ज्ञान शून्य मुक्ति है क्योंकि यह सभी गलत व्याख्याओं से मुक्ति दिलाता है। [68]

यही शून्य मुक्ति है।

95. बिना निशान की मुक्ति क्या है?

नश्वरता के चिंतन का ज्ञान बिना निशान वाली मुक्ति है क्योंकि यह स्थायी रूप से निशान से आज़ाद करता है... [और इसी तरह §94 में, गलत मतलब निकालने के लिए निशान को बदला गया है]... बिना निशान के चिंतन का ज्ञान बिना निशान वाली मुक्ति है क्योंकि यह सभी निशानों से आज़ाद करता है। बिना इच्छा के चिंतन का ज्ञान बिना निशान वाली मुक्ति है क्योंकि यह इच्छा के रूप में निशान से आज़ाद करता है। शून्यता के चिंतन का ज्ञान बिना निशान वाली मुक्ति है क्योंकि यह गलत मतलब निकालने के रूप में निशान से आज़ाद करता है।

भौतिकता में नश्वरता के चिंतन का ज्ञान बिना निशान वाली मुक्ति है क्योंकि यह स्थायी के रूप में संकेत से मुक्त करता है... [और इसी तरह Tr. I §5 में सूचीबद्ध 201 विचारों में से प्रत्येक के मामले में दस चिंतन के साथ]... बुढ़ापे और मृत्यु में शून्यता के चिंतन का ज्ञान बिना निशान वाली मुक्ति है क्योंकि यह गलत व्याख्या के रूप में संकेत से मुक्त करता है।

यह बिना निशान वाली आज़ादी है।

96. इच्छारहित मुक्ति क्या है?

नश्वरता के चिंतन का ज्ञान इच्छारहित मुक्ति है क्योंकि यह स्थायी इच्छा से मुक्ति दिलाता है... (और इसी तरह §94 में, गलत व्याख्या के लिए इच्छा को प्रतिस्थापित करते हुए]... [69] संकेतहीनता के चिंतन का ज्ञान इच्छारहित मुक्ति है क्योंकि यह संकेत के रूप में "इच्छा" से मुक्त करता है। इच्छारहितता के चिंतन का ज्ञान इच्छारहित मुक्ति है क्योंकि यह सभी इच्छाओं से मुक्ति दिलाता है। शून्यता के चिंतन का ज्ञान इच्छारहित मुक्ति है क्योंकि यह गलत व्याख्या के रूप में इच्छा से मुक्ति दिलाता है।

भौतिकता में नश्वरता के चिंतन का ज्ञान बिना इच्छा के मुक्ति है क्योंकि यह स्थायी इच्छा से मुक्ति दिलाता है... [और इसी तरह Tr. 1 §5 में लिस्ट किए गए 201 विचारों में से हर एक के मामले में दस चिंतन . . . के साथ] शून्यता के चिंतन का ज्ञान

बुढ़ापे और मौत में इच्छा रहित मुक्ति है क्योंकि यह इच्छा को गलत मतलब से आज़ाद करती है।

यही इच्छारहित मुक्ति है।12

यही मुक्ति है।

97. गेटवे क्या है?

वे बेदाग, फायदेमंद विचार जो ज्ञान से जुड़े होते हैं और वहीं पैदा होते हैं - वे ही रास्ता हैं।

98. मुक्ति का द्वार क्या है?

उन विचारों का जो सपोर्टिंग ऑब्जेक्ट है, यानी समाप्ति, निब्बान, वही मुक्ति का रास्ता है।

99. मुक्ति का विरोध किससे होता है?

अलाभकारी की तीन जड़ें मुक्ति का विरोध करती हैं, तीन प्रकार के दुराचार मुक्ति का विरोध करते हैं, सभी अलाभकारी विचार भी मुक्ति का विरोध करते हैं। यही मुक्ति का विरोध करता है। [70]

100. मुक्ति के अनुरूप क्या है?

फ़ायदे की तीन जड़ें मुक्ति के लिए हैं, तीन तरह के अच्छे व्यवहार मुक्ति के लिए हैं, और सभी फ़ायदेमंद विचार भी मुक्ति के लिए हैं। यही मुक्ति के लिए है।

101. मुँह मोड़ना मुक्ति क्या है?

बोध से विमुख होना, इच्छा से विमुख होना, संज्ञान से विमुख होना, ज्ञान से विमुख होना, मुक्ति से विमुख होना, वास्तविकताओं से विमुख होना।

जो देखता है वह मुँह फेर लेता है,... [और इसी तरह, अंत तक Tr. I §522 को दोहराते हुए।]

इसे मुक्ति के रूप में दूर जाना कहा जाता है।

102. मुक्ति का विकास क्या है?

पहले झाना की खेती, विकास और अधिक बनाना। दूसरे झाना की खेती, विकास और अधिक बनाना... तीसरा झाना... चौथा झाना... असीम स्थान से मिलकर आधार की प्राप्ति... असीम चेतना से मिलकर आधार की प्राप्ति... शून्यता से मिलकर आधार की प्राप्ति... न बोध और न ही गैर-बोध से मिलकर आधार की प्राप्ति... धारा-प्रवेश पथ... एक बार-वापसी पथ... न-वापसी पथ। अरहंत पथ की खेती, विकास और अधिक बनाना। [71] यह मुक्ति का विकास है।

103. ट्रैंक्विलाइज़ेशन से मुक्ति क्या है?

पहले झान की प्राप्ति या परिणाम। दूसरे झान की प्राप्ति या परिणाम। तीसरा झान... चौथा झान... असीम स्थान वाले आधार की प्राप्ति... असीम चेतना वाले आधार की प्राप्ति... शून्यता वाले आधार की प्राप्ति... प्राप्ति या परिणाम

उस आधार की प्राप्ति जिसमें न तो कोई बोध हो और न ही कोई गैर-बोध। स्ट्रीम-एंट्री पथ का स्ट्रीम-एंट्री फल। एक बार लौटने वाले पथ का एक बार लौटने वाला फल। न लौटने वाले पथ का न लौटने वाला फल। अरहंत पथ का अरहंत फल।

यह मुक्ति के रूप में ट्रैंक्विलाइज़ेशन है।

तीसरे रिसाइटेशन सेक्शन का अंत।

मुक्ति पर ग्रंथ का अंत।



नोट्स

[1] 'स्ववत्थिकम अवत्थपेटि-पूरी तरह से परिभाषित करता है: अवत्थिका और अवत्थपेटि P.T.S. Dict में नहीं हैं; लेकिन वत्थपेटि देखें।

* P.T.S. टेक्स्ट, वॉल्यूम ii, पेज 47, 1. 21, में यहाँ गलती से कामूपादना शब्द शामिल किया गया है।

'सहजता-पच्चाय' वगैरह, पठान सिस्टम का रेफरेंस है।

[4] विसुद्धिमग्ग (P.T.S. एड. पेज 660) में इस हिस्से को कोट करते हुए लिखा है 'फुत्तंत्तं सचिकतो ति कायासक्खि दिट्ठा पट्ट्टो ति दिट्ठिप्पत्तो', जिसे परमत्तमंजूसा ने माना है; लेकिन सद्धम्मप्पाकासिनी यहाँ 'फुत्तंत्तं सचिकतो ति कायासक्खि दिट्ठा पट्ट्टो ति दिट्ठिप्पत्तो' पढ़ने का सपोर्ट करते हैं और उसी हिसाब से कमेंट करते हैं।

परमत्तमंजूसा कहते हैं: 'Phutthantam sacchikato' ti phutthānam anantaram phutthanto; phutthanan arūpajjhānānam anantaro kālo ti adhippayo. Accantasamyogo c'etarm vacanam. Phutthanantarakālam eva sacchikaraṇūpāyena sacchikātabbam sacchākāsi ti vuttan hoti. Bhāvanapumsakam va etam, yathā 'ekam antan' ti. Yo hi arūpajjhānena rūpakāyato nămakayekadesato ca vikkhambhanavimokkhena vimutto, tena nirodhasankhāto vimokkho alocito pakāsito viya hoti. Nirodham pana aramıma-nam katvā ekaccesu āsavesu khepitesu tena so sacchikato hoti. Tasma so sacchikā-tabban yathā alocitam nămakāyena sacchākāsi ti kāyasakkhi ti vuccati, na tu vimutto ekaccānam āsavānam aparikkhiṇatta. 'Ditthantam patto' ti dassanasankhātassa sota-pattimaggañānakiccassa anantaran patto ti vuttam hoti; pathamaphalato patthāya hi yāva aggamaggā ditthippatto ti. दिट्ठितापट्ठो ति वा पाठो: चतुसच्चदस्सानसंखाताया दिट्ठिया निरोधन पत्तो ति अट्ठो' ('फुत्तंतं सचिकतो: जो सुना जाता है (फुत्त-अंतो) उसका अगला भाग वह है जो सुनाई गई (अनुभव की गई) चीज़ों के बाद (अनंतरम्) आता है; जिसका मतलब है वह समय (काल) जो अमूर्त ज्ञान के बाद आता है। ग्रामर के हिसाब से यह शब्द एक अकान्ता सरयोग (क्रिया विशेषण जिसका मतलब तुरंत-अगला है) है। इसका मतलब यह है कि उसने उस समय को महसूस कर लिया है जो सुनाई गई चीज़ के बाद आता है, जिस समय को उसके एहसास के तरीकों से महसूस करना होता है। या फिर यह ग्रामर के हिसाब से एक नपुंसक एब्स्ट्रैक्ट नाउन है जैसे 'एकम अन्तर्म (एक तरफ)। जो कोई अमूर्त ज्ञान से भौतिक शरीर से और दमन से होने वाली ऐसी मुक्ति से मानसिक शरीर के एक हिस्से से मुक्त हो जाता है। सिर्फ़, जैसा कि कहा गया है (अलोशिता), उसने उस तरह की मुक्ति का इशारा किया है जिसे समाप्ति कहते हैं, लेकिन अभी तक शरीर के साथ उसे महसूस नहीं किया है। लेकिन समाप्ति को लक्ष्य बनाने पर, कुछ नासूर खत्म होने (खेपिता) के बाद, वह समाप्ति उसे महसूस हो जाती है। इसीलिए उसे शरीर-साक्षी कहा जाता है क्योंकि मानसिक शरीर के साथ उसने वह महसूस कर लिया है जो महसूस किया जाना था, ठीक वैसे ही जैसा कि बताया गया था; वह पूरी तरह से मुक्त नहीं है क्योंकि कुछ

नासूर अभी खत्म नहीं हुए हैं। 'दिष्टान्तं पत्तो:' का मतलब है कि वह स्ट्रीम-एंट्री पाथ-नॉलेज के अगले फंक्शन (अनंतरः) तक पहुँच गया है, जिस फंक्शन को 'देखना' कहते हैं; क्योंकि स्ट्रीम-एंट्री से सबसे ऊँचे रास्ते तक पहुँचने के लिए उसे 'विज़न तक पहुँचा हुआ (दिट्ठिप्पत्तो)' कहा जाता है। एक और मतलब है डिफ्फी तपत्तो; इसका मतलब यह है कि उसने 'चार असलियतों को देखना' नाम के राइट-व्यू के ज़रिए समाप्ति पा ली है (विस्मा 851 B 1910)।

सद्धम्मप्पाकासिनी कहते हैं: 'Phutthatta sacchikato ti kāyasakkhi ti sukkhavi-passakatte sati upacarajjhānaphassassa rapārūpajjhānalābhitte sati rūparūpajjhāna-phassassa phutthattā nibbānam sacchikato ti kāyasakkhi ti nāma. Kāyena vuttappakāre jhānaphasse ca nibbane ca sakkhi ti vuttam hoti. 'Ditthippatto' ti disphatta patto ti sotāpattimaggakkhane sampayuttena parññindriyena nibbānassa disshattā pacchā sotāpattiphalādivasena nibbānam patto ti ditthippatto. पण्णिन्द्रियसंख्यातय दिष्टिया निब्बानं पट्टों ति वुत्तं होती' ('फुट्ठट्टा सच्चिकतो ति कायासक्खि': एक 'शरीर-साक्षी' इसलिए कहा जाता है क्योंकि उसने एक साधारण-अंतर्दृष्टि वाले कार्यकर्ता के मामले में पहुँच ज्ञान के संपर्क (ध्वनि-करण) के कारण, या भौतिक और अभौतिक ज्ञान के प्राप्तकर्ता के मामले में भौतिक और अभौतिक ज्ञान के संपर्क (ध्वनि-करण) के कारण, स्पर्श (ध्वनि-फुट्ठट्टा) होने पर निब्बान को महसूस किया है। इसका मतलब है कि वह ज्ञान-संपर्क (ध्वनि) और निब्बान के मामले में, दोनों में शरीर के साथ साक्षी है। 'दिट्ठिप्पत्तो': उसने इसे देखे जाने के कारण प्राप्त किया है। निब्बान के उस समय संबंधित समझ-क्षमता के माध्यम से देखे जाने के कारण। स्ट्रीम-एंट्री पथ से वह बाद में स्ट्रीम एंट्री के फल से निब्बान पाता है, इस तरह वह विज़न से (विज़न की ओर जाने के बजाय) पाया जाता है; इसका मतलब है कि उसने अंडरस्टैंडिंग-फैकल्टी नाम के विज़न से निब्बान पाया है - PsA 396)।

[5] पी.टी.एस. पाठ में लिखा है phassitā vā phassanti vā phassissanti vā (ध्वनि हुई है, आदि), लेकिन बर्मीज़ ट्रांसक्रिप्ट में लिखा है passitā vā, आदि (देखा है, आदि)।

[6] इस ग्रंथ की धारा 55f देखें।

[7] Cf. §61.

*देखें §64.

[9] §65 देखें.

10 P.T.S. टेक्स्ट में sabbe sankhārā anattato है, लेकिन Burmese Transcript में sabbe है *dhammā anattato.*

11 पी.टी.एस. टेक्स्ट वॉल्यूम ii, पेज 69, L 6 को ऐसे पढ़ना चाहिए... निमित्ततो पणिडिया मुक्तति ति... 12 पी.टी.एस. टेक्स्ट में 'अयम अप्पनिहितो विमोक्खो' वाक्य गायब है।

1. [72] (i) सफल गंतव्य के मामले में, कितने मूल कारणों में पुनर्जन्म की स्थितियाँ (पुनर्जन्म के क्षण में) ज्ञान से जुड़ी होती हैं?

(ii) धनी खत्तियों, धनी ब्राह्मणों, धनी गृहस्थों, विषय-वासना क्षेत्र के देवताओं के मामले में, कितने मूल कारणों में पुनर्जन्म के समय उसकी स्थितियाँ ज्ञान से जुड़ी होती हैं?

(iii) भौतिक क्षेत्र के देवताओं के मामले में, कितने मूल कारणों में पुनर्जन्म के समय उसकी स्थितियाँ ज्ञान से जुड़ी होती हैं?

(iv) अभौतिक-क्षेत्रीय देवताओं के मामले में, कितने मूल-कारणों में पुनर्जन्म की स्थितियाँ [पुनर्जन्म-संबंध के क्षण] ज्ञान से जुड़ी होती हैं?

(i) सफल मंज़िल के मामले में, पुनर्जन्म की शर्तें ज्ञान से जुड़े [पुनर्जन्म-संबंध के क्षण] आठ मूल कारणों में होती हैं।

(ii) धनी खत्तियों, धनी ब्राह्मणों, धनी गृहस्थों, इन्द्रिय-कामना-क्षेत्र देवताओं के मामले में, पुनर्जन्म की शर्तें ज्ञान से जुड़े [पुनर्जन्म-संबंध के क्षण] आठ मूल कारणों में हैं।

(iii) भौतिक क्षेत्र के देवताओं के मामले में, पुनर्जन्म की शर्तें ज्ञान से जुड़े [पुनर्जन्म-संबंध के क्षण] आठ मूल कारणों में होती हैं।

(iv) अभौतिक-क्षेत्र देवताओं के मामले में, पुनर्जन्म की शर्तें ज्ञान से जुड़े [पुनर्जन्म-संबंध के क्षण] आठ मूल-कारणों में हैं।

2. (i) सफल मंज़िल के मामले में, पुनर्जन्म की शर्तें [पुनर्जन्म-संबंध के क्षण] ज्ञान से किन आठ मूल कारणों से जुड़ी होती हैं?

फायदेमंद काम करने के पल में (पिछले जन्म में), तीन मूल कारण, फायदेमंद होने के कारण, उस समय पैदा हुई इच्छा के लिए एक साथ होने की शर्तें हैं; इसलिए 'फायदेमंद मूल कारणों के साथ स्थिति बनती है' कहा जाता है। आसक्ति के पल में [मौत से ठीक पहले), दो मूल कारण, [यानी, लालच और भ्रम, फायदेमंद न होने के कारण, उस समय पैदा हुई इच्छा के लिए एक साथ होने की शर्तें हैं; इसलिए 'नुकसानदेह मूल कारणों के साथ स्थिति बनती है' कहा जाता है। पुनर्जन्म से जुड़ने के पल में (नए जन्म में), तीन मूल कारण, अनिश्चित होने के कारण, एक साथ होने की शर्तें हैं।

उस पल पैदा हुई इच्छा के लिए; इसलिए 'मेंटैलिटी-मटेरियलिटी के साथ कंडीशन के तौर पर कॉन्शसनेस होती है और कॉन्शसनेस के साथ कंडीशन के तौर पर मेंटलिटी-मटेरियलिटी होती है' कहा जाता है।

3. पुनर्जन्म-संबंध के समय, पांच समुच्चय संसर्ग स्थितियां, [73] पारस्परिकता स्थितियां, समर्थन स्थितियां और पृथक्करण स्थितियां हैं। पुनर्जन्म-संबंध के क्षण में, चार महान इकाइयां संसर्ग स्थितियां, पारस्परिकता स्थितियां, समर्थन स्थितियां और पृथक्करण स्थितियां हैं। पुनर्जन्म-संबंध के क्षण में, तीन जीवन-रचनाएं [जीवन-काल, गर्मी और चेतना की] संसर्ग स्थितियां, पारस्परिकता स्थितियां, समर्थन स्थितियां और पृथक्करण स्थितियां हैं। पुनर्जन्म-संबंध के क्षण में, मानसिकता और भौतिकता संसर्ग स्थितियां, पारस्परिकता स्थितियां, समर्थन स्थितियां और पृथक्करण स्थितियां हैं।

पुनर्जन्म-लिंकिंग के समय, ये चौदह विचार कॉन्सेंस कंडीशन, म्यूचुअलिटी कंडीशन, सपोर्ट कंडीशन और डिसोसिएशन कंडीशन हैं।

4. रीबर्थ-लिंकिंग के समय, चार इम्मैटेरियल एग्रीगेट्स हैं कॉन्सेंस कंडीशंस, म्यूचुअलिटी कंडीशंस, सपोर्ट कंडीशंस, और एसोसिएशन कंडीशंस। रीबर्थ-लिंकिंग के समय, पाँच फैकल्टीज़ [विश्वास, वगैरह] कॉन्सेंस कंडीशंस, म्यूचुअलिटी कंडीशंस, सपोर्ट कंडीशंस, और एसोसिएशन कंडीशंस हैं। रीबर्थ-लिंकिंग के समय, तीन रूट-कॉज़ेज़ हैं कॉन्सेंस कंडीशंस, म्यूचुअलिटी कंडीशंस, सपोर्ट कंडीशंस, और एसोसिएशन कंडीशंस। रीबर्थ-लिंकिंग के समय, मेंटैलिटी और कॉन्शसनेस कंडीशंस, म्यूचुअलिटी कंडीशंस, सपोर्ट कंडीशंस, और एसोसिएशन कंडीशंस हैं।

पुनर्जन्म-लिंकिंग के समय, ये चौदह विचार कॉन्सेंस कंडीशन, म्यूचुअलिटी कंडीशन, सपोर्ट कंडीशन और एसोसिएशन कंडीशन हैं।

5. पुनर्जन्म-संबंध के क्षण में, ये अट्ठाईस विचार एक-स्वागत की स्थितियाँ, पारस्परिकता की स्थितियाँ, समर्थन की स्थितियाँ और वियोजन की स्थितियाँ हैं।

6. सफल मंज़िल के मामले में, पुनर्जन्म की शर्तें इन आठ मूल कारणों में होती हैं [पुनर्जन्म-संबंध के क्षण में] जो ज्ञान से जुड़े होते हैं।

7-10. (ii) अमीर खत्तियों, अमीर ब्राह्मणों, अमीर गृहस्थों, इंद्रिय-कामना-क्षेत्र के देवताओं के मामले में, पुनर्जन्म के समय पुनर्जन्म की स्थिति किन आठ मूल कारणों से जुड़ी होती है?

आवेग के क्षण में... [दोहराएँ § §2-5]। [74]

11. धनी खत्तियों, धनी ब्राह्मणों, धनी गृहस्थों, विषय-वासना क्षेत्र के देवताओं के मामले में पुनर्जन्म की अपनी शर्तें हैं

पुनर्जन्म के समय ज्ञान से जुड़े आठ मूल कारण।

12-15. (ii) भौतिक क्षेत्र के देवताओं के मामले में क्या... [दोहराएँ §§ 2-5].
16. भौतिक क्षेत्र के देवताओं के मामले में, पुनर्जन्म की शर्तें इन आठ मूल कारणों में होती हैं [पुनर्जन्म-संबंध के समय] जो ज्ञान से जुड़े होते हैं।
17. (iv) अभौतिक-क्षेत्र देवताओं के मामले में, किन आठ मूल-कारणों में पुनर्जन्म की स्थितियाँ [पुनर्जन्म-संबंध के क्षण] ज्ञान से जुड़ी होती हैं? [75]
आवेग के क्षण में... [§2 तक दोहराएं)... इसलिए 'मानसिकता के रूप में स्थिति के साथ चेतना होती है और चेतना के रूप में स्थिति के साथ मानसिकता होती है' कहा जाता है।
18. पुनर्जन्म-संबंध के क्षण में, अभौतिक समुच्चय... [§4 तक दोहराएं)... और साहचर्य की स्थितियाँ।
19. पुनर्जन्म से जुड़ने के समय ये चौदह विचार एक होने की स्थिति, आपसी संबंध की स्थिति, सपोर्ट की स्थिति और साथ होने की स्थिति हैं।
20. इमैटेरियल-स्फीयर देवताओं के मामले में, पुनर्जन्म की शर्तें इन आठ मूल कारणों में होती हैं, जो पुनर्जन्म-लिंकिंग के समय ज्ञान से जुड़ी होती हैं।

*

21. (i) एक सफल मंज़िल के मामले में, कितने मूल कारणों में पुनर्जन्म की शर्तें (पुनर्जन्म-लिंकिंग के समय) ज्ञान से अलग हो जाती हैं?
(ii) धनी खत्तियों, धनी ब्राह्मणों, धनी गृहस्थों, विषय-वासना क्षेत्र के देवताओं के मामले में, कितने मूल कारणों में पुनर्जन्म की स्थितियाँ पुनर्जन्म-संबंध के क्षण में ज्ञान से पृथक होती हैं?
(i) सफल मंज़िल के मामले में, पुनर्जन्म की शर्तें छह मूल कारणों में होती हैं [पुनर्जन्म-संबंध के समय] जो ज्ञान से अलग हो जाते हैं।
(ii) धनी खत्तियों, धनी ब्राह्मणों, धनी गृहस्थों, इन्द्रिय-कामना-क्षेत्र देवताओं के मामले में, पुनर्जन्म की स्थितियाँ छह मूल-कारणों [76] में होती हैं, जो [पुनर्जन्म-संबंध के क्षण] ज्ञान से पृथक होती हैं।"
22. (i) सफल मंज़िल के मामले में, किन छह मूल कारणों में पुनर्जन्म की स्थितियाँ पुनर्जन्म-संबंध के क्षण में ज्ञान से अलग हो जाती हैं?
लाभदायक कार्य के आवेग के समय [पिछले जीवन में], दो मूल कारण, लाभदायक होने के कारण, परिणाम की स्थितियाँ हैं

उस पल पैदा हुई इच्छा; इसलिए 'फायदेमंद मूल कारणों के हालात के तौर पर बनने की स्थिति होती है' कहा जाता है। आसक्ति के पल [मौत से ठीक पहले], दो मूल कारण, [यानी लालच और भ्रम,] जो फायदेमंद नहीं होते, उस पल पैदा हुई इच्छा के लिए एक जैसी स्थिति होती है; इसलिए 'नुकसानदेह मूल कारणों के हालात के तौर पर बनने की स्थिति होती है' कहा जाता है। पुनर्जन्म से जुड़ने के पल [नए जीवन में], दो मूल कारण, जो तय नहीं होते, उस पल पैदा हुई इच्छा के लिए एक जैसी स्थिति होती है; इसलिए 'मानसिकता-भौतिकता के हालात के तौर पर चेतना होती है और चेतना के हालात के तौर पर मानसिकता-भौतिकता होती है' कहा जाता है।

23. पुनर्जन्म से जुड़ने के समय, पाँच समूह... [§3 दोहराएं]। पुनर्जन्म से जुड़ने के समय, ये चौदह विचार एकता की स्थितियाँ, पारस्परिकता की स्थितियाँ, समर्थन की स्थितियाँ, पृथक्करण की स्थितियाँ हैं।

24. पुनर्जन्म-संबंध के क्षण में चार समूह संयोजन स्थितियां हैं,... पुनर्जन्म-संबंध के क्षण में चार क्षमताएं [समझने की क्षमता को छोड़कर] संयोजन स्थितियां हैं, पुनर्जन्म-संबंध के क्षण में दो मूल कारण [अर्थात् गैर-लोभ और गैर-घृणा] संयोजन स्थितियां हैं, पुनर्जन्म-संबंध के क्षण में मानसिकता और चेतना संयोजन स्थितियां, पारस्परिकता स्थितियां, समर्थन स्थितियां, संगति स्थितियां हैं।

पुनर्जन्म-संबंध के क्षण में ये बारह विचार संयोग स्थितियाँ, पारस्परिकता स्थितियाँ, समर्थन स्थितियाँ, साहचर्य स्थितियाँ हैं। [77]

25. पुनर्जन्म-संबंध के क्षण में, ये छब्बीस विचार एक-आरोहण की स्थितियाँ, पारस्परिकता की स्थितियाँ, समर्थन की स्थितियाँ, पृथक्करण की स्थितियाँ हैं।

26. सफल मंज़िल के मामले में, पुनर्जन्म की शर्तें इन छह मूल कारणों में होती हैं [पुनर्जन्म-संबंध के समय] जो ज्ञान से अलग होते हैं।

27-30. (ii) अमीर खत्तियों, अमीर ब्राह्मणों, अमीर गृहस्थों, इंद्रिय-इच्छा-क्षेत्र के देवताओं के मामले में, पुनर्जन्म की शर्तें (पुनर्जन्म-संबंध के समय) ज्ञान से अलग किन छह मूल कारणों में होती हैं?

आवेग के क्षण में... (§ §22-5 दोहराएं)

31. अमीर खत्तियों, अमीर ब्राह्मणों, अमीर गृहस्थों, इंद्रिय-कामना-क्षेत्र के देवताओं के मामले में, पुनर्जन्म की शर्तें इन छह मूल कारणों में होती हैं, जो पुनर्जन्म-संबंध के समय ज्ञान से अलग हो जाते हैं।

डेस्टिनेशंस पर ग्रंथ समाप्त हो गया है



नोट्स

[1] 'कतिनाम हेतुनाम पच्चया उपपत्ति होती' के ग्रामर के लिए देखें Ps i 52. 'सफल मंज़िल' का मतलब है इंसान या देवता के रूप में दोबारा जन्म लेना। PSA 639 P.T.S. edn. देखें।>

[2] 'इंपल्शन' के लिए पाथ ऑफ़ प्यूरिफिकेशन पेज 23 देखें और cf. Tr. 1 §391 देखें।

[3] तीन फ़ायदेमंद मूल कारण हैं - लालच न होना, नफ़रत न होना, और वहम न होना। फ़ायदेमंद मूल कारणों के हालात होने पर 'बनावटें होती हैं', यह बात 'मोड ऑफ़ कंडीशंस' के तरीके के हिसाब से एक ही कॉग्निजेंस मोमेंट में कही गई है (देखें Vbh 142)। 'बनावटें' प्लूरल में दी गई है (विभंग में एकवचन के बजाय) क्योंकि सभी चेतना-साथी (जिसमें समझ और एहसास शामिल हैं) वहाँ 'बनावटों' के ग्रुप में शामिल हैं (PSA 403)।

[4] 'अटैचमेंट का पल' वह होता है जब नए जीवन में दोबारा जन्म (चेतना) देकर पकने वाला कर्म दिखाई देता है या अपना संकेत या किस्मत का संकेत दिखाता है (देखें Vism Ch XVII) और [चेतना का] अटैचमेंट होता है। 'अटैचमेंट' इच्छा, एस्पिरेशन है। क्योंकि जब कोई मौत के करीब होता है तो वह अविसी नरक की आग से भी जुड़ा होता है क्योंकि उसकी समझ भ्रम से अस्थिर होती है, तो दूसरी किस्मतों के बारे में क्या कहा जाए?' (देखें PSA 403 S)।

[5] तीन पक्के तौर पर पता नहीं चलने वाले असली कारण हैं - लालच न होना, नफ़रत न होना, और वहम न होना।

[6] इम्मटेरियल-स्फीयर देवताओं के मामले में कोई 'मटीरियल' पैराग्राफ नहीं है। इसलिए, आखिरी पैराग्राफ में 28 आइडिया के बजाय सिर्फ़ 14 आइडिया हैं। साथ ही, P.T.S. टेक्स्ट पेज 75, 11, 8 और 9 को 'तेना वुक्काती नामापकाया पि विण्णानाम विण्णान-अपाचकाया पि नामम्' (sce PsA 405 Se) पढ़ना चाहिए।

"क्योंकि भौतिक और अभौतिक दुनिया में पुनर्जन्म सिर्फ़ तीन मूल कारणों से पुनर्जन्म को जोड़ने पर होता है, इसलिए इन्हें इस सेक्शन (PsA 405 S°) में शामिल नहीं किया गया है। इसलिए, P.T.S. टेक्स्ट, पेज 75 पर 11. 23-5 और 32-4 (रूपावचरणम...) को हटा देना चाहिए (जैसा कि वे बर्मी भाषा में हैं), और यह किताब के आखिर से मेल खाता है। इसी तरह P.T.S. टेक्स्ट, पेज 76, 11. 1-3 (रूपावचरणम...) को हटा दें।

'निस्सायापक्कायद होन्टी,' P.T.S. टेक्स्ट, पेज 76, 1. 25 से हटा दिया गया।

[9] पी.टी.एस. टेक्स्ट, पेज 76, 1. 26 धम्म के लिए खंड पढ़ें।

[ग्रंथ VII.--कार्रवाई पर]

1. [78] क्रिया हुई है, क्रिया का परिणाम भी हुआ है : ये क्रिया हुई है, क्रिया-परिणाम नहीं हुआ है।

क्रिया हुई है, क्रिया-परिणाम है : क्रिया हुई है, क्रिया-परिणाम नहीं है।

क्रिया हुई है, क्रिया-परिणाम होगा : क्रिया हुई है, क्रिया-परिणाम नहीं होगा।

क्रिया है, क्रिया-परिणाम है : क्रिया है, क्रिया-परिणाम नहीं है।

कर्म है, कर्म-परिणाम होगा : कर्म है, कर्म-परिणाम नहीं होगा।

क्रिया होगी, क्रिया-परिणाम होगा : क्रिया होगी, क्रिया-परिणाम नहीं होगा।

2. लाभदायक कार्य हुआ है, लाभदायक कार्य-परिणाम हुआ है: लाभदायक कार्य हुआ है, कोई लाभदायक कार्य-परिणाम नहीं हुआ है।

वहाँ... (और इसी तरह §1 में भी, लेकिन छहों मामलों में से हर एक में फ़ायदेमंद कार्रवाई और कार्रवाई का नतीजा) हुआ है।

3. कोई लाभहीन कार्य हुआ है, कोई लाभहीन कार्य-परिणाम हुआ है: कोई लाभहीन कार्य हुआ है, कोई लाभहीन कार्य-परिणाम नहीं हुआ है।

वहां... [और इसी प्रकार §1 में है. लेकिन छह मामलों में से प्रत्येक में लाभहीन कार्रवाई और कार्रवाई-परिणाम रहा है]। [79]

4. बहुत ही निंदनीय काम हुआ है...

5. गलत काम हुआ है...

6. डार्क एक्शन हुआ है।

7. शानदार एक्शन हुआ है...

8. खुशी देने वाला काम हुआ है...

9. दर्द पैदा करने वाली हरकतें हुई हैं..

10. ऐसा काम हुआ है जिससे खुशी मिली है...

11. ऐसा काम हुआ है जिससे दर्द हुआ है..

दर्द के परिणामस्वरूप कार्रवाई होगी, दर्द के परिणामस्वरूप कार्रवाई का परिणाम होगा: दर्द के परिणामस्वरूप कार्रवाई होगी, दर्द के परिणामस्वरूप कोई कार्रवाई परिणाम नहीं होगा।

कार्रवाई पर ग्रंथ

*

* *

*

[ग्रंथ VIII.-प्रति संस्करण]

सुत्त स्रोत पहले ही दिया जा चुका है

1. [80] भिक्षुओं, धारणा की ये चार विकृतियां हैं, ज्ञान की विकृतियां, दृष्टिकोण की विकृतियां। कौन से चार? भिक्षुओं, जो अस्थायी है उसे स्थायी के रूप में देखना धारणा की विकृति है, ज्ञान की विकृति है, दृष्टिकोण की विकृति है। दुखद को सुखद के रूप में देखना धारणा की विकृति है, ज्ञान की विकृति है, दृष्टिकोण की विकृति है। जो स्वयं नहीं है उसे स्वयं के रूप में देखना धारणा की विकृति है, ज्ञान की विकृति है, दृष्टिकोण की विकृति है। गंदे को सुंदर के रूप में देखना धारणा की विकृति है, ज्ञान की विकृति है, दृष्टिकोण की विकृति है। ये, भिक्षुओं, धारणा की चार विकृतियां, ज्ञान की विकृतियां, दृष्टिकोण की विकृतियां हैं।

भिक्षुओं, धारणा की ये चार अविकृतियाँ हैं, ज्ञान की अविकृतियाँ, दृष्टिकोण की अविकृतियाँ। कौन से चार? भिक्षुओं, जो अनित्य है उसे अनित्य की तरह देखना धारणा की अविकृतता है, ज्ञान की अविकृतता है, दृष्टिकोण की अविकृतता है। जो दुःखदायी है उसे दुःखदायी की तरह देखना धारणा की अविकृतता है, ज्ञान की अविकृतता है, दृष्टिकोण की अविकृतता है। जो आत्मा नहीं है उसे आत्मा न होने की तरह देखना धारणा की अविकृतता है, ज्ञान की अविकृतता है, दृष्टिकोण की अविकृतता है। जो बुरा है उसे बुरा की तरह देखना धारणा की अविकृतता है, ज्ञान की अविकृतता है, दृष्टिकोण की अविकृतता है। भिक्षुओ, ये चार धारणा की अविकृतियाँ, ज्ञान की अविकृतियाँ, दृष्टिकोण की अविकृतियाँ हैं।

'जो प्राणी केवल गलत समझ सकते हैं, वे
भ्रमित ज्ञान और गलत दृष्टिकोण के साथ, जो
क्षणभंगुर है उसे स्थायी और दुख
को सुख के रूप में देखते हैं, साथ ही जो आत्मा नहीं
है उसे आत्मा के रूप में देखते
हैं, और जो गंदा है उसमें भी सुंदरता
देखते हैं; [81] ऐसे प्राणी, मारा के जुए
से बंधे हुए, वहाँ जाते हैं जहाँ बंधनों
का कोई अंत नहीं है; वे गोल चक्कर के
चारों ओर घूमते हैं जहाँ जन्म और मृत्यु एक दूसरे का पीछा
करते हैं। अब जब प्रबुद्ध लोग प्रकट होते
हैं और दुनिया में प्रकाश लाते हैं, तो
वे सच्चे विचार का प्रचार करते हैं,

जिससे दुख से मुक्ति मिलती है।
समझदार लोग, उनकी बातें सुनकर, सच को
खोजने में अपना दिमाग लगाते हैं: वे जो
कुछ नहीं है उसे वैसा ही देखते हैं, और दर्द
को वे सिर्फ़ दर्द के रूप में देखते हैं,
वे जो खुद नहीं है उसे वैसा ही देखते हैं,
और इसी तरह वे बुरी चीज़ों को भी देखते हैं;
वे जो नज़रिया अपनाते हैं, वे सही होते
हैं, और उनके लिए यह दुख से बचने का रास्ता है। (A ii 52)

*

2. क्या सम्यक दृष्टि वाले मनुष्य में ये चारों विकृतियाँ त्याज्य हैं या अत्यावश्यक हैं?

कुछ छोड़ दिए जाते हैं, और कुछ नहीं छोड़े जाते। समझ की खराबी, समझ की खराबी, और नज़र की खराबी, जो कुछ न रहने वाली चीज़ को हमेशा की तरह देखती है, उसमें छोड़ दी जाती है। दुख को अच्छा समझने की समझ पैदा होती है, और समझ भी पैदा होती है, लेकिन नज़र की ऐसी खराबी उसमें छोड़ दी जाती है। समझ की खराबी, समझ की खराबी, और नज़र की खराबी, जो खुद को खुद नहीं मानती, उसमें छोड़ दी जाती है। बुरी चीज़ को सुंदर समझने की समझ पैदा होती है, और समझ भी पैदा होती है, लेकिन नज़र की ऐसी खराबी उसमें छोड़ दी जाती है।

3. दो मामलों में (--पहला और तीसरा--) छह विकृतियां छोड़ दी जाती हैं। दो मामलों में [-दूसरा और चौथा-] दो विकृतियां छोड़ दी जाती हैं और चार विकृतियां नहीं छोड़ी जाती हैं। [सभी] चारों मामलों में आठ विकृतियां छोड़ दी जाती हैं और चार विकृतियां नहीं छोड़ी जाती हैं।[1]

विकृतियों पर ग्रंथ का अंत।

* * * *

टिप्पणी

[1] शुरुआत में, परवर्शन को चार ('उदाहरण') माना जाता है, यानी, जो कुछ समय के लिए नहीं है उसे हमेशा के लिए देखना, जो दुख देता है उसे अच्छा, जो खुद नहीं है उसे खुद के जैसा और जो बुरा है उसे सुंदर। यहाँ आखिर में उन्हें तीन माना जाता है, यानी, समझ का गलत रूप, समझ का गलत रूप, और नज़रिए का गलत रूप; इसलिए 'चार उदाहरणों' में कुल बारह ('आठ' और 'चार') होते हैं।

[ग्रंथ IX. - पथों पर]

1. [82] पथ: किस अर्थ में पथ?
धारा-प्रवेश पथ के क्षण में: देखने के
अर्थ में सम्यक् दृष्टि ही मिथ्या दृष्टि को त्यागने का मार्ग और कारण है, सदृश विचारों को कठोर बनाने का मार्ग और कारण है, विकारों का अंत करने का, प्रवेश [वास्तविकता के] आरंभ की शुद्धि के लिए, ज्ञान के स्थिर होने के लिए, ज्ञान की शुद्धि के लिए, भेद पर पहुंचने के लिए, उच्चतर प्रवेश के लिए, वास्तविकता पर अभिसरण के लिए, और समाप्ति में स्थापना का मार्ग और कारण है;

सही विचार, निर्देशित करने के अर्थ में, गलत विचारों को त्यागने का मार्ग और कारण है, एकसमान विचारों के कठोर होने का मार्ग और कारण है,... और समाप्ति पर नींव रखने का मार्ग और कारण है;

सही बोलना, गले लगाने के अर्थ में, गलत बोलने को छोड़ने का मार्ग और कारण है, एकरूप विचारों के कठोर होने का मार्ग और कारण है,... [83]

सही काम, शुरू करने के अर्थ में, गलत काम को छोड़ने का रास्ता और कारण है,...

शुद्धिकरण के अर्थ में सही जीवन जीना ही गलत जीवन को छोड़ने का मार्ग और कारण है, . . .

सही कोशिश, यानी कोशिश करना, गलत कोशिश को छोड़ने का रास्ता और कारण है...

सही माइंडफुलनेस, स्थापित करने के अर्थ में, गलत माइंडफुलनेस को छोड़ने का रास्ता और कारण है,...

ध्यान भटकने न देने के अर्थ में सही एकाग्रता ही गलत एकाग्रता को छोड़ने का रास्ता और कारण है, एक जैसे विचारों को मज़बूत करने का रास्ता और कारण है, गंदगी को खत्म करने का, पैठ की शुरुआत को शुद्ध करने का, ज्ञान को स्थिर करने का, ज्ञान की सफाई का, अंतर तक पहुँचने का, ऊँचे पैठ का, असलियत पर मिलने का, और समाप्ति की नींव का रास्ता और कारण है।

2. एक बार वापस आने वाले रास्ते के पल में:
देखने के मतलब में राइट व्यू...

. . .

ध्यान भटकने से बचने के अर्थ में सही एकाग्रता, कामुक इच्छाओं और विरोध की बड़ी बेड़ियों और कामुक इच्छाओं और विरोध की बड़ी अंदरूनी प्रवृत्तियों को छोड़ने का रास्ता और कारण है।

एकसमान विचारों के कठोर होने का मार्ग और कारण है,
तथा समाप्ति पर नींव का मार्ग और कारण है।

3. वापस न लौटने वाले रास्ते के पल में:

देखने के मतलब में सही नज़र...

. . .

गैर-विचलन के अर्थ में सही एकाग्रता [84] इंद्रिय-इच्छा और प्रतिरोध के माध्यमिक बंधनों और इंद्रिय-इच्छा और प्रतिरोध के लिए माध्यमिक अंतर्निहित प्रवृत्तियों को छोड़ने का मार्ग और कारण है, एकाग्र विचारों के कठोर होने का मार्ग और कारण है, और समाप्ति पर नींव के लिए मार्ग और कारण है।

4. अरहंत मार्ग के समय: देखने के

अर्थ में सही दृष्टि...

. . .

ध्यान भंग न होने के अर्थ में सही एकाग्रता भौतिक [अस्तित्व] के प्रति लोभ, अभौतिक [अस्तित्व] के प्रति लोभ, दंभ (गर्व), व्याकुलता, अज्ञानता, दंभ (गर्व) की अंतर्निहित प्रवृत्तियों, अस्तित्व के प्रति लोभ और अज्ञानता को त्यागने का मार्ग और कारण है, यह सगुण विचारों को कठोर बनाने, मलों को समाप्त करने, प्रवेश के आरंभ को शुद्ध करने, ज्ञान को स्थिर करने, ज्ञान की शुद्धि, विशिष्टता तक पहुंचने, उच्चतर प्रवेश, वास्तविकता पर एकरूपता के लिए मार्ग और कारण है, और समाप्ति पर नींव रखने का मार्ग और कारण है।

*

5. देखने का मार्ग सही दृष्टि है, निर्देश देने का मार्ग सही विचार है, अपनाने का मार्ग सही बोलना है, आरंभ करने का मार्ग सही कर्म करना है, शुद्धि का मार्ग सही जीवन जीना है, परिश्रम का मार्ग सही प्रयास है, स्थापना का मार्ग सही स्मृति है, ध्यान भंग न होने का मार्ग सही एकाग्रता है।

स्थापित करने का रास्ता माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर है, जांच करने का रास्ता आइडिया की जांच एनलाइटनमेंट फैक्टर है, मेहनत का रास्ता एनर्जी एनलाइटनमेंट फैक्टर है, फैलने का रास्ता (ध्यान लगाना) खुशी एनलाइटनमेंट फैक्टर है, शांति का रास्ता ट्रैंक्विलिटी एनलाइटनमेंट फैक्टर है, ध्यान भटकने का रास्ता कंसंट्रेशन एनलाइटनमेंट फैक्टर है, रिफ्लेक्शन का रास्ता इक्वैलिटी एनलाइटनमेंट फैक्टर है।

विश्वास न करके अडिग रहने का रास्ता विश्वास की शक्ति है, आलस्य से अडिग रहने का रास्ता ऊर्जा की शक्ति है, लापरवाही से अडिग रहने का रास्ता ध्यान की शक्ति है, बेचैनी से अडिग रहने का रास्ता एकाग्रता की शक्ति है, और अज्ञानता से अडिग रहने का रास्ता समझने की शक्ति है।

संकल्प का मार्ग विश्वास संकाय है, परिश्रम का मार्ग ऊर्जा संकाय है, स्थापना का मार्ग [85] माइंडफुलनेस संकाय है, गैर-व्याकुलता का मार्ग एकाग्रता संकाय है, देखने का मार्ग समझ संकाय है।

क्षमताएं प्रभुत्व के अर्थ में मार्ग हैं, शक्तियां अडिगता के अर्थ में मार्ग हैं, ज्ञान के कारक आउटलेट के अर्थ में मार्ग हैं, मार्ग-कारक कारण के अर्थ में मार्ग हैं, माइंडफुलनेस की नींव स्थापना के अर्थ में मार्ग हैं, सही प्रयास प्रयास करने के अर्थ में मार्ग हैं, सफलता के आधार सफल होने के अर्थ में मार्ग हैं, वास्तविकताएं यथार्थता के अर्थ में मार्ग हैं,

शांति, ध्यान भटकने न देने के अर्थ में रास्ता है, समझ, सोचने-विचारने के अर्थ में रास्ता है, शांति और समझ, एक ही काम (स्वाद) के अर्थ में रास्ता है, और साथ रहना, ज़्यादा न देने के अर्थ में रास्ता है।

सद्गुण शुद्धि संयम के अर्थ में मार्ग है, ज्ञान शुद्धि विकर्षण न होने के अर्थ में मार्ग है, दृष्टि शुद्धि देखने के अर्थ में मार्ग है, मुक्ति मुक्ति के अर्थ में मार्ग है, मान्यता प्रवेश के अर्थ में मार्ग है, मोक्ष त्यागने के अर्थ में मार्ग है, विनाश का ज्ञान काट देने के अर्थ में मार्ग है।

जड़-नींव के अर्थ में, जोश ही रास्ता है; शुरू होने के अर्थ में, ध्यान ही रास्ता है; मिलाने के अर्थ में, संपर्क ही रास्ता है; मिलने की जगह के अर्थ में, भावना ही रास्ता है; सबसे आगे होने के अर्थ में, एकाग्रता ही रास्ता है; दबदबा होने के अर्थ में, ध्यान ही रास्ता है, सबसे ऊंचा होने के अर्थ में, समझ ही रास्ता है; मूल के अर्थ में, मुक्ति ही रास्ता है; अंत के अर्थ में, निब्बाण जो अमर में मिल जाता है, वह रास्ता है।

रास्तों पर ग्रंथ।



टिप्पणी

ई

[1] hetusthena maggangā maggo, (Burmese Transcript) पढ़ें।

[ग्रंथ X. - पीने के लिए एक बढ़िया अर्क पर]

1. [86] 'भिक्षुओं, यह उत्तम जीवन एक उत्तम अर्क है जिसे गुरु की उपस्थिति में पिया जाना चाहिए' (एस ii 29).

*

2. जब सद्गुरु उपस्थित हो तब उत्तम सार तीन प्रकार का होता है: शिक्षण के रूप में उत्तम सार, प्राप्तकर्ता के रूप में उत्तम सार, अच्छे जीवन के रूप में उत्तम सार।

3. शिक्षा के रूप में बढ़िया अंश क्या है?

यह चार महान सच्चाइयों की घोषणा, शिक्षा, घोषणा, स्थापित करना, बताना, समझाना, समझाना है; जागरूकता के चार आधारों की घोषणा, शिक्षा, घोषणा, स्थापित करना, बताना, समझाना, समझाना, समझाना; चार सही कोशिशों की;... . . . सफलता के चार आधारों की; पाँच क्षमताओं की; पाँच शक्तियों . . की;... ज्ञान . . . पाने के सात कारणों की;... महान अष्टांगिक मार्ग की। यह शिक्षा के तौर पर एक अच्छा अंश है।

4. फाइन एक्सट्रैक्ट पाने वाले के तौर पर क्या है?

ये भिक्खु, भिक्खुणियाँ, पुरुष अनुयायी, महिला अनुयायी, देवता, इंसान और कोई भी दूसरा व्यक्ति है, जो (असलियत का) जानकार है। यह पाने वाले के तौर पर एक अच्छा हिस्सा है।

5. अच्छी ज़िंदगी का बढ़िया निचोड़ क्या है?

यह महान आठ गुना रास्ता है, यानी: सही नज़रिया, सही सोच, सही बोलना, सही काम करना, सही ज़िंदगी, सही कोशिश, सही ध्यान और सही ध्यान। यह अच्छी ज़िंदगी का एक अच्छा हिस्सा है।

6. संकल्प एक उत्तम अर्क के रूप में विश्वास क्षमता है, अविश्वास उसका निचला भाग है; अविश्वास के निचले भाग को फेंकने के बाद वह विश्वास क्षमता के संकल्प के उत्तम अर्क को पीता है, इस प्रकार यह पीने के लिए एक उत्तम अर्क है। परिश्रम एक उत्तम अर्क के रूप में ऊर्जा क्षमता है, आलस्य निचला भाग है; आलस्य के निचले भाग को फेंकने के बाद वह ऊर्जा क्षमता के परिश्रम के उत्तम अर्क को पीता है, इस प्रकार यह पीने के लिए एक उत्तम अर्क है। स्थापना एक उत्तम अर्क के रूप में जागरूकता क्षमता है, उपेक्षा निचला भाग है; उपेक्षा के निचले भाग को फेंकने के बाद वह जागरूकता क्षमता के स्थापना के उत्तम अर्क को पीता है, इस प्रकार यह एक छोटा अर्क है। गैर-विचलन एक उत्तम अर्क के रूप में एकाग्रता क्षमता है, उत्तेजना निचला भाग है; उत्तेजना के निचले भाग को फेंकने के बाद वह एकाग्रता क्षमता के गैर-विचलन के उत्तम अर्क को पीता अज्ञानता के तलछट को फेंकने के बाद वह समझने की शक्ति के देखने के बढ़िया रस को पीता है, इस प्रकार यह पीने के लिए एक बढ़िया रस है।

अविश्वास से अडिग रहना एक उत्तम अर्क के रूप में विश्वास शक्ति है, अविश्वास तलछट है; अविश्वास के तलछट को फेंकने के बाद वह अविश्वास द्वारा विश्वास शक्ति की अडिगता के उत्तम अर्क को पीता है, इस प्रकार यह पीने के लिए एक उत्तम अर्क है। आलस्य से अडिग रहना एक उत्तम अर्क के रूप में ऊर्जा शक्ति है, आलस्य तलछट है;... लापरवाही से अडिग रहना एक उत्तम अर्क के रूप में जागरूकता शक्ति है, लापरवाही तलछट है;... आंदोलन से अडिग रहना एक उत्तम अर्क के रूप में एकाग्रता शक्ति है, . . . आंदोलन तलछट है; अज्ञान से अडिग रहना एक उत्तम अर्क के रूप में समझने की शक्ति है, अज्ञान तलछट है; अज्ञान के तलछट को फेंकने के बाद वह अज्ञानता द्वारा समझ शक्ति की अडिगता के उत्तम अर्क को पीता है, इस प्रकार यह पीने के लिए एक उत्तम अर्क है।

स्थापना एक उत्तम अर्क के रूप में माइंडफुलनेस ज्ञान कारक है, लापरवाही तलछट है; उपेक्षा के अवशेषों को फेंकने के बाद वह माइंडफुलनेस ज्ञान कारक के स्थापना के उत्तम अर्क को पीता है, इस प्रकार यह पीने के लिए एक अच्छा अर्क है। जांच-पड़ताल एक उत्तम अर्क के रूप में विचारों की जांच-पड़ताल ज्ञान कारक है, अज्ञानता तलछट है;... परिश्रम एक उत्तम अर्क के रूप में ऊर्जा ज्ञान कारक है, आलस्य तलछट है;... एकाग्रता एक उत्तम अर्क के रूप में खुशी ज्ञान कारक है, बुखार तलछट है;... शांति एक उत्तम अर्क (88) के रूप में प्रशांति ज्ञान कारक है, भ्रष्टता तलछट है;... गैर-विचलन एक उत्तम अर्क के रूप में एकाग्रता ज्ञान कारक है, आंदोलन तलछट है;... प्रतिबिंब एक अच्छे अर्क के रूप में समता ज्ञान कारक है, गैर-प्रतिबिंब तलछट है; नॉन-रिफ्लेक्सियन के बचे हुए हिस्से को फेंकने के बाद, वह इक्वैनिमिटी एनलाइटनमेंट फैक्टर के रिफ्लेक्सियन के अच्छे एक्सट्रैक्ट को पीता है, इसलिए यह पीने के लिए एक अच्छा एक्सट्रैक्ट है।

एक अच्छे सार के रूप में देखना सही दृष्टि है, गलत दृष्टि तलछट है; गलत दृष्टि के तलछट को फेंकने के बाद वह सही दृष्टि के देखने के अच्छे सार को पीता है, इस प्रकार यह पीने के लिए एक अच्छा अर्क है। एक अच्छे सार के रूप में निर्देश देना सही विचार है, गलत विचार . . . एक अच्छे सार के रूप में गले तलछट है; सही बोलना, गलत बोलना तलछट है; . . . लगाना एक अच्छे सार के रूप में उत्पन्न होना सही कार्य करना है, गलत कार्य करना तलछट है;... एक अच्छे सार के रूप में सफाई सही जीवन जीना है, गलत जीवन जीना तलछट है;... एक अच्छे अर्क के रूप में श्रम सही प्रयास है, गलत प्रयास तलछट है;... एक अच्छे अर्क के रूप में स्थापना सही जागरूकता है, गलत जागरूकता तलछट है; एक अच्छे अर्क के रूप में गैर-विचलन सही एकाग्रता है, गलत एकाग्रता तलछट है; गलत एकाग्रता के तलछट को फेंकने के बाद वह सही एकाग्रता के गैर-विचलन के अच्छे अर्क को पीता है, इस प्रकार यह पीने के लिए एक अच्छा अर्क है।

7. कुछ अच्छा अर्क है, कुछ पीने लायक है, कुछ तलछट भी है.

संकल्प एक बढ़िया निचोड़ के तौर पर विश्वास की क्षमता है, अविश्वास बेकार है, मतलब का कोई भी सार (स्वाद), विचार का सार, मुक्ति का सार, यही पीने लायक है। मेहनत एक बढ़िया निचोड़ के तौर पर एनर्जी की क्षमता है।

आलस्य तलछट है, किसी भी [89] अर्थ का सार (स्वाद), विचार का सार, मुक्ति का सार, यहीं वह है जो पीया जाना है। स्थापना एक अच्छे अर्क के रूप में दिमागी क्षमता है, लापरवाही तलछट है, किसी भी अर्थ का सार (स्वाद), विचार का सार, मुक्ति का सार, यहीं वह है जो पीया जाना है। गैर-विचलन एक अच्छे अर्क के रूप में एकाग्रता क्षमता है, आंदोलन तलछट है, किसी भी अर्थ का सार (स्वाद), विचार का सार, मुक्ति का सार, यहीं वह है जो पीया जाना है। एक अच्छे अर्क के रूप में देखना समझने की क्षमता है, अज्ञानता तलछट है, किसी भी अर्थ का सार (स्वाद), विचार का सार, मुक्ति का सार, यहीं वह है जो पीया जाना है।

अविश्वास से अडिग रहना, एक बढ़िया निचोड़ के तौर पर, विश्वास की ताकत है, अविश्वास निचोड़ है, मतलब का कोई भी सार (स्वाद), विचार का सार, मुक्ति का सार, इसी में पीना है। आलस्य से अडिग रहना ऊर्जा की ताकत है, आलस्य निचोड़ है... लापरवाही से अडिग रहना ध्यान की ताकत है, लापरवाही निचोड़ है... बेचैनी से अडिग रहना एकाग्रता की ताकत है, बेचैनी निचोड़ है, अज्ञानता से अडिग रहना समझने की ताकत है, अज्ञानता निचोड़ है, मतलब का कोई भी सार (स्वाद), विचार का सार, मुक्ति का सार, इसी में पीना है।

एक अच्छा अर्क के रूप में स्थापना माइंडफुलनेस आत्मज्ञान कारक है, उपेक्षा तलछट है,... [और इसी तरह शेष सात आत्मज्ञान कारकों और उनके विपरीत के साथ)... एक अच्छा अर्क के रूप में प्रतिबिंब समता आत्मज्ञान कारक है, गैर-प्रतिबिंब तलछट है, अर्थ का कोई भी सार (स्वाद), विचार का सार, उद्धार का सार, इसमें वह है जिसे पीना है।

एक अच्छे अंश के रूप में देखना सही दृष्टि है, गलत दृष्टि तलछट है,... [और इसी तरह बाकी आठ मार्ग कारकों के साथ]... [90] एक अच्छे अंश के रूप में गैर-विचलन सही एकाग्रता है, गलत एकाग्रता तलछट है, अर्थ का कोई भी सार (स्वाद), विचार का सार, उद्धार का सार, इसमें वही है जो पीना है।

8. उत्तम सार की तरह देखना सम्यक् दृष्टि है, उत्तम सार की तरह निर्देश देना सम्यक् विचार है, उत्तम सार की तरह आलिंगन करना सम्यक् बोलना है, उत्तम सार की तरह उत्पत्ति करना सम्यक् कर्म है, उत्तम सार की तरह सफाई करना सम्यक् जीवन है, उत्तम सार की तरह परिश्रम करना सम्यक् प्रयास है, उत्तम सार की तरह स्थापना सम्यक् जागरूकता है, उत्तम सार की तरह ध्यान भंग न होना सम्यक् एकाग्रता है।

एक अच्छे एक्सट्रैक्ट के तौर पर एस्टैब्लिशमेंट माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर है, एक छोटे एक्सट्रैक्ट के तौर पर इन्वेस्टिगेशन आइडियाज़ की इन्वेस्टिगेशन एनलाइटनमेंट फैक्टर है, एक अच्छे एक्सट्रैक्ट के तौर पर इंटेंशन ऑन हैप्पीनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर है, एक अच्छे एक्सट्रैक्ट के तौर पर पीस ट्रैंक्विलिटी एनलाइटनमेंट फैक्टर है, एक अच्छे एक्सट्रैक्ट के तौर पर नॉन-डिस्ट्रैक्शन कंसंट्रेशन एनलाइटनमेंट फैक्टर है, एक अच्छे एक्सट्रैक्ट के तौर पर रिफ्लेक्शन इक्वैनिमिटी एनलाइटनमेंट फैक्टर है।

अविश्वास से अडिग रहना ही विश्वास शक्ति है, आलस्य से अडिग रहना ही ऊर्जा शक्ति है, लापरवाही से अडिग रहना ही ध्यान शक्ति है, आंदोलन से अडिग रहना ही एकाग्रता शक्ति है और अज्ञानता से अडिग रहना ही समझने की शक्ति है।

एक बढ़िया अंश के तौर पर संकल्प विश्वास की क्षमता है, एक बढ़िया अंश के तौर पर मेहनत ऊर्जा की क्षमता है, एक बढ़िया अंश के तौर पर स्थापना ध्यान की क्षमता है, एक बढ़िया अंश के तौर पर ध्यान भटकना एकाग्रता की क्षमता है, और एक बढ़िया अंश के तौर पर देखना समझ की क्षमता है।

दबदबे के मतलब में काबिलियत एक अच्छा निचोड़ है, मज़बूती के मतलब में ताकतें एक अच्छा निचोड़ हैं, बाहर निकलने के मतलब में ज्ञान के फैक्टर एक अच्छा निचोड़ हैं, वजह के मतलब में रास्ता एक अच्छा निचोड़ है, स्थापना के मतलब में ध्यान की नींव एक अच्छा निचोड़ है, कोशिश करने के मतलब में सही कोशिशें एक अच्छा निचोड़ हैं, कामयाब होने के मतलब में कामयाबी के आधार एक अच्छा निचोड़ हैं, और सच्चाई (असलियत) के मतलब में असलियत एक अच्छा निचोड़ है।[1]

ध्यान भंग न होने के अर्थ में शांति एक अच्छा अंश है, चिंतन के अर्थ में अंतर्दृष्टि एक अच्छा अंश है, एकमात्र कार्य (स्वाद) के अर्थ में शांति और अंतर्दृष्टि एक अच्छा अंश हैं, अनावश्यक मिलन न होने के अर्थ में यह एक अच्छा अंश है।

संयम के अर्थ में गुणशुद्धि एक उत्तम सार है, अप्रसन्नता के अर्थ में ज्ञान की शुद्धि एक उत्तम सार है, देखने के अर्थ में दृष्टिकोण की शुद्धि एक उत्तम सार है,[91] स्वतंत्रता के अर्थ में मुक्ति एक उत्तम सार है, भेदन के अर्थ में पहचान एक उत्तम सार है, त्यागने के अर्थ में मोक्ष एक उत्तम सार है, थकावट के ज्ञान को काटने के अर्थ में एक उत्तम सार है, शांति प्रदान करने के अर्थ में अउद्गम का ज्ञान एक उत्तम सार है।

जड़-नींव के अर्थ में उत्साह एक अच्छा अंश है, उत्पत्ति के अर्थ में ध्यान एक अच्छा अंश है, संयोजन के अर्थ में संपर्क एक अच्छा अंश है, मिलन स्थान के अर्थ में भावना एक अच्छा अंश है, अग्रणी होने के अर्थ में एकाग्रता एक अच्छा अंश है, प्रभुत्व के अर्थ में सचेतनता एक अच्छा अंश है, सबसे ऊंचा होने के अर्थ में समझ एक अच्छा अंश है, मूल के अर्थ में मुक्ति एक अच्छा अंश है, अंत के अर्थ में अमर में विलीन होने वाला निब्बान एक अच्छा अंश है,

'पीने के लिए एक बढ़िया अर्क' पर ग्रंथ का अंत।

गायन अनुभाग।

प्रथम डिवीजन का अंत

उस डिवीजन की सामग्री:

ज्ञान, नज़रिए, सांसें और काबिलियत,
और फिर पांचवीं आज़ादी आती है,
फिर मंज़िलें, और काम, और गलतियां, रास्ते,
और 'पीने के लिए बढ़िया चीज़': ये दस हैं।



टिप्पणी

[1] Read *iddhipādā maṇḍo, tathaṭṭhena saccā maṇḍo, avikkhepaṭṭhena.*

[द्वितीय विभाग, युग्मन पर
ग्रंथ XI.-युग्मन पर]

1. [92] 'ऐसा मैंने सुना। एक समय आदरणीय आनंद कोसंबी में घोसिता के उद्यान में रह रहे थे। वहाँ उन्होंने भिक्षुओं को इस प्रकार संबोधित किया: 'मित्रो, भिक्षुओं'। उन्होंने उत्तर दिया, 'मित्र'। आदरणीय आनंद ने यह कहा:

'दोस्तों, भिक्षुओं, जब कोई भिक्षु या भिक्षुणी मेरे सामने यह घोषणा करता है कि वह अरहंत बन गया है, तो वह हमेशा चार रास्तों से या उनमें से किसी एक से होता है। कौन से चार?

'यहां एक भिक्षु शांति से पहले समझ विकसित करता है। जब वह ऐसा करता है, तो उसमें रास्ता बनता है। वह उस रास्ते को दोहराता है, विकसित करता है और उसका भरपूर लाभ उठाता है। जब वह ऐसा करता है, तो उसकी बेड़ियां टूट जाती हैं, और उसकी अंदरूनी आदतें खत्म हो जाती हैं।

'फिर से एक भिक्षु समझ से पहले शांति विकसित करता है। जब वह ऐसा करता है, तो उसमें रास्ता बनता है। वह उस रास्ते को दोहराता है, विकसित करता है और उसका भरपूर लाभ उठाता है। जब वह ऐसा करता है, तो उसकी बेड़ियाँ छूट जाती हैं, और उसकी अंदरूनी आदतें खत्म हो जाती हैं।

'फिर एक भिक्षु शांति और अंतर्दृष्टि दोनों विकसित करता है। जब वह ऐसा करता है, तो उसमें मार्ग उत्पन्न होता है। वह उस मार्ग को दोहराता है, विकसित करता है और उसका भरपूर लाभ उठाता है। जब वह ऐसा करता है, तो उसके बंधन [93] छूट जाते हैं, और उसकी अंतर्निहित प्रवृत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं।

'फिर एक भिक्षु का मन विचारों के ज़्यादा सोचने से परेशान हो जाता है [जो सोच-विचार में दिखते हैं)। [बाद में] एक ऐसा मौका आता है जब उसकी समझ अंदर से फिर से बनती है, फिर से बसती है, एक जगह पर वापस आती है, और फिर से एकाग्र होती है[2]। तब उसमें रास्ता बनता है। वह उस रास्ते को दोहराता है, उसे डेवलप करता है और उसका बहुत फ़ायदा उठाता है। जब वह ऐसा करता है, तो उसकी बेड़ियाँ टूट जाती हैं, और उसकी अंदरूनी आदतें खत्म हो जाती हैं।

'जब कोई भिक्खु या भिक्खुनी मेरे सामने यह ऐलान करता है कि वह अरहंत बन गया है, तो वह हमेशा चार रास्तों से या उनमें से किसी एक रास्ते से होता है' (A ii 156)।

*

2. वह शांति से पहले समझ कैसे विकसित करता है?

त्याग के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचना ही एकाग्रता है। "अंतर्दृष्टि का मतलब है उसमें पैदा होने वाले विचारों को कुछ समय के लिए सोचना, उसमें पैदा होने वाले विचारों को दर्दनाक मानना, उसमें पैदा होने वाले विचारों को खुद से अलग मानना। इस तरह पहले शांति होती है और बाद में समझ। इसलिए कहा गया था 'वह शांति से पहले समझ विकसित करता है'।

वह डेवलप करता है: डेवलपमेंट चार तरह का होता है: उसमें ज़्यादा आइडिया न बनने के मतलब में डेवलपमेंट, एकल्टीज़ के एक फंक्शन (टेस्ट) के मतलब में डेवलपमेंट, सही एनर्जी के असरदार होने के मतलब में डेवलपमेंट, और रिपीटिशन के मतलब में डेवलपमेंट।

रास्ता बनता है: रास्ता कैसे बनता है? देखने के मतलब में सही नज़रिया रास्ता बनता है, रास्ता दिखाने के मतलब में सही सोच रास्ता बनता है, गले लगाने के मतलब में सही बोलना रास्ता बनता है, शुरू करने के मतलब में सही काम करना रास्ता बनता है, सफाई के मतलब में सही जीना रास्ता बनता है, कोशिश करने के मतलब में सही कोशिश रास्ता बनता है, स्थापित करने के मतलब में सही ध्यान रास्ता बनता है, और ध्यान न भटकने के मतलब में सही एकाग्रता रास्ता बनता है। इस तरह रास्ता बनता है।

वह उस रास्ते को दोहराता है, डेवलप करता है और उसका बहुत फ़ायदा उठाता है।

वह दोहराता है: वह कैसे दोहराता है? जब वह विज्ञापन देता है, वह दोहराता है। जब वह जानता है, वह दोहराता है। जब वह देखता है, समीक्षा करता है... [94] अपनी संज्ञान को स्थिर करता है, विश्वास के साथ संकल्प करता है,... ऊर्जा लगाता है... चेतना स्थापित . . . करता है (पाया जाता है), संज्ञान को एकाग्र करता है, जब वह समझ के साथ समझता है, जब वह प्रत्यक्ष रूप से जानता है कि सीधे क्या जाना जाना . . है, जब वह पूरी तरह से समझता है कि पूरी तरह से क्या समझा जाना है,। जब वह त्याग देता है जिसे त्यागना है,... जब वह विकसित करता है जिसे विकसित किया जाना है,... जब वह महसूस करता है कि क्या महसूस किया जाना है, तो वह दोहराता है। इस तरह वह दोहराता है।

वह विकसित होता है: वह कैसे विकसित होता है? जब वह विज्ञापन करता है, तो वह विकसित होता है। जब वह जानता है, तो वह विकसित होता है... (और इसी तरह अंत तक चलता रहता है]... जब उसे एहसास होता है कि क्या हासिल किया जाना है, तो वह विकसित होता है। इस तरह वह विकसित होता है। वह बहुत कुछ बनाता है: वह कैसे बहुत कुछ बनाता है? जब वह विज्ञापन करता है, तो वह बहुत कुछ बनाता है। जब वह जानता है, तो वह बहुत कुछ बनाता है... (और इसी तरह अंत तक चलता रहता है]... जब उसे एहसास होता है कि क्या हासिल किया जाना है, तो वह बहुत कुछ बनाता है। इस तरह वह बहुत कुछ बनाता है।

जब वह ऐसा करता है, तो उसकी बेड़ियां टूट जाती हैं, और उसकी अंदरूनी आदतें खत्म हो जाती हैं: उसकी बेड़ियां कैसे टूटती हैं और उसकी अंदरूनी आदतें कैसे खत्म होती हैं?

स्ट्रीम-एंट्री रास्ते से: तीन बेड़ियाँ, यानी, अपनी पहचान के बारे में [गलत] नज़रिया, पक्का न होना, और अच्छाई और कर्तव्य की गलतफहमी छोड़ दी जाती हैं; और दो अंदरूनी आदतें, यानी, नज़रिए की अंदरूनी आदत और पक्का न होने की अंदरूनी आदत, खत्म हो जाती हैं।

एक बार वापस आने वाले रास्ते से: दो बेड़ियाँ, यानी कामुक इच्छाओं के लालच की बड़ी बेड़ियाँ और विरोध की बेड़ियाँ, छोड़ दी जाती हैं; और दो अंदरूनी टेंडेंसी, यानी, बड़ी अंदरूनी टेंडेंसी

कामुक इच्छाओं के लालच और विरोध की अंदरूनी प्रवृत्ति खत्म हो जाती है।

गैर-वापसी पथ के साथ: दो बेड़ियाँ, अर्थात् कामुक-इच्छाओं के लिए लालच की द्वितीयक बेड़ी और प्रतिरोध की बेड़ी, [95] छोड़ दी जाती हैं; और दो अंतर्निहित प्रवृत्तियाँ, अर्थात् कामुक-इच्छाओं के लिए लालच की द्वितीयक अंतर्निहित प्रवृत्ति और प्रतिरोध की अंतर्निहित प्रवृत्ति, खत्म हो जाती हैं।

अरहंत मार्ग से: पाँच बंधन, यानी, भौतिक [होने का लालच], अमूर्त (होने का लालच), घमंड (अभिमान), बेचैनी, और अज्ञानता, छोड़ दिए जाते हैं; और तीन अंदरूनी आदतें, यानी घमंड (अभिमान) की अंदरूनी आदत, होने के लालच की अंदरूनी आदत, और अज्ञानता की अंदरूनी आदत, खत्म हो जाती हैं।

इस तरह बेड़ियाँ छोड़ दी जाती हैं और अंदरूनी आदतें खत्म कर दी जाती हैं।

3. बिना किसी बुरी भावना के ज्ञान और ध्यान भटकने से एक होना... [दोहराएँ §2].

4-70. . . . [नीचे दिए गए हर एक के मामले में §2 दोहराएं: बाकी 7 रुकावटों (I §135) के उलटे, 4 ज्ञान, 4 गैर-भौतिक उपलब्धियां, 10 कसीना, 10 यादें, 10 तरह की गंदगी और सांस लेने की 32 ध्यान की आदतें, तक]...

71. सांस बाहर छोड़ने और त्याग के बारे में सोचने के ज़रिए ज्ञान और ध्यान भटकने से बचना ही एकाग्रता है। समझ... [और इसी तरह §2 में आखिर तक]।

इस तरह वह शांति से पहले समझ विकसित करता है।

*

72. वह समझ से पहले शांति कैसे हासिल करता है? समझ का मतलब है सोच-विचार का नश्वर होना, सोच-विचार का दर्दनाक होना, सोच-विचार का खुद न होना। इसमें पैदा होने वाले विचारों के कारण समझ और ध्यान भटकने से बचना, जिसका सहारा त्याग है, वह है एकाग्रता। इस तरह पहले समझ होती है और बाद में शांति। इसलिए कहा गया 'वह समझ से पहले शांति हासिल करता है'।

वह विकसित करता है.... [जैसा कि §2 में है]।

रास्ता कैसे बनता है?...

73. अंतर्दृष्टि का अर्थ है भौतिकता को अनित्य मानना, भौतिकता को दुःखद मानना, भौतिकता को स्वयं न मानना। ज्ञान और गैर-विचलित होने का एकीकरण... [और इसी तरह, §72 को दोहराते हुए]... [97]

74-272. (द्र. I . . . §5 तक में लिस्ट किए गए बाकी 201 आइडिया में से हर एक के मामले में §72 दोहराएं)...

273. अंतर्दृष्टि बुढ़ापे और मृत्यु को अस्थायी मानने के अर्थ में है, [§72 के अनुसार दोहराएं]।

इस तरह वह समझ से पहले शांति विकसित करता है।

*

274. वह शांति और समझ को एक साथ कैसे विकसित करता है?

वह सोलह पहलुओं में एक साथ मिलकर शांति और अंतर्दृष्टि विकसित करता है: (1) समर्थन-वस्तु के अर्थ में, (2) डोमेन के अर्थ में, (3) छोड़ने के अर्थ में, (4) छोड़ देने के अर्थ में, (एस) उभरने के अर्थ में, (6) दूर जाने के अर्थ में, (7) शांति के अर्थ में, (8) उदात्तता के अर्थ में, (9) मुक्ति के अर्थ में, (10) कैंसरहीनता के अर्थ में, (11) पार करने के अर्थ में, (12) संकेतहीनता के अर्थ में, (13) इच्छाहीनता के अर्थ में, (14) शून्यता के अर्थ में, (15) एकल कार्य (रास्ते) के अर्थ में, (16) गैर-अतिरिक्तता के अर्थ में, और युग्मन के अर्थ में।

275. (1) वह सहायक-वस्तु के अर्थ में एक साथ शांति और अंतर्दृष्टि कैसे विकसित करता है?

जब वह बेचैनी छोड़ देता है, तो उसकी समझ और ध्यान भटकने से बचने का मेल, ध्यान और रुकावट को सपोर्ट करने वाली चीज़ बन जाता है। जब वह अज्ञानता छोड़ देता है, तो सोचने-समझने के मतलब में उसकी समझ का सपोर्ट करने वाली चीज़ रुकावट होती है। इस तरह, सपोर्ट करने वाली चीज़ के मतलब में शांति और समझ का एक ही काम (स्वाद) होता है, वे एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं, और एक-दूसरे से आगे नहीं बढ़तीं। इसलिए कहा गया था 'वह सपोर्ट करने वाली चीज़ के मतलब में शांति और समझ को एक साथ जोड़ता है'।

वह विकास करता है: विकास चार प्रकार का होता है:... (इस प्रकार दोहराएँ) §2].

इस तरह वह सपोर्टिंग-ऑब्जेक्ट के अर्थ में शांति और समझ को एक साथ डेवलप करता है।

276. (2) वह डोमेन के अर्थ में एक साथ शांति और अंतर्दृष्टि कैसे विकसित करता है?

जब वह उत्तेजना का त्याग करता है, तब उसका संज्ञान और गैर-व्याकुलता का एकीकरण एकाग्रता बन जाता है जिसका क्षेत्र निरोध होता है। जब वह अज्ञानता का त्याग करता है, तब चिंतन के अर्थ में उसकी अंतर्दृष्टि का क्षेत्र निरोध होता है। इस प्रकार क्षेत्र के अर्थ में शांति और अंतर्दृष्टि का एक ही कार्य (स्वाद) होता है, वे एक साथ युग्मित [98] होते हैं, और एक दूसरे से अधिक नहीं होते हैं। इसलिए यह कहा गया कि 'वह क्षेत्र के अर्थ में एक साथ युग्मित शांति और अंतर्दृष्टि विकसित करता है।'

वह विकसित करता है: . . .

277. (3) त्याग के अर्थ में वह एक साथ शांति और अंतर्दृष्टि कैसे विकसित करता है?

जब वह बेचैनी और [नतीजे] जमाव से जुड़ी बुराइयों को छोड़ देता है, तो उसकी समझ और ध्यान भटकने से बचने का मेल, ध्यान बन जाता है और उसका दायरा खत्म हो जाता है। जब वह अज्ञानता और [नतीजे] जमाव से जुड़ी बुराइयों को छोड़ देता है, तो सोचने-समझने के मतलब में उसकी समझ का दायरा खत्म हो जाता है। इस तरह छोड़ने के मतलब में शांति और समझ का एक ही काम (स्वाद) होता है, वे एक-दूसरे से जुड़े होते हैं, और एक-दूसरे से आगे नहीं बढ़ते। इसलिए कहा गया: 'वह छोड़ने के मतलब में शांति और समझ को एक साथ जोड़ता

वह विकसित करता है:... .

278. (4) हार मानने के अर्थ में वह शांति और अंतर्दृष्टि को एक साथ कैसे विकसित करता है?

जब वह बेचैनी और (नतीजे) से जुड़ी बुराइयों को छोड़ देता है, तो उसकी समझ और ध्यान भटकने से बचने का मेल, ध्यान बन जाता है और उसका दायरा खत्म हो जाता है। जब वह अज्ञानता और (नतीजे) से जुड़ी बुराइयों को छोड़ देता है, तो उसकी समझ... का दायरा खत्म हो जाता है। इस तरह, छोड़ने के मतलब में शांति और समझ का एक ही काम (स्वाद) होता है, वे एक-दूसरे से जुड़े होते हैं, और एक-दूसरे से आगे नहीं बढ़ते। इसलिए कहा गया था 'वह छोड़ने के मतलब में शांति और समझ को एक साथ जोड़ता है'।

वह विकसित करता है: . . .

279. (5) वह उभरते हुए अर्थ में एक साथ शांति और अंतर्दृष्टि कैसे विकसित करता है?

जब वह बेचैनी से जुड़ी बुराइयों और [नतीजे] जमावों से बाहर निकलता है, तो उसकी समझ और ध्यान भटकने से बचने का मेल, ध्यान लगाना होता है और खत्म होना उसका दायरा होता है। जब वह बेचैनी से जुड़ी बुराइयों और [नतीजे] जमावों से बाहर निकलता है, तो सोचने-समझने के मामले में उसकी समझ का दायरा खत्म होना होता है। इस तरह, उभरने के मामले में शांति और समझ का एक ही काम (स्वाद) होता है, वे एक-दूसरे से जुड़े होते हैं, और एक-दूसरे से आगे नहीं बढ़ते। इसलिए कहा गया था 'वह उभरने के मामले में शांति और समझ को एक साथ जोड़ता है'।

वह विकसित करता है: . . .

280. (6) वह दूर जाने के अर्थ में शांति और अंतर्दृष्टि को एक साथ कैसे विकसित करता है?

जब वह बेचैनी से जुड़ी बुराइयों और [नतीजे] जमावों से दूर हो जाता है, तो उसकी समझ और ध्यान भटकने से बचने का मेल, ध्यान बन जाता है और उसका दायरा खत्म हो जाता है। जब वह अज्ञानता से जुड़ी बुराइयों और [नतीजे] जमावों से दूर हो जाता है, तो सोचने-समझने के मतलब में उसकी समझ का दायरा खत्म हो जाता है। इस तरह, दूर होने के मतलब में शांति और समझ का एक ही काम (स्वाद) होता है, वे एक-दूसरे से जुड़े होते हैं, और एक-दूसरे से ज़्यादा नहीं होते।

इसलिए कहा गया कि 'वह दूर जाने के अर्थ में शांति और समझ दोनों को एक साथ विकसित करता है'।

वह विकसित करता है:...

281. (7) वह किस प्रकार शांति और अंतर्दृष्टि को एक साथ विकसित करता है? शांति का एहसास?

जब वह उत्तेजना का त्याग करता है, तब उसका संज्ञान और गैर-व्याकुलता का एकीकरण शांतिपूर्ण एकाग्रता होती है, जिसका क्षेत्र निरोध होता है। जब वह अज्ञानता का त्याग करता है, [99] तब चिंतन के अर्थ में अंतर्दृष्टि शांतिपूर्ण होती है, जिसका क्षेत्र निरोध होता है। इस प्रकार शांति के अर्थ में स्थिरता और अंतर्दृष्टि... कहा 'वह शांति के अर्थ में एक साथ मिलकर शांति और अंतर्दृष्टि विकसित करता है।'

वह विकसित करता है...

282. (8) वह उत्कृष्टता के अर्थ में एक साथ शांति और अंतर्दृष्टि कैसे विकसित करता है?

जब वह बेचैनी छोड़ देता है, तो उसकी समझ और ध्यान भटकने से बचने का मेल, खत्म होने पर ध्यान देने की शानदार एकाग्रता बन जाता है। जब वह अज्ञानता छोड़ देता है, तो सोचने के मतलब में उसकी समझ शानदार हो जाती है, जिसका मकसद खत्म होना होता है। इस तरह, शांति और समझ, शानदार होने के मतलब में... कहा जाता है 'वह शानदार होने के मतलब में शांति और समझ को एक साथ जोड़ता है'।

वह विकसित करता है:...

283. (9) वह मुक्ति के अर्थ में शांति और अंतर्दृष्टि को एक साथ कैसे विकसित करता है?

जब वह बेचैनी छोड़ देता है, तो उसकी समझ और ध्यान भटकने से मुक्ति, एकाग्रता बन जाती है, जिसका दायरा समाप्ति होता है। जब वह अज्ञानता छोड़ देता है, तो सोचने के अर्थ में उसकी समझ मुक्त हो जाती है, जिसका दायरा समाप्ति होता है। इस तरह मुक्ति के अर्थ में शांति और .. समझ। कहा 'वह मुक्ति के अर्थ में शांति और समझ को एक साथ जोड़ता है।'

वह विकसित करता है: ...

284. (10) वह किस प्रकार शांति और अंतर्दृष्टि को एक साथ विकसित करता है कैंसर से मुक्ति का एहसास?

जब वह बेचैनी छोड़ देता है, तो उसकी समझ और ध्यान भटकने से बचने की एकता, इंद्रियों की इच्छाओं के कीड़े से आज़ाद होकर ध्यान लगाना और खत्म होना ही उसका दायरा बन जाती है। जब वह अज्ञानता छोड़ देता है, तो सोचने-समझने के मामले में उसकी समझ, अज्ञानता के कीड़े से आज़ाद हो जाती है, जिसका दायरा खत्म होना ही होता है। इस तरह, कीड़ों से आज़ादी के मतलब में शांति और समझ... कहा जाता है 'वह शांति और समझ को एक साथ मिलाकर, बिना किसी कीड़े के होने के मतलब में डेवलप करता है।'

वह विकसित करता है:...

285. (11) वह पार जाने के अर्थ में शांति और अंतर्दृष्टि को एक साथ कैसे विकसित करता है?

जब वह बेचैनी से जुड़ी बुराइयों और [नतीजे] जमावों से आगे निकल जाता है, तो उसकी समझ और ध्यान भटकने से बचने का मेल, एकाग्रता बन जाता है और उसका दायरा खत्म हो जाता है। जब वह अज्ञानता से जुड़ी बुराइयों और [नतीजे] जमावों से आगे निकल जाता है, तो सोचने-समझने के मतलब में उसकी समझ का दायरा खत्म हो जाता है। इस तरह, पार करने के मतलब में शांति और समझ... कहा 'वह पार करने के मतलब में शांति और समझ दोनों को एक साथ डेवलप करता है'।

वह विकसित करता है:...

286. (12) वह संकेतहीनता के अर्थ में एक साथ शांति और अंतर्दृष्टि कैसे विकसित करता है? [100]

जब वह बेचैनी छोड़ देता है, तो उसकी समझ और ध्यान भटकने से बचने की एकता, सभी संकेतों से मुक्त एकाग्रता बन जाती है, जिसका डोमेन समाप्ति होता है। जब वह अज्ञानता छोड़ देता है, तो सोच-विचार के अर्थ में उसकी समझ सभी संकेतों से मुक्त हो जाती है, जिसका डोमेन समाप्ति होता है। इस तरह, बिना किसी संकेत के शांति और समझ। कहा गया है, 'वह बिना किसी संकेत के शांति और समझ को एक साथ विकसित करता है।'

वह विकसित करता है:...

287. (13) वह इच्छाहीनता के भाव में शांति और अंतर्दृष्टि को एक साथ कैसे विकसित करता है?

जब वह बेचैनी छोड़ देता है, तो उसकी समझ और ध्यान भटकने से बचने की एकता, सभी इच्छाओं से मुक्त एकाग्रता बन जाती है, जिसका दायरा समाप्ति होता है। जब वह अज्ञानता छोड़ देता है, तो सोचने-समझने के मामले में उसकी समझ सभी इच्छाओं से मुक्त हो जाती है, जिसका दायरा समाप्ति होता है। इस तरह, बिना इच्छा के शांति और समझ... कहा जाता है 'वह बिना इच्छा के शांति और समझ को एक साथ जोड़ता है।'

वह विकसित करता है:...

288. (14) वह किस प्रकार शांति और अंतर्दृष्टि को एक साथ विकसित करता है? खालीपन का एहसास?

जब वह बेचैनी छोड़ देता है, तो उसकी समझ और ध्यान भटकने से बचने की एकता, सभी गलतफहमियों से खाली एकाग्रता बन जाती है, जिसका दायरा समाप्ति होता है। जब वह अज्ञानता छोड़ देता है, तो सोच-विचार के मतलब में उसकी समझ सभी गलतफहमियों से खाली हो जाती है, जिसका दायरा समाप्ति होता है। इस तरह, खालीपन के मतलब में शांति और समझ... कहा जाता है 'वह खालीपन के मतलब में शांति और समझ को एक साथ जोड़ता है'।

वह विकसित करता है: ... 3

*

289. विचारों को ज़्यादा समझने से उसका मन कैसे परेशान होता है (सोचने-विचारने में दिखाई देता है)?

जब वह ध्यान को कुछ समय के लिए दे रहा होता है, तो उसमें रोशनी पैदा होती है। वह प्रकाश के बारे में इस प्रकार कहते हैं [101] 'प्रकाश एक [महान व्यक्ति का] विचार है'। उसके कारण होने वाला व्याकुलता व्याकुलता है। जब उसका मन इस प्रकार अधिक अनुमान से व्याकुल होता है, तो वह रूप को ठीक से क्षणभंगुर नहीं समझ पाता, वह रूप को ठीक से दर्दनाक नहीं समझ पाता, वह रूप को ठीक से आत्म नहीं समझ पाता। इसलिए यह कहा गया था 'उसका मन विचारों के अधिक अनुमान से व्याकुल है [चिंतन में प्रकट)। बाद में एक अवसर आता है जब उसका ज्ञान आंतरिक रूप से फिर से शांत होता है, पुनर्स्थापित होता है, एकता में बहाल होता है, और पुनः केंद्रित होता है। तब उसमें मार्ग उत्पन्न होता है...'

रास्ता कैसे तैयार होता है?... [§2 के अनुसार दोहराएँ]... रास्ता इसी तरह तैयार होता है।

. . . [§2 के अनुसार दोहराएँ]...

इस तरह बेड़ियाँ छोड़ दी जाती हैं और अंदरूनी आदतें खत्म हो जाती हैं।

290. जब वह ध्यान को अनित्य मानकर देता है, तो उसमें ज्ञान उत्पन्न होता है...

291. जब वह ध्यान को अनित्य मानकर देता है, तब सुख उत्पन्न होता है। . .

292. जब वह ध्यान को अस्थायी मानकर चलता है, तो शांति पैदा होती है। . .

293. जब वह ध्यान को अनित्य मानकर देता है, तो सुख उत्पन्न होता है। . .

294. जब वह ध्यान को अस्थायी मानकर दे रहा होता है, तो संकल्प पैदा होता है.. .

295. जब वह ध्यान को अनित्य मानकर देता है, तो परिश्रम उत्पन्न होता है। . .

296. जब वह दे रहा होता है... तो स्थिरता आती है। समभाव आता है। . .

297. जब वह ध्यान को कुछ समय के लिए मानता है, तो उसमें आसक्ति पैदा होती है। वह आसक्ति के बारे में इस तरह कहता है, 'आसक्ति एक [महान व्यक्ति का] विचार है'। इससे होने वाला ध्यान भटकना बेचैनी है। जब उसका मन इस तरह ज़्यादा सोचने से बेचैन होता है, तो वह दिखने को ठीक से कुछ समय के लिए नहीं समझ पाता, वह दिखने को ठीक से दर्दनाक नहीं समझ पाता, वह दिखने को ठीक से खुद नहीं समझ पाता। इसलिए कहा गया था, 'उसका मन विचारों को ज़्यादा सोचने से बेचैन होता है [सोचने में जो दिखता है)। (बाद में) एक मौका आता है जब उसकी समझ अंदर से फिर से शांत होती है, फिर से जम जाती है, एक हो जाती है, और फिर से एकाग्र हो जाती है। तब उसमें रास्ता बनता है...'

रास्ता कैसे बनता है?... रास्ता इसी तरह बनता है।

. . .

इस तरह बेड़ियाँ छोड़ दी जाती हैं और अंदरूनी आदतें खत्म हो जाती हैं।

298-306. जबकि वह दर्दनाक के तौर पर ध्यान दे रहा है, [§§289-97 को दोहराएं, अस्थायी के स्थान पर दर्दनाक रखें]...

307-15. जबकि वह गैर-स्व के रूप में ध्यान दे रहा है,... (दोहराएँ §§289-97 अस्थायी के लिए गैर-स्व को प्रतिस्थापित करते हुए]...[102]...

इस तरह बेड़ियाँ छोड़ दी जाती हैं और अंदरूनी आदतें खत्म हो जाती हैं।

316-42. जबकि वह भौतिकता पर ध्यान दे रहा है, जो नश्वर है,... दर्दनाक है,... जो खुद नहीं है...

343-5714. जबकि वह भावना पर ध्यान दे रहा है, जो कुछ समय के लिए है,...दर्दनाक है,...न-स्व के रूप में है,... (और इसी तरह Tr. I §5 तक लिस्ट किए गए 201 आइडिया में से हर एक के मामले में)...

5712-42. जबकि वह बुढ़ापे और मौत पर ध्यान दे रहा है, जो कि अस्थायी है,... दर्दनाक है,... जो कि खुद से अलग है,...

इस तरह बेड़ियाँ छोड़ दी जाती हैं और अंदरूनी आदतें खत्म हो जाती हैं।

इस तरह उसका मन विचारों के ज़्यादा सोचने से परेशान रहता है [जो सोच-विचार में दिखता है]।

5743. वह ज्ञान, आनंद, शांति
और आनंद के बारे में झिझकता है।
वह संकल्प, प्रयास और स्थापना,
जिससे उसकी चेतना भ्रमित हो जाती है;
ध्यान-समता और समता
और आसक्ति के बारे में
झिझकता है। लेकिन
जब वह इन दस विचारों की जांच
करने और समझने लगता है, तो वह
कुशलता से ऐसे व्याकुलता
का इलाज करता है और फिर कभी
भ्रमित नहीं होता। अब यदि विचलित
और अपवित्र हो, तो ज्ञान का
विकास पीछे हट जाता है; [103] और
यदि विचलित और अपवित्र हो,
डेवलपमेंट कम हो जाता है।
लेकिन अगर डेवलपमेंट साफ़ और
साफ़ हो, तो वह कम नहीं होता; अगर
डेवलपमेंट बिना ध्यान भटके, साफ़
हो, तो डेवलपमेंट पीछे नहीं हटेगा।
अतः जिसका संज्ञान विचलित नहीं होता,
वह इन दस विचारों के सम्बन्ध
में इन चार प्रकार से समझ सकता है -
संज्ञान का विचलित होना और अप्रसन्न होना

युग्मन पर ग्रंथ।



नोट्स

[1] यहाँ और सभी मामलों में (यानी A ii 156 पर, और नीचे $289 पर यह Tr.) रीडिंग होनी चाहिए dhammuddhaccaviggahitamānaso. Hoti āvuso so samayo... Cf. M iii 289.

* Cf. एम iii 112,

[3] जबकि पिछले दो सुत्त पैराग्राफ की व्याख्या पथ के प्रकट होने से पहले के समय के बारे में है, तीसरे सुत्त पैराग्राफ की व्याख्या सिर्फ़ पथ के क्षण के बारे में है (PSA 587 P.T.S. edn.)। <जैसा कि महानामा बताते हैं, पेज 588, नीचे नंबर 15 और 16, साथ ही आखिरी 'कपलिंग', नंबर 1-14 में से हर एक में शामिल हैं और इसलिए §288 के बाद उनकी कोई अलग व्याख्या नहीं है।>

[4] Vikkhipati c'eve kilissati ce, और पेज 1031 पर पढ़ें। मैं भी ऐसा ही करता हूँ।

[ग्रंथ XII. - वास्तविकताओं पर]

1. [104] 'भिक्षुओं, ये चार चीजें ऐसी (सत्य) हैं, अवास्तविक नहीं (अवास्तविक), अन्यथा नहीं। कौन सी चार? भिक्षुओं, 'यह दुख है' एक ऐसी चीज है जो ऐसी है, अवास्तविक नहीं, अन्यथा नहीं। 'यह दुख की उत्पत्ति है' एक ऐसी चीज है जो ऐसी है, अवास्तविक नहीं, अन्यथा नहीं। 'यह दुख की निवृत्ति है' एक ऐसी चीज है जो ऐसी है, अवास्तविक नहीं, अन्यथा नहीं। 'यह दुख की निवृत्ति का मार्ग है' एक ऐसी चीज है जो ऐसी है, अवास्तविक नहीं, अन्यथा नहीं। ये चार चीजें ऐसी हैं, अवास्तविक नहीं, अन्यथा नहीं'। (सू.व. 430)

*

2. तथाता (वास्तविकता) के अर्थ में दुख कैसे एक वास्तविकता है? दुख के चार अर्थ हैं, जो ऐसे हैं, ऐसे नहीं हैं, अन्यथा नहीं: दुख का अर्थ है उत्पीड़न, होने का अर्थ, गठन, जलने (पीड़ा) का अर्थ, और परिवर्तन का अर्थ। दुख के दुख के ये चार अर्थ हैं, जो ऐसे हैं, ऐसे नहीं हैं, अन्यथा नहीं। इस तरह दुख तथाता के अर्थ में एक वास्तविकता है। 3. उत्पत्ति तथाता के अर्थ में वास्तविकता कैसे है? उत्पत्ति के चार अर्थ हैं, जो ऐसे हैं, ऐसे नहीं हैं, अन्यथा नहीं: उत्पत्ति का अर्थ संचय है, स्रोत का अर्थ है, बंधन का अर्थ है, बाधा का अर्थ है। उत्पत्ति के ये चार अर्थ हैं, जो ऐसे हैं, ऐसे नहीं हैं, अन्यथा नहीं। इस तरह उत्पत्ति तथाता के अर्थ में एक वास्तविकता है।

4. 'ऐसा होना' के अर्थ में 'खत्म होना' एक असलियत कैसे है? 'खत्म होना' के चार मतलब हैं, जो हैं 'ऐसा', 'नहीं', 'नहीं': [105] निरोध का अर्थ है पलायन, एकांत का अर्थ, निरूपित होने का अर्थ, अमरता का अर्थ। निरोध के ये चार अर्थ हैं, जो ऐसे हैं, ऐसे नहीं हैं, अन्यथा नहीं हैं। इस तरह निरोध तथाता के अर्थ में एक वास्तविकता है।

5. रास्ता, 'ऐसा' होने के मतलब में असलियत कैसे है? रास्ते के चार मतलब हैं, जो हैं 'ऐसा', 'नहीं', 'नहीं': रास्ते का मतलब है 'आउटलेट', 'कारण', 'देखने', 'दबदबा'। रास्ते के ये चार मतलब हैं, जो हैं 'ऐसा', 'नहीं', 'नहीं'। इस तरह रास्ता 'ऐसा' होने के मतलब में असलियत है।

6. चारों असलियतों में कितने पहलुओं में एक ही पैठ होती है? चारों असलियतों में चार पहलुओं में एक ही पैठ होती है: असलियत (असलियत) के अर्थ में, खुद न होने के अर्थ में, असलियत के अर्थ में, पैठ के अर्थ में। इन चार पहलुओं में चार असलियतें हैं:

एक के रूप में शामिल। जो एक के रूप में शामिल है वह एकता है। एकता एक ही ज्ञान से भेदी जाती है। इस प्रकार चारों वास्तविकताओं में एक ही भेदन होता है।
7. असलियत के अर्थ में चारों असलियतों का एक ही पेनेट्रेशन कैसे होता है? असलियत के अर्थ में चारों असलियतों का एक ही पेनेट्रेशन चार पहलुओं में होता है: दुख का मतलब दुख है, जो असलियत का मतलब है, शुरुआत का मतलब असलियत का मतलब है, खत्म होना का मतलब खत्म होना है, जो असलियत का मतलब है, रास्ते का मतलब असलियत का मतलब है। इन चार पहलुओं में चारों असलियतें एक के रूप में शामिल हैं। जो एक के रूप में शामिल है वह एकता है। एकता एक ही ज्ञान से पेनेट्रेट होती है। इस तरह चारों असलियतों का एक ही पेनेट्रेशन होता है।
8. खुद न होने के मतलब में चारों असलियतों का एक ही पेनेट्रेशन कैसे होता है? चारों असलियतों का खुद न होने के मतलब में चार पहलुओं में एक ही पेनेट्रेशन होता है: दुख का मतलब है खुद न होने का दुख, शुरुआत का मतलब है खुद न होने का ओरिजिन, खत्म होने का मतलब है खुद न होने का पेनेट्रेशन, रास्ते का मतलब है खुद न होने का पेनेट्रेशन। इन चार पहलुओं में चारों असलियतें एक ही पेनेट्रेशन में . . पेनेट्रेशन।
शामिल हैं। एक
9. वास्तविकता के अर्थ में चार वास्तविकताओं का एकल प्रवेश कैसे होता है? चारों वास्तविकताओं का वास्तविकता के अर्थ में चार पहलुओं में एकल प्रवेश होता है: दुख का अर्थ वास्तविकता के रूप में दुख है,... मार्ग का अर्थ वास्तविकता के रूप में पथ है। इन चार पहलुओं में चार वास्तविकताएं एक ... एकल प्रवेश के रूप में शामिल हैं। [106]
10. चार असलियतों का एक ही पेनेट्रेशन, पेनेट्रेशन के मतलब में कैसे होता है? चारों असलियतों का एक ही पेनेट्रेशन, पेनेट्रेशन के मतलब में चार पहलुओं में होता है: दुख का मतलब है दुख, पेनेट्रेशन का मतलब है... रास्ते का मतलब है रास्ता, पेनेट्रेशन का मतलब है। इन चार पहलुओं में चार असलियतें एक ही... एक ही पेनेट्रेशन के तौर पर शामिल हैं।

*

11. चारों असलियतों का एक ही पेनेट्रेशन कैसे होता है? जो कुछ समय का है, वह दुखदायी है; जो कुछ समय का है और दुखदायी है, वह खुद नहीं है; जो कुछ समय का है और दुखदायी है और खुद नहीं है, वह ऐसा (असली) है; जो कुछ समय का है और दुखदायी है और खुद नहीं है और ऐसा (असली) है, वह असलियत है; जो कुछ समय का है और दुखदायी है और खुद नहीं है और ऐसा (असली) और असलियत एक के तौर पर शामिल है। जो एक के तौर पर शामिल है, वह एकता है। एकता एक ही ज्ञान से पेनेट्रेट होती है। इस तरह चारों असलियतों का एक ही पेनेट्रेशन है।
12. चारों असलियतों की एक ही समझ कितने पहलुओं में है?

चार असलियतें नौ पहलुओं में एक ही तरह से अंदर जाती हैं: असलियत के मतलब में, खुद न होने के मतलब में, असलियत के मतलब में, अंदर जाने के मतलब में, सीधे ज्ञान के मतलब में, पूरी समझ के मतलब में, छोड़ने के मतलब में, विकास के मतलब में, एहसास के मतलब में। इन नौ पहलुओं में चारों असलियतें एक के तौर पर शामिल हैं। जो एक के तौर पर शामिल है, वह एकता है। एकता एक ही ज्ञान से अंदर जाती है। इस तरह चारों असलियतों में एक ही तरह से अंदर जाती हैं।

13. तथाता (वास्तविकता) के अर्थ में चार वास्तविकताओं का एकल प्रवेश कैसे होता है? तथाता के अर्थ में चार वास्तविकताओं का नौ पहलुओं में एकल प्रवेश होता है: दुख का अर्थ है दुख उठाना, जो कि इसका तथाता का अर्थ है, उत्पत्ति का अर्थ है उत्पत्ति, निरोध का अर्थ है निरोध, जो कि इसका तथाता का अर्थ है, मार्ग का अर्थ है मार्ग, जो कि इसका तथाता का अर्थ है, प्रत्यक्ष-ज्ञान का अर्थ है प्रत्यक्ष-ज्ञान, जो कि इसका तथाता का अर्थ है, पूर्ण-समझ का अर्थ है पूर्ण-समझ, जो कि इसका तथाता का अर्थ है, परित्याग का अर्थ है परित्याग, जो कि इसका तथाता का अर्थ है, विकास का अर्थ है विकास, जो कि इसका तथाता का अर्थ है, बोध, जो कि इसका तथाता का अर्थ है बोध। इन नौ पहलुओं में चार वास्तविकताएं एक के रूप में शामिल हैं। जो एक के रूप में शामिल है वह एकता है। एकता एक ही ज्ञान द्वारा भेदी जाती है। इस प्रकार चारों वास्तविकताओं का एक ही प्रवेश है। [107]

14. नॉन-सेल्फ के अर्थ में चारों वास्तविकताओं का सिंगल पेनेट्रेशन कैसे होता है? वहाँ है... [जैसा कि §13 में है]

15. असलियत के मतलब में चारों असलियतों का एक ही मतलब कैसे है? वहाँ...

16. पेनिट्रेशन के अर्थ में चारों वास्तविकताओं का सिंगल पेनिट्रेशन कैसे होता है? वहाँ...

17. कितने पहलुओं में चारों असलियतों का एक ही पेनेट्रेशन होता है? चारों असलियतों का बारह पहलुओं में एक ही पेनेट्रेशन होता है: 'तथा' होने के अर्थ में, 'न-स्व' होने के अर्थ में, 'असलियत' के अर्थ में, 'पेनेट्रेशन' के अर्थ में, 'सीधे जानने' के अर्थ में, 'पूरी तरह समझने' के अर्थ में, 'आइडिया' के अर्थ में, 'सिद्धांत' के अर्थ में, 'जो जाना जाता है' के अर्थ में, 'रियलाइज़ेशन' के अर्थ में, 'साउंडिंग' के अर्थ में, 'कन्वर्जेंस' के अर्थ में। इन बारह पहलुओं में चारों असलियतें एक के रूप में शामिल हैं। जो एक के रूप में शामिल है वह एकता है। एकता एक ही ज्ञान से पेनेट्रेट होती है। इस प्रकार चारों असलियतों का एक ही पेनेट्रेशन होता है।

18. सत्यता के अर्थ में चारों वास्तविकताओं का एक ही प्रवेश कैसे होता है? सत्यता के अर्थ में सोलह पहलुओं में चारों वास्तविकताओं का एक ही प्रवेश होता है: दुख का अर्थ है

दमन, बनने का अर्थ, जलने (पीड़ा) का अर्थ, परिवर्तन का अर्थ, जैसा कि इसकी तथाता का अर्थ है; उत्पत्ति का अर्थ है संचय, स्रोत का अर्थ, बंधन का अर्थ, बाधा का अर्थ, जैसा कि इसकी तथाता का अर्थ है; समाप्ति का अर्थ है पलायन, एकांत का अर्थ, न बनने का अर्थ, अमरता का अर्थ, जैसा कि इसकी तथाता का अर्थ है; मार्ग का अर्थ है निकास, कारण का अर्थ, देखने का अर्थ, प्रभुत्व का अर्थ, जैसा कि इसकी तथाता का अर्थ है। इन सोलह पहलुओं में चार वास्तविकताएं एक के रूप में शामिल हैं। जो एक के रूप में शामिल है वह एकता है। एकता एक ही ज्ञान से भेदी जाती है। इस प्रकार चारों वास्तविकताओं का एक ही भेदन है। [108]

19. 'न' के अर्थ में चारों वास्तविकताओं का एक ही प्रवेश कैसे होता है? वहाँ...

20.... असलियत के हिसाब से...

21... पेनिट्रेशन के अर्थ में...

22. ... सीधे-सीधे जानने के अर्थ में...

. . . 23. पूरी तरह से समझने के अर्थ में...

24. . . . विचार के अर्थ में...

. 25. .सिद्धांत के अर्थ में[1] . . .

. .26. . जो-जाना-जाना-है... के अर्थ में

27. ... .एहसास के अर्थ में.

28.... ध्वनि के अर्थ में..

29. ... अभिसरण के अर्थ में।

*

30. असलियत की कितनी खासियतें होती हैं? असलियत की दो खासियतें होती हैं: बनी हुई की खासियत और बिना बनी हुई की खासियत। असलियत की ये दो खासियतें होती हैं।

31. असलियत की कितनी खासियतें होती हैं? असलियत की छह खासियतें होती हैं: बनी हुई असलियतों में उनके उठने का पता चलता है, उनके गिरने का पता चलता है, और उनके होने पर होने वाले बदलाव का पता चलता है; बिना बनी हुई असलियत में किसी के उठने का पता नहीं चलता, किसी के गिरने का पता नहीं चलता, और होने पर होने वाले किसी भी बदलाव का पता नहीं चलता। असलियतों में ये छह खासियतें होती हैं।

32. असलियत की कितनी खासियतें होती हैं? असलियत की बारह खासियतें होती हैं: दुख की असलियत में, उसका उठना, उसका गिरना, और मौजूद होने पर उसका बदलाव पता चलता है; शुरुआत की असलियत में, उसका उठना, उसका गिरना, और मौजूद होने पर उसका बदलाव पता चलता है; रास्ते की असलियत में, उसका उठना, उसका गिरना, और मौजूद होने पर उसका बदलाव पता चलता है; खत्म होने की असलियत में, कोई उठना, कोई गिरना, और मौजूद होने पर कोई बदलाव पता नहीं चलता। असलियत में ये बारह खासियतें होती हैं।

33. चार वास्तविकताओं में से कितनी लाभदायक हैं, कितनी लाभहीन हैं और कितनी अनिश्चित हैं? उत्पत्ति की वास्तविकता लाभहीन है, मार्ग की वास्तविकता [109] लाभदायक है, समाप्ति की वास्तविकता अनिश्चित है और दुख की वास्तविकता लाभदायक या लाभहीन या अनिश्चित हो सकती है।

34. हो सकता है: कैसे हो सकता है? क्योंकि दुख की असलियत फ़ायदेमंद नहीं है और शुरुआत की असलियत फ़ायदेमंद नहीं है, इसलिए फ़ायदेमंद के मतलब में, एक असलियत में दो असलियतें शामिल हैं और एक असलियत दो असलियतों में शामिल है। क्योंकि दुख की असलियत फ़ायदेमंद है और रास्ते की असलियत फ़ायदेमंद है, इसलिए फ़ायदेमंद के मतलब में एक असलियत में दो असलियतें शामिल हैं और एक असलियत दो असलियतों में शामिल है। क्योंकि दुख की असलियत तय नहीं है और खत्म होने की असलियत तय नहीं है, इसलिए तय नहीं के मतलब में एक असलियत में दो असलियतें शामिल हैं और एक असलियत दो असलियतों में शामिल है। इस तरह एक असलियत में तीन असलियतें शामिल हो सकती हैं और एक असलियत तीन असलियतों में शामिल हो सकती है, जो दिए गए उदाहरण के हिसाब से है।

* * *

35. भिक्षुओं, मेरे ज्ञान प्राप्ति से पहले, जब मैं अभी भी एक अज्ञानी बोधिसत्व था, मैंने सोचा था 'भौतिकता के मामले में क्या आकर्षण है, क्या खतरा है, क्या बचाव है? भावना के मामले में क्या आकर्षण है, क्या खतरा है, क्या बचाव है? अनुभूति के मामले में क्या आकर्षण है, क्या खतरा है, क्या बचाव है? संरचनाओं के मामले में क्या आकर्षण है, क्या खतरा है, क्या बचाव है? चेतना के मामले में क्या आकर्षण है, क्या खतरा है, क्या बचाव है?'

'मैंने सोचा 'मैटेरियलिटी के मामले में, मैटेरियलिटी पर निर्भर होकर मिलने वाला सुख और खुशी ही आकर्षण है; मैटेरियलिटी का कुछ समय का न होना, दर्द देना और बदलना ही खतरा है; जोश और लालच को हटाना, जोश और लालच को छोड़ देना, क्योंकि मैटेरियलिटी ही बचने का रास्ता है। फीलिंग के मामले में... परसेप्शन के मामले में... फॉर्मेशन के मामले में... कॉन्शसनेस के मामले में, सुख और खुशी ही पैदा होती है... जोश और लालच को छोड़ देना, क्योंकि कॉन्शसनेस ही बचने का रास्ता है।

'जब तक मैंने आसक्ति के इन पाँच स्कंधों (वस्तुओं के रूप में) में आकर्षण को आकर्षण के रूप में, खतरे को खतरे के रूप में तथा पलायन को पलायन के रूप में ठीक से प्रत्यक्ष रूप से नहीं जाना था, तब तक [110] लंबे समय तक मैंने संसार में इसके देवताओं, इसके मारों तथा इसके ब्रह्म देवताओं के साथ, इस पीढ़ी में इसके तपस्वियों और ब्राह्मणों, इसके राजकुमारों तथा मनुष्यों के साथ परम पूर्ण ज्ञान की खोज करने की घोषणा नहीं की थी। लेकिन जैसे ही मैंने आसक्ति के इन पाँच स्कंधों [वस्तुओं के रूप में] के मामले में आकर्षण को प्रत्यक्ष रूप से जाना

आकर्षण और खतरे को खतरे की तरह और बचने को बचने की तरह सही ढंग से, तब मैंने घोषणा की कि मैंने दुनिया में इसके देवताओं, इसके मारों और इसके ब्रह्म देवताओं के साथ, इस पीढ़ी में इसके तपस्वियों और ब्राह्मणों, इसके राजकुमारों और मनुष्यों के साथ सर्वोच्च पूर्ण-ज्ञान को खोज लिया है। और ज्ञान और देखना मुझमें था: 'मेरी इच्छा का उद्धार अटूट है, यह अंतिम जन्म है, अब अस्तित्व का कोई नवीनीकरण नहीं है" (S iii 26)

*

36. 'भौतिकता के मामले में भौतिकता पर निर्भर होकर उत्पन्न होने वाले सुख और आनंद ही आकर्षण हैं', इस प्रकार त्यागने से प्रवेश करना [उत्पत्ति की वास्तविकता का ज्ञान] है। 'भौतिकता के मामले में भौतिकता क्षणभंगुर, दर्दनाक और परिवर्तन के अधीन है, यही खतरा है', इस प्रकार पूरी समझ से प्रवेश करना [दुख की वास्तविकता का ज्ञान] है। 'भौतिकता के मामले में उत्साह और लोभ को हटाना, उत्साह और लोभ को त्यागना, क्योंकि भौतिकता ही पलायन है', इस प्रकार बोध से प्रवेश करना [निरोध की वास्तविकता का ज्ञान] है। [उत्पत्ति, दुख और निरोध], इन तीन उदाहरणों में दृष्टि, विचार, बोलना, कार्य करना, रहना, प्रयास, जागरूकता और एकाग्रता से युक्त विकास द्वारा प्रवेश करना मार्ग की वास्तविकता का ज्ञान है।

इस तरह 'भावना के मामले में...' को छोड़कर प्रवेश

. . .'धारणा के मामले में...

. . .'फॉर्मेशन के मामले में...

. . .'चेतना के मामले में...

37. वास्तविकता: कितने पहलुओं में वास्तविकता? तीन पहलुओं में वास्तविकता: [111] खोज के अर्थ में, आलिंगन करने के अर्थ में, प्रवेश के अर्थ में।

38. खोज के अर्थ में वास्तविकता क्या है? [आदि]

'बुढ़ापा और मौत का सोर्स क्या है, इसकी शुरुआत क्या है, यह किससे पैदा होता है, किससे बनता है?': यह असलियत है खोज के मतलब में। 'बुढ़ापा और मौत का सोर्स जन्म है, इसकी शुरुआत जन्म से होती है, जन्म से पैदा होता है, जन्म से बनता है': यह असलियत है गले लगाने के मतलब में। वह बुढ़ापा और मौत और इसकी शुरुआत और इसके खत्म होने और इसके खत्म होने तक ले जाने वाले रास्ते को समझता है: यह असलियत है पैठ के मतलब में।

'जन्म का सोर्स क्या है,... किससे पैदा होता है?': यह खोज के मतलब में असलियत है। 'जन्म का सोर्स होना है, होने से पैदा होता है': यह अपनाने के मतलब में असलियत है। वह जन्म और उसकी शुरुआत और उसके खत्म होने और उसके खत्म होने तक जाने वाले रास्ते को समझता है: यह पैठ के मतलब में असलियत है।

'अस्तित्व का सोर्स क्या है,... किससे बनता है?': यह खोज के मतलब में असलियत है। 'अस्तित्व का सोर्स से जुड़ाव है,... किससे बनता है?

'चिपकना': यह गले लगाने के मतलब में असलियत है। वह होने और उसकी शुरुआत और उसके खत्म होने और उसके खत्म होने तक जाने वाले रास्ते को समझता है: यह पैठ के मतलब में असलियत है।

'चिपकने का सोर्स क्या है,... किससे पैदा होता है?': यह खोज के मतलब में असलियत है। 'चिपकने का सोर्स लालसा है,... लालसा से पैदा होता है': यह गले लगाने के मतलब में असलियत है। वह चिपकने और उसके शुरू होने और उसके खत्म होने और उसके खत्म होने के रास्ते को समझता है: यह पैठ के मतलब में असलियत है।

'लालसा का स्रोत क्या है,... किससे उत्पन्न होती है?': यह खोज के अर्थ में वास्तविकता है। 'लालसा का स्रोत भावना है, भावना से उत्पन्न होती है': यह आलिंगन के अर्थ में वास्तविकता है। वह लालसा और उसके मूल और उसकी समाप्ति और उसकी समाप्ति के रास्ते को समझता है: यह प्रवेश के अर्थ में वास्तविकता है। [112]

का सोर्स क्या है,.. किससे पैदा होती है?': यह खोज के मतलब में असलियत है। 'भावना का सोर्स कॉन्टैक्ट है,.. कॉन्टैक्ट से पैदा होती है': यह अपनाने के मतलब में असलियत है। वह भावना और उसकी शुरुआत और उसके खत्म होने और उसके खत्म होने के रास्ते को समझता है: यह पैठ के मतलब में असलियत है।

'कॉन्टैक्ट का सोर्स क्या है,... किससे बनता है?': यह असलियत है खोज के मतलब में। 'कॉन्टैक्ट का सोर्स छह गुना बेस है,... छह गुना बेस से बनता है': यह असलियत है गले लगाने के मतलब में। वह कॉन्टैक्ट और उसकी शुरुआत और उसके खत्म होने और उसके खत्म होने के रास्ते को समझता है: यह असलियत है पैठ के मतलब में।

'छह गुना आधार का सोर्स क्या है,... किससे बनता है?': यह खोज के मतलब में असलियत है। 'छह गुना आधार का सोर्स मेंटैलिटी-मटेरियलिटी है,... मेंटैलिटी-मटेरियलिटी से बनता है': यह अपनाने के मतलब में असलियत है। वह छह गुना आधार और उसकी शुरुआत और उसके खत्म होने और उसके खत्म होने तक ले जाने वाले रास्ते को समझता है: यह पैठ के मतलब में असलियत है।

'मेंटैलिटी-मटेरियलिटी का सोर्स क्या है,... यह किससे बनता है?': यह असलियत है खोज के मतलब में। 'मेंटैलिटी-मटेरियलिटी का सोर्स चेतना है,... यह चेतना से बनता है': यह असलियत है गले लगाने के मतलब में। वह मेंटैलिटी-मटेरियलिटी और उसकी शुरुआत और उसके खत्म होने और उसके खत्म होने के रास्ते को समझता है: यह असलियत है पैठ के मतलब में।

'चेतना का स्रोत क्या है, ... किससे उत्पन्न होती है?': यह खोज के अर्थ में वास्तविकता है। 'चेतना का स्रोत संरचनाएँ हैं, .. संरचनाओं द्वारा उत्पन्न होती है': यह आलिंगन के अर्थ में वास्तविकता है। वह चेतना और उसके उद्गम और उसकी समाप्ति और उसकी समाप्ति की ओर ले जाने वाले मार्ग को समझता है: यह प्रवेश के अर्थ में वास्तविकता है। [113]

'फॉर्मेशन का सोर्स क्या है, वे किससे बनते हैं?': यह असलियत है खोज के मतलब में। 'फॉर्मेशन का सोर्स अज्ञान है,... अज्ञान से बनते हैं': यह असलियत है अपनाने के मतलब में। वह फॉर्मेशन और उनके शुरू होने और उनके खत्म होने और उनके खत्म होने तक ले जाने वाले रास्ते को समझता है: यह असलियत है पैठ के मतलब में।

39. बुढ़ापा और मौत दुख की असलियत है, जन्म शुरुआत की असलियत है, दोनों से बचना खत्म होने की असलियत है, खत्म होने को समझने का काम ही रास्ते की असलियत है।

जन्म दुख की असलियत है, होना शुरुआत की असलियत है, दोनों से बचना खत्म होने की असलियत है, खत्म होने को समझने का काम रास्ते की असलियत है।

होना ही दुख की असलियत है, चिपकना ही शुरुआत की असलियत है, दोनों से बचना...

चिपकना दुख की असलियत है, और तृष्णा शुरुआत की असलियत है। . .
चाहत दुख की असलियत है, एहसास शुरुआत की असलियत है, एहसास . . .
दुख की असलियत है, संपर्क शुरुआत की असलियत है, संपर्क . . .
दुख की असलियत है, छह गुना आधार शुरुआत की असलियत है,...

छह गुना आधार दुख की असलियत है, मानसिकता-भौतिकता मूल की असलियत है,...

मानसिकता-भौतिकता दुख की असलियत है, चेतना मूल की असलियत है,..

चेतना दुख की असलियत है, बनावट शुरुआत की असलियत है,...

बनना ही दुख की असलियत है, अज्ञानता ही शुरुआत की असलियत है, दोनों से बचना ही खत्म होने की असलियत है, खत्म होने को समझने का काम ही रास्ते की असलियत है।

40. बुढ़ापा और मौत दुख की सच्चाई है, जन्म दुख की सच्चाई हो सकता है या शुरुआत की सच्चाई हो सकती है, दोनों से बचना ही खत्म होने की सच्चाई है, खत्म होने को समझने का काम ही रास्ते की सच्चाई है।

जन्म दुख की वास्तविकता है, [114] होना दुख की वास्तविकता हो सकता है या उत्पत्ति की वास्तविकता हो सकती है, दोनों से बचना निरोध की वास्तविकता है, निरोध को समझने का कार्य मार्ग की वास्तविकता है।

. . .

बनना ही दुख की असलियत है, अज्ञान दुख की असलियत हो सकती है या शुरुआत की असलियत हो सकती है, दोनों से बचना ही खत्म होने की असलियत है, खत्म होने को समझने का काम ही रास्ते की असलियत है।

वास्तविकताओं पर ग्रंथ



पाठ अनुभाग

टिप्पणी

P.T.S. टेक्स्ट वॉल्यूम ii, पेज 107, 1. 17 में तथास्थेना की जगह धातत्थेना पढ़ें (sce Tr. 1, §35 और comy.)। इसी तरह P.T.S. टेक्स्ट वॉल्यूम ii, पेज 108 L 3 में भी।

[प्रबंध XIII. - ज्ञानोदय के कारकों पर]

1. [115] 'भिक्षुओं, ये सात ज्ञान कारक हैं। कौन से सात? वे हैं माइंडफुलनेस ज्ञान कारक, विचारों की जांच ज्ञान कारक, ऊर्जा ज्ञान कारक, खुशी ज्ञान कारक, शांति ज्ञान कारक, एकाग्रता ज्ञान कारक, और समता ज्ञान कारक। ये सात ज्ञान कारक हैं '(देखें एस वी 77)।

*

2. ज्ञान के कारक: किस अर्थ में ज्ञान के कारक?

वे ज्ञान देते हैं, इसलिए वे ज्ञान के फैक्टर हैं। वे ज्ञानी हैं, इसलिए वे ज्ञान के फैक्टर हैं। वे और ज्ञानी हैं, वे और भी ज्ञानी हैं,... वे पूरी तरह से ज्ञानी हैं, इसलिए वे ज्ञान के फैक्टर हैं। वे ज्ञानी होने के मतलब में ज्ञान के फैक्टर हैं। वे और ज्ञानी होने के मतलब में ज्ञान के फैक्टर हैं... और भी ज्ञानी होने के मतलब में... पूरी तरह से ज्ञानी होने के मतलब में। वे ज्ञान देते हैं, इसलिए वे ज्ञान के फैक्टर हैं। वे और ज्ञान देते हैं,... वे और भी ज्ञान देते हैं,... वे पूरी तरह से ज्ञान देते हैं, इसलिए वे ज्ञान के फैक्टर हैं। वे ज्ञान देने के मतलब में ज्ञान के फैक्टर हैं। वे और ज्ञान देने के मतलब में ज्ञान के फैक्टर हैं... और भी ज्ञान देने के मतलब में... पूरी तरह से ज्ञान देने के मतलब में। वे ज्ञान पाने के मतलब में ज्ञान के फैक्टर हैं2... और भी ज्ञान पाने के मतलब में... और भी ज्ञान पाने के मतलब में... पूरी तरह से ज्ञान पाने के मतलब में। वे ज्ञान पाने के फैक्टर हैं, इस मायने में कि ज्ञान पाना... ज्ञान पाने के मतलब में... ज्ञान पाने की स्थिति को पहले से समझने के मतलब में... ज्ञान पाने की स्थिति को समझने के मतलब में। ज्ञान पाने की स्थिति को घेरने के मतलब में। . . वे ज्ञान पाने की स्थिति को घेरने के मतलब में ज्ञान पाने के फैक्टर हैं।

3. वे जड़ों के अर्थ में ज्ञान कारक हैं। वे जड़ों के व्यवहार के अर्थ में ज्ञान कारक हैं... जड़ों को गले लगाने के अर्थ में। जड़ों के उपकरण के अर्थ में... जड़ों की पूर्णता के अर्थ में। [116] जड़ों के पकने के अर्थ में... जड़ों के भेदभाव के अर्थ में... जड़ों के भेदभाव तक पहुँचने के अर्थ में... जड़ों के भेदभाव में निपुणता के अर्थ में... जड़ों के भेदभाव में निपुणता तक पहुँचने के अर्थ में।

4. वे कारण के अर्थ में ज्ञान देने वाले फैक्टर हैं। वे कारणों के व्यवहार के अर्थ में ज्ञान देने वाले फैक्टर हैं... कारणों को अपनाने के अर्थ में। कारणों को तैयार करने के अर्थ में... कारणों के परफेक्शन के अर्थ में... कारणों के पकने के अर्थ में... कारणों को पहचानने के अर्थ में... कारणों को पहचानने में महारत हासिल करने के अर्थ में... कारणों को पहचानने में महारत हासिल करने के अर्थ में।

5. वे कंडीशन के मतलब में ज्ञान देने वाले फैक्टर हैं। वे कंडीशन के व्यवहार के मतलब में ज्ञान देने वाले फैक्टर हैं... कंडीशन को अपनाने के मतलब में... कंडीशन को तैयार करने के मतलब में। कंडीशन के परफेक्शन के मतलब में... कंडीशन के पकने के मतलब में। कंडीशन को समझने के मतलब में... कंडीशन को समझने की समझ तक पहुँचने के मतलब में... कंडीशन को समझने में महारत हासिल करने के मतलब में... कंडीशन को समझने में महारत हासिल करने के मतलब में।

6. वे शुद्धिकरण के अर्थ में ज्ञान के कारक हैं। वे शुद्धिकरण के व्यवहार के अर्थ में ज्ञान के कारक हैं... शुद्धिकरण को अपनाने के अर्थ में... शुद्धिकरण के उपकरण के अर्थ में... शुद्धिकरण की पूर्णता के अर्थ में... शुद्धिकरण के पकने के अर्थ में... शुद्धिकरण के विवेक के अर्थ में... शुद्धिकरण के विवेक तक पहुँचने के अर्थ में... शुद्धिकरण के विवेक में महारत हासिल करने के अर्थ में... शुद्धिकरण के विवेक में महारत हासिल करने के अर्थ में।

7. वे बेदाग होने के अर्थ में ज्ञान के कारक हैं। वे बेदाग होने के व्यवहार के अर्थ में ज्ञान के कारक हैं... बेदाग होने को अपनाने के अर्थ में... बेदाग होने की पूर्णता के अर्थ में... बेदाग होने के पकने के अर्थ में... बेदाग होने के भेदभाव के अर्थ में... बेदाग होने के भेदभाव तक पहुँचने के अर्थ में... बेदाग होने के भेदभाव में महारत हासिल करने के अर्थ में... बेदाग होने के भेदभाव में महारत हासिल करने के अर्थ में।

8. वे त्याग के अर्थ में ज्ञान के कारक हैं। वे त्याग के व्यवहार के अर्थ में ज्ञान के कारक हैं... त्याग को अपनाने के अर्थ में... त्याग के उपकरण के अर्थ में... त्याग की पूर्णता के अर्थ में... त्याग की कठोरता के अर्थ में... त्याग के विवेक के अर्थ में ... त्याग के विवेक तक पहुँचने के अर्थ में... त्याग के विवेक में निपुणता प्राप्त करने के अर्थ में... त्याग के विवेक में निपुणता प्राप्त कर लेने के अर्थ में।

9. वे मुक्ति के अर्थ में ज्ञान के कारक हैं। वे मुक्ति के व्यवहार के अर्थ में ज्ञान के कारक हैं...

मुक्ति को गले लगाने का भाव... मुक्ति के उपकरण के अर्थ में... [117) मुक्ति की पूर्णता के अर्थ में... मुक्ति के परिपक्व होने के अर्थ में... मुक्ति के भेदभाव के अर्थ में... मुक्ति के भेदभाव तक पहुँचने के अर्थ में। मुक्ति के भेदभाव में निपुणता के अर्थ में... मुक्ति के भेदभाव में निपुणता तक पहुँच जाने के अर्थ में।

10. वे ज्ञान के कारक हैं, कैंसर से मुक्ति के अर्थ में। वे ज्ञान के कारक हैं, कैंसर से मुक्ति के व्यवहार के अर्थ में... कैंसर से मुक्ति को अपनाने के अर्थ में... कैंसर से मुक्ति के उपकरण के अर्थ में... कैंसर से मुक्ति की पूर्णता के अर्थ में... कैंसर से मुक्ति के पकने के अर्थ में... कैंसर से मुक्ति के विवेक के अर्थ में... कैंसर से मुक्ति के विवेक तक पहुँचने के अर्थ में, कैंसर से . . . मुक्ति के विवेक में महारत हासिल करने के अर्थ में... कैंसर से मुक्ति के विवेक में महारत हासिल करने के अर्थ में।

11. वे एकांत के अर्थ में ज्ञान के कारक हैं... वे एकांत के व्यवहार के अर्थ में ज्ञान के कारक हैं... एकांत को अपनाने के अर्थ में। एकांत के उपकरण के अर्थ में... एकांत की पूर्णता के अर्थ में... एकांत के पकने के अर्थ में, एकांत के विवेक के अर्थ . . . में... एकांत के विवेक तक पहुँचने के अर्थ में। एकांत के विवेक में निपुणता के अर्थ में... एकांत के विवेक में निपुणता प्राप्त कर लेने के अर्थ में।

12. वे त्याग के अर्थ में ज्ञान के कारक हैं। वे त्याग के व्यवहार के अर्थ में ज्ञान के कारक हैं... त्याग को अपनाने के अर्थ में... त्याग के उपकरण के अर्थ में... त्याग की पूर्णता के अर्थ में... त्याग के पकने के अर्थ में... त्याग की पहचान के अर्थ में... त्याग की पहचान तक पहुँचने के अर्थ में। त्याग की पहचान में महारत के अर्थ में... त्याग की . . पहचान में महारत हासिल करने के अर्थ में।

वे मूल के अर्थ में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान-कारक हैं। वे कारण के अर्थ में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान-कारक हैं। वे स्थिति के अर्थ में प्रबुद्ध हैं... शुद्धि के अर्थ में... निर्दोषिता के अर्थ में... त्याग के अर्थ में। मुक्ति के अर्थ में... [118] कैंसरहीनता के अर्थ में... एकांत के अर्थ में... त्याग के अर्थ में, इस प्रकार वे ज्ञान-कारक हैं।

14. वे जड़ों के व्यवहार के मतलब को समझते हैं, इसलिए वे ज्ञान देने वाले फैक्टर हैं। वे कारणों के व्यवहार के मतलब को समझते हैं, इसलिए वे ज्ञान देने वाले फैक्टर हैं। वे स्थितियों के व्यवहार के मतलब को समझते हैं...

शुद्धि के व्यवहार के अर्थ में... निर्दोषिता के व्यवहार के अर्थ में... त्याग के व्यवहार के अर्थ में... मुक्ति के व्यवहार के अर्थ में... कैंसरहीनता के व्यवहार के अर्थ में... एकांत के व्यवहार के अर्थ में, त्याग के ... व्यवहार के अर्थ में, इस प्रकार वे ज्ञान के कारक हैं।

15. वे जड़ को अपनाने के मतलब में ज्ञानी हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारण हैं। [कारण, .. स्थिति, आदि के साथ अपनाने को मिलाकर, त्याग तक पूरा करें]

16. वे जड़ के इक्विपमेंट के मतलब में प्रबुद्ध हैं; इस तरह वे ज्ञान के फैक्टर हैं... [इक्विपमेंट को कारण वगैरह के साथ मिलाकर पूरा करें]

17. वे जड़ की पूर्णता के अर्थ में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान के कारक हैं... (पूर्णता को कारण के साथ जोड़कर पूर्ण, आदि।)

18. वे जड़ के पकने के मतलब को समझते हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारण हैं... [पकने को कारण के साथ जोड़कर पूरा करें, वगैरह]

19. वे जड़ों के भेदभाव के मतलब में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारक हैं... (कारण के साथ भेदभाव को मिलाकर पूरा करें, आदि)

वे मूल का विवेक कराने के अर्थ में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान के कारक हैं... (विवेक में लाने को कारण आदि के साथ संयोजित करके पूर्ण करते हैं)... वे त्याग का विवेक कराने के अर्थ में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान के कारक हैं।

वे मूल के विवेक में निपुणता विकसित करने के अर्थ में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान कारक हैं... [कारण आदि के साथ विवेक में निपुणता विकसित करने के संयोजन से पूर्ण]... वे त्याग के विवेक में निपुणता विकसित करने के अर्थ में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान कारक हैं।

वे जड़ के विवेक में निपुणता प्राप्त करने के अर्थ में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान कारक हैं... [कारण आदि के साथ विवेक में निपुणता प्राप्त करने के संयोजन से पूर्ण]... वे त्याग के विवेक में निपुणता प्राप्त करने के अर्थ में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान कारक हैं।

23. वे गले लगाने के मतलब में ज्ञानी हैं, इसलिए वे ज्ञान देने वाले फैक्टर हैं। वे इक्विपमेंट के मतलब में ज्ञानी हैं, इसलिए वे ज्ञान देने वाले फैक्टर हैं। वे परफेक्शन के मतलब में ज्ञानी हैं... एक होने के मतलब में... ध्यान भटकने के मतलब में... मेहनत के मतलब में...

गैर-व्यय... गैर-हलचल... गैर-गड़बड़ी... वे एकता में स्थापित होकर ज्ञान के अर्थ में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान कारक हैं। वे सहायक-वस्तु के अर्थ में प्रबुद्ध हैं... डोमेन के अर्थ में। त्यागने के... छोड़ देने . . अर्थ में... उदात्त के... उभरने के। दूर मुड़ जाने के। [119] . . शांतिपूर्ण के . . के... मुक्ति के... कैंसर के... पार करने के... संकेतहीन के... इच्छाहीन के... शून्य के... एकल कार्य (स्वाद) के... गैर-अति के। कारण के... देखने के... वे प्रभुत्व . . के... के अर्थ में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान कारक हैं। युग्मन के... आउटलेट

24. वे शांति के मतलब के तौर पर ध्यान भटकने से अनजान हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारण हैं। वे समझ के मतलब के तौर पर सोचने से अनजान हैं... शांति और समझ के मतलब के तौर पर एक ही काम (स्वाद) से अनजान हैं... वे मिलने के मतलब के तौर पर ज़्यादा न होने से अनजान हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारण हैं।

25. वे ट्रेनिंग के मतलब के तौर पर काम करने में ज्ञानी हैं, इसलिए वे ज्ञान देने वाले फैक्टर हैं। वे सपोर्टिंग-ऑब्जेक्ट के मतलब के तौर पर डोमेन में ज्ञानी हैं... वे मेहनत की हालत में बेकार की समझ के मतलब के तौर पर ज्ञानी हैं,... वे रोकने की हालत में बेचैन समझ के मतलब के तौर पर ज्ञानी हैं, वे बराबरी से देखे जाने की हालत में ज्ञानी हैं, दोनों तरह से शुद्ध समझ के मतलब के तौर पर, इस तरह वे ज्ञान देने वाले फैक्टर हैं। वे मतलब के तौर पर खासियत पाने में ज्ञानी हैं,... वे मतलब के तौर पर ऊँचे लेवल पर पहुँचने में ज्ञानी हैं,... वे मतलब के तौर पर असलियत पर एक साथ आने में ज्ञानी हैं,... वे मतलब के तौर पर खत्म होने में स्थापित होने में ज्ञानी हैं, इस तरह वे ज्ञान देने वाले फैक्टर हैं।

26. वे विश्वास की क्षमता के मतलब के तौर पर संकल्प में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारक हैं। वे प्रबुद्ध हैं... [और इसी तरह बाकी पाँच क्षमताओं के साथ - Tr. I §26 देखें]।

वे विश्वास शक्ति के अर्थ के रूप में अविश्वास से अडिगता में प्रबुद्ध होते हैं। वे... [और इसी तरह बाकी पाँच शक्तियों के साथ]।

वे माइंडफुलनेस आत्मज्ञान कारक के अर्थ के रूप में स्थापना में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे आत्मज्ञान कारक हैं। वे... [और इसी तरह बाकी सात आत्मज्ञान कारकों के साथ]। [120]

वे सही नज़रिए के मतलब के तौर पर देखने में ज्ञानी हैं, इसलिए वे ज्ञान के फैक्टर हैं। वे... [और इसी तरह बाकी आठ रास्ते के फैक्टर भी]।

वे क्षमताओं के मतलब के तौर पर प्रभुत्व में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारक हैं। वे... (और इसी तरह Tr. I §26 में] वे वास्तविकता के मतलब के तौर पर सुचरीस (वास्तविकता) में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारक हैं।

27. वे चार कामों के मतलब के तौर पर शांति देने में ज्ञान पाते हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारण हैं। वे चार कामों के मतलब के तौर पर एहसास में ज्ञान पाते हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारण हैं। वे समझने के मतलब के तौर पर समझने की क्रिया में ज्ञान पाते हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारण हैं।

28. वे अप्लाइड-थॉट के मतलब के तौर पर डायरेक्टिंग-ऑनटू में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे ज्ञान के फैक्टर हैं। वे... [और इसी तरह Tr. I §28 तक)... वे [एकाग्र] ज्ञान के मतलब के तौर पर यूनिफिकेशन में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे ज्ञान के फैक्टर हैं।

29. वे एक मतलब के तौर पर एडवर्टाइज़िंग में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे एन-लाइटेनमेंट फैक्टर हैं। वे... (और इसी तरह Tf. 1 §29 तक)... वे एक मतलब के तौर पर सिंगलनेस में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे एनलाइटेनमेंट फैक्टर हैं।

वे प्रत्यक्ष-ज्ञान के अर्थ के रूप में ज्ञात में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान कारक हैं। वे... [और इसी प्रकार ट्र. 1 §29 तक)... [121] वे अनिर्मित के अर्थ के रूप में अनिर्मित होने की स्थिति में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान कारक हैं।

30. वे एक मतलब के तौर पर कॉग्निजेंस में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे ज्ञान के फैक्टर हैं। वे... [और इसी तरह Tr. 1 §30 तक]... वे एक मतलब के तौर पर कॉग्निजेंस से बचने में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे ज्ञान के फैक्टर हैं।

31. वे एकता को एक अर्थ के रूप में विज्ञापित करने में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञानोदय के कारक हैं। वे एकता को एक अर्थ के रूप में जानने में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञानोदय के कारक हैं। वे एकता को एक अर्थ के रूप में समझने की क्रिया में प्रबुद्ध हैं,... एकता को एक अर्थ के रूप में देखने में,... एकता में एकता में अर्थ के रूप में एकता में रहने में,... [एकता में अर्थ के रूप में लंगर डालने में,...) एकता में अर्थ के रूप में प्रवेश करने (बाहर निकलने) में,... एकता में अर्थ के रूप में विश्वास रखने में, एक अर्थ के रूप में शांत होने में,... एकता में अर्थ के रूप में मुक्त होने में, यह देखने में कि "यह शांतिपूर्ण है" एकता में एक अर्थ के रूप में,... [122] [और इसी तरह ट्र. I §31 तक)... वे एकता में अर्थ के रूप में पूर्ण प्रकाश में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञानोदय के कारक हैं।

32. वे छोड़ने के अर्थ में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारक हैं। वे समाप्ति के अर्थ में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारक हैं।

वे अर्थ के रूप में व्याख्या करने में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान-कारक हैं। वे... (और इसी प्रकार ट्र. I §32 से लेकर]... [123] वे उद्धार द्वारा एक अर्थ के रूप में शासित व्यवहार में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान-कारक हैं।

33. वे अर्थ रूपी जोश में प्रकाशित होते हैं, इस प्रकार वे ज्ञान हैं

फ़ैक्टर। वे... (और इसी तरह Tr. I §33 में, तक)... वे जांच के अर्थ के रूप में देखने में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे ज्ञान के फ़ैक्टर हैं।

34. वे दुख के अर्थ के रूप में उत्पीड़न में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान कारक हैं। वे दुख के अर्थ के रूप में बनने की स्थिति में, दुख के अर्थ के रूप में जलने (पीड़ा) में, [124] दुख के अर्थ के रूप में परिवर्तन में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान कारक हैं। 10

वे जमा करने में मूल के अर्थ के रूप में प्रबुद्ध होते हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारक हैं। वे स्रोत में मूल के अर्थ के रूप में प्रबुद्ध होते . . . हैं, बंधन में मूल के अर्थ के रूप में,... बाधा में मूल के अर्थ के रूप में, इसलिए वे ज्ञान के कारक हैं।

वे भागने में ज्ञान पाते हैं, जिसका मतलब है खत्म होना, इसलिए वे ज्ञान के कारण हैं। वे अकेलेपन में ज्ञान पाते हैं, जिसका मतलब है खत्म होना,... बिना बने रहने की हालत में ज्ञान पाते हैं, जिसका मतलब है खत्म होना,... मौत न होने में ज्ञान पाते हैं, जिसका मतलब है खत्म होना, इसलिए वे ज्ञान के कारण हैं।

वे रास्ते के मतलब के तौर पर आउटलेट में ज्ञानी हैं, इसलिए वे ज्ञान के फैक्टर हैं। वे रास्ते के मतलब के तौर पर कारण में ज्ञानी हैं,... रास्ते के मतलब के तौर पर देखने में,... रास्ते के मतलब के तौर पर दबदबा में, इसलिए वे ज्ञान के फैक्टर हैं।

35. वे एक मतलब के तौर पर 'सच' (असलियत) में ज्ञान पाते हैं, इसलिए वे ज्ञान के फैक्टर हैं। वे एक मतलब के तौर पर 'नॉट-अदरवाइज़-नेस' में ज्ञान पाते हैं,"... एक मतलब के तौर पर 'नॉट-सेल्फ' में, [और इसी तरह Tr. I §35 तक]... वे एक मतलब के तौर पर 'कन्वर्जेंस' में ज्ञान पाते हैं, इसलिए वे ज्ञान के फैक्टर हैं।

36. वे त्याग में एक अर्थ के रूप में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान के कारक हैं। वे... [और इसी तरह Tr. 1 §36 में सात बाधाओं के बाकी विपरीत के साथ]।

37. वे पहले झान में ज्ञानी होते हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारक हैं। वे... [और इसी तरह बाकी चार झानों के साथ]।

38. वे असीम अंतरिक्ष के आधार में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारक हैं। वे... [और इसी तरह बाकी चार अमूर्त उपलब्धियों के साथ भी)।

39. वे नश्वरता के चिंतन में प्रबुद्ध होते हैं, इस प्रकार वे ज्ञान के कारक हैं, वे... (और इसी तरह बाकी अठारह मुख्य अंतर्दृष्टियों के साथ भी)।

40. वे स्ट्रीम-एंट्री पथ में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे ज्ञान-प्राप्ति कारक हैं। वे एक बार लौटने वाले पथ में, न लौटने वाले पथ में,... अरहंत पथ में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे ज्ञान-प्राप्ति कारक हैं।

41. वे इसके अर्थ के माध्यम से विश्वास क्षमता में प्रबुद्ध होते हैं

संकल्प, इस प्रकार वे ज्ञान के कारक हैं। वे... [और इसी तरह बाकी पाँचों संकायों के साथ)।

वे विश्वास की शक्ति में ज्ञानी होते हैं, जिसका मतलब है विश्वास न होने से अटलता, इसलिए वे ज्ञान देने वाले फैक्टर हैं। वे... [और इसी तरह बाकी पाँच शक्तियों के साथ भी)।

वे माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर में इसके स्थापित करने के मतलब से प्रबुद्ध होते हैं, इसलिए वे एनलाइटनमेंट फैक्टर हैं। वे... [और इसी तरह बाकी सात एनलाइटनमेंट फैक्टर के साथ]।

वे देखने के अर्थ के माध्यम से सही दृष्टि में प्रबुद्ध हैं, इस प्रकार वे ज्ञान कारक हैं। वे... [और इसी तरह बाकी आठ मार्ग कारकों के साथ)। [125]

वे अपने प्रभुत्व के अर्थ के माध्यम से क्षमताओं में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारक हैं। वे... [और इसी तरह Tr. I §41 तक]... वे अपने यथार्थ (वास्तविकता) के अर्थ के माध्यम से वास्तविकताओं में प्रबुद्ध हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारक हैं।

42. वे शांति में प्रबुद्ध हैं, इसके मतलब है कि कोई ध्यान नहीं भटकाता, इसलिए वे ज्ञान के कारक हैं। वे... (और इसी तरह Tr. I §42 तक)... वे कपलिंग में प्रबुद्ध हैं, इसके मतलब है कि कोई ज़्यादा नहीं, इसलिए वे ज्ञान के कारक हैं।

वे संयम के मतलब से गुणों की शुद्धि में प्रबुद्ध होते हैं, इसलिए वे ज्ञान देने वाले फैक्टर हैं। वे... [और इसी तरह Tr. 1 §42 तक)... वे शांत करने वाले मतलब से गैर-उत्पन्न होने के ज्ञान में प्रबुद्ध होते हैं, इसलिए वे ज्ञान देने वाले फैक्टर हैं।

43. इसके मूल के मतलब से वे जोश में प्रबुद्ध होते हैं, इसलिए वे ज्ञान के कारक हैं। इसके अंत के मतलब से वे . . . निब्बान में प्रबुद्ध होते हैं जो अमर में विलीन हो जाता है, इसलिए वे ज्ञान के कारक हैं।

* * *

स्रोत सावत्थी (एस वी 70)

44. "वहाँ पूज्य सारिपुत्त ने भिक्षुओं को इस प्रकार संबोधित किया: 12 'मित्र'। भिक्षुओं ने उत्तर दिया 'मित्र'। पूज्य सारिपुत्त ने यह कहा:

'दोस्तों, ये सात ज्ञान के फैक्टर हैं। कौन से सात? ये हैं माइंडफुलनेस ज्ञान का फैक्टर, इक्वैनिमिटी एन-ज्ञान का फैक्टर। ये सात ज्ञान के फैक्टर हैं।

इन सात ज्ञान के कारकों में से, जिसमें भी मैं सुबह रहना चाहता हूं, उसमें मैं सुबह रहता हूं; जिसमें भी मैं दोपहर में रहना चाहता हूं, उसमें मैं दोपहर में रहता हूं; जिसमें भी मैं शाम को रहना चाहता हूं, उसमें मैं शाम को रहता हूं। [126]

'अगर मुझे लगता है कि माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर है, तो मुझे लगता है कि यह बहुत बड़ा है, और मुझे लगता है कि यह अच्छी तरह से किया गया है; और जब यह बना रहता है तो मुझे पता है कि यह बना रहता है; और अगर यह मुझमें खत्म हो जाता है, तो मुझे पता है कि यह खास कंडीशन के कारण मुझमें खत्म हो जाता है। अगर मुझे लगता है कि विचारों की जांच-पड़ताल एनलाइटनमेंट फैक्टर है... इक्वैनिमिटी एनलाइटनमेंट फैक्टर, तो मुझे लगता है कि यह बहुत बड़ा है, और मुझे लगता है कि यह अच्छी तरह से किया गया है; और जब यह बना रहता है तो मुझे पता है कि यह बना रहता है; और अगर यह मुझमें खत्म हो जाता है, तो मुझे पता है कि यह खास कंडीशन के कारण मुझमें खत्म हो जाता है।

'मान लीजिए किसी राजा या राजा के मंत्री के पास कई रंग के कपड़ों से भरा एक संदूक है, तो वह सुबह जो भी कपड़ा पहनना चाहे, उसे सुबह पहन लेगा; दोपहर में जो भी कपड़ा पहनना चाहे, उसे दोपहर में पहन लेगा; शाम को जो भी कपड़ा पहनना चाहे, उसे शाम को पहन लेगा: इसी तरह, इन सात ज्ञान देने वाली बातों में से, मैं सुबह जिस भी चीज़ में रहना चाहता हूँ, उसी में सुबह रहता हूँ; मैं जानता हूँ . . . कि यह मुझमें कुछ खास शर्तों की वजह से खत्म हो जाता है" (Sv70)।

45. इस तरह ज्ञान का फैक्टर कैसे होता है: 'अगर मुझे लगता है कि माइंडफुलनेस ज्ञान का फैक्टर है'?

जब तक निरोध स्थापित है, तब तक ज्ञान का कारक मौजूद है: 'अगर मुझे ऐसा लगता है कि वहाँ सचेतनता ज्ञान कारक है।' जैसे जब तेल का दीपक जल रहा होता है, तब तक लौ रहती है, तब तक प्रकाश रहता है और जब तक प्रकाश रहता है, तब तक लौ रहती है: उसी तरह, जब तक निरोध स्थापित है, तब तक ज्ञान का कारक मौजूद है: 'अगर मुझे ऐसा लगता है कि वहाँ सचेतनता ज्ञान कारक है'। [127]

46. इस तरह ज्ञान का कारक कैसे है: 'मुझे ऐसा लगता है कि यह माप से परे है'?

गंदगी माप की सीमा से जुड़ी होती है, 14 और इसी तरह सभी जुनून, और वे बनावटें जो नया जीवन पैदा करती हैं; समाप्ति इस मायने में मापहीन है कि यह स्थिर है और इस मायने में कि यह बनी नहीं है। जब तक समाप्ति स्थापित है, तब तक ज्ञान का कारक मौजूद है, इस प्रकार: 'मुझे लगता है कि यह मापहीन है'।

47. इसमें ज्ञान देने वाला फैक्टर कैसे है: 'मुझे लगता है कि यह अच्छी तरह से किया गया है (एक जैसा बनाया गया है)'?

गंदगी एक जैसी नहीं होती, और जुनून भी, और वे बनावटें जो नई ज़िंदगी देती हैं; खत्म होना एक जैसा होने का एक आइडिया है, इस मायने में कि यह शांतिपूर्ण है और इस मायने में कि यह शानदार है। जब तक खत्म होना तय है, तब तक ज्ञान का एक फैक्टर है, इस तरह: 'मुझे लगता है कि यह अच्छी तरह से किया गया है (बिल्कुल एक जैसा लाया गया है)'।

48. ऐसा कैसे है कि 'जब तक यह बना रहता है[13] मैं जानता हूँ कि यह बना रहता है; और

अगर यह मुझमें खत्म हो जाता है, तो मुझे पता है कि यह खास कंडीशन की वजह से मुझमें खत्म हो जाता है?

कितने पहलुओं में माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर बना रहता है? कितने पहलुओं में माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर खत्म हो जाता है?

माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर आठ पहलुओं में बना रहता है; माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर आठ पहलुओं में खत्म हो जाता है।

49. माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर किन आठ पहलुओं में रहता है?

माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर तब बना रहता है जब न उठने पर ध्यान दिया जाता है; माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर तब बना रहता है जब उठने पर ध्यान नहीं दिया जाता... न होने पर ध्यान दिया जाता है... होने वाली घटना पर ध्यान नहीं दिया जाता... बिना निशान के ध्यान दिया जाता है... निशान पर ध्यान नहीं दिया जाता... खत्म होने पर ध्यान दिया जाता है; माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर तब बना रहता है जब बनने पर ध्यान नहीं दिया जाता।

इन आठ पहलुओं में माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर बना रहता है।

50. किन आठ पहलुओं में माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर खत्म हो जाता है?

माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर तब खत्म हो जाता है जब उठने पर ध्यान दिया जाता है। माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर तब खत्म हो जाता है जब न उठने पर ध्यान दिया जाता है... घटना पर ध्यान दिया जाता है... न होने पर ध्यान नहीं दिया जाता... संकेत पर ध्यान दिया जाता है... बिना संकेत पर ध्यान नहीं दिया जाता... संरचनाओं पर ध्यान दिया जाता है। माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर तब खत्म हो जाता है जब समाप्ति पर ध्यान नहीं दिया जाता।

इन आठ पहलुओं में माइंडफुलनेस का ज्ञान फ़ैक्टर खत्म हो जाता है।

[128]

ऐसा ही है कि 'जब तक यह बना रहता है'13 मैं जानता हूँ कि यह बना रहता है; और अगर यह मुझमें से दूर हो जाता है, तो मैं जानता हूँ कि यह खास शर्तों के कारण मुझमें से दूर हो जाता है'।

51–56. . . . विचारों की जांच ज्ञान का कारक...

. . . 57-62. एनर्जी ज्ञान का कारक...

. . . 63-68. खुशी ज्ञान का कारक...

. . . 69-74. शांति ज्ञान कारक...

. . 75-80. कॉन्संट्रेशन एनलाइटनमेंट फैक्टर...

81-86. इस तरह ज्ञान का फैक्टर कैसे होता है: 'अगर मुझे लगता है कि समभाव ज्ञान का फैक्टर है'?

जब तक कि..

. . .

इन आठ पहलुओं में समता ज्ञान का तत्व समाप्त हो जाता है। ऐसा ही है कि 'जब तक यह बना रहता है13 मैं जानता हूँ कि यह बना रहता है;

और अगर यह मुझमें खत्म हो जाता है, तो मैं जानता हूँ कि यह खास कंडीशन की वजह से मुझमें खत्म हो जाता है।

ज्ञानोदय के कारकों पर ग्रंथ।



नोट्स

[1] See Tr. I §31.

[2] 'ज्ञान पाना' का मतलब है बोधिपक्खिया पढ़ना; लेकिन कमेंट्री में बोधिपक्खिया पढ़ा गया है और बताया गया है कि वे 'ज्ञान पाने वाले की भूमिका निभाते हैं' (PSA 429 SC)।

§§3-12 दो सेट के शब्दों की जोड़ी में क्रमपरिवर्तन दिखाते हैं: दस शब्दों का एक सेट, यानी: 1. जड़, 2. कारण, 3. स्थिति, 4. शुद्धिकरण, 5. दोषहीनता, 6. त्याग, 7. मुक्ति, 8. कैंसर रहितता, 9. एकांत, 10. त्याग; और नौ शब्दों का एक सेट, यानी: a. व्यवहार, b. गले लगाना, c. उपकरण, d. पूर्णता, e. पकना, f. भेदभाव, g. भेदभाव तक लाना (= अंतर्दृष्टि), h. भेदभाव में महारत हासिल करना (पथ), i. भेदभाव में महारत हासिल करना (= फल)। क्रमपरिवर्तन का सिस्टम सबसे पहले (§§3-12) है: 1a, b,... i: 23, b,...i:...; 10a, b, i. इसके बाद (§§13-22) है: 1,2,3,4,... 10; a1,2,. 10; b1,2,... 10; 11,2, 10. विभंग में भी इसी प्रकार की विधि अपनाई गई है (सी.जी., Vbh 16). पूरे में वासी भावत्थेन पढ़ें। पापाना

[3] 'लाना' (= पहुँचने का कारण बनना, पापुनाति से) P.T.S. Dict में नहीं है।

* इस सेक्शन के अगले §§ (23-43) में वही स्कीम अपनाई गई है जो Tr. I §§ 23-43 में दी गई है। एक या दो छोटे अलग-अलग मतलब हैं, जिन्हें यहाँ नज़रअंदाज़ कर दिया गया है, और एक या दो अंतर भी हैं, जिन्हें अलग-अलग नोट किया गया है।

[5] P.T.S. टेक्स्ट में 'बिना इच्छा के' क्लॉज़ को हटा दिया गया है।

* 'वे समझने के काम में ज्ञानी होते हैं', वगैरह, यह क्लॉज़ Tr. 1 §27 में नहीं है।

"Tr. I में 'एंकरिंग' क्लॉज़ यहाँ P.T.S. टेक्स्ट से गायब है।

* दो क्लॉज़ 'छोड़ना' और 'खत्म होना' Tr. I §32 में नहीं हैं।

[9] P.T.S. ed. vol. i, p. 18 में pakāsanattho लिखा है, जिसे PsA सपोर्ट करता है (Sce Tr. I §32 और कॉमी।)

10 यहां हर असलियत के लिए सिर्फ़ चार क्लॉज़ हैं, लेकिन Tr. I §34 में पांच हैं।

"'नहीं-अन्यथा-नेस (अनन्नाथा)' Tr. 1 §35 में नहीं है।

12 कमेंट्री में यहाँ कहा गया है, 'बुज़ुर्ग (सारिपुत्त) ने खुद दिए गए सुत्त को विस्तार से बताकर ज्ञान देने वाले फैक्टर्स के काम करने के तरीके को दिखाने की इच्छा से, सुत्त का सोर्स (निदान) 'एक समय' से शुरू किया, और समरी से शुरू किया। क्योंकि यह उन्होंने खुद दिया था, इसलिए "मैंने ऐसा सुना" शब्द नहीं कहे गए। लेकिन "आदरणीय सारिपुत्त" शब्द बोलने वाले को अलग दिखाने के लिए कहे गए हैं, खुद को कोई और मानकर। ऐसा इस्तेमाल दुनिया की किताबों में [डिस्पेंसेशन के बाहर] बहुत होता है' (PsA 430 Se)।

13 पी.टी.एस. के साथ पढ़ें संयुत्त पाठ: तिषशांतं च नाम तिषठति ति पजानामि।

[14] एससीई एम आई 298.

15 Vbh देखें। सम-धम्मो में समा शब्द समम = समान और संमति का एक पन है जिसे शांत किया जाना चाहिए (n. उपसमा शांति और pp. संता शांतिपूर्ण)। इंडेक्स में 'समान' के तहत दूसरे रेफरेंस देखें,

[ग्रंथ XIV.-प्रेमपूर्ण दया]

1. [130] 'भिक्षुओं, जब प्रेममय दया द्वारा इच्छा-मुक्ति को विकसित, विकसित और अधिक महत्व दिया जाता है, वाहन बनाया जाता है, आधार बनाया जाता है, स्थापित, समेकित और ठीक से किया जाता है, तब ग्यारह आशीर्वाद की अपेक्षा की जा सकती है। क्या ग्यारह? एक आदमी आराम से सोता है, आराम से जागता है, और कोई बुरे सपने नहीं देखता है; वह मनुष्यों को प्रिय है, वह गैर-मानव प्राणियों को प्रिय है, देवता उसकी रक्षा करते हैं, आग और जहर उसे नुकसान नहीं पहुंचाते हैं; उसका मन आसानी से एकाग्र हो जाता है, उसके चेहरे पर भाव शांत होता है; वह मोहमुक्त मरता है, और यदि वह परम अवस्था में प्रवेश नहीं करता है तो वह ब्रह्म लोक में पुनर्जन्म लेगा। जब प्रेममय दया द्वारा इच्छा-मुक्ति को विकसित, विकसित और अधिक महत्व दिया जाता है, वाहन बनाया जाता है, आधार बनाया जाता है, स्थापित, समेकित और ठीक से किया जाता है, तब इन ग्यारह आशीर्वाद की अपेक्षा की जा सकती

*

2. अनिर्दिष्ट इरादे के साथ प्रेममय दया से इच्छा की मुक्ति होती है, निर्दिष्ट इरादे के साथ प्रेममय दया से इच्छा की मुक्ति होती है, दिशात्मक इरादे के साथ प्रेममय दया से इच्छा की मुक्ति होती है:

*

3. कितने पहलुओं में बिना किसी इरादे के प्यार से इच्छा पूरी होती है? कितने पहलुओं में बिना किसी इरादे के प्यार से इच्छा पूरी होती है? कितने पहलुओं में बिना किसी इरादे के प्यार से इच्छा पूरी होती है?

बिना किसी इरादे के प्यार से इच्छा पूरी होती है, पाँच पहलुओं में। बिना किसी इरादे के प्यार से इच्छा पूरी होती है, सात पहलुओं में। बिना किसी इरादे के प्यार से इच्छा पूरी होती है, दस पहलुओं में।

4. किन पाँच पहलुओं में बिना किसी इरादे के प्यार से इच्छा की मुक्ति होती है?

सभी प्राणी दुश्मनी, परेशानी और दुख (बुरी भावना) से मुक्त रहें, और वे खुशी से रहें।

सभी सांस लेने वाली चीजें...

जो भी हैं...

सभी लोग... [131]

सभी लोग जो अच्छे स्वभाव वाले हैं, वे दुश्मनी, परेशानी और दुख से मुक्त रहें और खुशी से रहें।

इन पाँच पहलुओं में बिना किसी इरादे के प्यार से इच्छा पूरी होती है।

5. किन सात पहलुओं में खास इरादे के साथ प्यार से इच्छा की मुक्ति होती है?

सभी महिलाएं दुश्मनी, परेशानी और दुख से मुक्त रहें और खुशी से रहें।

सभी मनुष्य।

सभी महानुभावों को...

जो लोग महान नहीं हैं...

सभी देवी-देवता...

सभी मनुष्य...

जो लोग अभाव की स्थिति में हैं, वे दुश्मनी, परेशानी और दुख से मुक्त रहें, और वे खुशी से रहें।

इन सात पहलुओं में खास इरादे के साथ प्यार से इच्छा पूरी होती है।

6. किन दस पहलुओं में प्यार और दिशा के साथ इच्छा की मुक्ति होती है?

(1) पूर्व दिशा में रहने वाले सभी प्राणी शत्रुता, संकट और पीड़ा से मुक्त रहें और वे खुशी से रहें।

(2) पश्चिम दिशा में सभी प्राणी...

(3) समस्त प्राणी उत्तर दिशा में रहें।

(4) दक्षिण दिशा में समस्त प्राणी रहें..

(5) पूर्व दिशा में स्थित समस्त प्राणी ..

(6) पश्चिम दिशा में स्थित समस्त प्राणी...

(7) उत्तर दिशा में स्थित समस्त प्राणी...

(8) दक्षिण दिशा में स्थित समस्त प्राणी...

(9) निचली दिशा में सभी प्राणी...

(10) ऊपरी दिशा में रहने वाले सभी प्राणी शत्रुता, संकट और पीड़ा से मुक्त रहें और वे खुशी से रहें।

(1)-(10) पूर्व दिशा में सभी श्वास लेने वाले प्राणी...

(1)-(10) पूर्व दिशा में रहने वाले सभी लोग...

(1)-(10) पूर्व दिशा में रहने वाले सभी लोग...

(1)-(10) पूर्व दिशा में व्यक्तित्व रखने वाले सभी लोग।

(1)-(10) पूर्व दिशा की सभी महिलाएं...

(1)-(10) पूर्व दिशा में रहने वाले सभी मनुष्य...

(1)-(10) पूर्व दिशा में सभी महानुभाव...

(1)-(10) पूर्व दिशा में जो लोग महानुभाव नहीं हैं...

(1)-(10) पूर्व दिशा में स्थित सभी देवी-देवता...

(1)-(10) पूर्व दिशा में समस्त मनुष्य...

(1)-(10) पूर्व दिशा में अभावग्रस्त सभी राज्यों में... ऊपर की दिशा में दुश्मनी, परेशानी और दुख से मुक्त रहें, और वे खुशी से रहें।

इन दस पहलुओं में प्यार और ध्यान से इच्छा पूरी होती है।

*

7. यह मेत्ता है क्योंकि यह इन आठ पहलुओं में दयालुता (मेत्तयति) से व्यवहार करता है, अर्थात्: सभी प्राणियों के मामले में उनके गैर-उत्पीड़न के लिए उनके उत्पीड़न को अस्वीकार करके, उनकी गैर-चोट के लिए चोट को अस्वीकार करके, उनकी गैर-निराशा के लिए उनकी निराशा को अस्वीकार करके, उनकी गैर-वंचना के लिए उनकी वंचना को अस्वीकार करके, उनके गैर-उत्पीड़न के लिए उनके उत्पीड़न को अस्वीकार करके [इस विचार के साथ] 'सभी प्राणी शत्रुता से मुक्त हों और विरोधी न हों, सुख प्राप्त करें और दर्द न हो, उनके दिल में आनंद हो और उनके दिल में दर्द न हो'। यह इच्छा (सेतो) है क्योंकि यह इच्छा करता है (चेतयति)। [132] यह मुक्ति (विमुक्ति) है क्योंकि यह दुर्भावना द्वारा सभी जुनून से मुक्त (विमुच्चति) हो जाती है। मेत्ता और इच्छा (सेतो) और मुक्ति (विमूर्ति): ये प्रेममय दया द्वारा इच्छा की मुक्ति हैं।

*

8. जब वह विश्वास के साथ इस तरह संकल्प करता है 'सभी प्राणी दुश्मनी से मुक्त, सुरक्षित और आनंदित रहें', तो प्रेम से इच्छा की मुक्ति विश्वास की क्षमता से मजबूत होती है। जब वह इस तरह एनर्जी लगाता है 'सभी प्राणी दुश्मनी से मुक्त, सुरक्षित और आनंदित रहें', तो प्रेम से इच्छा की मुक्ति एनर्जी की क्षमता से मजबूत होती है। जब वह इस तरह माइंडफुलनेस स्थापित करता है 'सभी प्राणी दुश्मनी से मुक्त, सुरक्षित और आनंदित रहें', तो प्रेम से इच्छा की मुक्ति माइंडफुलनेस की क्षमता से मजबूत होती है। जब वह इस तरह कॉन्सेंट्रेट करता है 'सभी प्राणी दुश्मनी से मुक्त, सुरक्षित और आनंदित रहें', तो प्रेम से इच्छा की मुक्ति कॉन्सेंट्रेशन की क्षमता से मजबूत होती है। जब वह समझ के साथ इस तरह समझता है: 'सभी प्राणी दुश्मनी से मुक्त, सुरक्षित और आनंदित रहें', तो प्रेम से इच्छा की मुक्ति समझ से मजबूत होती है।

9. ये पाँच काबिलियत प्यार से इच्छा की मुक्ति का दोहराव (खेती) हैं: प्यार से इच्छा की मुक्ति इन पाँच काबिलियत से दोहराई (खेती) जाती है। ये पाँच काबिलियत प्यार से इच्छा की मुक्ति का विकास हैं: प्यार से इच्छा की मुक्ति इन पाँच काबिलियत से विकसित होती है। ये पाँच काबिलियत प्यार से इच्छा की मुक्ति को बहुत ज़्यादा बढ़ाती हैं: प्यार से इच्छा की मुक्ति इन पाँच काबिलियत से बहुत ज़्यादा बढ़ाई जाती है। ये पाँच काबिलियत प्यार से इच्छा की मुक्ति की शोभा हैं: प्यार से इच्छा की मुक्ति इन पाँच काबिलियत से अच्छी तरह से शोभा देती है। ये पाँच काबिलियत प्यार से इच्छा की मुक्ति की सुरक्षा की ज़रूरत हैं: प्यार से इच्छा की मुक्ति इन पाँच काबिलियत से अच्छी तरह से सुरक्षित है। ये पाँच काबिलियत प्यार से इच्छा की मुक्ति की सुरक्षा की ज़रूरत हैं: प्यार से इच्छा की मुक्ति इन पाँच काबिलियत से अच्छी तरह से सुरक्षित है। ये पाँच

काबिलियत, प्यार से इच्छा को पूरा करने का सामान है: प्यार से इच्छा को पूरा करने के लिए इन पाँच काबिलियत का इस्तेमाल किया जाता है।

10. ये पाँच क्षमताएँ हैं - प्रेममय दया के दोहराव (साधना) द्वारा इच्छा शक्ति का उद्धार, विकास, अलंकरण, सुरक्षा की आवश्यकता, उपकरण, पूर्णता; वे इसके साथ हैं, इसके साथ जुड़े हुए हैं, संयुक्त हैं, और इसके साथ जुड़े हुए हैं; वे इसमें प्रवेश कर रहे हैं (इसमें प्रवेश कर रहे हैं), इसमें विश्वास का अधिग्रहण, इसे स्थिर करना, और इसे वितरित करना; वे इसे देखना हैं कि 'यह शांतिपूर्ण है'; वे इसके वाहन बन गए हैं, इसकी नींव बन गए हैं, स्थापित हैं; [133] इसे मजबूत करते हैं, इसे ठीक से लेते हैं (इसे बिल्कुल समानता में लाते हैं), इसे अच्छी तरह से विकसित करते हैं; इसे अच्छी तरह से स्थिर करते हैं, इसे अच्छी तरह से स्थापित करते हैं, और इसे अच्छी तरह से वितरित करते हैं; वे इसे उत्पन्न करते हैं, इसे प्रकाशित करते हैं, इसे प्रकाशित करते हैं।

*

11. जब [सोचता है] 'सभी जीव दुश्मनी से आज़ाद, सुरक्षित और आनंदित हों' तो वह नास्तिकता से अडिग रहता है, तो दया से इच्छा की मुक्ति विश्वास शक्ति से मज़बूत होती है। जब [सोचता है] 'सभी जीव दुश्मनी से आज़ाद, सुरक्षित और आनंदित हों' तो वह आलस्य से अडिग रहता है, तो दया से इच्छा की मुक्ति ऊर्जा शक्ति से मज़बूत होती है। जब [सोचता है] 'सभी जीव दुश्मनी से आज़ाद, सुरक्षित और आनंदित हों' तो वह लापरवाही से अडिग रहता है, तो दया से इच्छा की मुक्ति माइंडफुलनेस शक्ति से मज़बूत होती है। जब [सोचता है) 'सभी जीव दुश्मनी से आज़ाद, सुरक्षित और आनंदित हों' तो वह बेचैनी से अडिग रहता है, तो दया से इच्छा की मुक्ति कंसंट्रेशन शक्ति से मज़बूत होती है। जब वह 'सभी प्राणी दुश्मनी से मुक्त, सुरक्षित और आनंदित हों' ऐसा सोचता है, तो वह अज्ञानता से अविचलित रहता है, तब दया से इच्छा की मुक्ति समझने की शक्ति से मजबूत होती है।

12. ये पाँच शक्तियाँ प्यार से इच्छा को छुड़ाने का दोहराव (खेती) हैं: प्यार से इच्छा को छुड़ाना इन पाँच शक्तियों के ज़रिए दोहराया (खेती) जाता है। ये पाँच शक्तियाँ... [और इसी तरह §9'up to]... ये पाँच शक्तियाँ प्यार से इच्छा को छुड़ाने का सामान हैं: प्यार से इच्छा को छुड़ाना इन पाँच शक्तियों के ज़रिए अच्छी तरह से तैयार है।

ये पाँच शक्तियाँ हैं प्रेममय दयालुता की पुनरावृत्ति (खेती), विकास द्वारा इच्छाशक्ति का उद्धार, .. [और इसी तरह §10 में]... [134] इसे प्रकाशित करें।

*

14. जब वह इस तरह माइंडफुलनेस बनाता है कि 'सभी जीव दुश्मनी से मुक्त, सुरक्षित और आनंदित रहें', तो प्यार से इच्छा की मुक्ति माइंडफुलनेस ज्ञान के फैक्टर से मज़बूत होती है। जब वह इस तरह समझ के साथ जांच करता है... विचारों की जांच से ज्ञान मिलता है।

फ़ैक्टर। जब वह इस तरह एनर्जी लगाता है... एनर्जी एनलाइटनमेंट फ़ैक्टर से। जब वह इस तरह दुख को शांत करता है... खुशी एनलाइटनमेंट फ़ैक्टर से। जब वह इस तरह बुराई को शांत करता है... शांति एनलाइटनमेंट फ़ैक्टर से। जब वह इस तरह ज्ञान को एकाग्र करता है... ध्यान एनलाइटनमेंट फ़ैक्टर से। जब वह ज्ञान के साथ बुराइयों पर इस तरह सोचता है 'सभी प्राणी दुश्मनी से मुक्त, सुरक्षित और आनंदित रहें', तो प्यार से इच्छा की मुक्ति समता एनलाइटनमेंट फ़ैक्टर से मज़बूत होती है।

15. ये सात ज्ञान देने वाले फैक्टर, प्यार से इच्छा की मुक्ति का दोहराव (खेती) हैं: प्यार से इच्छा की मुक्ति इन सात ज्ञान देने वाले फैक्टर के ज़रिए दोहराई जाती है (खेती की जाती है)। ये सात ज्ञान देने वाले फैक्टर... [और इसी तरह §9 में]... इन सात ज्ञान देने वाले फैक्टर के ज़रिए अच्छी तरह से तैयार किए गए हैं।

16. ये सात ज्ञान के कारक प्रेम-दया की पुनरावृत्ति (खेती), विकास द्वारा इच्छाशक्ति का उद्धार हैं... [और इसी तरह §10 में]... [135] इसे प्रकाशित करें।

*

17. जब वह ठीक से इस तरह देखता है 'सभी जीव दुश्मनी से आज़ाद, सुरक्षित और आनंदित रहें', तो दया से इच्छा की मुक्ति सही नज़र से मज़बूत होती है। जब वह सही तरीके से (सोच) को [उसकी चीज़] पर इस तरह भेजता है... सही सोच से। जब वह सही तरीके से इस तरह अपनाता है... सही बोलकर। जब वह सही तरीके से इस तरह शुरू करता है... सही काम करके। जब वह सही तरीके से इस तरह साफ़ करता है... सही ज़िंदगी से। जब वह सही तरीके से कोशिश करता है... सही कोशिश से। जब वह सही तरीके से इस तरह स्थापित करता है... सही सोच से। जब वह ठीक से इस तरह ध्यान लगाता है 'सभी जीव दुश्मनी से आज़ाद, सुरक्षित और आनंदित रहें', तो दया से इच्छा की मुक्ति सही एकाग्रता से मज़बूत होती है।

18. ये आठ पाथ फैक्टर्स प्यार से इच्छा की मुक्ति का दोहराव (कल्टीवेशन) हैं: प्यार से इच्छा की मुक्ति इन आठ पाथ फैक्टर्स के ज़रिए दोहराई जाती है (कल्टीवेटेड)। ये आठ पाथ फैक्टर्स [और इसी तरह ... §9 में]... इन आठ पाथ फैक्टर्स के ज़रिए अच्छी तरह से तैयार हैं।

19. ये आठ पथ कारक प्रेमपूर्ण दया की पुनरावृत्ति (खेती), विकास द्वारा इच्छाशक्ति का उद्धार हैं... [और इसी तरह §10 में]... [136] इसे प्रकाशित करें।

*

20-32. [यह मेत्ता है क्योंकि यह इन आठ पहलुओं में मेत्तायति से पेश आता है, यानी: सभी सांस लेने वाली चीज़ों को ठुकराकर... [और इसी तरह §§7-19 में, सांस लेने वाली चीज़ों की जगह जीवों को रखकर]...

33-45. उन . . . सभी के मामले में जो...
46-68. सभी . . . व्यक्तियों के मामले में।
59-71. उन . . . सभी के मामले में जिनका व्यक्तित्व है..
72-84....सभी महिलाओं के मामले में..
85-97. ... सभी पुरुषों के मामले में।
98-110. ... सभी महान लोगों के मामले में..
111-123. उन . . . सभी के मामले में जो महान नहीं हैं...
124-136. सभी . . . देवताओं के मामले में..
137-149. . . . सभी मनुष्यों के मामले में...
150-163. . . . अभावग्रस्त राज्यों के मामले में...

*

164-176. (1) पूर्व दिशा के सभी प्राणियों के मामले में...
177-289. (2) . . . पश्चिम दिशा के समस्त प्राणियों के मामले में..... (3) उत्तर दिशा के... (4)-(10) ऊपरी दिशा के... [137]
290-302. ... (1) सभी सांस लेने वाली चीजों के मामले में पूर्व दिशा में... (2)-(10) ऊपरी दिशा में...
303-432. (1) पूर्व दिशा में रहने वाले सभी लोगों के मामले में... (2)-(10) ऊपरी दिशा में रहने वाले...
433-562. . . . (1)-(10) के मामले में पूर्व दिशा में सभी व्यक्ति ... ऊपरी दिशा में ...
563-692. ... (1)-(10) के मामले में सभी का व्यक्तित्व पूर्व दिशा में... ऊपरी दिशा में...
महिलाएं . . . (1)-(10) के मामले में पूर्वी दिशा में सभी
693-822. ... ऊपरी दिशा में...
823-952. ... (1)-(10) के मामले में सभी पुरुष पूर्व दिशा में... ऊपरी दिशा में...
953-1082. . . . (1)-(10) के मामले में सभी महानुभाव पूर्व दिशा में... ऊपरी दिशा में...
1083-1212. . . . (1)-(10) के मामले में सभी महानुभाव पूर्व दिशा में नहीं... ऊपरी दिशा में।
1213-1342. . . . (1)-(10) के मामले में सभी देवता पूर्व दिशा . . . में ऊपरी दिशा में...
1343-1472. . . . (1)-(10) के मामले में सभी मनुष्य पूर्व दिशा में... ऊपरी दिशा में...
1473-1602. . . . (1)-(10) के मामले में सभी अभाव की स्थिति में पूर्व दिशा में... ऊपरी दिशा में... [138-139]।

प्रेमपूर्ण दयालुता पर ग्रंथ का अंत।

*
* *
*

टिप्पणी

[1] P.T.S. टेक्स्ट वॉल्यूम ii, पेज 132, 11. 4 ff. सद्दिन्द्रियपरिभाविता पढ़ें और इसी तरह दूसरी फैकल्टीज़ के मामलों में भी।

[प्रबंध XV. लुप्त होता हुआ]

1. [140] लुप्त हो जाना ही मार्ग है, उद्धार उसका फल है।
2. रास्ता कैसे मिट जाता है?

स्ट्रीम-एंट्री पथ के समय:

सही नज़र, गलत नज़र से दूर हो जाती है, और यह गलतियों और उनके कारण होने वाले जमाव से दूर हो जाती है, और बाहर से यह सभी निशानियों से दूर हो जाती है।

मिट जाना ही उसका आधार है, मिट जाना ही उसका क्षेत्र है, मिट जाने पर ही खड़ा होता है, मिट जाने पर ही खड़ा होता है, मिट जाने पर ही आधारित होता है।

लुप्त होना: लुप्त होने के दो प्रकार हैं: (1) निब्बान के रूप में लुप्त होना; और (2) इस प्रकार लुप्त होना, 'निब्बान को सहायक वस्तु मानकर पैदा हुए सभी विचार लुप्त होने के प्रकार हैं।'

सातों रास्ते एक साथ (सही नज़रिए से) खत्म हो जाते हैं, इसलिए खत्म होना एक रास्ता है। उस रास्ते से बुद्ध और उनके शिष्य उस दिशा में जाते हैं जहाँ वे पहले नहीं गए थे, यानी निर्वाण, इस तरह यह रास्ता आठ गुना है। कई तपस्वियों और ब्राह्मणों की दूसरी मान्यताओं में जितने भी रास्ते हैं, फिर भी महान आठ गुना रास्ता सबसे ऊँचा, सबसे अच्छा, मुख्य, सबसे आगे, सबसे कीमती है, इस तरह यह आठ गुना रास्ता सबसे अच्छा है।

सही सोच का मतलब है कि गलत सोच से दूर हो जाना... [ऊपर बताए गए तरीके से सही बदलाव करके पूरा करें]...

सही कह रहे हैं...

सही अभिनय।

सही जीवन...

सही प्रयास...

सही ध्यान।

गैर-विचलित होने के अर्थ में सही एकाग्रता... [141]... इस प्रकार अष्टांग मार्ग सर्वश्रेष्ठ है।

3. एक बार वापसी के रास्ते के समय:

देखने के अर्थ में सही दृष्टि।

ध्यान भटकने से बचने के मतलब में सही एकाग्रता, कामुकता की इच्छाओं के लालच और विरोध की बड़ी बेड़ियों से, कामुकता की इच्छाओं के लालच और विरोध की बड़ी अंदरूनी प्रवृत्तियों से दूर ले जाती है, और यह उन बुराइयों और उनके कारण होने वाले जमाव से दूर ले जाती है, और बाहर से यह सभी निशानियों से दूर ले जाती है।

लुप्त होना ही इसका सहारा है,...

लुप्त होना: लुप्त होने के दो प्रकार हैं:

सात रास्ते हैं... इस तरह आठ रास्ते सबसे अच्छे हैं।

4. नॉन-रिटर्न पथ के क्षण में:

सही नज़रिया का मतलब है देखना...

. . .

ध्यान भटकने से बचने के मतलब में सही एकाग्रता, कामुकता की इच्छाओं के लालच और विरोध की दूसरी बेड़ियों से, कामुकता की इच्छाओं के लालच और विरोध की दूसरी अंदरूनी प्रवृत्तियों से दूर हो जाती है, और यह बुराइयों और उनके कारण होने वाले जमाव से दूर हो जाती है, और बाहर से यह सभी निशानियों से दूर हो जाती है।

लुप्त हो जाना ही इसकी सहायक वस्तु थी... [142]

लुप्त होना: लुप्त होने के दो प्रकार हैं: . . .

सात रास्ते हैं... इस तरह आठ रास्ते सबसे अच्छे हैं।

5. अरहंत पथ के क्षण में:

सही नज़रिया का मतलब है देखना...

. . .

ध्यान भटकने से बचने के लिए सही एकाग्रता, चीज़ों के लालच से, चीज़ों के लालच से, घमंड से, बेचैनी से, अज्ञानता से, घमंड की अंदरूनी प्रवृत्ति से, होने के लालच से और अज्ञानता से दूर करती है, और यह बुराइयों और उनके कारण होने वाले जमाव से दूर करती है, और बाहर से सभी निशानियों से दूर करती है।

लुप्त होना ही इसका सहारा देने वाली चीज़ है...

लुप्त होना: लुप्त होने के दो प्रकार हैं: . . .

सात रास्ते हैं... इस तरह आठ रास्ते सबसे अच्छे हैं।

6. देखते हुए गायब होना सही नज़रिया है। आगे बढ़ते हुए गायब होना सही सोच है। गले लगाते हुए गायब होना सही बोलना है। शुरू करते हुए गायब होना सही काम करना है। साफ़ करते हुए गायब होना सही जीना है। कोशिश करते हुए गायब होना सही कोशिश है। स्थापित करते हुए गायब होना सही माइंड-फुलनेस है। ध्यान भटकाए बिना गायब होना सही कंसंट्रेशन है।

स्थापित होते हुए लुप्त होना माइंडफुलनेस आत्मज्ञान कारक है। जांच-पड़ताल करते हुए लुप्त होना विचारों की जांच-पड़ताल आत्मज्ञान कारक है। प्रयास करते हुए लुप्त होना ऊर्जा आत्मज्ञान कारक है। एकाग्रता के रूप में लुप्त होना खुशी आत्मज्ञान कारक है। शांति के रूप में लुप्त होना प्रशांति आत्मज्ञान कारक है। गैर-विचलित होने के रूप में लुप्त होना एकाग्रता आत्मज्ञान कारक है। प्रतिबिंब के रूप में लुप्त होना समता आत्मज्ञान कारक है। [143]

विश्वास न होने से जो स्थिरता के रूप में खत्म हो जाती है, वह विश्वास की शक्ति है। आलस्य से जो स्थिरता के रूप में खत्म हो जाती है, वह ऊर्जा की शक्ति है। लापरवाही से जो स्थिरता के रूप में खत्म हो जाती है, वह ध्यान की शक्ति है। बेचैनी से जो स्थिरता के रूप में खत्म हो जाती है, वह एकाग्रता की शक्ति है। अज्ञानता से जो स्थिरता के रूप में खत्म हो जाती है, वह समझने की शक्ति है।

संकल्प के रूप में गायब होना विश्वास की क्षमता है। प्रयास के रूप में गायब होना ऊर्जा की क्षमता है। स्थापना के रूप में गायब होना माइंडफुलनेस की क्षमता है। ध्यान भटकने से दूर होना एकाग्रता की क्षमता है। देखने के रूप में गायब होना समझने की क्षमता है।

दबदबे के मतलब में काबिलियत खत्म हो रही है। मज़बूती मज़बूती के मतलब में खत्म हो रही है। ज्ञान देने वाले फैक्टर आउटलेट के मतलब में खत्म हो रहे हैं। वजह के मतलब में रास्ता खत्म हो रहा है। ध्यान की बुनियाद एस्टैब्लिशमेंट के मतलब में खत्म हो रही है। सही कोशिशें कोशिश करने के मतलब में खत्म हो रही हैं। कामयाबी के बेस (पावर के रास्ते) कामयाब होने के मतलब में खत्म हो रहे हैं। असलियतें सच होने (असलियत) के मतलब में खत्म हो रही हैं।

शांति, ध्यान भटकने के मतलब में खत्म हो रही है। समझ, सोचने के मतलब में खत्म हो रही है। शांति और समझ, एक ही काम (स्वाद) के मतलब में खत्म हो रही हैं। साथ रहना, ज़्यादा न होने के मतलब में खत्म हो रहा है।

सद्गुणों की शुद्धि, संयम के अर्थ में फीकी पड़ रही है। ज्ञान की शुद्धि, ध्यान भटकने के अर्थ में फीकी पड़ रही है। नज़र की शुद्धि, देखने के अर्थ में फीकी पड़ रही है। मुक्ति, आज़ाद होने के अर्थ में फीकी पड़ रही है। साफ़ नज़र, अंदर तक जाने के अर्थ में फीकी पड़ रही है। मुक्ति, हार मानने के अर्थ में फीकी पड़ रही है। थकावट का ज्ञान, काट देने के अर्थ में फीकी पड़ रहा है।

जड़ के अर्थ में, जोश खत्म हो रहा है। शुरुआत के अर्थ में, ध्यान खत्म हो रहा है। मौजूदगी के अर्थ में, संपर्क खत्म हो रहा है। मिलने की जगह के अर्थ में, एहसास खत्म हो रहा है। सबसे आगे होने के अर्थ में, ध्यान खत्म हो रहा है। दबदबे के अर्थ में, ध्यान खत्म हो रहा है। सबसे ऊपर होने के अर्थ में, समझ खत्म हो रही है। मूल (स्वाद) होने के अर्थ में, मुक्ति खत्म हो रही है। अंत के अर्थ में, निब्बाण जो अमर में मिल जाता है, खत्म हो रहा है।

इस तरह रास्ता धुंधला हो जाता है।

*

7. छुटकारा इसका फल कैसे है?

स्ट्रीम-एंट्री के समय:

सही नज़र, यानी देखने का मतलब है गलत नज़र से मुक्ति, और यह गलतियों और उनके कारण होने वाले जमाव से मुक्ति, और बाहर से यह सभी निशानियों से मुक्ति है।

उद्धार का आधार उद्धार है, उसका क्षेत्र उद्धार है, वह उद्धार पर खड़ा है, उद्धार पर खड़ा है, उद्धार पर आधारित है।

मुक्ति: मुक्ति दो प्रकार की होती है: (1) निबाण के रूप में मुक्ति और (2) फल के रूप में मुक्ति, जिसका वर्णन इस प्रकार किया गया है 'निबाण को सहायक वस्तु के रूप में लेकर पैदा हुए सभी विचार मुक्त हो जाते हैं।'

निर्देशित करने के अर्थ में सही विचार... [उपयुक्त प्रतिस्थापन के साथ ऊपर के अनुसार पूरा करें]... [144]

सही बोलना . .

सही अभिनय। . .

सही जीवन...

सही प्रयास...

सही सचेतनता . . .

ध्यान भटकने से बचने के लिए सही एकाग्रता। निब्बान को . . पैदा होते हैं सपोर्टिंग-ऑब्जेक्ट बनाकर दिया जाता है।' 'सभी विचार

8. एक बार फिर फल मिलने के समय:

सही नज़रिया का मतलब है देखना... . .

. . .

ध्यान भटकने से बचने के मतलब में सही एकाग्रता, कामुकता की इच्छाओं के लालच और विरोध की बड़ी बेड़ियों से, कामुकता की इच्छाओं के लालच और विरोध की बड़ी अंदरूनी प्रवृत्तियों से, और उन बुराइयों और उनके कारण होने वाले जमाव से मुक्ति दिलाती है, और बाहर से सभी निशानियों से मुक्ति दिलाती है।

मुक्ति का सहारा मुक्ति ही है, . . .

मुक्ति: मुक्ति दो तरह की होती है;... 'निब्बाण को सपोर्टिंग-ऑब्जेक्ट मानकर पैदा हुए सभी आइडियाज़ को मुक्ति मिल जाती है।'

9. वापस न आने वाले फल के समय:

सही नज़रिया का मतलब है देखना...

. . .

गैर-विचलित होने के अर्थ में सही एकाग्रता, कामुक-इच्छाओं के लिए लालच और प्रतिरोध की माध्यमिक बेड़ियों से मुक्त होती है, कामुक-इच्छाओं के लिए लालच और प्रतिरोध की माध्यमिक अंतर्निहित प्रवृत्तियों से मुक्त होती है, और यह विकारों और उनके परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले स्कंधों से मुक्त होती है, और बाह्य रूप से यह सभी संकेतों से मुक्त होती है। [145]

मुक्ति का सहारा मुक्ति ही है...

मुक्ति: मुक्ति दो तरह की होती है: 'निब्बाण को सपोर्टिंग-ऑब्जेक्ट मानकर पैदा हुए सभी विचार मुक्त हो जाते हैं।'

10. अरहंत फल प्राप्ति के क्षण में:

देखने के अर्थ में सही दृष्टि। . .

. . .

ध्यान भटकने से बचने के अर्थ में सही एकाग्रता, भौतिक चीज़ों के लालच से, अभौतिक चीज़ों के लालच से, घमंड से, बेचैनी से, अज्ञानता से, अंदरूनी प्रवृत्ति से मुक्ति दिलाती है।

यह घमंड, लालच और अज्ञानता से छुटकारा दिलाता है, और
यह उन बुराइयों और उनके कारण होने वाले जमाव से बचा रहता है, और
बाहरी तौर पर यह सभी निशानियों से बचा रहता है।

मुक्ति का सहारा मुक्ति ही है, . . .

मुक्तिः मुक्ति दो तरह की होती है: निब्बान को सहारा . . . जन्म लेते हैं
देने वाली चीज़ मानकर मुक्ति मिलती है।' 'सभी विचार

11. मुक्ति का मतलब है अलग होना, सही नज़रिया। मुक्ति का मतलब है सही सोच की ओर इशारा करना... मुक्ति का मतलब है ध्यान भटकना नहीं, सही एकाग्रता।

स्थापित करने के तौर पर मुक्ति, माइंडफुलनेस एनलाइटनमेंट फैक्टर है। जांच करने के तौर पर मुक्ति, विचारों की जांच एनलाइटनमेंट फैक्टर है। रिफ्लेक्शन के तौर पर मुक्ति, इक्विनिमिटी एनलाइटनमेंट फैक्टर है।

अविश्वास द्वारा अडिगता के रूप में मुक्ति विश्वास शक्ति है... अज्ञान द्वारा अडिगता के रूप में मुक्ति अंतर्निहित शक्ति है।

संकल्प के रूप में मुक्ति विश्वास क्षमता है... दृष्टि के रूप में मुक्ति समझने की क्षमता है।

काबिलियत, दबदबे के मतलब में मुक्ति है। ताकतें, अटलता के मतलब में मुक्ति है... असलियतें, असलियत के मतलब में मुक्ति हैं।

शांति गैर-विचलित होने के अर्थ में मुक्ति है... [146] युग्मन गैर-अतिरिक्त होने के अर्थ में मुक्ति है।

सद्गुणों की शुद्धि, संयम के अर्थ में मुक्ति है... मुक्ति, मुक्त होने के अर्थ में मुक्ति है। पहचान, प्रवेश के अर्थ में मुक्ति है। मुक्ति, त्याग के अर्थ में मुक्ति है। न होने का ज्ञान, शांति के अर्थ में मुक्ति है।[1]

जड़ के अर्थ में, जोश मुक्ति है। उत्पत्ति के अर्थ में, ध्यान मुक्ति है... अंत के अर्थ में, निब्बान जो अमर में विलीन हो जाता है, मुक्ति है।

इस तरह मुक्ति इसका फल है।

इस प्रकार मार्ग लुप्त हो जाता है, और मुक्ति उसका फल है।

लुप्त होने पर ग्रंथ



टिप्पणी

[1] Read on P.T.S. text p. 146, l. 7 *paṭipassaddhiṭṭhena anuppāde ñāṇaṁ vimutti* instead of *samucchedaṭṭhena khaye ñāṇaṁ vimutti*.

[प्रबंध XVI. -- भेदभाव पर]

1. (147) 'ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान बनारस में इसिपताना के हिरण उद्यान में रह रहे थे। वहाँ उन्होंने पाँच भिक्षुओं के समूह को इस प्रकार संबोधित किया:

"भिक्षुओं, ये दो ऐसी अतियाँ हैं जिन्हें चौथे धर्म में जाने वाले को नहीं अपनाना चाहिए। कौन सी दो? एक है कामुक इच्छाओं के पीछे भागना, जो नीच, भद्दा, घटिया, नीच और नुकसानदायक है; और दूसरी है खुद को दुख पहुँचाना, जो दर्दनाक, नीच और नुकसानदायक है। पूर्ण पुरुष द्वारा खोजा गया बीच का रास्ता इन दोनों अतियों से बचता है; यह आँख बनाता है, ज्ञान बनाता है, और शांति, सीधे ज्ञान, पूर्ण ज्ञान, निब्बान की ओर ले जाता है। और वह बीच का रास्ता क्या है? यह महान आठ गुना रास्ता है, यानी: सही नज़र, सही सोच, सही बोलना, सही काम करना, सही जीना, सही कोशिश, सही ध्यान, सही एकाग्रता। यह पूर्ण पुरुष द्वारा खोजा गया बीच का रास्ता है, जो आँख बनाता है, ज्ञान बनाता है, और शांति, सीधे ज्ञान, पूर्ण ज्ञान, निब्बान की ओर ले जाता है।

"दुख की यह महान सच्चाई है: जन्म दुख है, बुढ़ापा दुख है, बीमारी दुख है, मौत दुख है, जो नापसंद है उसके साथ जुड़ना दुख है, जो पसंद है उससे अलग होना दुख है, जो चाहिए वो न मिलना दुख है - संक्षेप में, चिपके रहने के पाँच समूह (वस्तुएँ) दुख हैं।

"दुख के मूल की यह महान वास्तविकता है: यह लालसा है, जो नए सिरे से अस्तित्व को उत्पन्न करती है, प्रसन्नता और लालच के साथ होती है, इसमें और उसमें आनंद होता है; दूसरे शब्दों में, कामुक-इच्छाओं के लिए लालसा, होने की लालसा, न होने की लालसा। [148]

"दुख के खत्म होने की यह अच्छी सच्चाई है: यह उसी चाहत का बिना रुके खत्म होना और खत्म होना है, उसे नकारना, छोड़ देना, छोड़ देना, मना कर देना है।

"दुख खत्म करने के रास्ते की यह महान सच्चाई है: यह महान आठ गुना रास्ता है, यानी: सही नज़रिया, सही सोच, सही बोलना, सही काम करना, सही जीना, सही कोशिश, सही ध्यान, सही ध्यान।

"दुख की यह महान सच्चाई है: ऐसी ही एक आँख उठी, ऐसा ज्ञान उठा, ऐसी समझ उठी, ऐसी पहचान उठी, ऐसी रोशनी उठी, मेरे अंदर उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे। दुख की इस महान सच्चाई को पूरी तरह समझना होगा: ऐसी ही एक आँख उठी, ऐसा ज्ञान उठा, ऐसी समझ उठी, ऐसी पहचान उठी, ऐसी रोशनी उठी, मेरे अंदर उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।

दुख की इस महान सच्चाई को पूरी तरह से समझा जा चुका है: ऐसी वह आंख थी जो उठी, वह ज्ञान जो उठा, वह समझ जो उठी, वह पहचान जो उठी, वह रोशनी जो उठी, मुझमें उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।

"दुख की शुरुआत की यह अच्छी सच्चाई है: ऐसी ही एक आँख उठी,... मुझमें पहले न सुने गए विचारों के बारे में जो रोशनी उठी। दुख की शुरुआत की इस अच्छी सच्चाई को छोड़ देना चाहिए: ऐसी ही एक आँख उठी, मुझमें . . . पहले न सुने गए विचारों के बारे में जो रोशनी उठी। दुख की शुरुआत की इस अच्छी सच्चाई को छोड़ दिया गया है: ऐसी ही एक आँख उठी, मुझमें पहले न सुने गए विचारों के बारे में जो रोशनी उठी।

"दुख के खत्म होने की यह अच्छी बात है: ऐसी ही एक आँख उठी, ऐसी ही एक रोशनी मुझमें उन विचारों के बारे में उठी जो पहले कभी नहीं सुने गए थे। दुख के खत्म होने की यह अच्छी बात सच होनी चाहिए: ऐसी ही एक आँख उठी, ऐसी ही एक रोशनी मुझमें उन विचारों के बारे में उठी जो पहले कभी नहीं सुने गए थे। दुख के खत्म होने की यह अच्छी बात सच हो गई है: ऐसी ही एक आँख उठी, ऐसी ही एक रोशनी मुझमें उन . . . विचारों के बारे में उठी जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।

"दुख खत्म करने के रास्ते की यह अच्छी सच्चाई है: ऐसी ही एक आँख उठी, ऐसी ही एक रोशनी मुझमें उन विचारों के बारे में उठी जो पहले कभी नहीं सुने गए थे। दुख खत्म करने के रास्ते की यह अच्छी सच्चाई विकसित होनी चाहिए: ऐसी ही एक आँख उठी, ऐसी ही एक रोशनी मुझमें उन विचारों के बारे में उठी जो पहले कभी नहीं सुने गए थे। दुख खत्म करने के रास्ते की यह अच्छी सच्चाई विकसित हो गई है: ऐसी ही एक आँख उठी, ऐसा ज्ञान उठा, ऐसी समझ उठी, ऐसी पहचान उठी, ऐसी रोशनी उठी जो मुझमें उन विचारों के बारे में उठी जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।

"जब तक इन बारह पहलुओं में - इन चार महान वास्तविकताओं के संबंध में इन तीन चरणों में मेरा सही ज्ञान और दृष्टि - पूरी तरह से शुद्ध नहीं हुई थी, [149] तब तक मैंने यह दावा नहीं किया कि मैंने पूर्ण ज्ञान को खोज लिया है जो दुनिया में इसके देवताओं, इसके मारों और इसके ब्रह्मा देवताओं के साथ, इस पीढ़ी में इसके तपस्वियों और ब्राह्मणों, इसके राजकुमारों और पुरुषों के साथ सर्वोच्च है। लेकिन जैसे ही इन चार महान वास्तविकताओं में से प्रत्येक के संबंध में इन तीन चरणों में इन बारह पहलुओं में मेरा सही ज्ञान और दृष्टि - पूरी तरह से शुद्ध हो गई, तब मैंने दावा किया कि मैंने पूर्ण ज्ञान को खोज लिया है जो दुनिया में इसके देवताओं, इसके मारों और इसके ब्रह्मा देवताओं के साथ, इस पीढ़ी में इसके तपस्वियों और ब्राह्मणों, इसके राजकुमारों और पुरुषों के साथ सर्वोच्च है।

"मेरे अंदर ज्ञान और दृष्टि पैदा हुई: मेरी इच्छा की मुक्ति अजेय है; यह आखिरी जन्म है; अब अस्तित्व का कोई नवीनीकरण नहीं है।"

'तो भगवान ने कहा। ग्रुप ऑफ़ फाइव के भिक्षु खुश हुए, और उन्होंने भगवान की बातों पर खुशी मनाई।

'अब जब यह प्रवचन दिया जा रहा था, तो सच्चे विचार की बेदाग, बेदाग आंख आदरणीय कोंडन्ना के मन में इस तरह उठी: 'जो कुछ भी होने वाला है, वह खत्म होने वाला है।'

'और जब भगवान ने सच्चे विचार का चक्र घुमाया, तो धरती के देवता चिल्ला उठे: 'बनारस में, इसिपताना के हिरण पार्क में, एक सिद्ध पुरुष, सिद्ध और पूरी तरह से ज्ञानी, ने सच्चे विचार का बेजोड़ चक्र घुमाया है, जिसे कोई तपस्वी या ब्राह्मण या देवता या मार या ब्रह्मा भगवान या दुनिया में कोई भी रोक नहीं सकता।' और धरती के देवताओं की पुकार सुनकर, चतुमहाराजिक स्वर्ग के देवताओं ने पुकारा: 'बनारस में,...' और चतुमहाराजिक देवताओं की पुकार सुनकर, तवतिंसा के देवता... तुसिता के देवता... यम के देवता... निम्ननारति के देवता... परनिमितवास-वट्टी के देवता... ब्रह्मा के दल के देवता पुकारे: 'बनारस में,...' तो यह खबर उसी पल, उसी मिनट, उसी पल ब्रह्मा जगत तक पहुँच गई। और यह दस हज़ार गुना बड़ा जगत हिल गया, काँप उठा और काँप उठा, जबकि देवताओं की शान से भी ज़्यादा एक बहुत बड़ी रोशनी दुनिया में दिखाई दी। तब भगवान ने कहा: 'कोंडान्या जानता है, कोंडान्या जानता है!', और इसलिए उस आदरणीय व्यक्ति का नाम अनातार कोंडान्या-कोंडान्या पड़ा जो जानता है'। (विन 1 9; Sv 420) 2. 'दुख की यह महान सच्चाई है: ऐसी थी वह आँख जो उठी, वह ज्ञान जो उठा, वह समझ जो उठी, वह पहचान जो उठी, वह रोशनी जो उठी, मुझमें उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे'।
[150]

3. आँख जो पैदा हुई: किस अर्थ में? ज्ञान जो पैदा हुआ: किस अर्थ में? समझ जो पैदा हुई: किस अर्थ में? पहचान जो पैदा हुई: किस अर्थ में? रोशनी जो पैदा हुई: किस अर्थ में?

वह आँख जो देखने के मतलब में पैदा हुई। वह ज्ञान जो जाने-पहचाने के मतलब में पैदा हुआ। वह समझ जो समझने के काम के मतलब में पैदा हुई। वह पहचान जो अंदर तक जाने के मतलब में पैदा हुई। वह रोशनी जो रोशनी के मतलब में पैदा हुई।

4. आँख एक विचार है, ज्ञान एक विचार है, समझ एक विचार है, पहचान एक विचार है, रोशनी एक विचार है। ये पाँच विचार विचारों की पहचान का आधार और डोमेन हैं। जो इसके सहायक-ऑब्जेक्ट हैं, वे इसके डोमेन हैं; जो इसके डोमेन हैं, वे इसके सहायक-ऑब्जेक्ट हैं। इसलिए कहा जाता है: विचारों का ज्ञान ही विचारों की पहचान है।[1]

देखने के रूप में अर्थ एक अर्थ है, जो-जाना-है वह अर्थ है, समझने की क्रिया के रूप में अर्थ एक अर्थ है, प्रवेश के रूप में अर्थ एक अर्थ है, प्रकाश के रूप में अर्थ एक अर्थ है। ये पाँच अर्थ सहायक-वस्तु और अर्थ-विवेचन के क्षेत्र हैं। जो इसके सहायक-वस्तु हैं वे इसके क्षेत्र हैं; जो इसके हैं

डोमेन इसका सपोर्टिंग-ऑब्जेक्ट है। इसलिए कहा जाता है: मतलब का ज्ञान ही मतलब का पता लगाना है।

पाँच तरह के विचारों को बताने के लिए शब्द-भाषा का उच्चारण होता है और पाँच तरह के मतलब बताने के लिए शब्द-भाषा का उच्चारण होता है। भाषा के ये दस प्रकार भाषा के भेदभाव का सपोर्टिंग-ऑब्जेक्ट और डोमेन हैं। जो इसके सपोर्टिंग-ऑब्जेक्ट हैं, वे इसके डोमेन हैं; जो इसके डोमेन हैं, वे इसके सपोर्टिंग-ऑब्जेक्ट हैं। इसलिए कहा गया है: भाषा के प्रकारों का ज्ञान भाषा का भेदभाव है।

पाँच तरह के विचारों के ज्ञान के उदाहरण हैं, पाँच तरह के अर्थ के ज्ञान के उदाहरण हैं और दस तरह की भाषा के ज्ञान के उदाहरण हैं। ये बीस ज्ञान स्पष्टता के विवेक का आधार और डोमेन हैं। जो इसके सहायक ऑब्जेक्ट हैं, वे इसके डोमेन हैं; जो इसके डोमेन हैं, वे इसके सहायक ऑब्जेक्ट हैं। इसलिए कहा गया है: स्पष्टता के प्रकारों का ज्ञान स्पष्टता का विवेक है।

5. 'दुख की इस महान सच्चाई को पूरी तरह समझना होगा: ऐसी ही एक नज़र उठी, उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।'

6-7. आँख जो उठी: किस अर्थ में?... [§3 दोहराएं]

8. 'दुख की इस महान सच्चाई को पूरी तरह से समझा गया है: ऐसी ही एक नज़र उठी, उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।'

9-10. उठी हुई आँख: किस अर्थ में?... (दोहराएँ §3]। [151]

... इसलिए कहा गया है: स्पष्टता के प्रकारों का ज्ञान ही स्पष्टता का विवेक है।

11. दुख की महान वास्तविकता के मामले में 15 विचार, 15 अर्थ, भाषा के 30 उदाहरण और ज्ञान के 60 उदाहरण हैं।

*

12. 'दुख की शुरुआत की यह बड़ी सच्चाई है: ऐसी नज़र उठी, जो पहले कभी न सुने गए विचारों के बारे में थी।'

13. जो आँख उठी: किस अर्थ में? . . .

14. आँख एक विचार है,..

15. 'दुख की शुरुआत की इस अच्छी सच्चाई को छोड़ देना चाहिए: ऐसी ही एक नज़र उठी, उन विचारों के बारे में . . . जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।'

16-17. जो आँख उठी: किस अर्थ में? . . .

18. 'दुख की शुरुआत की इस महान सच्चाई को छोड़ दिया गया है: ऐसी नज़र उठी, जो पहले कभी न सुने गए . . . विचारों के बारे में थी।'

19-20. जो आँख उठी: किस अर्थ में? . . . [152]

21. दुख की उत्पत्ति की महान वास्तविकता के मामले में 15 विचार, 15 अर्थ, भाषा के 30 उदाहरण और ज्ञान के 60 उदाहरण हैं।

*

22. "दुख के खत्म होने की यह महान सच्चाई है: ऐसी नज़र उठी, उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।"

23-24. आँख जो उठी: किस अर्थ में? . . .

25. दुख के खत्म होने की इस महान सच्चाई को महसूस किया जाना है: ऐसी ही एक नज़र उठी, उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।

26-27. आँख जो उठी: किस अर्थ में? . . .

28. 'दुख के खत्म होने की यह महान सच्चाई सच हो गई है: ऐसी नज़र आई,... पहले न सुने गए विचारों के बारे में'।

29-30. आँख जो उठी: किस अर्थ में? . . .

31. दुख की समाप्ति की महान वास्तविकता के मामले में 15 विचार, 15 अर्थ, भाषा के 30 उदाहरण और ज्ञान के 60 उदाहरण हैं।

*

32. 'दुख के अंत की ओर ले जाने वाले मार्ग की यह महान वास्तविकता है: ऐसी दृष्टि उठी, जो पहले कभी नहीं सुनी गई विचारों के बारे में थी।'

33-34. आँख जो उठी: किस अर्थ में? . . .

35. 'दुख के अंत की ओर ले जाने वाले इस महान सत्य को विकसित किया जाना चाहिए: ऐसी ही एक दृष्टि उठी, उन विचारों के बारे . . . में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।'

36-37. आँख जो उठी: किस अर्थ में? . .

38. 'दुख के अंत की ओर ले जाने वाले रास्ते की यह महान सच्चाई विकसित की गई है: ऐसी ही वह आँख थी जो पहले उठी थी'। उन विचारों . . . में जो सुने नहीं गए के बारे

39-40. जो आँख उठी: किस अर्थ में? . . .

41. दुख के निवारण के मार्ग की महान वास्तविकता के मामले में 15 विचार, 15 अर्थ, भाषा के 30 उदाहरण और ज्ञान के 60 उदाहरण हैं।

चारों वास्तविकताओं को मिलाकर 60 विचार, 60 अर्थ, 120 भाषा के उदाहरण और 240 ज्ञान के उदाहरण होते हैं।

43. "शरीर का यह चिंतन है: भिक्षुओं, ऐसी आँख उठी, ऐसा ज्ञान उठा, ऐसी समझ उठी, ऐसी पहचान उठी, ऐसी रोशनी उठी, मुझमें उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे। शरीर के रूप में शरीर का यह चिंतन विकसित किया जाना है: भिक्षुओं, ऐसी आँख उठी, ऐसा प्रकाश उठा, मुझमें उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे। शरीर के रूप में शरीर का यह चिंतन विकसित किया गया है: ऐसी आँख उठी,... ऐसी रोशनी उठी, मुझमें उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।

"भावनाओं का भावनाओं के रूप में चिंतन . . . है: ऐसा, "ज्ञान का ज्ञान के रूप में चिंतन है: ऐसा,
. . .

"विचारों का विचार के रूप में चिंतन है: ऐसा, जो पहले कभी नहीं सुना गया" (Sv 178)।

*

'शरीर के रूप में शरीर का यह चिंतन है: ऐसी वह आंख थी जो पहले न सुने गए . . . विचारों के बारे में उठी।' [153]

45. [1] आँख उठी: किस अर्थ में? [जैसा कि धारा 3 में है]

आँख जो देखने के अर्थ में उत्पन्न . . प्रकाश जो उत्पन्न हुआ हुई। रोशनी का अर्थ।

46. आँख एक विचार है, [और इसी तरह §41 में... इसलिए यह कहा गया है: स्पष्टता के प्रकारों का ज्ञान स्पष्टता का विवेक है।

47. 'शरीर को शरीर के रूप में देखने का यह विचार विकसित करना है: ऐसी ही एक नज़र उठी, जो पहले कभी न . . . सुने गए विचारों के बारे में थी।'

48-49. जो आँख उठी: किस अर्थ में? . . .

50. 'शरीर को शरीर के रूप में देखने का यह विचार विकसित हुआ है: ऐसी ही एक नज़र उठी, उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।'

51-52. आँख जो उठी: किस अर्थ में? . . .

53. शरीर के रूप में चिंतन के मामले में 15 विचार, 15 अर्थ, भाषा के 30 उदाहरण और ज्ञान के 60 उदाहरण हैं।

*

54. 'भावनाओं का भावनाओं के रूप में चिंतन होता है: ऐसी ही एक नज़र उठी, उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।'

55-56. जो आँख उठी: किस अर्थ में?

57. 'भावनाओं को भावनाओं के रूप में देखना है: ऐसी नज़र उठी, उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे'।

58-59. जो आँख उठी: किस अर्थ में?...

60. 'भावनाओं को भावनाओं के रूप में देखने का यह चिंतन विकसित हुआ है: ऐसी नज़र उठी, जो पहले कभी नहीं सुने गए विचारों के बारे में थी।'

61-62. जो आँख उठी: किस अर्थ में?...

63. भावनाओं के चिंतन के मामले में 15 विचार, 15 अर्थ, भाषा के 30 उदाहरण और ज्ञान के 60 उदाहरण हैं।

*

64. 'ज्ञान के रूप में ज्ञान का यह चिंतन है: ऐसी आँख उठी, जो पहले न सुने गए विचारों के बारे में थी।'

65-66. जो आँख उठी: किस अर्थ में? . . .

67. ज्ञान के बारे में इस सोच को विकसित करना है: ऐसी ही एक नज़र उठी, उन विचारों के बारे में . . . जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।

68-69. जो आँख उठी: किस अर्थ में?

70. "ज्ञान के रूप में ज्ञान का यह चिंतन विकसित हुआ है: ऐसी दृष्टि उठी, जो पहले न सुने गए विचारों के बारे में थी।"

71-72. जो आँख उठी: किस अर्थ में?

. . .

संज्ञान के रूप में संज्ञान के चिंतन के मामले में 15 विचार, 15 अर्थ, 30 भाषा [उदाहरण] और 60 ज्ञान [उदाहरण] हैं। [154]

यह

74. 'विचारों को विचारों के रूप में देखना है: ऐसी नज़र उठी,... उन विचारों के बारे में जो पहले नहीं सुने गए थे'।

75-76. जो आँख उठी: किस अर्थ में?

77. 'आइडियाज़ को आइडियाज़ की तरह देखना है: ऐसी नज़र आई, जो पहले कभी न सुने गए आइडियाज़ के बारे में थी।'

78-79. जो आँख उठी: किस अर्थ में?

. . .

80. 'आइडियाज़ को आइडियाज़ के तौर पर देखने का यह तरीका डेवलप हुआ है: ऐसी नज़र आई, जो पहले कभी न सुने गए आइडियाज़ के बारे में थी।'

81-82. जो आँख उठी: किस अर्थ में?

. . .

विचारों के रूप में चिंतन के मामले में 15 विचार, 15 अर्थ, भाषा के 30 [उदाहरण] और ज्ञान के 60 [उदाहरण] हैं।

84. माइंडफुलनेस के चारों आधारों को मिलाकर 60 विचार, 60 अर्थ, भाषा के 120 उदाहरण और ज्ञान के 240 उदाहरण होते हैं।

* * *

85. "सफलता (शक्ति का मार्ग) के लिए यह आधार है जिसमें जोश के कारण एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छा-शक्ति दोनों होती हैं: भिक्षुओं, ऐसी वह आँख थी जो उठी, वह ज्ञान था जो उठा, वह समझ थी जो उठी, वह पहचान थी जो उठी, वह रोशनी थी जो मुझमें उन विचारों के बारे में उठी जो पहले कभी नहीं सुने गए थे। सफलता के लिए यह आधार जिसमें जोश के कारण एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छा-शक्ति होती है, उसे विकसित किया जाना है: भिक्षुओं, ऐसी वह आँख थी जो उठी, वह रोशनी थी जो मुझमें उन विचारों के बारे में उठी जो पहले कभी नहीं सुने गए थे। सफलता के लिए यह आधार जिसमें जोश के कारण एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छा-शक्ति होती है, विकसित किया गया है: भिक्षुओं, ऐसी वह आँख थी जो उठी,... वह रोशनी थी जो मुझमें उन विचारों के बारे में उठी जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।

"सफलता का यह आधार है जिसमें एनर्जी की वजह से कॉन्संट्रेशन और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों होती हैं:

. . .

"सफलता का यह आधार है जिसमें ज्ञान के कारण एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों होती हैं:...

"सफलता का यह आधार है जिसमें जांच के कारण एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों हों:..." (S v 258)

*

86. 'सफलता का यह आधार है जिसमें जोश के कारण एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों हों: ऐसी ही एक नज़र उठी,... उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।'
87-88. जो आँख उठी: किस अर्थ में? ...
89. 'सफलता का यह आधार, जिसमें जोश की वजह से एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति, दोनों हों, उसे विकसित करना है: भिक्षुओ, ऐसी ही वह नज़र थी जो पहले न सुने गए विचारों के बारे में उठी थी।'
90-91. जो आँख उठी: किस अर्थ में? ...
92. 'सफलता का यह आधार, जिसमें जोश की वजह से एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति, दोनों शामिल हैं, विकसित किया गया है: ऐसी नज़र उठी, उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।'
93-94. जो आँख उठी: किस अर्थ में? ... [155]
95. सफलता का आधार, जिसमें उत्साह के कारण एकाग्रता और प्रयास करने की इच्छाशक्ति दोनों हों, वहाँ 15 विचार, 15 अर्थ, 30 भाषा के उदाहरण और 60 ज्ञान के उदाहरण होते हैं।

*

96-104. 'सफलता का यह आधार है जिसमें एनर्जी की वजह से कॉन्संट्रेशन और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों होती हैं: ऐसी ही नज़र उठी,... उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे'।

. . . [ऊपर बताए अनुसार पूरा करें)...

105. सफलता का आधार, जिसमें ऊर्जा के कारण एकाग्रता और प्रयास करने की इच्छाशक्ति दोनों हों, उसमें 15 विचार, 15 अर्थ, भाषा के 30 उदाहरण और ज्ञान के 60 उदाहरण होते हैं।
106-114. 'सफलता का यह आधार है जिसमें ज्ञान के कारण एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों हों: ऐसी ही वह नज़र थी जो उठी,... उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे'।

. . . [ऊपर बताए अनुसार पूरा करें)...

115. सफलता का आधार, जिसमें ज्ञान के कारण एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों हों, वहाँ 15 विचार, 15 अर्थ, 30 भाषा के उदाहरण और 60 ज्ञान के उदाहरण होते हैं।

*

116-124. 'सफलता का यही आधार है जिसमें एकाग्रता दोनों होती है।

जांच और कोशिश करने की इच्छा-शक्ति के कारण: ऐसी नज़र उठी,... उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।

. . . [उपर्युक्त अनुसार पूर्ण करें]...[156]

125. सफलता का आधार, जिसमें खोजबीन की वजह से ध्यान और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों हों, वहाँ 15 विचार, 15 अर्थ, भाषा के 30 उदाहरण और ज्ञान के 60 उदाहरण होते हैं।

126. सफलता के चार आधारों में 60 विचार, 60 अर्थ, 120 भाषा के उदाहरण और 240 ज्ञान के उदाहरण हैं। [156]

* * *

127. 'उठता हुआ, उठता हुआ: भिक्षुओ, ऐसे ही वह नेत्र उत्पन्न हुआ, वह ज्ञान उत्पन्न हुआ, वह समझ उत्पन्न हुई, वह पहचान उत्पन्न हुई, वह प्रकाश उत्पन्न हुआ, बोधिसत्व विपश्यि में पहले न सुने गए विचारों के विषय में' (शिष्य 2:7)।

'समाप्ति, समाप्ति: भिक्षुओ, ऐसी वह आँख थी जो उठी,... वह प्रकाश जो बोधिसत्व विपश्यना में उन विचारों के बारे में उभरा जो पहले नहीं सुने गए थे' (सू ü 9)।

128. बोधिसत्व विपश्यना की घोषणा में 10 विचार, 10 अर्थ, भाषा के 20 उदाहरण और ज्ञान के 40 उदाहरण हैं।

*

129-130. 'उठता हुआ, उठता हुआ: ऐसा, भिक्षुओ, वह आँख थी जो बोधिसत्व सिखिन में उठी...' (S ii 9). . . .

*

131-132. ... बोधिसत्व वेस्सभु में...' (S ii 9).

*

133-134. ... बोधिसत्व ककुषन्ध में...' (S ii 9).

*

135-136. ... बोधिसत्व कोनागमन में...' (Sii 9).

*

137-138. बोधिसत्व कश्यप में...' (एस ii 9).

*

140. 'उठता हुआ, उठता हुआ: भिक्षुओ, ऐसी आँख उठी,... वह रोशनी जो बोधिसत्व गौतम में उन विचारों के बारे में उठी जो पहले कभी नहीं सुने गए थे'। (देखें Sii 10 और 105)

'समाप्ति, समाप्ति: भिक्षुओ, ऐसी ही वह आँख उठी,... वह प्रकाश जो बोधिसत्व गौतम में उन विचारों के बारे में उठा, जो पहले कभी नहीं सुने गए थे'। (Sce S ii 10 और 105)

141. बोधिसत्व गोतम के कथन में 10 विचार, 10 अर्थ, भाषा के 20 उदाहरण और ज्ञान के 40 उदाहरण हैं।

142. सात बोधिसत्वों की घोषणाओं में सत्तर विचार, सत्तर अर्थ, भाषा के 140 उदाहरण और ज्ञान के 280 उदाहरण हैं।

* * *

143. जहाँ तक प्रत्यक्ष-ज्ञान का अर्थ समझ से जाना, देखा, पहचाना, अनुभव किया और सुना जा सकता है, और जहाँ तक प्रत्यक्ष-ज्ञान का कोई भी अर्थ समझ से असत्य नहीं है, वहीं आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, समझ उत्पन्न हुई, पहचान उत्पन्न हुई, प्रकाश उत्पन्न हुआ।

प्रत्यक्ष-ज्ञान के अर्थ के मामले में, 25 विचार, 25 अर्थ, 50 भाषा के उदाहरण, और 100 ज्ञान के उदाहरण हैं।

144. जहाँ तक full-understanding का full-understanding का मतलब पता है,...:

145.... त्याग का अर्थ त्यागना...

...146. विकास का मतलब विकास...

147. ...बोध का तात्पर्य बोध से... [157] प्रकाश उदय हुआ।

बोध के अर्थ के मामले में 25 विचार, 25 अर्थ, भाषा के 50 (उदाहरण) और ज्ञान के 100 (उदाहरण) हैं।

148. प्रत्यक्ष-ज्ञान के अर्थ प्रत्यक्ष-ज्ञान, पूर्ण-समझ के अर्थ पूर्ण-समझ, परित्याग के अर्थ परित्याग, विकास के अर्थ विकास, और बोध के अर्थ बोध के मामले में 125 विचार, 125 अर्थ, 250 भाषा के उदाहरण, और 500 ज्ञान के उदाहरण हैं।

*

149. जहाँ तक समुच्चय का समुच्चय का अर्थ जाना, देखा, पहचाना जाता है, ...तब तक प्रकाश उत्पन्न होता है।

समुच्चय के अर्थ के मामले में 25 विचार, 25 अर्थ, भाषा के 50 उदाहरण और ज्ञान के 100 उदाहरण हैं।

150. जहां तक प्रिंसिपल्स का मतलब पता है,..

151.... बेस का मतलब बेस..

. 152. .. बनने के अर्थ के उदाहरण...

. . . 153. उठी। अनगढ़ का अनगढ़ होने का मतलब... रोशनी

अविकसित के अविकसित होने के अर्थ के मामले में 25 विचार, 25 अर्थ, 50 भाषा के उदाहरण और 100 ज्ञान के उदाहरण हैं।

154. समुच्चयों के अर्थ समुच्चय, सिद्धांतों के अर्थ सिद्धांत, आधारों के अर्थ आधार, पूर्वनिर्धारित के अर्थ निर्मित होने, अनिर्मित के अर्थ अनिर्मित होने के मामले में 125 विचार, 125 अर्थ, 250 भाषा [के उदाहरण) और 500 ज्ञान (के उदाहरण) हैं।

*

155. जहाँ तक दुख का अर्थ जाना, देखा, पहचाना जाता है, ... वहाँ तक प्रकाश उत्पन्न होता है।

दुख के अर्थ के मामले में 25 विचार, 25 अर्थ, भाषा के 50 उदाहरण और ज्ञान के 100 उदाहरण हैं।

156. ... मूल का अर्थ मूल है...

157. . . . समाप्ति का मतलब समाप्ति है...

158. . . . रास्ते का मतलब है... रोशनी पैदा हुई।

मार्ग के अर्थ के मामले में 25 विचार, 25 अर्थ, भाषा के 50 उदाहरण, और ज्ञान के 100 उदाहरण हैं।

159. चारों महान वास्तविकताओं में 100 विचार, 100 अर्थ, 200 भाषा के उदाहरण और 400 ज्ञान के उदाहरण हैं।

*

160. जहाँ तक अर्थ-भेद का अर्थ जाना, देखा, पहचाना जाता है, वहाँ तक प्रकाश उत्पन्न हुआ।

मतलब समझने के मामले में, मतलब समझने के 25 आइडिया, 25 मतलब, भाषा के 50 (उदाहरण), और ज्ञान के 100 (उदाहरण) होते हैं।

. . . 161. विचार. विचारों के भेदभाव का मतलब
. .

162. . . . भाषा के भेदभाव का मतलब भाषा के भेदभाव से है...

163. विवेक-की-स्पष्टता का अर्थ... प्रकाश उत्पन्न हुआ. [158]

डिस्क्रिमिनेशन-ऑफ-परस्पिक्युइटी के मामले में, 25 विचार, 25 अर्थ, भाषा के 50 (उदाहरण), और ज्ञान के 100 (उदाहरण) हैं।

164. चारों भेदों में 100 विचार, 100 अर्थ, 200 भाषा के उदाहरण और 400 ज्ञान के उदाहरण हैं।

*

165. जब तक दूसरों की काबिलियत के अंदर जाने का ज्ञान होता है, देखा जाता है, पहचाना जाता है,... तब तक रोशनी पैदा होती है।

दूसरों की समझ के ज्ञान के मामले में 25 विचार, 25 अर्थ, भाषा के 50 उदाहरण और ज्ञान के 100 उदाहरण होते हैं।

166. . प्राणियों के बायस और अंदरूनी झुकाव का ज्ञान...

167....ट्विन मेटामोर्फोसिस का ज्ञान...

168. महान करुणा का ज्ञान।

169. सर्वज्ञ ज्ञान...

170. जहाँ तक बिना रुकावट वाला ज्ञान जाना जाता है, देखा जाता है, वहाँ तक प्रकाश . . . है।
पैदा होता

अबाधित ज्ञान में 25 विचार, 25 अर्थ, 50 भाषा के उदाहरण तथा 100 ज्ञान के उदाहरण होते हैं।

171. छह बुद्ध विचारों के मामले में 150 विचार, 150 अर्थ, 300 भाषा के उदाहरण और 600 ज्ञान के उदाहरण हैं।

172. विवेक के विषय में 850 विचार, 850 अर्थ, 1700 भाषा के उदाहरण और 3400 ज्ञान के उदाहरण हैं।

भेदभाव पर ग्रंथ।



नोट्स

[1] देखें Vbh 293.

2 टेक्स्ट में गलतियों (पेयला) को समझना आसान नहीं है, क्योंकि इस पॉइंट पर सिर्फ़ आखिरी बात ही पूरी तरह से दी गई है। लेकिन, इस ट्रांसलेशन में साफ़-साफ़ समझाने के लिए पहली बात को ज़्यादा ध्यान में रखा गया है, और बाकी को छोटा कर दिया गया है।

[3] Cf. ट्र. 1 § 29.

[4] Cf. Tr. I § 29.

[प्रबंध XVII. 'सच्चे विचार के चक्र' पर

1. [159] 'ऐसा मैंने सुना है। एक समय में धन्य एक बनारस में रहते थे [जैसा कि अंतिम ... ग्रंथ में है)।

... और इसलिए उस आदरणीय व्यक्ति को अनातार कोंडान्ना (Sv 420) नाम मिला।

*

2. "दुख की यह महान वास्तविकता है: ऐसी वह आंख थी जो उठी, वह ज्ञान जो उठा, वह समझ जो उठी, वह पहचान जो उठी, वह प्रकाश जो उठा, मुझमें उन विचारों के बारे में जो पहले नहीं सुने गए थे।"

3. आँख जो पैदा हुई: किस अर्थ में? ज्ञान जो पैदा हुआ: किस अर्थ में? समझ जो पैदा हुई: किस अर्थ में? पहचान जो पैदा हुई: किस अर्थ में? रोशनी जो पैदा हुई: किस अर्थ में?

वह आँख जो देखने के मतलब में पैदा हुई। वह ज्ञान जो जाने-पहचाने के मतलब में पैदा हुआ। वह समझ जो समझने के काम के मतलब में पैदा हुई। वह पहचान जो अंदर जाने के मतलब में पैदा हुई। वह रोशनी जो रोशनी के मतलब में पैदा हुई।

4. आँख एक आइडिया है, देखने के तौर पर इसका मतलब एक मतलब है। ज्ञान एक आइडिया है, जो जाना जाता है उसके तौर पर इसका मतलब एक मतलब है। समझ एक आइडिया है, समझने के काम के तौर पर इसका मतलब एक मतलब है। <पहचान एक आइडिया है, पैठ के तौर पर इसका मतलब एक मतलब है। > रोशनी एक आइडिया है, रोशनी के तौर पर इसका मतलब एक मतलब है। इन पाँच आइडिया (और) पाँच मतलबों का आधार दुख है, आधार असलियत है, सहारा देने वाली चीज़ असलियत है, दायरा असलियत है, असलियत से बने हैं, असलियत में शामिल हैं, असलियत पर बने हैं, असलियत पर टिके हैं, असलियत पर आधारित हैं।

सच्चे विचार का पहिया: किस अर्थ में सच्चे विचार का पहिया?

वह सच्चे विचार और [जो स्वयं है] चक्र को घुमाता है, इस प्रकार यह सच्चे विचार का चक्र है। वह चक्र और सच्चे विचार [को भी) घुमाता है, इस प्रकार यह सच्चे विचार का चक्र है। वह सच्चे विचार के माध्यम से घुमाता है, इस प्रकार... वह सच्चे विचार की आदत के माध्यम से घुमाता है, इस प्रकार... सच्चे विचार में स्थित होकर, वह घुमाता है, इस प्रकार... सच्चे विचार में स्थित होकर, वह घुमाता है, इस प्रकार... (दूसरों को) सच्चे विचार में स्थापित करके, वह घुमाता है, इस प्रकार... सच्चे विचार में निपुणता प्राप्त करके, वह घुमाता है, इस प्रकार... (दूसरों को) सच्चे विचार में निपुणता प्राप्त कराकर, वह घुमाता है, इस प्रकार... (160) सच्चे विचार में पूर्णता प्राप्त करके, वह घुमाता है, इस प्रकार... (दूसरों को) सच्चे विचार में पूर्णता प्राप्त कराकर, वह घुमाता है

इस प्रकार घूमता है... सच्चे विचार में आश्वासन प्राप्त कर वह घूमता है, इस प्रकार... [दूसरों को] सच्चे विचार में आश्वासन प्राप्त कराते हुए, वह घूमता है, इस प्रकार... सच्चे विचार का सम्मान करते हुए, वह घूमता है, इस प्रकार... सच्चे विचार का आदर करते हुए, वह घूमता है, इस प्रकार... सच्चे विचार का आदर करते हुए, वह घूमता है, इस प्रकार... सच्चे विचार का आदर करते हुए, वह घूमता है, इस प्रकार... सच्चे विचार का आदर करते हुए, वह घूमता है, इस प्रकार... सच्चे विचार को अपना ध्वज मानकर, वह घूमता है, इस प्रकार... सच्चे विचार को अपना पताका बनाकर, वह घूमता है, इस प्रकार... सच्चे विचार की प्रधानता के साथ, वह घूमता है, इस प्रकार... और सच्चे विचार के उस पहिये को तपस्वी या ब्राह्मण या देवता या मार या ब्रह्मा या दुनिया में किसी के द्वारा रोका नहीं जाना है, इस प्रकार यह सच्चे इदर का पहिया है।

5. विश्वास की क्षमता एक सच्चा आइडिया है और वह उस सच्चे आइडिया को आगे बढ़ाता है, इसलिए यह सच्चे आइडिया का पहिया है। एनर्जी की क्षमता एक सच्चा आइडिया है और वह उस सच्चे आइडिया को आगे बढ़ाता है, इसलिए यह सच्चे आइडिया का पहिया है। माइंडफुलनेस की क्षमता... कंसंट्रेशन की क्षमता... समझने की क्षमता एक सच्चा आइडिया है और वह उस सच्चे आइडिया को आगे बढ़ाता है, इसलिए यह सच्चे आइडिया का पहिया है।

विश्वास की शक्ति एक सच्चा विचार है और वह उस सच्चे विचार को आगे बढ़ाता है, इसलिए यह सच्चे विचार का पहिया है। ऊर्जा की शक्ति... ध्यान की शक्ति... ध्यान की शक्ति... समझने की शक्ति... इस प्रकार यह सच्चे विचार का पहिया है।

माइंडफुलनेस आत्मज्ञान कारक एक सच्चा विचार है और वह उस सच्चे विचार को आगे बढ़ाता है, इस प्रकार यह सच्चे विचार का पहिया है। विचारों की जांच आत्मज्ञान कारक... ऊर्जा आत्मज्ञान कारक... खुशी आत्मज्ञान कारक... शांति आत्मज्ञान कारक... एकाग्रता आत्मज्ञान कारक... समता आत्मज्ञान कारक [161]..., इस प्रकार यह सच्चे विचार का पहिया है।

सही नज़रिया एक सच्चा विचार है और वह उस सच्चे विचार को आगे बढ़ाता है, इसलिए यह सच्चे विचार का पहिया है। सही सोच... सही बोलना... सही काम करना... सही जीना... सही कोशिश... सही ध्यान... सही एकाग्रता..., इसलिए यह सच्चे विचार का पहिया है।

दबदबे के मतलब में काबिलियत एक सच्चा आइडिया है और वह उस सच्चे आइडिया को चलाता है, इसलिए यह सच्चे आइडिया का पहिया है। अटलता के मतलब में ताकतें... बाहर निकलने के मतलब में ज्ञान के फैक्टर... कारण के मतलब में रास्ता... स्थापना के मतलब में ध्यान की नींव... कोशिश करने के मतलब में सही कोशिशें... सफल होने के मतलब में सफलता के आधार (पावर के रास्ते)... सच्चाई के मतलब में असलियत एक सच्चा आइडिया है और वह उस सच्चे आइडिया को चलाता है, इसलिए यह सच्चे आइडिया का पहिया है।

ध्यान भटकने न देने के मतलब में शांति एक सच्चा विचार है और वह उस सच्चे विचार को आगे बढ़ाता है, इसलिए यह सच्चे विचार का पहिया है। सोच-विचार के मतलब में समझ... अकेलेपन के मतलब में शांति और समझ

कार्य (स्वाद)...अनावश्यकता के अर्थ में युग्मन एक सच्चा विचार है और वह उस सच्चे विचार को घुमाता है, इस प्रकार यह सच्चे विचार का पहिया है।

संयम के अर्थ में पुण्य की शुद्धि एक सच्चा विचार है और वह उस सच्चे विचार को घुमाता है, इस प्रकार यह सच्चे विचार का पहिया है। गैर-विचलित होने के अर्थ में ज्ञान की शुद्धि... देखने के अर्थ में दृष्टि की शुद्धि। मुक्त होने के अर्थ में मुक्ति... प्रवेश के अर्थ में मान्यता... छोड़ देने के अर्थ में उद्धार [162]... काट देने के अर्थ में थकावट का ज्ञान... शांति के अर्थ में गैर-उत्पन्न होने का ज्ञान एक सच्चा विचार है और वह उस सच्चे विचार को घुमाता है, इस प्रकार यह सच्चे विचार का पहिया है।

जड़ के अर्थ में, उत्साह एक सच्चा विचार है और वह उस सच्चे विचार को घुमाता है, इस प्रकार यह सच्चे विचार का पहिया है। उत्पत्ति के अर्थ में, ध्यान... संयोजन, संपर्क के अर्थ में... मिलन-स्थल, भावना के अर्थ में... सबसे आगे होने के अर्थ में, एकाग्रता... प्रभुत्व, जागरूकता के अर्थ में... सबसे ऊंचा होने के अर्थ में, समझ। मूल (स्वाद) . . होने के अर्थ में, मुक्ति... अंत के अर्थ में, निब्बान जो अमर में विलीन हो जाता है, एक सच्चा विचार है और वह उस सच्चे विचार को घुमाता है, इस प्रकार यह सच्चे विचार का पहिया है।

6. "दुख की इस महान सच्चाई को पूरी तरह समझना होगा": ऐसी ही एक नज़र उन विचारों पर पड़ी जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।

7-9. आँख जो उठी: किस वजह से? [ऊपर दिए गए तरीके से पूरा करें]

10. "दुख की इस महान सच्चाई को पूरी तरह से समझा गया है": ऐसी नज़र उन विचारों के बारे में उठी जो . . . पहले कभी नहीं सुने गए थे।

11-13. जो आँख उठी: किस अर्थ में?...

*

14. "दुख की शुरुआत की यह महान सच्चाई है": ऐसी ही एक नज़र उठी, उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।

15. आँख किस अर्थ में उठी? प्रकाश . . . अर्थ में उठा? किस

देखने के अर्थ में जो आँख उत्पन्न हुई...प्रकाश के अर्थ में जो रोशनी उत्पन्न हुई।

16. आँख एक विचार है, देखने का मतलब एक अर्थ है... रोशनी एक विचार है, रोशनी का मतलब एक अर्थ है। इन पाँच विचारों की शुरुआत दुख से हुई है, असलियत से हुई है, और ये असलियत पर आधारित हैं।

सच्चे विचार का पहिया: किस अर्थ में... (पूरा करें जैसा कि §4 में है)

17. विश्वास की क्षमता एक सच्चा विचार है और... [पूरा करें जैसा कि §5 में है]

18. "दुख की शुरुआत की इस महान सच्चाई को छोड़ देना चाहिए": ऐसी ही एक नज़र उन विचारों के बारे में . . उठी जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।

19-21. आँख जो उठी: किस अर्थ में? . . . [§§15-17 दोहराएं]
'दुख के मूल की इस महान वास्तविकता को त्याग दिया गया है': ऐसी वह आँख उठी थी, जो पहले न सुने गए विचारों के बारे में थी। [163]
23-25. आँख जो उठी: किस अर्थ में? [§§15-17 दोहराएं]

*

26. '"दुख के खत्म होने की यह महान सच्चाई है": ऐसी नज़र उठी,... उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।
27. आँख जो उठी: किस अर्थ में? रोशनी जो उठी: आँख जो . . .
देखने के अर्थ में उठी... रोशनी जो रोशनी के अर्थ में उठी।
28. आँख एक विचार है, इसका मतलब है देखना एक अर्थ है... रोशनी एक विचार है, इसका मतलब है रोशनी एक अर्थ है। इन पाँच विचारों का आधार दुख का खत्म होना है, उनका आधार असलियत है,... ये असलियत पर आधारित हैं।
करें] सच्चे विचार का पहिया: किस अर्थ में . . . [§4 के अनुसार पूरा
29. विश्वास की क्षमता एक सच्चा विचार है और... [पूरा करें जैसा कि §5 में है]
30. '"दुख के खत्म होने की इस महान सच्चाई को महसूस किया जाना है": ऐसी नज़र उन विचारों के बारे में उठी जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।
31-33. आँख जो उठी: किस अर्थ में? [§§27-29 दोहराएँ]
34. '"दुख के खत्म होने की यह महान सच्चाई सच हो गई है": ऐसी नज़र उन विचारों के बारे में उठी जो . . . पहले कभी नहीं सुने गए थे।
35-37. आँख जो उठी: किस अर्थ में? . . . [§§27-29 दोहराएँ]

*

38. "दुख के अंत की ओर ले जाने वाले मार्ग की यह महान वास्तविकता है": ऐसी दृष्टि उठी, जो पहले कभी नहीं सुनी गई विचारों के बारे में थी।
39. जो आँख उठी: किस अर्थ में?... जो प्रकाश उठा: किस अर्थ में?

आँख जो देखने के अर्थ में उत्पन्न हुई, . . . जो उत्पन्न हुई रोशनी के अर्थ में। रोशनी
40. आँख एक आइडिया है, देखने का उसका मतलब एक मतलब है... रोशनी एक आइडिया है, रोशनी का उसका मतलब एक मतलब है। इन पाँच आइडिया का आधार रास्ता है, असलियत है,... असलियत पर आधारित हैं। सच्चे
आइडिया का पहिया: किस मतलब में। [§4 के . . अनुसार पूरा करें]
विश्वास क्षमता एक सच्चा विचार है और... [§5 के अनुसार पूर्ण]।
42. "दुख के अंत की ओर ले जाने वाले इस महान मार्ग को विकसित किया जाना चाहिए": ऐसी दृष्टि उठी,... उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।
43-45. आँख जो उठी: किस अर्थ में? [§ §39-41 दोहराएं]
46. "यह महान वास्तविकता, जो विनाश की ओर ले जाती है,

बारे में विकसित किया गया है": ऐसी आँख उठी, ऐसे विचार जो . . . दुख के पहले नहीं सुने गए थे।
47-49. जो आँख उठी: किस अर्थ में?... [§§39-41 दोहराएं]

* * *

50. "शरीर को शरीर की तरह देखना": भिक्षुओं, ऐसी ही वह आँख थी जो उठी, ऐसी रोशनी जो मुझमें उन विचारों के बारे में उठी जो पहले कभी नहीं सुने गए थे। "शरीर को शरीर की तरह देखना विकसित किया जाना है": भिक्षुओं, ऐसी ही वह आँख थी जो उठी,... ऐसी रोशनी जो मुझमें उन विचारों के बारे में उठी जो पहले कभी नहीं सुने गए थे। "शरीर को शरीर की तरह देखना विकसित किया गया है": भिक्षुओं, ऐसी ही वह आँख थी जो उठी,... ऐसी रोशनी जो मुझमें उन विचारों के बारे में उठी जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।

"भावनाओं को भावनाओं के रूप में देखना": जैसे,...
"ज्ञान के रूप में ज्ञान का यह चिंतन है": ऐसा, . . .
"विचारों का विचारों के रूप में चिंतन होता है": ऐसा,...' (Sv 178).

*

51. '"शरीर को शरीर के रूप में देखना": ऐसी ही एक नज़र उठी,... पहले न सुने गए विचारों के बारे में।
52. आँख किस अर्थ में उठी? प्रकाश . . . अर्थ में उठा? किस

देखने के अर्थ में जो आँख उत्पन्न हुई...प्रकाश के अर्थ में जो रोशनी उत्पन्न हुई।

आँख एक विचार है, इसका मतलब एक अर्थ है... रोशनी एक विचार है, इसका मतलब एक अर्थ है। इन पाँच विचारों का आधार शरीर है, और माइंडफुलनेस की नींव . . है। ये माइंडफुलनेस की नींव पर बने हैं।

53. सच्चे विचार का पहिया: किस अर्थ में... [§4 के अनुसार पूरा करें]
54. विश्वास की क्षमता एक विचार है और... [पूरा करें जैसा कि §5 में है]
55-58. "शरीर को शरीर के रूप में देखने का यह विचार विकसित करना है": ऐसी ही एक नज़र उठी, उन विचारों के बारे . . . में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।
59-62. "यह सोच ऐसी थी जो आँख शरीर बना है": ऐसे विचारों के बारे में से उठी, शरीर के बारे में जैसे . . . जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।

*

63-74... इन . . पांच विचारों का आधार भावनाएं हैं, और आधार माइंडफुलनेस है...
75-86. इन . . . पांच विचारों का आधार ज्ञान है, और आधार माइंडफुलनेस है...
87-90. इन पांच विचारों का आधार विचार है, आधार चेतना है..
[164]

91. "सफलता (पावर का रास्ता) का यह आधार है जिसमें जोश की वजह से कॉन्संट्रेशन और कोशिश करने की इच्छा-शक्ति दोनों होती हैं": भिक्षुओं, ऐसी ही वह आँख थी जो मुझमें पहले न सुने गए विचारों के बारे में उठी, वह रोशनी थी। "सफलता का यह आधार जिसमें जोश की वजह से कॉन्संट्रेशन और कोशिश करने की इच्छा-शक्ति दोनों होती हैं, उसे डेवलप किया जाना है": भिक्षुओं, ऐसी ही वह आँख थी जो उठी,... ऐसी वह रोशनी थी जो मुझमें पहले न सुने गए विचारों के बारे में उठी। "सफलता का यह आधार जिसमें जोश की वजह से कॉन्संट्रेशन और कोशिश करने की इच्छा-शक्ति दोनों होती हैं, उसे डेवलप किया गया है": भिक्षुओं, ऐसी ही वह आँख थी जो उठी, वह रोशनी . . .थी जो मुझमें पहले न सुने गए विचारों के बारे में उठी।

"सफलता का यह आधार है जिसमें एनर्जी की वजह से कॉन्संट्रेशन और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों होती हैं":...

"सफलता का यह आधार है जिसमें ज्ञान के कारण एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों होती हैं":...

"सफलता का यह आधार है जिसमें जांच के कारण एकाग्रता और प्रयास करने की इच्छाशक्ति दोनों मौजूद हों": ऐसा,...' (Sv 258).

*

92. "सफलता का आधार यह है कि इसमें जोश की वजह से एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों हों": ऐसी नज़र उठी,... उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।

93. आँख किस अर्थ में उठी? रोशनी किस अर्थ में उठी? ...

आँख एक विचार है, उसका देखना एक अर्थ है... रोशनी एक विचार है, उसका रोशनी का अर्थ एक अर्थ है। इन पाँच विचारों का आधार उत्साह है, उनका आधार सफलता है,... सफलता के आधार पर स्थापित हैं।

94. सच्चे विचार का पहिया: किस अर्थ में। [§4 . . के अनुसार पूरा करें]

95. विश्वास की क्षमता एक सच्चा विचार है और... (§5 के अनुसार पूरा करें)

96-99. "सफलता का यह आधार, जिसमें जोश की वजह से एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति, दोनों हों, उसे विकसित करना है": ऐसी नज़र उठी,... उन विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।

100-103. "सफलता का यह आधार, जिसमें जोश की वजह से एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों शामिल हैं, बनाया गया है": ऐसा विचार आया था,... ऐसे विचारों के बारे में जो पहले कभी नहीं सुने गए थे।

104-115. इन . . . पाँच विचारों का आधार ऊर्जा है, सफलता का आधार है, . . .

116-127. इन पांच विचारों का आधार ज्ञान है, सफलता का आधार है,...

128-139. इन पाँच विचारों का आधार अन्वेषण है, उनका आधार सफलता है... [165] इस प्रकार यह सच्चे विचार का पहिया है।

सच्चे विचार के चक्र पर ग्रंथ का अंत।

*
* *
*

[ग्रंथ XVIII- अतिसांसारिक पर]

1. कौन से विचार अलौकिक हैं?

माइंडफुलनेस के चार आधार, चार सही कोशिशें, सफलता के चार आधार (पावर के रास्ते), पांच काबिलियत, पांच शक्तियां, ज्ञान के सात फैक्टर, आठ गुना रास्ता; फिर चार महान रास्ते, तपस्या के चार फल, और निब्बान।

2. अलौकिक: किस अर्थ में अलौकिक?

वे संसार से पार हो जाते हैं (लोकां तरन्ति), इस प्रकार वे लोकुत्तर हैं। वे संसार से पार हो जाते हैं (लोका उत्तरन्ति), इस प्रकार वे लोकोत्तर हैं। वे संसार से बाहर से पार हो जाते हैं (लोकातो उत्तरन्ति), इस प्रकार वे लोकोत्तर हैं। वे संसार से बाहर हो जाते हैं (लोकाम्हा उत्तरन्ति), इस प्रकार वे लोकोत्तर हैं। वे संसार से ऊपर उठ जाते हैं, इस प्रकार वे लोकोत्तर हैं। वे संसार से पूरी तरह ऊपर उठ जाते हैं, इस प्रकार वे लोकोत्तर हैं। वे संसार से पूरी तरह ऊपर उठ चुके हैं, इस प्रकार वे लोकोत्तर हैं। वे संसार द्वारा स्वीकार किए जाते हैं, इस प्रकार वे लोकोत्तर हैं। वे संसार के अंत को पार कर जाते हैं, इस प्रकार वे लोकोत्तर हैं। वे संसार से बच जाते हैं, इस प्रकार वे लोकोत्तर हैं। वे संसार से भाग जाते हैं,... वे संसार के बाहर से भाग जाते हैं,... वे संसार से भाग गये हैं,... संसार ने उन्हें भाग जाने दिया है,... वे संसार से भाग गये हैं, इस प्रकार वे अलौकिक हैं।

वे संसार में खड़े नहीं होते, इस प्रकार वे अलौकिक हैं। वे संसार पर खड़े नहीं होते,... वे संसार में अपने आप को नहीं लिप्त करते,... वे संसार से अपने आप को नहीं लिप्त करते,... वे संसार में लिप्त नहीं होते,... वे संसार से लिप्त नहीं होते,... वे संसार से लिप्त नहीं होते,... वे संसार में मुक्त हो जाते हैं,... वे संसार से मुक्त हो जाते हैं,... वे संसार से मुक्त हो जाते हैं,... वे संसार से मुक्त हो जाते हैं, [167]... वे संसार में पृथक हो जाते हैं, वे संसार से पृथक हो जाते हैं,... वे संसार से पृथक हो जाते हैं,... वे संसार से अलग हो जाते हैं, इस प्रकार वे अलौकिक हैं।

वे संसार से शुद्ध हो जाते हैं, इस प्रकार वे अलौकिक हो जाते हैं। वे संसार से शुद्ध हो जाते हैं,... वे संसार से बाहर से शुद्ध हो जाते हैं,... वे संसार से पूरी तरह शुद्ध हो जाते हैं,... वे संसार से पूरी तरह शुद्ध
हो ...हैं,... वे संसार से बाहर से निकलते हैं,... वे
जाते ...संसार से दूर हो जाते हैं,... वे संसार से दूर हो जाते हैं,... वे संसार से दूर हो जाते हैं

दुनिया से बाहर,... वे दुनिया में आसक्त नहीं हैं,... वे दुनिया में कैद नहीं हैं,... वे दुनिया में प्रतिबंधित नहीं हैं, वे दुनिया से अलग हो गए हैं,... दुनिया से अलग होने के साथ,... वे दुनिया को शांत करते हैं,... दुनिया के शांत होने के साथ, इस प्रकार वे अलौकिक हैं। वे दुनिया का रास्ता नहीं हैं, इस प्रकार वे अलौकिक हैं। वे दुनिया की मंजिल नहीं हैं,... वे दुनिया का वस्तुगत क्षेत्र नहीं हैं, वे दुनिया के लिए सामान्य नहीं हैं, इस प्रकार वे अलौकिक हैं।

वे दुनिया को उगल देते हैं, इसलिए वे दुनिया से ऊपर हैं। वे दुनिया में वापस नहीं आते,... वे दुनिया को छोड़ देते हैं,... वे दुनिया से चिपके नहीं रहते,... वे दुनिया से अलग हो जाते हैं,... वे दुनिया में शामिल नहीं होते,... वे दुनिया को नीचे गिराते हैं,... वे दुनिया को नहीं भड़काते, उन्होंने दुनिया को पार कर लिया है और उस पर जीत हासिल कर ली है, इसलिए वे दुनिया से ऊपर हैं।

अलौकिक का ग्रंथ।



[शक्तियों पर ग्रंथ XIX]

1. [168] 'भिक्षुओं, ये पाँच शक्तियाँ हैं, कौन सी पाँच? विश्वास शक्ति, ऊर्जा शक्ति, स्मरण शक्ति, एकाग्रता शक्ति और समझ शक्ति। ये पाँच शक्तियाँ हैं' (शैव 249; अ iii 12).

*

2. इसके अलावा अड़सठ शक्तियां हैं।

[साथ ही विश्वास शक्ति, ऊर्जा शक्ति, दिमागी शक्ति, एकाग्रता शक्ति, समझ शक्ति भी हैं:

विवेक शक्ति, लज्जा शक्ति, प्रतिबिम्ब शक्ति, विकास शक्ति, निर्दोषिता शक्ति, सहायता शक्ति, विकल्प शक्ति, तत्परता शक्ति, सूचना शक्ति, प्रभुत्व शक्ति, स्थिरता शक्ति;

शांति शक्ति, अंतर्दृष्टि शक्ति;

दीक्षा प्राप्त व्यक्ति की दस शक्तियाँ, सिद्ध व्यक्ति की दस शक्तियाँ;

जिसका नासूर समाप्त हो गया है उसकी दस शक्तियाँ;

सफलता की दस शक्तियाँ (अलौकिक शक्ति);

पूर्ण परमात्मा की दस शक्तियाँ।

3. विश्वास की शक्ति क्या है? यह अविश्वास से हिलती नहीं है, इसलिए यह विश्वास की शक्ति है। यह विश्वास की शक्ति है जो एक जैसे विचारों को मज़बूत करती है। यह विश्वास की शक्ति है जो गंदगी को खत्म करती है। यह विश्वास की शक्ति है जो पैठ की शुरुआत को शुद्ध करती है। यह विश्वास की शक्ति है जो समझ को स्थिर करती है। यह विश्वास की शक्ति है जो समझ को साफ़ करती है। यह विश्वास की शक्ति है जो अंतर तक पहुँचने के अर्थ में है। यह विश्वास की शक्ति है जो ऊँचे पैठ के अर्थ में है। यह विश्वास की शक्ति है जो असलियत से मिलने के अर्थ में है। यह विश्वास की शक्ति है जो खत्म होने पर स्थापित करने के अर्थ में है। यही विश्वास की शक्ति है।

4. ऊर्जा शक्ति क्या है? यह आलस्य से हिलती नहीं है, इस प्रकार यह ऊर्जा शक्ति है। यह एकाग्र विचारों को कठोर करने के अर्थ में ऊर्जा शक्ति है... [और इसी तरह §3 में]... यह समाप्ति में स्थापित करने के अर्थ में ऊर्जा शक्ति है। यह ऊर्जा शक्ति है। [169]

5. माइंडफुलनेस पावर क्या है? यह लापरवाही से हिलती नहीं है, इसलिए यह माइंडफुलनेस पावर है। यह माइंडफुलनेस पावर है जुड़े हुए विचारों को मज़बूत करने के मतलब में... यह माइंडफुलनेस पावर है रुकने में स्थापित करने के मतलब में। यही माइंडफुलनेस पावर है।

6. कॉन्संट्रेशन पावर क्या है? यह हिलने-डुलने से हिलती नहीं है, इसलिए

यह कंसंट्रेशन पावर है। यह कंसंट्रेशन पावर है... खत्म
होने के मतलब में। यह कंसंट्रेशन पावर है।
समझने की शक्ति क्या है? यह अज्ञानता से हिलती नहीं है, इसलिए
यह समझने की शक्ति है। यह समझने की शक्ति है। रुकने 7.
में स्थापित होने का भाव। यही समझने की शक्ति है।
8. अंतरात्मा की शक्ति क्या है? त्याग के ज़रिए यह कामुक
इच्छाओं के जोश के बारे में अंतरात्मा की शक्ति रखती है, इसलिए यह
अंतरात्मा की शक्ति है। गैर-बुराई से... (और इसी तरह बाकी सात रुकावटों
और उनके उलट, चार ज्ञान, चार अमूर्त उपलब्धियां, अठारह मुख्य समझ,
और चार रास्ते, तक)... अरहंत रास्ते के ज़रिए यह सभी बुराइयों
के बारे में अंतरात्मा की शक्ति रखती है, इसलिए यह अंतरात्मा
की शक्ति है। यही अंतरात्मा की शक्ति है।
9. शर्म शक्ति क्या है? त्याग से यह कामुक इच्छाओं के जोश से
शर्मिंदा होती है, इसलिए यह शर्म शक्ति है। अ-इच्छा से... अरहंत
मार्ग से यह सभी बुराइयों से शर्मिंदा होती है, इसलिए यह शर्म
शक्ति है। यही शर्म शक्ति है।
10. प्रतिबिम्ब शक्ति क्या है ? त्याग से इन्द्रिय-वासनाओं के प्रति उत्साह
का चिन्तन होता है, इस प्रकार यह प्रतिबिम्ब शक्ति है। निर्दयता से...
[170] अरहंत मार्ग से यह समस्त विकारों का चिन्तन करती है, इस प्रकार यह
प्रतिबिम्ब शक्ति है। यही प्रतिबिम्ब शक्ति है।
11. डेवलपमेंट पावर क्या है? जो इंसान कामुकता की चाहत छोड़ देता है, उसमें
त्याग आ जाता है, इसलिए यह डेवलपमेंट पावर है। जो इंसान बुरी नीयत
छोड़ देता है... जो इंसान सभी बुराइयों को छोड़ देता है, उसमें अरहंत मार्ग
आ जाता है, इसलिए यह डेवलपमेंट पावर है। यही डेवलपमेंट पावर है।
12. बेदाग़ शक्ति क्या है? क्योंकि कामुकता की इच्छा छोड़ दी
गई है, इसलिए त्याग में कोई दोष नहीं है, इसलिए यह बेदाग़ शक्ति है।
क्योंकि बुरी नीयत छोड़ दी गई है... क्योंकि सभी बुराइयों को
छोड़ दिया गया है, इसलिए अरहंत मार्ग में कोई दोष नहीं है, इसलिए
यह बेदाग़ शक्ति है। यही बेदाग़ शक्ति है।
13. सहायता शक्ति क्या है ? जो विषय-वासनाओं के प्रति उत्साह को त्याग
देता है, वह त्याग से ज्ञान की सहायता करता है, इस प्रकार वह सहायता शक्ति
है। जो दुर्भावना को त्याग देता है... जो सभी विकारों को त्याग देता है, वह
अरहंत मार्ग से ज्ञान की सहायता करता है, इस प्रकार वह सहायता शक्ति है।
यह सहायता शक्ति है। [171]
14. चॉइस पावर क्या है? क्योंकि कामुक इच्छाओं के लिए जोश
छोड़ दिया गया है, इसलिए वह त्याग चुनता है, इसलिए यह चॉइस पावर है।
क्योंकि बुरी नीयत छोड़ दी गई है... क्योंकि सभी बुराइयों को छोड़ दिया गया
है, इसलिए वह अरहंत मार्ग चुनता है, इसलिए यह चॉइस पावर है। यह चॉइस पावर
है।3
15. तत्परता शक्ति क्या है? जो व्यक्ति विषय-वासनाओं के प्रति जोश को
त्याग देता है, वह त्याग के साथ ज्ञान को तत्पर बनाता है, इसलिए यह तत्परता है

शक्ति। जो दुर्भावना को त्याग देता है... जो सभी विकारों को त्याग देता है, वह अरहंत मार्ग से ज्ञान को तत्पर कर लेता है, इस प्रकार यह तत्परता शक्ति है। यह तत्परता शक्ति है।

16. नोटिफ़िकेशन पावर क्या है? जो इंसान कामुकता की चाहत छोड़ देता है, वह त्याग से पहचान को नोटिफ़ाई करता है, इसलिए यह नोटिफ़िकेशन पावर है। जो इंसान बुरी नीयत छोड़ देता है... जो इंसान सभी बुराइयों को छोड़ देता है, वह अरहंत मार्ग से पहचान को नोटिफ़ाई करता है, इसलिए यह नोटिफ़िकेशन पावर है। यही नोटिफ़िकेशन पावर है।

17. प्रभुता क्या है? जो वासनाओं के लिए जोश छोड़ देता है, वह त्याग से ज्ञान पर महारत हासिल कर लेता है, इसलिए यह प्रभुता है। जो बुरी नीयत छोड़ देता है... जो सभी बुराइयों को छोड़ देता है, वह अरहंत मार्ग से ज्ञान पर महारत हासिल कर लेता है, इसलिए यह प्रभुता है। यही प्रभुता है।

18. स्थिरता शक्ति क्या है ? जो मनुष्य विषय-वासनाओं के प्रति उत्साह को त्याग देता है, वह त्याग में बोध को स्थिर करता है, इस प्रकार वह स्थिरता शक्ति है। जो मनुष्य द्वेष को त्याग देता है... जो समस्त विकारों को त्याग देता है, वह अरहंत मार्ग में बोध को स्थिर करता है, इस प्रकार वह स्थिरता शक्ति है। यही स्थिरता शक्ति है। [172]

19. शांति की शक्ति क्या है? त्याग के ज़रिए ज्ञान को एक करने के तौर पर ध्यान भटकना ही शांति की शक्ति है। बिना किसी बुरी इच्छा के ज्ञान को एक करने के तौर पर ध्यान भटकना ही शांति की शक्ति है... [और इसी तरह Tr. 1 §442 में बताए गए सभी विचारों के साथ]... त्याग के बारे में सोचते हुए सांस बाहर छोड़ने के ज़रिए ज्ञान को एक करने के तौर पर ध्यान भटकना ही शांति की शक्ति है।

किस अर्थ में शांति शक्ति?

शांति की शक्ति क्या है? त्याग के ज़रिए ज्ञान को एक करने के तौर पर ध्यान भटकना ही शांति की शक्ति है... [रिपीट Tr. 1 §452] त्याग ... के बारे में सोचते हुए सांस बाहर छोड़ने के ज़रिए ज्ञान को एक करने के तौर पर ध्यान भटकना ही शांति की शक्ति है।

20. किस तरह से शांति एक शक्ति है? पहले ज्ञान के ज़रिए यह रुकावटों से हिलती नहीं है, इसलिए शांति एक शक्ति है... ... (दोहराएँ Tr. I §453] न तो समझ और न ही गैर-समझ वाले आधार को पाने से यह शून्यता वाले आधार की समझ से हिलती नहीं है, इसलिए शांति एक शक्ति है।

यह अटल है, अचल है और इसे हलचल और हलचल के साथ आने वाली गंदगी और जमाव से हिलाया नहीं जा सकता, इसलिए शांति एक शक्ति है।

यह शांति की शक्ति है।

21. इनसाइट पावर क्या है? नश्वरता का चिंतन एक शक्ति के रूप में इनसाइट है, [रिपीट Tr. 1 §454]...बुढ़ापे और मृत्यु में त्याग का चिंतन एक शक्ति के रूप में इनसाइट है।

22. किस अर्थ में अंतर्दृष्टि एक शक्ति है? नश्वरता के चिंतन के माध्यम से यह स्थायित्व की धारणा से अडिग है, इस प्रकार अंतर्दृष्टि एक शक्ति है। [दोहराएँ Tr. 1 §455]... त्याग के चिंतन के माध्यम से यह लोभ द्वारा अडिग है, इस प्रकार अंतर्दृष्टि एक शक्ति है। [173]

यह अटल है, अचल है और इसे अज्ञानता और अज्ञानता के साथ आने वाली बुराइयों और जमाव से हिलाया नहीं जा सकता, इसलिए समझ एक शक्ति है।

यह अंतर्दृष्टि शक्ति है।

23. दीक्षा लेने वाले की दस शक्तियाँ और माहिर की दस शक्तियाँ क्या हैं? वह सही नज़रिए की ट्रेनिंग (सिक्खति) लेता है, इसलिए यह दीक्षा लेने वाले की शक्ति (सेखा) है; क्योंकि वह इसमें ट्रेनिंग (सिक्खितत्ता) लेता है, इसलिए यह माहिर (असेखा) की शक्ति है। वह सही सोच की ट्रेनिंग देता है, इसलिए यह दीक्षा लेने वाले की शक्ति है; क्योंकि वह इसमें ट्रेनिंग पाता है, इसलिए यह माहिर की शक्ति है। वह सही बोलने की ट्रेनिंग देता है,... वह सही काम करने की ट्रेनिंग देता है,... वह सही जीने की ट्रेनिंग देता है,... वह सही कोशिश की ट्रेनिंग देता है,... वह सही ध्यान की ट्रेनिंग देता है,... वह सही ध्यान की ट्रेनिंग देता है,... वह सही ज्ञान की ट्रेनिंग देता है,... वह सही मुक्ति की ट्रेनिंग देता है, इसलिए यह दीक्षा लेने वाले की शक्ति है; क्योंकि वह इसमें ट्रेनिंग पाता है, इसलिए यह माहिर की शक्ति है। ये दीक्षा लेने वाले की दस शक्तियाँ और माहिर की दस शक्तियाँ हैं।

24. जिसके नासूर ख़त्म हो गए हैं, उसकी दस ताकतें क्या हैं?

यहाँ एक भिक्षु जिसके नासूर खत्म हो गए हैं, उसने सही समझ के साथ सभी रचनाओं को अस्थायी के रूप में साफ-साफ देखा है। उसने ऐसा किया है, यह उस व्यक्ति की शक्ति है जिसके नासूर खत्म हो गए हैं, इसी शक्ति के कारण एक भिक्षु जिसके नासूर खत्म हो गए हैं, नासूरों के खत्म होने का दावा इस तरह करता है: 'मेरे नासूर खत्म हो गए हैं'।

25. फिर, एक भिक्षु जिसका नासूर खत्म हो गया है, उसने सही समझ के साथ कामुक इच्छाओं को गर्म कोयले के गड्ढे की तरह साफ-साफ देखा है। इसमें उसने ऐसा किया है, [पूरा करें जैसा कि §24 में है]।

पुनः जब भिक्षु का मन तृप्त हो जाता है तो उसका ध्यान एकांतवास की ओर प्रवृत्त होता है, एकांतवास में स्थित हो जाता है, त्याग में आनंदित होता है, और मन तृष्णाओं को उत्पन्न करने वाले विचारों से पूरी तरह मुक्त हो जाता है। ऐसा करने से,... [174]

27. फिर, एक भिक्षु जिसके नासूर थक गए हैं, उसने माइंडफुलनेस के चार आधार विकसित कर लिए हैं, उन्हें अच्छी तरह से विकसित कर लिया है। इसमें उसने ऐसा किया,... 28.

फिर, एक भिक्षु जिसके नासूर खत्म हो गए हैं, उसने चार सही कोशिशों को डेवलप कर लिया है, उन्हें अच्छी तरह से डेवलप कर लिया है। इसमें उसने कि,... 29.

फिर, एक भिक्षु जिसके नासूर खत्म हो गए हैं, उसने सफलता के चार आधार (पावर के रास्ते) डेवलप कर लिए हैं, उन्हें अच्छी तरह डेवलप कर लिया है। इसमें उसने यह किया है कि.....

30. फिर, एक भिक्षु जिसके नासूर खत्म हो गए हैं, उसने पाँचों शक्तियों को विकसित कर लिया है, उन्हें अच्छी तरह से विकसित कर लिया है। इसमें उसने ऐसा किया है,...

31. फिर, एक भिक्षु जिसके नासूर खत्म हो गए हैं, उसने पाँचों शक्तियों को विकसित कर लिया है, उन्हें अच्छी तरह से विकसित कर लिया है। इसमें उसने ऐसा किया है....

32. फिर, एक भिक्षु जिसके नासूर खत्म हो गए हैं, उसने सात ज्ञान के फैक्टर्स को डेवलप कर लिया है, उन्हें अच्छी तरह से डेवलप कर लिया है। इसमें उसने ऐसा किया है,...

33. फिर, जिस भिक्षु के नासूर खत्म हो गए हैं, उसने महान अष्टांग मार्ग को विकसित कर लिया है, उसे अच्छी तरह से विकसित कर लिया है। उसने ऐसा किया है,... ये उस व्यक्ति की दस शक्तियाँ हैं जिसके नासूर खत्म हो गए हैं।

34. सफलता की दस शक्तियां (सुपरनॉर्मल पावर) क्या हैं?

निर्णय के रूप में सफलता, परिवर्तन के रूप में सफलता, मन-निर्मित [शरीर] के रूप में सफलता, ज्ञान के हस्तक्षेप से सफलता, एकाग्रता के हस्तक्षेप से सफलता, महानुभावों की सफलता, क्रिया-परिणाम से पैदा हुई सफलता, मेधावी की सफलता, विज्ञान के माध्यम से सफलता, किसी विशेष अवसर के लिए सही कार्य में सफल होने के अर्थ में सफलता (देखें Tr. XXII § §4ff.).

ये सफलता की दस शक्तियां हैं।

35. पूर्ण परमात्मा की दस शक्तियां क्या हैं?

यहाँ परफ़ेक्ट वन सही ढंग से मुमकिन को मुमकिन और नामुमकिन को नामुमकिन समझता है। जब वह ऐसा करता है, तो यह परफ़ेक्ट वन की एक शक्ति होती है, जिस शक्ति के कारण परफ़ेक्ट वन लीडर की जगह लेता है, सभाओं में शेर की तरह दहाड़ता है और बेमिसाल चक्र को घुमाता है।

36. पुनः, पूर्ण पुरुष भूत, भविष्य और वर्तमान कर्म-दायित्वों के परिणाम को उनकी संभावनाओं और कारणों के साथ सही ढंग से समझता है। [175] वह ऐसा करता है, इसका मतलब यह है...

37. फिर से, परफ़ेक्ट वन सही ढंग से समझता है कि सभी रास्ते कहाँ ले जाते हैं। वह ऐसा करता है,...

38. फिर से, परफेक्ट वन दुनिया को उसके कई और अलग-अलग सिद्धांतों के साथ सही ढंग से समझता है। जब वह ऐसा करता है,...

39. फिर से, परफेक्ट वन जीवों के अलग-अलग संकल्पों को सही ढंग से समझता है। जब वह ऐसा करता है,...

40. फिर से, परफेक्ट वन दूसरे जीवों, दूसरे लोगों में क्षमताओं के स्वभाव को सही ढंग से समझता है। जब वह ऐसा करता है,...

41. फिर से, पूर्ण पुरुष ज़ाना, मुक्ति, एकाग्रता और प्राप्ति में भ्रष्टाचार, सफाई और उद्भव को सही ढंग से समझता है। इसमें वह ऐसा करता है,...

42. फिर से, परफेक्ट वन अपने कई पिछले जन्मों को याद करता है, यानी: एक जन्म,... (और इसी तरह Tr. I §542 में है)... इस तरह इसके पहलुओं और खासियतों के साथ वह अपने कई पिछले जन्मों को याद करता है। इसमें वह ऐसा करता है....

43. फिर, दिव्य नेत्र वाला पूर्ण पुरुष, जो शुद्ध और सूरमा है- . . . [और इस तरह इंसान गुज़रता है, जीवों को गुज़रते और फिर से दिखाई देते हुए देखता है, जैसा कि Tr. 1 §548 में है]... जीवों को उनके कर्मों के अनुसार आगे बढ़ते हुए समझता है।
[176] ऐसा करके वह,... 44. फिर से, खुद को प्रत्यक्ष-ज्ञान के ज़रिए महसूस करके, पूर्ण एक यहाँ और अभी इच्छा की मुक्ति और समझ की मुक्ति में प्रवेश करता है और उसमें रहता है जो कि कैंकर के खत्म होने से कैंकर-मुक्त हो जाती है। ऐसा करके वह, . . .

ये पूर्ण परमात्मा की दस शक्तियां हैं।

*

45. किस अर्थ में विश्वास शक्ति है?
किस अर्थ में एनर्जी पावर?
किस अर्थ में माइंडफुलनेस पावर?
किस अर्थ में कंसंट्रेशन पावर?
शक्ति को किस अर्थ में समझना है?
किस अर्थ में विवेक शक्ति?
किस मायने में सत्ता को शर्मसार किया जाए?
किस अर्थ में रिफ्लेक्शन पावर?
किस अर्थ में विकास शक्ति?
किस अर्थ में बेदाग़ शक्ति?
किस अर्थ में सहायता शक्ति?
किस अर्थ में चुनने की शक्ति?
किस अर्थ में रेडीनेस पावर?
किस अर्थ में नोटिफ़िकेशन पावर?
किस अर्थ में प्रभुता शक्ति?
स्टेबिलिटी पावर किस मायने में?
किस अर्थ में शांति शक्ति?
किस अर्थ में अंतर्दृष्टि शक्ति?
किस अर्थ में दीक्षा लेने वाले की शक्तियाँ?
किस अर्थ में माहिर की शक्तियाँ?
किस अर्थ में जिसकी शक्तियाँ समाप्त हो गई हैं?
किस अर्थ में सफलता की शक्तियाँ (सुपरनॉर्मल पावर)?
किस अर्थ में पूर्ण परमेश्वर की शक्तियाँ?
विश्वास की शक्ति का मतलब है अविश्वास से भी स्थिर रहना।
एनर्जी पावर का मतलब है आलस्य से स्थिर रहना।
माइंडफुलनेस पावर का मतलब है लापरवाही से भी स्थिर रहना।
कॉन्संट्रेशन पावर का मतलब है हलचल से स्थिर रहना।
समझने की शक्ति अज्ञानता से अडिग रहने के अर्थ में है।
इसमें बुरे और बेकार विचारों के बारे में गहरी शंकाएं हैं, इसलिए यह विवेक की शक्ति है।

यह बुरे और बेकार विचारों से शर्मिंदा है, इसलिए यह शर्म की शक्ति है।
यह ज्ञान के साथ गंदगी पर रिफ्लेक्ट करता है, इसलिए यह रिफ्लेक्स पावर है।
इसमें पैदा हुए आइडिया का एक ही काम (टेस्ट) होता है, इसलिए यह डेवलपमेंट पावर है।
वहाँ कुछ भी दोष नहीं है, इसलिए यह दोषहीनता की शक्ति है।
इस तरह यह समझने में मदद करता है, इसलिए यह मदद करने वाली शक्ति है।
वह उसे चुनता है, इसलिए यह चॉइस पावर है।
वह उससे ज्ञान को तैयार करता है, इसलिए यह तत्परता शक्ति है।
वह उससे जानकारी देता है, इसलिए यह नोटिफ़िकेशन पावर है।
वह इसके साथ ज्ञान पर महारत हासिल करता है, इसलिए यह प्रभुत्व शक्ति है।
वह उसके साथ अपनी समझ को स्थिर करता है, इसलिए यह स्थिरता शक्ति है।
इससे ज्ञान एक हो जाता है, इसलिए यह शांति शक्ति है।
वह उसमें पैदा हुए विचारों पर सोचता है, इसलिए यह समझ की शक्ति है।
वह उसमें ट्रेनिंग देता है, इस तरह यह दीक्षा लेने वाले की शक्ति है।
थेरसिन की ट्रेनिंग होने की वजह से यह माहिर लोगों की ताकत है।
इससे नासूर खत्म हो जाते हैं, इस तरह यह उसी की ताकत है जिसके नासूर खत्म हो गए हैं।
यही उसकी सफलता है, इसलिए यह सफलता की शक्ति है। एक परफेक्ट इंसान की शक्ति नापने की शक्ति के अर्थ में होती है।

शक्तियों पर ग्रंथ।



नोट्स

"खान्ति-बल (चॉइस पावर)" का मतलब है जो सहना मुश्किल है, उसे सहना' (PsA 44 Se), जो चॉइस के बजाय सहनशीलता का सुझाव देता है। लेकिन "खमाति (चुनता है)": -तस्सा योगिस्स खमाति रुक्काति (उस ध्यान करने वाले के पास वह चॉइस, वह पसंद है)' (PsA 450), जो सब्र के बजाय चॉइस का सुझाव देता है।

इसके अलावा "पन्नापेटी (तैयार करता है)" का मतलब है 'कंटेंट बनाता है' (PSA 450) और "निज्जापेटी (सूचित करता है)" का मतलब है सोचने का कारण बनता है (इच्छा करना)" (PsA 450)।

[2] संरचना के लिए Tr. IX §I देखें।

[3] §2 पर कमेंट करते हुए, PSA (पेज 449) में लिखा है, 'खंतीबला उन चीज़ों को सहना है जिन्हें सहना मुश्किल है (दुखमा)' जिसका मतलब है खंती, जिसका मतलब सब्र है; लेकिन यह §14 में फिट नहीं बैठता।

1. [177] 'ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान सावत्थी में जेत के कुंज, अनाथपिंडिका के उद्यान में निवास कर रहे थे। तब आदरणीय आनंद भगवान के पास गए और उन्हें प्रणाम करके एक ओर बैठ गए। ऐसा करने के बाद उन्होंने भगवान से पूछा: 'आदरणीय महोदय, "संसार शून्य है, संसार शून्य है" कहा जाता है। संसार किस प्रकार शून्य है?'

'क्योंकि यह खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों से खाली है, इसलिए "दुनिया खाली है" आनंद ने कहा। और ऐसा क्या है जो खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों से खाली है? आँख खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों से खाली है, दिखने वाली चीज़ें खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों से खाली हैं, आँखों की चेतना खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों से खाली है, आँखों का संपर्क खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों से खाली है; और आँखों के संपर्क से पैदा होने वाली कोई भी भावना, चाहे वह अच्छी हो या बुरी या न बुरी, न अच्छी, वह भी खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों से खाली है। कान खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों, आवाज़ों से खाली है.. नाक खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों, गंधों से खाली है... जीभ खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों, स्वादों से खाली है... शरीर खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों, दिखने वाली चीज़ों से खाली है... मन खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों, विचारों से खाली है। मन की चेतना... मन का संपर्क... मन के संपर्क से पैदा होने वाली कोई भी भावना, चाहे वह अच्छी हो या बुरी या न बुरी, न बुरी, वह भी खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों से खाली होती है। क्योंकि यह खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों से खाली है, इसलिए कहा जाता है "दुनिया खाली है" (S iv 54)।

2. शून्यता के रूप में शून्यता है, संरचनाओं की शून्यता, परिवर्तन में शून्यता, सर्वोच्च शून्यता, विशेषता से शून्यता।

दमन से शून्यता होती है, विपरीतताओं के प्रतिस्थापन से शून्यता होती है, काट देने से शून्यता होती है, शांति से शून्यता होती है, पलायन के रूप में शून्यता होती है। [178]

आंतरिक शून्यता है, बाह्य शून्यता है, दोनों तरह से शून्यता है।

समान शून्यता है, भिन्न शून्यता है।

खोज में शून्यता है, आलिंगन में शून्यता है, प्राप्ति में शून्यता है, प्रवेश में शून्यता है।

एकता में शून्यता है, भिन्नता में शून्यता है।

चुनाव में शून्यता है, स्थिरता में शून्यता है, थाह लेने में शून्यता है, और सभी प्रकार की शून्यता के अंतिम अर्थ में शून्यता है, जो कि पूर्ण जागरूक [अरहंत] में घटना का समापन है।

3. शून्यता के रूप में शून्यता क्या है?

आँख स्वयं से या उससे जो स्वयं का है या जो स्थायी है उससे शून्य है

हमेशा रहने वाला या हमेशा रहने वाला या बदलने वाला नहीं। कान... नाक... जीभ... शरीर...मन स्वयं से या उससे जो स्वयं से संबंधित है या जो स्थायी या शाश्वत या शाश्वत या अपरिवर्तनीय है, उससे शून्य है।

यह शून्यता ही शून्यता है।

4. संरचनाओं की शून्यता क्या है?

तीन तरह के बनते हैं: अच्छाई का बनना, बुराई का बनना, और शांति का बनना।

मेरिट बनने में डिमेरिट बनने और इफ़र्टेबलनेस बनने का कोई नियम नहीं है। डिमेरिट बनने में मेरिट बनने और इफ़र्टेबलनेस बनने का कोई नियम नहीं है। इफ़र्टेबलनेस बनने में मेरिट बनने और इफ़र्टेबलनेस बनने का कोई नियम नहीं है।

ये तीन तरह के फॉर्मेशन हैं।

तीन और तरह के फॉर्मेशन हैं: बॉडी फॉर्मेशन, स्पीच फॉर्मेशन, और कॉग्निजेंस फॉर्मेशन।

बॉडी बनाने में स्पीच बनाने और कॉग्निजेंस बनाने की ज़रूरत नहीं होती। स्पीच बनाने में बॉडी बनाने और कॉग्निजेंस बनाने की ज़रूरत नहीं होती। कॉग्निजेंस बनाने में बॉडी बनाने और स्पीच बनाने की ज़रूरत नहीं होती।

ये तीन तरह के फॉर्मेशन हैं।

तीन और तरह के फॉर्मेशन हैं: पिछले फॉर्मेशन, भविष्य के फॉर्मेशन, और अभी बने हुए फॉर्मेशन।

पिछली बनावटें भविष्य और अभी बनी बनावटों से खाली होती हैं।" भविष्य की बनावटें पिछली बनावटों और अभी बनी बनावटों से खाली होती हैं। अभी बनी बनावटें पिछली बनावटों और भविष्य की बनावटों से खाली होती हैं।

ये तीन तरह के फॉर्मेशन हैं।

यह बनावटों का खालीपन है।

5. बदलाव में खालीपन क्या है? पैदा हुआ मैटेरियलिटी इंडिविजुअल एसेंस से खाली होता है'; गायब हुआ मैटेरियलिटी बदला हुआ और खाली दोनों होता है। पैदा हुआ फीलिंग इंडिविजुअल एसेंस से खाली होता है; गायब हुआ फीलिंग बदला हुआ और खाली दोनों होता है। बॉम परसेप्शन... (और इसी तरह Tr. I §5 में लिस्टेड 201 आइडिया में से 199 के साथ, डिपेंडेंट ओरिजिनेशन के आखिरी दो मेंबर को छोड़कर, तक]... बॉम बीइंग इंडिविजुअल एसेंस से खाली होता है; [179] गायब हुआ बीइंग बदला हुआ और खाली दोनों होता है।

6. परम शून्यता क्या है? यह विचार सर्वोच्च है, यह विचार सबसे अच्छा है, यह विचार उत्कृष्ट है, यानी सभी रचनाओं का शांत हो जाना, अस्तित्व के सभी आधारों का त्याग, लालसा का खत्म होना (नाश), लालच का खत्म होना, समाप्ति, निब्बान।

यह परम शून्यता है।

7. शून्यता की खासियत क्या है?

दो तरह के गुण होते हैं: मूर्ख का गुण और बुद्धिमान का गुण। मूर्ख का गुण बुद्धिमान के गुण से रहित होता है, और बुद्धिमान का गुण मूर्ख के गुण से रहित होता है (A i 102)।

तीन प्रकार की विशेषताएँ हैं: उत्पन्न होने की विशेषता, पतन की विशेषता और वर्तमान में परिवर्तन की विशेषता। उत्पन्न होने की विशेषता पतन की विशेषता और वर्तमान में परिवर्तन की विशेषता से रहित है। पतन की विशेषता उत्पन्न होने की विशेषता और वर्तमान में परिवर्तन की विशेषता से रहित है। वर्तमान में परिवर्तन की विशेषता उत्पन्न होने की विशेषता और पतन की विशेषता से रहित है।

भौतिकता की पैदा होने की खासियत, उसके गिरने की खासियत और जो मौजूद है उसके बदलने की खासियत से खाली है; भौतिकता की गिरने की खासियत, उसके उठने की खासियत और जो मौजूद है उसके बदलने की खासियत से खाली है; भौतिकता की जो मौजूद है उसके बदलने की खासियत, उसके उठने की खासियत और गिरने की खासियत से खाली है। भावना की पैदा होने की खासियत... (और इसी तरह Tr. I §5 तक लिस्टेड बाकी सभी 201 आइडिया के साथ)... बुढ़ापे और मौत की जो मौजूद है उसके बदलने की खासियत, उसके उठने की खासियत और गिरने की खासियत से खाली है।

-यह खासियत से खालीपन है।

8. दमन से शून्यता क्या है?

त्याग से कामुक इच्छाओं का जोश दब जाता है और खत्म हो जाता है। बुरी इच्छा को दबा दिया जाता है और वह बिना बुरी इच्छा के खत्म हो जाती है... (और इसी तरह बाकी सात रुकावटों और उनके उलट, चार ज्ञान, चार गैर-भौतिक उपलब्धियां, अठारह मुख्य समझ, और चार रास्ते, तक)... अरहंत रास्ते से सभी बुराइयां दबा दी जाती हैं और खत्म हो जाती हैं।

यह दमन द्वारा शून्यता है। [180]

9. विपरीत के प्रतिस्थापन से शून्यता क्या है?

त्याग से कामुक इच्छाओं के लिए जोश, उस उलटे को बदलने से खत्म हो जाता है। बिना बुरी इच्छा के, उस उलटे को बदलने से बुरी इच्छा खत्म हो जाती है... [और इसी तरह ऊपर बताए गए, चारों रास्तों को छोड़कर, यहाँ तक]... बंधन की वजह से गलतफहमियों को दूर करने के चिंतन से, उस उलटे को बदलने से वह खत्म हो जाती है।

यह विपरीत चीज़ों के बदले शून्यता है।

10. काटकर शून्यता क्या है?

त्याग से कामुक इच्छाओं का जोश खत्म हो जाता है और खत्म हो जाता है। अविद्या से... [इतने पर्यन्त]... अरहंत मार्ग से सभी विकार कट जाते हैं और शून्य हो जाते हैं।

यह काटकर खालीपन है।

11. ट्रैंक्विलाइज़ेशन से शून्यता क्या है?

त्याग से कामुक इच्छाओं का जोश शांत और खत्म हो जाता है। गैर-बुराई से... [और इसी तरह आगे तक]... अरहंत मार्ग से सभी बुराइयां शांत और खत्म हो जाती हैं।

यह ट्रैंक्विलाइज़ेशन से शून्यता है।

12. बचने का तरीका शून्यता क्या है?

त्याग से इन्द्रिय-वासनाओं के प्रति उत्साह से मुक्ति भी मिलती है और वह शून्य भी हो जाता है। अविद्या से... (इत्यादि आगे तक) [181]... अरहंत मार्ग से समस्त रचनाएँ से मुक्ति भी मिलती है और शून्य भी हो जाती हैं।

यह शून्यता ही पलायन है।

13. आंतरिक शून्यता क्या है?

आंतरिक रूप से आँख स्वयं से या उससे जो स्वयं का है या जो स्थायी या शाश्वत या शाश्वत या अपरिवर्तनीय है, उससे शून्य है। आंतरिक रूप से कान... आंतरिक रूप से नाक... आंतरिक रूप से जीभ... आंतरिक रूप से शरीर... आंतरिक रूप से मन स्वयं से या उससे जो स्वयं का है या जो स्थायी या शाश्वत या शाश्वत या अपरिवर्तनीय है, उससे शून्य है।

यह अंदरूनी खालीपन है।

14. बाहरी शून्यता क्या है?

बाहर से दिखने वाली चीज़ें खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों से या जो परमानेंट या हमेशा रहने वाली या हमेशा रहने वाली या न बदलने वाली हैं, उनसे खाली होती हैं। बाहर से आवाज़ें... बाहर से महक... बाहर से स्वाद... बाहर से दिखने वाली चीज़ें। बाहर से विचार खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों से या जो परमानेंट या हमेशा रहने वाली या हमेशा रहने वाली या न बदलने वाली हैं, उनसे खाली होते हैं।

यह बाहरी शून्यता है।

15. दोनों तरह से शून्यता क्या है?

अंदर से आँख और बाहर से दिखने वाली चीज़ें, दोनों ही खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों से या जो हमेशा रहने वाली या शाश्वत या कभी न बदलने वाली है, उससे खाली हैं। अंदर से कान और बाहर से आवाज़ें... अंदर से नाक और बाहर से बदबू। अंदर से ज़बान और बाहर से स्वाद... अंदर से शरीर और बाहर से दिखने वाली चीज़ें... अंदर से मन और बाहर से विचार, दोनों ही खुद से या खुद से जुड़ी चीज़ों से या जो हमेशा रहने वाली या शाश्वत या कभी न बदलने वाली है, उससे खाली हैं।

यह दोनों तरह से शून्यता है।

16. समान शून्यता क्या है?

छह अंदरूनी बेस एक जैसे और खाली दोनों हैं। छह बाहरी बेस एक जैसे और खाली दोनों हैं। चेतना के छह ग्रुप एक जैसे और खाली दोनों हैं। संपर्क के छह ग्रुप एक जैसे और खाली दोनों हैं। भावना के छह ग्रुप एक जैसे और खाली दोनों हैं। समझ के छह ग्रुप एक जैसे और खाली दोनों हैं। इच्छा के छह ग्रुप एक जैसे और खाली दोनों हैं।

यह भी वैसी ही शून्यता है।

17. भिन्न शून्यता क्या है?

छह आंतरिक आधार छह बाहरी आधारों से भिन्न और रहित हैं। छह बाहरी आधार चेतना के छह समूहों से भिन्न और रहित हैं। चेतना के छह समूह संपर्क के छह समूहों से भिन्न और रहित हैं। संपर्क के छह [182] समूह भावना के छह समूहों से भिन्न और रहित हैं। भावना के छह समूह धारणा के छह समूहों से भिन्न और रहित हैं। धारणा के छह समूह इच्छा के छह समूहों से भिन्न और रहित हैं।

यह अलग तरह की सच्चाई है।

1.8. खोज में शून्यता क्या है?

त्याग की खोज में कामुक इच्छाओं का जोश नहीं होता। विपरीत की खोज, चार ज्ञान, चार अमूर्त उपलब्धियां, अठारह मुख्य समझ, और चार रास्ते, ज... अरहंत मार्ग की खोज सभी बुराइयों से रहित है। सभी बुराइयों से रहित।

यह खोज में शून्यता है।

19. आलिंगन में शून्यता क्या है?

त्याग को अपनाने से वासनाओं की इच्छा नहीं होती। मार्ग सभी बुराइयों . . अरहंत को अपनाने से वैराग्य का से रहित होता है।

यह गले लगाने में खालीपन है।

20. प्राप्ति में शून्यता क्या है?

त्याग की प्राप्ति में कामुक इच्छाओं की उत्तेजना नहीं होती। अरुचि की प्राप्ति में सभी दोषों से . . मुक्ति होती है। अरहंत मार्ग की प्राप्ति में सभी दोषों से मुक्ति होती है।

यह प्राप्ति में शून्यता है।

21. पेनिट्रेशन में वॉइडनेस क्या है?

त्याग का प्रवेश कामुक इच्छाओं के जोश से रहित है। अ-बुराई का प्रवेश... (और इसी तरह)... अरहंत मार्ग का प्रवेश सभी दोषों से रहित है।

यह प्रवेश में शून्यता है. [183]

22. एकता में शून्यता और भिन्नता में शून्यता क्या है?

इंद्रिय-इच्छाओं के लिए जोश अंतर है और त्याग एकता है; त्याग की एकता चाहने वाले में इंद्रिय-इच्छाओं के लिए जोश की शून्यता होती है। बुरी इच्छा अंतर है... [और इसी तरह)... सभी बुराइयां अंतर हैं और अरहंत मार्ग एकता है; अरहंत मार्ग चाहने वाले में सभी बुराइयां शून्यता होती है।

यह एकता में शून्यता और भिन्नता में शून्यता है।

23. चुनाव में शून्यता क्या है?

त्याग का चुनाव कामुक इच्छाओं के प्रति उत्साह से रहित है।

गैर-दुर्भावना [इत्यादि)... अरहंत मार्ग का चुनाव सभी दोषों से रहित है।

यह चुनाव में शून्यता है।

24. स्थिरता में शून्यता क्या है?

त्याग की स्थिरता में कामुक इच्छाओं का जोश नहीं होता। बुराई न करने की स्थिरता... [वगैरह)... अरहंत मार्ग की स्थिरता में सभी बुराइयों का असर नहीं होता।

यह स्थिरता में शून्यता है।

25. थाह लेने में शून्यता क्या है?

त्याग को समझना इन्द्रिय-इच्छाओं के जोश से रहित है। वैराग्य को समझना। [और इसी तरह]... अरहंत मार्ग को समझना सभी दोषों से रहित है।

यह समझ में शून्यता है।

26. सभी प्रकार की शून्यता का अंतिम अर्थ शून्यता क्या है, जो कि पूर्ण जागरूक अरहंत में घटना का अंत है?

यहाँ (इसी जीवन के बचे हुए हिस्से में) त्याग के ज़रिए जो पूरी तरह से जागरूक है, वह कामुक इच्छाओं के जोश को खत्म कर देता है; बुरी नीयत न होने से वह बुरी नीयत को खत्म कर देता है; प्रकाश को महसूस करके... [और इसी तरह)... अरहंत मार्ग के ज़रिए वह सभी बुराइयों को खत्म कर देता है।

या फिर, निब्बान सिद्धांत के ज़रिए, बिना (अतीत का नतीजा) चिपके हुए, जो पूरी तरह से जागरूक है, उसमें आँख का यह होना खत्म हो जाता है और आँख का फिर से होना नहीं होता; कान का यह होना... नाक का... जीभ का... शरीर का... मन का यह होना खत्म हो जाता है और मन का फिर से होना नहीं होता।

यह सभी तरह की शून्यता का आखिरी मतलब है शून्यता, जो (अरहंत) में होने वाली घटना का खत्म होना है, जो पूरी तरह से जागरूक

शून्यता पर ग्रंथ।



कपलिंग पर सेकंड डिवीज़न खत्म।

उस डिवीज़न के कंटेंट की लिस्ट यहाँ दी गई है:

युग्मन, वास्तविकताएं, ज्ञान-कारक,
दयालुता, और पांचवें के रूप में लुप्त होती,
भेदभाव, सच्चे विचार का पहिया,
अलौकिक, शक्तियां और शून्यता।

नोट्स

[1] ऐसा लगता है कि सभाव (व्यक्तिगत सार) शब्द के लिए यह एकमात्र पिटक संदर्भ है। "व्यक्तिगत सार से शून्य": यहाँ सभाव (व्यक्तिगत सार) सयं भावो (स्वयं सार) है; स्वयं से उत्पन्न होना (सयं एव उपपदों) इसका अर्थ है। या सभाव सको भावो (अपना सार) है; स्वयं उत्पन्न होना (अत्तनो येव उपपदों)। परिस्थितियों पर निर्भर अस्तित्व के कारण (पच्चयायत्तवुत्तित्त) इसमें स्वयं कोई सार या अपना सार नहीं है, इस प्रकार यह "व्यक्तिगत सार से शून्य" है। इसका अर्थ है कि यह स्वयं सार या अपने सार से शून्य है। या फिर यह वह सार है जो स्वयं में है (शकस्सा भावो); क्योंकि पृथ्वी सिद्धांत से शुरू होने वाले विभिन्न विचारों में से प्रत्येक एक विचार स्वयं है (सको), और हर एक आइडिया में कोई दूसरा आइडिया नहीं होता जिसे "एसेंस" कहा जाता है, इसलिए वह खुद के अलावा किसी और एसेंस से खाली होता है: इसका मतलब है कि वह खुद किसी दूसरे एसेंस से खाली होता है। इसलिए इसका मतलब है कि एक आइडिया का एक ही इंडिविजुअल एसेंस होता है। या फिर "इंडिविजुअल एसेंस से खाली" (सभावेन सुन्नन) को खालीपन को अपना इंडिविजुअल एसेंस मानकर खाली माना जाता है (सुन्नासभावेन सुन्नन)। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है खालीपन-जैसी-खालीपन के कारण खाली होना, न कि किसी दूसरे तरह के दिखावटी वॉयनेस के कारण खाली होना। लेकिन अगर कोई कहे: 'अपना एसेंस इंडिविजुअल एसेंस है; यह उस इंडिविजुअल एसेंस से खाली है। इसका क्या मतलब है? एक आइडिया को "एसेंस" कहा जाता है; उस (एसेंस (भावो)) को किसी दूसरे की तुलना में "इंडिविजुअल" (स) प्रीफिक्स से पहचाना जाता है और इसलिए उसे "इंडिविजुअल एसेंस" (स-भावो) कहा जाता है। किसी भी विचार के न होने की वजह से, चाहे वह कुछ भी हो, भौतिकता का न होना, जिसे "जन्म भौतिकता व्यक्तिगत सार से रहित है" शब्दों से बताया गया है। इस पर इस तरह तर्क दिया जाना चाहिए: कि ऐसा होने पर, 'जन्म भौतिकता' शब्द उलटे होंगे; क्योंकि जो उत्पन्न नहीं होता उसे "जन्म" नहीं कहा जाता। क्योंकि निब्बान उत्पन्न नहीं होता और उसे 'जन्म' नहीं कहा जाता। इसलिए यहाँ केवल जन्म ही व्यक्तिगत सार के रूप में जन्म से रहित होगा, और यह कहने के बजाय कि 'जन्म और बुढ़ापा-और-मृत्यु व्यक्तिगत सार से रहित हैं', विवरण 'होने' के साथ खत्म होगा। अगर 'जन्म' (विजाता) शब्द उस चीज़ पर लागू होता जो उत्पन्न नहीं होती, तो 'जन्म जन्म' और 'जन्म बुढ़ापा-और-मृत्यु' कहना पड़ता। क्योंकि 'जन्म' शब्द जन्म और जरा-मृत्यु के लिए लागू नहीं होता, जो कि उत्पत्ति से रहित हैं, इसलिए 'व्यक्तिगत सार से रहित का अर्थ है अस्तित्वहीन' शब्द 'जन्म' शब्द का खंडन करते हैं क्योंकि जो अस्तित्वहीन है, वह उत्पत्ति से रहित है। और जो अस्तित्वहीन है उसके लिए 'शून्य' शब्द भगवान द्वारा ऊपर 'संसार' के लिए प्रयोग किए गए शब्द का तथा तर्क तथा भाषाविज्ञान (नयसद्दगंथ) की पुस्तकों के शब्दों का खंडन करता है; और यह अनेक तार्किक तर्कों का खंडन करता है। इसलिए उस कथन को बकवास मानकर खारिज कर देना चाहिए। बुद्ध वचन में ऐसे अनेक अंशों में जैसे कि यह 'भिक्षुओं, संसार के ऋषि जो कहते हैं कि नहीं है, उसके बारे में भी मैं कहता हूं कि वह नहीं है; दुनिया में ऋषि जो कहते हैं, उसके बारे में भी मैं कहता हूँ कि वह है... दुनिया में ऋषि नश्वर, दर्दनाक और बदलने वाली चीज़ों के बारे में कहते हैं कि वह है, और मैं भी उसके बारे में कहता हूँ कि वह है' (S iii 138-9), और कई लॉजिकल तर्कों में, विचार अपने ही पलों में मौजूद होते हैं' (Sdhp 460-1 Se, sce P.T.S. edn. pp. 634-5).

**विगतं रूपं-गायब हुई चीज़': 'गायब' (विगाता) शब्द के लिए 'गायब होने की हालत' (विगाता-पच्चया) देखें (TkP 1)..

[3] Read *ghānapavattaṁ*.

*इस पैसेज (P.T.S. edn. p. 638) पर कमेंट्री के ट्रांसलेशन के लिए Vism Trsl. Ch. XVI n. 25 देखें।

[तीसरा भाग, समझने पर ग्रंथ XXI. -
महान समझ पर]

1. [185] नश्वरता का चिंतन, जब विकसित किया जाता है और इस पर अधिक ध्यान दिया जाता है, तो किस प्रकार की समझ को पूर्ण करता है?

दर्द के बारे में सोचना, जब इसे बढ़ाया जाता है और इस पर बहुत ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो इससे किस तरह की समझ बनती है?

जब 'न-स्व' के बारे में सोचा जाता है और उस पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो इससे किस तरह की समझ पूरी होती है?

वैराग्य का चिंतन, जब विकसित किया जाता है और उस पर बहुत ध्यान दिया जाता है, तो किस तरह की समझ को पूरा करता है?

जब खत्म होने के बारे में सोचा जाता है और उसे बहुत ज़्यादा महत्व दिया जाता है, तो इससे किस तरह की समझ पूरी होती है?

जब समाप्ति के बारे में सोचा जाता है और उस पर बहुत ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो इससे किस तरह की समझ पूरी होती है?

त्याग के बारे में सोचना, जब इसे बढ़ाया जाता है और इस पर बहुत ध्यान दिया जाता है, तो इससे किस तरह की समझ पूरी होती है?

नश्वरता के बारे में सोचना, जब इसे बढ़ाया जाता है और इस पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो यह तुरंत समझ को बेहतर बनाता है।

दर्द पर सोचने से, जब उसे बढ़ाया जाता है और उस पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो गहरी समझ बनती है।

जब खुद से अलग सोच को डेवलप किया जाता है और उस पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो इससे बड़ी समझ बनती है।

वैराग्य का चिंतन, जब विकसित किया जाता है और उस पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो गहरी समझ को बेहतर बनाता है।

जब लुप्त होने के बारे में सोचा जाता है और इस पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो इससे बहुत ज़्यादा समझ बनती है।

जब समाप्ति के बारे में सोचा जाता है और उस पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो इससे गहरी समझ बनती है।

त्याग के बारे में सोचना, जब बढ़ाया जाता है और उस पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो बेमिसाल समझ बनती है।

ये सात तरह की समझ, जब डेवलप हो जाती है और ज़्यादा इस्तेमाल की जाती है, तो पूरी समझदारी बन जाती है।

ये आठ तरह की समझ, जब डेवलप हो जाती है और ज़्यादा इस्तेमाल की जाती है, तो बड़ी समझ बन जाती है।

ये नौ तरह की समझ, जब डेवलप हो जाती है और बहुत ज़्यादा इस्तेमाल की जाती है, तो यह परफेक्ट, मज़ेदार समझ बन जाती है।

हंसते हुए समझना ही समझदारी का भेदभाव है।

इस [महान व्यक्ति] की अर्थ की परिभाषा के साथ

अर्थ तक पहुँच, अनुभूति और समझ के द्वारा ध्वनित होता है। विचारों की परिभाषा के साथ विचारों का विवेक समझ के द्वारा पहुँच, अनुभूति और ध्वनित होता है। भाषा की परिभाषा के साथ भाषा का विवेक समझ के द्वारा पहुँच, अनुभूति और ध्वनित होता है। स्पष्टता की परिभाषा के साथ स्पष्टता का विवेक समझ के द्वारा पहुँच, अनुभूति और ध्वनित होता है। वह इन चार विवेकों तक पहुँचा है, अनुभूति की है और समझ के द्वारा ध्वनित हुआ है।

*

2. भौतिक चीज़ों में नश्वरता के बारे में सोचना, जब इसे बढ़ाया जाता है और इस पर बहुत ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो यह किस तरह की समझ को बेहतर बनाता है?

भौतिक चीज़ों में दर्द के बारे में सोचना, जब इसे डेवलप किया जाता है और बहुत ज़्यादा बताया जाता है, तो किस तरह की समझ को बेहतर बनाता है?

. . .

भौतिक चीज़ों को छोड़ने के बारे में सोचना, जब इसे बढ़ाया जाता है और इस पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो यह किस तरह की समझ को बेहतर बनाता है?

भौतिक चीज़ों में नश्वरता के बारे में सोचना, जब इसे डेवलप किया जाता है और इस पर बहुत ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो यह तुरंत समझ को बेहतर बनाता है।

भौतिकता में दर्द पर चिंतन, जब विकसित किया जाता है और उस पर बहुत ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो गहरी समझ को बेहतर बनाता है।

. . .

भौतिक चीज़ों को छोड़ने के बारे में सोचना, जब इसे बढ़ाया जाता है और इस पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो इससे बेमिसाल समझ बनती है।

ये सात तरह की समझ, जब डेवलप हो जाती है और ज़्यादा इस्तेमाल की जाती है, तो पूरी समझदारी बन जाती है।

. . .

ये नौ तरह की समझ, जब डेवलप हो जाती है और बहुत ज़्यादा इस्तेमाल की जाती है, तो यह परफेक्ट, मज़ेदार समझ बन जाती है।

हंसते हुए समझना ही समझदारी का भेदभाव है।

इस [महान व्यक्ति] की अर्थ की परिभाषा के साथ ... वह इन चार भेदभावों को समझकर पहुंचे, महसूस किया और ध्वनि दी है।

भावना में नश्वरता का चिंतन... (और इसी तरह Tr. I §5 में लिस्ट किए गए बाकी 201 आइडिया में से हर एक के साथ)...

बुढ़ापे और मौत में नश्वरता के बारे में सोचना, जब इसे डेवलप किया जाता है और इस पर बहुत ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो यह किस तरह की समझ को पूरा करता है?

बुढ़ापे और मौत के दर्द पर सोच-विचार... [ऊपर बताए अनुसार पूरा करें]...

[187]

. . . वह इन चार भेदभावों को समझकर वहाँ पहुँचा है, उन्हें महसूस किया है और उनकी आवाज़ सुनी है।

*

3. भौतिक चीज़ों में नश्वरता के बारे में सोचना, जब इसे बढ़ाया जाता है और इस पर बहुत ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो इससे किस तरह की समझ बेहतर होती है?

भूत, भविष्य और आज की चीज़ों में नश्वरता के बारे में सोचना, जब इसे डेवलप किया जाता है और इस पर बहुत ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो यह किस तरह की समझ को बेहतर बनाता है?

भौतिकता में दर्द का चिंतन...?

भूत, भविष्य और वर्तमान भौतिकता में दर्द का चिंतन...?

भौतिकता में 'न-स्व' का चिंतन...?

भूत, भविष्य और वर्तमान भौतिकता में 'न-स्व' का चिंतन...?

भौतिकता में वैराग्य का चिंतन...?

भूत, भविष्य और वर्तमान भौतिकता में वैराग्य का चिंतन...?

भौतिकता में लुप्त होने का चिंतन...?

भूत, भविष्य और वर्तमान भौतिकता में लुप्त होने का चिंतन...?

भौतिकता में समाप्ति का चिंतन...?

भूत, भविष्य और वर्तमान भौतिकता में समाप्ति का चिंतन...?

भौतिकता में त्याग का चिंतन...?

भूत, भविष्य और आज की चीज़ों को छोड़ने के बारे में सोचना, जब डेवलप किया जाता है और उन पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो किस तरह की समझ को बेहतर बनाता है?

भौतिक चीज़ों में नश्वरता के बारे में सोचना, जब इसे डेवलप किया जाता है और इस पर बहुत ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो यह तुरंत समझ को बेहतर बनाता है।

भूत, भविष्य और आज की चीज़ों में नश्वरता के बारे में सोचना, जब इसे डेवलप किया जाता है और इस पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो यह तुरंत समझ को बेहतर बनाता है।

भौतिकता में दर्द का चिंतन... गहरी समझ।

भूत, भविष्य और वर्तमान भौतिकता में दर्द का चिंतन.. आवेगपूर्ण समझ।

भौतिकता में 'न-स्व' का चिंतन... महान समझ।

भूत, भविष्य और वर्तमान भौतिकता में 'न-स्व' का चिंतन... बिना सोचे-समझे समझ लेना।

भौतिकता में वैराग्य का चिंतन [188]... गहरी समझ।

भूत, भविष्य और वर्तमान भौतिकता में वैराग्य का चिंतन... आवेगपूर्ण समझ।

भौतिकता में लुप्त होने का चिंतन... भरपूर समझ।

भूत, भविष्य और वर्तमान भौतिकता में लुप्त होने का चिंतन... आवेगपूर्ण समझ।

भौतिकता में समाप्ति का चिंतन... गहरी समझ। भूत, भविष्य और वर्तमान भौतिकता में समाप्ति का चिंतन... अचानक समझ।

भौतिकता में त्याग का चिंतन... बेजोड़ समझ।

भूत, भविष्य और आज की चीज़ों को छोड़ने के बारे में सोचना, जब डेवलप किया जाता है और उस पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो तुरंत समझ को बेहतर बनाता है।

ये सात तरह की समझ... (पूरी तरह से §1 में)... ये चार भेदभाव।

भावना में नश्वरता के बारे में सोचना, जब इसे बढ़ाया जाता है और इस पर बहुत ध्यान दिया जाता है, तो यह किस तरह की समझ को पूरा करता है?

भूत, भविष्य और वर्तमान में नश्वरता का चिंतन...

[और इसी तरह Tr. I §5 में लिस्ट किए गए 201 आइडिया में से हर एक के मामले में]...

बुढ़ापे और मौत में नश्वरता का चिंतन...?

भूत, भविष्य और वर्तमान में नश्वरता, बुढ़ापा और मृत्यु का चिंतन...?

...

बुढ़ापे और मौत में नश्वरता के बारे में सोचना, जब इसे डेवलप किया जाता है और इस पर बहुत ज़्यादा ध्यान दिया जाता है, तो यह तुरंत समझ को बेहतर बनाता है।

...ये चार भेदभाव। [189]

*
* *

4. 'भिक्षुओं, इन चार विचारों को जब बढ़ाया और ज़्यादा इस्तेमाल किया जाता है, तो वे स्ट्रीम एंट्री के फल को पाने में मदद करते हैं। कौन से चार? अच्छे लोगों की प्रतीक्षा करना, सच्चे विचार को सुनना, ध्यान से ध्यान देना, और सच्चे विचार के अनुसार अभ्यास करना। इन चार विचारों को जब बढ़ाया और ज़्यादा इस्तेमाल किया जाता है, तो वे स्ट्रीम एंट्री के फल को पाने में मदद करते हैं।' (Sv410)

'भिक्षुओं, इन चार विचारों को जब विकसित किया जाता है और इनका बहुत उपयोग किया जाता है, तो एक बार मिलने वाले फल की प्राप्ति होती है... (ऊपर बताए अनुसार दोहराएं)।'

'भिक्षुओं, इन चार विचारों को जब विकसित किया जाता है और इनका बहुत अधिक उपयोग किया जाता है, तो वे न लौटने के फल की प्राप्ति कराते हैं...'

'भिक्षुओं, इन चार विचारों को जब विकसित किया जाता है और उनका भरपूर उपयोग किया जाता है, तो वे अरहंतत्व के फल की प्राप्ति की ओर ले जाते हैं...'

'भिक्षुओं, ये चार विचार, जब विकसित होते हैं और बहुत ज़्यादा माने जाते हैं, तो समझ पाने, समझ जगाने, समझ की अधिकता, महान समझ की स्थिति, व्यापक समझ की स्थिति, भरपूर समझ की स्थिति, गहरी समझ की स्थिति, बेमिसाल समझ की स्थिति, पूरी समझ की स्थिति, बहुत ज़्यादा समझ की स्थिति, जल्दी समझ की स्थिति, तेज़ (हल्की) समझ की स्थिति, हँसने वाली समझ की स्थिति, तुरंत समझ की स्थिति, गहरी समझ की स्थिति, गहरी समझ की स्थिति की ओर ले जाते हैं। कौन से चार? अच्छे लोगों का इंतज़ार करना, सच्चे विचार को सुनना, ध्यान से ध्यान देना, और सच्चे विचार के अनुसार अभ्यास करना। ये चार विचार, जब विकसित होते हैं और बहुत ज़्यादा माने जाते हैं, तो समझ पाने,... गहरी समझ की ओर ले जाते हैं।'

5. समझ पाना: समझ पाना क्या है? यह चार तरह के ज्ञान के रास्ते, चार तरह के ज्ञान को पाना, पाना, पहुंचना, पाना, सुनना, महसूस करना और करना है।

सत्कर्म ज्ञान के प्रकार, विवेक ज्ञान के चार प्रकार, प्रत्यक्ष ज्ञान ज्ञान के छह प्रकार, ज्ञान के सत्तर-तीन प्रकार (ट्र. I अनुसूची), ज्ञान के सतहत्तर प्रकार (Sii 59)। वे समझ की प्राप्ति की ओर ले जाते हैं: यह समझ की प्राप्ति है। [190]

6. समझ की जागृति की ओर ले जाना: समझ की जागृति क्या है? सात प्रकार के दीक्षितों और उदार सामान्य मनुष्य में समझ बढ़ती है; अरहंत में समझ <बढ़ी> है। समझ की जागृति की ओर ले जाने वाली वृद्धि: यह समझ की जागृति है। [190]

7. समझ की भरपूरता की ओर ले जाएं: समझ की भरपूरता क्या है? सात तरह के दीक्षा लेने वालों और उदार आम आदमी में समझ की भरपूरता होती है; अरहंत में समझ की भरपूरता होती है। वे समझ की भरपूरता की ओर ले जाते हैं: यही समझ की भरपूरता है।

8. बड़ी समझ की स्थिति की ओर ले जाएं: बड़ी समझ क्या है? यह बड़े मतलबों को अपनाती है, इसलिए यह बड़ी समझ है। यह बड़े विचारों को अपनाती है, इसलिए यह बड़ी समझ है। यह बड़ी भाषाओं को अपनाती है, इसलिए यह बड़ी समझ है। यह बड़ी दूरदर्शिता को अपनाती है, इसलिए यह बड़ी समझ है। यह बड़े गुणों के समुच्चय को अपनाती है। बड़ा एकाग्रता का समुच्चय... बड़ी . . . समझ का समुच्चय, बड़ा मुक्ति का समुच्चय... बड़ा ज्ञान और मुक्ति का दर्शन समुच्चय... बड़ी संभव और असंभव बातें... बड़ी स्थायी चीज़ें और उपलब्धियां... बड़ी महान वास्तविकताएं... ध्यान की बड़ी नींव... बड़ी सही कोशिशें... ताकत के बड़े रास्ते (सफलता के आधार)। महान क्षमताएं... महान शक्तियां... महान ज्ञान के कारक... महान महान मार्ग... तपस्या के महान महान फल... महान प्रत्यक्ष ज्ञान... महान अंतिम अर्थ, [191] निब्बान, इस तरह यह महान समझ है। वे महान समझ की स्थिति की ओर ले जाते हैं: यह महान समझ है।

9. बड़ी समझ की स्थिति की ओर ले जाएं: बड़ी समझ क्या है? बहुत अलग-अलग एग्रीगेट्स के बारे में ज्ञान होता है, इसलिए यह बड़ी समझ है। बहुत अलग प्रिंसिपल्स के बारे में ज्ञान होता है, इसलिए यह बड़ी समझ है। बहुत अलग बेस के बारे में ज्ञान... बहुत अलग डिपेंडेंट ओरिजिन के बारे में... बहुत अलग आइडियाज़ के बारे में जो शून्यता के कारण समझ में नहीं आते... बहुत अलग मतलब के बारे में... बहुत अलग आइडियाज़ के बारे में... बहुत अलग भाषाओं के बारे में। बहुत अलग पर्सपिक्विटीज़... बहुत अलग वेल्थ एग्रीगेट्स के बारे में... कंसंट्रेशन एग्रीगेट्स... समझ एग्रीगेट्स। लिबरेशन एग्री-गेट्स... नॉलेज-एंड-सीइंग-ऑफ-लीवरेंस एग्रीगेट्स... पॉसिबल्स एंड इम्पॉसिबल्स... एबिडिंग्स एंड अचीवमेंट्स... नोबल एक्चुअलिटीज़... फाउंडेशन्स के बारे ..में

ध्यान का... सही कोशिशें... ताकत के रास्ते (सफलता के आधार)। काबिलियत। ताकतें। ज्ञान के कारण... अच्छे रास्ते... तपस्या के फल... बहुत अलग-अलग सीधे ज्ञान के बारे में ज्ञान होता है, इसलिए यह बड़ी समझ है। आखिरी मतलब, निब्बाण, के बारे में ज्ञान होता है, जो आम लोगों द्वारा शेयर किए गए बहुत अलग-अलग विचारों को पार कर जाता है, इसलिए यह बड़ी समझ है। वे बड़ी समझ की स्थिति की ओर ले जाते हैं: यह बड़ी समझ है।

10. प्रचुर समझ की स्थिति की ओर ले जाएँ: प्रचुर समझ क्या है? [192] यह प्रचुर अर्थों को ग्रहण करती है, इस प्रकार यह प्रचुर समझ है। यह प्रचुर विचारों को ग्रहण करती है, इस प्रकार यह प्रचुर समझ है। यह प्रचुर भाषाओं को ग्रहण करती है, [और इसी तरह §8 तक]... यह प्रचुर प्रत्यक्ष-ज्ञान को ग्रहण करती है, इस प्रकार यह प्रचुर समझ है। यह अंतिम अर्थ, निब्बान को ग्रहण करती है, इस प्रकार यह प्रचुर समझ है। वे प्रचुर समझ की स्थिति की ओर ले जाते हैं: यह प्रचुर समझ है।

11. गहन समझ की स्थिति की ओर ले जाएँ: गहन समझ क्या है? गहन समुच्चयों के बारे में ज्ञान होता है, इस प्रकार यह गहन समझ है। गहन सिद्धांतों के बारे में ज्ञान होता है, इस प्रकार यह गहन समझ है। गहन आधारों के बारे में ज्ञान... [और इसी तरह §9 से पहले तक]... [193]... गहन प्रत्यक्ष-ज्ञान के बारे में ज्ञान होता है, इस प्रकार यह गहन समझ है। अंतिम अर्थ, निब्बान के बारे में ज्ञान होता है, इस प्रकार यह गहन समझ है। वे गहन समझ की स्थिति की ओर ले जाते हैं: यह गहन समझ है।

12. बेमिसाल समझ की स्थिति की ओर ले जाएं: बेमिसाल समझ क्या है?

जब एक [महान) व्यक्ति अर्थ की परिभाषा से अर्थ के भेदभाव तक पहुँच जाता है, उसे महसूस कर लेता है और उसे व्यक्त कर लेता है, विचारों की परिभाषा से विचारों के भेदभाव तक पहुँच जाता है, उसे महसूस कर लेता है और उसे व्यक्त कर लेता है, भाषाओं की परिभाषा से भाषा के भेदभाव तक पहुँच जाता है, उसे महसूस कर लेता है और उसे व्यक्त कर लेता है, स्पष्टता की परिभाषा से स्पष्टता के भेदभाव तक पहुँच जाता है, उसे महसूस कर लेता है और उसे व्यक्त कर लेता है, तब कोई अन्य (जो एक सामान्य व्यक्ति है) उसके अर्थों, विचारों, भाषाओं और स्पष्टता तक नहीं पहुँच सकता, वह दूसरों (जो सामान्य व्यक्ति हैं) के लिए पहुंच से बाहर है, इस तरह यह बेजोड़ समझ है।

एक उदार साधारण आदमी की समझ आठवें [व्यक्ति, जिसके पास धारा प्रवेश पथ है] की समझ से बहुत दूर है, बहुत दूर है, बहुत दूर है, पास नहीं है, बराबर नहीं है; उदार साधारण आदमी की तुलना में आठवें के पास बेजोड़ समझ है। आठवें की समझ एक धारा प्रवेशकर्ता की समझ से बहुत दूर है... बराबर नहीं है, [194]; आठवें की तुलना में धारा

प्रवेश करने वाले की समझ बेजोड़ होती है। धारा में प्रवेश करने वाले की समझ, एक बार लौटने वाले की समझ से बहुत दूर,... बराबर नहीं होती; धारा में प्रवेश करने वाले की तुलना में एक बार लौटने वाले की समझ बेजोड़ होती है। एक बार लौटने वाले की समझ, न लौटने वाले की समझ से बहुत दूर,... बराबर नहीं होती; एक बार लौटने वाले की तुलना में न लौटने वाले की समझ बेजोड़ होती है। न लौटने वाले की समझ, अरहंत की समझ से बहुत दूर,... बराबर नहीं होती; न लौटने वाले की तुलना में अरहंत की समझ बेजोड़ होती है। अरहंत की समझ, पच्चेक बुद्ध की समझ से बहुत दूर,... बराबर नहीं होती; अरहंत की तुलना में पच्चेक बुद्ध की समझ बेजोड़ होती है।

पच्चेक बुद्ध और संसार तथा उसके देवताओं की तुलना में एक पूर्ण पुरुष, निपुण और पूर्ण रूप से प्रबुद्ध, अद्वितीय समझ वाला सर्वोच्च है; वह समझ की श्रेणियों में निपुण है, उसके पास हर प्रकार का ज्ञान है, वह विवेक तक पहुँच चुका है, चार प्रकार के आश्वासनों तक पहुँच चुका है, दस शक्तियों का उपयोग करता है, वह नर बैल, नर सिंह, नर हाथी, नर शुद्ध नस्ल का[1], नर बोझ ढोने वाला, असीमित ज्ञान, असीमित शक्ति, असीमित प्रसिद्धि वाला, ज्ञान में धनी, धनी, ज्ञान में समृद्ध, नेता, दूर का नेता (अनुशासन करने वाला), सच्चे विचार के मार्ग पर नेता, जो समझ उत्पन्न करता है, विचार करता है, सम्मान उत्पन्न करता है, और आत्मविश्वास उत्पन्न करता है। क्योंकि वह धन्य पुरुष अप्रकट पथ को जगाने वाला, अनिर्मित पथ का उत्पादक, अघोषित पथ का घोषणाकर्ता, मार्ग का ज्ञाता, पथ द्रष्टा, पथ में निपुण है; लेकिन अब जब रास्ते के हिसाब से चलने वाले चेले उसे पा लेते हैं, तो वे उसके पीछे-पीछे चलते हैं' (मी 8)। 'क्योंकि वह भगवान जानता है कि क्या जानना है, देखकर देखता है कि क्या देखना है; वह आँख है, ज्ञान है, सच्चा विचार है, भगवान (ब्रह्मा), चलाने वाला, पालने वाला, अच्छाई लाने वाला, अमर देने वाला, सच्चे विचार का मालिक, एकदम सही है' (मी 111)। ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे भगवान ने न जाना हो, न देखा हो, न पहचाना हो, न महसूस किया हो, न समझ से सुना हो, जिसमें अतीत, भविष्य और अभी जो हुआ, सब शामिल है। सभी विचार सभी तरह से भगवान के ज्ञान के केंद्र में आते हैं। जो कुछ भी जानने योग्य है, जो जाना जा सकता है-स्वयं का अर्थ या किसी दूसरे का अर्थ या दोनों का अर्थ या यहां और अभी का अर्थ या आने वाले जीवन का अर्थ या स्पष्ट अर्थ या गहन अर्थ या गूढ़ अर्थ या प्रकट अर्थ या गूढ़ अर्थ या प्रत्यक्ष अर्थ या निर्दोष अर्थ या निर्मल अर्थ या शुद्ध करने वाला अर्थ या परम अर्थ-वह सब बुद्ध ज्ञान में उपलब्ध है।

कर्म बुद्ध के ज्ञान के लिए उपलब्ध है, समस्त वाणी कर्म बुद्ध के ज्ञान के लिए उपलब्ध है, समस्त मन कर्म बुद्ध के ज्ञान के लिए उपलब्ध है। बुद्ध का अतीत का ज्ञान अबाधित है, बुद्ध का भविष्य का ज्ञान अबाधित है, बुद्ध का वर्तमान में उत्पन्न होने वाला ज्ञान अबाधित है। जितना ज्ञेय है, उतना ही उनका ज्ञान है; जितना उनका ज्ञान है, उतना ही ज्ञेय है; उनका ज्ञान ज्ञेय के साथ व्यापक है, और ज्ञेय उनके ज्ञान के साथ व्यापक है; उनका ज्ञान ज्ञेय से अधिक नहीं है, और ऐसा कुछ भी ज्ञेय नहीं है जो उनके ज्ञान से अधिक हो; ये विचार एक-दूसरे के साथ व्यापक हैं। जैसे, जब दो समरूप सतह निकट संपर्क में होती हैं, तो निचली समरूप सतह ऊपरी समरूप सतह से अधिक नहीं होती है और न ही ऊपरी निचली से, बल्कि दोनों एक-दूसरे के साथ व्यापक होते हैं, वैसे ही बुद्ध, धन्य जितना जानने योग्य है, उतना ही उनका ज्ञान है;... [जैसा कि ऊपर] ये विचार एक-दूसरे के साथ सह-व्यापक हैं। बुद्ध का ज्ञान सभी विचारों तक पहुँचता है; सभी विचार बुद्ध, धन्य व्यक्ति के विज्ञापन के लिए उपलब्ध . . . हैं, उनकी इच्छा के लिए उपलब्ध हैं, उनके ध्यान के लिए उपलब्ध हैं, उनके विचार-उत्पन्न होने के लिए उपलब्ध हैं। बुद्ध का ज्ञान सभी प्राणियों तक पहुँचता है; बुद्ध सभी प्राणियों के पूर्वाग्रहों, उनकी अंतर्निहित प्रवृत्तियों, उनके स्वभावों, उनके संकल्पों को जानते हैं, वह उन्हें उनकी आँखों पर थोड़ी धूल के साथ, उनकी आँखों पर बहुत धूल के साथ, तीव्र क्षमताओं के साथ, सुस्त क्षमताओं के साथ, अच्छे भागों के रूप में, बुरे भागों के रूप में, निर्देश देने में आसान, निर्देश देने में कठिन, सक्षम और अक्षम के रूप में समझते हैं। अपने देवताओं, अपने मारों और अपने ब्रह्मा देवताओं के साथ दुनिया, अपने तपस्वियों और ब्राह्मणों के साथ यह पीढ़ी, अपने राजकुमारों और पुरुषों के साथ बुद्ध-ज्ञान के क्षेत्र में आती है।

जैसे सभी मछलियाँ और कछुए, यहाँ तक कि सबसे बड़ा समुद्री राक्षस भी महासागर में समाहित हैं, वैसे ही यह संसार भी... बुद्ध-ज्ञान के क्षेत्र में आता है। जैसे सभी पंख वाले प्राणी, यहाँ तक कि वेनेत्य गरुड़ भी अंतरिक्ष के एक भाग में समाहित हैं, वैसे ही सारिपुत्त के समान समझ रखने वाले भी बुद्ध-ज्ञान के एक भाग में समाहित हैं। बुद्ध-ज्ञान देवताओं और मनुष्यों की समझ तक पहुँचता है और उससे आगे निकल जाता है। यहाँ तक कि वे खत्तिय विद्वान, ब्राह्मण विद्वान, गृहस्थ विद्वान, तपस्वी विद्वान, जो चतुर हैं और दूसरों के सिद्धांतों को बाल की खाल निकालने वाले [धनुर्विद्या जानने वाले] की तरह जानते हैं, जिन्हें, ऐसा सोचा जा सकता है, अपनी समझ से [झूठे] विचारों को तोड़ने का काम करना चाहिए, यहाँ तक कि जब वे कोई समस्या बनाकर पूर्ण पुरुष के पास जाते हैं और गूढ़ और छिपे हुए [प्रश्न] पूछते हैं, तो उनके प्रश्नों का उत्तर भगवान द्वारा स्पष्ट कारणों के साथ समझाया और दिया जाता है, और वे भगवान के अनुयायी बन जाते हैं; और तब धन्य स्वयं अत्यधिक चमकते हैं

समझ में। इस तरह वह बेमिसाल समझ वालों में सबसे ऊंचा है।
वे बेमिसाल समझ की हालत की ओर ले जाते हैं: यही बेमिसाल समझ है।

13. समग्र समझ की स्थिति की ओर ले जाओ: समग्र समझ क्या है? यह (अभिभूयाति) लोभ पर विजय प्राप्त करती है, इस प्रकार यह समग्र (भूरि) समझ है; इसने जीत हासिल की है, इस प्रकार यह समग्र समझ है। यह घृणा पर विजय प्राप्त करती है...; इसने जीत हासिल की है, यह भ्रम पर विजय प्राप्त करती है...; इसने भ्रम पर विजय प्राप्त की है... यह क्रोध पर विजय प्राप्त करती है.. . . . [197] शत्रुता... अवमानना, प्रभुत्व... ईर्ष्या... लोभ... छल... धोखाधड़ी... हठ... अभिमान... गर्व (दंभ)... अभिमान... घमंड... लापरवाही... सभी कल्मष। सभी दुराचार। सभी क्रिया-रूप... यह अस्तित्व की ओर ले जाने वाले सभी कार्यों पर विजय प्राप्त करती है, इस प्रकार यह समग्र समझ है; इसने जीत हासिल की है, इस प्रकार यह समग्र समझ है..

लालच एक दुश्मन (अरि) है; यह उस दुश्मन को कुचल देता है: इस तरह यह सबकी समझ है। नफ़रत एक दुश्मन है; यह उस दुश्मन को कुचल देती है: इस तरह यह सबकी समझ है। वहम एक दुश्मन है... गुस्सा... दुश्मनी... नफ़रत... दबदबा... जलन... लालच... धोखा... धोखाधड़ी... ज़िद... अंदाज़ा... घमंड (दंभ)... घमंड... घमंड... लापरवाही, सभी . . . बुराइयां... सभी गलत काम। सभी काम... सभी काम जो होने की ओर ले जाते हैं, एक दुश्मन है; यह उस दुश्मन को कुचल देता है: इस तरह यह सबकी समझ है।

धरती को 'सब कुछ' (भूरी) कहा जाता है; उसमें बहुत ज़्यादा समझ होती है, जो धरती की तरह फैली हुई है: इसलिए यह सब कुछ समझने वाली समझ है। इसके अलावा, ये समझ के लिए शब्द हैं, यानी, सब कुछ (भूरी = भूत अत्थे रमति), बुद्धि, और गाइड: इसलिए यह सब कुछ समझने वाली समझ है।

वे पूरी समझ की स्थिति की ओर ले जाते हैं, यह पूरी समझ है।

14. ज़्यादा समझ की हालत में ले जाएं: ज़्यादा समझना क्या है? यहां कोई ऐसा है जिसके लिए समझना ज़रूरी है, जिसका स्वभाव समझने वाला है, जिसमें समझने की तरफ झुकाव है, जो समझने पर पक्का इरादा रखता है, जिसका झंडा समझ है, जिसका झंडा समझ है, जिसमें समझ हावी है, जो बहुत जांच-पड़ताल करता है, जो बहुत जांच-पड़ताल करता है, जो बहुत जांच-पड़ताल करता है, जो बहुत जांच-पड़ताल करता है, जिसमें देखने का तरीका ज़्यादा है, जिसका विचार देखना है, जो साफ़ बातों पर टिका रहता है, जिसका स्वभाव वह है, जो उसे अहमियत देता है, जिसके पास वह बहुत है, जो उसी की तरफ जाता है, जो उसी की तरफ झुकता है, जो उसी पर टिका रहता है, जिसमें वह हावी है।

जैसे जिसके लिए एक कक्षा (छात्रों की) महत्वपूर्ण है उसे 'एक वर्ग के साथ बहुत कुछ' कहा जाता है, जैसे जिसके लिए एक वस्त्र महत्वपूर्ण है उसे 'एक वस्त्र के साथ बहुत कुछ' कहा जाता है, जैसे जिसके लिए एक कटोरा महत्वपूर्ण है उसे 'एक

'बहुत कुछ एक कटोरे के साथ', जैसे कि जिसके लिए आराम करने का स्थान महत्वपूर्ण है उसे 'बहुत कुछ एक आराम करने वाला स्थान' कहा जाता है, इसलिए यहाँ भी [198] कोई ऐसा व्यक्ति है जिसके लिए समझ महत्वपूर्ण है, जिसके पास . . . समझने का स्वभाव है, [जैसा ऊपर] जिसमें वह प्रमुख है। वे बहुत समझ की स्थिति की ओर ले जाते हैं: यह बहुत समझ है।

15. जल्दी समझने की स्थिति में ले जाएं: जल्दी समझना क्या है? यह बहुत जल्दी अच्छे गुणों को बेहतर बनाता है, इसलिए यह जल्दी समझने वाली चीज़ है। यह बहुत जल्दी अपनी काबिलियत पर काबू पाने में बेहतर बनाता है, इसलिए यह जल्दी समझने वाली चीज़ है। यह बहुत जल्दी खाने की सही मात्रा का ज्ञान... जागने की लगन... अच्छे गुणों का समूह... ध्यान लगाने का समूह... समझ का समूह... मुक्ति का ज्ञान और मुक्ति देखने का समूह। यह बहुत जल्दी मुमकिन और नामुमकिन चीज़ों को समझ लेता है, इसलिए यह जल्दी समझने वाली चीज़ है। यह शीघ्र ही निवास और उपलब्धियों को पूर्ण कर लेता है,... यह शीघ्र ही महान वास्तविकताओं का भेदन कर लेता है, यह शीघ्र ही जागरूकता की नींव विकसित कर लेता है,... यह शीघ्र ही सही प्रयास विकसित कर लेता है, यह शीघ्र ही शक्ति के मार्ग (सफलता के आधार) विकसित कर लेता है, यह शीघ्र ही क्षमताओं का . . . विकास कर लेता है,... यह शीघ्र ही शक्तियों का विकास कर लेता है,... यह शीघ्र ही ज्ञान के कारकों का विकास कर लेता है,... यह शीघ्र ही मार्ग विकसित कर लेता है, यह शीघ्र ही तप के फलों का एहसास कर लेता है, यह शीघ्र ही प्रत्यक्ष ज्ञान में प्रवेश कर जाता है,... यह शीघ्र ही अंतिम अर्थ, निब्बान का एहसास कर लेता है, इस प्रकार यह त्वरित समझ है। वे त्वरित समझ की स्थिति की ओर ले जाते हैं: यह त्वरित समझ है।

16. तेज़ (हल्की) समझ की ओर ले जाना: तेज़ (हल्की) समझ क्या है? यह बहुत तेज़ी से सद्गुणों को पूर्ण करती है, इस प्रकार यह तेज़ समझ है। यह बहुत तेज़ी से क्षमताओं के संयम को पूर्ण करती है,... (और इसी तरह §15 से पहले तक)... [199] यह बहुत तेज़ी से अंतिम अर्थ, निब्बान को महसूस करती है, इस प्रकार यह तेज़ (हल्की) समझ है। वे तेज़ (हल्की) समझ की स्थिति की ओर ले जाते हैं: यह तेज़ (हल्की) समझ है।

17. हंसने की स्थिति की ओर ले जाना : हंसने की समझ क्या है? यहां व्यक्ति बहुत हंसी, प्रसन्नता, संतोष और प्रसन्नता के साथ गुणों को पूर्ण करता है, इस प्रकार यह हंसने की समझ है। बहुत हंसी, प्रसन्नता, संतोष और प्रसन्नता के साथ वह क्षमताओं के संयम को पूर्ण करता है,... [और इसी प्रकार §15 से पहले तक]... [200] बहुत हंसी, प्रसन्नता, संतोष और प्रसन्नता के साथ वह परम अर्थ, निब्बान को महसूस करता है, इस प्रकार यह हंसने की समझ है। वे हंसने की समझ की स्थिति की ओर ले जाते हैं : यह हंसने की समझ है।

18. इंपल्सिव समझ की स्थिति की ओर ले जाएं: इंपल्सिव समझ क्या है?

कोई भी भौतिक चीज़, चाहे वह भूतकाल की हो, भविष्य की हो या वर्तमान में उत्पन्न हुई हो,

आंतरिक या बाह्य, स्थूल या सूक्ष्म, निम्न या उच्च, दूर या निकट - यह जल्द ही आवेग देता है कि सभी भौतिकता अस्थायी है, इस प्रकार यह आवेगपूर्ण समझ है; यह जल्द ही आवेग देता है कि यह दर्दनाक है, इस प्रकार यह आवेगपूर्ण समझ है; यह जल्द ही आवेग देता है कि यह स्वयं नहीं है, इस प्रकार यह आवेगपूर्ण समझ है। कोई भी भावना जो भी हो,... (और इसी प्रकार Tr. I §5 में सूचीबद्ध 201 विचारों के साथ)... कोई भी बुढ़ापा और मृत्यु जो भी हो, चाहे अतीत, भविष्य या वर्तमान में उत्पन्न हुई हो,... यह जल्द ही आवेग देता है कि यह अस्थायी है, इस प्रकार यह आवेगपूर्ण समझ है; यह जल्द ही आवेग देता है कि यह दर्दनाक है, इस प्रकार यह आवेगपूर्ण समझ है; यह जल्द

यह गणना, निर्णय, स्पष्टीकरण और स्पष्ट कर देने के बाद कि भूत, भविष्य और वर्तमान में उत्पन्न भौतिकता विनाश के अर्थ में अस्थायी है, भय के अर्थ में दर्दनाक है और कोई मूल न होने के अर्थ में आत्म नहीं है, यह जल्द ही भौतिकता, निब्बान की समाप्ति की प्रेरणा देता है, इस प्रकार यह आवेगपूर्ण समझ है। यह गणना, निर्णय, स्पष्टीकरण और स्पष्ट कर देने के बाद कि भूत, भविष्य और वर्तमान में उत्पन्न भौतिकता अस्थायी, निर्मित, आश्रित रूप से उत्पन्न, विनाश के अधीन, पतन के अधीन, फीके पड़ने के अधीन, समाप्ति के अधीन है, यह जल्द ही भौतिकता, निब्बान की समाप्ति की प्रेरणा देता है, इस प्रकार यह आवेगपूर्ण समझ है। यह गणना, निर्णय, स्पष्टीकरण और स्पष्ट कर देने के बाद कि भूत, भविष्य और वर्तमान की भावना... [और इसी प्रकार ट्र में सूचीबद्ध शेष 201 विचारों के साथ। I §5 तक).... यह हिसाब लगाने के बाद... कि अतीत, भविष्य और अभी की बुढ़ापा और मौत, विनाश के अर्थ में कुछ समय के लिए है... खत्म होने के अधीन, यह जल्द ही बुढ़ापे और मौत के खत्म होने, निब्बान, के लिए प्रेरणा देता है, इसलिए यह तुरंत समझ है। वे तुरंत समझ की स्थिति की ओर ले जाते हैं: यह तुरंत समझ है।

19. तीव्र समझ की स्थिति की ओर ले जाओ: तीव्र समझ क्या है? [201] यह जल्द ही विकारों को दूर कर देती है, इस प्रकार यह तीव्र समझ है। यह इंद्रिय-इच्छा के उठे हुए विचार को सहन नहीं करती, उसे त्याग देती है, उसे हटा देती है, उसे खत्म कर देती है, उसका नाश कर देती है, इस प्रकार यह तीव्र समझ है। यह द्वेष के उठे हुए विचार को सहन नहीं करती,... क्रूरता के उठे हुए विचार को सहन नहीं करती, उसे त्याग देती है, उसे हटा देती है, उसे खत्म कर देती है, उसका नाश कर देती है, इस प्रकार यह तीव्र समझ है। जब भी बुरे और लाभहीन विचार उठते हैं, यह उन्हें सहन नहीं करती, उन्हें त्याग देती है, उन्हें हटा देती है, उन्हें खत्म कर देती है, उनका नाश कर देती है, इस प्रकार यह तीव्र समझ है। यह उठे हुए लोभ को सहन नहीं करती,... घृणा, भ्रम, क्रोध,... शत्रुता, . . . अवमानना, दबंगई,.... ईर्ष्या,.. लोभ,.. छल,... धोखाधड़ी,... हठ,... धारणा,... गर्व (दंभ),... अभिमान, घमंड,... लापरवाही,... कोई भी अपवित्रता, कोई भी . . . दुराचार,... कोई भी कार्य-संरचना, यह अस्तित्व की ओर ले जाने वाले किसी भी कार्य को सहन नहीं करता, उसे त्याग देता है, उसे हटा देता है, उसे खत्म कर देता है, उसे नष्ट कर देता है, इस प्रकार यह उत्सुक है।

समझ। एक ही सेशन में चार रास्ते और तपस्या के चार फल और चार विवेक और छह सीधे ज्ञान हासिल किए जाते हैं, महसूस किए जाते हैं और समझ के साथ सुनाई देते हैं, इसलिए यह गहरी समझ है। वे गहरी समझ की स्थिति की ओर ले जाते हैं: यह गहरी समझ है।

20. भेदक समझ की स्थिति की ओर ले जाना: भेदक समझ क्या है? यहां व्यक्ति को सभी निर्माणों को लेकर बहुत अधिक उत्सुकता, बहुत अधिक भय, बहुत अधिक असंतोष, बहुत अधिक ऊब, बहुत अधिक मोहभंग होता है, उसे किसी भी निर्माण में बाहरी तौर पर कोई आनंद नहीं मिलता है; वह भेद करता है, लालच के उस ढेर को विस्फोटित करता है जो पहले कभी भेदा नहीं गया था, कभी नहीं विस्फोटित हुआ था, इस प्रकार यह भेदक समझ है। वह भेद करता है, घृणा के ढेर को विस्फोटित करता है... भ्रम के ढेर को [202]। क्रोध के ढेर को। दुश्मनी... अवमानना... दबंगई... ईर्ष्या। लोभ... छल... धोखाधड़ी। अड़ियलपन... पूर्व धारणा... गर्व (दंभ)। घमंड। घमंड... लापरवाही... सभी कल्मष। सभी दुराचार। सभी क्रिया-निर्माण... वह भेद करता है, सभी क्रियाओं को विस्फोटित करता है जो पहले कभी भेदे नहीं गए और विस्फोटित नहीं हुए, इस प्रकार यह भेदक समझ है। वे भेदक समझ की स्थिति की ओर ले जाते हैं: यही भेदक समझ है।

21. समझ सोलह तरह की होती है। जिस व्यक्ति में ये सोलह तरह की समझ होती है, वह विवेक तक पहुँच जाता है।

22. दो तरह के लोग होते हैं जो समझ तक पहुँच चुके होते हैं: एक को पहले [पिछले जन्मों में] प्रैक्टिस होती है, और दूसरे को नहीं होती। जिसे पहले प्रैक्टिस होती है, वह दूसरे से आगे निकल जाता है, उससे आगे निकल जाता है, ज़्यादा मशहूर होता है; और उसका ज्ञान [दो हिस्सों में] बँटा जा सकता है।

23. दो तरह के लोग होते हैं जो समझ तक पहुँच चुके होते हैं, और दो जिन्हें पहले से प्रैक्टिस होती है: एक को अच्छी तरह से सिखाया जाता है और दूसरे को नहीं। जो अच्छी तरह से सिखाया जाता है वह दूसरे से आगे निकल जाता है, उससे आगे निकल जाता है, ज़्यादा मशहूर होता है; और उसका ज्ञान बांटा जा सकता है।

24. दो तरह के लोग होते हैं जो समझ हासिल कर चुके होते हैं, दो जिन्हें पहले से प्रैक्टिस होती है, और दो जो अच्छी तरह से पढ़े-लिखे होते हैं: एक बहुत सिखाता है और दूसरा नहीं। जो बहुत सिखाता है वह दूसरे से आगे निकल जाता है, उससे आगे निकल जाता है, ज़्यादा मशहूर होता है; और उसका ज्ञान बांटा जा सकता है।

25. दो तरह के लोग होते हैं जो समझ तक पहुँच चुके होते हैं, दो जिन्हें पहले से प्रैक्टिस होती है, दो जो अच्छी तरह पढ़े-लिखे होते हैं, और दो जो बहुत पढ़ाते हैं: एक टीचर पर निर्भर होता है, और दूसरा नहीं। जो टीचर पर निर्भर होता है, वह दूसरे से आगे निकल जाता है, उससे आगे निकल जाता है, ज़्यादा मशहूर होता है; और उसका ज्ञान बांटा जा सकता है।

26. दो तरह के लोग होते हैं जो समझ हासिल कर चुके होते हैं, जिन्हें पहले से प्रैक्टिस होती है, जो अच्छी तरह पढ़े-लिखे होते हैं, जो बहुत पढ़ाते हैं, और जो एक टीचर पर निर्भर होते हैं: एक जो बहुत ज़्यादा रहता है

(अंतर्दृष्टि और फल में), और दूसरा नहीं। जो ज़्यादा रहता है वह दूसरे से आगे निकल जाता है, उससे आगे निकल जाता है, ज़्यादा प्रतिष्ठित होता है; और उसका ज्ञान बांटा जा सकता है।

27. दो प्रकार के व्यक्ति हैं जो विवेक तक पहुँच चुके हैं, और जिन्होंने पहले अभ्यास किया है, और जो अच्छी तरह से प्रशिक्षित हैं, और जो बहुत शिक्षण करते हैं, और जो एक शिक्षक पर निर्भर हैं, और जो बहुत टिकते हैं: एक बहुत समीक्षा करता है, [203] और दूसरा नहीं करता है: जो बहुत समीक्षा करता है वह दूसरे से आगे निकल जाता है, उससे आगे निकल जाता है, अधिक प्रतिष्ठित होता है; और उसका ज्ञान विभाज्य है।

28. दो तरह के लोग होते हैं जो समझ तक पहुँच चुके होते हैं, और जिन्हें पहले प्रैक्टिस हुई होती है, और जो अच्छी तरह से पढ़े-लिखे होते हैं, और जो बहुत कुछ सिखाते हैं, और जो एक टीचर पर निर्भर होते हैं, और जो बहुत कुछ मानते हैं, और जो बहुत कुछ देखते हैं: एक ने दीक्षा लेने वालों की समझ हासिल कर ली होती है, और दूसरे ने माहिरों की समझ हासिल कर ली होती है। जो माहिरों की समझ तक पहुँच गया है, वह दूसरे से आगे निकल जाता है, उससे आगे निकल जाता है, ज़्यादा मशहूर होता है; और उसका ज्ञान बांटा जा सकता है।

29. दो तरह के लोग होते हैं जो समझ तक पहुँच चुके होते हैं, और जिन्हें पहले प्रैक्टिस हुई होती है, और जो अच्छी तरह से पढ़े-लिखे होते हैं, और जो बहुत कुछ सिखाते हैं, और जो एक टीचर पर निर्भर होते हैं, और जो बहुत कुछ मानते हैं, और जो बहुत कुछ देखते हैं, और जो माहिर लोगों की समझ तक पहुँच चुके होते हैं: एक शिष्यों की परफेक्शन तक पहुँच गया होता है, और दूसरा नहीं। जो शिष्यों की परफेक्शन तक पहुँच गया होता है, वह दूसरे से आगे निकल जाता है, उससे आगे निकल जाता है, ज़्यादा मशहूर होता है; और उसका ज्ञान बांटा जा सकता है।

30. दो तरह के लोग होते हैं जो विवेक तक पहुँच चुके होते हैं, और जिन्होंने पहले प्रैक्टिस की होती है, और जो अच्छी तरह से पढ़े-लिखे होते हैं, और जो बहुत कुछ सिखाते हैं, और जो एक टीचर पर निर्भर होते हैं, और जो बहुत कुछ मानते हैं, और जो बहुत कुछ देखते हैं, और जो माहिर लोगों के विवेक तक पहुँच चुके होते हैं: एक जो शिष्यों की परफेक्शन तक पहुँच चुके होते हैं, और एक जो पच्चेक बुद्ध होते हैं। जो पच्चेक बुद्ध होते हैं, वे दूसरे से आगे निकल जाते हैं, उनसे आगे निकल जाते हैं, ज़्यादा जाने-माने होते हैं; और उनका ज्ञान बांटा जा सकता है।

पच्चेक बुद्ध और दुनिया और उसके देवताओं की तुलना में
एक सिद्ध, निपुण और पूरी तरह से प्रबुद्ध, वह सबसे ऊंचा है
जो विवेक तक पहुंच गया है; वह समझ की श्रेणियों में
. . . कुशल है, [और इसी तरह §12 से लेकर]... [204] और फिर धन्य
स्वयं समझ में बहुत चमकता है। इस प्रकार वह उन लोगों
में सबसे ऊंचा है जो विवेक तक पहुंच गए हैं।

महान समझ पर ग्रंथ पूरा हो गया है।



नोट्स

[1] '*Pajānanaṭṭhena purisājañño*' (PsA 470 S[e]).
[2] Cf. Sn 79.
[3] यहाँ 'अत्थ' शब्द का मतलब 'मतलब' और 'फायदा' या 'मकसद' दोनों है।
[4] सारिपुत्तसमा पणिणवनतो को कॉमी के साथ पढ़ें (PSA 474 SC).
[5] Cf. M i 176.
[6] उपक्किक्तक-धर्मांतरित: P.T.S. Dict. में नहीं। उपक्किक्तक के तहत यह संदर्भ not apply. *Te khittiyapaṇḍitādayo bhagavato pañhāvissajjanen' eva bhagavato samipe khittakā pādakhittakā sampajjanti sāvakā vā sampajjanti upāsakā vā ti attho*' (PsA 175-6 S[e]).
'संपेखायन-देखने का तरीका': P.T.S. Dict. में नहीं (sce PSA 477)

* विभूतिविहारी, टैकारिटो, टैगारुको, यहां पढ़ें (पृ. 197, 1. 23 और पृ. 198, 1. 4.)।

(ग्रंथ XXII. सफलता (अलौकिक शक्ति)]

1. [205] सफलता क्या है?
सफलता कितने प्रकार की होती है?
कितने प्लेन सफल हुए हैं?
कितने बेस हैं?
कितने कदम?
कितनी जड़ें?

2. सफलता क्या है? सफलता का मतलब है सफल होना।

3. सफलता कितने तरह की होती है? सफलता दस तरह की होती है; और सफलता के चार लेवल, चार बेस, आठ स्टेप और सोलह रूट होते हैं।

4. सफलता के दस प्रकार क्या हैं? (1) निर्णय के रूप में सफलता, (2) परिवर्तन के रूप में सफलता, (3) मन से बने शरीर के रूप में सफलता, (4) ज्ञान के हस्तक्षेप से सफलता, (5) एकाग्रता के हस्तक्षेप से सफलता, (6) महान लोगों की सफलता, (7) कार्य-परिणाम से पैदा हुई सफलता, (8) मेधावी लोगों की सफलता, (9) विज्ञान के माध्यम से सफलता, (10) किसी विशेष अवसर के लिए सही कार्य में सफल होने के अर्थ में सफलता।

5. सफलता के चार लेवल कौन से हैं? ये हैं पहला झाना जो अकेलेपन से पैदा होता है, दूसरा झाना जो खुशी और आनंद का लेवल है, तीसरा झाना जो शांति और आनंद का लेवल है और चौथा झाना जो न दर्द और न खुशी का लेवल है। सफलता के ये चार लेवल सफलता पाने, सफलता पाने, सफलता से होने वाले बदलाव, सफलता की शान, सफलता पर महारत और सफलता में भरोसे की ओर ले जाते हैं।

6. सफलता के चार आधार क्या हैं? यहाँ एक भिक्षु सफलता का ऐसा आधार बनाता है जिसमें जोश की वजह से एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों हों; वह सफलता का ऐसा आधार बनाता है जिसमें ऊर्जा की वजह से एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों हों; वह सफलता का ऐसा आधार बनाता है जिसमें ज्ञान की वजह से एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों हों; वह सफलता का ऐसा आधार बनाता है जिसमें जिज्ञासा की वजह से एकाग्रता और कोशिश करने की इच्छाशक्ति दोनों हों। सफलता के ये चार आधार सफलता पाने, सफलता में भरोसा दिलाने की ओर ले जाते हैं।[1]

7. आठ चरण क्या हैं? [206] यदि कोई भिक्षु एकाग्रता प्राप्त करता है, उत्साह द्वारा समर्थित ज्ञान की एकता प्राप्त करता है, तो उत्साह एकाग्रता नहीं है और एकाग्रता उत्साह नहीं है; उत्साह एक है और एकाग्रता दूसरी है। यदि कोई भिक्षु एकाग्रता प्राप्त करता है, ऊर्जा द्वारा समर्थित ज्ञान की एकता प्राप्त करता है, तो ऊर्जा नहीं है

कंसंट्रेशन, और कंसंट्रेशन एनर्जी नहीं है; एनर्जी एक है और कंसंट्रेशन दूसरी चीज़ है। अगर कोई भिक्खु कंसंट्रेशन पा लेता है, ज्ञान से सपोर्टेड, ज्ञान का एकरूपता पा लेता है, तो ज्ञान कंसंट्रेशन नहीं है, और कंसंट्रेशन ज्ञान नहीं है; ज्ञान एक है और कंसंट्रेशन दूसरी चीज़ है। अगर कोई भिक्खु कंसंट्रेशन पा लेता है, पूछताछ से सपोर्टेड ज्ञान का एकरूपता पा लेता है, तो पूछताछ कंसंट्रेशन नहीं है, और कंसंट्रेशन पूछताछ नहीं है; पूछताछ एक है और कंसंट्रेशन दूसरी चीज़ है। सफलता के ये आठ स्टेप्स सफलता पाने, सफलता में सफलता पाने की ओर ले जाते हैं।2 . . . के लिए- यह पक्का करने

8. सफलता की सोलह जड़ें क्या हैं? निराश न होने वाला ज्ञान आलस्य से परेशान नहीं होता, इसलिए वह शांत रहता है। बेचैन न होने वाला ज्ञान बेचैनी से परेशान नहीं होता, इसलिए वह शांत रहता है। बिना किसी आकर्षण वाला ज्ञान लालच से परेशान नहीं होता, इसलिए वह शांत रहता है। बिना किसी विरोध के ज्ञान बुरी नीयत से परेशान नहीं होता, इसलिए वह शांत रहता है। स्वतंत्र ज्ञान (गलत) नज़रिए से परेशान नहीं होता, इसलिए वह शांत रहता है। बिना रोक-टोक वाला ज्ञान जोश और लालच से परेशान नहीं होता, इसलिए वह शांत रहता है। आज़ाद ज्ञान कामुक इच्छाओं के लालच से परेशान नहीं होता, इसलिए वह शांत रहता है। बिना किसी जुड़ाव वाला ज्ञान गंदगी से परेशान नहीं होता, इसलिए वह शांत रहता है। बाधाओं से मुक्त ज्ञान, मलिनता की बाधा से विचलित नहीं होता, अतः वह अविचलित रहता है। एकीकृत ज्ञान, भेद की मलिनता से विचलित नहीं होता, अतः वह अविचलित रहता है। श्रद्धा से आलिंगन किया गया ज्ञान, अविश्वास से विचलित नहीं होता, अतः वह अविचलित रहता है। ऊर्जा से आलिंगन किया गया ज्ञान, आलस्य से विचलित नहीं होता, अतः वह अविचलित रहता है। जागरूकता से आलिंगन किया गया ज्ञान, लापरवाही से विचलित नहीं होता, अतः वह अविचलित रहता है। एकाग्रता से आलिंगन किया गया ज्ञान, उत्तेजना से विचलित नहीं होता, अतः वह अविचलित रहता है। समझ से आलिंगन किया गया ज्ञान, अज्ञान से विचलित नहीं होता, अतः वह अविचलित रहता है। प्रकाशित ज्ञान, अज्ञान के अंधकार से विचलित नहीं होता, अतः वह अविचलित रहता है। सफलता की ये सोलह जड़ें सफलता की प्राप्ति की ओर ले जाती हैं,... सफलता में आश्वासन की ओर। [207]

9. (1) निर्णय के रूप में सफलता क्या है?

यहाँ एक भिक्षु कई तरह की सफलता (सुपरनॉर्मल पावर्स) का मज़ा लेता है; एक होने पर वह कई बन जाता है, कई होने पर वह एक हो जाता है; वह दिखाई देता है और गायब हो जाता है; वह बिना किसी रुकावट के दीवारों, बाड़ों, पहाड़ों से गुज़रता है, जैसे खुली जगह में हो; वह धरती में ऐसे गोता लगाता है जैसे पानी में हो; वह बिना रुके पानी पर ऐसे चलता है जैसे धरती पर हो; पालथी मारकर बैठकर वह अंतरिक्ष में एक पंख वाले पक्षी की तरह घूमता है; अपने हाथ से वह इतने शक्तिशाली और ताकतवर चाँद और सूरज को छूता और सहलाता है; वह ब्रह्म लोक तक भी शरीर पर कब्ज़ा कर लेता है।

10. यहाँ: इस नज़रिए में, इस पसंद के क्षेत्र में, इस पसंद के क्षेत्र में, इस चुनने के क्षेत्र में, इस सच्चे विचार में, इस अनुशासन (विनय) में, सच्चे विचार और अनुशासन के इस क्षेत्र में, इस सिद्धांत में, इस अच्छे जीवन में, इस गुरु की व्यवस्था में। इसलिए 'यहाँ' कहा गया है।

11. भिक्षु : भिक्षु एक उदार साधारण व्यक्ति, दीक्षित या अरहंत होता है जो अपराजेय विचार तक पहुँच गया है।

12. अलग-अलग तरह की सफलता का आनंद लेना: सफलता के अलग-अलग पहलुओं का आनंद लेना।

13. एक होने पर वह बहुत हो जाता है: ज़ाहिर है कि वह खुद को बहुत या सौ या हज़ार या लाख मानता है; मानने पर वह ज्ञान से तय करता है 'मुझे बहुत होने दो'। वह बहुत हो जाता है। जैसे आदरणीय कुल पंथक एक होने पर बहुत हो जाता है, वैसे ही यह सफलता (सुपरनॉर्मल पावर) पाने वाला मन पर काबू पाने वाला एक होने पर बहुत हो जाता है।

14. बहुत होने पर भी वह एक हो जाता है: ज़ाहिर है कि वह बहुत होने पर भी खुद को एक मानता है; मानने पर भी वह ज्ञान से तय करता है 'मुझे एक होने दो'। वह एक हो जाता है। जैसे आदरणीय कुल पंथक बहुत होने पर भी एक हो जाते हैं, वैसे ही यह सफलता (सुपरनॉर्मल पावर) पाने वाला भी बहुत होने पर भी मन पर काबू पाकर एक हो जाता है।

15. वह प्रकट होता है: वह किसी चीज़ से ढका हुआ नहीं है, वह छिपा हुआ नहीं है, वह प्रकट है, वह स्पष्ट है।

16. वह गायब हो जाता है: वह किसी चीज से ढक जाता है, वह छिप जाता है, वह बंद हो जाता है, वह संलग्न हो जाता है। [208]

17. वह दीवारों, घेरों, पहाड़ों से बिना किसी रुकावट के ऐसे गुज़रता है, जैसे खुली जगह में हो: ज़ाहिर है कि वह जगह पाने वाला होता है। वह कहता है: 'दीवार से, घेरे से, पहाड़ से'; कहने के बाद, वह ज्ञान से तय करता है 'जगह हो'। जगह है। वह दीवार से, घेरे से, पहाड़ से बिना किसी रुकावट के गुज़रता है। जैसे जिन लोगों में स्वाभाविक रूप से सफलता (सुपरनॉर्मल पावर) नहीं होती, वे बिना किसी रुकावट के वहाँ जाते हैं जहाँ कोई रुकावट या घेरा नहीं होता, वैसे ही यह सफलता (सुपरमॉर्मल पावर) पाने वाला, जो इच्छाशक्ति पर काबू पा लेता है, बिना किसी रुकावट के दीवार से, घेरे से, पहाड़ से गुज़रता है, जैसे खुली जगह में हो।

18. वह धरती में ऐसे गोते लगाता है जैसे पानी में: वह नैचुरली पानी कसीना पाने वाला होता है। वह धरती की ओर बढ़ता है। गोते लगाने के बाद, वह ज्ञान से तय करता है 'पानी हो'। पानी है। वह धरती में गोते लगाता है। जैसे नैचुरली सफलता (सुपरनॉर्मल पावर) न रखने वाले लोग पानी में गोते लगाते हैं, वैसे ही यह सफलता (सुपरनॉर्मल पावर) पाने वाला, जिसे इच्छाशक्ति पर काबू पा लिया है, धरती में ऐसे गोते लगाता है जैसे पानी में।

19. वह अविरल जल पर ऐसे चलता है मानो पृथ्वी पर हो: वह स्वाभाविक रूप से एक है

धरती पाने वाला कसीना की प्राप्ति करता है। वह पानी की ओर मुड़ता है। मुड़ने के बाद, वह ज्ञान से तय करता है 'धरती हो'। धरती है। वह बिना रुके पानी पर चलता है। जैसे लोग जो स्वाभाविक रूप से सफलता (सुपरनॉर्मल पावर) के पास नहीं होते, बिना रुके धरती पर चलते हैं, वैसे ही यह सफलता (सुपरनॉर्मल पावर) पाने वाला, जो इच्छाशक्ति पर काबू पा लेता है, बिना रुके पानी पर ऐसे चलता है जैसे धरती पर हो।

20. पालथी मारकर बैठा हुआ वह अंतरिक्ष में एक पंख वाले पक्षी की तरह घूमता है: वह स्वाभाविक रूप से पृथ्वी कासिना प्राप्ति पाने वाला है। वह अंतरिक्ष में जाता है। जाने के बाद, वह ज्ञान के साथ तय करता है 'पृथ्वी हो'। पृथ्वी है। वह अंतरिक्ष में, आकाश में घूमता (चलता), खड़ा होता, बैठता और लेटता है। जैसे स्वाभाविक रूप से सफलता (सुपरनॉर्मल पावर) से रहित लोग पृथ्वी पर घूमते (चलते), खड़े होते, बैठते और लेटते हैं, वैसे ही यह सफलता (सुपरनॉर्मल पावर) वाला व्यक्ति जो इच्छाशक्ति पर महारत हासिल कर लेता है, एक पंख वाले पक्षी की तरह अंतरिक्ष में, आकाश में घूमता (चलता), खड़ा होता, बैठता और लेटता है।

21. वह अपने हाथ से इतने शक्तिशाली चन्द्रमा और सूर्य को स्पर्श करता है और उन पर आघात करता है: यहाँ यह सिद्धि (अलौकिक शक्ति) [209] जिसने इच्छाशक्ति पर अधिकार प्राप्त कर लिया है, जब वह बैठा या लेटा हुआ है, वह चन्द्रमा और सूर्य की ओर देखता है। आघात करने के बाद, वह ज्ञान के साथ निर्णय करता है कि 'यह हाथ की पहुंच में हो'। यह हाथ की पहुंच में है। बैठे या लेटे हुए, वह अपने हाथ से चन्द्रमा और सूर्य को स्पर्श करता है, संपर्क बनाता है, आघात करता है। जिस प्रकार स्वाभाविक रूप से सिद्धि (अलौकिक शक्ति) से युक्त न होने वाले पुरुष हाथ की पहुंच में किसी भौतिक वस्तु को स्पर्श करते हैं, संपर्क बनाते हैं, आघात करते हैं, उसी प्रकार यह सिद्धि (अलौकिक शक्ति) जिसने इच्छाशक्ति पर अधिकार प्राप्त कर लिया है, चाहे बैठे या लेटे हुए, अपने हाथ से चन्द्रमा और सूर्य को स्पर्श करता है, संपर्क बनाता है, आघात करता है।

22. वह ब्रह्म लोक तक भी शारीरिक महारत हासिल करता है: अगर यह सफलता (अलौकिक शक्ति) का मालिक, जिसे इच्छाशक्ति पर महारत हासिल है, ब्रह्म लोक जाना चाहता है, तो भले ही दूर हो, वह पास होने का फैसला करता है 'पास ही रहने दो'। यह पास हो जाता है। भले ही पास हो, वह दूर होने का फैसला करता है 'दूर ही रहने दो'। यह दूर हो जाता है। भले ही बहुत सारे हों, वह कुछ ही तय करता है 'कम ही रहने दो। वे कम हैं। भले ही कम हों, वह बहुतों का फैसला करता है 'बहुत से रहने दो'। वे बहुत सारे हैं। दिव्य आँख से वह उस ब्रह्म के दिखने वाले पहलू (वस्तु) को देखता है; दिव्य कान के तत्व से वह उस ब्रह्म की आवाज़ सुनता है; इच्छाशक्ति के प्रवेश के ज्ञान से वह उस ब्रह्म की पहचान को समझता है। अगर यह सफलता (अलौकिक शक्ति) का मालिक, जिसे इच्छाशक्ति पर महारत हासिल है, दिखने वाले शरीर से ब्रह्म लोक जाना चाहता है, तो वह अपनी पहचान को अपने शरीर के हिसाब से बदल लेता है, वह अपनी पहचान को अपने शरीर के हिसाब से तय करता है। अपनी समझ को अपने शरीर के हिसाब से बदलकर, अपनी समझ को अपने शरीर के हिसाब से तय करके, उसे आसान समझ और जल्दी समझ आती है, और वह दिखने वाले शरीर के साथ ब्रह्म लोक में चला जाता है। अगर यह कामयाबी वाला इंसान

(अलौकिक शक्ति) इच्छाशक्ति पर महारत हासिल कर अदृश्य शरीर के साथ ब्रह्म लोक जाना चाहती है, वह अपने शरीर को अपनी पहचान के अनुरूप बदल लेती है, अपने शरीर को अपनी पहचान के अनुरूप बनाने का निर्णय लेती है। अपने शरीर को अपनी पहचान के अनुरूप बदल लेने के बाद, अपने शरीर को अपनी पहचान के अनुरूप बनाने का निर्णय लेने के बाद, वह सहज अनुभूति और त्वरित अनुभूति को प्राप्त होती है, और वह अदृश्य शरीर के साथ ब्रह्म लोक चली जाती है। वह उस ब्रह्म के समक्ष भौतिकता को, मन द्वारा निर्मित, उसके सभी अंगों सहित, किसी भी क्षमता से रहित, रचती है। यदि वह सिद्धि का स्वामी (अलौकिक शक्ति) ऊपर-नीचे चलता है, तो सृष्टि भी वहाँ ऊपर-नीचे चलती है। यदि वह सिद्धि का स्वामी खड़ा होता है, तो सृष्टि भी वहाँ खड़ी होती है। यदि वह सिद्धि का स्वामी बैठता है, तो सृष्टि भी वहाँ बैठती है। यदि वह सिद्धि का स्वामी लेट जाता है, तो सृष्टि भी वहाँ लेट जाती है। [210] यदि वह सिद्धि का स्वामी धुआँ उत्पन्न करता है, तो सृष्टि वहाँ भी धुआँ उत्पन्न करती है। यदि वह सिद्धि का स्वामी ज्वालाएँ उत्पन्न करता है, तो वह सृष्टि वहाँ भी ज्वालाएँ उत्पन्न करती है। अगर वह सफल व्यक्ति सच्चे विचार का प्रचार करता है, तो सृष्टि भी वहाँ सच्चे विचार का प्रचार करती है। अगर वह सफल व्यक्ति कोई सवाल पूछता है, तो सृष्टि भी वहाँ सवाल पूछती है। अगर वह सफल व्यक्ति, सवाल पूछे जाने पर जवाब देता है, तो सृष्टि भी वहाँ सवाल पूछे जाने पर जवाब देती है। अगर वह सफल व्यक्ति उस ब्रह्मा के साथ खड़ा होता है, बातचीत करता है, उस ब्रह्मा से कम्युनिकेशन में जाता है, तो सृष्टि भी वहाँ उस ब्रह्मा के साथ खड़ी होती है, बातचीत करती है, उस ब्रह्मा से कम्युनिकेशन में जाती है। वह सफल व्यक्ति जो भी करता है, सृष्टि भी वही करती है।

यह निर्णय के रूप में सफलता है।

23. (2) बदलाव (वर्सटैलिटी) के तौर पर सफलता क्या है? धन्य एक सिखिन, जो पूरी तरह से ज्ञानी और ज्ञानी हैं, उनका एक शिष्य है जिसका नाम अभिभू है। ब्रह्म लोक में खड़े होकर वह आवाज़ से दस हज़ार गुना बड़े विश्व सिद्धांत से बात कर सकते हैं। वह दिखने वाले शरीर से सच्चे विचार का प्रचार करते हैं, और वह दिखने वाले शरीर से सच्चे विचार का प्रचार करते हैं, और वह अपने शरीर के निचले आधे हिस्से को दिखने और ऊपरी आधे हिस्से को न दिखने से सच्चे विचार का प्रचार करते हैं, और वह अपने शरीर के ऊपरी आधे हिस्से को दिखने और निचले आधे हिस्से को न दिखने से सच्चे विचार का प्रचार करते हैं। वह अपना सामान्य रूप त्याग देता है और किसी लड़के का रूप, या नाग (सर्प) का रूप, या सुपन्न (पंखों वाला राक्षस) का रूप, या आत्मा का रूप, या [देवताओं के] शासक का रूप, या किसी [अन्य इंद्रिय-क्षेत्र] देवता का रूप, या ब्रह्मा का रूप, या समुद्र का रूप, या पहाड़ का रूप, या जंगल का रूप, या सिंह का रूप, या बाघ का रूप, या तेंदुए का रूप, या हाथी का रूप, या वह घोड़ा दिखाता है, या वह रथ दिखाता है, या वह पैदल सैनिक दिखाता है, या वह अनेक प्रकार की सैन्य व्यूह रचना दिखाता है। यह परिवर्तन (बहुमुखी प्रतिभा) के रूप में सफलता है।

24. (3) मन से निर्मित [शरीर] के रूप में सफलता क्या है? यहाँ एक भिक्षु

इस शरीर में से भौतिकता से युक्त, मन-निर्मित, [211] सभी अंगों से युक्त, किसी भी क्षमता से रहित एक अन्य शरीर की रचना करता है। जैसे कि एक व्यक्ति म्यान से एक सरकंडे को बाहर निकालता है और ऐसा सोचता है कि 'यह म्यान है, यह सरकंडा है; म्यान एक है, सरकंडा दूसरा है; सरकंडा म्यान से ही निकाला गया', या जैसे कि एक व्यक्ति म्यान से तलवार निकालता है और ऐसा सोचता है कि 'यह तलवार है, यह म्यान है; तलवार एक है, म्यान दूसरा है; तलवार म्यान से ही निकाली गई', या जैसे कि एक व्यक्ति के केंचुली से एक साँप को बाहर निकालता है और सोचता है कि 'यह साँप है, यह केंचुली है; साँप एक है, केंचुली दूसरी है; केंचुली से ही साँप को निकाला गया', वैसे ही भिक्षु इस शरीर में से भौतिकता से युक्त, मन-निर्मित, सभी अंगों से युक्त, किसी भी क्षमता से रहित एक अन्य शरीर की रचना करता है। यह मन से निर्मित [शरीर] के रूप में सफलता है।

25. (4) ज्ञान के हस्तक्षेप से सफलता क्या है? स्थायित्व की धारणा को छोड़ने का अर्थ अस्थिरता के चिंतन से सफल होता है, इस प्रकार यह ज्ञान के हस्तक्षेप से सफलता है। सुख की धारणा को छोड़ने का अर्थ दर्द के चिंतन से सफल होता है, ... आत्म की धारणा को छोड़ने का अर्थ अनात्मा के चिंतन से सफल होता है, ... सुख को छोड़ने . . . का अर्थ - वैराग्य के चिंतन से सफल होता है, लोभ को छोड़ने से मिटने के चिंतन से सफल होता है, ... उत्पत्ति को छोड़ने का अर्थ निरोध के चिंतन से सफल होता है, ... लोभ को छोड़ने का अर्थ त्याग के चिंतन से सफल होता है, इस प्रकार यह ज्ञान के हस्तक्षेप से सफलता है। आदरणीय बक्कुला में ज्ञान के हस्तक्षेप से सफलता मिली। आदरणीय संकिच्चा में ज्ञान के हस्तक्षेप से सफलता मिली। आदरणीय भूतपाल में ज्ञान के हस्तक्षेप से सफलता मिली। यह ज्ञान के हस्तक्षेप से सफलता है।

26. (5) कॉन्संट्रेशन के दखल से क्या सफलता मिलती है? रुकावटों को छोड़ने का मतलब पहले झान से सफल होता है, इसलिए यह कॉन्संट्रेशन के दखल से सफलता है। लगाए गए और लगातार सोच को छोड़ने का मतलब दूसरे झान से सफल होता है, इसलिए यह कॉन्संट्रेशन के दखल से सफलता है। खुशी छोड़ने का मतलब तीसरे झान से सफल होता है,... सुख और दुख छोड़ने का मतलब चौथे झान से सफल होता है,... भौतिकता की समझ, विरोध की समझ, और विविधता की समझ को छोड़ने का मतलब असीम जगह वाले आधार को पाने से सफल होता है, असीम जगह वाले आधार को पाने से सफल होता है। असीम चेतना वाले आधार को पाने का मतलब, . . . असीम चेतना वाले आधार को पाने से सफल होता है।

शून्यता के आधार की प्राप्ति से सफलता मिलती है...
शून्यता के आधार की धारणा को त्यागने का अर्थ न तो धारणा और न ही गैर-धारणा वाले आधार की प्राप्ति से सफलता मिलती है, [212] इस प्रकार यह एकाग्रता के हस्तक्षेप से सफलता है। आदरणीय सारिपुत्त में एकाग्रता के हस्तक्षेप से सफलता मिली। आदरणीय संजीव में एकाग्रता के हस्तक्षेप से सफलता मिली। आदरणीय खानुकोंडग्ना में एकाग्रता के हस्तक्षेप से सफलता मिली। गृहस्थ भक्त उत्तरा में एकाग्रता के हस्तक्षेप से सफलता मिली। गृहस्थ भक्त सामवती में एकाग्रता के हस्तक्षेप से सफलता मिली। यह एकाग्रता के हस्तक्षेप से सफलता है।

27. (6) महानुभावों की सफलता क्या है? यहाँ यदि कोई भिक्षु चाहे (1) 'मैं घृणास्पद में अरुचिकर को देखता हुआ रहूँ', तो वह वहाँ अरुचिकर को देखता हुआ रहता है। यदि वह चाहे (2) 'मैं घृणास्पद में अरुचिकर को देखता हुआ रहूँ', तो वह वहाँ अरुचिकर को देखता हुआ रहता है। यदि वह चाहे (3) 'मैं घृणास्पद और अरुचिकर में अरुचिकर को देखता हुआ रहूँ', तो वह वहाँ अरुचिकर को देखता हुआ रहता है। यदि वह चाहे (4) 'मैं घृणास्पद और अरुचिकर में अरुचिकर को देखता हुआ रहूँ', तो वह वहाँ अरुचिकर को देखता हुआ रहता है। यदि वह चाहे (5) 'मैं घृणित तथा अप्रिय दोनों पहलुओं से बचता हुआ उसके प्रति समभाव से सचेत तथा पूर्ण जागरूक होकर रहूँ', तो वह उसके प्रति समभाव से सचेत तथा पूर्ण जागरूक होकर रहता है।

(1) वह कैसे घिनौनी चीज़ में भी अच्छी चीज़ को देखता रहता है? किसी नापसंद चीज़ के मामले में वह उस पर प्यार से ध्यान देता है, या उसे उसूलों से जोड़ता है। इस तरह वह घिनौनी चीज़ में भी अच्छी चीज़ को देखता रहता है।

(2) वह अप्रिय में अप्रिय को कैसे देखता रहता है? किसी अच्छी चीज़ के मामले में वह उसे बुरा मानता है, या उसे नश्वरता से जोड़ता है। इस तरह वह अप्रिय में अप्रिय को देखता रहता है।

(3) वह कैसे नापसंद और नापसंद में नापसंद को देखता रहता है? किसी नापसंद और पसंद की चीज़ के मामले में वह उस पर प्यार से ध्यान देता है, या उसे उसूलों से जोड़ता है। इसी तरह वह नापसंद और नापसंद में नापसंद को देखता रहता है।

(4) वह अप्रिय और अप्रिय में अप्रिय को कैसे देखता रहता है? किसी अच्छी और अप्रिय चीज़ के मामले में वह उसे बुरा मानता है, या उसे नश्वरता से जोड़ता है। इस तरह वह अप्रिय और अप्रिय में अप्रिय को देखता रहता है।

(5) वह किस प्रकार घृणित तथा अप्रिय दोनों पहलुओं से बचता हुआ, उसके प्रति समभाव से सचेत तथा पूर्ण जागरूक होकर स्थित रहता है?

[213] यहाँ एक भिक्षु, आँख से किसी दृश्यमान वस्तु को देखकर न तो प्रसन्न होता है और न ही दुखी; वह समता में, सचेत और पूर्णतः जागरूक रहता है। कान से कोई ध्वनि सुनकर... नाक से गंध सूंघने पर, जीभ से स्वाद चखने पर... शरीर से किसी मूर्त वस्तु का स्पर्श करने पर... मन से किसी विचार को जानने पर, वह न तो प्रसन्न होता है और न ही दुखी; वह समता में, सचेत और पूर्णतः जागरूक रहता है। इस तरह वह घृणित और अप्रतिकर्षक दोनों [पहलुओं] से बचता हुआ, उसके प्रति सचेत और पूर्णतः जागरूक, समता में रहता है।

यह महानुभावों की सफलता है।

28. (7) कर्म-परिणाम से पैदा होने वाली सफलता क्या है? सभी पंख वाले पक्षियों में, सभी देवताओं में, कुछ मनुष्यों में, अभावग्रस्त अवस्था में रहने वाले कुछ निवासियों में, वह कर्म-परिणाम से पैदा होने वाली सफलता है।

29. (8) मेधावी की सफलता क्या है? चक्रधारी राजा अपनी चार सेना के साथ, यहाँ तक कि अपने ग्रूम और चरवाहों के साथ हवा में घूमते हैं। गृहस्थ जोतिका को मेधावी की सफलता मिली थी। गृहस्थ जतिलक को मेधावी की सफलता मिली थी। गृहस्थ घोसिट को मेधावी की सफलता मिली थी। गृहस्थ मेंडक को मेधावी की सफलता मिली थी। पाँच बहुत मेधावी में से जो बहुत मेधावी है, वह मेधावी की सफलता है। यही मेधावी की सफलता है।

30. (9) साइंस से सफलता क्या है? साइंस के जानकार, अपनी साइंस की बातें सुनाकर, हवा में घूमते हैं, और आसमान में वे हाथी दिखाते हैं, और वे घोड़ा दिखाते हैं, और वे रथ दिखाते हैं, और वे पैदल सैनिक दिखाते हैं, और वे कई तरह की मिलिट्री दिखाते हैं। यही साइंस से सफलता है।

31. (10) किसी खास मौके के लिए सही काम में सफल होने के मतलब में सफलता क्या है? इन्द्रिय-इच्छाओं के लिए जोश छोड़ने का मतलब त्याग से सफल होता है, इस तरह यह उस खास मौके के लिए सही काम में सफल होने के मतलब में सफलता है, [214]... [और इसी तरह बाकी सात रुकावटों, चार ज्ञानों, चार अमूर्त उपलब्धियों, अठारह मुख्य जानकारियों और चार रास्तों के साथ, तक)... सभी बुराइयों को छोड़ने का मतलब अरहंत रास्ते से सफल होता है, इस तरह यह उस खास मौके के लिए सही काम में सफल होने के मतलब में सफलता है। यह उस खास मौके के लिए सही काम में सफल होने के मतलब में सफलता है।5

सफलता पर ग्रंथ का अंत।



नोट्स

[1] Tr. 1 § 535 देखें।

[2] Sv 268.

[3] Read *vimariyādikataṃ cittam kilesamariyāde na ijjhati.*

* अयम अहि अयम करंडो, अन्यो अहि पढ़ें।

[5] संपूर्ण ग्रंथ पर टिप्पणी के लिए देखें विस्म अध्याय XII.

1. [215] अभिसरण है.1

1 वह किसके ज़रिए कन्वर्जेंस पैदा करता है?

वह ज्ञान के ज़रिए कन्वर्जेंस का कारण बनता है।2

अगर वह ज्ञान के ज़रिए कन्वर्जेंस करता है, तो बिना ज्ञान वाला कन्वर्जेंस करता है?

बिना ज्ञान वाला कन्वर्जेंस नहीं करता; वह ज्ञान के ज़रिए कन्वर्जेंस करता है।

अगर वह ज्ञान के ज़रिए कन्वर्जेंस करता है, तो बिना ज्ञान वाला कन्वर्जेंस करता है?

बिना ज्ञान वाला व्यक्ति कन्वर्जेंस नहीं करता; वह ज्ञान और ज्ञान के ज़रिए कन्वर्जेंस करता है।

अगर वह कॉग्निजेंस और नॉलेज के ज़रिए कन्वर्जेंस करता है, तो क्या वह सेंसुअल-डिज़ायर-स्फेयर कॉग्निजेंस और नॉलेज के ज़रिए कन्वर्जेंस करता है?

वह इंद्रिय-इच्छा-क्षेत्र की जानकारी और ज्ञान के ज़रिए एक साथ नहीं लाता।

तो फिर वह मैटेरियल-स्फीयर कॉग्निजेंस और नॉलेज के ज़रिए कन्वर्जेंस करता है?

वह मैटेरियल-स्फीयर कॉग्निजेंस और नॉलेज के ज़रिए कन्वर्जेंस नहीं करता है।

तो फिर वह इम्मैटेरियल-स्फीयर कॉग्निजेंस और नॉलेज के ज़रिए कन्वर्जेंस करता है?

वह इम्मैटेरियल-स्फीयर कॉग्निजेंस और नॉलेज के ज़रिए कन्वर्जेंस नहीं करता है।

तो फिर वह ज्ञान के ज़रिए कन्वर्जेंस करता है जो एक्शन का वारिस है और ज्ञान के ज़रिए?

वह ज्ञान के ज़रिए, जो कर्म का वारिस है, और ज्ञान के ज़रिए कन्वर्जेंस नहीं करता।

तो फिर वह ज्ञान के ज़रिए कन्वर्जेंस करता है जो एक्शन का मालिक है और ज्ञान के ज़रिए?

वह ज्ञान के ज़रिए, जो कर्म का मालिक है, और ज्ञान के ज़रिए कन्वर्जेंस नहीं करता।

तो क्या वह असलियत के हिसाब से कॉग्निजेंस और ज्ञान के ज़रिए कन्वर्जेंस करता है?

वह असलियत के हिसाब से कॉग्निजेंस और ज्ञान के ज़रिए कन्वर्जेंस नहीं करता।

तो फिर वह पिछली जानकारी और ज्ञान के ज़रिए कन्वर्जेंस करता है?

वह पहले की जानकारी और ज्ञान के ज़रिए कन्वर्जेंस नहीं करता।

तो फिर वह भविष्य की जानकारी और ज्ञान के ज़रिए कन्वर्जेंस करता है?

वह भविष्य की जानकारी और ज्ञान के ज़रिए कन्वर्जेंस नहीं करता।

तो फिर वह अभी पैदा हुई दुनियावी समझ और ज्ञान के ज़रिए कन्वर्जेंस करता है?

वह अभी पैदा हुई दुनियावी समझ और ज्ञान से कन्वर्जेंस नहीं करता; वह अभी पैदा हुई दुनियावी रास्ते के पल में मिली समझ और ज्ञान से कन्वर्जेंस करता है।

वह अभी पैदा हुए ज्ञान के ज़रिए, अलौकिक मार्ग के पल में और ज्ञान के ज़रिए कैसे एक साथ लाता है?

अलौकिक मार्ग के क्षण में ज्ञान जिसका मुख्य गुण है [उसके उत्पन्न होने का स्वभाव ही ज्ञान का कारण और शर्त है, [216] और उस [ज्ञान] से जुड़ा ज्ञान भी समाप्ति का क्षेत्र है; और ज्ञान, जिसका मुख्य गुण है देखना, ज्ञान का कारण और शर्त है, और उस ज्ञान से जुड़ा ज्ञान भी समाप्ति का क्षेत्र है। इस तरह वह अलौकिक मार्ग के क्षण में वर्तमान में उत्पन्न ज्ञान और ज्ञान के माध्यम से अभिसरण का कारण बनता है।

2. तो फिर, कन्वर्जेंस सिर्फ़ इतना ही कैसे है?

नहीं। अलौकिक मार्ग के पल में: देखने का मिलन होता है, जो सही नज़रिया है; निर्देश देने का मिलन होता है, जो सही विचार है; गले लगाने का मिलन होता है, जो सही बोलना है; शुरू करने का मिलन होता है, जो सही काम करना है; सफाई का मिलन होता है, जो सही जीवन जीना है; मेहनत का मिलन होता है, जो सही कोशिश है; स्थापित करने (फाउंडेशन) का मिलन होता है, जो सही माइंडफुलनेस है; ध्यान भटकने से बचने का मिलन होता है, जो सही एकाग्रता है। स्थापित करने (फाउंडेशन) का मिलन होता है, जो माइंडफुलनेस ज्ञान का फैक्टर है;... (और इसी तरह बाकी सात ज्ञान के फैक्टर के साथ भी)... फिर से झुकने का मिलन होता है, जो बराबरी का ज्ञान का फैक्टर है। विश्वास न होने से अडिग रहने का मिलन होता है, जो विश्वास की शक्ति है: इसी तरह बाकी पाँच शक्तियों के साथ भी)... अज्ञानता से अडिग रहने का मिलन होता है, जो समझने की शक्ति है। संकल्प का मिलन होता है, जो विश्वास की क्षमता है;... [और इसी तरह बाकी पांच क्षमताओं के साथ]... देखने का मिलन होता है, जो समझने की क्षमता है। [और] में क्षमताओं का मिलन होता

...है

प्रभुत्व की भावना; अस्थिरता के अर्थ में शक्तियों का अभिसरण होता है; आउटलेट के अर्थ में ज्ञान के कारकों का अभिसरण होता है; कारण के अर्थ में पथ का अभिसरण होता है; स्थापना (नींव) के अर्थ में जागरूकता की नींव का अभिसरण होता है; प्रयास करने के अर्थ में सही प्रयासों का अभिसरण होता है; सफल होने के अर्थ में सफलता के आधारों का अभिसरण होता है; तथाता (वास्तविकता) के अर्थ में वास्तविकताओं का अभिसरण होता है। गैर-विचलित होने के अर्थ में शांति का अभिसरण होता है; चिंतन के अर्थ में अंतर्दृष्टि का अभिसरण होता है; एकल कार्य (स्वाद) के अर्थ में शांति और अंतर्दृष्टि का अभिसरण होता है; गैर-अतिरिक्त होने के अर्थ में युग्मन का अभिसरण होता है। संयम के अर्थ में गुण की शुद्धि अभिसरण है; गैर-विचलित होने के अर्थ में संज्ञान की शुद्धि अभिसरण है स्वतंत्रता के अर्थ में मुक्ति अभिसरण है; प्रवेश के अर्थ में मान्यता अभिसरण है; त्याग करने के अर्थ में मुक्ति अभिसरण है; कट जाने के अर्थ में थकावट का ज्ञान अभिसरण है। मूल नींव के अर्थ में उत्साह अभिसरण है; उत्पत्ति के अर्थ में ध्यान अभिसरण है; संयोजन के अर्थ में संपर्क अभिसरण है; अग्रणी होने के अर्थ में [217] एकाग्रता अभिसरण है; प्रभुत्व के अर्थ में जागरूकता अभिसरण है; सबसे ऊंचा होने के अर्थ में समझ अभिसरण है; मूल के अर्थ में उद्धार करना अभिसरण है; अंत के अर्थ में निब्बान जो अमर में विलीन हो जाता है, अभिसरण है।3

3. तो फिर, कन्वर्जेंस सिर्फ़ इतना ही कैसे है?

नहीं। स्ट्रीम-एंट्री पथ के पल में: देखने का कन्वर्जेंस होता है, जो राइट व्यू है;... [और इसी तरह §2 में)... काटने के मतलब में विनाश का ज्ञान कन्वर्जेंस है। रूट-फाउंडेशन के मतलब में, जोश कन्वर्जेंस है... [और इसी तरह §2 में]... अंत के मतलब में, निब्बान जो अमर में मिल जाता है, वह कन्वर्जेंस है।

4. तो फिर, कन्वर्जेंस सिर्फ़ इतना ही कैसे है?

नहीं। स्ट्रीम एंट्री के फलित होने के समय: देखने का कन्वर्जेंस होता है, जो राइट व्यू है;... [और इसी तरह §2 में]... ट्रैंक्विलाइज़ेशन के अर्थ में न उठने का ज्ञान कन्वर्जेंस है। रूट-फाउंडेशन के अर्थ में, जोश कन्वर्जेंस है.. [और इसी तरह §2 में]... में अंत का भाव, निब्बाण जो अमर में विलीन हो जाता है, वह अभिसरण है।

5. तो फिर, कन्वर्जेंस सिर्फ़ इतना ही कैसे है?

नहीं। एक बार वापस आने वाले रास्ते के पल में: देखने का मिलन होता है, जो राइट व्यू है;... (§3 दोहराएं)।

6. तो फिर, कन्वर्जेंस सिर्फ़ इतना ही कैसे है?

नहीं। एक बार लौटने के फल के पल में: देखने का मिलन होता है, जो सही नज़र है;... (§4 दोहराएं)।

7. तो फिर, कन्वर्जेंस सिर्फ़ इतना ही कैसे है?

नहीं। नॉन-रिटर्न पथ के पल में: देखने का कन्वर्जेंस होता है, जो राइट व्यू है;... (§3 दोहराएं)।

8. तो फिर, कन्वर्जेंस सिर्फ़ इतना ही कैसे है?

नहीं। न लौटने की सिद्धि के क्षण में दृष्टि का अभिसरण होता है, जो कि सम्यक दृष्टि है;... [दोहराएँ §4]।

9. तो फिर, कन्वर्जेंस सिर्फ़ इतना ही कैसे है?

नहीं। अरहंत मार्ग के समय: देखने का मिलन होता है, जो कि सही नज़र है;... (§3 दोहराएं)

10. तो फिर, कन्वर्जेंस सिर्फ़ इतना ही कैसे है?

नहीं। अरहंतत्व के फलित होने के समय: देखने का मिलन होता है, जो सही नज़र है;... (§4 दोहराएं)।

11. जब यह (महान व्यक्ति) मलों को त्यागता है, तो वह पिछले मलों को त्याग देता है, भविष्य के मलों को त्याग देता है, पूर्व में उत्पन्न मलों को त्याग देता है?

[मान लीजिए कि] वह पिछली अशुद्धियों को त्याग देता है।

अगर वह पिछली बुराइयों को छोड़ देता है, तो वह जो पहले ही खत्म हो चुका है उसे खत्म कर देता है, जो पहले ही खत्म हो चुका है उसे खत्म कर देता है, जो पहले ही खत्म हो चुका है उसे गायब कर देता है, जो पहले ही खत्म हो चुका है उसे कम कर देता है। ऐसा क्या बीता हुआ है, जो है ही नहीं, जिसे वह छोड़ देता है?

वह पिछली बुराइयों को नहीं छोड़ता। [मान लीजिए कि] वह भविष्य की बुराइयों को छोड़ देता है।

अगर वह भविष्य की बुराइयों को छोड़ देता है, तो वह उसे छोड़ देता है जो पैदा नहीं हुआ, वह उसे छोड़ देता है जो पैदा नहीं हुआ, वह उसे छोड़ देता है जो पैदा नहीं हुआ, वह उसे छोड़ देता है जो ज़ाहिर नहीं हुआ। भविष्य में क्या है, जो है ही नहीं, जिसे वह छोड़ देता है?

वह भविष्य की बुराइयों को नहीं छोड़ता। (मान लीजिए कि) वह अभी पैदा हुई बुराइयों को छोड़ देता है।

यदि वह वर्तमान में उत्पन्न हुए विकारों को त्याग दे, तो लोभ से उत्तेजित होने पर भी वह लोभ को त्याग देता है, घृणा से भ्रष्ट होने पर भी वह घृणा को त्याग देता है, मोहित होने पर भी वह मोह को त्याग देता है, जंजीरों में जकड़े होने पर भी वह दंभ को त्याग देता है, गलतफहमी होने पर भी वह (मिथ्या) दृष्टिकोण को त्याग देता है, विचलित होने पर भी वह अशांति को त्याग देता है, अनिर्णय की स्थिति में भी वह अनिश्चितता को त्याग देता है, पुरानी आदतों के होते हुए भी वह अंतर्निहित प्रवृत्ति को त्याग देता है, अंधकार और उजले विचार एक साथ उत्पन्न होते हैं, और एक ऐसे मार्ग का विकास होता है जिसमें मलिनता है। [218]

वह पिछली बुराइयों को नहीं छोड़ता, वह भविष्य की बुराइयों को नहीं छोड़ता, वह अभी पैदा हुई बुराइयों को नहीं छोड़ता।

अगर वह पिछली बुराइयों को नहीं छोड़ता, भविष्य की बुराइयों को नहीं छोड़ता, और अभी पैदा हुई बुराइयों को नहीं छोड़ता, तो रास्ते का कोई विकास नहीं होता, उसके फल का एहसास नहीं होता, विचारों का मेल नहीं होता?

ऐसा नहीं है। रास्ते का विकास होता है, उसके फल का एहसास होता है, विचारों का मेल होता है।

किस तरह से?

12. मान लीजिए कि एक छोटा पेड़ है जिस पर बिना फल लगे हैं, और कोई आदमी उसकी जड़ काट दे, तो पेड़ के बिना फल बिना पैदा हुए रह जाते हैं और पैदा नहीं होते, वे बिना पैदा हुए रह जाते हैं और पैदा नहीं होते, वे बिना पैदा हुए रह जाते हैं और पैदा नहीं होते, वे बिना दिखे रह जाते हैं और ज़ाहिर नहीं होते। इसी तरह, पैदा होना एक कारण है, पैदा होना एक शर्त है, ताकि बुराइयां पैदा हों। पैदा होने में खतरा देखकर, ज्ञान पैदा न होने की स्थिति में चला जाता है (बाहर निकल जाता है)। ज्ञान के पैदा न होने की स्थिति में जाने (बाहर निकलने) के साथ, पैदा होने के साथ पैदा होने वाली बुराइयां अपनी शर्त के तौर पर बिना पैदा हुए रह जाती हैं और पैदा नहीं होतीं,... बिना दिखे रहती हैं और ज़ाहिर नहीं होतीं। इसी तरह कारण के खत्म होने पर दुख खत्म हो जाता है। घटना एक कारण है.. निशान एक कारण है... जमा होना एक कारण है, जमा होना बुराइयों के पैदा होने की स्थिति है। जमा करने में खतरा देखकर, ज्ञान जमा न करने में चला जाता है (बाहर निकल जाता है)। ज्ञान के जमा न करने में जाने (बाहर निकलने) से जमा करने से पैदा होने वाली बुराइयाँ पैदा नहीं होतीं और पैदा नहीं होतीं,... बिना दिखे रहती हैं और ज़ाहिर नहीं होतीं। इसलिए कारण के खत्म होने से दुख खत्म हो जाता है। इस तरह रास्ते का विकास होता है, उसके नतीजे का एहसास होता है, विचारों का मेल होता है।

कन्वर्जेंस पर ग्रंथ का अंत।



नोट्स

[1] अभिसमय को कन्वर्जेंस से समझाने के लिए <Ñāṇamoli ने एक नोट लिखने का इरादा किया था, लेकिन वह नहीं मिला। यह ट्रांसलेशन एटिमोलॉजिकल है और शायद इसका मकसद चारों असलियतों के एक ही पेनिट्रेशन, एक 'कन्वर्जेंस' के तौर पर पेनेट्रेट करना था। Cf. PsA पेज 164 P.T.S. edn. पेज 102 पर महानामा sam-here को samma से समझाते हुए लगता है, यानी 'सीधे अंदर जाना', हालांकि बर्मी ट्रांसक्रिप्ट में sam-d लिखा है, जो नानमोली के आइडिया को सपोर्ट करेगा, इसके अलावा PSA 686 में बिना किसी रिकॉर्डेड वेरिएशन के sam-d लिखा है। हालांकि, अग्गावंसा (Sadd पेज 419 और 884) यहां samā को सपोर्ट करता है और इसलिए sam-a शायद सिर्फ जल्दबाजी में किया गया 'करेक्शन' हो सकता है। एटिमोलॉजिकली samā भी ओरिजिनली मतलब 'एक साथ जाना'।>

* Kena abhisameti? Cittena abhisameti. Hanci cittena, वगैरह पढ़ें।

[3] इसके लिए § cf. Tr. 1, § § 26 और खास तौर पर 360 देखें*

Yvayam kilese pajahati, atite kilese pajahati, anāgate, वगैरह पढ़ें। Comy, कहते हैं 'Yvāyan ti ayam maggattho ariyo puggalo' (PsA 512 SC)। बर्मी ट्रांसक्रिप्ट में 'Yviyam yo ayam abhisamayo' के साथ पैरा-फ्रेज़ किया गया है, जो इसलिए पूरी तरह सही नहीं लगता।

[ग्रंथ XXIV.-एकांतवास पर]

1. भिक्षुओ, जैसे शारीरिक शक्ति से किए जाने वाले सभी कार्य धरती पर निर्भर रहकर, धरती पर खड़े होकर किए जाते हैं, और इसी तरह वे किए जाते हैं, वैसे ही पुण्य पर निर्भर रहकर, पुण्य पर खड़े होकर एक भिक्षु महान अष्टांगिक मार्ग का विकास करता है, महान अष्टांगिक मार्ग का अधिक लाभ उठाता है।

'और यह कैसे है, भिक्षुओं, कि पुण्य पर निर्भर रहकर, पुण्य पर खड़े होकर, एक भिक्षु महान अष्टांग मार्ग को विकसित करता है, महान अष्टांग मार्ग का अधिक लाभ उठाता है? यहाँ, भिक्षुओं, एक भिक्षु एकांत पर निर्भर होकर, मिटने पर निर्भर होकर, समाप्ति पर निर्भर होकर, त्याग में सही दृष्टिकोण विकसित करता है; वह सही विचार विकसित करता है... सही बोलना... सही काम... सही जीवन। सही प्रयास... सही ध्यान... वह एकांत पर निर्भर होकर, मिटने पर निर्भर होकर, समाप्ति पर निर्भर होकर, त्याग में सही एकाग्रता विकसित करता है। इस तरह, पुण्य पर निर्भर रहकर, पुण्य पर खड़े होकर, एक भिक्षु महान अष्टांग मार्ग को विकसित करता है, महान अष्टांग मार्ग का अधिक लाभ उठाता है।

'भिक्षुओं, जिस तरह ये बीज और पौधे बढ़ते, बढ़ते और परिपक्व होते हैं, वे सब धरती पर निर्भर होकर, धरती पर खड़े होकर ऐसा करते हैं, और इस तरह वे बढ़ते, बढ़ते और परिपक्व होते हैं, उसी तरह पुण्य पर निर्भर होकर, पुण्य पर खड़े होकर, [220] एक भिक्षु महान अष्टांगिक मार्ग का विकास करता है, महान अष्टांगिक मार्ग का अधिक से अधिक लाभ उठाता है, और [अच्छे] विचारों में वृद्धि, वृद्धि और परिपक्वता प्राप्त करता है।

'और यह कैसे होता है, भिक्षुओं, कि सद्गुण पर निर्भर रहकर, सद्गुण पर खड़े होकर, एक भिक्षु महान अष्टांगिक मार्ग को विकसित करता है, महान अष्टांगिक मार्ग का भरपूर लाभ उठाता है, [अच्छे] विचारों में विकास, बढ़ोतरी और परिपक्वता तक पहुँचता है? यहाँ, भिक्षुओं, एक भिक्षु एकांत पर निर्भर होकर सही नज़रिया विकसित करता है,... [जैसा ऊपर बताया गया है)... एकांत पर निर्भर होकर, मिटने पर निर्भर होकर, समाप्ति पर निर्भर होकर सही एकाग्रता विकसित करता है, जिसके परिणामस्वरूप त्याग होता है'। (S v 45f.)

*

2. सम्यक् दृष्टि में पाँच प्रकार के एकांत, पाँच प्रकार के लुप्त होने, पाँच प्रकार के निरोध, पाँच प्रकार के त्याग और बारह आश्रित कारक होते हैं।

सही सोच के मामले में..
सही बोलने के मामले में...
सही काम करने के मामले में..
सही जीवन जीने के मामले में...

सही प्रयास के मामले में...

सही माइंडफुलनेस के मामले में।

सही कॉन्सन्ट्रेशन के मामले में...

3. सही नज़रिए के मामले में एकांत के पाँच प्रकार क्या हैं?

वे हैं दमन द्वारा एकांत, विपरीतताओं के प्रतिस्थापन द्वारा एकांत, काट कर एकांत, ट्रैंक्विलाइज़ेशन द्वारा एकांत, और पलायन के रूप में एकांत।

दबाने से एकांत, पहला ज्ञान विकसित करने वाले में रुकावटों का एकांत है। उलटी चीज़ों को बदलने से एकांत, पेनेट्रेशन में हिस्सा लेने वाले में गलत नज़रिए का सहारा लेने का एकांत है। काटकर एकांत, विनाश [अपवित्रता] की ओर ले जाने वाले अलौकिक मार्ग को विकसित करने वाले में है। ट्रैंक्विलाइज़ करके एकांत, फल मिलने के समय होता है। बचने के तौर पर एकांत, समाप्ति, निब्बाण है।

सही नज़रिए के मामले में ये पाँच तरह के एकांत हैं। और एकांत के मामले में) वह (1) जोश से भरा होता है, (2) विश्वास से पक्का होता है, और (3) उसकी समझ पूरी तरह स्थिर होती है।

4. सही नज़रिए के मामले में, गायब होने के पाँच तरीके क्या हैं?

वे दमन से मिट रहे हैं, विपरीतताओं के प्रतिस्थापन से मिट रहे हैं, काट कर मिट रहे हैं, ट्रैंक्विलाइज़ेशन से मिट रहे हैं और पलायन के रूप में मिट रहे हैं।

दबाने से गायब होना, पहले ज्ञान को डेवलप करने में आने वाली रुकावटों का गायब होना है। उलटी चीज़ों को बदलने से गायब होना, गलत नज़रिए का सहारा लेने का गायब होना है... (और इसी तरह §3 में है)... बचने के तौर पर गायब होना, खत्म होना, निब्बान है।

सम्यक दृष्टि के मामले में ये पाँच प्रकार के क्षीणन हैं. और [क्षीणन के मामले में] वह (4) उत्साह से भरा हुआ है, (5) विश्वास से दृढ़ है, और (6) उसका संज्ञान बिल्कुल स्थिर है. [221]

5. सही नज़रिए के मामले में, समाप्ति के पाँच प्रकार क्या हैं?

वे हैं दमन द्वारा निरोध, विपरीत चीजों के प्रतिस्थापन द्वारा निरोध, काट कर निरोध, ट्रैंक्विलाइज़ेशन द्वारा निरोध, तथा पलायन के रूप में निरोध।

दमन द्वारा समाप्ति, प्रथम ज़ाना को विकसित करने में आने वाली बाधाओं की समाप्ति है... (और इसी प्रकार अध्याय 3 में भी)... पलायन के रूप में समाप्ति, समाप्ति है, निब्बान है।

सही नज़रिए के मामले में ये पाँच तरह के ठहराव हैं। और [टालने के मामले में] वह (7) जोश से भरा होता है, (8) विश्वास से पक्का होता है, और (9) उसकी समझ पूरी तरह स्थिर होती है।

6. सही नज़रिए के मामले में त्याग के पाँच प्रकार क्या हैं?

वे हैं दमन द्वारा त्याग, विपरीत के प्रतिस्थापन द्वारा त्याग, काट कर त्याग, शांति द्वारा त्याग, तथा पलायन के रूप में त्याग।

दमन द्वारा परित्याग, प्रथम ज़ाना को विकसित करने में आने वाली बाधाओं का परित्याग है... (और इसी प्रकार §3 में भी)... पलायन के रूप में परित्याग, समाप्ति है, निब्बान है।

सही नज़रिए के मामले में ये पाँच तरह के त्याग हैं। और [त्याग के मामले में] वह (10) जोश से भरा होता है, (11) विश्वास से पक्का होता है, और (12) उसकी समझ पूरी तरह स्थिर होती है।[1]

सम्यक दृष्टि के मामले में ये पाँच प्रकार के एकांत, पाँच प्रकार के लुप्त होने, पाँच प्रकार के निरोध, पाँच प्रकार के त्याग और बारह आश्रित कारक हैं।

7-10. सही सोच के मामले में एकांत के पाँच प्रकार क्या हैं?

11-14. सही बोलने के मामले में....

15-18. सही काम करने के मामले में...

19-22. सही जीवन जीने के मामले में...

23-26. सही प्रयास के मामले में...

27-30. सही माइंडफुलनेस के मामले में..

31-34. सही एकाग्रता के मामले में.[222]

वे दमन द्वारा एकांत हैं...

दमन द्वारा अलगाव है...

सही एकाग्रता के मामले में ये पाँच तरह के एकांत हैं। और [त्याग के मामले में] वह (10) जोश से भरा होता है, (11) विश्वास से दृढ़ होता है, और (12) उसकी समझ पूरी तरह स्थिर होती है।

ये पाँच तरह के एकांत, पाँच तरह के लुप्त होने, पाँच तरह के विराम, पाँच तरह के त्याग और सही एकाग्रता के मामले में बारह निर्भर कारक हैं।

*

35-64. भिक्षुओं, जैसे कोई भी करतब किया जाना है... [223] [दोहराएँ §1 तक)... पुण्य पर खड़े होकर, एक भिक्षु सात ज्ञान-कारकों का विकास करता है...

'... सात ज्ञान कारकों का विकास करना, सात ज्ञान कारकों का अधिकतम लाभ उठाना, [अच्छे] विचारों में वृद्धि, बढ़ोतरी और परिपक्वता तक पहुँचना है।

*

65-88. . . . पांच शक्तियां...

*

. . . 89-100. पांच संकाय... [224]

समझने की क्षमता के मामले में ये पाँच तरह के एकांत, पाँच तरह के लुप्त होने, पाँच तरह के खत्म होने, पाँच तरह के त्याग और बारह निर्भर चीज़ें हैं।

एकांत पर ग्रंथ का अंत।



टिप्पणी

[1]'बारह डिपेंडेंट फैक्टर्स' (P.T.S. पाली एडिशन के वॉल्यूम ii का प्रीफेस देखें) की कोई अलग एक्सप्लेनेशन नहीं होने का कारण यह है कि एक्सप्लेन करने के लिए कुछ भी नहीं है: वे बस 'एकांत', 'लुप्त होना', 'समाप्ति' और 'त्याग' के चार मामलों में 'उत्साह', 'विश्वास' और 'स्थिरता' हैं - 3 x 4 = 12. PSA 515 देखें। तीनों को पहले ही Tr. 1 में डिफाइन किया जा चुका है।

[ग्रंथ XXV.- व्यवहार पर]

1. [225] व्यवहार: व्यवहार आठ प्रकार के होते हैं:... [परिवर्तन या परिवर्धन के बिना ट्र. IV, § §31-3 दोहराएं]।

व्यवहार पर ग्रंथ पूरा हो गया है।



[ग्रंथ XXVI.- चमत्कारों पर (कायापलट)]

1. [227] भिक्षुओ, चमत्कार (कायापलट) तीन प्रकार के होते हैं। कौन से तीन? सफलता का चमत्कार, प्रकटीकरण का चमत्कार, सलाह का चमत्कार।

'और भिक्षुओं, सफलता का चमत्कार क्या है? यहाँ, भिक्षुओं, एक भिक्षु कई तरह की सफलता (सुपरनॉर्मल पावर्स) का आनंद लेता है; एक होने के बाद, वह कई बन जाता है, [और इसी तरह Tr. I §527 तक]... वह ब्रह्म लोक तक भी शारीरिक महारत हासिल कर लेता है। इसे, भिक्षुओं, सफलता का चमत्कार कहा जाता है।

'और भिक्षुओं, खुलासा करने का कमाल क्या है? यहाँ, भिक्षुओं, कोई, किसी इशारे (जैसे किसी पोज़िशन) से बताता है कि 'तुम्हारा मन ऐसा है, तुम्हारा मन ऐसा है, तुम्हारी समझ ऐसी है', और अगर वह बहुत कुछ बताता भी है, तो वह वैसा ही होता है जैसा वह कहता है, और कुछ नहीं। और यहाँ, भिक्षुओं, कोई न सिर्फ़ किसी इशारे से बताता है, बल्कि इंसानों या गैर-इंसानों या देवताओं[1] की आवाज़ सुनकर भी बताता है कि 'तुम्हारा मन ऐसा है, तुम्हारा मन ऐसा है, तुम्हारी समझ ऐसी है', और अगर वह बहुत कुछ बताता भी है, तो वह वैसा ही होता है जैसा वह कहता है, और कुछ नहीं। और यहाँ, भिक्षुओं, कोई सिर्फ़ इशारे से ही नहीं बताता, और वह सिर्फ़ इंसानों या गैर-इंसानों या देवताओं की आवाज़ सुनकर ही नहीं बताता, बल्कि, किसी ऐसे इंसान में जो सोच रहा है या लगातार सोच रहा है, सोच के दखल की आवाज़ सुनकर भी बताता है कि 'तुम्हारा मन ऐसा है, तुम्हारा मन ऐसा है, तुम्हारी समझ ऐसी है', और अगर वह बहुत कुछ बताता भी है, तो वह वैसा ही होता है जैसा वह कहता है, और कुछ और नहीं। और यहाँ, भिक्षुओ, कोई केवल संकेत के माध्यम से प्रकट नहीं करता है, और वह केवल मनुष्यों या गैर-मनुष्य प्राणियों या देवताओं की ध्वनि सुनकर प्रकट नहीं करता है, और वह केवल लागू और निरंतर विचार का प्रयोग करने वाले व्यक्ति में लागू विचार के हस्तक्षेप की ध्वनि सुनकर प्रकट नहीं करता है, [228] बल्कि, लागू और निरंतर विचार के बिना एकाग्रता वाले व्यक्ति की इच्छा को अपनी इच्छा से भेदकर, वह समझता है कि 'इस योग्य व्यक्ति की मानसिक रचनाएँ इस तरह से व्यवस्थित हैं कि इसके बारे में जानने के बाद उसके पास ऐसा और ऐसा लागू-विचार होगा', और भले ही वह बहुत कुछ प्रकट करता है, यह वैसा ही होता है जैसा वह कहता है, अन्यथा नहीं। इसे, भिक्षुओ, प्रकटीकरण का चमत्कार कहा जाता है।

'और भिक्षुओं, सलाह का कमाल क्या है? यहाँ भिक्षुओं, कोई इस तरह सलाह देता है 'इस तरह सोचो, इस तरह सोचो मत; इस तरह ध्यान दो, इस तरह ध्यान मत दो; इसे छोड़ो, इसे अपनाओ, इसी में रहो'। इसे, भिक्षुओं, सलाह का कमाल कहा जाता है।

'भिक्षुओं, ये तीन प्रकार के आश्चर्य हैं' (अ.170)।

2. त्याग सफल होता है (इज्जति): यह सफलता (इद्धि) है। यह कामुक इच्छाओं के लिए जोश को बदल देता है (पतिहरुति): यह एक मेटामॉर्फोसिस (पाति-हरिया) है। जो लोग उस त्याग के अधिकारी हैं, वे ज्ञान में शुद्ध होते हैं और विचारों में कोई हलचल नहीं होती: यह खुलासा करके मेटामॉर्फोसिस है। उस त्याग को इसी तरह विकसित किया जाना चाहिए, इसी तरह विकसित किया जाना चाहिए, इस तरह इसका बहुत महत्व दिया जाना चाहिए: यह सलाह से मेटामॉर्फोसिस है।

बिना बुरी इच्छा के काम करने से सफलता मिलती है। (और इसी तरह बाकी सात रुकावटों और उनके उलटे कामों, चार ज्ञानों, चार गैर-भौतिक उपलब्धियों, अठारह मुख्य समझ, और चार रास्तों के साथ भी, लेकिन सफलता नहीं - Tr. I §§36-40 देखें)...

अरहंत मार्ग सफल होता है (इज्जति): यही सफलता (इद्धि) है। यह सभी बुराइयों को बदल देता है (पतिहारति): यही पाटिहारिया है। जो लोग उस अरहंत मार्ग के मालिक हैं, वे ज्ञान में शुद्ध होते हैं और विचारों में कोई हलचल नहीं होती: यही खुलासा करके बदलाव है। उस अरहंत मार्ग को इसी तरह विकसित करना चाहिए, इसी तरह विकसित करना चाहिए, इसी तरह इसका बहुत ध्यान रखना चाहिए, इसी तरह इसके अनुसार ध्यान स्थापित करना चाहिए: यही सलाह से बदलाव है।

*

3. त्याग सफल होता है: यही सफलता है। यह कामुक इच्छाओं के लिए जोश को बदल देता है: यही एक मेटामॉर्फोसिस है। सफलता (इद्धि) और मेटामॉर्फोसिस (पतिहारिया) मिलकर वही बनाते हैं जिसे सफलता से मेटामॉर्फोसिस (इद्धि-पतिहारिया) कहते हैं।

गैर-बुराई सफल होती है:... [और इसी तरह ऊपर तक]...

अरहंत मार्ग सफल होता है: यही सफलता है। यह सभी बुराइयों को बदल देता है: यह एक मेटामॉर्फोसिस है, सफलता और मेटामॉर्फोसिस मिलकर वही बनाते हैं जिसे सफलता से मेटामॉर्फोसिस कहा जाता है।

चमत्कारों पर ग्रंथ का अंत (मेटामोर्फोसिस)।

* * * *

नोट्स

1 'उन इंसानों के बारे में जिन्होंने उस ज्ञान को समझ लिया है' (PsA 516 Se).

2 'सोते हुए या ध्यान न देते हुए बुदबुदाने वालों की गाने की आवाज़ सुनना, जो अप्लाइड सोच के दखल की वजह से पैदा होती है' (PsA 516 SC, P.T.S. edn. 693).

[ग्रंथ XXVII.-एकमतता पर]

1. सभी विचारों का पूरी तरह से कट जाना, उनका खत्म हो जाना और उनका दोबारा न आना, यह समझ लेना ही एकमत होने का मतलब जानना है।

2. सभी विचारों में से: पाँच समुच्चय,... [परिवर्तन या परिवर्धन के बिना Tr. I § §465-470 दोहराएं)

एक ही सोच पर ग्रंथ का अंत।



[ग्रंथ XXVIII. - माइंडफुलनेस की नींव पर]

1. 'भिक्षुओं, ध्यान के ये चार आधार हैं। कौन से चार? यहाँ, भिक्षुओं, एक भिक्षु शरीर को शरीर की तरह देखते हुए, जोशीला, पूरी तरह जागरूक और सचेत रहता है, दुनिया के लिए लालच और दुख को दूर करके। वह भावनाओं को भावनाओं की तरह देखते हुए रहता है,... वह ज्ञान को ज्ञान की तरह देखते हुए रहता है... वह विचारों को विचारों की तरह देखते हुए, जोशीला, पूरी तरह जागरूक और सचेत रहता है, दुनिया के लिए लालच और दुख को दूर करके। ये ध्यान के चार आधार हैं' (Sv 73)।

*

2. वह शरीर को शरीर मानकर कैसे सोचता है?

यहाँ कोई पृथ्वी शरीर को अनित्य, स्थाई नहीं, दुःखदायी, सुखद नहीं, अनात्मा जैसा, आत्मा नहीं मानता; वह वैराग्यवान हो जाता है, प्रसन्न नहीं होता; वह लोभ को क्षीण करता है, उसे भड़काता नहीं; वह निरोध करता है, उत्पत्ति नहीं; वह त्याग करता है, ग्रहण नहीं करता। जब वह अनित्य मानकर चिंतन करता है तो वह स्थायित्व की धारणा को त्याग देता है, जब वह दुःखदायी मानकर चिंतन करता है तो वह सुख की धारणा को त्याग देता है, जब वह अनात्मा मानकर चिंतन करता है तो वह आत्मा की धारणा को त्याग देता है, जब वह वैराग्यवान हो जाता है तो वह प्रसन्नता को त्याग देता है, जब उसका लोभ क्षीण होता है तो वह लोभ को त्याग देता है, जब वह निरोध करता है तो वह उत्पत्ति को त्याग देता है, जब वह त्याग करता है तो लोभ को त्याग देता है।

3. वह शरीर के बारे में इन सात पहलुओं में सोचता है। शरीर नींव है, लेकिन यह माइंडफुलनेस नहीं है। माइंडफुलनेस नींव और माइंडफुलनेस दोनों है। उस माइंडफुलनेस और उस ज्ञान के ज़रिए वह उस शरीर के बारे में सोचता है। इसलिए 'शरीर को शरीर के रूप में सोचने में माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) का विकास' कहा गया है।

4. डेवलपमेंट: डेवलपमेंट चार तरह का होता है: डेवलपमेंट जिसमें ज़्यादा आइडिया न बनें, डेवलपमेंट जिसमें काबिलियत के एक ही काम (टेस्ट) का मतलब हो, डेवलपमेंट जिसमें सही एनर्जी का असर हो, और डेवलपमेंट जिसमें दोहराव हो।[1]

5-7. यहां कोई पानी के बारे में सोच रहा है...

8-10. . . .अग्नि शरीर...

11-13. . . .हवा शरीर...

14-16. . . .सिर के बाल वाला शरीर...

17-19. शरीर के बाल शरीर...

. . . 20-22. बाहरी त्वचा शरीर...
. . . 23-25. अंदरूनी त्वचा शरीर...
26-28. . . . मांस शरीर...
28-31... रक्त शरीर...
32-34... नसें...
35-37.... अस्थि शरीर. . .
38-40. . . . अस्थि-मज्जा शरीर... [233]
... दोहराने के अर्थ में।
इस तरह वह शरीर को शरीर के रूप में ही देखता रहता है।

*

41. वह भावनाओं को भावनाओं की तरह कैसे सोचता है? यहाँ कोई सुखद भावना को अस्थायी मानता है, स्थायी नहीं,... वह लोभ छोड़ देता है।
42. वह इन सात पहलुओं में भावनाओं पर विचार करता है। भावना ही नींव है, लेकिन यह माइंडफुलनेस नहीं है। माइंडफुलनेस ही नींव और माइंडफुलनेस दोनों है। उस माइंडफुलनेस और उस ज्ञान के ज़रिए वह उस भावना पर विचार करता है। इसलिए 'भावनाओं को भावनाओं के रूप में सोचने में माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) का विकास' कहा गया है।
43. विकास:... दोहराव के अर्थ में।
44-46. यहां कोई दर्दनाक एहसास के बारे में सोच रहा है...
47-49. यहाँ कोई न तो दर्दनाक और न ही सुखद एहसास के बारे में सोचता है . . .
... दोहराने के अर्थ में।
इस तरह वह भावनाओं को भावनाओं के रूप में सोचता रहता है।

*

50. वह बोध को बोध समझकर कैसे रहता है? वह लोभ को यहाँ कोई लोभी बोध को अनित्य मानता है, स्थाई नहीं, . . . त्याग देता है। [234]
51. वह इन सात पहलुओं में कॉग्निजेंस पर विचार करता है। कॉग्निजेंस स्थापना (नींव) है, लेकिन यह माइंडफुलनेस नहीं है। माइंडफुलनेस स्थापना (नींव) और माइंडफुलनेस दोनों है। उस माइंडफुलनेस और उस ज्ञान के ज़रिए वह उस कॉग्निजेंस पर विचार करता है। इसलिए 'कॉग्निजेंस के कॉग्निजेंस के रूप में चिंतन में माइंडफुलनेस की नींव (स्थापना) का विकास' कहा गया है।
52. विकास:... दोहराव के अर्थ में।
53-55. यहाँ कोई लालची ज्ञान के बारे में सोचता है...
56-58. नफ़रत . . . करने वाला ज्ञान...
59-61....अप्रिय संज्ञान...

62-64. . . . भ्रमित ज्ञान...
65-67. . . . अविभ्रमित संज्ञान। . .
68-70. . . . तंग संज्ञान.. .
. . . 71-73. ध्यान भटकना। . .
74-76. . . . उच्च संज्ञान। . .
77-79. . . . अनएक्साल्टेड कॉग्निजेंस. . .
80-82. . . . समझ से परे। . .
83-85. . . बेमिसाल ज्ञान. . .
86-88. . . . केंद्रित संज्ञान। . .
89-91. . . . असंकेंद्रित संज्ञान। . .
92-94. . . . मुक्त ज्ञान। . .
95-97. . . . असंबद्ध संज्ञान। . .
98-100. . . . आँखों की चेतना। . .
101-103. . . . कान की चेतना. . .
104-106. . . . नाक चेतना. . .
107-109. . . . जीभ चेतना.. .
110-112. . . . शरीर चेतना. . .
113-115. . . . मन चेतना
. . . दोहराव के अर्थ में।

इस तरह वह ज्ञान को ज्ञान के रूप में सोचता रहता है।

*

106. वह विचारों पर विचारों की तरह कैसे विचार करता है?

यहाँ कोई व्यक्ति शरीर, भावना और ज्ञान को छोड़कर सभी विचारों पर विचार करता है, उन्हें अस्थायी मानता है, स्थायी नहीं। वह लोभ छोड़ देता है।

107. वह इन सात पहलुओं में विचारों पर विचार करता है।

विचार स्थापना (नींव) हैं लेकिन वे सचेतनता नहीं हैं। सचेतनता स्थापना (नींव) और सचेतनता दोनों है। उस सचेतनता और उस ज्ञान के माध्यम से वह उन विचारों का चिंतन करता है। इसलिए 'विचारों का विचारों के रूप में चिंतन करने से मिलकर सचेतनता की नींव (स्थापना) का विकास' कहा गया है।

108. विकास:... पुनरावृत्ति के अर्थ में।

इस तरह वह आइडिया को आइडिया की तरह सोचते रहते हैं।

माइंडफुलनेस की नींव पर किताब का अंत।

*
* *
*

टिप्पणी

[1] इनके लिए §§ को और ज़्यादा पूरे रूप में देखें Tr. 111 § § 196-8.

[प्रबंध XXIX. -अन्तर्दृष्टि पर)

1. 'ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान सावत्थी में जेत के ग्रोव, अनाथपिंडिका के पार्क में रह रहे थे। वहाँ उन्होंने भिक्षुओं से इस तरह बात की: 'भिक्षुओं'। उन्होंने जवाब दिया, 'आदरणीय महोदय।' भगवान ने यह कहा:

2. भिक्षुओ, जब कोई भिक्षु किसी भी रचना को स्थायी देखता है तो यह संभव नहीं है कि वह वास्तविकता के अनुरूप कोई चुनाव करे और वास्तविकता के अनुरूप चुनाव किए बिना यह संभव नहीं है कि वह सम्यक्त्व की निश्चितता में प्रवेश करे और सम्यक्त्व की निश्चितता में प्रवेश किए बिना यह संभव नहीं है कि वह धारा-प्रवेश के फल या एक बार लौटने के फल या न लौटने के फल या अरहंतत्व के फल को महसूस करे। भिक्षुओ, जब कोई भिक्षु सभी रचनाओं को अस्थायी देखता है तो यह संभव है कि वह वास्तविकता के अनुरूप कोई चुनाव करे और वास्तविकता के अनुरूप चुनाव करने से यह संभव है कि वह सम्यक्त्व की निश्चितता में प्रवेश करे और सम्यक्त्व की निश्चितता में प्रवेश करके यह संभव है कि वह धारा-प्रवेश के फल या एक बार लौटने के फल या न लौटने के फल या अरहंतत्व के फल को महसूस करे।

3. भिक्षुओं, जब कोई भिक्षु किसी भी गठन को सुखद देखता है तो यह संभव नहीं है कि वह अनुरूपता में कोई चुनाव करे, और... [और इसी तरह §2 तक]... या [237] अरहंतत्व का फल। भिक्षुओं, जब कोई भिक्षु सभी गठन को दर्दनाक देखता है तो यह संभव है कि वह अनुरूपता में कोई चुनाव करे, और... [और इसी तरह §2 तक]... या अरहंतत्व का फल।

4. भिक्षुओं, जब कोई भिक्षु किसी विचार को आत्मा के रूप में देखता है, तो यह संभव नहीं है कि वह उसके अनुसार चुनाव करे, और... [और इसी तरह §2 तक]... या अरहंतत्व का फल। भिक्षुओं, जब कोई भिक्षु सभी विचारों को आत्मा के रूप में नहीं देखता है, तो यह संभव है कि वह उसके अनुसार चुनाव करे, और... [और इसी तरह §2 तक]... या अरहंतत्व का फल।

5. 'भिक्षुओं, जब एक भिक्षु निर्वाण को दुखदाई देखता है तो यह संभव नहीं है कि वह अनुरूपता में कोई विकल्प चुने, और... (और इसी प्रकार §2 तक]... या अरहंतत्व का फल। भिक्षुओं, जब एक भिक्षु निर्वाण को सुखद देखता है तो यह संभव है कि वह अनुरूपता में कोई विकल्प चुने, और... [और इसी प्रकार §2 तक]... या अरहंतत्व का फल' (ए iii 441f.)।
[238]

*

6. वह कितने पहलुओं में [असलियत के साथ] तालमेल बिठाता है? कितने पहलुओं में वह सही होने की पक्की बात पर पहुँचता है?

वह चालीस पहलुओं में (असलियत के साथ) हिसाब से चुनता है। वह चालीस पहलुओं में सही होने की पक्की बात पर पहुँचता है।

7. वह किन चालीस पहलुओं में एक जैसा चुनाव करता है?

वह किन चालीस पहलुओं में सही होने की निश्चितता में प्रवेश करता है?

[वह] पाँचों स्कंधों को अनित्य, दुःखदायी, रोग, फोड़ा, तीर, विपत्ति, कष्ट, पराया, विघटित करने वाला, महामारी, आपदा, आतंक, खतरा, चंचल, नाशवान, असह्य, बिना सुरक्षा, आश्रय, शरणस्थल के, खाली, व्यर्थ, शून्य, आत्महीन, खतरे के रूप में, परिवर्तनशील, बिना मूल के, विपत्ति की जड़ के रूप में, जानलेवा, नष्ट हो जाने वाले, नासूर के अधीन, निर्मित, मारा के चारे के रूप में, जन्म के विचार से जुड़ा, बुढ़ापे के विचार से जुड़ा, बीमारी के विचार से जुड़ा, मृत्यु के विचार से जुड़ा, दुख के विचार से जुड़ा, विलाप के विचार से जुड़ा, निराशा के विचार से जुड़ा, अपवित्रता के विचार से जुड़ा हुआ देखता है।

8. पाँचों इकठ्ठा को कुछ समय का न होने वाला मानकर, वह उनके हिसाब से चुनाव करता है; यह देखते हुए कि पाँचों इकठ्ठा का खत्म होना ही निब्बान है, जो हमेशा रहने वाला है, वह सही होने के पक्के यकीन में पहुँच जाता है।

पाँचों इकठ्ठा को दुखदायी मानकर, वह उनके हिसाब से चुनाव करता है; यह देखकर कि पाँचों इकठ्ठा का खत्म होना ही निब्बान है, जो कि सुखद है, वह सही होने के पक्के यकीन में पहुँच जाता है।

. . . एक बीमारी के रूप में, . . . जो स्वास्थ्य है,...

. . . एक फोड़े के रूप में, . . .जो कि उबाल नहीं है,...

. . . एक तीर की तरह,... जो कोई तीर नहीं है,...

. . . एक आपदा के रूप में,... जो कोई आपदा नहीं है,...

. . . एक दुःख के रूप में, ..जो गैर-दुःख है,... [239]

. . . पराया,... जो दूसरों की आज़ादी है, . . .

. . . विघटित हो रहा है,... जो विघटित नहीं हो रहा है। . .

. . . एक महामारी की तरह, जो कोई महामारी नहीं है,...

. . . एक आपदा के रूप में, . . . जो कोई आपदा नहीं है, . . .

. . . एक आतंक के रूप में, . . .जो गैर-आतंकवादी है, . . .

. . . एक खतरे के रूप में, .. जो कोई खतरा नहीं है, . . .

. . . चंचल के रूप में,... जो चंचल नहीं है, . . .

. . . नाशवान के रूप . . में, जो अविनाशी है, . . .

. . . अस्थाई है, . . .जो स्थायी है, . . .

. . . क्योंकि कोई सुरक्षा नहीं है,... जो कि एक सुरक्षा है, . . .

. . . जैसे कोई आश्रय नहीं है,... जो एक आश्रय है, . . .

. . . जैसे कोई शरणस्थल नहीं है,... जो कि एक शरणस्थल है, . . .

. . . खाली के रूप में,... [240] जो खाली नहीं है,...

. . . व्यर्थ के . . .रूप में, जो व्यर्थ नहीं है, . . .

. . . शून्य के रूप में, जो परम शून्यता है, . . .

. . . क्योंकि वह स्वयं नहीं है,... जो कि परम अर्थ (लक्ष्य) है,...
. . . एक खतरे के रूप में,... जो खतरे के बिना है,..
. . . परिवर्तन के अधीन, जो परिवर्तन के अधीन नहीं है, . . .
. . . जिसका कोई कोर . . .नहीं है, जो कि कोर है। . .
. . . विपत्ति की जड़ के रूप में,... जो विपत्ति की जड़ नहीं है, . . .
. . जो हत्यारा नहीं है, वह हत्यारा है...
. . . जो नष्ट होने के कारण है,... जो नष्ट होने के कारण नहीं है, . . .
. . . कैंकर के अधीन, जो कैंकर से मुक्त है, . . .
. . . जैसा बना है,... जो अनिर्मित है,... [241]
. . . मारा के भौतिकवादी चारे के रूप में, जो कि अभौतिकवादी है, . . .
. . . जन्म के विचार से जुड़ा हुआ, जो कि अजन्मा है, . . .
. . . यह उम्र बढ़ने के विचार से जुड़ा हुआ है,... जो कि उम्र न बढ़ने वाला है। . .
. . . बीमारी के विचार से जुड़ा हुआ,... जो कि अस्वास्थ्यकर है, . . .
. . . जैसा कि मृत्यु के विचार से जुड़ा है,... जो अमर है,...
. . . जैसा कि दुःख के विचार से जुड़ा हुआ है,... जो दुःख रहित है, . . .
. . . विलाप के विचार से जुड़ा हुआ, जो विलाप के बिना
है,..

. . . निराशा के विचार से जुड़ा हुआ,... जो निराशा नहीं है,... पाँचों चीज़ों को गंदगी के विचार से जुड़ा हुआ देखकर, वह [असलियत के साथ] मेल खाता हुआ चुनता है; यह देखते हुए कि पाँचों चीज़ों का खत्म होना निब्बान है, जो गंदगी के बिना है, वह सही होने के पक्केपन में पहुँच जाता है।

9. जैसे नश्वरता का चिंतन नश्वर है।
दर्द के बारे में सोचना भी उतना ही दर्दनाक है।
जैसे बीमारी दर्द का चिंतन है।
जैसे फोड़ा दर्द का चिंतन है।
दर्द का चिंतन एक तीर की तरह है।
जैसे दर्द का सोचना एक मुसीबत है।
जैसे दर्द का सोचना एक दुख है।
जैसे पराया, ...
जैसे टूटना, नश्वरता का चिंतन है।3
दर्द का चिंतन एक महामारी की तरह है।
जैसे दर्द का सोचना एक मुसीबत है।
जैसे दर्द का चिंतन एक आतंक [242] है।
दर्द के बारे में सोचना एक खतरा है।
नश्वरता का चिंतन भी उतना ही चंचल है।
नश्वरता का चिंतन भी नाशवान है।
नश्वरता का चिंतन भी उतना ही अमर है।
दर्द के बारे में सोचना कोई बचाव नहीं है।
जैसे दर्द का चिंतन कोई आश्रय नहीं है।
दर्द का सोचना कोई पनाह नहीं है।

उतना ही खाली है जितना कि पर-स्वयं का चिंतन।3
जैसे कि खुद से अलग सोचना व्यर्थ है।
जैसे शून्य, गैर-स्वयं का चिंतन है।
जैसे अ-स्वयं का अर्थ अ-स्वयं का चिंतन है।
दर्द के बारे में सोचना भी एक खतरा है।
बदलाव के अधीन है, नश्वरता का चिंतन।
क्योंकि कोई कोर नहीं है, इसलिए नश्वरता का चिंतन होता है।3
क्योंकि मुसीबत की जड़ दर्द का सोचना है।
दर्द के बारे में सोचना भी जानलेवा है..
नश्वरता का चिंतन नष्ट होने वाला है।
दर्द का चिंतन भी कैंसर का विषय है।
जैसे कि नश्वरता का चिंतन बनता है।
मारा का भौतिकवादी चारा दर्द का चिंतन है।
जन्म के विचार के साथ दर्द का चिंतन भी जुड़ा हुआ है।
उम्र बढ़ने के विचार के साथ दर्द का चिंतन भी जुड़ा हुआ है।
बीमारी के विचार के साथ दर्द का चिंतन भी जुड़ा हुआ है।
मृत्यु के विचार के साथ नश्वरता का विचार भी जुड़ा हुआ है।
दुख के विचार के साथ दर्द का चिंतन भी जुड़ा हुआ है।
विलाप के विचार के साथ दर्द का चिंतन भी जुड़ा हुआ है।
निराशा के विचार के साथ दर्द का चिंतन भी जुड़ा हुआ है।
अपवित्रता के विचार के साथ दर्द का चिंतन भी जुड़ा हुआ है।

इन चालीस पहलुओं में वह (असलियत के साथ) तालमेल बिठाकर चुनता है। इन चालीस पहलुओं में वह सही होने की पक्की बात पर पहुँचता है।

10. जब वह इन चालीस पहलुओं में [वास्तविकता के साथ] अनुरूपता चुनता है और इन चालीस पहलुओं में सही होने की निश्चितता में प्रवेश करता है, तो उसके पास कितने प्रकार की नश्वरता का चिंतन, कितने प्रकार का दर्द का चिंतन और कितने प्रकार का अनात्मा का चिंतन होता है?

पच्चीस और गैर-स्व के चिंतन,
और नश्वरता के पचास विचार,
बाकी लोग, जिनकी संख्या एक सौ पच्चीस है,
क्या सोच-विचार को दर्द माना जाता है?

अंतर्दृष्टि पर ग्रंथ का अंत।



नोट्स

[1] खांटी के लिए Tr. XIX नोट 1 देखें।
[2] मैंने अंगुत्तरा P.T.S. टेक्स्ट को फॉलो किया है, जिसमें सब्बधम्मम (iil 442) है।
[3] कमेंट्री और Viam पेज 613 के बाद, टेक्स्ट को Palokaro ti aniccănupassand और Rittato ti anattānupassană और Asdrakato ti aniccănupassană पढ़ना चाहिए।

[ग्रंथ XXX.-एक अनुसूची पर]

1. अनपार्च्ड (देखें एम ii 341).

यह मुक्त है, इसलिए यह मुक्ति है।

पहचान और मुक्ति।

उच्चतर गुण,

उच्च संज्ञान,

उच्च समझ।

शांति.

ज्ञान।

देख के।

शुद्धिकरण.

त्याग.

पलायन।

<एकांत.>

त्याग।

व्यवहार।

झाना मुक्ति.

विकास,

स्थिरता,

ज़िंदगी।

*

2. अनपार्च्ड:

त्याग की वजह से कामुक इच्छाओं के जोश से अछूता, बिना बुरी इच्छा की वजह से बुरी इच्छा से अछूता। [और इसी तरह बाकी सात रुकावटों, चार ज्ञानों, चार अमूर्त उपलब्धियों, अठारह मुख्य समझ और चार रास्तों के साथ, जैसा कि Tr. I §§36-40 में है, लेकिन चार फलों को छोड़कर, तक)... अरहंत रास्ते की वजह से किसी भी गंदगी से अछूता।

3. यह मुक्त है, इसलिए यह मुक्ति है: त्याग से यह कामुक इच्छाओं के जोश से मुक्त होता है, इसलिए यह मुक्ति है। यह अ-बुराई से बुरी इच्छा से मुक्त होता है, इसलिए यह मुक्ति है... यह अरहंत मार्ग से सभी दोषों से मुक्त होता है, इसलिए यह मुक्ति है।

4. पहचान और मुक्ति: त्याग को पहचान लिया जाता है (विज्जति), इसलिए यह पहचान है; वह कामुक इच्छाओं के जोश से मुक्त हो जाता है, इसलिए यह मुक्ति है। इसे पहचान लिया जाता है, वह मुक्त हो जाता है; इसे पहचान लिया जाता है, इसलिए यह पहचान और मुक्ति है। गैर-बुराई... अरहंत मार्ग को पहचान लिया जाता है, इसलिए यह पहचान है; वह सभी से मुक्त हो जाता है

अपवित्रता, इस प्रकार यह मुक्ति है। पहचाने जाने पर, वह मुक्त हो जाता है; छुड़ाए जाने पर, यह पहचाना जाता है, इस प्रकार यह पहचान और मुक्ति है।

5. जितना ऊँचा गुण, जितना ऊँचा ज्ञान, उतनी ऊँची समझ:

त्याग के कारण इंद्रिय वासनाओं के प्रति उत्साह के संयम के अर्थ में सद्गुण की शुद्धि होती है, अप्रसन्नता के अर्थ में ज्ञान की शुद्धि होती है, देखने के अर्थ में दृष्टि की शुद्धि होती है। उसमें संयम का अर्थ है उच्चतर सद्गुण में प्रशिक्षण, उसमें अप्रसन्नता का अर्थ है उच्चतर ज्ञान में प्रशिक्षण, उसमें देखने का अर्थ (244) उच्च समझ में प्रशिक्षण है। दुर्भावना न होने के कारण। अरहंत मार्ग के कारण सभी विकारों के संयम के अर्थ में सद्गुण की शुद्धि होती है, अप्रसन्नता के अर्थ में ज्ञान की शुद्धि होती है, देखने के अर्थ में दृष्टि की शुद्धि होती है। उसमें संयम का अर्थ है उच्चतर सद्गुण में प्रशिक्षण, उसमें अप्रसन्नता का अर्थ है उच्चतर ज्ञान में प्रशिक्षण, उसमें देखने का अर्थ है उच्चतर समझ में प्रशिक्षण।

6. शांति: त्याग से वह कामुक इच्छाओं के जोश को शांत करता है। बुराई न करने से... अरहंत मार्ग से वह सभी बुराइयों को शांत करता है।

7. ज्ञान: इन्द्रिय-इच्छाओं के प्रति जोश को छोड़ने के कारण त्याग, जाने जाने के अर्थ में ज्ञान है। निर्दयता... सभी दोषों को छोड़ने के कारण अरहंत मार्ग, जाने जाने के अर्थ में ज्ञान है।

8. देखना: विषय-वासनाओं के प्रति जोश छोड़ने से जो त्याग होता है, वह देखे जाने के कारण देखना है। अरुचि... सभी विकारों को छोड़ने से जो अरहंत मार्ग होता है, वह देखे जाने के कारण देखना है।

9. शुद्धि: जो व्यक्ति कामुक इच्छाओं के प्रति जोश को छोड़ देता है, वह त्याग से शुद्ध हो जाता है। जो व्यक्ति दुर्भावना को छोड़ देता है... जो व्यक्ति सभी दोषों को छोड़ देता है, वह अरहंत मार्ग से शुद्ध हो जाता है।

10. त्याग:

इंद्रियों की इच्छाओं के मामले में यही बचना है, यानी त्याग। भौतिक चीज़ों के मामले में यही बचना है, यानी अभौतिकता। लेकिन जो कुछ भी है, बनता है, और निर्भर रूप से पैदा होता है, उसके मामले में खत्म होना त्याग है।

अ-बुराई का अर्थ है बुरी इच्छा का त्याग। प्रकाश की अनुभूति... अरहंत मार्ग सभी बुराइयों का त्याग है।

11. पलायन:

इंद्रियों की इच्छाओं के मामले में यही बचने का तरीका है, यानी त्याग। भौतिक चीज़ों के मामले में यही बचने का तरीका है, यानी अभौतिकता। लेकिन जो कुछ भी है, बनता है, और निर्भर रूप से पैदा होता है, उसके मामले में खत्म होना ही बचने का तरीका है।

त्याग, कामुक इच्छाओं के जोश में बचने का रास्ता है।

बुरी नीयत से बचने का रास्ता है, बुरी नीयत से बचना। प्रकाश की अनुभूति... अरहंत मार्ग सभी बुराइयों से बचने का रास्ता है।

12. एकांत: इंद्रिय-इच्छाओं के प्रति उत्साह के मामले में त्याग एकांत है। [245] गैर-दुर्भावना... अरहंत मार्ग सभी दुर्गुणों के मामले में एकांत है।

13. त्याग: वह त्याग के ज़रिए कामुक इच्छाओं के लिए जोश छोड़ देता है। वह अ-बुराई के ज़रिए बुरी नीयत छोड़ देता है... वह अरहंत मार्ग के ज़रिए सभी बुराइयों को छोड़ देता है।

14. व्यवहार: जो व्यक्ति विषय-वासनाओं के प्रति जोश को त्याग देता है, वह त्याग के अनुसार व्यवहार करता है। जो व्यक्ति दुर्भावना को त्याग देता है... जो व्यक्ति सभी विकारों को त्याग देता है, वह अरहंत मार्ग के अनुसार व्यवहार करता है।

15. झाना मुक्ति:

त्याग जलता है (झायति), इसलिए यह झान है; यह कामुक इच्छाओं के जोश को जलाता है (झापेति), इसलिए यह झान है। जलते हुए (झायंतो), यह मुक्त होता है, इसलिए यह झान मुक्ति है; खाने से (झापेंतो), यह मुक्त होता है, इसलिए यह झान मुक्ति है। वे जलते हुए (झायन्ति) [यानी, अच्छे] विचार (धम्म) हैं; वे भस्म होते हैं (झापेंती) [यानी,] गंदगी। वह जले हुए (झता) और भस्म हुए (झपा) को जानता है, इसलिए झान मुक्ति है।

अ-बुराई की भावना प्रज्वलित होती है...

अरहंत मार्ग प्रज्वलित है, इस प्रकार यह झाना है;... वह प्रज्वलित और भस्म को जानता है, इस प्रकार यह झाना मुक्ति है।

16. विकास, स्थिरता और जीवन:

जो व्यक्ति विषय-वासनाओं के प्रति उत्साह को त्याग देता है, उसमें त्याग विकसित हो जाता है, इस प्रकार वह विकास से युक्त हो जाता है; त्याग के माध्यम से वह ज्ञान को स्थिर करता है, इस प्रकार वह स्थिरता से युक्त हो जाता है; इस प्रकार विकास से युक्त और स्थिरता से युक्त होकर, वह त्याग के समान ही जीता है, जो समान नहीं है (असमान) उसे नहीं; वह सही तरीके से जीता है, गलत तरीके से नहीं, वह शुद्ध जीवन जीता है, जो अशुद्ध नहीं है। इस प्रकार विकास से युक्त, स्थिरता से युक्त और [सही] जीवन जीने वाला होकर, वह जिस भी संगति के पास जाता है, चाहे वह खट्टी संगति हो, ब्राह्मण संगति हो, गृहस्थ संगति हो या तपस्वी संगति हो, वह उसके पास निश्चिंत और निःसंकोच जाता है। ऐसा क्यों है? क्योंकि वह इस प्रकार विकास से युक्त, स्थिरता से युक्त और [सही] जीवन जीने वाला होता है।

जो द्वेष त्याग देता है... [246]

जो सभी अशुद्धियों को त्याग देता है... वह (सही) जीवन जीने में समर्थ होता है।

एक शेड्यूल पर ग्रंथ का अंत।



यहाँ कंटेंट की लिस्ट दी गई है:

ज्ञान, विचार, साँसें, क्षमताएँ,
और पाँचवें के लिए मुक्ति,
मंज़िल, कर्म और विकृतियाँ, रास्ता,
और बारीक निष्कर्ष, ये दस हैं।

कपलिंग, असलियत, ज्ञान के फैक्टर,
प्यार, और पांचवें के तौर पर फीका
पड़ना, भेदभाव, सच्चे विचार का पहिया,
दुनियावी, शक्तियां, और खालीपन।

समझ, सफलता, एक साथ आना,
अकेलापन, पांचवां व्यवहार,
चमत्कार, और एक ही सोच,
माइंडफुलनेस, समझ, और एक शेड्यूल।



भेदभाव पर किताब पूरी हो गई है।

Tr. XXX पर टिप्पणी

[1] P.T.S. text vol. ii, p. 243, ll. 7–9 read . . . *Arahattamaggena sabbakilesehi nicchāto. (new para) Muccatī ti vimokkho ti. Nekkhammena.*

अनुक्रमणिका

नोट: इंडेक्स को अव्यवस्थित न करने के लिए टेक्स्ट में दोहराव को खास तरीके से दिखाया गया है। इस काम में दो तरह के दोहराव या बार-बार आने वाले पैटर्न हैं: वे हैं (1) सुत्तों से सीधे लिए गए धम्मों के सेट - जैसे, विश्वास से शुरू होने वाली पाँच शक्तियाँ, माइंड-फुलनेस से शुरू होने वाले सात ज्ञान के फैक्टर, राइट व्यू से शुरू होने वाले आठ रास्ते के फैक्टर, वगैरह, वगैरह, और उनके मिलते-जुलते मतलब और उलटे - और (2) इस काम की खास फॉर्मल लिस्ट या पैटर्न। (1) पहले तरह के लोगों को उन सभी रेफरेंस के लिए सेट के बाद के सदस्यों को शुरुआती सदस्य के पास रेफर करके दिखाया गया है जहाँ वे अकेले नहीं आते हैं। उदाहरण के लिए, कंसंट्रेशन शक्ति के रेफरेंस, जहाँ यह पाँच शक्तियों में से एक के रूप में आता है, विश्वास शक्ति के तहत मिलेंगे। (2) दूसरे तरह के, जो संख्या में कम हैं लेकिन बहुत ज़्यादा डिटेल में हैं, उनमें से हर एक को इस इंडेक्स के आखिर में 'सीरीज़ A, सीरीज़ B,... सीरीज़ I' हेडिंग के तहत एन ब्लॉक रेफरेंस दिए गए हैं। इसलिए इन सीरीज़ में शामिल हर धम्म को इंडेक्स की बॉडी में उसके पहली बार होने का § रेफरेंस दिया गया है और इंडेक्स के आखिर में सीरीज़ का रेफरेंस दिया गया है। उदाहरण के लिए, फॉर्मेशन को मेन इंडेक्स में उन मामलों के लिए § § रेफरेंस दिए गए हैं जहाँ वे अकेले होते हैं; वहाँ अज्ञान का भी रेफरेंस दिया गया है, जो डिपेंडेंट ओरिजिनेशन का शुरुआती सदस्य है जिसमें वे होते हैं, और मैटेरियलिटी का भी रेफरेंस दिया गया है, जो फाइव एग्रीगेट्स का शुरुआती सदस्य है जिसमें वे भी होते हैं, साथ ही सीरीज़ A का भी जिसमें डिपेंडेंट ओरिजिनेशन भी शामिल है।

similes

शब्दावली

by Bandu Madanayake

अकंपिया	अडिगता
अकुप्पा	अभेद्य
अकुशाला	लाभहीन
अग्गी	आग
ajjhatta	आंतरिक
अण्णथत्ता	अन्यता, अन्यथा
aññamañña	पारस्परिकता
aññāṇa	unknowing
अण्णाताण्णासामीतिन्द्रिय	मैं अनजान को जान जाऊँगा संकाय
अतिधवन	अतिक्रमण
अतिमान	अभिमान
अतीत	अतीत
attadamatha	आत्म - संयम
अत्ताभाव	व्यक्तित्व
आटा	खुद
अट्ठा	अर्थ
अट्ठांगमा	घटाव
अदुक्खमसुखा	न दर्द न सुख
addhā	अवधि
अधाना	क्षेत्र
अधिगम, अधिगमन	आगमन
adhicitta	उच्च संज्ञान
अधिकाचसमुप्पन्निका	सौभाग्यशाली मूलवादी
अधिष्ठान	फ़ैसला
अधिष्ठान	स्थिरता, स्थिरीकरण
अधिष्ठान-बल	स्थिरीकरण शक्ति
adhiṭṭhita	को संभाला
adhipaññā	उच्च समझ
adhipaññādhammavipassanā	विचारों में अंतर्दृष्टि जो उच्चतर है समझ
adhimatta	उत्कृष्टता
अधिमोक्ख	संकल्प
अधिशीला	उच्च गुण

अनान्नाथत्ता	अन्यथा नहीं
अनातिवत्तन	गैर-अधिकता
अनत्ता	स्वयं नहीं
अनत्तनुपासना	स्वयं का चिंतन न करना (अनिच्च देखें)
anabhirati	मोहभंग
anavajja	निर्दोषिता
anavajja-bala	निर्दोषता शक्ति
अनागत	भविष्य
अनागामिता	वापसी न होना
अनामिसा	अभौतिकवादी
अनावरण-नाण	अबाधित ज्ञान
अनाविल	गैर हंगामा
अनासव	बिना कैंसर के
अनिच्च	नश्वरता, अस्थायी
aniccãnupassanã	नश्वरता का चिंतन
अनिंजना	गैर गड़बड़ी
अनिमित्ता	बिना चिह्न के,
अनिमित्त-विहार	बिना निशान के रहने वाले
अनिमित्त-समापत्ति	चिह्नरहित प्राप्ति
anuttariya	unsurpassable
anuparivattati	(खुद को) अनुकूलित करता है
anupassanã	चिंतन
अनुप्पादा	गैर-उत्पन्न
अनुप्पादा-नाण	अउत्पन्न होने का ज्ञान
अनुसया	अंतर्निहित प्रवृत्ति
anusahagata	द्वितीयक (अपवित्रता)
अनुसति	अनुस्मरण
अनुत्तप्पा	बेशर्मी
अंता	नियत्ता
अंतराय	बाधा
अपरियापन्न	शामिल नहीं
अपाया	अभाव की स्थिति
appṭikküla	अप्रतिकर्षक
अप्पतिशंख	गैर-प्रतिबिंब
अपननिहिता	इच्छाहीन
अप्पनिहित-विहार	इच्छारहित निवास
appamaññã	अथाह अवस्था
अप्पमाण	अपार
appavatti	गैर-घटना
अभिजानन	प्रत्यक्ष रूप से जानना
अभिज्जा	लोभ

अभिन्ना	प्रत्यक्ष ज्ञान
अभिज्ञता	प्रत्यक्ष रूप से ज्ञात
अभिññeyya	प्रत्यक्ष रूप से ज्ञात होना
abhinandati	प्रसन्न
abhiniropana	निर्देशित करना
abhinivesa	अशुद्ध अर्थ
abhinihāra	मार्गदर्शन, मार्गदर्शन
abhibhāyatana	महारत का आधार
abhisandana	नमी
abhisamaya	अभिसरण
अमाटा	अमर
amarāvikkhepika	ईल रेंगने वाला
अरन्या	जंगल
अरना	बिना संघर्ष के
आरती	ऊब
arahatta	अरहंतत्व
अरहंत	अरहंत
एरिया	महान व्यक्ति
ariyavaṃsa	महान व्यक्ति की विरासत
अरिपा	अमूर्तता, अमूर्तता
arūpakkhandha	अमूर्त समुच्चय
arūpabhava	अमूर्त प्राणी
अरूपावचार	अभौतिक क्षेत्र
alankāra	गोद लेना
अविक्खेपा	गैर-विचलन
अविज्जा	अज्ञान
अविप्पातिसार	पश्चाताप न करना
आविष्कार	अपव्यय न होना
avihiṃsā	क्रूरता न करना
avītikkama	अहिंसा
अव्यक्त	दुविधा में पड़ा हुआ
अव्यापद	गैर-दुर्भावना
असंखता	बेडौल
असलिनट्टा	स्वयं हलचल
असमंतपन्ना	अद्वितीय समझ
अशुभा	मिट्टी
असेखा	निपुण
assaddhiya	अविश्वास
अस्सादा	आकर्षण
अस्सादा-दिट्ठी	सुखवादी दृष्टिकोण
अस्सासपाससा	साँस अंदर और बाहर

आकनखाना	इच्छा
आकार	पहलू
आकाश-कशिण	अंतरिक्ष कसीना
आकाशनांचायतन	असीम अंतरिक्ष से युक्त आधार
ākiñcañña	शून्य
अदाना	पकड़ने में
अधिविशोधन	शुरुआत को शुद्ध करना
आदिनव	खतरा
ādhipateyya	प्रभाव
अनंतरिका	तत्काल उत्तराधिकार
अनंतरिका-समाधि	तत्काल परिणाम के साथ एकाग्रता
आनापानसति	सांस लेने के प्रति सजगता
एपीओ	पानी
āpo-kasiṇa	पानी का कसीना
आमिसा	भौतिकवादी
आमोदन	हर्षक
आयतन	आधार
आयुहाना	संचय
ārabbha	दल पर निर्भर
आरम्माण	वस्तु, सहारा
आरूपसमापट्टी	अमूर्त प्राप्ति
आलय	निर्भरता
आलोक	रोशनी
आलोकासन्ना	प्रकाश की धारणा
अवज्जति	विज्ञापनों
अवज्जना	विज्ञापन
अवज्जंता	विज्ञापन, आदि.
अवज्जिता	विज्ञापित
आसया	पक्षपात
आसव	नासूर
आसव, आसव	ताक़त
आसेवना	दुहराव
आहार	भोजन
इझाना	सफल
इत्था	सहमत
इत्थी	महिला
इत्थिन्द्रिय	स्त्रीत्व की क्षमता
idappaccaya	कारणता, विशिष्ट, सशर्तता
इधि	सफलता
इद्दिपाडा	सफलता का आधार
iddhividha	अलौकिक शक्ति

इंडा	शासक
इन्द्रिय	संकाय
indriyaparopariya	दूसरों की क्षमताओं में प्रवेश
iriyāpatha	मुद्रा
issariya-bala	प्रभुत्व शक्ति
इस्सा	ईर्ष्या
उकंठना	असंतोष
uccheda	विनाश
uttari-paṭivedha	उच्च मर्मज्ञ
उत्तास	डर
उदय	उठना
uddhacca	घबराहट
uddhata	उत्तेजित
औधुमातक	फूला हुआ
उपाकिलेसा	अपूर्णता
उपगमन	दत्तक ग्रहण
उपत्थान	नींव, स्थापना, उपस्थिति
upatthambhana	कड़ापन
उपनाह	शत्रुता
upapatti	पालन-पोषण
उपविकार	पोषण
upasama	शांति
उपादा, उपाध्याय	व्युत्पन्न-द्वारा-चिपकाना
उपादान	पकड़
उपदानखंड	चिपकने की वस्तु के रूप में समुच्चय
उपाय	निराशा
उपेक्षा	समभाव
upekkhāsambojjhanga	समता ज्ञान कारक
उपेक्षासुखा	समभाव का आनंद
उपेक्खिन्द्रिय	समभाव की क्षमता
uppanna	उत्पन्न हो
उप्पाडा	उत्पन्न होने वाला
ubbega	तात्कालिकता की भावना
ekagga	एकीकरण
ekaṭṭha	गुणक
ekatta	एकता
ekattūpaṭṭhāna	एकता में स्थापना
ekarasa	एकल फ़ंक्शन
एकसंघहाता	एक के रूप में समावेशिता
एकोडी	सिधाई
एसाना	खोज

ओक्कामाना	गर्भ में अवतरण
ओघा	नूड
ओटप्पा-बाला	शर्म की शक्ति
obhāsa	रोशनी
oliyana	रोक रखना
oḷārika; sukhuma	स्थूल, सूक्ष्म
कंखवितरण	संदेह पर काबू पाना
कम्मा	कर्म, कर्म
kammaniya	मज़बूत
कम्मंता	अभिनय
kammabhava	क्रिया के रूप में होना
कम्मविपाक	कार्रवाई का परिणाम
करुणा	करुणा
कल्याण-पुथुज्जना	उदार साधारण आदमी
कामदेव	कामुक इच्छा
कामचन्द	कामुक इच्छाओं के लिए उत्साह
काम-धातु	कामुक इच्छा का सिद्धांत
काम-भाव	कामुक इच्छा
काम-राग	इंद्रिय इच्छाओं का लालच
कामावचार	कामुक इच्छा का क्षेत्र
कायिन्द्रिय	शरीर संकाय
कायागत सती	शरीर के साथ ध्यान लगाना
कायाधातु	शरीर सिद्धांत
कायाविञ्ञाṇa	शरीर चेतना
कायविञ्ञाṇadhatu	शरीर चेतना सिद्धांत
kāyasakkhin	शरीर गवाह
kāyasamphassa	शारीरिक संपर्क
कायायनात	शरीर का आधार
किलिसाती	अशुद्ध
किलेसा	कलंक
कुसला	लाभदायक
केसा	सिर के बाल
कोसाज्जा	आलस
कोसल्ला	कौशल
क्रिया	कार्यात्मक
खाना	पल
khanti	पसंद
खंडा	सकल
खाया	विनाश
khayeñāṇa	विनाश का ज्ञान
khīṇāsava-bala	जिसकी शक्तियाँ नासूर हैं थका हुआ

खेमा	सुरक्षा
गाटा	यात्रा का
गति	गंतव्य
गंभीर-पंख	गहन समझ
gahapati	गृहस्थ
गुना	विशेष गुणवत्ता
gocara	कार्यक्षेत्र
gotrabhū	वंश परिवर्तन
घाना	सघनता
ghāyana	सुगंधित
चक्का	आशीर्वाद
चक्कावट्टिन	पहिया घुमाने वाला सम्राट
cakkhāyatana	आँख का आधार
cakkhu	आँख
cakkhu-indriya	नेत्र संकाय
चक्खु-धातु	नेत्र सिद्धांत
चक्खु-विण्णाना	आँखों की चेतना
चक्खु-विण्णान-धातु	नेत्र चेतना सिद्धांत
चक्खू-संफस्सा	आँख से संपर्क
कनाडा	चंद्रमा
caraṇa	सदाचारी आचरण
कैरिटा	स्वभाव
cariyā	व्यवहार
चगा	समर्पण
चित्त	संज्ञान
citta-visuddhi	संज्ञान की शुद्धि
चेतना	इच्छाशक्ति
चेतासिका	चेतना-सहवर्ती
सेटो	मन, इच्छा, हृदय
cetopariya	इच्छाशक्ति का प्रवेश
ceto-vimutti	इच्छा का उद्धार
चंदा	उत्साह
छंद-राग	उत्साह और लालच
जवान	आवेग
जवान-पन्ना	आवेगपूर्ण समझ
जीव्हा	जीभ
जीव	आत्मा
जीवित	ज़िंदगी
जीवित-संखारा	जीवन निर्माण
jīvitindriya	जीवन संकाय
जोटाना	प्रकाश व्यवस्था

झाना	झाना
झाना-विमोक्खा	जाना मुक्ति
झपेटी	खपत
jhāyati	प्रज्वलित करता है
ñāṇa	ज्ञान
ñāta	ज्ञात
थानात्थाना	संभव और असंभव
* थीटा	उपस्थित
तिथि	स्थिरता; ठहराव; उपस्थिति; कारणात्मक संबंध
तन्हा	तीव्र इच्छा
tatha	ऐसा, सच्चा, वास्तविक
तथाता	ऐसापन
तथागत	एकदम सही
tathāgata-bala	एक पूर्ण व्यक्ति की शक्तियाँ
तडांगा	विपरीतों का प्रतिस्थापन
तराना	बदलते हुए
तीरा	आंकना
तेजो	आग
तेजो-कसीना	आग कसीना
तेजो-धातु	अग्नि सिद्धांत
थम्बा	पक्का होना
thīna-middha	कठोरता और सुस्ती (देखें कामचन्द)
दंता	नियंत्रित
daratha	तनाव
दस्साना	देख के
दाना	उपहार:
दिट्ठा	देखा (दित्थ, सुता, मुता, विण्णाता, देखा, सुना, संवेदित, पहचाना)
दिट्ठ-धम्म-सुखविहार	यहीं और अभी आनंद में रहना
दिट्ठी	देखना
दिट्ठिगता	दृश्य, सहारा
दिट्ठिट्ठान	दृश्य, आधार
डिट्ठिपट्टा	दृष्टि प्राप्त करने वाला
दिट्ठि-विशुद्धि	दृश्य शुद्धि
dibba-cakkhu	दिव्य नेत्र
डिब्बा-सोतधातु	दिव्य कान सिद्धांत
dukkha	पीड़ा; दर्द
दुःखानुपासना	दुख का चिंतन (देखें अनिच्च)
dukkhindriya	दर्द की क्षमता
डुकारिता	दुराचार

दुत्थुल्ला	भ्रष्टता
देवा; देवता	डीईआईटीवाई
डेसैंड	शिक्षण
डोमानासा	दु: ख
डोसा	घृणा
धम्म	विचार; सच्चा विचार
-धम्म	का विषय है
dhammakkhandha	सच्चे विचारों का समुच्चय
dhamma-cakka	सच्चे विचार का पहिया
dhammadhātu	विचार सिद्धांत
dhammavavatthāna	विचारों की परिभाषा
dhamma-vicaya	विचारों की जांच
धम्मविका-सम्बोझंग	विचारों की जांच ज्ञानोदय कारक
धम्मानुसारिन	धम्म भक्त
धम्मायतन	विचार आधार
धम्मुद्धच्च-विग्गहिता	विचारों के अति-आकलन से उत्तेजित
धातु	सिद्धांत
dhuva	चिरस्थायी
नंदी	आनंद
ननाट्टा	अंतर
नामा	मानसिकता
नाम-रूप	मानसिकता-भौतिकता
निकांति	लगाव
निक्का	स्थायित्व
निच्छता	सूखा
निज्जर-वत्थु	क्षय का आधार
निज्जत्ती-बाला	परिपक्वता शक्ति
निदान	स्रोत
निड्डास-वत्थु	प्रशंसा का आधार
निब्बट्टा	पुनर्जन्म
निब्बट्टी	पीढ़ी
निब्बाण	निब्बाण
निर्वाण-धातु	निर्वाण का सिद्धांत
निब्बिडा	विराग
निब्बिडानुपासना	वैराग्य का चिंतन (देखें अनिच्च)
nibbedhika-paññā	गहन समझ
निमिता	संकेत
निम्माला	स्टेनलेस
नियम	निश्चितता
नियम	दुकान

निरय	नरक
nirutti	भाषा
निरोध	समापन
nirodhasamāpatti	समाप्ति की प्राप्ति
nirodhānupassanā	समाप्ति का चिंतन (देखें अनिच्च)
निस्साया	सहायता
निस्साराणा	पलायन
निवारण	बाधा
नेक्खम्मा	त्याग
नेय्या	निगम्य
nevasaññānasaññā	न तो बोध और न ही अबोध
पकाती (या)	स्वाभाविक रूप से 1390; XXII 13-21
पकासन	की व्याख्या
pakkhandhati	में प्रवेश करता है
पगहा	तनाव
paccaya	शर्त, सशर्तता
paccaya-pariggaha	परिस्थितियों की समझ (स्वीकार करना)
paccaya-samudaya	वातानुकूलित उत्पत्ति
पक्का-समुप्पन्ना	सशर्त रूप से उत्पन्न
paccavekkhaṇa	की समीक्षा
पचकुप्पन्ना	वर्तमान में उत्पन्न
पजानाना	समझने का कार्य
पण्णत्ती	विवरण
पण्णत्तिबाला	तत्परता शक्ति
paññā	समझ
पञ्नबाला	समझने की शक्ति
paññābāhulla	बहुत समझ
पञ्णाबुद्धि	समझ का जागरण
पण्णाविमुत्ति	समझ-उद्धार
पण्णावेपुल्ला	समझ की प्रचुरता
पणिन्द्रिय	*समझने की क्षमता
paṭikkūla	प्रतिकारक
paṭiggaha	प्राप्तकर्ता
paṭigha	प्रतिरोध
पटिच्च-समुप्पन्ना	आश्रित रूप से उत्पन्न
पटिच्च-समुप्पाद	आश्रित उत्पत्ति
paṭinissagga	संन्यास
paṭinissaggānupassanā	त्याग का चिंतन (देखें अनिच्च)
पतिपदा	प्रगति, रास्ता
पातिभाना	अंधकार से छुटकारा

paṭilābha	प्राप्ति, प्राप्ति
paṭividita	अनुभवी
पतिवेधा	प्रवेश
पटिसंखा	परछाई
पटिसंखना-बाला	प्रतिबिम्बन की शक्ति
paṭisandhi	पुनर्जन्म लिंकिंग
paṭisambhidā	भेदभाव
पथवी	धरती
पथवीकाशिण	धरती कसीना
पथविधातु	पृथ्वी सिद्धांत
paṇidhi	इच्छा
पानी	उत्कृष्ट, श्रेष्ठ
पंडिका	बुद्धिमत्ता
पतिथापन	नींव पर
पट्टी	आगमन
paṭṭhanā	आकांक्षा
पद	कदम
पढ़ाना	प्रयास
पदेश-विहार	विचारों की समीक्षा में बने रहना
पढ़ीना	प्रयास
papañca	विविधता
पभावना	याद दिलानेवाला
पमाडा	लापरवाही
payoga	काम
para	विदेशी
परमत्ता	अंतिम अर्थ
परमसा	ग़लतफ़हमी
परिखारा	मांग
परिगाह	गले
paricaya	जाँच पड़ताल
परिसीता	वृद्धि, लाया जाना, समेकित किया जाना
परिच्चाग	समर्पण
परिजन	पूरी तरह से समझना
परिणाम	पूरी समझ
परिणय	पूरी तरह से समझा जाना
parideva	विलाप
परिनिर्वाण, परिनिर्वाण	निर्वापन
paripantha	बाधा
परिपाक	पकने वाला
परियादान	समाप्त
pariyuṭṭhāna	जुनून

pariyogāha	गहराई से समझना
pariyosāna	अंत
परिल्हा	पीड़ा
परिवार	उपकरण, सुसज्जित
पलास	घमंडी
पालिबोध	बाधा डालना, बाधा
pavatta, pavatti	घटना
पसंद	संवेदनशीलता
पसंदाना	आत्मविश्वास, आत्मविश्वास होना
passaddhi, paṭipassadhi	शांति, शांत करने वाला
पास्द्धी-संबोझझंगा	शांति का ज्ञान कारक
पसंदाना	आत्मविश्वास
पहाटब्बा	छोड़ दिया जाना
पहना	को छोड़
पहित्ता	स्वयं प्रयास
पितृहारिया	कायापलट
पणटिपात	जीवित चीजों को मारना
पद	आधार
पापना	तक पहुँचने
pāmojja	हर्ष
मेरे लिए	पूर्णता
पारिपुरी	पूर्णता
पावाचन	सिद्धांत
पीती	ख़ुशी
पिटी-संबोझंगा	खुशी का ज्ञान कारक
पीतिसुखा	खुशी का आनंद
पिलाना	दमन
पुग्गला	व्यक्ति
पुन्णा	योग्यता
पुन्नवंत	सराहनीय
पुथु	अलग, पृथक्करण
puthujjana	साधारण आदमी
पुथु-पन्ना	व्यापक समझ
पब्बे-निवास	पिछला जन्म
पुरीसा	आदमी
purisindriya	पुरुषत्व की क्षमता
pharaṇa	पर ध्यान
फला	स्वाद
phassa, samphassa	संपर्क
phassana	लग
फासिता	लग रहा था

phuṭṭha	छुआ
phusana	छू
बाला	शक्ति
बहिद्धा, बहिरा	बाहरी
बहुलिकम्मा	बहुत कुछ करना
बुझना	शिक्षाप्रद
बुद्ध	प्रबुद्ध व्यक्ति
Buddha-dhamma	बुद्ध विचार (xvi 171)
बुद्धि	आत्मज्ञान, प्रबुद्ध होने की स्थिति
bojjhanga	ज्ञानोदय कारक
bodhana	जागरण
बोधि	प्रबोधन
ब्याधि	रोग
brahmacariya	यह अच्छा जीवन
भंगा	विघटन
bhaya	आतंक
भयतुपत्तन	आतंक के रूप में उपस्थिति
भव	प्राणी
भावना	विकास, विकासशील
भावना-बाला	विकास शक्ति
भवेताब्बा	विकसित किया जाना
भूमि	विमान
भूरिपन्ना	समग्र समझ
मक्का	अवमानना
मग्गा	पथ
मैकेरा	लोभ
मंडपेय	महीन अर्क
मादा	घमंड
मानसिक	ध्यान
मान्यता	मन आधार
manindriya	मन की क्षमता
मनुसा	मनुष्य
मानो	दिमाग
मनो-धातु	मन सिद्धांत
manomaya	मन से बना शरीर
मनो-viññāṇa	मन चेतना
मनो-विष्णु-धातु	मन चेतना का सिद्धांत
मारना	मौत
महाग्गता	ऊंचा
महाकरुणा	महान करुणा
महापन्ना	महान समझ

महाभूत	महान इकाई
माना	दंभ (गर्व)
माया	छल
मिचट्टा	ग़लतता
मिच्छादिट्ठी	गलत दृष्टिकोण
मिट्टा	दोस्त
muñcitukamyatā	मुक्ति की इच्छा
म्युटा	लगा
मुट्टा	स्वतंत्रता
मुदिता	खुशी, सहानुभूति
मुड्ढ	निंदनीय
मुसावादा	मिथ्या भाषण
मूल	जड़
metta	प्रिय दयालुपना
मोह	माया
yathābhūta	सही
यथाभूत-नाण	सही ज्ञान
यमक-पाटिहारिया	जुड़वां कायापलट
यानिकता	वाहन बनाया
yuganandha	युग्मन
रासा	स्वाद, कार्य (एकल देखें)
राग	लालच
rukkha-mūla	एक पेड़ की जड़
रुचि	वरीयता
रूपा	दृश्यमान वस्तु; सामग्री, भौतिकता
रूप-धातु	दृश्य वस्तु सिद्धांत
rūpa-bhava	भौतिक अस्तित्व
रूपायतन	दृश्यमान वस्तु आधार
रूपावचार	भौतिक क्षेत्र
lakkhaṇa	विशेषता
लहू-पन्ना	तीव्र समझ
लाभ	लाभ, प्राप्ति
लीमा	ढीला
लोका	दुनिया
लोक-धम्म	सांसारिक विचार
लोक-धातु	विश्व सिद्धांत
lokiya	सांसारिक
लोकुत्तरा	अलौकिक
वत्थु	भौतिक आधार, वस्तु, भूमि, उदाहरण
वाया	गिरना
वावत्थना	परिभाषित

वासी	मास्टरिंग
वायो	वायु
विकुब्बाना	बहुमुखी प्रतिभा, परिवर्तन
विक्खम्भन	दमन
विक्खेपा	व्याकुलता
विकारा	निरंतर विचार
vicikicchā	अनिश्चितता
विज्ञान	पहचानना
विज्जा	मान्यता, विज्ञान
विण्णाण	चेतना
विण्णानाट्ठिति	चेतना का स्टेशन
विण्णाता	पहचाना हुआ
विटक्का	अनुप्रयुक्त विचार
विदिता	मान्यता प्राप्त
विनय	अनुशासन, निष्कासन
विनिग्गहा	को रोकने
vinibandha	बेड़ी
viparināma	परिवर्तन
विपल्लास	विकृति
विपश्यना	अंतर्दृष्टि
विपश्यनाबाला	अंतर्दृष्टि शक्ति
विपाक	परिणाम, परिणामी
विपुला-पन्ना	प्रचुर समझ
विप्पन्न-दिट्ठि	गलत दृष्टिकोण
vippayutta	पृथक्करण
विप्पहार	हस्तक्षेप
vibhava	गैर-मौजूदगी
विमुंचना	देते
vimutta	मुक्त
vimuttāyatana	उद्धार का आधार
vimutti	उद्धार
vimuttisukha	मुक्ति का आनंद
विमोक्खा	मुक्ति
vimokkha-mukha	मुक्ति का प्रवेश द्वार
विराग	लुप्त होती हुई
विरागनुपासना	लुप्त होने का चिंतन (देखें अनिच्च)
viriya	ऊर्जा
viriya-bala	ऊर्जा शक्ति
वीर्य-संबोझंगा	ऊर्जा ज्ञान कारक
वीर्यइंद्रिय	ऊर्जा संकाय
विवाट्टा	मुड़ना

vivaṭṭati	तुम दूर हो जाओ
विवाद	विवाद
विवेक	तनहाई
visaṃyoga	गैर बंधन
विशेषाग	भिन्न
विसाया	उद्देश्य क्षेत्र
विशुद्धि	शुद्धिकरण
विसेसा	भेद, विशिष्ट प्रभाव
विहार	बाध्य होना
विहिंसा	क्रूरता
वीतराग	बिना लालच वाला
विमानसा	जाँच करना
वुत्थति	उभर रहे हैं
वुत्थाना	उभरते
वुपसमा	शांत करना
वेद	बुद्धि
Vedana	अनुभूति
vedayita	अनुभव किया
वेरामनी	बचाव
वेसाराज	बीमा
वोडाना	सफाई
व्यापद	बैर
संयोग	दासता
saṃyojana	बेड़ी
saṃvara	संयम
saṃvega	तात्कालिकता की भावना
saṃsaṭṭha	संयुक्त
संसार	पुनर्जन्म का दौर
शकदागामिता	एक बार वापसी
सक्काया	व्यक्तित्व
sakkāya-diṭṭhi	व्यक्तित्व का दृष्टिकोण, गलत
sagga	स्वर्ग
संकप्पा	सोचा
sankilesa	धारणा
संकट	बनाया
संखारा	गठन
संखारूपेक्खा	संरचनाओं के बारे में समभाव
sankhepa	सामान्यकरण
sangaha-bala	सहायता शक्ति
sangaha-vatthu	मदद, उदाहरण
साक्का	सत्यता

sacchikata	समझना
सचिकातब्बा	साकार होना
sacchikiriyā	यह महसूस करते हुए
संजनना	मानता
saññā	धारणा
सैनिन	समझनेवाला
सती	सचेतन
satindriya	सचेतनता की क्षमता
सतीपत्तन	माइंडफुलनेस की नींव
सती-बाला	सचेतनता की शक्ति
सती-सम्बोझंगा	माइंडफुलनेस का ज्ञानोदय कारक
साड्डा	आवाज़
साधा	आस्था
सद्धानुसारिन	आस्थावान भक्त
सद्धाबला	विश्वास की शक्ति
saddhāvimutta	विश्वास से मुक्त व्यक्ति
सांता	शांतिपूर्ण
संतविहार	स्थायी, शांतिपूर्ण
संतापा, संतापना	जलना (पीड़ा)
शांतिस्थान	संयम, यौगिक बनना
santipada	शांति, की स्थिति
sandassana	दिखाते
sabbaññuta-ñāṇa	सर्वज्ञ ज्ञान
सब्बान्नुता	सर्व-ज्ञानी
सभा	समान
सभावा	व्यक्तिगत सार
समा	समान, एकरूपता
समा	शांत
समता	शांति
समता-बाला	शांति शक्ति
samantacakkhu	सर्वद्रष्टा
समय	अवसर, कभी-कभार
समा-सिसिन	एक ही सिर
समाधान	उपक्रम
समाधि	एकाग्रता
samādhindriya	एकाग्रता संकाय
समाधि-बल	एकाग्रता शक्ति
समाधि-बोध्ङ	एकाग्रता ज्ञान कारक
समापज्जना	को प्राप्त
समापत्ति	प्राप्ति
समापन	प्राप्त

samuggata	बड़ा हुआ
samuccheda	काट देना
समुथाना	उत्पत्ति, उत्पत्ति
samutthita	उत्पन्न
समुदाय	मूल
samodahana	का मेल
समोधन	संयोजन, संयोजन
समोधानेति	को जोड़ती है
समोसरापा	मिलने की जगह
संपत्ति	पूरी तरह जागरूक
sampanna-ditthi	सटीक दृश्य
sampayutta	संघ, संबद्ध
sampahamsana	प्रोत्साहन III 22; IV 105
संफस्सा	संपर्क
sambodhi	आत्मज्ञान, पूर्ण आत्मज्ञान
सम्प्पधान	सही प्रयास
sammasana	समझ
सम्माजीव	सही जीवन
सम्माकम्मंता	सही अभिनय
sammădassana	सही दृष्टि
सम्मादिट्ठी	सही दृश्य
सम्मावाचा	सही बोलना
सममावायम	सही प्रयास
सम्मासंकपpa	सही विचार
सम्मासति	सही सचेतनता
सम्मासमाधि	सही एकाग्रता
sammoha	भ्रम
सलायतन	छह गुना आधार
सल्लेखा	काटना
सवाना	सुनवाई
sassata	शाश्वत
sahagata	साथ में
सहजता	एकाग्र
सत्यैया	धोखा
समान-फल	तपस्या का फल
सायण	चखने
सारा	मुख्य
सारम्भ	अनुमान
सावक	शिष्य
सासन	व्यवस्था
सिख	प्रशिक्षण

sigha-paññā	त्वरित समझ
सिला	गुण
सिलाब्बाटा	पुण्य और व्रत
sila-visuddhi	पुण्य की शुद्धि
सिसा	सिर
सुखा	आनंद, सुखद, खुशी
sukhindriya	आनंद की क्षमता
सुखुमा	जटिल
सुन्ना	शून्य, रिक्त
सुन्नताविहार	शून्य स्थायी
सुता	सुना
सूर्या	सूरज
सुसमा	समानता, बहुत
sekha	आरंभ करना
सोका	दु: ख
सोता-धातु	कान सिद्धांत
सोता-विण्णाण	कान की चेतना
सोता-विण्णा-धातु	कान चेतना सिद्धांत
सोतसंफसा	कान का संपर्क
सोतापट्टी	धारा प्रविष्टि
sotāyatana	कान का आधार
सोतावधान	कान लगाना
sotindriya	कान की क्षमता
सोमनास्सा	आनंद
हंस-पन्ना	हँसना समझना
hiri-bala	विवेक शक्ति
हिना	अवर
hīna-bhāgiya	कमी, भाग लेना
hetu	कारण, कारणता
हेतुसमुप्पन्ना	कारणात्मक रूप से उत्पन्न

संकेताक्षर

ए	अंगुत्तर निकाय
आ	अंगुत्तर अट्ठकथा
आभा	*Abhidhammāvatāra* of Buddhadatta
ए पी ए	अपादान अट्ठकथा
बिबाक	अट्ठसालिनी (डीएचएसए)
द्वारा	*Buddhavaṃsa*
सीपीडी	क्रिटिकल पालि डिक्शनरी
डी	*Dīgha Nikāya*
डीए	*Dīgha Aṭṭhakathā*
धनवाद के	धम्मपद
डीएचएस	*Dhammasaṅgaṇi*
डीएचएसए	*Dhammasaṅgaṇi Aṭṭhakathā* (*Atthasālinī*)
डीएचएसएए	धम्मसंगनि अट्ठकथा अट्ठकथा (यानी टीका, अभिधम्म मूलतिका का पहला भाग, विद्योदय संस्करण, 1938)
डीटी	*Dīgha Ṭīkā*
आईबी	भारतीय बौद्ध धर्म (पृष्ठ vii, f.n. 1 देखें)
यह	इतिवुत्तका
जावेद	*Jātaka Aṭṭhakathā*
जेपीटीएस	पाली टेक्स्ट सोसाइटी की पत्रिका
केवीयू	कथावत्थु
एम	मज्झिमा निकाय
एमए	मज्झिमा अट्ठकथा
मोह	*Mohavicchedanī*
एनडी i या एनडी 1	महानिद्देस
नेट	नेत्तिपकरण
पी.एस.	*Paṭisambhidāmagga*
पीएसए	पतिसंभिदामग्ग अट्ठकथा (यह नानामोली का इस्तेमाल किया गया हेवावितर्न एडिशन है, एडिटर के रेफरेंस PTS एडिशन 1933-47 के हैं)
पीएसजीपी	पटिसंभिदामग्ग गण्तिपद (देखें पृष्ठ xliii, f.n. 1)
पीटीसी	*Pāḷi Tipiṭakaṃ Concordance* (PTS)
सार्वजनिक टेलीफोन	पाली पाठ्य समाज
पूगा	पुग्गलपण्णत्ती अट्ठकथा
एस	संयुक्त निकाय
एसए	*Saṃyutta Aṭṭhakathā*
साद	अग्गावंश की सद्दानिति (संपादक एच. स्मिथ, ग्लीरुप, लुंड, 1928-66)
एसडीएचपी	महानामा की सद्धम्मप्पाकासिनी (PSA)

से	सिंहली अक्षरों में संस्करण
एस.एन.	सुत्तनिपात
थग	थेरगाथा
ठगा	थेरगाथा अट्ठकथा
टीकेपी	*Tikapaṭṭhāna* (first part of the *Paṭṭhāna*)
टी.आर.	इस अनुवाद में भजन संहिता की कथा
Vbh	*Vibhaṅga*
VbhA	*Vibhaṅga Aṭṭhakathā*
विन	विनय
बीन	*Vinaya Aṭṭhakathā*
Vism और Vsm	विशुद्धिमग्ग (नानमोली का अनुवाद आर. सेमेज, कोलोनिबो, 1956 द्वारा प्रकाशित किया गया था और तब से दोबारा छापा जा रहा है)
विस्मा	धम्मपाल की विशुद्धिमग्ग अट्ठकथा (अर्थात टीका) (11)

(जब तक कुछ और न बताया गया हो, ये रेफरेंस PTS एडिशन के हैं।)